उपरवास

कथात्रयी

रघुवीर चौधरी

उपरवास कथात्रयी

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोधन के दरबार का वह दृश्य है, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं। उनके नीचे बैठा है मुंशी जो व्याख्या का दस्तावेज़ लिख रहा है। भारत में लेखन-कला का यह संभवत: सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख है।

नागार्जुनकोण्डा, दूसरी सदी ई०

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

उपरवास
कथात्रयी

लेखक एवं अनुवादक

रघुवीर चौधरी

साहित्य अकादेमी

Uparvas Kathatrayi (उपरवास कथात्रयी) :
Hindi translation by Raghuveer Chaudhari of his own Sahitya Akademi Award winning novel in Gujarati

Sahitya Akademi, New Delhi (1951), Rs. 120/-

Sahitya Akademi
First Edition : 1951

Published by :
Sahitya Akademi
Head Office :
Rabindra Bhavan, 35, Ferozeshah Road, New Delhi 110 001
Sales Department :
Basement in 'Swati', Mandir Marg, New Delhi 110 001

Regional Offices :
172, M. M. G. S. Marg, Dadar (East), Bombay-400 014
'Jeevan Tara', 23A/44X, Diamond Harbour Road, Calcutta-700 053
29, Eldams Road, Teynampet, Madras-600 018

ISBN 81-7201-032-X

Printed by :
Printwell
6, Punaji Industrial Estate,
Dhobi Ghat,
Dudheshwar Road,
Ahmedabad-380 004

विषय-सूची

अनुवादक की हैसियत से लेखक का निवेदन

'उपरवास कथात्रयी' के अनुवाद की इच्छा-पृच्छा करते लेखक-मित्रों को चाहने पर भी मैं अनुकूल उत्तर नहीं दे पाया, उलझा रहा—संवादों को किस बोली में ढाला जाए? लाघवयुक्त रूपान्तर किया जाए या शब्दशः अनुवाद?

साहित्य अकादेमी द्वारा (सन् 1977 में) पुरस्कृत होने के बाद कथात्रयी के दूसरे-तीसरे खण्डों में मैंने शोधन-वर्धन किया था, दूसरे संस्करण का कद बढ़ा था। उसे बीस प्रतिशत कम करके एक ही जिल्द में संपूर्ण अनुवाद अन्य भाषाओं में सुलभ हो तो प्रकाशन-वितरण की दृष्टि से सुविधा रहे – सोचता रहा।

कविवर अज्ञेयजी की 75 वीं जन्मजयन्ती के समारोह से लौटते वक्त पालम हवाई अड्डे पर डॉ. इन्द्रनाथ चौधुरी से इस संदर्भ में बात हुई। पुरस्कृत रचनाओं के अनुवादों के प्रकाशन की अकादेमी की प्रणाली की जानकारी मिली। मालवी सीखकर मैं संवादों में उसका विनियोग करना चाहता था। इस सपने से समझौता कर लिया और नवलेखक मित्र फूलचन्द गुप्ता के अवधी-ज्ञान से आश्वस्त होकर कार्य आगे बढ़ाया। लाघव के हेतु किसी मार्मिक अंश को क्षति न पहुँचे इस दृष्टि से डॉ. महावीरसिंह चौहाण का जो सक्रिय सहयोग मिला, अविस्मरणीय है। कुछ वरिष्ठ साहित्यकारों का सुझाव था कि सारे संवाद खडीबोली में दिये जा सकते है। पन्नालाल पटेल के उपन्यास 'मानवी नी भवाई' के हिन्दी अनुवाद में मैंने स्वयं ऐसा ही किया था परन्तु यहाँ चरित्रों की समविषम रेखाएँ उभारने के लिए भाषा के साथ बोली का भी सहारा लिया, जोखिम उठाया।

इस प्रक्रिया के बावजूद आंचलिक तत्त्व यहाँ कम हुए हैं। सामाजिक रूप विशेष निखर आया हो तो क्षतिपूर्ति हो सकती थी। पता नहीं। इतना ही दावा किया जा सकता है कि चरित्रों को निरूपित करती घटनाएँ अपने असल रूपरंग में यहाँ भी प्रत्यक्ष होंगी।

मूल रचना में उत्तर गुजरात की बोलचाल की भाषा के परिवर्तित होते रूपों का अंकन सजगता से किया गया है। संक्रान्तिकाल की पहली साक्षी

भाषा होती है। इसे आत्मसात् करने के लिए कोई पाठक यहाँ संतुष्ट न होकर मूल गुजराती रचना पढ़ना चाहे तो अनुवादक के रूप में मेरी यह हार, लेखक की जीत को बधाई देगी।

गुजराती साहित्य के साठोत्तरी 'कलावाद' से आक्रान्त हुए बिना, आधुनिक नकार से डरे बिना मैं अपनी ग्रामीण अनुभव-सृष्टि में लौटा। अनजाने ही अनु-आधुनिक काल की संभावनाएँ खुलीं। अतिरिक्त साहित्यिकता से बचकर, सामाजिक यथार्थ का संकुल चित्रण करने हेतु मैंने अंचल की यह आत्मकथा लिखी थी सन् 1970 से 75 के बीच। इस हिन्दी रूपान्तर के प्रकाशन के लिए मैं साहित्य अकादेमी की कार्यकारिणी तथा पदाधिकारियों का अनुगृहीत हूँ। मुद्रण के दरमियान भी लेखक-अनुवादक के बीच होड़ चलती रही।

सीताजी ने कंकन के नग की परछाई में राम का रूप निहारा था, तुलसी के इसी न्याय से भारत का रूप अपने खेत-खलिहान में निहारने का मैं हक़दार था, आज से आप हैं।

A-6 पूर्णेश्वर, गुलबाई टेकरा
अहमदाबाद-380015

रघुवीर चौधरी

उपरवास

1

ढलती हुई शाम की लालिमा खेतों की हरियाली में उतरकर धरती में समाती जा रही है। चारों ओर फैली नीरव शांति नजर को दक्खिन की ओर खड़े आम के पेड़ की ओर खींच रही है। आम की डालियाँ नीचे की ओर झुकी हुई हैं, उनकी ऊँचाई मुश्किल से आदमकद है। आम की एक डाल पर नन्हें-नन्हें पाँवों की एड़ियाँ दिखाई दे रही हैं।

"अब तो उतर देवू, तू हमार भैया हो कि नाहीं!"

...बहन हेती डरा-धमकाकर थक चुकने के बाद अब भाई देवू की चिरोरी करने लगी है, लेकिन इसका भी कोई असर नहीं दिख रहा। हेती उत्तर की ओर देखती हुई दादाजी से शिकायत कर देने की धमकी देती है इस पर देवू नीचे उतरने की बजाय और भी ऊपर चढ़ जाने का उपक्रम करने लगता है। बहन अब परेशान होकर देवू के दाहिने पाँव की एड़ी अपने मुँह में पकड़ती है, धीरे से दाँत चुभोती है। देवू रोने की बजाय खिलखिलाकर हँसने लगता है। आम की नई कोंपलें लहरा उठती हैं। सारे खेत की खुशी सिमटकर आम के नीचे एकत्र हो जाती है।

देवू आम की डाली पकड़े रहना भूल जाता है, जिद छोड़ देता है और हेती के खींचते ही खिंच आता है। हेती के कान में "कूक" करके भागना ही चाहता है कि हेती उसे पकड़कर अपनी छाती से ऐसे दबाती है कि देवू "चीं" बोल देता है। भाई को छोड़ देने के बाद हेती को अपनी छाती में कुछ झनझनाहट-सी महसूस होती है, जैसे कुछ दुख रहा हो। ...भाई फिर मौका पाते ही भाग जाता है।

"देवू! हमरे लगे न आएबो?"

"नाहीं, नाहीं, नाहीं, सातदँई नाहीं। जाव!"—कहता हुआ वह दौड़ता-भागता है और उसे पकड़ने के लिए पीछे-पीछे बहन भी दौड़ती है। उसकी ओढ़नी का रंग खेतों की हरियाली के ऊपर अनोखी छटा फैलाता है, उसके चेहरे पर कौमार्य की लाली चमकने लगती है।

अचानक हेती रुक जाती है। खेत के उत्तर वाले चकरोड से होकर कुछ अजनबी जा रहे थे। अब ऐसे उछल-कूद नहीं करनी चाहिए, माँ की सिखावन याद आ गयी। देवू का पीछा छोड़कर वह कुएँ की ओर मुड़ गयी। दादाजी एक के बाद एक गोरू को पानी पिलाने के लिए कुंडी पर ले जा रहे थे। बीच में पलभर को रुककर दुबारा पानी पीकर पीछे हटते ही दादाजी उन्हें खूँटे से बाँध आते थे।

हेली कुएँ की छोटी कुंडी के पास बैठ गयी। कुल्हड़ भरकर पानी पिया। हाथ और पाँव धोए। फिर से थोड़ा पानी पीकर मुँह धोया और ओढ़नी के आँचल से पोंछ लिया। जूड़ा ठीक करके आँचल सिर पर ओढ़ा। ईंधन से भरी डलिया सिर पर रखी। दो क़दम चलकर वापस आयी और दादाजी से कुछ बातें कीं। देवू की ओर देखा। वह दूर बाड़े के पास था। वह नहीं आयेगा सोचकर उसने चकरोड का रास्ता लिया।

सभी मवेशियों को पानी पिला लेने के बाद बुढ़ऊ ने बछड़े को छोड़ा। उसके पगहे को पकड़े न रखकर छोड़ दिया। उसके भाग जाने की बारी जानकर वे उसके पीछे पीछे तेजी से चलने लगे। उसे कुंडी के पास पहुँचाने के बाद कुएँ के चौतरे पर बैठ गये। बछड़ा पानी पीता था और वे कुछ बोल रहे थे जिसे बछड़े को सुनना ही था। उसने पानी से मुँह बाहर निकाला, सिर हिलाया। गले में बँधी घंटी ताल के साथ खनक उठी। बुढ़ऊ को खुशी हुई। वे कुछ सोचने लगे। बछड़ा और थोड़ा पानी पीकर कुंडी की मेड़ सूँघता-सूँघता बुढ़ऊ के पाँव चाटने के लिए ललचाने लगा। उन्होंने उसे अपना हाथ दिया। बछड़े की जीभ की अपेक्षा बुढ़ऊ की हथेली कुछ ज्यादा ही खुरदरी थी। वह चाटता रहा और बुढ़ऊ खड़े रहे – आम के पेड़ की तरह।

बछड़ा पीछे मुड़ा। बुढ़ऊ उसके साथ हो लिए। थोड़ी देर तो बछड़ा जैसे उनका लिहाज रखकर ठीकठाक चला, उसके बाद पता नहीं खेतों पर लहराती ठंडी हवा के न्योते से या दूर खेत के छोर पर देवू के दिख जाने से उसका मिजाज बिगड़ गया। पूँछ खड़ी करके कूदा और भाग पड़ा। पहले तो फ़सलों के बीच धँसा, फिर निकलकर नींबू के झाड़ के पास गया। उसकी चपेट में आ गये धान के दो पौधे अभी संभल भी न पाए थे कि वह निश्चित भाव से खड़ा होकर बाड़े में कुछ सूँघने लगा। इतने में बुढ़ऊ ने आवाज दी, उसे जैसे यह पसन्द न आया हो, तेजी से सामने की मेंड़ की ओर भागा, जहाँ देवू खड़ा था।

बुढ़ऊ हँस पड़े। उनके हँसने की आवाज तो न आयी परंतु डूबते सूरज के प्रकाश में उनके पोपले मुँह की झुर्रियाँ चमक उठीं।

'पिथू भगत राम राम। बछौवा हाथ मां नाहीं आय रहा का हो?"

चकरोड में खड़े राहगीर की आवाज सुनाई दी। फिर जैसे सोमपुरा को भूल गया हो, खेत की मेड़ पर इस भाव से खड़ा रहा जैसे बुढ़ऊ के जवाब की राह देख रहा हो।

"अरे आव नायक आव, बछवा को तो हम ही छोड़े रखे हैं। ओकर कूदे क दिन यही है भाई। काहे दूर खड़ हो? आव ले, हुक्का पीयत जा।"

"नाहीं भगत, लौट क पीयब। अबहो तो देर होई जात है।"

"देर होत है तो तुम्हें डर काहे को लागत है भलेमानुस? भूत-परेत तो तुहरे पास भटकत नाहीं है।"

"तुम्हरे आगे तो हम लड़का हन भगत। तुम तो समूचा का समूचा आकाश आँख मां उतारो अस हो, हमे कहाँ नाहीं जानित ? लड़का आज खेत मां नाहीं आवा का ?"

"अबहीं अमवा के पास तो खेलत रहा।" बुढ़ऊ ने पीछे घूमकर देखा। उसके साथ ही शंभू नायक की निगाह भी खेत की ओर घूम गयी। आम के पास देवू को खेलते देख नायक को खुशी हुई। देवू के लिए लोरी गाने पर मिली भेंट उसे याद आयी। देवू के पिता नरसंग के लिए भी नायक के मन में सम्मान था। वह कितनी भी जल्दी में क्यों न रहा हो उस रास्ते से गुजरते हुए थोड़ी देर रुके बिना, पल दो पल सुख-दुख की बात किये बिना आगे नहीं जाता। खलिहान में गाड़ा न दिखने पर उसने सोचा : नरसंग कहीं गया होगा। अब देवू इधर आये और वह थोड़ी देर उससे बातचीत करे तो अच्छा—उसके चेहरे पर यही चाह थी। उसकी निगाह देवू और बछड़े पर टिकी थी।

बछड़ा देवू के पास जाकर खड़ा हो गया। देवू उसके गले में झूल गया। फिर घंटी टनटना उठी।

नायक को अन्दर बुलाकर पिथू भगत नीम के नीचे पड़ी खाट की ओर ले गये। पाँव से खिसकाकर खाट को व्यवस्थित किया। गुदड़ी झाड़ी और बिछा दी। नायक गुदड़ी को खिसकाकर खुले पैताने पर बैठ गया। उसे आराम से बैठने के लिए कहकर बुढ़ऊ हुक्के का पानी बदलने चले गये।

देवू बछड़े को फसलों के बीच से दौड़ाता ला रहा था। नायक को आश्चर्य हुआ। यह लड़का इस तरह की शरारत क्यों कर रहा है ? इस समय इसका बाप यहाँ नहीं है इसीलिए ? पर स्वभाव से तो यह अच्छा लगता है। बछड़े को मेड़ से होकर लाये तो ? बछड़े को देखकर तो उसे और भी आश्चर्य हुआ। फसलों के बीच से होकर आने के बावजूद आसपास कहीं भी मुँह डाले बिना या बिना इधर उधर कूद-फाँद मचाये वह देवू के पीछे-पीछे चला आ रहा था।

नायक थोड़ी देर तक असमंजस में पड़ा रहा। फिर जैसे अचानक कुछ सूझ गया; बड़े आत्मविश्वास के साथ बोला—"भगत, जिन्दा रहियो तो देख लीजियो। लड़का बहुत हुँसियार होयेगा।"

"तुम्हारा आसिरबाद सिरमाथे भाई। और हाँ तुमने तो लोरी गाया है उसके लिए। पर हाँ नायक लड़का हुँसियार होई अस मानि के बैठे नाहीं रहा जाय सकत समझयो ? लड़का का पढ़ावे लिखाने का पड़त है। पंडित इकर कुंडली बनाय के लावे वाला रहा, पर नाहीं लावा। फिर हम हूँ उका नाहीं कहा। अरे कुंडली निकलवाओ या नाहीं का फरक पड़त है ?"

"फरक तो कुछ नाहीं, पर अपना थोड़ा सहारा, थोड़ा पहिले खबर होय आगम-चेती करि सके।"

"तुहार बात ठीक है। पर हमार तो एकै सवाल है। देख ई दिन रोज पुरब मां निकलत है कि नाहीं ? तबो जैसे रोज नये ढंग से निकलत जान पड़त है

कि नाहीं ? तब सबके बारे मां पहिले से सब कुछ जानने से कौना अर्थ है ? हम तो कहित हैं कि महतारी बेटवा दूनो के भविष उज्वल है ।"

पिथू भगत ने अलाव में से आग लेकर हुक्के की चिलम भरी और नायक के पास जाकर बैठना भूलकर थोड़ी देर के लिए जहाँ थे, वहीं बैठ रहे ।

"तुम तो दुनिया देखे हो भगत । तुम जोन कहबो ओमा गलती न होये ।"

बुढऊ जाकर खाट पर बैठ गये और नायक की ओर मुड़कर बात करने लगे ।

नायक को गाँव में पहुँचने की जल्दी थी । किन्तु भगत के साथ हो रही बात छोड़कर उठने की हिम्मत नहीं हो रही थी । हुक्के का भी आकर्षण था । बुढ़ऊ किसी विचार में खोये हुए थे । अचानक उन्होंने पूछा कि नायक कहाँ जा रहा है ?

"करसन मुखी के घर, कुछ मालूम नाहीं है ?" नायक ने कहा ।

भगत कुछ नहीं बोले । नायक उनके हाथ में हुक्का पकड़ाते हुए खड़ा हो गया । इतने में देवू वहाँ आ पहुँचा ।

"पाय लागी महाराज ।"

"अरे हम गुसाईं नाहीं, बजनिया होई बजनिया, समझ्यों ? नायक होई ।" कहते-कहते उसने दस वर्ष के, किन्तु अपनी उम्र से कुछ अधिक दीखनेवाले देवू को उठा लिया । धूल सने पाँव नायक के नवीन वस्त्रों को गन्दा न कर दें इस बात की सावधानी बरतते हुए देवू विनम्रतापूर्वक गोद से नीचे उतर आया । दादाजी उसकी होशियारी से प्रसन्न हो गये ।

बछड़ा अपने खूँटे पर वापस आ गया था । देवू नहाने चला गया । बछड़े को उसके खूँटे से बाँधकर उसके आगे बाजरी का हरा-हरा चारा डालते हुए नायक को संबोधित करते हुए भगत ने बात आगे बढ़ाई ।

"हम तो इधर गाँव मां गइन नाहीं । हाँ काल देवू के बाप गाड़ा लेके गये रहे । राब, गुड़ और सब सामान–सीधा लेके । आज सवेरे ऊ बतलात रहा कि करसन काका और सगे-संबंधी का बुलाये हैं । सारे गाँव को न्योते हैं । मुलुक भर के बामन का दुई दिन से एकट्ठा किहे हैं । कल सवेरे दस बजे के लगभग करसनिया बाजत गाजत मरे वाला है । फिर बाद में जतने मनई एकट्ठा हैं सब ऊका जलावे की तईं नदी पर ले जाय वाले हैं । सरग से खास धरम राजा ओके बुलोवा लेके अइहैं ।"

पिथू भगत ने सरग शब्द का उच्चारण कुछ ऐसे ढंग से किया कि नायक सकते में पड़ गया । कुछ चुभा भी उसे । करसन मुखिया द्वारा आयोजित सम्पूर्ण प्रसंग में दक्षिणा की लालच से वह भावात्मक रूप से जुड़ा हुआ था । किन्तु भगत की मर्यादा को वह तोड़ सके, ऐसी क्षमता उसमें न थी । वैसे भगत की बात का विरोध करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए उसने कहा :

"लेकिन भगत, करसन मुखी के जनम–पतरी मां लिखा सब सच पड़ा हो ।"

"भले पड़ा, पर काल वाली बात सही पड़े तो हमे कहयो ।"

"पर भगत . ..."

"अरे मूरख हमे तो लाग कि तुमका तो थोड़ी अक्कल होये। इतना देस-परदेस घूम्यो तभी यक छोटे के बात नाहीं समझ मां आवा ! इतनी अच्छी मौत कीका मिलत है मालूम है ? अरे इ करसनिया कोन पुन्य किहिस है ? इके जैसे नक्लट का इतनी अच्छी मौत मिले भला ?"

शंभू नायक कोई जवाब दिए बिना मेड़ के पास थूहर को पकड़े चुपचाप खड़ा रहा।

"मुला तू जा। तू अपनी तकदीर के चार-छह पैसा जौन मिले, ले आव। ऊ जिये या मरे।"

नायक ने चकरोड की ओर क़दम उठाए। कुंडी में नहा रहे और पानी में खिलवाड़ करते देवू ने उसे हाथ उठाकर विदा देते हुए कहा "आइयो।" नायक ने आशीर्वाद दिया। दो क़दम चलकर फिर भगत से बोला-"भगत कहो तो मुखी का सब बताय देई।"

'कह दिहो, खुशी से कहयो। ऊ काल न मरे इ जान कै ऊका बिल्कुल दुख न होये। हमरी तरफ से उइसे कहयो कि संझा का भगवान के माला फिरावा करे।"

"लेकिन ऊ दान-पुन्य तो कहाँ कम करत है ?"

"घूस के पैसा लुटाये से धरम नाहीं होत, ईके लई तो पसीना बहावै क पड़े पसीना, समझ्यो ?"

नायक हँसता हुआ, भगत की प्रसंशा करता चला। भगत ने हुक्का एक ओर रखकर माला उठा ली।

देवू नहाकर कुंडी से बाहर आ गया था। भगत ने माला छोड़कर साफे के किनारे से उसका मुँह पोंछा। घिसकर सिर पोंछा और उसे गोद में उठा लिया, जिससे उसके पाँव में मिट्टी न लग जाय। खाट पर खड़ा करके चड्डी पहनायी। उनको लगा कुर्ते का एक छोर बाड़े में उलझकर फट गया, किन्तु उसके लिए उन्होंने देवू को डाँटा नहीं। उल्टे संकल्प किया कि नरसंग को कहकर उसके लिए नया कुर्ता सिलवा देंगे।

"दादाजी करसन बाबा कल मर जाइब ?" खाट पर बेठकर देवू ने धीमे से किन्तु अधीरतापूर्वक पूछा। पिथू भगत ने मना किया। देवू ने बात आगे बढ़ाई। कल नहीं तो कब ? भगत ने कहा कि उसके बाद मैं भी मर जाऊँगा। दादा भी मर सकते हैं यह बात देवू के गले नहीं उतरी। उसने दुबारा पूछा किन्तु फिर वही उत्तर पाकर वह पाँव पटकने लगा। बुढ़ऊ ने उसकी इस शरारत पर डाँटा नहीं। इतना तो उसे भी मालूम था कि जो मर जाता है वह दुबारा दिखाई नहीं पड़ता। उसे बाँधकर ले जाते समय लोग रोते हैं। दो वर्ष पूर्व होली पर उसकी दादी माँ मर गयी थीं तब उसने जो देखा था उसे बराबर याद है। पिताजी भी रोते रहे थे। माँ की आँखें सूज गयी थीं। सिर्फ दादाजी ही नहीं रोये थे। दूसरे दिन दादी माँ

की नसवार की खाली डिब्बी लेकर वह खेत में आया था। बाबा को दिखाकर खेलने लगा था। फिर अचानक उसकी इच्छा हुई कि दादाजी को साथ लेकर वह डिब्बी दादीमाँ को दे आनी चाहिए। नसवार के बिना उन्हें तकलीफ होती होगी। उसने कहा भी था कि—"चलो दादाजी अपने दूनो जने इ डिबिया बूढी माँ का दे आयी।" उस दिन उनकी आँखों में कभी न देखी पानी की बूँदें देखकर वह सन्न रह गया था। बाकी सवालों को वह अपने नये-नये उगे हुए दाँतों में दबाकर बैठा रह गया था।

दादा ने माला फिराते-फिराते उसकी ओर देखा कि तुरंत उसने मौतवाली अधूरी रह गई बात याद कराई। दादा ने देखा कि यहाँ सच बोलने से काम चलनेवाला नहीं है अतः अन्त में उन्होंने कबूल कर लिया कि वे नहीं मरेंगे। थोड़ी ही देर में वह इतना खुश हो गया कि दादा माला फिरा रहे हैं, यह भूलकर उनकी पीठ पर सिर रखकर उनकी गर्दन पर हाथ फिरा-फिराकर ऐसे खेलने लगा जैसे चरनी में सींग रगड़-रगड़ कर बछड़ा खेल रहा हो। दादा ने कहा, 'देवू देख तू अब बड़ा होय गया है।'

देवू शान्त हो गया। उन्होंने माला रखकर छपरिया में चिथड़े में बँधे हुए गुड़ की एक डली निकालकर दी। इतने में बैलों के घुँघरू और भरी हुई गाड़ी के पहियों की चरमराहट सुनाई दी। "बापू आये" कहता हुआ वह अपने पिता की ओर दौड़ पड़ा। बुढ़ऊ भी उठकर उसके पीछे-पीछे चल पड़े। गाड़ी में घास के पूले भरे हुए थे। नरसंग जुआ पर बेठा था। उसकी गोद में आराम से बेठे देवू के छोटे भाई लवजी ने आनंद की किलकारी की। बुढ़ऊ ने आगे बढ़कर उसे उठा लिया। देवू ने उसके पाँव में चिकोटी भरकर अपनी ईर्ष्या का प्रदर्शन किया। चकरोड से खेत की ओर उतरते हुए गाड़े की आवाज तेज हुई। बुढ़ऊ ने आग जलाई। नरसंग ने चिलम भरी। लवजी और देवू घर चलने के लिए जिद करने लगे। घर से खाना ले आने के बाद पिताजी से बात करेंगे यह सोचकर नरसंग दोनों लड़कों को लेकर खेत के बीच के रास्ते से चल पड़ा।

2

देवू अपने से तीन वर्ष छोटे भाई लवजी से झगड़ने लगा। गलती किसकी थी इसका विचार किए बिना ही नरसंग ने उठकर देवू के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। देवू रोया नहीं, नाराज होकर सीढ़ी पर जा बैठा। लवजी अपराधबोध तथा माँ के भय से चुपचाप देवू के पीछे खड़ा रहा। किन्तु कंकू ने उससे कुछ कहा नहीं। नरसंग को अब पछतावा हो रहा था। उसने देखा तो कंकू की आँखें भी भीग चुकी थीं। नरसंग मिट्टी की चिलम लेकर उसे कुरेदता रहा। कंकू ने देवू को बुलाया "ले, आ जा छुहारा दूँ।"

देवू अपनी जगह से नहीं उठा । लवजी पीछे से उसकी कमीज खींच-खींच कर भीतर आने के लिए कह रहा था । कंकू ने दुबारा आवाज दी तो वह उठा । लवजी भी उसके पीछे-पीछे अन्दर गया किन्तु उसे छुहारे पाने का हक नहीं है, वह सोचकर अपना हाथ फैलाये बिना चुपचाप खड़ा रहा । कंकू ने दोनों को एक-एक छुहारा दिया । इतने में पानी का घड़ा लेकर हेती भी आ पहुँची । देवू के छुहारे का एक टुकड़ा उसे भी मिला । वह चौंतरे पर झाड़ू लगाने लगी । देवू और लवजी बाहर खेलने निकल गये । नरसंग ने हेती से पूछा—"देवू तीसरे दर्जे मां आवा कि चोथे मां ?"

हेती पिता के प्रश्न पर हँस पड़ी "भूल गयौ ? देवू तीसरी कच्छा मां पास भवा रहा तब पाँच सेर अनाज सारंग के मास्टर के नाहीं दिहौ रहा ?"

नरसंग खड़ा हो गया । खड़ी खाट के पाये से टँगा साफा उठाया । वह ढीला हो गया था इसलिए खोलकर फिर से सिर पर बाँधा ।

"तो हम खेत मां जा रहत हैं ।"—कहते हुए उसने जूते में पाँव डाला ।

"अब खाय के जाव न ।"—पानी का लोटा और तसला नरसंग के पास रखकर कंकू घर की चौखट पर बैठ गयी :

"तो अब हीं का करै आयौ रहा ?"

"तुहार मुँह देखे ।"

"अरे अब सरम करो, बुढ़ापा आवा ।"

"हमें तो एकौ बाल सफेद नाहीं देखात ।"

"खेते मां जाय क कुंडी के पानी मां मुँह देखौ ।"

इतने में काछिन से खरबूजा ख़रीदकर हेती और लवजी आ गए । हेती ने एक फाँक लवजी को दी, दूसरी ख़ुद ली और तीसरी फाँक देवू के लिए रख छोड़ी । लवजी अपना हिस्सा खाते-खाते देवू को बुला लाया । देवू आ तो गया किन्तु उसने खरबूजा खाने से मना कर दिया । सबने समझा कि उसे कम मिल रहा है इसलिए मना कर रहा है । नरसंग ने जरा ऊँची आवाज में खाने के लिए कहा किन्तु देवू ने "न खाब" कहकर उस तरफ से मुँह फेर लिया ।

"का मुँह फूलाये हुए हो ! बित्ता भरक है, एतना सान दिखावत हौ, बड़ होकर का करचौ ?" कहते हुए नरसंग ने तसले में हाथ धोए ।

धोती के कोने से हाथ-मुँह पोंछा । बाहर आकर देवू की ओर देखा । देवू वैसे ही खड़ा रहा ।

"चल भीतर चल ।"

"न आएब ।"

"काहे, अब का भवा ?"

"हमका काहे मारे रहा ?"

"ए ल्यो भइया, जवाब माँगे लगें हमसे ! अरे लवा, उठाव तो बेंत इनके

पूजा करी" लखूजी ने सुन तो लिया पर बेंत लाकर नहीं दी। नरसंग को भी यह अच्छा लगा। कंकू को तो विश्वास ही था कि देवू को अब मार नहीं पड़ेगी। इसलिए वह चुपचाप अपना काम करती रही।

नरसंग लड़के का यह मिजाज देखकर खुश हो गया था। उसने देवू को उठा लिया। चूमा। गुदगुदा कर हँसाया। लखजी भी यह देखकर हँस पड़ा। कंकू हँसी की आवाज सुनकर बाहर आयी और प्रसन्नचित्त सबको देखती रही।

नरसंग खेत में जाने के लिए निकला तब तक बाप-बेटे का संबंध पूर्णतया सुधर चुका था। देवू भी पिता के साथ खेत में जाने के लिए तैयार हो चुका था।

गली के दोनों ओर की बस्ती को देखते हुए नरसंग इतने धीमे से चल रहा था कि देवू को उसके साथ चलते रहने के लिए दौड़ना न पड़े। मुखिया के घर के सामने बैठे बखेड़ियों से नजर मिले, इसके पूर्व ही नरसंग ने आँखें फेर लीं। जैसे उनके साथ बैठने की उसकी बिलकुल रुचि नहीं है इस भाव से आगे बढ़ गया। किन्तु उन बखेड़ियों में से दो लोगों ने उसे एक साथ आवाज दी। नरसंग, किसी काम का बहाना निकालकर सिवान की ओर ही मुँह किए खड़ा रहा। थोड़ी देर तक बहानेबाजी और खींचातानी चलती रही लेकिन आखिरकार नरसंग को उनके पास जाना ही पड़ा। देवू थोड़ी देर वहीं खड़ा खड़ा चहलकदमी करता रहा, फिर घर चला गया।

ये झंझटिया लोग गाँव की छोटी-बड़ी सभी बातों में रुचि लेते किन्तु उनकी राय पर कोई भी ध्यान न देता। उनका मार्ग-दर्शन स्वीकारने वाला कोई न था। किन्तु दूसरों की निन्दा करने की उनकी योग्यता उच्च कोटि की थी इसलिए सुननेवालों पर उनकी बात असर कर जाती। नरसंग उनकी इस शक्ति को कभी दाद नहीं देता। उन्हें हमेशा फ़ालतू बैठा देखकर उन पर तरस खाता। इसके बावजूद कभी-कभार उसके साथ घड़ी-दो-घड़ी उदासीन श्रोता की तरह बैठकर उनकी संगति का लाभ ले लेता।

नरसंग उनकी बातों से ही समझ गया कि ये लोग कम-से-कम दो घंटे से निंदा-रस में एकाग्र होकर डुबकियाँ लगा रहे हैं। वह जब आया तब बात मुखिया के दरवाजे पर आकर रुक गयी थी।

"सही-सही कहिस नरसंग, पिथू भगत इ सब टोना-टुटका कहाँ से सीख लाये हैं?"

"कैसा टोना-टुटका! धूल-राख, तुहरे सबके कौनो दूसर काम नाहीं है का?"

"नाहीं भाई नाहीं, काम-धंधा का अकेला तुहरे लोगन के पास है।" करसन मुखिया का मँझला लड़का लाला बोला। उसके पास से चिलम लेकर फूँक मारते हुए काना बोला, "काहे, तुहार बुढ़ऊ काली चौदस के दिन मसान मां जायके पूजा नाहीं करते रहा?"

"तुम्हें सब का वहम होय तो इ काली चौदस के रात का जायके छुप जायो।"

"मेरे खातिर ससुर?" अपने मुंड सिर पर हाथ फिराते हुए मुखी का सबसे छोटा लड़का जेठा बोला।

"सही बात कहयो नरसंग, पिथू भगत कुछ नाहीं जानत!" इन सबके बीच

इस प्रकार सवाल पूछने का जैसे उसी को हक हो इस आत्म-विश्वास से कालू बोला। नरसंग थोड़ी देर तो उसीकी ओर घूरता रहा फिर यूँ बोला जैसे एक-एक शब्द सोच-सोच कर बोल रहा हो : "देखो, हम तो इ सब मां मानित नाहीं। एक दिन बुढ़ऊ हमे कहत रहें कि एक साधू उनका बरदान दिहिस रहा कि जा बच्चा तेरे हाथ से लोगन का भला होइ। भूत-परेत दूर भागेगा और दुसमन तेरा कुछ न बिगाड़ पायेगा।"

"बरदान तो भिखमंगते भी कहाँ नाहीं देत फिरतें? बाकी पूजा-पाठ बिना कुछ नाहीं होत।"

"तो करौ ना पूजा-पाठ, तुमका के रोकत है?"

सुननेवालों को लगा कि नरसंग पिथू भगत की साधना का रहस्य नहीं खोलना चाहता। उन्हें आशा भी नहीं थी किन्तु उन्होंने उलट सुलटकर बहुत पूछना चाहा लेकिन उन्हें कोई साफ उत्तर नहीं मिला। मुखिया की मृत्यु की आगाही में सभी ज्योतिषी झूठे साबित हुए थे। सही बात निकली थी तो बस भगत की जिसका मर्म किसी की समझ में नहीं आ रहा था। इसीलिए सारे प्रसंग पर नये सिरे से वे लोग उस पर बहस करने लगे।

पिथू भगत की भविष्यवाणी और करसन मुखिया का सीधे स्वर्ग में जाने वाले प्रसंग अब लोगों के कौतूहल का कारण बन गया था। ब्राह्मणो के गलत-सही मंत्रोच्चार में अब किसी को कोई रुचि नहीं थी। एकत्रित हुए नाते-रिश्तेदार मुखिया की सद्गति के लिए भगवान से प्रार्थना करने के बदले इस बात की राह देखने लगे कि आगे क्या होगा। मुखिया आज मरनेवाला ही है यह मान बैठनेवालों को पिथू भगत की भविष्यवाणी ने कुछ बेचैन कर दिया था। इस ऊटपटांग वातावरण में भी करसन मुखिया हाथ में चमकीला हुक्का लेकर, खाट पर नया बिस्तर बिछाकर शान से बैठे थे। उनके चेहरे पर बड़प्पन का रोब था। इधर-उधर घूम रही नजरों में मनचाहे तरीके से मरने का घमंड था। हवन, पूजा तथा मन्त्रोच्चार कर रहे ब्राह्मणों की ओर भी वे बड़प्पन की निगाह से देख रहे थे। इस सबमें उन्हें बस एक ही बात का अफसोस था कि उनकी मृत्यु के बारे में किसी को कोई दुःख क्यों नहीं है।

इतने में पिथू भगत आ पहुंचे। सभी ने उन्हें मुखिया की खाट पर बिठाया। भगत थोड़ी देर इधर-उधर देखते रहे, वे थोड़ा मुस्कराए और अँगरखे से माला निकालकर फिराने लगे। पिथू मेरे लिए ही माला फिरा रहे हैं, ऐसा सोचकर करसन मुखी ने जिन्दगी में पहली बार उनकी ओर दयाभरी नजर से देखा। भगत उनकी इस रहम दृष्टि का अर्थ समझ गये थे इसलिए सिर्फ मुखिया ही सुन सके इतनी धीमी आवाज में वे बोले, "हम तो अपने लिए माला फिराइत हैं, तुम्हें कुछ होये वाला नाहीं।"

अचानक मुखिया चौंक उठे। भगत ने उनके हाथ से हुक्का ले लिया था और नैचे को साफ करते हुए पूछा था, "का हुआ करसन?"

क्या हुआ, इसका उत्तर प्राप्त हो इसके पूर्व ही पिथू भगत ने ब्राह्मणों की

ओर देखकर समय पूछा । सारंग से आये हुए पुरोहित ने जेब से नक्कार की डिब्बी के आकार की घड़ी निकालकर दस बजने की घोषणा की ।

करसन मुखिया को भी बच जाने की खुशी तो थी लेकिन पियू भगत की भविष्यवाणी सच निकले, यह उन्हें पसन्द न था । मुखिया के तीनों लड़के भीमा, लला और जेठा अपनी निराशा को छिपाकर खुशी प्रदर्शित करने लगे थे । थोड़ी ही देर में सारे गाँव में समाचार फैल गया । "मुखी नहीं मरे" की जगह "मुखी मर गये" का समाचार सुनने की भी कुछ लोगों को प्रतीक्षा थी । करसन मुखी की लाश को जलाने के लिए नदी पर ले जाने की योजना थी । वहाँ आनेवालों को खिलाने के लिए विशेष लड्डू तैयार किये गये थे जिन्हें अब गाँव के बच्चों में बाँट दिया गया । लड्डू के बँट जाने से सारा वातावरण आनंदमय हो गया । मुखी के बच जाने से जिन्हें दुख हुआ था वे अपने बच्चों को लड्डू खाते देखकर खुश हो रहे थे ।

पियू भगत ने मुखिया से छुट्टी ली । उनके साथ साथ मुखिया मुहल्ले के छोर तक आये । वहाँ आकर उनसे ज्योतिषियों की भविष्यवाणी झूठी हो जाने का कारण पूछने लगे । भगत इतना भर कहकर चलते बने "इ तो जो हुआ वो हुआ । हर इच्छा भगवान की । पर तूका अब सुख से जिये का होय तो सुधरे क पड़े ।"

सुधरने का अर्थ क्या होता है, इस बारे में करसन मुखी ने आज तक कभी विचार नहीं किया था । उसकी जरूरत ही नहीं पड़ी थी । दरबार के आदमियों को संभालकर रखने और गाँव के आदमियों को दबाकर रखने की कला में वे पारंगत थे । जात-पाँत में, पंच-पंचायत में भी उनको अच्छीखासी पहुँच थी । अपनी किसी भी इच्छा-पूर्ति में आज तक कोई कठिनाई नहीं पड़ी थीं । अतः मन पर संयम रखने का प्रश्न उनके समक्ष आज तक नहीं खड़ा हुआ था । आज पहली बार उन पर भगत की सलाह का असर पड़ा । और वह असर खत्म हो जाये इसके पूर्व ही उन्होंने मन-ही-मन तय कर लिया कि अब कभी भी वे अपनी पतोहू की कोठरी में अँधेरे में नहीं जायेंगे और मुहल्ले के बाहर तो कभी पाँव भी नहीं रखेंगे ।

आँगन में जाकर खड़े होते ही उन्हें एक बात का पछतावा होने लगा । चार दिन पहले ही सारंग जाकर वे मुखिया का पद अपने बड़े लड़के भीमा को दिला आये थे । कल शाम को घर की लगभग तमाम संपत्ति भी तीनों लड़कों के बीच बाँट दी थी । भीमा की पत्नी पघी के पास कुछ गहने बचे रह गये थे जिनका बँटवारा नहीं हुआ था । लाला को शक था कि जमीन में गड़े हुए रुपये तो बाहर निकाले ही नहीं गये । लेकिन लड़के पहले कभी करसन के सामने बोले नहीं थे, इसलिए चुप्पी साधे रहे ।

अब लड़के कहना मानेंगे ? आखिर मुखियापद छोड़ देने की जरूरत ही क्या थी ? इससे अच्छा तो यह था कि मौत आ जाती ।

इस सारे मामले में नरसंग कहीं भी उपस्थित नहीं था । नमक-मिर्च लगी

बातें अब सुनने को मिलीं तो उसे बहुत मज़ा आया। मुखी का लड़का लाला भी इन बातों में मिर्च-मसाला लगाकर बताता था जिससे नरसंग को अचरज हुआ। लेकिन बाप के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने की सलाह उसने उसे न दी। वह खड़ा हुआ तो लाला भी उसके ही साथ चलने को खड़ा हुआ। "सही बता नरसंग, करसनकाका तुम्हें अब सुधरे नाहीं दिखात हैं ?"

नरसंग ने इसके बारे में कुछ सोचा न था। मुखी को भी इधर काफ़ी दिनों से नहीं देखा था। और वे बदले भी हों तो भी उसे उनमें कोई खास रुचि न थी।

"का मतलब है तुम्हार ?"

"मतलब तो कुछ नाहीं मगर जानकार लोगन क कहब है कि करसन मुखिया के देह मां पिथू भगत नवा जीव डाल दिहिन हैं। जोतिसिन के कहे से उनके जीव तो वही दिन निकर ग रहा।"

"अरे मगर मुखिया के देह मां डाले कि तई नवा जीव उ लाये कहीं से ? उ भगवान है का ?"

"टोना-टुटका जाननेवाले……"

नरसंग को क्रोध आ गया। सबके बीच ही वह ऊँची आवाज़ में बोला—"अरे तुम सब सारे हमरे बूढ़े का समझत का हो ? कामधंधा छोड़के इतनी टेम दूसरे क नकबांस करे बठे हो इस से अच्छा तो अफ़ीम का नशा करके खेते मां पड़े रहते। आज के बाद हमरे बुढ़ऊ क नाम लिहिस तो पांसर ढील के दे बे सारे। मुखिया ससुरा न मरा। अरे सार उ बदला होय य पहले जैसे दूसरे के औरतन के माला फिरावत होय हमें का ? जस करे तस भरे।"

नरसंग कभी-कभार ही गुस्से होता था। पर जब उसे गुस्सा आता था तो किसी की शरम नहीं करता। इस बात की वहाँ उपस्थित सभी को खबर थी। दो-चार गाली सुनाकर जब नरसंग वहाँ से चला गया तब वे सब कभी उसको मजा चखाने की योजना बनाने लगे। बड़ी देर तक विभिन्न प्रकार की योजनाएँ बनीं और बिगड़ीं लेकिन नरसंग उनमें किसी में भी नहीं फँसेगा—यह मानकर उन्होंने इस बारे में सोचना बंद कर दिया।

उठते-उठते लाला ने कहा—"भीमा क बात करब। उ नवा मुखिया बना है कुछ अक्केल दौड़ाये। और कुछ नाहीं तो उके गाय—गोरू तो कांजी-हौस मां बन्दे करे।"

3

चाँदनी का उजाला फैला था इसलिए आँगन में, रास्ते की ओर खाट को पर्दे की तरह खड़ा करके हेती नहाने बैठी थी। ओढ़नी और घाघा उसने खाट के पाये पर रख छोड़ा था और चोली को पीछेवाली चरनी पर रख दिया था। नहाते

समय अचानक चोली पर पानी के छींटे पड़ने का उसे ख्याल आ गया। सोचा; उसे भी खाट के पाये पर रख दे कि तभी किसी पुरुष के पैरों की आहट सुनाई दी। वह सिमट-सिकुड़कर थोड़ी देर बैठी रही। फिर बैठे-ही-बैठे हाथ बढ़ाया, चोली को उठाकर खाट के पाये पर रखने गयी किन्तु वह हाथ के छूट कर नीचे गिर गयी। नयी चोली भीग जायेगी और उसमें मिट्टी लग जायेगी यह ख्याल आते ही वह घबरा गयी। किन्तु खाट के उस पास पड़ी चोली को खड़े हुए बिना उठाये कैसे ? क्या करे ? ऐसे काम के लिए अंदर से माँ को थोड़े ही बुलाया जाता है ? वह कान लगाकर किसी के पैरों की आहट सुनने की कोशिश करने लगी। जब उसे लगा कि कोई नहीं आ रहा है तो धीरे-धीरे वह खड़ी हुई। खाट के ऊपर से सिर निकालकर देखा। फिर मन पक्का करके खड़ी हो गयी और देखते-ही-देखते उस पार पड़ी चोली उठाई और झाड़कर रख ली।

अचानक अपनी कंचन काया पर पड़ रही चाँदनी की चमक से उसकी दृष्टि बिंध गई। उसे अपनी देह इतनी सुन्दर कभी नहीं दिखी। वह स्वयं पर मोहित हो उठी। उसके रोम-रोम में रोमांच हो उठा। आषाढ़ की वर्षा से सफेद मिट्टी की तरह उसकी देह जैसे पहले चमकी फिर सुगंधित हो उठी थी। हेती की काया पर धीरे-धीरे पानी बह रहा था और उसका मन जैसे सहस्रों लहरों में तैर रहा हो। बाल्टी का पानी कब खत्म हो गया, इसका उसे ध्यान ही नहीं रहा। उसने खाली लोटे को ही अपनी छाती में दबाया और वह उसे अच्छा लगा।

ओसारे से बाहर आती हुई कंकू ने आवाज दी, "अरे! नहान में कितनी देर लागे !"

आवाज सुनकर जैसे हेती की शांत पड़ गयी! चूड़ियाँ खनक उठीं। बाल्टी का सारा पानी खत्म हो चुका था और उसे लग रहा था जैसे शरीर अभी तक भीगा ही नहीं। वह खाली बाल्टी की ओर देखती रही। उसकी इच्छा हुई कि माँ से और पानी मँगाकर नहाये। लेकिन माँ नाराज हो जायेगी, इस भय से उसने अपना मन मना लिया। हाथ बढ़ाकर खाट पर से उसने साया उठाया, पहना। भीगी हुई चोली पहनी। और ओढ़नी को ओढ़ते हुए वह माँ के आगे ही आँगन में थोड़ी देर खड़ी रही। फिर खाट को रास्ते की ओर बिछाया और उस पर बैठ गयी।

"अरे अबहीं कोई खेत मां गवा नाहीं और तू रस्ता मां खटिया डार के बैठ गयी ?"

"जायेंगे।" वह तो बिना किसी फ़िक्र के नन्ही बच्ची की-सी स्वाभाविकता से वहीं बैठकर आकाश में फैली चाँदनी देखने लगी। फिर जूड़ा खोलने लगी जैसे अचानक किसी की याद आ गयी हो। फिर कल सवेरे माँ से सिर में तेल लगवाने का संकल्प करती हुई बिछौना बिछाये बिना ही खाट पर लेट गयी।

"अरे भई, जरा ठीक से लेट।" कंकू ने सूँघनी सूँघते हुए धीरे से कहा

जिस पर हेती ने माँ की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। बस सहज भाव से उसकी ओर देखती रही। आँगन में चारों ओर चाँदनी फैली हुई थी। नीचे बालू में चाँदनी शीतल होती जा रही थी। खपरैल की नरिया की टेढ़ी-मेढ़ी रेखा उसकी छाया में वैसी ही नजर आ रही थी। हेती उस रेखा को एक ओर के उजाले की दिशा से तो दूसरी ओर के अंधेरे की दिशा से देखती थी।

"का करत है रे कंकू बहू!" तीसरे घर से आ रही दोलीमाँ बोलीं। आकर हेती के खाट के पास खड़ी हो गयीं। कंकू ओसारे की सीढ़ियाँ उतरकर चाँदनी में आ गयी। दोलीमाँ खाट के पाये के सहारे बैठ गयीं, कंकू उनके सामने बैठी। थोड़ी देर बाद मुहल्ले के छोर वाले मकान से जतन और चेहर भी एक के बाद एक आईं और बातचीत में शामिल हो गयीं।

थोड़ी ही देर में हेती बातचीत का विषय बन गयी। दोलीमाँ की राय थी कि हेती अब बड़ी हो गयी है इसलिए ओढ़नी की बजाए उसे साड़ी पहननी चाहिए। इस साल नहीं तो आते साल उसका गौना कर देना चाहिए। कंकू ने दोलीमाँ की इस राय को तनिक नहीं काटा। इससे उत्साहित होकर दोलीमाँ ने बात आगे बढ़ाई जिसका मतलब था कि होशियार वही है जो समय रहते चेत जाये। उसके बाद तो वे एक बात से दूसरी में, दूसरी से तीसरी में उलझती गयीं। उनसे यदि कोई कसर रह जाती तो जतन और चेहर उसे पूरा कर देतीं। उनकी बातों के पात्र तो अलग-अलग थे लेकिन विषय एक ही था। किसकी लड़की का कब गड्ढे में पाँव आ गया, किसके लड़के ने कब किसकी औरत से आँखें लड़ाईं वगैरा वगैरा। हेती इन सबकी बकवास से ऊब गयी थी। अचानक उसे लवजी की याद आ गयी। वह सींव की ओर खेलने गया था और अब तक लौटा नहीं था। उसे बहाना मिला उनके बीच से उठने का।

"अरे माँ, लवा अब तक नाहीं आवा!" कहते हुए हेती खड़ी हो गयी। खपरैल का अंधकार आधे आँगन तक आ चुका था।

लवजी को बुलाने जाए कि नहीं, यही सोचते हुए हेती रास्ते की ओर देखने लगी।

"सब देखा पर इ नाहीं देखा बहिनी।" दोलीमाँ ने तखत की बात उठाई थी। हेती व्याकुल होकर पानी पीने के बहाने भीतर चली गयी। ज्यों त्यों दो घूँट पानी पिया और घर के अंधेरे से बाहर आ गयी। तखत की शादी पहले इस सोमपुरा में ही हुई थी। लेकिन विधवा होने के बाद वह हेती के ससुराल वाले गाँव, गोकुलिया में बैठ गयी थी। सब लोग कहते कि उसने ही अपने पति को मार डाला था। यह बात सुनते ही हेती काँप उठती। उसे फिर देवू की याद आयी। अचानक उसे ख्याल आया कि आज शनिवार है। लवजी देवू और पिताजी के साथ महादेव के मंदिर में भजन-मंडली के बीच बैठा होगा। अब वह निश्चिंत भाव से चारपाई पर सो गई। अभी भी तखत की ही बात चल रही थी।

तखत सुडौल शरीर की लम्बी छरहरी-सी औरत थी। पहली बार जब वह ससुराल आयी तभी से पति के साथ उसकी नहीं बनी। कहनेवालों का कहना है कि तखत को न तो ससुराल में सुख न मैके में शांति। लेकिन तखत अपने मन की बात किसी से न कहती। वह अक्सर भरी दुपहरिया में खेत में हाड़तोड़ मेहनत करती रहती। लोग उससे इसके बारे में कुछ पूछते तो वह या तो चुप रहती या ऐसा जवाब देती जो किसी की समझ में न आता। लोग उसे घमंडी कहते। लेकिन उसके कुछ काम तो बड़े अजीब थे। गाँव के कुएँ से पानी भरकर लाती और घड़े को आँगन में उलट देती। फिर भरने जाती। कुएँ से पानी खींचकर भरने के लिए वह खूब बड़ी-सी बालटी रखती और बालटी को खींचने के लिए जिस रस्सी का इस्तेमाल करती वह उससे भी अधिक वजनदार होती। लम्बे लम्बे हाथों से वह रस्सी खींचती और बत्तीस हाथ की गहराई से खींची हुई बालटी ऊपर लाकर छलका देती। कभी-कभी तो अपनी बालटी का पानी दूसरे के घड़े में डाल देती और अपने लिए फिर से पानी भरती। ऐसा भी होता कि पानी भरने के बाद रस्सी कुएँ पर ही छोड़कर चली जाती और घर पर सास के कहने पर दुबारा आकर उसे ले जाती।

भैंसों के गोबर से भरी हुई डलिया हो या पानी से भरा हुआ बड़ा मटका—वह बिना किसी की मदद के ही उठा लेती। 'इसे मर्द के रूप में जन्म मिला होता तो अच्छा था' – उसकी सास जब खुश होती तो कहती। किन्तु तखत का चेहरा पूर्ण स्त्री का चेहरा था। युवतियों के बीच बैठकर बात करते समय उसका चेहरा अक्सर गुस्से और शरम से भरा रहता। उससे पूछे गये सवालों पर वह उपेक्षा से हँस देती तो उसमें एक तरह की स्वाभिमानी मादकता दीखती। कोई उसकी गहराई को नहीं समझ पाता।

आखिरी बार जब पीहर से बुलावा आया था तो वह वहाँ भाई के साथ नहीं गयी थी। उसने सिर्फ इतना कहा था कि यदि मै वहाँ आऊँगी तो दुबारा यहाँ नहीं लौटूँगी। बिना कुछ समझे भाई वापस चला गया था। तखत अपने मायके नहीं गयी इस बारे में तरह-तरह की बातें होती रहीं। कुछ लोगों को उसका न जाना अच्छा लगा। फुलवारी की तरह बल्कि हरे वन की तरह लहलहाती उसकी काया आँखों को अच्छी लगती थी।

पिछले साल तखत के पति के पास एक ही बैल होने की वजह से उसने छना के साथ साझेदारी की थी। घर जाने के पूर्व छना साथ देने के बहाने आता और बात में कोई दम न होने के बावजूद आधी रात तक साथ बैठा-बैठा चिलम पीता रहता। तखत छना के सामने घूँघट डाल लिया करती थी। इसलिए जब तक वह होता सो न पाती। अंदर के किवाड़ का टेका लेकर बैठी रहती।

उस रात खाने के बाद उसका पति छना के साथ वापस आया। तखत दीया बुझाकर सोने जा ही रही थी कि इतने में परों की आहट सुनकर रुक गयी। उसने

जेब से कुछ निकालकर तखत के हाथ में दिया । उसे पानी में घिसने के लिए कहा । तखत पहले शकभरी निगाहों से उसे और छना को थोड़ी देर देखती रही फिर चौके में रखी सिल पर उसे घिसने चली गयी । आज उसे छना से कुछ डर लग रहा था । लगा सीने में जैसे जलन हो रही हो । फिर उसके आसपास नीम के बौर की सुगंध फैल उठी । किन्तु दवा जैसी उस वस्तु को पानी में घिसते-घिसते उसके भीतर फिर पहले जैसी अलसता भर गयी । आज उसे उसका पति और छना दोनों एक सरीखे पुतले दिख रहे थे । दवा घिसने के बाद वह पीतल के प्याले में रखकर चौखट पर रख आयी । जब मँगाया तो पानी ले आयी । वह पी गया । दूसरे दिन बिलौने की बारी थी इसलिए वह घर ही रहा । छना अपने घर चला गया ।

तखत दीपक बुझाकर कोठरी में सो गयी । बाहर आँगन में सो रही बीमार सास जैसे नींद में कुछ बड़बड़ा रही थीं । उनकी बड़बड़ाहट शान्त होते ही सन्नाटा फैल गया । उसने कोठरी में आकर दीया जलाया । सिंदूर का पात्र लाकर खाट के नीचे रखा । फिर डरते–डरते तखत के कपड़ों को ऊपर खिसकाया । तखत ऐसे लेटी रही जैसे सो रही हो । उसने तखत की जाँघ पर सिंदूर से लकीर खींची । तखत के लिए यह स्पर्श असह्य हो गया फिर भी आँखें बन्द किए लेटी रही । दूसरी बार भी जब उसकी भीगी ऊँगलियाँ ने जाँघों का स्पर्श किया तो उसे लगा जैसे बिजली गिर गयी हो । वह उठकर बैठी । हथेली से दीया बुझाकर पति को अपने ऊपर खींच लिया । अपने आवेश में पति की मंद पड़ती साँसों और ठंडे होते जा रहे शरीर पर ध्यान न गया। भरी हुई छातियों में उसका मुँह दबाकर इस प्रकार पड़ रही जैसे बाढ़ में कोई लट्ठा पकड़कर तैर रही हो ।

ऐसा क्यों हुआ ? उसे बहुत देर बाद शंका हुई । कपड़ा ठीक करके उसने दीया जलाया । इन्हें क्या हुआ होगा ? सास को जगाने की इच्छा हुई । किन्तु वह जागते ही चिल्लाने लगेगी ऐसा सोचकर थोड़ी देर चुपचाप बैठी रही । मन मजबूत करके वह छना के घर जाने के लिए निकली । छना का घर गाँव के बिल्कुल किनारे पर था । उसने सोचा यहीं से आवाज दूँ । किन्तु लोग जाग जायेंगे और अकारण ही ऊटपटांग बातें करेंगे, यह सोचकर वह छपरे के नीचे ओसारे तक गयी और छना की खाट का अंदाज लगाकर नजदीक जाकर धीमी आवाज में बोली–'छना भाई !" छना कुनमुनाया । वह उठकर बैठा । तखत ने उसे सब कुछ बताया । यह कहा कि वह तो सवेरे ठीक हो जायेगा । उसने तखत का हाथ पकड़ा । पल भर के लिए वह निराश होकर चुपचाप खड़ी रही फिर हाथ छुड़ाकर भागी । घर जाकर उसने पति का लाश जैसा शरीर उठाया और लाकर छना की खाट में डाल दिया । छना ने हो हा किया लेकिन तब तक वह गायब हो चुकी थी ।

छना पास-पड़ोसियों को जगाकर मुखिया के घर गया । करसन मुखी ने थोड़ा सोच-विचार कर, लाभ की आशा से थानेदार को बुलाया । छना ने कहा था कि

तखत ने शाम को पानी में घोलकर अपने पति को कुछ पिलाया था। वह मर गया तो लाश मेरे घर डाल गयी। तखत के पाँव के निशान पहचान लिये गये। थानेदार को उसने सब कुछ सच-सच बता दिया। छना तो पहले ही रिश्वत देकर मुक्त हो गया था किन्तु तखत को शीघ्र छोड़ने की थानेदार की इच्छा न थी। और तखत का भाई न आया होता और थानेदार की जेब गरम कर मुखिया की रहम हासिल न की होती तो उस बिरादरी की एक औरत जेल में चली जाती और सारी जाति की नाक कट जाती। रिश्वत देकर तखत के भाई ने उसे छुड़ाया, इसी बात पर लोगों ने उसे खूनी मान लिया और फिर तो वह भी अपना बचाव करने के बजाय "हाँ, हमने मार डाला", कहकर चुप हो जाती। थानेदार ने उसे एकदम बदल दिया था।

यही तखत हेती की ससुराल वाले गाँव धरोवे गयी है यह जानकार दोलीमाँ के गुस्से की कोई सीमा न रही और अपनी नाराजगी जताने के लिए वह बार-बार यही बात शुरू कर देतीं।

जब सब उठने लगे तो हेती ने कहा, "दोली माँ, अब हमरे अंगना मां बैठके ऊ रांड क बात न निकार्यो।" "अच्छा भाई", कहते हुए दोली माँ चली गयीं। सोते समय कंकू ने हेती से कहा-'दोलीमाँ से ऐसी बात कीनी जात है?' हेती ने छोटा-सा उत्तर दिया-"उनकी बात सुनके हमें बहुत डर लागत है।"

4

सबसे पहले नरसंग से रिश्वत लेकर, भीमा गाँव में मुखियागीरी की शुरूआत कर सके, ऐसा एक मौका आ गया था। वैसे तो वह नरसंग के रास्ते में न आता लेकिन दो दिन पहले ही करसन ने उसे बुरी तरह डाँटा था। मुखिया बन जाने की खुशी में वह सारंग जाकर एक शानदार हुक्का खरीद लाया था। करसन ने पहले तो अपनी बूढ़ी लेकिन बड़ी-बड़ी आँखें दिखाकर उसे धमकाना चाहा। लेकिन भीमा ने जब उनकी ओर देखा तक नहीं और आराम से बैठे-बैठे हुक्का पीता रहा तो करसन को एक चालाकी सूझी। डाँटने के बदले उन्होने उपदेश देना शुरू किया "घर के पैसे से तमाकू पिये का होब तो मुखिया भये का मतलब का भवा भाई?"

रिश्वत लेने से भीमा को कोई आपत्ति न थी। छोटा था तभी से वह अपने बाप को रिश्वत लेते देखता आया था। इसलिए उस कला से अपरिचित न था। लेकिन कोई आसामी हाथ में तो आना चाहिए न? पहला शिकार नरसंग को बनाने का मौका हाथ लगा।

छना भरी हुई गाड़ी लेकर चकरोड से होते हुए गाँव को आ रहा था। नरसंग ने थोड़ी देर पहले ही गाँव के चमार के द्वारा बबूल कटवाया था, उसका तना चकरोड में तिरछा पड़ा था। उसे खिसकाये बिना गाड़ी का आगे निकलना संभव न था। आजकल गाड़ी का कोई खास काम नहीं पड़ता, यह मानकर नरसंग ने तने को

खिसकाने में जल्दबाजी नहीं की थी । छना बौखलाया तो बहुत लेकिन बोलने में कुछ होनेवाला नहीं था । फिर भी गुस्से को दबाकर वह इतना तो बोला ही—"नरसंग भैया, हमे इ गाड़ी इहां छोड़े के पड़ी का ?"

"छोड़े का होय तो छोड़ देव, भाड़ा तो देय क पड़ी," कहकर नरसंग अपना जूता खींचने लगा । दूर पड़े हुए जूते को लाने में देर होने से ऊबकर छना ने बैल खोल दिए । और तने को हटाने लगा । बहुत कोशिश के बाद भी वह उसे हिला तक नहीं सका । नरसंग ने आते ही डंडे की मदद से तने को रास्ते से हटा दिया और बोला—"लंबी-लंबी मूँछ रख लिहे से कोऊ मरद नाहीं होय जात है ।"

छना तमतमा कर चला गया—बिना कुछ बोले हुए । शाम को घूमते-घूमते भीमा के पास गया और वहाँ उसने बढ़ा-चढ़ाकर सारी शिकायतें कीं । बबूल तो सरकारी होगा ? तुमसे पूछकर काटा है उसने ?

शाम को भीमा ने नरसंग को बुलाया लेकिन नरसंग आया नहीं । खेत की ओर जाते हुए दूसरे दिन सुबह वह भीमा के घर गया । भीमा ने उसे उपेक्षा भरी नजर से देखा । लेकिन कुछ बोला नहीं । नरसंग के पूछने पर कि उसने किस काम से बुलाया है, भीमा ने उसे बैठने के लिए कहकर अपनी लड़की को भेजा कि माना को बुला लाये । माना में तीन-पाँच करने की विशेष योग्यता है, उस बात की जानकारी नरसंग को भी थी ।

"माना के आवे क बाद बात करि हौ ?" कहते हुए नरसंग व्यंग्य में हँसा । भीमा को अपमान-सा लगा । वह रोब से उठा और खाट गिराकर उस पर बैठ गया । माना को बुलाकर लायी लड़की से उसने हुक्का भर लाने के लिए कहा । माना भी खाट के पैताने बैठ गया और पत्थर पर बैठे नरसंग की ओर उसने बड़े अभिमान से देखा ।

"नरसंग, तोर कितनी उमर भया रे ?" भीमा ने बात शुरू की ।

"भा होई चालीस जितनी ।"

"अपने बुजुर्ग तो पचास पर ब्याह-शादी करत रहें ।"

"अरे मुखिया, तू पचास क बात करत है कुछ लोगन क तो साठ-बाँसठो मां धोती ढील होय जात है," नरसंग ने सनसनाता हुआ जवाब दिया । माना और भीमा समझ गये कि नरसंग का संकेत करसन की ओर है । उन्हें कड़वा घूँट पीकर रह जाना पड़ा । भीमा का ताव कुछ कम पड़ा और कल शाम से ही सोच रखी बात आगे बढ़ाई—

"इ तो पता लागा है कि राजा की कुँवरी अबहौ अनब्याही है और वे सोच रहे हैं कि जब तक राजा क सामना करे वाला कोउ न मिले तब तक......" नरसंग ने उसकी बात बीच में ही काटते हुए उकडूँ बैठते हुए कहा—

"देख भिमिया, राजा क कुँवरी हमरे मन मां हमरे देती जैसी । तो हमरे

आगे उलटी-सीधी बात क करेब नाहीं तो बहुत बुरा होय। तू मुखिया बन गये हो इ हमे मालूम है लेकिन रुआब गांठे क होय तो कौनो लल्लूपंजू के आगे गांठो। समझ्यौ ?"

बड़ी देर से तिलमिला रहे माना ने अब कर्कश आवाज बोली—"नरसंग, मुखी से तुकार क बात न करो। मुखिया है उ राजा क आदमी होय जात है।"

"नियाव से चले तो माई-बाप। अनियाव से हेरान करिहैं तो कौनो दिन इन क हुलिया बिगाड़ देई। हम तो सीधी बात जानित हैं। उ दिन मुखिया क धूल चटावा रहा भूल गयौ का ? ससुर यक तो पीये रहा ऊपर से राहगीरन का लाठी मारत रहा सार।"

"तू नरसंग फालतूएम गरम हो गयौ।"—भीमा हुक्का माना को देते हुए बोला।

"तो सीधी बात कह न–" तना बैठा नरसंग गरजा, "जौन कहै क होय सीधे कह देव।"

इस पर भीमा ने कहा सीधी बात तो तुम भी जानत हो नरसंग। बोलो नहीं जानते कि सरकारी पेड़ काटना गुनाह होता है। नरसग ने कहा यह सही है कि सरकारी पेड़ काटना गुनाह है, इससे तो कोई भी इनकार नहीं कर सकता। नरसंग निश्चिंत होकर बात करता जाता था और मूँछ ही मूँछ मुस्काता भी जाता था। मुखी नीचे देखते हुए पाँव खुजलाते हुए बोला—

"छनिया तो कहत रहा कि तू चकरोड वाला बबूल काप्यौ है।"

"छनिया क बात सौ फीसदी सही है। न विसवास होय तो आऊ हमरे साथ हम दिखाइत है।"

"ते तो बहुत बोल लागिस है रे नरसंगवा।" माना ने कहा, "उरे पेड़ काटे क पहिले मुखिया से तो पूछे क रहा मूरख !"

नरसंग ने कहा कि वह किसी से क्यों पूछे। हमारे बाप ने बबूल लगाया था, हमो काट लया। फिर अब तक उससे जो नुकसान होता था वह भी हमें ही उठाना पड़ा है।

भीमा ने कहा—'देख, तूने जो किया, ठीक किया लेकिन बोल किसी भी पेड़ में राज का आधा हिस्सा होता है कि नहीं ?' उसने कहा कि कल को कोई राजा से शिकायत कर दे तो ?

"तुम्हार बात सही है पर हम जौन पेड़ काटा है उ सरकारी किताब मां नाहीं लिखा।" नरसंग बोला।

"भले न लिखा होय... "

"तुहरे बाप कि गलती निकरे।" नरसंग ने हँसते हुए कहा।

"उही क कौनो रस्ता निकारा जाये। पर हमें तो यही देख रहे हैं कि बबूल तुम काटेव है और उके तना अब हीं चकरोड मां पड़ा है। और कोई इ गुना

किहे होत तो अब तक कबसे रपट कर देत मुला अपने बीच बहुत साल से अच्छा संबंध है........."

"नियाव के बाबत मां संबंध न देखो।"

नरसंग हँस पड़ा। यह देखकर निराश माना ने कहा, "अरे अब बात खतम करो मुखी।" फिर वह उठकर नरसंग के पास बैठ गया, "देख नरसंग, अपने पहले से सोच-बिचार कर दीवान बाबू के गुमाश्ता का एकाध ठो रुपया पहुँचाय देइ तो बात सब खतम होय जाय।"

"वाह रे माना वाह, मतलब इ कि अपने घर क बबूल खुद हम हीं रिश्वत से लेई ? अस कहूँ होत है ?"

भीमा और माना अभी भी हार माननेवाले नहीं थे। इतने में खेत की ओर से करसन मुखी आ गये। वे किसी को गाली देते हुए आ रहे थे। उनकी गाली का विषय था आजकल की औरतें। उन्होंने नरसंग को देखकर विषय बदल दिया। बबूल के बारे में वे जान गये थे। माना-भीमा के चेहरे देखकर उन्हें यह भी पता चल गया था कि अभी उनके हाथ कुछ लगा नहीं है। उन्हें खुशी हुई। अरे लम्बरदारी तो हमने की है। इन लोगों के बस की बात नहीं। हमारी सलाह लिए बिना कुछ करेंगे तो क्या हाथ आयेगा ? उन्होंने पाँव का जूता निकालकर उसकी धूल झाड़ते हुए कहा - "अरे भिमिया, तू उलटा फँस गया। लम्बरदारी कौनो खेल नाहीं। अरे तुझे कोई न मिला तो भगत क नरसंग मिला रहा ?"

भीमा के लिए यह असह्य था। किन्तु करे क्या ? करसन मुखी भले साठ साल के हो गये हों किन्तु अभी उनकी चाल में जवानी जैसी अकड़ थी। उससे एक बालिश्त ऊँचे। अधूरे में पूरा यह कि इस समय वे एकाध गिलास चढ़ाकर भी आये थे। बोलते-बोलते दिमाग़ ख़राब हो जाये तो माँ-बहन की सुनाने लगें। सम्मान-रक्षा के लिए भीमा ने बात को समेट लेना चाहा किन्तु उसे कोई मार्ग सूझ नहीं रहा था। माना भी बुढ्ढे को देखकर चुप हो गया था। नरसंग थोड़ी देर उन दोनों के चेहरों के भाव पढ़ता-सा बैठा रहा फिर खड़ा हो गया-"दरबार मां आय क हो तो कहेन मुखी। कौनो रस्ता न सूझै तो हमें कहेव।" कहते हुए वह अपने जूतों को खट-खट करता हुआ देखते ही देखते ग़ायब हो गया।

5

दोलीमाँ लवजी की सगाई की बात लेकर आयी थीं। सामने वाले पक्ष को कन्या के एवज़ में कन्या चाहिए थी। कंकू कृतज्ञ होकर दोलीमाँ की बात सुनती रही। सुँघनी की डिबिया खोलकर उनके पैर के पास रख दी। देवू की सगाई हुई उसमें भी दोलीमाँ का ही हाथ था।

"उनसे पूछ कै बताउब।" कहकर कंकू ने दोलीमाँ की प्रशंसा करनी शुरू कर

दी। प्रसंशा में उसने नया कुछ नहीं कहा था। सिर्फ वही शब्द, जिसका उपयोग दोली माँ अपने लिए करती थीं, कंकू ने इस मौके पर दुहरा दिए। तारीफ सुनकर दोली माँ प्रसन्न हो गयीं और उन्होंने सुँघनी ज़ोर से खींची।

जैसे किसी बहुत महत्त्वपूर्ण बात की याद आ गयी हो, दोली माँ ने भगवान का नाम लिया और हेती के गौने की बात शुरू कर दी। हेती की बिदाई ! बात सुनकर पहले तो कंकू चौंक पड़ी किन्तु दोलीमाँ और कुछ बोले इसके पहले ही कंकू को लगा कि दोलीमाँ की बात सच है। हेती अब बच्ची नहीं रही। सत्रह की नहीं तो सोलह की तो हो ही गयी होगी। जिस साल गुड़ का भाव बढ़ा था उसी साल हेती का जन्म हुआ था। देखते-ही-देखते अपने बराबर हो गयी है। साड़ी पहन ले तो पूरी औरत लगेगी।

"गौना तो करे क पड़ी दोलीमाँ। उ के बिना कहाँ छुटकारा !"

दोलीमाँ को जवाब अच्छा लगा। वे कहती भी थीं कि औरतें तो बहुत देखीं पर नरसंग की घरवाली जैसी एक भी नहीं। वे हेती को बिदाई में होनेवाले खर्च की बात करने लगीं। फिर अचानक बोल उठीं कि सामने वाले पहले देवू की शादी कर दें उसके बाद ही हम हेती का गौना करेंगे।

"तुहार बात सवा लाख की दोलीमाँ।" कंकू ने कृतज्ञता से कहा। फिर वह घर के बाकी काम के बारे में बात करने लगी। थोड़ी देर तक बैठकर दोली माँ चली गयीं। उनके जाने के बाद हेती काफ़ी देर तक उनकी नकल उतारती रही। लेकिन अदब के साथ।

दोपहर में खेत पर हेती को रोटी लेकर भेजने के बजाय कंकू स्वयं गयी। पहले से ही भिगोकर रखे कपड़े भी धोने के लिए अपने साथ लेती गयी।

कुंडी के पानी में साड़ी का गहरा लाल रंग छूटकर मिल गया था। शायद बैल अब पानी नहीं पियेंगे इस दहशत से नरसंग बोला-

"पहले इ बरदा का पानी पी लेय देय क रहा। अबतै धोवै बैठ गयी।"

बैलों ने पहले तो कुछ आनाकानी की फिर पानी पीने लगे। फिर भी कंकू को बहुत अफसोस हुआ। नरसंग कुछ नहीं बोला। चुपचाप बैलों की पीठ पर हाथ फिराता रहा। पानी पी लेने के बाद बैलों को खूँटे से बाँधा। मटके में से कुल्हड़ में पानी निकालकर हाथ मुँह धोया। रोटी का झाबा नीचे उतारा और खाने बैठा।

"बुढ़ऊ क रोटी लाई है ? वे तो सारंग गये हैं।"

ससुर कहीं बाहर जायें और घर कहे बिना जायें यह कोई आश्चर्य की बात न थी। भगत एकाध दिन खाना न मिले तो भी पतोहू की शिकायत नहीं करते। इस उम्र में उनकी दो ही कमजोरियाँ थीं। एक तो यह कि आधी रात को भी हुक्का पीते और दूसरी यह कि दस-पन्द्रह दिन के अन्तराल में सुखड़ी खाते। पहले तो वे मंदिर में चढ़ाने के लिए सुखड़ी बनवाते, बाद में भगवान के साथ ही स्वयं को

भी शामिल कर लिया था। थाली भर की खुलड़ी उन्हें चाहिए थी। खुद खायें और दूसरों को भी खिलायें।

कंकू को आज अच्छा लग रहा था। आज बहुत दिन बाद ऐसा संयोग आया था कि वह रोटी लेकर आयी हो और खेत में कोई दूसरा मौजूद न हो। उसे लग रहा था जैसे कल ही ससुराल आयी हो। उसने खेत की जोती हुई जमीन की ओर देखा। धूप बढ़ेगी, फिर आषाढ़ आयेगा। किसी ने ठीक ही कहा है—धरती सदा कुँआरी।

रोटी की झबिया नीचे उतारकर बैठा ही था कि नरसंग को स्नान की इच्छा हुई। पानी भर-भर कर वह अपने शरीर पर डालने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने पीठ मलकर दो–तीन वर्ष से नहीं नहाया है। पहले जब वह सारा दिन हल चलाकर थका-हारा शाम को घर आता था तो हल्के गर्म पानी से कंकू उसे नहलाती, पीठ मलते समय चूड़ियाँ खनकती रहतीं, जिसे सिर्फ़ वही सुन सकता था। पहली डोल खाली करने के बाद वह बोला—"जरा काँधे पर हाथ लगा दो "

"सरम करो कुछ सरम। आऊ खाना खाय लेव नाहीं तो रोटी सुखाय क लकड़ी होय जाये।"

कंकू ने सारा खाना निकालकर रख दिया। पानी भी ले आयी और नरसंग के पास आकर बैठ गयी। नरसंग चुपचाप बैठा रहा।

"काहे बैठे हो चुपचाप ?"

"आज तो तू खिलाव तो खाब।" कहते समय नरसंग की आँखें कह रहीं थीं कि कंकू उसके एकदम करीब आकर बैठ जाये।

"कस लड़कपन सूझत है।" कहते हुए वह नरसंग के पास गयी और गुड़ का एक टुकड़ा डरते-डरते उसके मुँह में रखकर उसने हाथ को जल्दी से खींच लिया। कहीं उसकी ऊँगलियाँ नरसंग के दाँत के नीचे न आ जाये।

नरसंग हँस पड़ा।

कंकू का चेहरा सुर्ख हो गया। खुशी से उसकी छाती धड़कने लगी। अचानक ठंडी हवा की एक लहर उस पर से गुजर गयी। आम की डाल पर कोयल कूकने लगी। वह खड़ी हो गयी। छपरे का टेका लेकर खड़ी रही। नरसंग खाता रहा। वह देखती रही। सपनों में खोई–खोई।

कंकू ने लबजी की सगाई की बात चलाई। वह छः-सात साल का हो गया है। इसी तरह अगर दोएक वर्ष और बीत जायेंगे तो लोग ताने मारना शुरू कर देंगे। नरसंग भी इस बात से सहमत था। दोलीमाँ संबंध लेकर आयी हैं, तो भला उसमें कमी क्या होगी ! फिर भी बापू की राय ले लेंगे।

बात ही बात में हेती के गौने की भी बात निकली। जब तक सामने वाले वेषू की शादी न करें तब तक हेती को ससुराल भेजें, न भेजें, इस बारे में नरसंग कोई शर्त नहीं रखना चाहता था। मूलजी उसके समधी थे। उनकी बात पर उसे

भरोसा था। दामाद अहमदाबाद में पढ़ता था। इस वर्ष ही हेली को चार-छः दिन के लिए भेज देना चाहिए। कुछ गहने-वहने भी बनवाने पड़ेंगे। दो में से एक भैंस बेच देंगे। सब ठीक हो जायेगा। वक्त-जरूरत पर सौ-पचास ब्याज पर भी ला सकते हैं। सब ठीक हो जायेगा। बुढ़ऊ आज यहाँ होते तो आज ही सब पक्का करके मूलजी समधी को संदेश भेज देते।

बात चल ही रही थी कि घेमर नाम का एक नवजवान हाथ का दबाये हुए चिल्लाता हुआ आया। वह जितनी शक्ति रोने के पीछे खर्च कर रहा था उतनी दौड़ने के पीछे नहीं। वह "पिथू बाबा पिथू बाबा" के नाम की रट लगाए था।

"का भवा से घेमरिया ?"

"बीछी काट लिहिस।"

"तो इ माँ इतनी जोर से काहे चिल्लात है ! सरम नाहीं आवत भले मानुस ? गेदहरा हौ का ?"

"तुमका काटे होय तौ पता चले नरसंगकाका। कहाँ गये पिथूबाबा ?"

"बुढ़ऊ तो सारंग गये हैं। चल बैठ जा। हम झार देई।"

"तुम झरबो ?" कंकू हँस पड़ी। "चिरई के जीउ जाय लड़कन के खिलौना !" घेमर की ओर सहानुभूति से देखते हुए वह पूछने लगी कि बिच्छू ने कहाँ और कैसे काट लिया।

उसने बताया कि कल ही किसी ने कहा था कि बिच्छू को मारने से पाप लगता है। गोबर उठा रहा था कि वह दिख गया। मैंने सोचा, उठाकर दूर फेंक दूँ। जैसे ही उसकी पूछ पकड़ने गया उसने डंक मार दिया।

सब हँसने लगे। नरसंग ने, बिच्छू के काटने की जगह राख मलते हुए पता नहीं कौन-सा मंत्र पढ़ा कि घेमर का दर्द दूर हो गया। शरीर ढीला करके वह आराम से बैठ गया। फिर थोड़ी देर बाद उठ खड़ा हुआ। और अब बिच्छू काटेगा तो रोऊँगा नहीं, यह वादा करते हुए चला गया।

नीम के नीचे खाट को खींचकर नरसंग ने अपनी कमर सीधी की। कंकू गोरू के गोबर को भरकर घर जाने की तैयारी ही कर रही थी कि इतने में देवू और लवजी वहाँ दौड़ते हुए आ पहुँचे।

"अरे घाम मां का करै आये हौ ?"

"खेलै" कहते हुए दोनों खाई के पास वाले आम के पास भाग गये। कंकू गाँव की ओर जाने के लिए चकरोड की ओर मुड़ी। बैलों के गले की घंटियाँ बजीं। खाट पर लेटे नरसंग की आँख लग गई।

6

गाँव की सींव से लगे पंचायत घर के चौतरे पर सात-एक आदमी बैठे थे।

उनके बैठने से सप्तर्षि का आकार बन गया था जिसका उन्हें ज्ञान न था। आँखों के सिवाय उनके शरीर के सभी हिस्से स्थिर थे। इस समय वे दबी जबान से कोई महत्त्वपूर्ण बात कर रहे थे। उनकी निगाह रास्ते पर थी। इसी तरह हमेशा बैठने की उनकी आदत थी जिससे मुहल्ले में आते-जाते सभी लोगों को वे देख सकें, विशेषकर जवान बहू-बेटियों को।

बहू-बेटियाँ इन लोगों को नकटा कहा करतीं। वे न सुन सकें, इस प्रकार उन्हें गालियाँ देतीं। किन्तु किसी ने आज तक उनका सरेआम अपमान किया हो ऐसा नहीं हुआ। क्योंकि वे सब बहुत ही मिलनसार थे और अपमान के कड़वे घूँट पी जाने के आदी हो गये थे। बच्चे भी उनसे नहीं डरते थे किन्तु कभी-कभार गाँव के कुत्ते उन्हें देखकर अवश्य भौंकने लगते। क्योंकि उन लोगों ने एक बार गाँव के सभी कुत्तों को नदी के उस पार भेजने का प्रयास किया था। अब तक की उनकी जिन्दगी की सबसे आकर्षक घटना यही थी। गाँववाले तो इन बातों को भूल गये थे किन्तु कुत्ते भूलने को तैयार न थे।

उन लोगों की भी याददाश्त बड़ी अच्छी थी। नयी-पुरानी सभी औरतों के नाम उन्हें कंठस्थ थे। बात चल रही हो, कोई किसी औरत का नाम भूल गया हो और कोई दूसरा उसे याद दिलाता हो ऐसा आज तक नहीं हुआ। हर-एक स्त्री के रूप, गुण, चालचलन पर वे एकमत थे। जब फुरसत मिलती कि गलत मार्ग पर चलने-वाली किसी स्त्री की बात में थोड़ा नमक-मिर्च लगाकर अपने सूखे मुँह को गीला रखते। वार्तालाप की डोर इस समय, उन सातों में सबसे अधिक उम्र के, संयोगवश अविवाहित रह गये, घमला माली की उपाधि से सम्मानित और अब इसी नाम से पहचाने जानेवाले, तकरीबन चालीस वर्ष के नौजवान के हाथ में थी। वह दस्तखत कर सकता था। दाहिने हाथ के अँगूठे का निशान करने के बदले वह बायें हाथ से कलम पकड़कर पाँच ही मिनट के अन्दर मात्र एकाध मात्रा और बिन्दी की छोटी-मोटी भूल के साथ अपना उपनाम और पिता का नाम लिख सकता था।

घमला खाते-पीते सुखी परिवार का था। लेकिन गाँव में उसकी इज्जत न थी। उसके आचार-विचारों के बारे में लोग एकराय नहीं थे। वह कल क्या करनेवाला है, इस बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता था। कभी-कभी तो उसके द्वारा किया हुआ सही काम भी लोगों को गलत लगता। वह स्वयं भी जानता था कि उसकी उदारता को उड़ाऊपन कहकर उसकी अनदेखी कर दी जाती है। लेकिन इसका उसे कोई हर्ष या शोक नहीं होता। एक अच्छे और मस्त आदमी की तरह वह सारे इलाके में छाया रहता। वह अनिच्छा से ही अविवाहित रह गया है, यह बात सभी को मालूम थी। अभी भी उसने आशा नहीं छोड़ी है। किन्तु विद्वान लोग जिसे वासना की, अतृप्ति की कुंठा कहते हैं, वह उसमें नहीं थी। इसके लिए वह कहीं भी [illegible] खोज लेता। सुराख दिखते ही छिद्र बनाकर घुस जाने की उसमें हिम्मत थी। संसार और संसार-संबंधी अपने ज्ञान से वह बहुतों को मोह लेता।

जहाँ उसके ज्ञान की कसौटी का क्षण आता वहाँ वह शांत श्रोता बन जाता। वैसे उसकी बात का विरोध करनेवाले अच्छे-अच्छों को वह पल भर में चुप कर देता था। वह जब-जब किसी से लड़ा कुछ नयी गालियों का आविर्भाव जरूर हुआ। विरोधी-पक्ष यदि कोई चालाकी करता तो वह अंग्रेजी के भी दो-चार शब्द फटाफट बोल जाता, जिसका अर्थ उसी की तरह कोई दूसरा भी नहीं जानता। मंदिर के सिवा उसकी वाणी हर स्थान पर बेरोक-टोक प्रवाहित होती और सम्मानित भी होती। इस समय वह राजकुमारी की घुड़सवारी के बारे में अपने ज्ञान से सप्तर्षि-मंडल के अन्य सदस्यों की जिज्ञासा शान्त कर रहा था। एक बार राजकुमारी के हाथ से गिरी नाज़ुक छड़ी को उठाकर उसने अपनी धोती से साफ करके उसके हाथ में थमा दिया था। उसी प्रसंग का वर्णन चल रहा था। इतने में घर से खेत की ओर जा रहे पिथू भगत पर उसकी नजर पड़ गयी और उसे लगा जैसे उसके रूआब का दीप अस्त हो चला है। पड़ोस में बैठे हुए साथी ने पूछा-"का धमा भाई, गटई माँ का अटक गवा ?"

"इ भगत सबेरे क पहर दिखान हैं अब पूरे दिन कौनो खराब काम करे क होय तबौ न होये। वह दिन धागा बाँधक हमैं अच्छा कहिन हैं तब से..... " फिर आवाज को स्वाभाविक बनाकर उसने भगत को बुलाया - "अरे आव-आव भगत बाबा। हम अभागन पर जरा रहम करत जाव।"

पिथू भगत तनिक हँसकर अपनी राह पर चल पड़े। किन्तु धमला के साथियों ने कसम खिलाकर भगत को चौतरे तक बुला ही लिया। भगत जानते थे कि ये लोग पीठ पीछे तो मेरी निन्दा करते हैं। लेकिन इस समय उनकी बात टालना उन्हें भी अच्छा न लगा। आकर उनके बीच बैठ गये। उनमें से एक ने बात छेड़ी-

"पिथू बाबा, इ धमाभाई कहत रहे कि दरबार के राज चला जाये।"

पिथू भगत ने जवाब दिया कि दरबार के राज का तो जो होना होगा, होगा लेकिन अंग्रेजों के चले जाने की बात अवश्य चल रही है। उन्होंने कहा - "कुछ दिन पहिले हम सारंग ग रहिन। सब सेठ बतलात रहें।"

"अंग्रेज तो जावे करिहें। इहां क घूम उ नाहीं सह सकते।" धमला ने गंभीरता से जवाब दिया।

पिथू भगत ने कहा कि अंग्रेज तो सब कुछ सहन कर सकते हैं लेकिन सेठ लोग कह रहे थे कि उनके देश में इस समय कुछ अच्छे लोग सरकार में बैठे हैं। वे लोग हिन्दुस्तान छोड़ देना चाहते हैं।

"ऊ सब तो ठीक है भगत, पर अपने इ राजा क का होई इ कहो।"

इस पर भगत ने कुछ पिछली घटनाएँ बतानी शुरू कर दीं।

एक बार राजदरबार से धमला का बुलौवा आया। 'बीमार हूं,' कहकर धमला घर पर ही पड़ा रहा। करसन मुखी ने रपट कर दी थी, अब क्या होगा? धमला भगत के पास सलाह लेने गया। उसने कहा, 'मुझे मंतर मार कर बीमार कर दो पिथू

जाना नहीं तो मर जाऊँगा । उस प्रसंग को याद करके पिथू भगत ने धमला से पूछा कि उसे यह घटना याद है कि भूल गया !

धमला इस प्रसंग को भूल गया हो, ऐसी बात नहीं थी । लेकिन सबके बीच उस अपमानजनक घटना को याद करने की इच्छा नहीं हो रही थी । भगत को बुलाकर यहाँ बैठा लिया इसके लिए उसे पश्चात्ताप होने लगा । यहाँ भगत न होते तो वह बात को टाल देता । फिसलकर गिर जाये तो वह कह सकता कि नमस्कार किया है इस तरह का वह आदमी था । अब भगत उठकर चले जायें तो अच्छा, वह तब तक यह सोचता रहा जब तक भगत सचमुच उठकर चल नहीं दिये । ज्यों "वीणा-वेली" नाटक के धमले को राजकुमारी नसीब होती है उसी तरह इस धमा भाई का भी भाग्य खुल जाए तो – ऐसी-वैसी बातें करते सभी साथी अपने-अपने रास्ते गये । धमला जल्दी-जल्दी अपने घर गया । एक हाथ में रस्सी और बाल्टी ली, दूसरे में मटका और वह गाँव के कुएँ की ओर चल पड़ा ।

धमला ने कुएँ में बाल्टी उतारी ही थी कि भीमा मुखी को सपरिवार आते हुए देखा । धमला जब कोई कार्य कर रहा होता तो काम से अधिक उसका ध्यान आस-पास की दुनिया में रहता । तभी वह साफ़ तौर पर देख सका कि कौन-कौन जा रहा है । बाल्टी के पानी को मटके में डालकर वह आगन्तुकों की ओर मुड़ा और भीमा मुखी से बोला "क्या बाजार करने चले मुखी ?"

भीमा ने 'हां' कहा और धमला को भी सारंग आने के लिए कहा । उसने औपचारिकता के नाते कहा था लेकिन धमला बोला–"तुम चलो, हम भी पीछे-पीछे पहुँचित हैं ।" और पानी भरने लगा ।

मुखी के साथ संबंध अच्छा रखना हो तो इस तरह बोलना चाहिए कि उसे अच्छा लगे । उसने घर जाकर नास्ता करके सारंग की राह पकड़ने का सकल्प किया । शादी-विवाह के दिन उसके हिसाब से वर्ष के श्रेष्ठ दिन होते हैं । इस वर्ष कोई स्त्री विधवा बने और उसकी लाग-लगत हो तो...सिर पर मटकी रखे उसका मन उड़ा जा रहा था ।

7

दूसरे दिन धेमर का बाप फता भी सारंग की मंडी में पहुँच गया था । खेत पर पेड़ की छाया में दो पल का आराम छोड़ वह सारंग आ पहुँचा हो, यह घटना बरसों के बाद घटी थी । वह खुश ही नहीं, रौब में था । आज उसे देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि कुछ साल पहले महसूल न भर पाने के कारण इसी फता की पीठ पर पटवारी ने पत्थर रखवा दिया था । वैसे आज भी उसका कुर्ता तो पुराना ही था, मगर पगड़ी नई थी और उसकी आखिरी एँठव में लाल-हरे रंग का रेशमी फीता लिपटा हुआ था ।

महादेव की सौगंध खिलाकर फता नरसंग को साथ ले आया था, उसकी बैल-गाड़ी की भी जरूरत तो थी ही। खरीदारी के बीच नरसंग अपने बैलों को देख आया। फता ने पासवाले हाटेल से चार चाय मँगवाई थीं और औरतों के बाद दिलाने पर चबेना भी। खर्च करने ही बैठे हैं तो चिन्ता क्या? लाख के साथ सवा लाख। वैसे नरसंग के कारण ही बनिये ने फता को उधार दिया था और पंद्रह रुपये की किफ़ायत हो पाई थी। दूसरे मुहल्ले वाला भगा यही सामान खरीदने में इक्कीस रुपये ज्यादा खर्च कर चुका था।

फता की बेटी लीला की शादी है। लीलुबी ने छः मास पहले ही चलना शुरू किया है। आज उनका प्यार-दुलार बढ़ गया है। घर में उनकी प्रिय वस्तु गुड़ की भेली देखकर वह बेहद खुश हो गई हैं। पिथू भगत कहा करते हैं कि हमारी आंजणा-पटेल बिरादरी दो पैसे पाकर तीन पैसे खर्च करने तैयार हो जाती है। कोई उधार देनेवाला चाहिए। बिछौना देखा कि पैर लम्बे कर लिए। धमला भी ऐसे बाल-विवाह का विरोधी है। छोटी-छोटी कन्याओं को ब्याह दिया जाता है तभी तो उसके जैसे अक्लमंद और खाने-पीने से सुखी दुल्हों के लिए उमरलायक कन्या बच नहीं पाती। मौका मिलते ही धमला बाल-विवाह के विरुद्ध बोलता पर तोप के धड़ाके में ताली की क्या बिसात! नरसंग भी मानता है कि यह रिवाज जड़मूल से खोटा है। पर करें क्या? हम अपने बच्चों के रिश्ते खोज न लें तो उनके बड़े हो जाने पर अच्छा घराना कहाँ से मिलेगा? बिरादरी में हमारी शोभा क्या रहेगी? मोर सुनहरा लगता है पंख के कारण।

लीला के ब्याह में मुहल्ले की लड़कियाँ और स्त्रियाँ बड़ी उमंग से भाग ले रही हैं पर घेमर के उत्साह की तो कोई सीमा नहीं। हरेक काम में वह सबसे आगे रहता है। "चलौ सभे लोग गुड़ खायलेव। लीला के बियाह क न्यौता लिखै गटा पुरोहित आये हैं। गाना गावे चलौ।"

लग्नपत्री पहुँचाने घेमर के साथ देवू भी बदरी गया था। कंकू ने उसे कहा था, "भैया घेमर, ई का संभालेव, बदरी के करारे पर उ कहूँ चढ़े न जाय। इ बड़ा बदमास है।"

अपने छोटे-छोटे साथियों के साथ घेमर दूसरे दिन बदरी से लौट आया तो आँगन में क्या देखता है? उसकी माँ चेहर और चाची जनत – दोनों लड़ रही हैं। घेमर भी कुछ देर तक प्रेक्षकों के साथ तटस्थ खड़ा-खड़ा झगड़ा देखता रहा। कारण पूछा। किसी को पता न था और चेहर-जनत एक दूसरी की गालियों के सिवा किसी की सिखावन सुनने को तैयार न थीं। ये तानें मारती रहीं। घेमर घर में जाकर कपड़े बदल आया। झगड़ा देखनेवालों को बिनती की : आप जब तक यहाँ खड़े रहेंगे उनका जोर बढ़ता ही जाएगा। सुननेवाले दो कदम पीछे हटकर वहीं खड़े रहे, जहाँ मधु वहाँ मक्खी।

झगड़ा तेज होता गया। वहीं धमला आ पहुँचा। उसने घेमर को निष्क्रिय रहने के लिए डाँटा और चेहर-जनत हाथापाई करने पर उतारू होने को ही थीं कि

उनके बीच दीवार बनकर वह खड़ा रहा। कोई ऐरा गैरा होता तो उनके बीच कुचल जाता पर यह तो झगड़े करवाने और रोकने में पटु था। उसने दोनों हाथों का उपयोग करके दूर के रिश्ते की भाभियों को अलग हटाया और ठीक इनके बीच खड़ा होकर उनके आगामी हमले में इनकी छातियों के बीच खुद के दब जाने की कल्पना करने लगा। "देखव ई नरसंगकाका आय गयें। जरा अपन मुँह मूंड के लड़ो।"–घेमर ने ऊँची आवाज से कहा। उसका असर हुआ। परन्तु चेहर-जतन अभी भी शान्त नहीं हुई थीं। नरसग एक लाठी अपने घर से और दूसरी दोलीमाँ के घर से ले आया। उनके आँगन में दोनों लाठियाँ फेंकते हुए बोला "इनसे लड़ो और एक दूसरे के सिर फोड़ डारो ! अस विवाह के सुभ अवसर फिर न मिले। तुहार मर्द यदि नामर्द न होत तो तुम गाँव भर मां आपन घर काहे को लजवतू !'

कंकू नरसंग को रोकना चाहती थी पर वह खुद ही दूसरे पल लौट आया। किसी को कुछ कहना न पड़ा। चेहर और जतन बड़बड़ाती हुई अपने घर में आकर काम में जुट गईं, सयानी हो गईं। घेमर ने देखा–लाग से लकड़ी टूटती है।

रात को गाने के वक्त हेती जतन को बुलाने गई थी। थोड़ी देर मनुहार करवाके जतन आई थी। उसने हँसी–हँसी में चेहर के कपड़ों को लेकर मजाक किया। यह सोचकर कि हँसीखुशी में सब ठीक हो जाएगा पर चेहर अपने घर आई देवरानी पर नाराज हो गई। बात बढ़ जाए उससे पहले जतन झटके के साथ खड़ी हो गई। इससे उसकी कंचुली की कस टूट गई। वह हाथ घुमाकर बोलती थी और उसके साथ टूटी कस उछलती थी, जो सब से पहले घेमर को दिखाई दी। उसने खड़े होकर कहा "चाची तुहरे कै डोरी तूटि गै है पहिले जरा चोली बदल आऊ, फिर लड़ लेव।"

सभी हँस पड़े। उनके साथ घेमर भी हँसा। पल भर के लिए जतन ढीली हुई, फिर "सगी चाची के अस कहत लजात नाही ?" कहते हुए गालियाँ देने लगी। घेमर हाथ जोड़कर मनाने लगा। बिनती के साथ वजह भी बताता रहा।–"आप देरानी-जेठानी दोनो लड़ती रहेगी और लीलू की शादी रुक जाएगी तो मेरी ससुराल वाले मेरी बहू का गौना नहीं करेंगे, मुझ पर दया करो चाची" – और वह जतन के पैरों गिर पड़ा। पड़ा ही रहा। मौका देखकर देवू घेमर की पीठ पर सवार हुआ। लवजी उसका अनुकरण करना चाहता था वही हेती ने देवू को दुलार से चपत लगाकर दूर किया। उस बीच जतन शान्त हो गई। कंकू का उलाहना सुन गाने बैठी। सभी ने घेमर की चतुराई बखान कर नया गाना शुरू किया। उस बार जतन आगे गानेवाली स्त्रियों में थी।

गीत में घेमर का नाम जुड़ गया। अपना नाम सुनते ही वह चौंक उठा, खुश हुआ।

इन दिनों उसे पत्नी के विचार व्यस्त रखते हैं। अभी गौने की तिथि तो तय नहीं हुई पर उसने मान लिया है कि बैसाख के दूसरे पखवारे में तो गौना होगा ही। इसके दोस्त बताते हैं कि पहली रात पत्नी को पैसे देने पड़ते हैं। एक रुपया साड़ी

निकालने का, दो रुपये चोली के और तीन घाघरे के। कुल मिलाकर छह रुपये चाहिए पर वह लाएगा कहाँ से? घेमर ने संकल्प किया कि छह नहीं तो तीन रुपये वह जरूर बटोर लेगा, मना लेगा पत्नी को। जो प्यार से होता, पैसे से नहीं। नये कपड़ों की रंगभरी सुगंध घेमर को सताने लगी। खड़े होकर उसने चिलम भरी और गाती स्त्रियों के लिए नयी मटकी का ठंडा पानी ले आया।

'बिछुआ' वाले गीत के अंत में उसकी पत्नी हीरा बहू को "रानी" कहा गया। रानी! हीरा – बहू – रानी! तलैया में मानो इत्र बिखेर दिया गया था और वह नहा रहा था।

गानेवाली स्त्रियों को अंत में बतासे बाँटे गए। सबके बिखर जाने पर नीरव शांति फैल गई पर अभी घेमर के मन के मंडवे में धमाल थी।

8

सोमपुरा गाँव में एक साथ ही पाँच बारातें आयीं। सब बदरी से आयी थीं। दो बारातें भीमा मुखी के घर, दो भगा के घर और एक फता के घर। घेमर का उत्साह पाँचों बारातों का स्वागत करने से भी अधिक था। जैसा कि उसने सोचा था उसके साले की बारात सबसे पीछे थी। उसका बड़ा साला हाथी के हौदे पर बैठा था। उसके ही कपड़ों की तरह बैलों की झूलें भी पुरानी थीं। दूल्हे की आरती उतारनेवाली दूसरी ओर मुँह किये बैठी थी। घेमर गाड़ी के पीछे से होकर दूसरी ओर गया और मेहमानों के साथ बात करने का बहाना करते हुए अपनी पत्नी का चेहरा ढूँढ़ने लगा। वह घूँघट निकाल ले इसके पहले ही पत्नी को देख लेना चाहता था लेकिन उसकी चाह पूरी न हुई। हीरा ने घूँघट तो नहीं काढ़ा पर दूसरी ओर मुँह अवश्य घुमा लिया। आकर्षक शरीर, भरा हुआ बदन देखकर उसे पता नहीं क्या होने लगा। जैसे पाँव में बबूल का काँटा चुभ गया हो या बिच्छू ने डंक मार दिया हो। अजीब स्थिति थी। – उसकी समझ में नहीं आया कि वह रोये या हँसे। पीछे आ रहे बारातियों से बात करने के लिए वह थोड़ी देर ठहरा और तिरछी नजर से पत्नी कहीं देख न ले, मन ही मन ऐसी ही कामना करने लगा। गाँव के चौक में बारात की अगवानी करने के लिए और बारात देखने के लिए लगभग आधा गाँव इकट्ठा हो गया था।

लीलुड़ी की बारात नरसंग के घर टिकी थी। आम तौर पर बारात दूसरे मुहल्ले में टिकाई जाती है लेकिन फता ने अपनी पूरी जिन्दगी में किसी की बारात अपने घर में टिकाकर किसी की मदद नहीं की थी। नरसंग यहाँ भी उसके काम आया और फता ने अपने आँगन में दूसरा बन्दनवार बाँधा। इस प्रकार उसने मुहल्ले को दो भागों में बाँटकर विभाजित कर, मन को मनाया।

बारातियों के लिए खाटें जुटा ली गयी थीं। उन्हें बिछाकर उन पर बिस्तर

बिछाने का काम देवू और लवजी जैसे लड़कों का सौंप दिया गया था। खाट बिछाने के बाद उसके ऊपर उछल-कूद करके एक खाट की अदवान तोड़ दी थी। किसने तोड़ी है, इस प्रश्न पर सब मौन थे। बिस्तर बिछाने का काम पूरा हो भी नहीं हो पाया था कि धूमधाम के साथ बारात आ पहुँची। बारात में आयी स्त्रियों तथा दूल्हे के लिए घर की कोठरी में व्यवस्था की गयी थी। कंकू और हेती ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया और लोटा भर-भरके पानी दिया। दूल्हे राजा के बराबर ही लम्बी तलवार एक ओर रख दी गयी। दूल्हे की माँ ने डब्बी में से काजल लेकर उसके गाल पर दूसरा टीका लगाया। हेती को हँसी आ गयी।

घेमर अपने घर के भीतर आया था, कोई काम तो नहीं है?—पूछने के लिए। जब वह बाहर जाने लगा तभी उसे लीलू को हिचकियाँ सुनाई पड़ीं।

"का बात है, इ लीलुआ काहे रोवत है?"

"हलवा खायक है!"

"तो खाय। तीस-बत्तीस हंडा तो भरा-धरा है।"

"तुहरे कुछ अक्किल-वक्किल है कि नाहीं? आज तो लीलू के उपास है। फेरा के बाद खाय क होई तो खाये। नाही मर थोड़े जैहे। अभी हम एक छुहारा तो दिये रहें।"

"पर अपनी शादी मां हम तो उपास नाहीं किये रहे। फिर इ नवा क़ायदा तुम कहाँ से ले आयी? अरे सादी-वियाह के दिन तो बेचारी का जतना खाये का होय खाय दियौ।"

इतने में फता आ गया। माँ-बेटे कहीं लड़ तो नहीं रहे, यही देखने वह आया था। असलियत जानकर वह हँसने लगा। जबरदस्त घोटाला हुआ था। फता ने अपनी पत्नी चेहर से कहा था कि आज जब तक फेरे न पड़ जायें तब तक उपवास रखना पड़ेगा। चेहर ने अपनी जिन्दगी में कभी भी उपवास नहीं किया था। उसे कभी उपवास करना पड़ेगा, उसकी तो उसने कल्पना भी नहीं की थी। उसने समझा था लीलू को ही उपवास करना होगा। इसलिए वह रोज की तरह, बल्कि उससे कुछ अधिक ही खा भी चुकी थी।

फता ने लीलू को अपनी गोद में बिठाकर हलवा और मूँग दी। रोकर थक जाने की वजह से और ज्यादा खा लेने की वजह से थोड़ी ही देर में लीलू को नींद आ गयी और वह जहाँ बैठी थी वहीं लुढ़ककर सो गयी।

यह किसी के पाँव के नीचे कुचलकर मर जायेगी, यह सोचकर घेमर उसे उठाकर आँगन में पड़ी खाट पर लिटा आया।

बुजुर्ग मेहमानों की आव-भगत की जिम्मेदारी नरसग की थी। उसने उमा को बुलाकर पूछा कि अब देर किस बात की है। घेमर सबको खाने के लिए बुला लाया। पहली पँगत उठ गयी थी। फिर बारातियों को खिलाना था। बारात के साथ बदरी से आये हुए नाई को अलग बुलाकर घेमर ने बारातियों को खाने के लिए बुलाने

का कार्य सौंपा । अंतिम पंगत बारात में आयी महिलाओं की थी । दूल्हेराजा के लिए विशेष प्रकार की थाली परोसी गयी । बारात में आयी स्त्रियों में रसोई को लेकर चर्चा होने लगी । कोई किसी चीज़ की प्रशंसा कर रही थी तो कोई दूसरी चीज़ की।

सबसे आखिर में नरसंग, घेमर और उमा खाने के लिए बैठे । खाने के बाद नरसंग खुद खाना लेकर पिथू भगत को खिलाने के लिए खेत चला गया । बुद्धू बारात देखने नहीं आये थे हालाँकि नरसंग ने उन्हें बहुत जोर देकर कहा था ।

वापस आया तो उसने देखा कि पाँच-सात बाराती बैठे बातें कर रहे थे । शेष सभी सो गये थे । उन लोगों को पानी, तम्बाकू का पूछकर वह मंडप में चला गया । आँगन में सफ़ाई हो चुकी थी । पत्तल, जूठन आदि साफ़ हो गये थे लेकिन कच्ची मिट्टी में भीनी-भीनी खुशबू अब भी तैर रही थी । फता और उमा परिवार के अन्य चार-पाँच सदस्यों के साथ बैठे गप्पें मार रहे थे । नरसंग भी उनके साथ बैठकर चिलम पीने लगा । वे लोग मुखी के घर की रौनक की तारीफ़ कर रहे थे जैसे यहाँ की शादी का कोई महत्त्व ही न हो । नरसंग ने उन लोगों को डाँटा फिर पूछा कि शादी का मुहूर्त कितने बजे का है ?

"इ तो पंडित जाने !" फता ने कहा ।

"पूछ के आई ?" घेमर ने खड़े होते हुए कहा ।

"पूछे के बदले जायके गटा पुरोहित क बुलाय लाव । जो मुखिया के घरे चला जाई तो इहाँ यकदम मिनसारे नंबर आये ।"

"तुहार बात लाख टके की है नरसंग भैया ।" कहता हुआ उमा भी खड़ा हो गया । घेमर के साथ वह भी गटा पुरोहित को बुलाने चला गया ।

दो जगहों के सीधे को बचाकर, एक जगह के सीधे के घी-से भरपूर लड्डू बनाकर पुरोहित जी ने पाँच लड्डू खाए थे और अब उदर को आराम देने के लिए सीधे लेटे पेट पर हाथ फेरकर सो गये थे ।

"जगाव महाराज का घेमर ।" उमा ने कहा ।

"तुम ही जगाऊ, हमैं कौनो सराप द देय तो ?"

"जहाँ दच्छिना मिले का होता है उहाँ आसिरबाद देत है इ ।"

"पर काका तुमहिन जगाऊ तो ठीक है ।"

"हमार बिचार है कि सोते मां उठाए क ले चला जाय ।"

"उठे वाले तो हैं नाहीं ये, हाँ एक-एक टाँग पकड़कर घसीट के ले चला जाय ।"

"कौन आय रे ?" पता नहीं खटमल के काटने से या प्यास लगने से गटा पुरोहित की आँख खुल गयी थी । अपनी खाट पर झुके हुए दो आदमियों को देखकर, उनकी साँस फूलने लगी, वे उठ बैठे और डर की वजह से बोल पड़े-"इ तो बामन क घर है भैया, सेंध काढ़े क होय तो दूसरे घरे जाव । इहाँ तो पाप लागे ।"

"इ तो हम होईं पुरोहितजी।" घेमर ने बड़े सम्मान से कहा—"तुम्हें ले जाने के लिए आये हैं।"

"अरे भैया! पहले तो मुखिया के मंडप माँ जाय का पड़ी।"

"हमार जल्दी कर के तुम चले आयेव।" कहते हुए घेमर और उमा पुरोहितजी को मना ले गये। मंडप में पहुँचकर पुरोहितजी कुनमुनाने लगे। अभी तो कुछ तैयार ही नहीं है। नरसंग ने सारा काम फटाफट करवा दिया। पुरोहित के हाथ में सरौता सुपारी पकड़ाया। घेमर गानेवालियों को बुला लाया। फता पुरोहित जी की तारीफ करने लगा और वे सारी जल्दबाजी भूलकर काम में लग गये।

गारी गाई जाने लगी। लेकिन इसके पहले कि एकदम नंगी गाली शुरू हो पुरोहितजी ने सारी विधि पूर्ण कर दी। छोटे-से दूल्हे के सिर पर उससे भी बड़ा मौर रखा गया और इधर रह-रहकर नींद का झोंका खाती, कभी सिसकती लीली के हल्दी लगाई गयी। आज के दिन लड़की को गाली नहीं देनी है, ऐसा तय कर लेने के बावजूद एकाध बार असावधानीवस चेहर के मुँह से लीली के लिए अपशब्द निकल ही जाते थे। चारों ओर शोर-शराबा था इसलिए किसी ने सुना नहीं। इतने में भीमा मुखिया का भाई जेठा पुरोहित महाराज को बुलाने आ पहुँचा। नरसंग यदि वहाँ न होता तो वह तो पुरोहित महाराज को खींच ही ले गया होता। फिर भी बोला-चाली तो हो ही गयी।

"अरे! अबहीं तो आधी रात बाक़ी है।"

"फिर मुहूरत निकर जाये तो?"

"तुहार मुहूरत है तो का हमरे इहाँ सराध करे है?" नरसंग ने थोड़ी ऊँची आवाज में कहा।

'इहां तो कौनो को सराधौ हुई जाये।"

"तुहें तो अबहीं देर है। जा भाग जा घरे। पुरोहित अभी आवत हैं। अँधेरे मां डर लागत होय तो मुहल्ला तक छोड़ आयी?"

बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं यह सोचकर जेठा चला गया। उसके जाने के आधे ही घंटे बाद लाला आ पहुँचा। इस बीच पुरोहितजी ने कन्यादान, सप्तपदी, मंगलफेरा इत्यादि जैसे-जैसे याद आता गया, पूरा कर दिया था। और अब वे लोगों से अपनी कार्यकुशलता की प्रसशा कर रहे थे। दक्षिणा लेकर, आशीर्वाद देकर वे लाला के साथ चले गये।

थोड़ी ही देर बाद मुखिया के मुहल्ले में शोर मच गया। ऐसा लग रहा था जैसे लाठियां चल रही हो। पता चला कि बात मारपीट तक जा पहुँची है। जेठा और लाला बारातियों को लेकर आपस में किसी मामूली-सी बात पर लड़ गये थे और बात यहाँ तक पहुँची कि भीमा के पिता करसन ने बारातियों के पाँव पर अपनी पगड़ी उतारकर रख दी पर वे तब भी नहीं माने और वापस लौट पड़े।

नरसंग दौड़ता हुआ खेत पर आया तो देखा बुड्ढ़ हुक्का पी रहे थे। वहीं बैठे–बैठे उन्होंने जैसे सारी स्थिति भाँप ली थी।

"हम बाय के समझाई ?"

"तुम्हार बात के माने ?"

"तू कहत होय तो जाई।"

"जाव।"

पिथू भगत चौक के पास वाले चकरोड से बारात को वापस बुला लाये थे। उन्होंने तो बैलगाड़ियों के सामने खड़े होकर दो शब्द कहे थे बस। बाराती वापस आ गये थे। बाद में लोगों को यह बात चमत्कृत कर देने वाली लगी।

दूल्हे को मियाने से उतारकर सीधे मंडप में ले आया गया। भीमा पिथू भगत के पैरों पर गिर पड़ा। पिथू बाबा, तुमने मेरी ही नहीं, सारे गाँव की लाज रख ली। मैं बोलते तो बोल गया बाद में बहुत पछताया, इतना कि मरे बिना चैन नहीं मिलता।

बारात वापस आ गयी है यह जानकर पुरोहित गटा को बहुत प्रसन्नता हुई। भगा के घर पर नवदंपति की शादी कराने के बाद फुरसत पा गए थे। मुखिया के घर उन्होंने पूरी विधि से शादी करवाई। झगड़े के बाद की शांति की वजह से पुरोहित का अशुद्ध मंत्रोच्चार वातावरण में गूँज रहा था।

सुबह थोड़ी देर तक पिथू भगत के चमत्कार की बातें होती रहीं फिर दहेज और ममियौरे का नेग चढ़ाया गया। चेहर का भाई सवासौ रुपिये का नेग लाया था, भगा का साला डेढ़सौ का सामान लाया था और मुखिया का साला सवा दोसौ का।

टीके में मिले हुए दो रुपये घेमर ने जेब में रख लिये थे। फिर रसोई की देखरेख में लग गया था और बारात की आती–जाती औरतों को देखने लगा था। एक बार तो उसकी पत्नी हीरा बिलकुल उसके नजदीक आ गयी थी। वह डर गया था – कहीं उससे कुछ कहने तो नहीं आ रही है।

दोपहर में औरतें जब सबसे अंत में खाकर उठीं तो घेमर के मन में बात आयी कि इन लोगों को सबसे पहले खिलाना चाहिए। अब तक सूर्य झुकने लगा था। इस बार के खाने में लड्डू थे। फिर भी बारात की औरतों ने रिवाज के मुताबिक रसोई की निन्दा में गीत गाना शुरू कर दिया था। उसके पूरे होते ही समधी की लड़की का नंबर आ गया था।

तीसरे ही दिन भगा समधी के खर्चे से भोज करके कन्या पक्ष की गाने वाली औरतों ने भी इसी प्रकार जवाब दिया था।

9

हेती छोटा चना कांड़ने बैठी थी। किसी के खाँसने की आवाज सुनकर उसने बाहर की ओर देखा। दरवाजे के पास ससुरजी खड़े थे। उसने घूँघट निकाला,

जल्दी से खड़ी हुई और कोठरी के भीतर भाग गयी। चने के छिलके पाँव के घुटने तक चिपक गये थे। उस ओर तो उसका ध्यान भी नहीं गया। माँ दोलीमाँ के घर गयी हैं। ससुर दरवाजे के पास ही खड़े हैं। क्या करूँ? माँ को बुलाने जाने के लिए भी ससुर के पास से ही होकर जाना पड़ेगा। माँ भी कमाल करती हैं, सबेरे के पहर से ही सुँघनी लेकर बैठ जाती हैं। आग लगे इनकी सुँघनी में। अब करूँ क्या? साहस एकत्र करके वह कोठरी से चौपाल में आयी। खाट बिछायी। चोखटे पर से गुदड़ी लाकर बिछायी। जल्दबाजी में चोखटे पर से गिर गये बाकी बिछौनों को उठाना भी भूल गयी। पागलों की तरह ससुर के पास से होकर बाहर निकल गयी। जब वह दोलीमाँ के घर पहुँची तब उसकी जान में जान आयी।

"चलो अम्मा। मेहमान आये हैं।"

"कौन हैं?"

"और के फुरसत मां है? तुहरे समधी।"

कंकू ने पर्दा करते हुए चौखट पर पैर रखा। स्वागत किया, हाल-चाल पूछा।

मूलजी ने सब कुशल है कहकर स्वयं भी कुशल-क्षेम पूछी। इतने में-'कौन, मूलजी समधी?' कहती हुई दोलीमाँ ने भी दरवाजे से झाँका। उनकी आड़ में होकर हेती भी अंदर की कोठरी में चली गयी। दोलीमाँ आकर जतवा के पास बैठ गयीं। कंकू ने मूलजी समधी को पानी दिया। दोलीमाँ के आगे सुँघनी की डब्बी रखी। दोलीमाँ ने मनाकर के डब्बी खिसका दी। चूल्हे में से आग का एक ढेला लाकर कंकू ने समधी के पास खपरे में रख दिया। मूलजी ने हाथ से ही उठाकर उस अंगारे को चिलम में रखा और चिलम पीने लगे।

जैसे किसी ने मेहमानो के आगमन की सूचना दे दी हो, चौक में खेल रहे देवू और लवजी दौड़ते हुए घर आ पहुँचे। देवू कुछ संकोच की वजह से दरवाजे के पास ही खड़ा रहा किन्तु लवजी अपने फटे जाँघिये की परवाह किये बिना ही मेहमान का अवलोकन-निरीक्षण करता हुआ खाट पकड़कर खड़ा रहा। मूलजी के साथ निगाह मिलते ही वह हँस पड़ा। हेती उसे अंदर के कमरे में बुलाती रही किन्तु उसने उधर ध्यान ही नहीं दिया। उसकी निगाह तो जेब में कुछ टटोल रहे मूलजी के हाथ से चिपककर रह गयी थी। जेब से एक पाकिट के साथ वह हाथ बाहर आया। एक-एक आने के दो सिक्कों की ओर वह देखता रहा। उनमें से एक उसे अपनी तरफ आता हुआ दिखा। उसने घर के भीतर झाका। हेती हाथ के इशारे से मना कर रही थी। उसने पुनः सिक्के की ओर देखा। एकदम नजदीक आ पहुँचे सिक्के की उपेक्षा कर देने की उसकी सम्पूर्ण शक्ति क्षीण हो चुकी थी। उसने झट से सिक्का उठाया। शरमाता-लजाता अन्दर गया। हेती ने उसे दूसरा पेबद वाला किन्तु साफ जाँघिया पहनाया।

देवू अभी तक चौखट पर ही खड़ा था। पैसा न लेने की दृढ़ता दिखाने के

लिए ही अब तक पल्ले को मजबूती से पकड़े हुए था। मूलजी कह-कहकर थक गये थे। अब दोली माँ भी कह रही थीं—"ले, ले भैया। ससुर के पास से जो चीज मिले सब ले लीन जात है।" अन्ततः माँ की मूक संमति पाकर ही देवू ने मूलजी की हथेली से इकन्नी ली। और पुनः दरवाजे के बाहर खिसक गया।

"जाव भैया, दोनों जन जाय के अपने बापू का बुलाय लाऊ।" दोनों चले।

देवू और लवजी खेत में पहुँचे तो नरसंग खलिहान के पास बबूल की डालियों के कुल्हाड़ी से टुकड़े कर रहा था और भगत कुँए की जगत पर बैठे-बैठे किसी राहगीर से बात कर रहे थे। हेती के ससुर आये हैं यह जानते ही नरसंग बुढऊ के पास पहुँच गया और घर चले जाने के लिए कहा। कुछ दिन पहले ही नरसंग ने उनसे सलाह ली थी। उन्होंने "अभी नहीं तो आते वर्ष" कहकर एक तरह से हेती के गौने की बात स्वीकार ही कर ली थी।

'भला, रिजल्ट आवा कि नाहीं, अबहीं तो रमणलाल ने बी. ए. की इंतिहान दिहिन रहा ?"

"रिजल्ट आय गवा होये तभौ मूलजी का न मालुम होई।" नरसग ने मजाक में कहा।

"हमैं लागत है अब ही न आवा होये।" कहते हुए उन्होने छपरी पर से अपनी पगड़ी उतारी। नरसंग ने उनका पैना ढूँढ दिया। राहगीर ने बिदाई ली। भगत गाँव की ओर चल पड़े। लवजी उनके आगे-आगे दौड़ता चलै रहा था। फिर खड़ा होकर बुढ़ऊ की राह देखता। जब वे उसके पास पहुँचे तब वह फिर से मुठ्ठियाँ बाँधकर दौड़ने लग जाता था। जब तक नरसंग गाड़ी समेटकर हाथ-पाँव धोकर तैयार होता तब तक देवू अंबिया तोड़-तोड़कर खाता रहा। जब नरसंग तैयार हो गया तो दोनों जन घर की ओर चल पड़े। बाप-बेटे जब घर पहुँचे तो हलवा बन रहा था।

मूलजी घूम-फिरकर अपने बड़े लड़के रमण की बात करने लगते थे। मूलजी इतने बातूनी थे कि नरसंग को अपने समधी का यह स्वभाव पसंद न था। उसे कभी-कभी लगता कि मूलजीदास को गप्पे हाँकने की आदत है। किन्तु आज रमण की प्रसंशा में उसे कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं लग रही थी। वह खुश था। भगत शान्त थे।

"तुहरे गाँव मां केऊ बी. ए. भवा है ?"

"मेटरीक नाहीं भवा फिर तो बी. ए. की कौन बिसात ?" भगत ने कहा। उन्होंने बताया कि सारंग में भी तीन-चार साल पहले अमीचन्द सेठ का लड़का बी. ए. हुआ था।

रसोई तैयार हो गयी थी। कंकू कई बार आकर इन लोगों को बातों में लगे देखकर वापस जा चुकी थी। भगत ने खाने के लिए कहा।

खाते समय मूलजी ने फिर से रमण की बात शुरू कर दी। उन्होंने भगत की सलाह मांगी कि रमण को आगे पढ़ाये या नोकरी पर लगा दें।

"बिलाइत भेज देव न।" नरसंग जानता था कि लड़के को आगे पढ़ाने की

हिम्मत नहीं है फिर भी मूलजी बड़प्पन हाँक रहा है। गत वर्ष मुहल्ले की एक बारात में रमण आया था तो उसने बताया था कि ट्यूशन करके पढ़ाई का खर्च निकालता है।

"व्यापार न ठीक रहे?" भगत थोड़ी देर चुप रहने के बाद आहिस्ता से बोले।

नरसंग विचार में पड़ गया। बुढऊ व्यापार की सलाह क्यों दे रहे होंगे? "पूँजी कहाँ से लायें?" मूलजी ने पूछा।

"जमीन बेच डालो।" नरसंग ने हँसते हुए कहा। भगत ने फिर से स्पष्ट किया। रमण कुछ दिनों पहले उन्हें सारंग के बाजार में मिल गया था। उसने और तो कुछ नहीं सिर्फ पैसे की बात की थी। रमण ने ही उनसे कहा था कि अपनी तरफ के पटेल जीरा, अजवाइन और तम्बाकू के व्यापार में धनवान बन गये हैं।

"रमण तो सहर मां कौनो बड़ी नौकरी करे।" मूलजी ने आत्मविश्वास, बल्कि कहिए कि अभिमान से कहा। वे उठने ही जा रहे थे कि कंकू बोल पड़ी—

"हमरे हेती क सहर मां अच्छा ना लागे। हम तुमका पहिले से कहे देइत है हां मूलजी पटेल। उहाँ आपन के है?"

"भगवान।" कहते हुए भगत उठ खड़े हुए।

हुक्का भर देने के बाद नरसंग गटा पुरोहित के घर पहुँचा। बिदाई के लिए दो मुहूर्त नजदीक थे। हफ्ते भर बाद वाले मुहूर्त को भगत ने पसंद किया। यह जानकर देवू दोलीमाँ के घर बैठी हेती को समाचार देने के लिए भगा।

गौने की बात हेती को पहले ही पता चल गयी थी। उसे लग रहा था कि जल्दबाजी हो रही है। उसे डर लग रहा था। गोकुलिया उससे अपरिचित न था। रमण को भी उसने पिछली गर्मी में ही देखा था। पढ़-लिखकर वह ऐसा थोड़े ही हो गया था कि पहचान में ही न आये। तो फिर क्यों रह-रहकर उसका कलेजा काँप उठता है?

बिदाई के दिन तक उसका दिल धुक-धुक करता रहा। अकेली होती तो गुमसुम बैठी रहती। पेड़ों के साथ ही बात करने लग जाती। आम की कटी हुई फाँक उसके हाथ पड़े पड़े सूख जाती। भैंस की पीठ पर हाथ सहलाते समय उससे ऐसे ममता-पूर्ण स्पर्श का अहसास होता जैसा उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

बिदाई के दिन आये रमण को गांव भर की लड़कियाँ आ-आकर देख गयीं थीं। सब हेती के भाग्य से ईर्ष्या करने लग गयी थीं। उसे कपड़ा पहनाते समय भी वे सब वही बातें कर रही थीं। एक बार तो कंकू भी परेशान होकर बोल पड़ी—आग लागे, अतनी खीस काहे निकरत है?"

हँसने की बात पर भी हेती सिर नीचे किये बैठी रही। पाँव में कड़ा, पायल, बिछिया, हाथ में चाँदी की पहुँची, गले में सोने की हँसुली, ऐसा लगता था जैसे सारा बदन जेवरों से सजा दिया गया हो। सब अच्छा तो लगता था किन्तु सारी शोभा जैसे किसी दूसरे के शरीर पर हो ऐसा लगता था।

समय हो गया । सहेलियाँ एकत्र हो गयीं । हेती ने तो चौखट पर पैर रखा तभी से रोने लग गयी थी । जो सहेली आकर उससे भेंटती वह भी रोने लगती । किन्तु वे लोग तो थोड़ी देर में बिदाई-गीत गाने लग जातीं और मन को समझा लेतीं किन्तु हेती ? उसके बस में कुछ न था ।

वह गाँव के चौक में पहुँची तो मात्र आँखें ही नहीं उसका सारा चेहरा ही भीग गया था । कंकू रोये इसमें किसी को भी आश्चर्य नहीं होता था । किन्तु नरसंग को लोगों ने पहली बार रोते हुए देखा था । उसके बाद तो देवू और लवजी भी रोने लगे । अन्त में मिले पिथू भगत । आशीर्वाद देते न देते तो उनका भी गला भर आया था । और उस समय सम्पूर्ण सोमपुरा का वातावरण गमगीन हो उठा । पलभर रुककर भगत ने अपना आशीर्वचन पूरा किया । किन्तु अब भगत के गले से हेती को अलग कौन करे ?

"बेटा हेती, तू तो हमारे लड़का है, लड़का ।" भगत ने काँपती हुई गहरी आवाज में कहा ।

देखने वाले चुप थे । भगत ने उसके सिर पर हाथ फिराते हुए "बेटा इ सारी दुनिया एक घर जैसी है। जा, चल । मियाने मां बैठ जा ।" हेती को अपने सीने से अलग करते समय तो उनकी आँखें जैसे पानी में डूब गई थीं ।

हेती कब मियाने में बैठ गयी नरसंग ने नहीं देखा । अभी वह अपना मुँह नीचे किए आँसू पोछ रहा था । लवजी हेती के साथ मियाने में बैठने की जिद कर रहा था । देवू उसे रोते-रोते बता रहा था कि उसमें नहीं बैठा जाता ।

बैलगाड़ी चल पड़ी और सखियों ने गीत गाया:-

"सुगवा उड़ा रे परदेश
पिंजरा सूना पड़ा रे ।
गई बहिनी गई रे ससुराल
सखियाँ घर चलीं रे ।"

10

विदाई के पाँचवे दिन हेती को लिवाने वाले पहुँच गये । उन लोगों में सबसे अधिक उम्रवाला घेमर था । किन्तु घर का प्रतिनिधित्व करने वाला देवू भी था । घेमर देवू को सम्मान देकर ही बात करता था । हँसता था हँसता था । हेती की ननँद ईजू के साथ देवू की शादी होने वाली थी इसलिए भी देवू का वहाँ ज्यादा मान हो रहा था । कुछ दिन पहले ही उसे ग्यारहवाँ लगा था । तीसरी कक्षा पास कर वह चौथी में आया था ।

समझदार होने के बाद देवू पहली ही बार गोकुलिया आया था । सोमपुरा के

आसपास गोचर नहीं था। गोकुलिया के चारों ओर तीन सौ बीघा परती पड़ी थी। देवू ने घेमर से पूछा : इतनी सारी जमीन परती क्यों रखी गई होगी ?

"टट्टी जाने के लिए।" कहते हुए घेमर देवू के अचरज को देख आगे बोला–तुम बच्चों को क्या मालूम कि हमारे गाँव में चौमासे में कितनी बड़ी परेशानी होती है। जिस ओर जाएँ कोई तो मुँह नीचा किए बैठा मिलेगा ही। या तो मटकी दिखाई दे या मटका। यहाँ गोकुलिया में परती की सुविधा से घेमर खुश था। यहाँ सभी जाति के लोगों की बस्ती थी। सारा गाँव एक बड़ी कुंडली की तरह बसा था। एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले में जाते समय रास्ता भूल जाने का भय रहता। घेमर देवू को मुहल्ले के बारे में जानकारी देता चल रहा था।

गली-मुहल्ले में जो भी मिलता सभी को घेमर राम–राम करता चलता था। और सभी को बताता चलता था कि वह किसके यहाँ और क्यों आया है। थोड़ी देर में घर आ गया।

"चाय पीयोगे कि दूध ?" रमण ने देवू के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा।

"तुम रोज चा पीयत हो ?" देवू ने रमण से साश्चर्य पूछा। उसने एक बार चाय पी थी। कोई खास मजा नहीं आया था। वह तो रोज सबेरे दूध पीता था। मक्खन खाता सो अलग। रमण के बदले जवाब घेमर ने दिया–

"सुधरे लोग तो चाहै पीयत है पगलेट।"

घेमर ने खुश होकर चाय पी। देवू घर जाकर दूध के साथ खिचड़ी खा आया।

"देख देवू, उ तुहार औरत होय।" सातेक वर्ष की ईजू को देखते ही घेमर बोले बिना न रह सका।

"मालुम है।" कहकर देवू ने नया घांघरा और अँगिया पहने घूम रही कन्या की ओर देखा। वह इन्हीं लोगों की ओर आ रही थी। अचानक, पता नहीं क्या याद आया कि वापस लौट गयी।

घेमर खड़ा-खड़ा थोड़ी देर मूलजी के पास जाकर बात कर आया। लगे हाथों चिलम की दो फूँक भी मारकर आ गया। दोपहर की रसोई में भजिया भी मिलेगी यह जानकर उसे खुशी हुई। उसने देखा रमण और देवू दोनों हँस–हँसकर बातें कर रहे हैं।

घेमर खाट में लेटकर आने वाले वर्ष की गर्मियों की बात सोचने लगा।

रमण वहाँ से उठकर पड़ोस के घर में चला गया जहाँ आँगन के एक कोने में भोजन बन रहा था। कारण कुछ दूसरा था। मुहल्ले के उस छोर से उसकी बहन के साथ हेती आती दिखाई दी। कोई देखेगा तो कहेगा कि बैठकर औरत की ओर देखे जा रहा है। फिर उसमें पढ़ाई–लिखाई का दोष निकालेगा।

वह चरनी की लकड़ी पर बैठकर सब्जी के लिए मसाला पीस रहे अपने काका के लड़के से बातें करने लगा। बीच में एकाध बार उसकी निगाह धीमे–धीमे आ रही हेती की ओर भी उठ गयी।

देवू अपनी खाट पर बैठे–बैठे बहन की मन्द गति को समझने की कोशिश कर रहा था। वह चिन्तातुर लग रहा था। खेतों में उसके पीछे–पीछे दौड़ने वाली हेती क्या अब हमेशा इसी तरह चलेगी ? नहीं-नहीं, यह तो पहली बार बिदा होकर आयी है न इसीलिए।

घर में पहुँचकर हेती खड़ी हो गयी। अपनी बड़ी ननद से बोली "हमरे भैया क बुलाव न।"

देवू बड़े संकोच से अन्दर गया और हेती से दो कदम दूर ही खड़ा रहा। हेती ने आगे बढ़कर भावावेश के साथ उसे गोद में उठा लिया। ऐसा करने में उसके हाथ की चाँदी की चूड़ियाँ इस प्रकार खनकीं उठीं कि अन्दर से उसकी सास दौड़ी आयी। उन्हें लगा था कि पतोहू ठोकर खाकर गिर पड़ी है। किन्तु यहाँ का नजारा ही अलग था। बहन ने भाई को उठाया था जैसे कि अब उसे जमीन पर कभी उतारेगी ही नहीं। वह उसे उठाये उठाये कोठरी में ले गयी और गोद में बिठा-बिठाकर उससे घर की, खेत की, माता–पिता और बाबा की बातें पूछने लगी। यही सारे सवाल उसने लवजी से भी पूछे थे। किन्तु लवजी तो आधी बात मुँह ही मुँह चबाकर तरह–तरह की बातें स्वयं पूछने लगता। देवू के साथ बात हो ही रही थी कि ईजू अंदर आयी। थोड़ी देर उसे देखती रही फिर भाग गयी।

एक ही दिन में रमण के भीतर देवू के लिए सद्भावना जाग्रत हो उठी थी। देवू भी उसके साथ हिलमिल गया था। शाम को दोनों खेत में गये थे। खेत काफी दूरी पर था। अचानक साले–बहनोई की बात अटक गयी थी। खेत में आम के तीन पेड़ थे। तीनों फले थे। किन्तु तीनों चौकीदार को बेच दिये गये थे मात्र ग्यारह रुपये में।

रमण को यह अच्छा नहीं लगा था। चौकीदार इधर-उधर होता तो भाई-बहन मिलकर आम तोड़ते और उन्हें पकसाने के लिए भूसे में छिपा देते। इकाध पेड़ घर के लिए भी रखा होता तो कितना अच्छा होता। अगले वर्ष वह पहले से ही कह रखेगा।

"हेती इ हाँ नाहीं आवत ?" वापस आते समय देवू ने सवाल पूछकर रमण को चौंका दिया। रमण ने धीमे से कहा – "कल आयी थी" और फिर वह आने वाले कल के ख्यालों में खो गया। दूसरे दिन जब हेती के बिदाई का क्षण आया तो उसे एक विलक्षण अनुभूति हुई। कहानियों में पढ़ी हुई प्रेमिकाओं–प्रेमियों के विरह की बातें तो मात्र थोथी कल्पनाएँ हैं। यहाँ तो सीने में अचानक ऐसा दबाव पड़ रहा था कि–

शिक्षा के दौरान देखी हुई शहर की लड़कियों की तुलना में हेती उसे अधिक स्वस्थ और सुन्दर दिखती थी। सफेद कपड़े और चुँदरी के बीच का फर्क उसे मालूम था। किन्तु हेती का मन भी इतना मनमोहक होगा इसकी तो उसने कल्पना भी नहीं की थी। कक्षा दो तक पढ़ी हुई, अशिक्षित ग्राम्य लड़की से वह क्या बात करेगा ?

क्या सचमुच वह उसकी इच्छाओं को समझ सकेगी ? किन्तु यहाँ तो बात शुरू हो उसके पूर्व ही बहुत कुछ समझ में आ जाता था । जैसे मानसून की हवाओं के प्रवाहित होते ही सींव की छाती धड़कने लगती है और ...और ..

आज हेती अपने मायके जा रही है तो अपनी सिंदूर की डिबिया में वह अपने साथ रमण की सारी दुनिया बन्द करके लिए जा रही है यह बात घर ही नहीं घर के ऊपर रखे हुए खपरैल भी कह रहे थे ।

बी. ए. पास होने की, कुछ पहले वाली खुशी भी आज पता नहीं कहाँ खो गयी । एल.एल. बी. करूँ, नौकरी करूँ या व्यापार करूँ आदि विचारों की तरंगें पता नहीं कहाँ जाकर शान्त हो गयी हैं । भविष्य की कल्पनाओं का स्थान एक अकथ्य बैचेनी ने ले लिया है ।

क्या आज हेती को जाने से रोका नहीं जा सकता ?

थोड़ी देर बाद उसे एक दूसरी मूर्खता सूझी । उसे लेकर कहीं भाग जाऊँ तो ? वह तो चल देगी । कभी मना नहीं करेगी । सुहागरात के बारे में कहाँ मित्रों की बातें और कहाँ हेती के भयभीत हाथ, विह्वल आँखें, शरमाते हुए होंठ और महकती हुई छाती ..... अँधेरे में भी चमकती हुई जाँघें .. वह कोमलता . सुन्दरता को तो उसने पहले भी देखा था किन्तु उसे स्पर्श करते हुए तो वह भी सुन्दर हो गया था ।

आज शाम को वह नहीं होगी उफ् । कलेजे में जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो और रगरग में एक मीठा-मीठा दर्द व्याप्त हो गया हो ।

यह गाड़ी तो तैयार भी होने लगी । हेती भीतर के कमरे में सजकर बैठी होगी । मैं अंदर जाऊँ ? सब उसे घेरकर बैठे होंगे और न जाने कैसी फाल्तू बातें कर रहे होंगे । और वह तो आदत के अनुसार पछीत की ओर मुँह करके बैठी होगी । मैं पनसाल तक जाऊँगा तो भी उसे पता नहीं चलेगा । शायद वह मेरी आहट को पहचान ले । पर उससे क्या ? बात तो हो पाएगी ही नहीं । अभी उसको पिटारी गाड़ी में रख दी जाएगी । वह धीरे धीरे दहलीज की सीढ़ी उतरेगी और—

रमण सिर पर हाथ रखे बैठा था । छोटा भाई गलबा की नजर उस पर पड़ी तो उसने पूछा भी, "मूड़ पिरात है का भैया ? तो सोय जाव ।"

वह कुछ बोले बिना ही सो गया । गलबा उठकर जा ही रहा था तो उसे बुलाकर बोला—"किसी से कहना मत कि मेरे सिर में दर्द हो रहा है ।" हेती को पता चलेगा तो उसे व्यर्थ में चिन्ता होगी । बरसात, दीपावली शायद अब गर्मियों में ही फिर मुलाकात होगी । मै जाऊँगा सोमपुरा, किसी को क्या आपत्ति ?

विचारों की शृंखला पुनः टूट गयी और वह उठकर बैठ गया । सामने वाले घर ओसारे घेमर कुछ कह रहा था और देवू ताली बजा रहा था । जैसे देवू को अचानक गुस्सा आ गया हो उसने बात चलाई । घेमर ने उस पर हाथ उठाया । इतना देखते ही देवू कूदकर बछड़े की तरह उसके ऊपर गिरा । बदला लेने के लिए

घेमर ने देवू को गुदगुदी लगाकर खूब हँसाया। देवू के हँसने से रमण को जैसे घंटियों का संगीत सुनाई दिया। वह उठकर उनके पास चला गया।

विदायी की तैयारी हो गयी थी और हेती अब दहलीज पर पाँव रखने ही वाली है उसका ख्याल आते ही रमण किसी को बताये बिना ही मुहल्ले से निकलकर कहीं चला गया।

कॉलिज के मित्र पूछते – तेरी पत्नी पढ़ती है कि नहीं? उनको जवाब देते समय कभी–कभी वह गंभीर हो जाता। एकाध बार तो उसके मन में आया भी कि–यह संबंध तोड़ दिया होता तो? फिर? यह तो मैं अपने सामर्थ्य के बाहर की बात सोच रहा हूँ, उसे लगता। उसने हेती की एकाध झलक देखी थी, उसकी स्मृति ताजी हो जाती। चिन्ताएँ प्रसन्नता में बदल जातीं।

पहली रात को उसने हेती से पूछा था – लिखना-पढ़ना तो आता है? तब तो वह कुछ नहीं बोली थी। पलकें झुकाकर शरमा गयी थी। किन्तु सुबह जब वह सोकर उठा तो उसकी हथेली में सिन्दूर से लिखा था "हेती।"

रमण ने हथेली की ओर देखा जैसे वह अक्षर अभी लिखा हो।

अरे वह बैलगाड़ी तो मुड़ गयी। सामने जाऊँ? एक बार मन भरके देख तो लूँ। वह घेमरिया हँसे बिना नहीं रहेगा। देवू तो दूर से ही चिल्ला पड़ेगा। कहेगा चलो हमारे साथ। हेती मुझे देखकर घूँघट निकाल लेगी। नीचे सिर करके मेरे पागलपन पर हँसेगी। संभवतः उसे अच्छा भी लगे। सब समझ जायेगी। फिर शरमायेगी। उसकी शरम भी जैसे उसकी समझदारी का ही हिस्सा न हो!

रमण वहीं खड़ा रहा। दूर ऊपर में खिलौने की तरह गाड़ी धीमे-धीमे चली जा रही थी। बित्ते भर की दिख रही उस गाड़ी में गुलाबी रंग चमक रहा था–हेती की साड़ी का। धरती की गहरी, सूखी सतह पर खिला हुआ एक गुलाब, एक सुगंध उसकी साँसों में घुल गयी।

11

सारंग के बाजार की शोभा आज बढ़ गयी थी। प्रत्येक व्यापारी ने नये वर्ष के पहले दिन की तरह बल्कि उससे भी बेहतर तरीके से दूकानों को सजाया था। गद्दे-तकिये पर नये-नये गिलाफ चढ़ाए गये थे। कुछ लोगों ने तो दूकान के आगे गुडधनिया की थाली भी रखी थी। भोर के पहर घी का दीया रोज की तरह जलाया गया किन्तु अगरबत्तियाँ अभी भी सुलग रही थीं। एक बुड्ढा मुसलमान फकीर दूकान-दूकान घूमकर धूप कर रहा था किन्तु पैसा लेने के लिए नहीं रुकता। एक और लगभग अपरिचित-सा आदमी प्रत्येक गद्दी पर गुलाबजल छिड़क रहा था।

सारे बाजार में रौनक थी।

दरबारगढ़ के दरवाजे पर बाजे बज रहे थे।

मिडिल स्कूल के मैदान में सभा थी। गीत गाये जा रहे थे। विद्यार्थियों के लिए बना प्याऊ आज सर्वसाधारण के लिए खुला था। और उस पानी में रमण मास्टर ने अपने पैसों से शक्कर डलवायी थी।

आज पन्द्रह अगस्त थी। एक दिन पहले ही आस-पास के गाँवों में सूचना पहुँच गयी थी। देश की आजादी का पहला दिन सारंग में धूमधाम से मनाया जायेगा। गोकुलिया, बदरी, टींबा, सोमपुरा और ढेखाड़िया सभी गाँवों में से जो थोड़े बहुत लड़के पढ़ने के लिए सारंग आते थे उन्होंने पंद्रह अगस्त के बारे में खूब प्रचार किया था। अगस्त क्या होता है इस विषय में बहुत से लोगों ने पहली बार सुना।

देवू ने हेती से भी बात की थी। हेती उसके साथ जाने के लिए तैयार थी। किन्तु देवू तो स्कूल में जाकर बैठेगा, हेती क्या करेगी? उसने अपनी सहेलियों से बात की।

"ईमां तो का देखय जाय? रहे दे।"

"नाहीं, हम तो जाब। और कुछ नाहीं तो उनका तो देखब।" हेती की स्मृति में प्रसन्नता, उन्मुक्तता थी। अंग-प्रत्यंग में उमंग थी।

"मरी, सरमातौ नाहीं।" कहने वाली स्वयं भी समझती थी कि अपने पति को देखने की लालसा कैसी होती है। फिर भी एक जनी ने तो कंकू से हँसते हुए कहा भी कि—"कंकू काकी, हेती अपने मास्टर का देखे जात है।" हेती ने मुँह घुमा लिया था। कंकू ने खर्चे के लिए हेती को आठ आने दिए थे। लवजी ने कुछ विलंब कर दिया। उसे नये कपड़े पहनाकर हेती ने अपने साथ ले लिया।

रमण सारंग की मिडिल स्कूल में शिक्षक हो गया है इस बात को अभी मात्र दो महीने हुए हैं। किन्तु उसके मिलनसार स्वभाव की वजह से उसे सब जानने लगे हैं। वैसे भी वह तेजी से चलता है किन्तु पिछले कुछ दिनों से जब वह सारंग के बाजार से होकर गुजरता है तब उसके पाँव शायद ही धरती पर पड़ते हैं। भीखा नाई ने अपने एक ग्राहक की दाढ़ी बनाते हुए उससे कहा भी "सारे देश के भार जैसे अकेले रमण मास्टर के मूड़े पर आय गवा होय।"

आज हेती जल्दी में थी। गोबर-कंडा करके वह तैयार हो गयी थी। उसके साथ आने वालों की संख्या सात हो गयी थी। मैदान में भैंस छोड़कर धमला घर आ रहा था। उसने इन युवतियों के टोले को उड़ते हुए जाते देखा—

"अरे ये छोकडियों, खड़ी रहो, खड़ी रहो, तुम्हारे माँ-बाप के कसम न खड़ी रहों तो।"

"इ नासपीटा कसम खिलाये बिना बातै नाहीं करत।"

"सबेरे-सबेरे इधर कहाँ?" पास आकर धमला ने पूछा।

"तुम्हरी बरात माँ · " हेती ने कहा।

"अब तो बेटा हमार बरात कबर माँ जाये।"

—धमला ने अपनी आवाज़ में पीड़ा घोलते हुए कहा ।

"अब हीं कहाँ बुढ़ाय गयो है, कोनो कुबात क उठाव लाऊ ।" एक दूसरी युवती ने धमला की ओर सीधे देखते हुए कहा ।

"फिर तुम सब हमार हुक्का-पानी बंद कर देवो । पर इ तो बताऊ तुम सब जात कहाँ हो ?"

"सारंग, आज तो "

"अरे हाँ, दूसरे कोऊ नाहीं हम ही भूल गये । आज तो देश आज़ाद भवा है । होना ही था । हमें तो कबसे पता रहा । पिथू भगत और हम गर्मी मां कहा रहा ।"

"तुम न कहे होतेव तो देश आज़ाद ना होत । ठीक है न धमा काका ।" हेती ने कहा और सभी लड़कियाँ हँस पड़ीं ।

धमला ने तुरंत घर जाने का विचार छोड़ दिया और सारंग की दिशा में मुँह घुमाते हुए बोला -

"चलो तब, भाड मां जाय काम, हम भी तुम्हरे साथे आईत है ।" कहकर वह सबसे आगे-आगे चल पड़ा ।

चौक में लोगों का आना-जाना बढ़ गया था । अधिकांश लोग मिडिल स्कूल की ओर जाने लगे थे ।

स्कूल के लड़के दो-दो की लाइन में आ रहे थे । देवू ने हेती को देखा तो पंक्ति को तोड़कर उसके पास आ गया । पीछे आ रहे शिक्षक ने सीटी बजाई । देवू दौड़कर वापस पंक्ति में शामिल हो गया । मिडिल स्कूल के विद्यार्थियों के साथ प्रायमरी स्कूल के विद्यार्थी भी शामिल हो गये । दूसरी ओर एक लघु-प्रदर्शन था । इसके लिए रमण ने रातदिन एक कर दिया था । उसमें भारत माता की मिट्टी की एक प्रतिमा थी । "अरे इ कौन माता ? अंबाजी कि बेचराजी तो नाहीं । इ तो ज़मीन पर खड़ी हैं ।" स्वयंसेवक ने भारत माता का अर्थ समझाया । सभी नेताओं के चित्रों के नीचे उनके नाम लिखे थे । हेती उन्हें पढ़ रही थी ।

"अरे देख, रमणजी !" लवजी लगभग चिल्ला पड़ा । हेती तो हयाके मारे जैसे ज़मीन में धँसी जा रही हो । सारंग के इज्जतदार आदमियों को लेकर हेड-मास्टर और रमण मास्टर मंच पर आ चुके थे । सबके बैठ जाने के बाद जो जगह बची वहाँ गाँवों के मुअज्जिज लोग बैठ गये । सोमपुरा से भीमा मुखिया नहीं आया था अतः उसकी जगह धमला ने ले ली थी ।

रमण ने ऊँची आवाज़ में लोगों से प्रार्थना की—"सब लोग बैठ जाइए ।"

हेती झट से बैठ गयी । देखा-देखी आस-पास के लोग भी बैठने लगे । पुरुष विभाग में कुछ लोग अभी भी खड़े थे । उनका चेहरा देखने से लगता था वे सुनने नहीं बल्कि देखने आये हैं । जब उनसे बार-बार कहा गया तब वे भी बैठ गये । थोड़ी देर में शांति स्थापित हो गयी ।

पहले देशभक्ति का गीत हुआ । फिर हेडमास्टर ने सबका स्वागत किया । फिर चार लोगों ने भाषण दिये । पद्माभाई ने अधिक समय लिया । उन्होंने बार-बार कहा कि हमने अंग्रेजों को खदेड़ दिया है । अब इस देश में अपना राज्य चलेगा । वे बताते रहे कि उन्होंने कितनो बार लाठियाँ खायीं, जेल गये, जेल में कितनी अवधि तक रहे ! अन्त में जयहिन्द बोलकर बैठ गये । आभारविधि का उत्तरदायित्व रमण ने निभाया । उसने एक-दो बातें नई कहीं : आनन्द के साथ ही साथ आज का दिन दुख का भी है । क्योंकि आज महान भारत विभाजित हो गया है । इसमें अंग्रेजों का ही नहीं, हमारा भी दोष है । आज तक हमने अंग्रेजों को गालियाँ दी हैं । अच्छी बात है । किन्तु अब राज चलाते समय हमें उनकी विशेषताओं को भी ध्यान में रखना होगा । अन्ततः सबका आभार मानकर उसने भारतमाता की जय के साथ ही महात्मा गाँधीजी की भी जय बोलायी । सब जब जयजयकार कर रहे थे तब हेती एकटक रमण को देखे जा रही थी जैसे सपना देख रही हो ..

सभा विसर्जित हो जाने के बाद रमण उन लोगों के पास कुछ देर खड़ा रहा । सब की खबर पूछी । हेती ने आधे-आधे वाक्यों में या मौन धारण करके जवाब दिया । सहेलियों ने उसकी मदद की ।

लवजी ने हेती के पास पैसे देख लिये थे । इस बार हेती ने दो आने को मूँगफली ली । सबने खायी । चार आने की चूड़ियाँ पहन लीं । थोड़ी देर में राजकुमार की सवारी निकली । दोपहर हो चुकी थी किन्तु आकाश में बादल छाये थे । वातावरण शीतल था और खेतों की हरियाली शांत थी ।

शाम को गाँव के चौक में धमला का पड़ाव था । आज वह मुखिया के रुआब में था । आने-जाने वालों को रोककर वह विस्तृत सूचना दे रहा था । वह आज बड़े-बड़े लोगों के बीच बैठा था । सारंग की सभा में सोमपुरा का वह प्रतिनिधित्व करके आया था यह बात वह अपनी भाषा में सभी को बताता जिसे सुनकर लोग उससे खुश नहीं हो रहे थे । छना ने माना से कहा कि धमला तो आज रोब डाल के आया है । मुखी की जगह पर बैठ आया है । माना ने भीमा मुखी को ढूँढ निकाला । भीमा सुनते ही चौक की ओर आया । उसे देखकर धमला के आस-पास बैठे लोग चौकन्ने हो गये ।

"इ भिमवा पडवा की तरह सीधे इधरे आवत जान पड़त है ।" एक ने हँसने के बहाने चिन्ता व्यक्त की ।

"तुममें से किसी को खोजत होये ।" धमला निश्चित होकर बोला ।

भीमा दस कदम दूर खड़ा रहा ।

"अरे दूसरे कोनो जगह है कि नाहीं ? इधरे सब चिपके रह बो ?"

"अभी बैठे हम तो मुखिया । तुम इधर कहाँ जात हो ?"

"तुहार पूजा करे ।" कहकर भीमा ने बेंत की छड़ी दायें हाथ में पकड़ी ।

"पूजा तो भगवान के कौन बात है भला मानुस।" धमला ने कहा।

"आज तो हमैं तुहार टँगरी पूजे क है।" भीमा ने आँख निकालते हुए कहा। और ताबड़तोड़ गालियाँ देने लगा। धमला ने उसका विरोध किया तो भीमा ने उसे मारने के लिए छड़ी वाला हाथ उठाया। धमला के आस-पास बैठे लोगों ने बोलना शुरू किया-"हाँ मुखिया हाँ, तुम्हार दिल तो बड़ा होय क चाही।" ऐसा कहकर उन्होंने उसके हाथ से छड़ी ले ली।

धमला ने इस बार कुछ कड़वी बातें कह दीं। जिसका अर्थ था कि उसे एक बार मारने दो तो मैं भी बताता हूँ। ये भिमिया तो दारू पी-पीकर मोटा हुआ है। भीमा से यह कड़वी बात सहन न हुई। आज तक उसने जितनी शराब पी थी उसका सारा नशा उस पर एकसाथ चढ़ आया। उसकी आँखें लाल हो गयीं। गुर्राता हुआ बोला-

"साला सूअर सबके बीच मां बैठ क सारे गाँव के नाक कटिस है तू तो। तुहरी महतारी की......" धमला ने गाली पूरी की।

भीमा जूता निकालकर दौड़ा। धमला बचने के लिए भागा। खेत से घर की ओर आ रहे नरसंग के पाँव के पास भीमा द्वारा फेंका गया जूता पड़ा। धमला नरसंग के पीछे छिपकर सारा गाँव सुन सके इस प्रकार चिल्लाता हुआ बोला-

"अरे भिमिया, तु तो कब के मुखिया मिट गयो। जा घरे जा और अपनी मेहरारू का सम्हार गदहा। अब तो हम सब स्वतंत्र।" थोड़ी देर रुककर, थोड़ी दूर जाकर वह फिर बड़बड़ाया। "और अब तो तु हुँ स्वतंत्र हस।"

देखते ही देखते धमला अदृश्य हो गया। भीमा ने नरसंग के पास में पड़े हुए जूते को झुककर उठाया। पहनना भूलकर हाथ में ही लिये-लिये चल पड़ा।

"मुखिया, जूता तो पाँव मां डार लियो।" नरसंग ने कहा।

जूता पहनकर भीमा ने नरसंग से बात करना शुरू की। उसने सब कुछ पूछा। यह सब आज़ाद हो गये हैं, क्या यह सच है? धमला मंच पर बैठकर आ गया है, उसका क्या किया जाय? मुखीगीरी का क्या होगा?

नरसंग ने कहा कि यह सब बकवास है। जाते-जाते उसने अपने घर कीर्तन में आने के लिए उसे आमंत्रित किया। उसे मालूम था भीमा कभी भी कीर्तन में नहीं आता। किन्तु आज आये तो ठीक है। उसका मन शांत हो जायेगा। वह अपने बाप की तरह ही पियक्कड़ हो गया है। बहुत बुरा हुआ। आज अगर आयेगा तो सबके बीच उससे जल उठवाऊँगा। किन्तु क्या सच में वह आयेगा?

12

रात को भोजन आदि के बाद नरसंग ने देवू को भेजकर सभी भजन-कीर्तन वालों को कहलवाया। धमला को सबसे पहले कहलाया कि तबला और लालटेन लेकर जल्दी आ जाये।

अभी गत वर्ष ही नरसंग ने इस भजन-मंडली की स्थापना की थी। सारंग के स्वामिनारायण मंदिर में वह वार-त्यौहार जाता तो ढोल, मंजीरा, तबला और सारंगी एकसाथ बजते देखकर उसका मन प्रसन्न हो उठता। आँख में चमक आ जाती। घर वापस आ जाने के बाद भी विभिन्न सुर-ताल उसके मन में गूंजते रहते। क्या करे क्या नहीं कुछ सूझता नहीं। बाद में तो वह भजन की पंक्तियाँ भी गुनगुनाने लगता। फिर भी मन की बैचेनी खत्म न होती। जन्माष्टमी के दिन महादेव के मन्दिर में उसे एकाएक विचार आया-चन्दा इकठा करे। तबला, दो मंजीरे और दो करताल लाए। कितने पैसे लगेंगे? उसकी बात का सबसे पहले धमला ने समर्थन किया। उसने सोचा कि अब काम नहीं होगा। उस अभागे ने सबसे पहले सहमति दर्शायी है इसका मतलब अब काम नहीं होगा। किन्तु आश्चर्य तो उसे तब हुआ जब वह सारंग जाकर सुन्दर सा तबला ले भी आया।

उसी शाम को तीन अन्य सदस्य भी मिल गये। बारह आदमियों की भजन-मंडली की स्थापना हुई। सबने मिलकर नरसंग को प्रमुख बनाया। साधनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी धमला को सौंपी गयी। क्योंकि उसके घर में बाल-बच्चे तो थे नहीं अतः साधनों के टूटने का कोई भय न था। भविष्य में मंदिर के एक कोने में एक छोटी-सी कोठरी बनवा देने की भी योजना बन गयी। उसी दिन कुछ नियम भी बना दिये गये। भजन गाए जा रहे हों उस समय कोई बीड़ी नहीं पियेगा। कोई चोरी नहीं करेगा। दारू नहीं पीयेगा। हाँ चोट लगी हो तो दवा के रूप में भले इस्तेमाल कर ले। अर्थात् कोई दुर्व्यसन नहीं। शराब-बंदी का नियम धमला को बहुत अखरा किन्तु वह कुछ न बोला। उसे भजन-मंडली का कार्यभार सौंपा गया इस बात से वह खुश था।

कुछ दिनों के बाद वह एक लालटेन खरीद लाया। आज वही जल रही थी।

आज कीर्तन गाने वालों की अपेक्षा भक्तों की भीड़ कुछ अधिक थी। गणेशजी की स्तुति हो रही थी इतने में पड़ोस की कोठरी में सो रहे पिथू भगत भी जा पहुँचे। उनकी भक्ति तो उनके ही तरीके से चलती रही। गत ठंडी में जब कीर्तन करवाया था तब तो भगत खेत में ही बने रहे थे। इस बार तो बरसात की वजह से घर पर थे और आज दिन भी सुहावना था। सभी के साथ वे भी अन्दर दरवाजे की चौखट के पास बैठ गये। लापरवाही से बैठे हुए लोगों ने उन्हें देखकर प्रसन्नता जाहिर की। भगत के हाथ में अभी भी माला थी। उसे आँख से छुवाकर उन्होंने जेब में रख ली। गणेशजी की स्तुति पूरी हुई। उसके बाद भी नरसंग के तबले और धमला के मंजीरे की प्रतियोगिता चलती रही। बोलो गणेशजी की जय। रणछोडराय की जय। इत्यादि आवाज वातावरण में बड़ी देर तक गूँजती रही।

एक-दो कीर्तन हुए तब तक तो अच्छी खासी भीड़ एकत्र हो चुकी थी। भैंस की चरनी पर बैठी जतन की पीठ में भैंस ने सींग लगाए। उसे चोट तो नहीं लगी किन्तु सामने बैठी चेहर को इससे बड़ी खुशी हुई। हेती ने भैंस को हाँककर बाएं

डाला और बाहर बैठ गयी। इधर सारंग की बातें छिड़ गयीं, उधर कीर्तन होता रहा। हेती को तो मंच पर खड़ा होकर भाषण देता हुआ रमण याद आ गया। फिर तो उसका मन तीन-चार महीने पहले की घटनाओं में खो गया। रमण की खुली हुई, चमकती हुई छाती, समझ में न आ रही किन्तु मीठी लगतीं उसकी बातें और फिर तो समूचे का समूचा रमण। सब याद आने लगे।

हेती आँखें बंद करके बैठी रही। कीर्तन होता रहा—

तुम एक बार खेलने आओ

सुन्दर वर श्याम।

घेमर ने अभी-अभी मंजीरा हाथ में लिया था। खनक-खनक बजा रहा था। अचानक कीर्तन की झोंक में आकर वह मंजीरे को एक ओर रखकर खड़ा हो गया। धोती का छोर पकड़कर नाचने लगा। उसने अष्टमी के मेले में बदरी और ढेखा-ड़िया के ठाकरड़ों को नाचते हुए देखा था। उसे नाचना नहीं आता था किन्तु हाथ-पाँव हिलाकर संगीत के सहारे झूम रहा था। चारों ओर वाह-वाह होने लगी। बाहर बैठी हुई स्त्रियाँ उसे घूर-घूरकर हँस-हँसकर देखने लगीं। फिर तो क्या था। घेमर थकने के बजाय उत्साहित हो गया। और जोर से नाचने लगा। सभी की आँखें आनंद के अतिरेक से डबडबा गयी थीं। इतने में तो एक नया ही खेल शुरू हो गया। अब तक नाचते हुए घेमर को एकटक देख रहे देवू को भी उत्साह आ गया। धमला का इशारा पाकर वह भी खड़ा हो गया।

बार-बार चड्डी चढ़ाकर वह भी अंत तक नाचता रहा। सभी आनन्दित हो उठे। उसे देखते-देखते लवजी की नींद भी उड़ गई थी।

उसके बाद प्रसाद बंटा। कृष्ण भगवान की जय बोली गयी। घेमर ने सभी को पानी पिलाया। हुक्का-चिलम भरे जाने लगे। बरसात की बात निकली। दाल और बाजरे की बुवाई की बात चली। थोड़ी देर में ही सारे गाँव की फसलों का लेखा-जोखा हो गया। भगवान और भाग्य की बात भी चल निकली।

"भाई। करम मां होय उ होय।" पड़ोस के मुहल्ले के भगा ने कहा। इस वर्ष उसके खेत में बाजरे की फसल अच्छी हुई थी।

"करम भागो क कहा जात है और मेहनतौ का।" नरसंग ने कहा।

"पिथू बाबा, तुम तो कुछ बोलते नाहीं हौ।" घेमर पिथू भगत की ओर घूमा। "भाग पहले कि मेहनत? का हम कम मजूरी करित है?"

अब तक चुप बैठे फता ने दीवाल का टेका लेते हुए कहा—

"तू तो बहुत मजूरी करत हौ भैया। एक दिन के काम दुई दिन होत है। और वह भी जैसा किया वैसा न किया।" फता को किसी का इच्छित समर्थन नहीं मिला अतः घेमर ने भी उसका विरोध नहीं किया। थोड़ी देर बाद यह सोचकर कि उसीमें होशियारी है फता ने कहा—"हम तो दूसर कुछ नाहीं जानित। जस बोऊ तस काटो। सही बात कि नाहीं पिथू काका?"

"सही बात भाई सही बात। पर तू तो अक्सर समझे-बूझे बिना बोल देत हो।"

घेमर हँस पड़ा। दूसरों ने भी उसका साथ दिया। जमीन कैसे हँभले इस बारे में भगत ने थोड़ी बहुत बातें कीं। सारी बातें उनके अपने अनुभव की थीं।

"तभौ पिथू काका भाग सब कुछ तो होतै है?" अब तक पुरुषार्थ का पक्ष ले रहे फता ने भाग्य का समर्थन किया। उसने उत्तर का इन्तजार किये बिना ही नरसंग की ओर देखकर कहा, "लेव चलो, एक भजन उठाऊ। फिर बंद कीन जाव।"

धमला ने उसे डाँटा। तुझे उठना हो तो उठना। भजन तो एक नहीं सात होंगे। फिर तो उसीने कहा चलो नरसंग भाई, मोहन भाई शुरू करो भजन।

लवजी आँखें मले-मले आकर पिथू भगत की गोद में बैठ गया था। वह बोला—

"बाबा तुम गाऊ न। वह दिन गायो रहा उ। जब हम रोवा रहा तो तुम गायो रहा।" लवजी की बात को सभी ने गम्भीरता से लिया और भगत क्या जवाब दे रहे हैं—सुनने के लिए सब उत्सुकतापूर्वक उन्हें देखने लगे।

भगत ने कहा कि तबले के साथ उन्हें अनुकूल नहीं आयेगा।

"तबले के बिना।" घेमर ने आग्रह किया।

नरसंग ने धीमे से तबला एक ओर रख दिया। लवजी तो याद दिलाकर चुप हो गया था। अब तो हेती भी बाहर आ गयी थी। वह बोली—"बाबा, आज तो तुमहिन गाओ।"

भगत ने धीरे-धीरे गाना शुरू किया—

> हरि बिना सुबह न होय रे ऊधवजी।
> प्रभु बिना पल न सुहाय रे ओधवराय हमको!
> थोड़े-थोड़े जल में मछलियाँ रे तरसें
> अलक-तलक जिया जाए रे ओधवराय हमको!

धमला ने भगत को बीच में रोक दिया। यह किसी को भी अच्छा नहीं लगा। देवू के पास से उसने पेन्सिल मगाई और बोला कि बाबा गाते जायें और तू लिखता जा।

लिख पाएगा कि नहीं इसकी चिन्ता किये बिना ही देवू लिखने बैठ गया। धमला लालटेन लिये बैठा रहा। भजन पूरा हो गया तो कागज लेकर उसने जेब में रखते हुए कहा—

"अगले शनीचर क इ भजन हम गाउब।"

उसी दिन सवा रुपया देकर घेमर भी भजन-मंडली में जुड़ गया।

हुक्के-चिलम के साथ-साथ इधर-उधर की बातें शुरू हो गयीं। धमला ने भीमा मुखिया की बुराई शुरू कर दी। नरसंग ने बात को मोड़ दिया। आजादी की बात शुरू हुई। देवू ने कहा कि अंग्रेज चले गये।

"कहूँ नाहीं गये। इहैं हैं। हम आजे देखा रहा।" लवजी ने जमादार को देखा था। अतः देवू के साथ वह वाद-विवाद करने लगा।

"अब तो सब बदल जाये न।" मोहन ने पूछा।

"जे अपने ऊपर है उतो न बदल जाये।" भगत ने कुछ दिन पहले ही अमीचंद सेठ से कुछ बातें सुनी थीं। उन्होंने कुछ समझे-बूझे बिना भी कहा था कि ये अफसर लोग यहीं रहेंगे। और अगर ऐसा ही रहा तो आजादी का मतलब ही क्या हुआ?

"पर हम तो इ भीमा मुखिया का तो खदेड़ के मानब।" कहते हुए धमला खड़ा हो गया। किसी ने उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया। उसे तबला-मंजीरा एकत्र करने की बात याद आ गयी। वह सब साफे के छोर में बाँधकर नरसंग के साथ एक फूँक और मारकर, "खुश रहो भैया।" कहता हुआ उठ खड़ा हुआ। हाथ में लालटेन लेकर वह गली की ओर चल पड़ा। दूर जाते हुए मात्र दो ही वस्तुएँ दिख रही थीं: लालटेन और जल्दी-जल्दी उठ रहे धमा के पाँवों की परछाइयाँ।

13

शाम को हेती परती से भैंस लेकर वापस आयी थी। बोये हुए खेतों से दूर परती थी। बीच में एक छोटी तलैया पड़ती थी। लोग उसे हरी-तलैया कहते थे। गाँव के चौक वाले ताल का पानी ठण्ड में सूख जाता था। हरी-तलैया का पानी भी बिल्कुल तलछट में पहुँच जाता। चकरोड को छोड़कर हर ओर हरी-हरी घास उग आती। लोगों का कहना है कि वर्षों पहले यहाँ एक नागा-बाबा आया था उसीने यहाँ घास के बीज डाले थे। तब से यहाँ घास कम नहीं पड़ती। एक बार नरसंग ने बुढ़ऊ से पूछा था – यह कन्द ग्रीष्म ऋतु के आने तक क्यों हरे-भरे रहते होंगे?

भगत जानते थे कि शरद ऋतु में तो दूसरी घास उगती है। किन्तु बरसात में उगी हुई घास भैंसों को अच्छी नहीं लगती। बरसाती घास के साथ दूब भी होती है किन्तु उन्हें छाँट-छाँटकर खाना भैंसों का काम नहीं है। गाय और भेड़-बकरियाँ कहीं होली के नजदीक यहाँ आती हैं, तब तक तो सारी घास सफाचट हो जाती है। फिर भी इसमें कोई तो विशेषता है ही। दूसरे तालाबों में तो इतने समय तक नमी तक नहीं रहती। मिट्टी को किसी महात्मा का मंतर लग गया हो इस बात में कोई आश्चर्य नहीं।

शाम के समय गोरू हरी-तलैया में पानी पीकर गाँव की ओर मुड़ जाते। हेती निश्चित होकर पेड़ के नीचे खड़ी थी। उसके हाथ में नीम की पतली छड़ी थी। उसकी पुनगी को वह अवचेतन में ही अपने पाँव के कड़े के साथ टकरा रही थी और उसमें से आ रही आवाज को सुन रही थी। चाँदी के कड़े की आवाज रूपा की घण्टी की तरह तो नहीं थी किन्तु हेती को वह बहुत अच्छी लग रही थी। रमण ने कहा था–

"तुम्हारे इन गोरे-गोरे पाँवों में चाँदी के कड़े फीके लगते हैं।"

हेती कुछ नहीं बोली थी। अंडी के तेल से जल रहे चिराग के उजाले में उसने लेटे ही लेटे अपने आँचल से मुँह ढँक लिया था। रमण ने उसके पाँव को अपनी गोद में रख लिया था और कहा था–

"इन फूल-से पैरों में पाँच-छः सेर चाँदी का वजन अच्छा नहीं लगता !" उसने झुककर सिर टिकाना चाहा। संकोच से हेती ने धीरे से पाँव खींच लिए। फिर भी रमण के चेहरे के साथ उसके पाँवों के गहने घर्षण करते रहे। हेती ने उसके चेहरे पर हाथ से सहलाया।

इस समय भी उसका एक हाथ ऊपर उठ गया। उसे आश्चर्य हुआ। हाथ बड़ा प्यारा लगा। सिर के ऊपर झुके हुए बरगद के पत्ते को उसने तोड़ा और हाथ में लेकर देखती रही। दूसरे हाथ की सोंटी कब की स्थिर हो गयी थी। उसने देखा कि उसकी भैंस सीधे चकरोड में जाने के बजाय मुखिया के खेत में घुस गयी है। वह आवाज देती हुई दौड़ी। भैंस खेत के बीच होती हुई भागी। मुखिया का भाई जेठा खेत के उस ओर खड़ा था। उसने भैंस को रोक लिया। "अब ईका कानीहौस मां ले जाके ना बन्द करी तो हमार नाम जेठा नाहीं।" हेती ने चिरौरी की किन्तु वह न माना और भैंस को हाँक ले गया।

हेती रोती हुई घर की ओर भागी। कंकू के बहुत पूछने पर उसने सारी बात बताई।

"हमरी भैंस का उ कानीहौस मां बन्द करी? खून पी जाब उके खून।" क्रोधित होकर कंकू उन्हीं पैरों से सीधे कानी हौस पर पहुँची। जाकर देखा कि भैंस कानी हौज के दरवाजे में सिर रगड़-रगड़कर बाहर आने का असफल प्रयास कर रही थी। बाहर जंजीर में ताला लगा था। कंकू को देखकर भैंस रेंकने लगी। कंकू की आँखें भीग गयीं। वह भीमा मुखी के घर की ओर चल पड़ी।

भीमा खाट पर बैठा-बैठा हुक्का पी रहा था। कुछ समय पूर्व ही वह जेठा को डाँट चुका था। कंकू को देखकर जेठा घर से बाहर आ गया और फसल उजाड़ने की बात करने लगा। इस बीच भीमा चाबी ले आया, ताला खोलकर वह एक ओर को खड़ा हो गया। वह भैंस से डरता था। कंकू ने दरवाजे की जंजीर खोली। भैंस कंकू का हाथ चाटने लगी।

नरसंग पिथू की भैंस को आज जेठा ने कानीहौस में बन्द कर दिया था यह बात पूरे सोमपुरा में फैल गयी। कुछ लोगों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि भीमा मुखी ने स्वयं ताला खोल दिया था। कुछ लोग कहते – पिथू भगत से डर गया होगा। धमला को यह अच्छा नहीं लगा। नरसंग और भीमा के बीच झगड़ा होता तो अच्छा रहता – उसने सोचा। जिस दिन भीमा ने उस पर जूता उठाया था उसी दिन से वह उस पर खार खाए बैठा था। उसका मुखियापन खत्म करना था। उसने लाला को बहका दिया कि मुखिया के पद पर भीमा नहीं बल्कि लाला ही शोभा देगा। लाला उसके बहकाने में आ गया।

उसने लाला के समक्ष अपनी योजना प्रस्तुत की। दूसरे दिन लाला दरबार में जाये। थानेदार से पूछे कि कल भीमा ने नरसंग पिथू भगत की भैंस को हौस में

बन्द करके दंड वसूल किया था वह उसने जमा कराया या नहीं ? अगर थानेदार को एक रुपिया घूस देकर कागज तैयार करवा ले और वह कागज दीवान के पास पहुँचा दे तो समझो भीमा गया ।

लाला की बात थानेदार को सच लगी । उसे विश्वास हो गया कि भीमा घूस जरूर लेता होगा किन्तु उसे कभी भी रुपिया-दो रुपिया तक नहीं देता । उसने उसी दिन सिपाही भेजकर भीमा को बुलवाया ।

भीमा ने सुना तो डर गया । हाथ-पाँव ढीले पड़ गए । अब मेरा क्या होगा दारोगा साहेब ? घुमा-फिराकर वह बार-बार यही सवाल पूछता ।

"और कुछ नहीं तो तुम्हारी लम्बरदारी तो जायेगी ही ।"

भीमा पानी पीने के बहाने बहार गया । वापस आया तो उसके हाथ में दो रुपये थे । उसने रुपये थानेदार को दिए और कोई रास्ता निकालने के लिए कहा । थानेदार ने बताया कि उसे तो कोई राह नहीं दिखाई दे रही है । यदि तुमने नरसंग के पास से दंड न लिया हो तो एक गुनाह और लिया हो तो दो ।

भीमा ने बहुत आजीजी की । अन्त में थानेदार ने सलाह दी, "तू जेठा को अपने पक्ष में कर ले । यदि वह कह दे कि उसने भैंस बन्द की फिर छोड़ दी तो तू कायदे में नहीं आयेगा । उसका कोई दंड हो तो तू भर देना ।"

भीमा वापस आया तो उसके पाँवों में शक्ति न थी । उसे लाला पर बहुत क्रोध आ रहा था । उसे उसकी चाल का पता चल गया था । यदि कभी वह दाँव में आ जाये तो उसकी खबर लेने के लिए भी उसने प्रतिज्ञा कर ली । मुहल्ले में पहुँचकर सबसे पहले वह लाला के घर गया । लाला घर पर नहीं था ।

लाला नरसंग के खेत पर गया था । उसे सलाह देने कि थानेदार जब उसे बुलाये तो क्या जबाब देना है । नरसग उसकी दानत समझ गया था कि वह मुखिया बनना चाहता है । किन्तु नरसंग ने उसके सामने चारा नहीं डाला ।

भगत ने लाला की मुखिया बनने की इच्छा समझकर और नरसंग के विचारों को जानकर दरबार में उससे कैसे प्रश्न पूछे जाएँगे, उसका कैसा जवाब देना है आदि अपने अनुभव की बातें नरसंग को बतानी प्रारंभ कर दीं । और नरसंग बुढ्ढ की बातें सुनने में ऐसा खो गया कि कचहरी में जाना ही भूल गया । याद दिलाने पर उठा ।

थानेदार ने नरसंग को बैठाकर पूछताछ की ।

"हमै आपका जवाब दिये का है साहेब ?"

"अभी दीवान साहेब बुलायेंगे । तुझे कुछ पूछना हो तो पूछ ले ।"

"हमें तो सही बोले क है । हमां आपसे का पूछी भला ?"

थानेदार हँस पड़ा ।

"पिथू भगत का लड़का भी कमाल का है ।"

थोड़ी ही देर में "नरसग पिथू हाजिर हो" की आवाज सुनाई दी । दो घड़ी

के लिए तो नरसंग वहाँ गया । किन्तु अन्दर पहुँचकर मन ही मन महादेव का नाम लेकर उसने दीवान की ओर देखा । दीवान के चेहरे पर कठोरता न थी ।

"क्या नाम है ?"

"नरसंग पिथू ।"

"भैंस रखते हो ?"

"हाँ साहेब, भैंस-बर्ध पर तो हमार गुजारा होत है ।"

"भैंसों को छुटी ही रखते हो ?"

"साहेब, हमार लड़की भैंस सँभार नाहीं पाइस और भैंसिया जेठा करसन के खेते मां घुस गयी । मुला कौनों नुकसान नाहीं किहिन रहा ।"

"भैंस को कानीहौस में किसने बन्द किया था ?"

"जेठिया हाँक लेगा रहा, उस लड़किया कहत रही ।"

"भैंस को छोड़ा किसने ?"

"इतो हम नाहीं जानित, काल पूछ के बताय देव ।"

"कितना दंड भरा ?"

"दड के तो मालूम नाहीं साहेब, मुला भीमा मुखिया कहिन रहा कि काल दरबार मां जाय के दंड भर आयो ।"

"तो दंड भरा क्यों नहीं ?"

"काम मां से फुरसत नाहीं मिली साहेब । मुला इ गुना तो है । आज हम पैसा लाये हैं । आप कहो तो दुवन्नी जादा भर देई ।"

दीवान हँस पड़े । यों ही अकारण । किन्तु देखने वालों के लिए यह नई बात थी । नरसंग आठ आना भरके, चौक से दो आने का चना बच्चों के लिए लेकर वापस आ गया ।

भीमा की मुखियागीरी को कोई आँच नहीं आयी । लाला दाँत किटकिटा कर रह गया । धमला ने भजन-मंडली के बीच नरसंग की बुद्धि की प्रसंशा की और भीमा की चौधराई छीन लेने की प्रतिज्ञा फिलहाल भूल गया ।

14

नवरात्रि के समय सभी के यहाँ से सवा-सवा रुपया एकत्र करना था । चन्दा । भीमा मुखिया के मुँह लगे माना ने पैसे वसूल करने की अगुआई ले ली थी ।

"नाहीं देय क है चन्दा, काहे के मनौती होय भला ? पिछली साल अब कौन रोग फैला था ?" फता के घर से चेहर बोली । किन्तु बाहर खड़े हुए लोगों में माना भी है यह देखकर वह ढीली पड़ गयी-"उधार लाय के देबै । घेमर का भेजने के पहुँचाय देब ।"

नरसंग ने हेती से कहा । हेती ने अपनी माँ के पास से सवा रुपया लाकर

बाहर खड़े माना के हाथ में रख दिया। माना को आश्चर्य हुआ। अतिथि स्वागत के लिए मशहूर नरसंग ने आज उसे बुलाया भी नहीं। साथियों को मुहल्ले के बाकी के पाँच-छः घर घूमकर आने के लिए कहकर माना नरसंग के साथ बैठ गया। कान पर से साफा ऊँचा करते हुए बोला—

"आपन तो नियम है कि धरम के काम मां दुई चार दिन लगावै।"

"कौन से धरम कै बात करत हौ माना भैया?" नरसंग ने तटस्थ भाव से पूछा।

"का भले मानुष, अनजान बन के काहे पूछत हो? नवरात नाहीं लाग है?"

"लाग है।"

"तो फिर हवन करावै क है। नौवीं को जोगमाया क परसाद चढ़ावै का है। अब तो वहू मां बहुत खर्च होत है।"

"तो न खर्च करौ।" नरसंग शांति से बोला।

"तुम्हार तो कौनो ठिकाना है भला मानुष? कस बात करत हो। माता के भोग चढ़ावे क मना करत हौ?"

"भोग चढाऊ, पर जौन परसाद सारा गाँव खाय अस भोग चढ़ाऊ।"

"हम समझा नाहीं।"

"पुरान समय मां अपने बुजुर्ग लोग मांस-मछरी खात रहें। वह समय वे लोग माता क बकरा या पड़वा चढ़ावत रहें फिर बाद मां थोड़ा-थोड़ा बाँट खात रहें। अब दुई-चार बसे हैं बाकी तो अब किसके चूहरे मां मांस-मछरी बनत है?"

"अरे भैया उ बात अलग है और माता के भोग के बात अलग है।"

"इ सब फालतू बात है।"

"इ बात कौन भजन-मंडली के मेम्बर बोलत है?"

"हाँ, हम चौदा-पन्द्रह लोग ने कसम खावा है कि इ साल बकरा या पड़वा चढ़ावा जाये तो अलग रहा जाये। माता क सवा पाँच सेर सुखड़ी चढ़ाय के परसाद बाँट दीन जाये।"

"तुम पन्द्रह आदमी पूरे गाँव को विरोध करबो।"

"सारा गाँव एक है?"

"हाँ सारा गाँव एक है। हम कौनो अपने काम से नाहीं घूमित है।"

"तुम आपन काम करो। हम सवा रुपये दीन कि नाहीं?" नरसंग ने नाराजगी से कहा।

"मन से न दिहो होय तो अर्थ का?"

"तुम का सवा रुपया से काम है कि मन से? चलो अच्छा अब जाव। हमे काम है।"

माना को लगा कि नरसंग ने तो हकीकत में उसे अपने घर से निकाल दिया है। एक दिन अपना भी आयेगा। तब बताऊँगा। बदला के लेने की आशा से

उसने वसूली के काम में मन लगाया। साथियों के पास एकत्रित हुई रकम लेकर उसने जेब के हवाले की।

इस चन्दे में से कितनी रकम माता के काम में खर्च होगी और कितनी बचेगी इसका एक मोटा हिसाब नरसंग ने किया। आधी रकम तो बचेगी ही। बाकी माता के हाथ में रहेगी। जरूरत पड़ने पर भीमा उसमें से उधार लेगा। और अंत में सारा हिसाब-किताब गोल। माता के खप्पर में तो अच्छे-अच्छे आ जाते हैं किन्तु इन नालायकों पर तो जैसे माता के चारों हाथ हों।

माता का खप्पर...उसे दो वर्ष पूर्व का सावन याद आ गया। एक के बाद एक उसके गाँव के मवेशी मरते जा रहे थे। दोलीमाँ की बाँझ और उमा की दुधारू दोनों भैंसों की मौत एक ही दिन हो गयी थी। पूरे मुहल्ले में जैसे श्मशान-घाट की सी नीरवता छा गयी थी। सबकी जान संकट में थी। आज नहीं तो कल अपने पशुओं की बारी है।

शिवा बाबा ने धूनी रमाई थी। करमन मुखी ने पाँच आदमियों को बुलाकर माताजी की मनौती मानी थी। उन्होंने सुपारी न खाने की कसम खाई थी। फिर शिवा बाबा को बुलाया था। उसने आधी रात को माता का खप्पर निकालने की बात की थी। मुहल्लों के सभी निर्भीक आदमियों को बुलाया गया था। नरसंग का भी नम्बर आया था। म्यान को घर में ही छोड़ वह नंगी तलवार लेकर गया था। तलवार हाथ में होने से डर भी नहीं लगता और भूत-प्रेत भी हमला नहीं करते।

एक बड़े से पात्र में माताजी का खप्पर तैयार हो रहा था। बड़ी मात्रा में आग सुलगाई गयी थी। लोबान की धूप दी जा रही थी। रामा रात को ही मशाल तैयार करके रख गया था। मशाल के उजाले में उसकी उँगलियाँ काँपती-सी दिखाई दे रही थीं। किन्तु उस पर किसी को हँसी न आयी। जो नहीं काँप रहे थे वे किसी भी क्षण काँपने लग सकते थे।

मशालची को बाबा के साथ चलना था। बाबा के एक हाथ में त्रिशूल था, दूसरे में खप्पर। उसने धूप का पात्र छना को दिया। छना और शिवा इतनी ही देर में पक्के मित्र बन गये थे। शिवा का मानना था कि छना साथ चले तो ठीक है। छना ने दूसरे हाथ में मशाल ली। नरसंग ने उसके हाथ से मशाल ले ली और कहा कि सिर पर से साफा खोलकर कमर में बाँध ले। छना के साथ सभी ने ऐसा ही किया। सबसे पीछे-पीछे नरसंग चल रहा था।

अंधकार को भेदकर आगे बढ़ता माता का खप्पर पीछे और भी भयानक अंधकार फैलाता जा रहा था। रह-रहकर बाबा बोल उठता "जय जोगमाया की।" उसके साथ सब धीरे से बोलते। "जय"।

मुखिया के मुहल्ले में बाबा का पाँव कीचड़ में फिसल गया किन्तु वह सँभल गया। छना ने अंगारे पर धूप डाली। बाबा खखार कर आगे बढ़ा। मुहल्ले-मुहल्ले घूमकर खप्पर गाँव के बाहर निकला। बाबा को खप्पर उतारते छोड़कर सब

फटाफट दूर खिसक लिये थे। नरसंग थोड़ी दूरी पर खड़ा रहा था। बाबा का खप्पर वाला हाथ इतना गरम हो गया था कि उसने जब नरसंग के कंधे पर हाथ रखा तो नरसंग को लगा जैसे वह जल रहा हो।

"नरसंग भैया, हम तो आज बच गये। दो बार। पैर फिसला तब काली माँ की मुंडमाला दिखाई दी और अब ही जब खप्पर उतारा तब अंबा भवानी के शेर कूदत देखाय पड़ा रहा। तुम खड़े न होते तो · "

नरसंग को आज उस दिन की याद आयी। डर तो थोड़ा उसे भी लगा था। आज उसने माता के साथ व्यर्थ में बात की। माता के काम में रुकावट नहीं डालनी चाहिए। हम अपनी मान्यता के अनुसार करेंगे। दूसरों को जो चढ़ाना हो चढ़ावे। बुढऊ नहीं एक दिन कहते थे कि पुराने समय में आदमी की बलि चढ़ाई जाती थी। वह आदमी भी कैसा ? आदमी को मारकर किसके साथ रहा जा सकता है ? नरसंग व्याकुल हो उठा।

उसने स्नान करके जोगमाया का दीपक जलाया। देव तो दयालु होते हैं, उनसे कैसा भय ?

और अंत में वही हुआ जो नरसंग नहीं चाहता था। पशु-बलि।

अगले वर्ष तो गाँव में पशु-बलि बंद ही करवा देनी है। सुखड़ी, नारियल जो भी चढ़ाना हो चढ़ायें, नरसंग अकेले ही बड़बड़ा रहा था। बगल में खड़े देवू ने सब कुछ सुन लिया था। आज उसने जो भी देखा था उससे उसका मन विषाद से भर गया था। उसके मन में तरह-तरह के प्रश्न उत्पन्न होने लगे। यह तय करके कि वह उन सभी प्रश्नों को बाबा से पूछेगा, वह चुप रहा।

देवू ने दादा को आँखों देखा समाचार दिया। फिर पूछा—

"बाबा, तुम बीमार आदमी क डोरा बांध के अच्छा कर देत हो तो पड़वा के सिर-धड़ नाहीं जोड़ सकते ?"

"हम तो का बेटा जोगमाया भी नाहीं जोड़ सकत।"

देवू निराश हो गया।

"तब तो दीया जलावे से कौन लाभ ?"

"हम कहाँ केहू का दीया जलाईत है ?"

"तुम माला मां भगवान का मानत हो ?"

माला मां नाहीं, मन मां। माला तो एक जात के सहारा है। जौन कहाँ उ सब मन मां होत है। मन ही मनई के मन्दिर है।"

देवू को उनकी बात समझ में नहीं आयी। भगत ने उसके सिर पर हाथ फिराया। देवू खलिहान में चला गया। वहाँ बैठकर बाजरे की एक-एक बाली तोड़ने लगा। उसने देखा कि बाजरे का ढेर धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा है। उसे आश्चर्य हुआ। बाद में समझ में आया कि ऐसा ही होता है।

हेती एक बड़ा सा मुट्ठा भर के बाजरा काट लेने के बाद एक बाली बचा

रही थी। देवू ने भी उसका अनुसरण किया। बाजरे के दाने बहुत मीठे थे। धूप कम होने के बाद भगत भी खलिहान में आये। मजूर बाली में बाजरा रहने तो नहीं दे रहे हैं यह देखकर वे वापस चले गये। कुएँ के पास जाकर उन्होंने माला हाथ में ले ली। दूर से आ रहे मुसाफिर को पहचानने के लिए वे हाथ को आँखों पर रखकर छोटी-छोटी आँखों से देखने लगे।

15

"अरे। इ तौ रमणजी हैं।" देवू खड़ा होते हुए बोला—"इनके साथे के है?"

"चमनजी।" लवजी ने उसी लहजे में कहा और सब हँस पड़े। कंकू ने थोड़ी देर पहले ही यह कहते हुए हेती को घर पर भेजा था। वह पानी आदि भरे तब तक स्वयं भी पहुँच जायेगी।

मेहमानों के आस-पास एकत्र हो सब उन्हें देखने लगे। पिथू भगत कुएँ के पास, समतल जगह देखकर खाट खींच लाए। किन्तु लवजी ने जिसे चमनजी कहकर पुकारा था वे तो खाट पर बैठने के बजाय छपरी पर चढ़ गये और वहीं बैठकर खेतों में सिमट आये, प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करने लगे। अन्य लोग उनकी बढ़ी हुई दाढ़ी को देखे जा रहे थे—अपलक। हालाँकि दाढ़ी छोटी थी किन्तु थी आकर्षक। आँखें जितनी श्वेत थीं दाढ़ी उतनी ही श्याम। किन्तु चमक तो दोनों में ही समान थी।

"का नाम है मेहमान कै?" पिथू भगत ने अँगरखे की जेब में माला रखते हुए पूछा।

"बालू भाई।" रमण का ध्यान खलिहान की ओर था। उसने अपनी निगाह बालू भाई की ओर घुमाई, "मेरे मित्र हैं। घर से सुखी हैं, सेवाभावी हैं और कांग्रेस सेवादल के बड़े कार्यकर्ता हैं।"

"बड़ा-अड़ा कुछ नहीं, सिर्फ कार्यकर्ता हूँ। कार्यकर्ता भी क्यों? सेवक हूँ।" रमण समझ गया कि यह बालू भाई की स्वाभाविक विनम्रता है। अतः प्रसंशा के ही स्वर में वह आगे बोलता गया—"अभी अविवाहित हैं।"

स्वयं अविवाहित हैं इस बात का बालू भाई को अभिमान है, जिसे वे नम्रता-पूर्वक प्रकट करते हैं। रमण इस चीज से परिचित था। बालू भाई रमण के घर कुछ दिन तक रह चुके हैं। इस दौरान उनके मस्तिष्क में दो-तीन विचार उभरते रहे। प्रथम तो यह कि इन गाँवों के सर्वांगीण विकास की सेवा में लग जायें। दूसरे यहाँ के गाँवों के लोकगीतों को एकत्र कर एक पुस्तक प्रकाशित करें। उनके इस विचार को रमण का समर्थन प्राप्त हुआ कि उनके आदर्श ने जिद का स्वरूप अख्तियार कर लिया। रमण उन्हें एक अर्ध-विक्षिप्त-सी बुढ़िया के पास ले गया। बुढ़िया ने भी उन्हें लोरी से लेकर मरसिया तक के अनेक गीत सुनाए। बालू भाई को उन गीतों

के अधिकांश शब्द सुनाई ही नहीं देते थे और जो सुनाई देते थे उनमें से अधिकांश समझ में नहीं आते थे। इसके बावजूद उनकी तल्लीनता में लेश मात्र भी फर्क नहीं पड़ा।

उन्होंने हीरू भाई की मुलाकात ली। फिर रमण के साथ बदरी के एक-एक मुहल्ले में भ्रमण किया। यहाँ चौधरी, गरासिया, कुंभार, सुथार तथा हरिजनों में से ढेढ, भाँमी, शेनमा, भंगी आदि अनेक जातियों के लोग थे। तीन-चार घर मुस्लिमों के भी थे। उनमें तो मात्र एक ही जाति थी किन्तु वे हिन्दुओं की विभिन्न उप-जातियों के बारे में मात्र जानते ही नहीं थे, उन्हें स्वीकार भी करते थे। इस ज्ञान की प्राप्ति के बाद बालू भाई रमण के गाँव गोकुलिया की अपेक्षा बदरी की अधिक प्रसंशा करने लगे। विविधता में एकता इसी का नाम है। भारतीय संस्कृति के बारे में भाषण देने की उनकी आदत थी। रमण ने एक बार मजाक में कहा भी–

"आपको भाषण देना हो तो पच्चीस-तीस श्रोताओं को एकत्र कर दूँ?"

"अरे भाई, मैं कुछ देने नहीं कुछ पाने के लिए आया हूँ।" उन्होंने सेवकों के से लहजे में कहा।

फिर कुछ इधर-उधर की बातें होती रहीं। उन्होंने रमण से उसकी पत्नी के बारे में भी पूछताछ की। "हेती" नाम उन्हें पसन्द आया। फिर तो लगे हाथों उसे देखने के लिए सोमपुरा होकर अहमदाबाद जाने का उन्होने प्रस्ताव रखा। रमण ने भी अपनी सहमति दर्शायी।

"मैं यदि उससे बात करूँ तो तुम्हें कोई आपत्ति है?"

"आपत्ति तो कुछ नहीं किन्तु वह स्वयं ही आप से बात नहीं करेगी।"

"क्यों?"

रमण का तर्क बालू भाई के गले नहीं उतरा।

गाँव के कुएँ पर पानी भर रहीं सहेलियों ने हेती को रमण मास्टर और उनके मित्र के आगमन की सूचना दी।

हेती ने ऐसे आँखें नचाईं जैसे उसे पहले ही इस बात की सूचना हो। एक सहेली ने बताया था कि तुझे ढूँढ़ते हुए वे खेत की ओर गये हैं। हेती ने कुएँ से पानी खींचते-खींचते ही उसे कुहनी मारी।

"अरे, दिवाली आय गयी और तुहार बुलौवा नाहीं आवा?" वह हेती को चिढ़ाती हुई बोली।

"बुलौवा के का जरूरत है, हमार का, हम तो उनके साथे ही चलती बनी।" हेती के जवाब से खुश होकर तीसरी सहेली बोल पड़ी–

"ई के नाम है सेर के माथे सवासेर।"

हेती ने घड़े को उठाया और धारा की तरंगों की तरह कुएँ से घर की ओर चल दी।

दरवाजे पर पहुँचते ही परिचित आवाज सुनाई दी। घर के अन्दर पाँव रखते

ही चेहरा लाल हो गया। रमण की सीधी नजर उसे बींधे जा रही थी। जैसे इतना कम हो, वह बोल पड़ा, "घड़ा उतरवा लूँ?"

हेती घड़े को लेकर अंदर क्या गयी, जब तक कंकू सिर पर ईंधन रखे नहीं आ पहुँची, उसने पाँव नहीं रखा। लवजी बार-बार बालू भाई की दाढ़ी घूर रहा था और देवू चाभी को होंठ पर रखकर सीटी की तरह बजाने में तल्लीन था। हेती को यह पसन्द नहीं था किन्तु वह बाहर आकर मना भी कैसे करती?

बालू भाई ने "भारतीय संस्कृति और उसमें नारी का स्थान" विषय पर चर्चा छेड़ दी थी, किन्तु रमण को उसमें लेश मात्र भी रुचि न थी। "इस घर में भले ही वायु-प्रकाश का अभाव हो किन्तु आत्मीयता की बहुतायत है।"—बालू भाई क्या कहना चाहते हैं रमण की समझ में नहीं आया। अकुलाहट लग रही हो तो बाहर बैठें, कहते हुए रमण ने बालू भाई की अनिच्छा के बावजूद खाट बाहर निकाल ली।

"आप गाँव में आये हैं और आपको पर्याप्त मात्रा में प्राणवायु भी न मिले तो प्रकृति के प्रति आपकी कृतज्ञता.." इंधन लेकर आ रही सास की तरफ ध्यान जाते ही रमण बोलते-बोलते रुक गया। कंकू ने दामाद के सामने घूँघट खींच लिया था। खेत में जिसने स्वागत किया था वह स्त्री यही है—पहचानने में उन्हें वक्त लगा। पर्दा करने वाली सभी स्त्रियाँ उन्हें एक जैसी लगतीं। वे मन ही मन उसकी प्रसंशा कर रहे थे।

कुछ देर में घेमर आ पहुँचा। रमण उसे तुरन्त पहचान नहीं पाया? भादों-असोज की धूप में अथकें परिश्रम करने से उसका गोरा रंग कुछ काला पड़ गया था। थिगलियाँ लागे उसके कुर्ते की एक बाँह गायब थी। हाँ, उसके चेहरे पर उभर आई खुशी में किसी तरह की कमी न थी।

नरसंग को घर आने में देरी हो गयी थी अतः कंकू ने मेहमानों को रोक लिया था। उसका कहना था कि आज वे लोग वापस न जायें।

"मेरी तो इन दिनों छुट्टियाँ हैं किन्तु हमारे इन बालू भाई की तो.."

"नहीं, नहीं मेरे लिए तो "रोगी के मन भाये वैसा वैद बताये" वाली बात है"—बालू भाई ने मुक्त भाव से कहा। कहावत का अर्थ समझकर देवू हँस पड़ा। अन्य अतिथि तो "घर पर काम है" करते रहते हैं किन्तु ये भाई साहब तो। अच्छे आदमी हैं।

लवजी ने घर में जाकर शिकायत की – मेहमानों ने मुझे कुछ नहीं दिया। कंकू हँस पड़ी। साथ ही हेती भी।

"ले आज खाना तू ही पका" कहते हुए कंकू बाहर आकर समधियाने का हाल-चाल पूछने लगी।

शाम को मुहल्ले के आदमियों से दो खाटें भर गयी थीं। आजादी मिली है तो अब क्या होने वाला है इस प्रकार के प्रश्न पूछने वालों को बालू भाई उत्तर दे रहे थे।

"मेरे इस दिल में तुम्हारे गाँव के प्रति प्रेम है, इसी तरह का प्रेम प्रत्येक शिक्षित नागरिक के हृदय में है। सबका कहना है कि सबसे पहले गाँवों का काया-पलट होना चाहिए। भारत अर्थात् उसके सात लाख गाँव।"

"अब तो पाँच लाख–" देवू ने अपना नवीन ज्ञान व्यक्त किया।

"दो लाख पाकिस्तान में गए अपनी इतनी जिम्मेदारी घट गयी"–देवू के सामने एकटक देखते हुए बालू भाई ने कहा।

बालू भाई की यह राष्ट्रीयता रमण की समझ में नहीं आयी। किन्तु उनकी आशावादिता का वह भी हामी था। कुछ ही वर्षों में तो देश की शक्ल ही बदल जायेगी–इस बात पर संदेह के लिए उसके पास कोई कारण नहीं था।

पिथू भगत मौन थे। दूसरा कोई सब कुछ बदलकर धर दे इससे क्या? यह प्रश्न उनके लिए बहुत पुराना था। और जैसा कि उन्होंने सुना था देश का विभाजन हो गया है और उसके साथ ही नरसंहार हुआ है। यदि यह सच है तो फिर किसी भी प्रकार की आशा भी कैसे की जा सकती है? यहाँ दो भाइयों के बीच जरा-सी बात पर अलमौझा हो जाता है और फिर सब शांत पड़ जाता है।

भोजन के बाद बालू भाई ने टहलने की इच्छा व्यक्त की। रमण ने साथ चलने के बजाय घेमर को साथ भेज दिया।

आधा सूख गये तालाब से आ रही दुर्गंध की ओर इशारा करते हुए बालू भाई ने कहा–

"लगता है कहीं चूहा मर गया है कोई।"

"साँप-बिलार तो मूसे का जिन्दा खाय जात हैं। इहाँ ऊ के गंध कहाँ? हमें तो कुछ नाहीं जान परत।"

"तुम जरा ध्यान से हवा को साँस में लो।"

"हम समझा नाहीं–"

"लम्बी साँस खींचो। छाती में हवा भरो।"

घेमर की समझ में कुछ आ नहीं रहा था। वह थोड़ी देर चुप रहा फिर उसने विषय ही बदल दिया–

"तुम्हरे के लड़के हैं?"

"मैंने शादी ही नहीं की।"

"काहे, तुम्हरे जाति मां लड़किन के कमी है का?"

"नहीं, बहुत हैं किन्तु हमें समझ सके ऐसी मिलनी भी तो चाहिए?"

"समझ सके? भला ई का बात भा? अरे घर तो बसाये?"

इस बार बालू भाई ने विषयान्तर किया–"इस गाँव में और कोई चीज है देखने जैसी?"

"वह मुहल्ला। चलो देख क होय तो। उहाँ ई से जादा गंधाये।"

घेमर ने सीधे कहा होता तो बालू भाई हरिजन टोला देखने चले भी जाते।

उन्होंने उल्टे प्रश्न कर दिया कि इस गाँव को सुधारने के लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए ?

घेमर ने कहा—"कुछ नहीं । आखिर सुधरना हो तब न ?"

वे वापस आ गये । आकर बालू भाई नरसंग से बात करने लगे । नरसंग अहमदाबाद से अनजान न था । वह कई बार अपनी गाड़ी लादकर अहमदाबाद गया था । पिछली बार उसने सारंग से घी के डब्बे भरे थे अहमदाबाद के लिए । प्रति-डिब्बे के हिसाब से चवन्नी मिली थी और इस प्रकार साढ़े बारह रुपये कमाये थे उसने ।

इतना सुनते ही बालू भाई के मन में एक विचार आया । सारंग और अहमदाबाद के बीच यदि ट्रक भाड़े से चलाई जाय तो ? लोक-सेवा भी होगी और कमाई भी । दूसरे दिन सुबह ही निकल चलने का रमण का प्रस्ताव उन्होंने अस्वीकृत कर दिया । खेतों में जा आयें । तेरे ससुर कह रहे थे कि आज वे चरसा लगाने का शुभ कार्य करने वाले हैं तो ...

"वहीं से सीधे सारंग चले जायेंगे, वापस यहाँ नहीं आयेंगे हाँ, देख लीजिए बाद में आग्रह न करियेगा ।"

"मैंने तो सुना था कि पत्नी यदि मायके में हो तो दामाद को धक्के मारकर घर से निकालो तब भी निकलने का नाम नहीं लेता..."

"यह शहरों की बात है । यहाँ तो आप देख ही रहे हैं कि मुझे देखकर उसे कितना संकोच होता है । कितना शरमाती है ।"

"शादी के बाद भी ? ऐसा क्यों ?"

"यह आपकी समझ में आने वाली बात नहीं है । आप तो सिर्फ संस्कृति समझते हैं, यह तो भावना है..... ।"

इतने में देव और लवजी वहाँ आ पहुँचे और खेतों के बीच वाली पगडंडी की ओर मुड़े । वातावरण का रुख बदल गया । बाजरे की पूलियों की गंजियाँ खेतों के बीच सर उठाये ध्यान आकर्षित करती थीं । तूर के खिले-फैले पौधों ने पीले फूलों की शोभा धारण की थी । उनकी सुगंधित नमी हवा में अनुभव हो रही थी । अब जो दूसरा खेत सामने आया वह फसल की कटाई के कारण सफाचट था, जुताई भी हो गई थी । जमीन की खुरदरी सतह बालू भाई की आँखों से जैसे टकराई । नरसंग के खेत में सिंचाई हो रही थी । बरहे पर पीपल की छाया थिरकती थी । छाया का एक रंग अपने में समेटे हुए बरहे का पानी खेत के उस छोर तक बह रहा था, मोड़ और सतह के अनुसार पानी की कल कल ध्वनि में घट-बढ़ हो रही थी । सूर्य की बढ़ती धूप में पानी यहाँ-वहाँ चमकता था । बालू भाई मुग्धता से देखने लगे । रमण को लगा ससुर के खेत में हरेक काम की एक दरकार है, सफाई है ।

नरसंग चरसे से जुते बैल हाँक रहा था। उसने देखा कि चकरोड से भीमा मुखिया जा रहा है। उसे चिलम पीने के लिये बुलाया।

मनुहार करवा के भीमा बाड़ के सँकरे रास्ते का काँटा दूर लिए बिना पैर उठाकर आया। पिछले पैर की टखनी पर लहू की रेखा फूट आई। देखते ही भीमा ने उस पर रेत लगाकर झाड़ दी। चिलम पीने लगा। वह टींबा गाँव से आ रहा था। वस्ता के लिए रिश्ते की बात लेकर गया था। वह जवान कन्या विधवा थी। उसने मना कर दिया। वह और कहीं जाएगी पर सोमपुरा नहीं। भीमा के चाचा के लड़के का घर बसाने से मना कर दिया। पिथू भगत ने कहा कि औरतों में इस तरह मना कर देने की हिम्मत आई यह एक अच्छी बात है। भीमा ने आजादी का दोष देखा। रमण को लगा कि आजादी भीमा मुखिया की बेटी होती तो यह उसका करावा करवा देता।

भीमा खड़ा हुआ। मिर्च के पौधों की ओर मुड़ा। दो-तीन छोटी-छोटी मिर्च खा गया। कुछ मिर्च लेते जाने के लिए नरसंग के कहने पर उसने खेस के छोर में चुनी हुई मिर्च बाँध लीं और तेजी से चलता मिर्च के दो-तीन पौधों को कुचलता खेतों के बीच से गाँव की ओर मुड़ गया।

धमला ने भीमा को अपने रिश्ते की बात लेकर भेजा होगा। भीमा अपने चचेरे भाई के लिए गया। क्या धमा के भाग्य में पत्नी का सुख ही नहीं होगा? बात सुनते ही बालू भाई को कुतूहल हुआ – कौन है धमला? "आपकी बिरादरी का, वंठ।" रमण ने बताया।

बालू भाई बुरा मान गए। संकल्प कर लिया कि अब ब्याह करके पत्नी के साथ सेवा-कार्य के हेतु यहाँ आएँगे। – रमण के कान में कह दिया। इसी समय लवजी उनके पास आ पहुँचा। वह चार सीताफल उठा लाया था। "लेने हैं? एक आने के चार। अहमदाबाद जाकर एक आने के दो बेचना।"

रमण हँस पड़ा। खलिहान में काम करती हेती ने एक नजर इस ओर देखा। रमण ने लवजी से ऊँची आवाज से कहा : ये तो लखपति हैं, लखपति समझे?" बालू भाई के साथ रमण ने अपनी बड़ाई भी सब तक पहुँचा दी।

16

ऐसा लग रहा था जसे आज सारा सोमपुरा खाली हो जायेगा। बच्चे, युवक, प्रौढ़ सभी सुविधा के अनुसार सज-धजकर छोटी-छोटी टोलियों में एकत्र हो टींबा गाँव की ओर चल पड़े थे। गाँव में जो बच रहे थे वे वृद्ध, अशक्त, लूले-लँगड़े थे या कंजूस-लोभी। कंकू जैसे कुछ ऐसे भी थे जिन्हें दूसरों के यहाँ खाना अच्छा नहीं लगता था। अतः घर पर ही रुक गये थे। पिथू भगत की तो खैर बात ही और थी। महाभोज में जाने से शांतिपूर्वक माला नहीं फेर सकते। और इतने

समय के लिए भगवान से अलग हो जाना पड़ता है । यह बात उनकी उम्र के बहुत-से बुजुर्ग कह गये थे । अपने आपको इज्जतदार कहने वाले लोग महाभोज में न जाते हों ऐसी बात नहीं थी बल्कि वे तो अगुवानी करके प्रसंगों को सुशोभित करते हैं । खेतों की शान्ति के साथ मन की संगति बिठा पानेवाले पिथू भगत जैसे लोग ही महाभोज में जाना टाल सके ।

सोमपुरा के आंजणा पटीदारों के साथ ही अन्य छब्बीस गाँवों के आंजणा पटीदारों की बस्ती के अस्सी प्रतिशत लोग टींबा में एकत्र हो गये थे । इतनी विशाल संख्या में लोगों के एकत्र होने का एक मात्र कारण यह था कि पिछले पाँच वर्षों से किसी ने सम्पूर्ण बिरादरी को इस तरह खिलाया न था ।

माघ महीने की पूनम के महाभोज है यह निमंत्रण-पत्रिका मिलते ही भोमा मुखी ने पंचो को एकत्र कर बड़े उत्साह से सूचना दी थी । बिना बुलाए ही आ पहुँचे घमला को भी मुखी ने पंचों के बीच बैठने दिया था । किन्तु वह वार्तालाप में हिस्सा ले इसके पूर्व ही उसे हुक्का तैयार करने का उत्तरदायित्व सौंप दिया था । हुक्का भरकर, शांति से पीकर वह घर चला गया था । उसकी जीभ पर मगन अमथा का नाम था । वाह भाई वाह ! टींबा का मगन अमथा महाभोज करवा रहा है । काफी समय पहले पूर्व घमला बम्बई में बर्तन माँजने की तथा शेठानियों के कपड़े धोने की नौकरी करता था तभी मगन अमथा के साथ उसका परिचय हुआ था । यह मगन अमथा कभी टींबा का नाम रोशन करेगा इसकी तो उसने कल्पना भी न की थी । सत्ताईस गाँवों के इस समूह में टींबा का नाम उपेक्षा के साथ लिया जाता था । सोमपुरा के जिस घर को दूसरे गाँव में उसके जैसा ही गरीब घर नहीं मिलता था वही टींबा में अपनी लड़की ब्याहता था । टींबा में समधियाना बनाना अपयश का काम था । क्योंकि पूरी जाति टींबा को भिखारी मानती थी । वहाँ लोगों के पास खेती तो खूब थी किन्तु शायद ही कोई खरीफ की फसल बोता । गाँव के अधिकांश लड़के पंद्रह-सोलह के होते ही अहमदाबाद अथवा बम्बई बर्तन साफ करने भाग जाते और वहीं रसोई बनाना भी सीख जाते । दीपावली या किसी अन्य छुट्टी पर गाँव में आते, उजले-सफेद कपड़े पहनकर घूमते और घर का काम करने से जी चुराते । यही लोग आगे चलकर बीबी-बच्चे वाले हो जाते, खेती का काम करते किन्तु जिसे गाँव की भाषा में काली-मजूरी कहते हैं उससे जी चुराते । वे अपनी योग्यता के अनुसार शहर के धनी लोगों की व्यक्तिगत बातों का बखान करके लोगों के मध्य अपनी नाक ऊँची रखते । — उन्हीं में से एक युवक यही घमला का परिचित – मगन अमथा था । शादी के बाद खेती करने के बजाय वह दुबारा बम्बई चला गया । फिर तो पत्नी को भी वहीं बुला लिया । लोगों का कहना है कि प्रारंभ में उसने छोटी-सी होटल खोली थी । फिर कामकाज बढ़ाता ही चला गया । द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उसने जी भरकर गुड़-शक्कर की काला बाजारी की । उसके बाद वह स्वयं को चौधरी मगन अमथा नहीं बल्कि मगनलाल ए. पटेल के नाम से पुकारने लगा । गाँव छोड़कर चले जाने वाले मगन को भूल गये थे ।

छोटा भाई, मगन को पत्र लिखता रहता था। अन्त में उसने अपनी जमीन–जायदाद बेचकर शादी कर लेने की बात लिखाई। मगन अपनी सगर्भा पत्नी और डेढ़ वर्ष के लड़के को साथ लेकर आया। अपने साथ ढेर सारे बर्तन लाया। छोटा भाई नये–नये वस्त्र पहनकर घूमने लगा। कान में सोने की बालियाँ, ऊँगलियों में सोने की अंगूठी। किन्तु यह देख-सुनकर भी कोई उसके पास शादी की बात लेकर नहीं आया। बड़ा भाई पंचों से पूछता रहता किन्तु अभी भी उसे कोई आशास्पद उत्तर नहीं मिला था। बिरादरी में दस-बारह वर्ष की तो क्या सात-आठ वर्ष की भी कोई कन्या कुँआरी नहीं बची थी। मगन चिढ़ने लग गया था : "मेरे जैसे इज्जतदार और सम्पन्न आदमी के घर तो दूसरी जाति के लोग सामने से रिश्ता लेकर आते हैं।" इस बात को बारंबार सुनकर निराश होकर छोटा भाई एक शाम पंचों के बीच ही बोल पड़ा।" हम तो तुहार पैसो नाहीं देखा भया। बूढ़ा- बुढ़ऊ क तो तुम खाय लिहौ। किरिया-करम तो एक तरफ मुला बिरादरी के पाँच गेदहरौ नाहीं खवाये।" सुनने वाले हंस पड़े। मगन को क्रोध आ गया। यह सब मुझे समझते क्या हैं ? अरे मैं तो सारे गाँव को खिला दूँ ऐसा हूँ। बोलने को वह बोल गया। किन्तु सुनने वालों ने बात पकड़ ली। "मगनवा बरमभोज करे के बिचार करत है।" पूरा गाँव बात करने लगा। मगन ने भी सुना। उसने हिसाब लगाया। सत्ताईस गाँवों में बिरादरी की बस्ती होगी तकरीबन बीसेक हजार। उनमें से लगभग पन्द्रह-सत्रह हजार लोग खाने आयें। आठ नौ हजार रुपये तो काफी हैं। अरे ज्यादा से ज्यादा दस हजार हो जायेंगे। तो क्या ? पाँच हजार तो उसने गत वर्ष सट्टे में ही कमाया है। वह बम्बई चला गया और चौथे दिन ही पैसे लेकर वापस आ गया। गाँव के पंचों को बुलाया उसने। सारंग या बिजापुर से नहीं बल्कि बिसनगर से माल खरीदने का निर्णय लिया।

दूर के गाँवों से लोग दूसरे दिन से ही आने लग गये। उनके लिए खिचड़ी तैयार की गई। परोसने वालो की प्रसंशा हुई। खिचड़ी में गरम गरम घी छलक रहा था। उसके बाद वाले दिन तो सबेरे से ही आने वालों की भीड़ तेज हो उठी। शाम होते होते तो टींबा की गलियाँ ठसाठस भर गयीं। दूसरी जाति के भी छोटे–छोटे व्यापारियो ने गाँव में डेरा डाल लिया था। बाजरे के खगपात का छपरा बनाकर उस पर चादर बाँधकर उन्होंने छोटी–छोटी दूकानें बना ली थीं। खिलौने की दूकानें ही अधिक थीं। उसके बाद चूड़ियाँ बेचने वालों का नम्बर आता था। चाय–पान की दूकानें अपेक्षाकृत कम ही थीं। पुरुषों में से कुछ लोग चाय पीकर पान खाते थे तो कुछ लोग चिलम पीते–पीते खर्च करने वालों की आलोचना करते थे। लड़कियाँ और युवतियाँ अपने छोटे-छोटे भाई बहनों को भेजकर पान मँगाती थीं। और शरमाते हुए खाती थीं। फिर लाल होंठों से हँसते हुए सुन्दर दिखने का प्रयास करती थीं। दूर देखने वालों को भी इसका पता चल जाता था। ऐसे मौको पर कोई-कोई युवक युवतियों की टोली तक पहुँच जाता था और जैसे अपनी राह भूल गया हो, वहीं

बड़ी देर तक मँडराया करता था। जिनकी सगाई हो चुकी हो, जिनकी शादी हो चुकी हो किन्तु बिदाई नहीं हुई हो, जिनकी बिदाई हो चुकी हो किन्तु साल-साल में भी एकाध हफ्ते से अधिक सहवास न मिला हो ऐसे सभी अपने-अपने जोड़ों को देखने के लिए उत्सुक रहते। सुविधानुसार दो-चार शब्दों को कह-सुन लेते थे। कुछ शर्मीली लड़कियाँ अपने उम्मीदवार को छुपकर देख लेती थीं किन्तु लड़के बेचारे टापते रह जाते थे।

बुजुर्ग लोग आये तब से तकिया-बिस्तर लगाये बैठे थे। मगन सभी के पास जाकर दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन करता और लोगों की प्रसंशा तथा शुभकामनाएँ सुनकर आगे बढ़ जाता। अब किस प्रकार की प्रसंशा सुनने को मिलेगी उसे इस बात का पहले ही पता चल जाता फिर भी वह सभी से बड़े धैर्य से मिल रहा था। उसकी पत्नी का स्वभाव भी उसी से मिलताजुलता था। उसके पाँव भारी थे फिर भी डेढ़ साल के लड़के को कमर पर रखे वह सारे गाँव के पाँच चक्कर लगा चुकी थी। "यह अपने मगनजी के घर से हैं" कभी-कभी कोई बोल उठता और लोगों का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हो जाता। कभी-कभी दूर से आती हुई आवाज उसके कानों में पड़ती—"ऐसा सुख तो बड़ी-बड़ी सेठानियों को भी नहीं मिलता।" वह खुश होती। बच्चे को इस गोद से उस गोद में लेती और घूमती वापस घर आ जाती। घर की सजावट पर खुश होते हुए उसके पाँव घर में ऐसे पड़ते जैसे वह राजमहल में प्रवेश कर रही हो।

उसके आँगन की शोभा के आगे विवाहोत्सव भी फीका लगता। उसके मुहल्ले के अन्य घरों में भी सजावट थी। वस्ती के बीच की खुली हुई जगह ढँक दी गयी थी। नीचे का भाग कागज के तोरण से सजाया गया था। वहीं सभी के जिमने का प्रबंध था।

एकसाथ पन्द्रह सौ आदमी खाने बैठते थे। जितनी देर परोसने में लगती थी उतनी ही देर खाने में भी लगती थी। सत्ताईस गाँवों के इस समूह में यह प्रथम महाभोज था जहाँ खाने में हलवा, मूँग दाल, भात, सब्जी आदि विभिन्न व्यंजन जुटाए गए थे। मगन नहीं जानता था कि यहाँ इतनी बड़ी जिमनोर में विवाहोत्सव की तरह ही खाने में हलवा और मूँग आदि की भी व्यवस्था करनी होती है। पिछले समय से उसने शहरों की ही जिमनार देखी थी।

शाम को पाँच बजे के करीब मानव समूह बिखरने लगा। गाँव में जिनके नाते रिश्तेदार थे मात्र वे ही रह गये थे। मगन का सजा हुआ आँगन सूना हो गया। बच्चे को लेकर दरवाजे के पास बैठ गया। तीन चार आदमियों ने यह जानते हुए भी कि मगन को इस समय फुरसत नहीं है, उसे रोका और उसके लड़के से, एकाध वर्ष बड़ी अपनी लड़की के रिश्ते की बात चलाई। मगन ने इन तीनों से हाँ कर दी थी। यह बात उस समय पत्नी से करते हुए उसे काफी प्रसन्नता और गौरव का अनुभव हो रहा था। इसके बाद उसकी पत्नी ने उसे बताया कि खुद

मुझसे कितनी ही औरतों ने कहा लेकिन मैंने सबसे कह दिया कि इस बारे में तो वे ही जाने। मगन का पत्नी के प्रति सद्भाव तो था ही, आज उसके प्रति सम्मान भी उमड़ आया। उसने आहिस्ते से हँसते-हँसते पूछा–"मुला ननकवा कुँवारा है इ बात केऊ क मालूम नाहीं है ?"

अपने डेढ़ वर्ष के लड़के की सगाई के पूर्व पच्चीस वर्ष के देवर की सगाई हो जाये यह बात मगन की पत्नी को जरूरी नहीं लग रही थी। उसका कहना था कि जब देवर को जन्म देने वाले ही उसे कुँआरा छोड़ गये हैं तो उसमें भाई-भौजाई का क्या दोष ? मगन ने भी स्पष्ट कर दिया कि छोटे की सगाई नहीं हो रही थी इसीलिए उसने इतना बड़ा ब्रम्हभोज किया था। पत्नी को उसकी बात सच नहीं लगी। वह जानती थी कि झूठी बात कर मगन को हँसने की आदत है। क्या कोई आदमी अपने भाई की सगाई के लिए कभी इतना खर्च करेगा ? महाभोज तो यश के लिए किया जाता है। किसी को पाँच-सात सौ थमा देने से ही भाई की शादी हो सकती है। मगन ने तो दो दिन पहले ही कहा था—आदमी होशियार हो तो कमाकर खर्च कर डालने की बजाय अपना धंधा बढ़ाये।

महाभोज से प्राप्त हुई इज्जत को छोड़कर बम्बई जाने की इच्छा नहीं हो रही थी। पत्नी की तो इच्छा थी कि अब यहीं स्थाई रूप से रहने लगें। क्या करें ? कौन-सा धंधा किस प्रकार विकसित किया जा सकता है इसका वह जुगाड़ बिठाने लगा। बम्बई की होटल वाली जगह निकाल देने से बड़े आराम से तीन–साढे तीन हजार रुपये साख के मिल सकते थे। होटल के अलावा जो आमदनी थी वह जोखिम वाली थी। एक बार पकड़े जाने के बाद पुनः ऊपर आना बहुत मुश्किल था। वह सब छोड़कर अब यही रहना चाहिए। किराने और अनाज के व्यापार के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता भी न थी। पता लगाने पर मालूम हुआ कि तम्बाई के व्यवसाय में अच्छी–खासी बरक्कत है। बस, थोड़ा-सा इधर का उधर करना आना चाहिए। और यह सीखने के लिए उसे कहीं जाने की जरूरत न थी।

महाभोज के बाद छोटे की आशनाई का एक किस्सा भी बन गया था। किन्तु मगन ने वह बात बड़ी कुशलता से दबा दी थी। बहुत ज्यादा खर्च भी नहीं हुआ था। उसने इस बारे में पत्नी से भी चर्चा नहीं की थी। किन्तु उसे भाई के प्रति अतिरिक्त चिन्ता हो गयी थी। भय था कि यह खुला साँढ़ अपनी भाभी पर ही नजर बिगाड़ बैठा तो ? औरतों का भला पूछा। ऐसे में बदनामी के डर से हम बाहर बात भी नहीं कर सकेंगे। इसलिए सावधानी बरतने की जरूरत है। हमने तो जो किया वह किया ही किन्तु घर के सभी आदमी यदि एक ही रास्ते पर चल पड़ें तो कुल का सत्यानाश नहीं हो जायेगा ?

मगन अब इज्जत, कुल आदि को लेकर चिन्तित रहने लगा था। छोटे भाई की शादी किये बिना छुटकारा नहीं था। सोमपुरा के माना और भीमा ने इस काम में उसको काफी मदद की थी। हालांकि दो-ढाई सौ रुपये उन लोगों की जेब में

पहुँच चुके थे किन्तु एक फटेहाल दूल्हे की सगाई तुड़ाकर उन्होंने चौदह वर्ष की एक कन्या के साथ जोड़ बिठा दिया था । पाप न लगे इस लिए उस दूल्हे के लिए भी एक लड़की की व्यवस्था कर दी । छोटा हमेशा के लिए अपने भाई का अहसानमंद बन गया । शादी के बाद एक खानदानी आदमी के-से लक्षण उसमें आने लगे । अब उसकी बुद्धि भी काम करने लगी ।

थोड़े समय के मगन लाल ए. पटेल अब फिर से चौधरी मगन अमथा बन गए । रहन-सहन में भी सादगी आ गई थी । गर्मियों में मलमल के अँगरखे और सर्दियों में काश्मीरी शाल के सिवाय उनका सारा रहन-सहन स्थानीय हो गया था । व्यापार के लिए गाँव-गाँव घूमते-फिरते समय पहले तो उन्हें वाहन का अभाव जरूर खला किन्तु धीरे-धीरे पाँव अभ्यस्त हो गये । तम्बाकू, जीरा और अनाज का व्यापार प्रारंभ किया था । बी. ए. पास रमण मास्टर भी अभी कुछ समय से ही तम्बाकू के व्यापार में आ गए थे । होड़ में उतरने के पूर्व ही खूब समझ-बूझ लेना चाहिए यह सोचकर मगन अमथा फिलहाल अपने खेतों की तम्बाकू को देखकर ही संतोष मान रहा था । "महाभोज में क्यों नहीं आये थे ? क्या हम आपकी आवभगत नहीं करते ?" इस शिकायत को लेकर वह एक बार रमण से मिलकर व्यापार संबंधी पूछताछ भी कर आया था । जितनी बात करनी चाहिए रमण ने उससे उतनी ही बात की थी किन्तु मगन की समझ में इतना तो आया कि तम्बाकू के व्यवसाय में कुछ अधिक शिक्षित लोगों को ही पड़ना चाहिए । सरकारी अफसरों के साथ अंग्रेजी में वार्तालाप करके ही रमण चुंगी की अच्छी खासी बचत कर लेता होगा । उसे अपने वर्तमान धंधे से काफी संतोष था । वह किसी भी गाँव में जाता वहाँ अच्छे-अच्छे व्यापारियों के ग्राहक तोड़ लेता । किसान स्वेच्छा से उसे उधार देते और गौरवान्वित होते कि हमने तो मगन अमथा को उधार दिया है जिसने इतना बड़ा महाभोज करवाया था । मगन भी किसान की जरूरत पर काम आता । किसी को पचास-साठ की आवश्यकता होती तो दो फीसदी ब्याज काटकर दे देता ।

एक ही वर्ष में उसे विश्वास हो गया कि महाभोज मंहगा नहीं पड़ा है । भाई की शादी की, लड़के की मंगनी हुई । यह सब तो ठीक यदि वह दूसरी शादी करना चाहता तो बीस-पच्चीस की उम्र की कोई भी विधवा उसे मिल जाती ।

17

होली के दिन देवू और लवजी दोनों फगुवा मिलने के लिए गाँव भर में घूमते रहे थे । पिछले वर्ष लवजी गेद-बल्ला पा जाने के बाद खेत में चला गया था । देवू ने सारे दिन क्या-क्या किया शाम को लवजी को बताया । लवजी ने सब सुन लेने के बाद तय कर लिया कि अब तीज-त्योहार के दिन वह माँ के साथ

खेत पर नहीं जाएगा, सारा दिन देवू के साथ रहेगा। अब वह उसे हैरान नहीं करता।

दीपावली की रात को दोनों भाइयों ने हरी सोंटी के छेड़े पर पलीता बाँधा, और उसे रेंडी के तेल में डुबाकर, सुलगाया था और गाँव की सींव तक भागते हुए गये थे। लवजी जोर-जोर से चिल्ला रहा था। कोई पटाखा फोड़ता तो लवजी उछल पड़ता।

मकरसंक्रांति के दिन तो लवजी ने पहले ही झपाटे में अपनी पतंग नुचवा डाली थी किन्तु देवू खेत में जाकर खूब ऊँचे तक अपनी पतंग चढ़ाता रहा। उसके पास जितनी लम्बी डोरी थी किसी अन्य के पास न थी। उसने अपनी सारी डोरी ऊपर छोड़ दी थी।

बढ़ई टोले में जाकर दोनों भाइयों ने हरी लकड़ी में से बड़े बड़े बल्ले बनवाये थे। हेती ने तुरंत उन्हें रंग दिया था। रंगे हुए बल्लों को हाथों से ऊपर उठाकर चिल्लाते, दौड़ते दोनों भाई अन्य लड़कों के साथ मन्दिर के पास एकत्र हो गये थे। थोड़ी देर तक खेल लेने के बाद, गाली देते हुए या गुस्से होकर आपस में बल्लों को टकराकर पचास लड़कों की वह टोली गाँव भर में होली की लकड़ी एकत्र करने के लिए निकल पड़ी थी। जब तक उन्हें लकड़ी मिल नहीं जाती वे आँगन से खिसकने का नाम नहीं लेते थे। कोई यदि थोड़ी सी लकड़ी देता तो वे चुपचाप ले लेते और फिर बड़ी लकड़ी के लिए जिद करने लगते। उन्हें टालने के लिए यदि कोई गुस्सा होता तो वे समवेत स्वर में उसे जवाब देते। अपने बल्लों के टेके से वे लकड़ी का कुन्दा इस प्रकार उठाते जैसे किसी मरे हुए गोजर को चींटियाँ उठाकर ले जा रही हों।

बच्चों को उत्तेजित टोली ने अच्छी-खासी लकड़ी एकत्र कर ली थी। भीमा का लड़का रणछोड़ उस ढेर को कूद गया तब उसने कहा कि लकड़ी अभी कम है। जैसे उसने पहले से ही सोच रखा हो कि कमी की पूर्ति कैसे की जायेगी। झुटपुटा होता जा रहा था। टोली को उसने पुनः एकत्र किया और सबको लेकर हरिजन टोले के कुएँ की ओर चला। पाँव रखकर कुएँ से पानी भरने वाली कड़ी अभी नयी-नयी ही रखी गयी थी। देवू को विश्वास था कि रणछोड़ उसकी सुनने वाला नहीं है। फिर भी उसे मना करता रहा। और बरगद की बरोह देखता हुआ खड़ा रहा। लवजी सबके पीछे-पीछे गया था। रणछोड का बल्ला तो पहले ही टूट गया था अतः कड़ी को खिसकाने के लिए उसने लवजी का बल्ला जबरन ले लिया था। एक बूढ़ा हरिजन दौड़ता हुआ आया। कड़ी न ले जाने के लिए रिरियाने लगा। लवजी वृद्ध के चेहरे को देखे जा रहा था। वह रणछोड के पास गया और अपना बल्ला वापस माँगा। रणछोड़ ने उसकी ओर देखे बिना ही अपनी कुहनी जमा दी। लवजी भीतर ही भीतर कसमसाया, फिर बरगद के नीचे खड़े देवू के पास वापस आ गया।

वृद्ध हरिजन अब मुखिया को बुला लेने की धमकी देने लगा। रणछोड़ को भला इस की कहाँ चिन्ता थी। उसने बच्चों को बहका रखा था। कड़ी का एक किनारा खिसका और वह सीधी कुएँ में जा गिरी। कड़ी के साथ ही लवजी का बल्ला भी रणछोड के हाथ से छूटकर कुएँ में जा गिरा। मुहल्ले भर की स्त्रियाँ भी रोती कलपती कुएँ के पास आ पहुँची थीं। अब कड़ी कैसे कुएँ से बाहर निकलेगी। यह बात किसी की समझ में नहीं आ रही थी। खेत से वापस आ रहा छना उन स्त्रियों को आश्वासन देने के लिए उनके पास चला गया। दो आदमियो को बुलाकर कल कड़ी बाहर निकलवा देगा यह कहकर वह एक जवान स्त्री से सुख-दुख की बातें करने लगा।

इधर लकड़ी के ढेर के पास वापस आने वाले रणछोड़ से देवू ने लवजी के बल्ले की माँग की। "ले हमार इ ले ले।" कहते हुए रणछोड़ ने अपनी नेकर के बटन पर हाथ रखा। दूसरे लड़के हँस पड़े। देवू ने गम खा लिया। फिर उसके नजदीक जाकर पूछा—

"अबहीं लवा क कुहनी काहे मारे रहिस ?"

"ऊका ग्वाय क रहा।"

'तूहूँ आज खावे है लागत है।"

"देखी तौ सही, केकर महतारी सवा सेर सोठ खाये है ?"

"ले देख।" कहते हुए देवू ने उसका हाथ पकड़ लिया। रणछोड़ ने अपना हाथ छुड़ा लिया। किन्तु उसके कमीज की आस्तीन अभी भी देवू के हाथ में थी। दूसरे हाथ से माना के लड़के नारण के हाथ मे बल्ला लेकर उसने देवू के कंधे पर जोर से मारा। देवू उछला और अपने से दो वर्ष बड़े रणछोड़ को उठाकर पटक दिया। यह सब देखने के लिए दौड़ आये जीवन ने देवू की प्रशंसा की और रणछोड़ को शांत किया। "अच्छे दिन का नाहीं लड़ा जात।" कहते हुए वह अपने रास्ते चलता बना। दो वर्ष पूर्व तक तो वह और घेमर भी होली खेला करते थे और जो मन में आता वही किया करते थे। यह बात बताकर जीवन खेत की ओर चला गया। थोड़ी देर बाद देवू और रणछोड़ के बीच समझौता हो गया। यह बात सभी लड़कों को अच्छी लगी। देवू के प्रति रणछोड़ का व्यवहार अभी भी उद्दडतापूर्ण था। अतः देवू बेचैन था।

सूर्यास्त होने को आया था किन्तु अभी तक सारंग से होली सुलगाने वाला भंगी नहीं आया था। गेहूँ और ज्वार की खील और घुँघनी खाते-खाते लड़के मुहल्ले भर में घूम रहे थे।

रणछोड़ देवू से बोला—"बड़े मर्द हो तो ले लुकेठा और होली जलाव। तू जलाय दे तो फिर हम लकड़ी रख देई।" पास में खड़े हुए घेमर ने बीच बचाव किया। "तुम्हार बाप जाने तो हड्डी तोड़ डाले।" देवू ने उल्टे घेमर से प्रश्न कर

दिया, "ईजोन भंगी सारंग से होली जलावे आवत है उके बाप उके हड्डी तोड़ डाल्त हैं का!" पेमर ने आवाज में नरमाई लाकर अपनी जानकारी के मुताबिक उत्तर दिया : "भंगिया का तो भगवान ई काम की ताई बनाईन है। उके पाप न लागी।"

वक्त गुजरता गया और होली जलाने वाले को कितना पाप लगता है इसको लेकर अनेक प्रकार की बातें होती गयीं। किन्तु देवू को उसमें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। अन्य लड़कों की तरह सुनी हुई बातों से भयभीत हो जाने की उसकी आदत भी न थी।

धमला कंधे पर लोहे से जड़ी हुई लाठी रखे हुए खेत की ओर से आया। अब होली कौन जलाएगा इस प्रश्न को उलझते देखकर उसने कहा—

"भंगिया नाहीं आवा तो का भवा? अब होली जलावे गाँव के मुखिया।"

मुखिया का लड़का रणछोड़ धमला को गाली देते हुए बोला, "तो ससुरऊ तुम ही जलाऊ न, तुहार हाथ कहाँ टूट गवा है?" सुनते ही धमला की खोपड़ी घूम गयी, "धत् तुहरी महतारी के " कहते हुए वह उसकी ओर दौड़ा। तब तक वह भाग खड़ा हुआ और कहता गया, "मुखिया क बुलाइत है.."

इधर धमला ने अपनी जेब से घोड़ा छाप माचिस निकाली और सबके सामने ही होली को अग्नि लगा दी। सब लोग उसे प्रसंशा की नजर से देखते रहे और वह खुश होकर अपने घर आ गया।

अब खाना कौन बनाने बैठे? शाम को बड़ी मुश्किल से धमला खाना बनाने बैठता था। आज त्यौहार का दिन है और उसने कुछ भी नहीं बनाया इस बात का ध्यान आते ही उसने चूल्हा सुलगाकर आधे सेर घी का हलवा बना डाला। अधिक बच जायेगा तो सबेरे खायेंगे। चूल्हे के पास ही थोड़ी-सी रोशनी थी बाकी पूरे घर में अँधेरा था। खाने के बाद घणोची के पास हाथ धो लेगा यह सोचकर वहीं बैठकर वह खाने लगा। आधा खाया कि उसे प्यास लगी। उसे लगा कि जैसे दरवाजे की साँकल बज रही है। यह सोचकर कि कुत्ता होगा उसने दो-तीन गालियाँ दीं किन्तु फिर किसी की आवाज सुनाई दी और वह दरवाजा खोलने चला गया।

तीसरे घर से जेणी बहू दियासलाई लेने आयी थी। उसका पति अहमदाबाद की मिल में नौकरी करता है। आज उसके आने की उम्मीद थी अतः उसकी राह देखते हुए वह अब तक बैठी रही। और कुछ बनाया नहीं था। अब वह निराश होकर बड़बड़ाते हुए, चूल्हा जलाने के लिए दियासलाई या आग लेने आयी थी। धमला दियासलाई वहाँ ढूँढ रहा था जहाँ वह नहीं थी। जेणी बहू को देर हो रही थी। दियासलाई न हो तो खपरे में थोड़ी-सी आग ही भर ले जाने के लिए उसने कहा। धमला हँस पड़ा। जेणी बहू की सास होलिका-दर्शन के लिए गयी थी। वह वापस आये इसके पूर्व ही आग जला देनी थी। वह भी झुककर माचिस खोजती हुई धमला के बिलकुल करीब पहुँच गई। धमला उसकी ओर घूमा। उसकी कुहनी

जेणी बहू की छाती से छू गयी। "छोड़ो, ई का करत हो ?" कहते हुए वह शरमाई। इसके बाद तो धमला का दूसरा हाथ उसके पेट से लिपट गया। जेणी बहू अब जैसे यहाँ से जल्दी चली जाना चाहती हो इस तरह आग लेने के लिए चूल्हे की ओर मुड़ी। वह तेजी से चली अतः उसके लँहगे की हवा से चूल्हे के पास रखा हुआ दीया बुझ गया। आग पर फैली राख को फूँककर उड़ाते हुए उसका गोरा चेहरा चमक उठा। धमला व्याकुल हो उठा। वह चिपककर जेणी बहू के पीछे बैठ गया और उसे अपनी बाहों में भर लिया। दबी सिमटी जेणी बहू उसकी गोद में खिंच आयी। धमला पागल कुत्ते की तरह जहाँ-तहाँ काटने लगा। सीने पर तो उसके दाँत बैठ भी गये। अब तक उसे ढकेलती जेणी बहू थककर अब खुद ही उसे अपनी ओर खींचने लगी।

"बहुत हाँफे लाग्यो।" ताना मारती हुई वह कपड़े ठीक करती हुई खड़ी हो गयी। धमला ने बिना कुछ बोले कढ़ाई में से एक कटोरी हलवा निकालकर उसे दे दिया। माचिस लेकर, आँचल में कटोरी छुपाते हुए जेणी बहू आँगन की ओर चली गयी। गली की ओर से किसी को आते देखकर वह थोड़ी देर के लिए आँगन में ही बैठ गयी।

होलिका-दर्शन करके सास वापस आयी तब जेणी बहू पति के विषय में इधर-उधर की बात करते हुए बोली-"सब आये मुला ऊ नाहीं आये।" और वह चिन्ता करने लगी "सब ठीक-ठाक तो होये न ?" सास ने कहा कि हो सकता है वह अभी भी आ जाये। और आज नहीं तो कल आ जायेगा।

"ई धमा भाई अबहिंने रख के गये हैं।" जैसे अचानक याद हो आया हो बहू ने सास के आगे हलवे की कटोरी सरका दी। बुढ़िया धमला की दूर की मौसी लगती थी। और कभी-कभार किसी चीज की जरूरत पड़ती तो पहले धमला को पेट का जना कहकर उसकी प्रशंसा करती। किन्तु अभी उसकी अनुपस्थिति में धमला पतोहू को हलवा देकर गया है यह बात उसे अच्छी नहीं लगी। फिर भी अपना असंतोष भूलकर उसने कटोरी में से दो कौर हलवा लिया और बचा हुआ पतोहू के आगे खिसकाते हुए बोली, "थोड़ा लड़का की ताँई रखकर खा जाय। हम तो अब बूढ़ भइन भाई।"

गत् भादों महीने की ही बात है। धमला खेत से आ रहा था कि चारे का बोझ जमीन पर रखकर पास में खड़ी जेणी बहू की आवाज आयी, "धमा भाई, बोझ उठाय देव तो जाव।" दूसरी आवाज में सुना था। उसे यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी कि जेणी बहू उसके सामने पर्दा करे। किन्तु यहाँ खेत में कुछ भी कहने का साहस नहीं जुटा पाया। वह मदद के लिए आ गया। कुछ सोच रहा था इसीलिए ठीक से जोर नहीं लगा पाया। जेणी बहू को चालीस सेर वजन का बोझ सिर पर उठाने के लिए इतनी शक्ति लगानी पड़ी कि बोझ के सिर पर पहुँचते-पहुँचते उसके लँहगे का नाड़ा टूट गया। धमला शर्म की वजह से दो कदम पीछे खिसक

गया किन्तु उसकी निगाह बहुत कोशिशों के बावजूद दूसरी ओर न मुड़ सकी। उसे मालूम था कि जेणी की सास चकरोड के पास बैठी घास छील रही है। वह मन मजबूत करके उधर गया। जेणी बहू बोझा उतारकर नाड़ा बाँधने की जिल्लत में पड़ी थी। बहुत दिनों तक धमला इस घटना को नहीं भूल सका था। आज जब वह दियासलाई लेने आयी तो धमला के सीने में धड़कनें बढ़ गयीं। उसका रक्त उबाल मारने लगा।

लोहे से मढ़ी हुई लाठी को एक कंधे से दूसरे कंधे पर लेते हुए उसने सोचा—कुछ भी हो लेकिन यह है तो पाप ही। उसके बाद उसे विधवा मंछी और अमराई की वाघरण याद आई। जेणी बहू कद काठी की तो अच्छी है। यह पाप नहीं है? वह बड़ी देर तक उलझन में पड़ा रहा किन्तु भविष्य में ऐसा कुछ न करने की प्रतिज्ञा नहीं ले सका। फिर भी एक बात आज पहली बार उसके मन में आयी कि अपना ही पाप उसके आड़े आता है। जैसा कि नरसंग ने कहा था कि दूसरे भव की तो बात ही छोड़ो, इस भव की भूलें ही पाँवों की बेड़ियाँ बन जाती हैं।

हर साल होली में धमला बहुत तूफान करता था। पर्दावाली स्त्रियों को भी जाकर रंग आता था। किन्तु इस बार सवेरे से ही धूनी रमाए अपने चूल्हे के पास उदास-उदास बैठा था। दोपहर में फुरसत पाकर तमाम युवक होली खेलने लगे।

उसी मुक्त वातावरण में बाहर खड़े धमला के ऊपर जेणी बहू ने झूठनवाला पानी डाला तब भी वह चुपचाप ही खड़ा रहा। उसका मन भटक रहा था किन्तु पाँव काबू में थे। खेतों में जाकर सो जाने का निर्णय करके वह घर से निकल पड़ा।

"हमका ई सब बहुत बड़ा समझत हैं?" धमला मन ही मन सोच रहा था। उसके पाँव अचानक रुक गये। बरगद की बरोह पकड़कर वह रुक गया। उसने देखा जो चेहरे थोड़ी देर पहले तक गोरे थे वे अब काले कलूटे हो गये थे। सिर्फ पानी भरने आ रही हेती ही साफ-सुथरी नजर आ रही थी। किन्तु उसकी ओर उसका ध्यान ही नहीं गया।

18

इस बैशाख में हेती बारह दिन तक ससुराल में रही। दीपावली पर यदि बुलौवा आया होता तो माँ ने उसे अवश्य ही विदा कर दिया होता। किन्तु बुलौवा आया ही नहीं और तब तक कार्तिक का महीना आ गया। उसके बाद रमण भी एक भी बार सोमपुरा नहीं आया। एकाध बार देवू ने उसे सारंग के बाजार में देखा था। जिसके बारे में जब वह माँ से बात करता तो हेती छुप-छुपकर सुनती। कभी-कभी उसकी इच्छा होती कि देवू के द्वारा रमण के पास कोई संदेशा भेजूँ। किन्तु क्या संदेशा भेजूँ यह उसकी समझ में नहीं आता। रमण की याद आने पर उसका मन प्रफुल्लित हो उठता। उसने, सूनी-सूनी जगहों पर उगती हुई हरी-हरी घास देखी

थी । जब वह अकेली बैठी होती तब उसके हृदय में एक अपरिचित भावना उद्वेलित हो उठती । कभी तो रमण की याद आने से और कभी यों ही अपने आप । उसने सोचा था कि एक दिन पूछेगी – ससुराल अच्छी नहीं लगती क्या ? दिपावली के बाद तो इधर झाँके ही नहीं ।

पूछे बिना ही रमण ने प्रथम रात्रि को ही उससे कहा कि वहाँ आने की तो बहुत इच्छा होती थी किन्तु लोग तरह–तरह की बातें करते, और तुम्हारे पिथू बाबा क्या मालूम क्यों मुझे उनसे मिलने में बहुत संकोच होता है ।

दिन में भी जब घर में कोई बड़ा आदमी न होता तो रमण हेती से बात कर लेता । उससे पूछता – कोई तकलीफ तो नहीं है ? कैसा लगता है ? गाँव पसंद आया कि नहीं ?

हेती बड़ी ननद के साथ पानी भरने जाया करती थी । छोटी ननद ईजू भी जिद करके डलिया लेकर पीछे-पीछे आती । वह देवू की होने वाली पत्नी है यह बात उसे हमेशा याद रहती । कभी-कभी वह हँसते हुए भाभी-भाभी करती और गोद में बिठाकर प्यार करने लगती । ईजू तो उसे भाभी कहती ही थी । यह उसे बहुत अच्छा लगता था ।

कर्कश स्वभाव की होने के बावजूद सास उससे विशेष प्रेम रखती थी । पास-पड़ोस की औरतें घर में आतीं तो वह तुरंत हेती के रूप-गुण की प्रशंसा करने लगतीं । पहली बार जब हेती आयी थी तब तो उसने रमण के अतिरिक्त किसी के सामने मुँह भी नहीं खोला था । उसके हाथ की गोरी चमकती हुई हथेली देखने वालों को चकाचौंध कर देती थी । इस बार उसके हाथ और भी गुदगुदे और खूबसूरत हो गये थे । 'यह सुन्दर हाथ ..'' मात्र इतना ही कहकर रमण बड़ी देर तक अपने गालों में लगाये खोया रहता ।

उन बारह दिनों में रमण एक बार भी सारंग नहीं गया । शिक्षक की सीमित आय से वह संतुष्ट नहीं था । तम्बाकू के व्यापार की दलाली की रकम से दस बीघा जमीन खरीदी थी और हेती के आने से पहले ही पछीत में दरवाजा डलवाया था । माँ-बाप ने उस दीवार में छोटी जाली रखवाने की हिम्मत नहीं की थी परन्तु रमण अपने फैसले पर अड़िग था । गर्मियों की रात की ऊमस अब दूर हुई । चोर का भय नहीं था । नीचे के नाले से करार जैसे उस भाग तक पहुँचकर चोरी करना कठिन था । रमण ने वहाँ से बेर और मकराल के पेड़ कटवा डालने का विचार छोड़ दिया । नीम लगवायेंगे, फूलों के कुछ पौधे भी क्यों नहीं ? विचार मात्र से उसका मन खिल उठा । पानी दूर से लाना पड़ेगा पर हेती फूलों के पौधों की परवरिश करते कभी थक नहीं सकती । हेती मायके से आनेवाली थी उस शाम को वह पछीत का दरवाजा खोलकर बैठा था । नीचे देखता और गहराई को नजर से नापता । यहाँ से नीचे तक सीढ़ियाँ तैयार करवा दी हों तो खेत की दूरी कितनी कम हो जाए ? ना, वह ऐसा नहीं कर सकता । यह जगह तो उसकी अपनी ही बनी रहनी चाहिए, हृदय के किसी

गुप्त भाव की तरह, अन्य से भी अनजान । यहाँ ता हेती और वह – दो ही बैठ सकते हैं, केवल दो ।

हेती ने पहले तो वहाँ बाहर बैठने से इनकार कर दिया था, वहाँ खुले में ? क्यों ? रमण जब उसे उठाकर ले आया तो वह "नीलज" बोलते-बोलते रुक गई थी । वह रमण को सुनती रहती : "तुझे मिलने को जी मचल उठता, तुझे लेकर दूर सुदूर भाग जाने की इच्छा होती, सुनती हो या सो गई ? उसकी छातियों के बीच की मुलायमता रमण को अंधेरे में उछलती अनुभव होती । वहाँ उसके होठों के पहुँचते ही हेती करवट बदल लेती । और मौका पाते ही कमरे के भीतर भाग जाती । पश्चिम की ओर से आती हवा शीतल होती जाती, हेती दरवाजा बन्द कर देती, सुबह हो गई हो तो वह बाहर झाँकती ।

रमण कभी भी कोई भी बात करने लगता । "सारंग में घर भाड़े पर लेकर रहना चाहें तो तुम्हारे मायके वाले तुम्हें वहाँ रहने देंगे कि नहीं ? रहने तो देंगे । किन्तु तुम्हे वहाँ अच्छा लगेगा ? गाँव में अपने आदमियों की तो वस्ती ही नहीं है । वहाँ आने-जाने वाले पानी पीने आयें । उनके स्वागत-सत्कार में ही तुम्हारा सारा समय बीत जाय और वेतन भी सब खर्च हो जाये । यहाँ रहने में दूसरे खर्चे तो नहीं हैं ? इस साल दस बीघा जमीन ली है । दीवाली पर तम्बाकू के लिए गोदाम भी बनवाना है । तुम यहाँ रहने लगोगी तब तक तो.. " फिर वह हिसाब लगाने लगता । अहमदाबाद जाकर एलएल. बी. कर डाले तो ? सारंग में प्रेक्टिस नहीं चलेगी ? किन्तु इस काम में तो रोज झूठ को सच और सच को झूठ बताना पड़ता है । पिथू भगत को यह काम पसन्द नहीं आयेगा ।

"तुम्हारे बाबा अभी कितने दिन और जिएँगे ?"

"तुम्हें मुसीबत लागत है ?"

"उन्हें साठ-पैंसठ वर्ष हो गये होंगे ?"

"पूछ आऊँ ।"

"तुम्हें गिनना नहीं आता ?"

"नाहीं । तुमका आवत है ई कम है का ?"

"तुम कितने वर्ष की हुई यह भी नहीं मालूम ?"

"तुमसे पाँच साल कम ।"

"मेरी उम्र कितनी है ?"

"छोड़ो न । अब तुम छोटके नाहीं हो ।" कहते हुए रमण का हाथ धीरे-धीरे खिसका देती ।

"तुम भी कमाल की हो ।"

"हाँ ।" कहते हुए वह मुँह घुमा लेती ।

हेती की विमुखता तो रमण सह लेता किन्तु दूरी नहीं । ऐसे समय हेती मन

ही मन भीतर उतर जाती और खो जाती। रमण जब शांत होता तो उसे बहुत अच्छा लगता।

दिन के समय घर के ओसारे में रमण किसी के साथ बात करता तो हेती बड़े ध्यान से सुनती, समझने की कोशिश करती। बारहवें दिन जब मायके वापस चलने को हुई तो उसे रमण की कई उल्टी-सीधी बातें याद आयीं। स्वयं जो बातें करना चाहती थी वे तो उसके मन में ही रह गयीं। आँगन से बाहर निकलते ही रुलाई आ गयी। मायके से चलते समय तो सभी ने उसे रोते हुए देखा था। इस बार वह आँचल की ओट में इस प्रकार रोई कि खुद को भी पता न चले। मायके जाने की खुशी उसके आँसुओ को नहीं रोक सकी।

हीरू भाई का आग्रह था कि रमण गोकुलिया में सेवादल केन्द्र की शुरूआत करे। उन्होंने अपने गाँव बदरी में सेवादल और प्रौढ़ शिक्षण की प्रवृत्ति शुरू कर दी है। पिछले कुछ वर्षों से चौधरी और गरासिया दोनों जातियों के बीच का संघर्ष भी कम हो गया है। कभी-कभार बोलाचाली हो जाती है बस। पहले तो लाठियाँ चल जाती थीं।

रमण छत पर बैठा बैठा सामने पुस्तक रखकर कुछ सोच रहा था। इतने में मूलजी आ गये। वे काफी खुश दिखाई पड़ रहे थे। रमण समझ गया कि ये कोई खुशखबरी लेकर आये हैं।

"करसन मुखिया कै पिटाई ह्वै ग।" मूलजी बैठकर जूते की मिट्टी झाड़ते हुए बोले। उन्होने फटा हुआ जूता ऐसे पकड़ रखा था जैसे रमण को दिखा रहे हों। कुछ दिन पहले ही रमण ने कहा था कि नया जूता ले आओ। लेकिन उन्हें लगा कि गर्मियाँ इसी से निकल जायेंगी। फिर तो बरसात और ठण्डी इन ऋतुओं में वे जूता पहनते ही नहीं। कभी-कभी तो नंगे पाँव ही मेहमानी में पहुँच जाते। इस समय फटे हुए जूतों को मूलजी ने बड़े जतन से पकड़ रखा था यह देखकर रमण चिढ़ गया। करसन मुखी को मार पड़ी है इस विषय में मूलजी से विस्तार-पूर्वक सुनने के बजाय उसने दूसरा ही सवाल कर दिया—

"आपने मारा ?"

मूलजी ने एक झटके से ऊपर देखा।

रमण आँखों के आगे पुस्तक किये हँस रहा था। वे ठंडे पड़ गये।

"इस बार जब सारंग जाना तो नया जूता लेते आना।"

"अब तो तुम कहबो वही करब न। पढ़ाय-लिखाय के लड़का यही की ताँई बड़ा कीन है कि ऊ हमका सलाह दिये।"

"ठीक है, अब सलाह नहीं दूँगा। जिन्दगी भर नंगे पाँव घूमना। कपड़ा भी नया हो तो फाड़ डालना फिर एकाध पैबन्द लगाकर पहनना। बस ?"

मूलजी हँस दिए। कुछ भी बोले, किन्तु लड़का पाँच आदमियों के बीच इज्जत पाता है। खेत में बात करते समय सलाह देता है, घर में नहीं। उन्होंने करसन

मुखिया के मार खाने की जो बात सुनी थी वह ज्यों की त्यों रमण को सुना दी। रमण को इस घटना की पूर्वभूमिका समझ में नहीं आयी।

करसन मुखिया भीमा की ससुराल में मेहमानी करने गये थे। वहाँ से आते समय वे गोकुलिया आये। रास्ते में उन्हें तखत मिल गयी। तखत को सोमपुरा से गोकुलिया भेजने में, साथ ही कुछ समय पहले उसके पति के मर जाने की वारदात को लेकर उन्हें रिश्वत मिली थी, तभी से करसन मुखी में तखत के शरीर के प्रति आकर्षण पैदा हो गया था। वे उसके साथ-साथ उसके घर तक गये और रात भी वहीं रहकर सुबह सोमपुरा गये। लोगों ने बात उड़ा दी। भीमा ने पूछा। करसन मुखी की भौंहें तन गयीं। बेटे को इसीलिए मुखिया बनाया है कि वह जवाब माँगे? उन्होंने उसे सीधी गाली ही दी। थोड़ी देर पहले ही उन्होंने एक पौवा चढ़ा लिया था। हाथ में जूता लेकर खड़े हो गये। अभी सारंग जाकर दीवान से मिलकर मुखिया-गीरी को ले लेता हूँ। इतना कहने के साथ वे भीमा को एक से बढ़कर एक गाली देते हुए जूता ढूँढ़ने लगे। उनका जूता भीमा के पास पड़ा था। भीमा ने उसे उठाकर उनकी ओर फेंका तो वह उनके घुटने में लग गया। अब तो उनका क्रोध सातवें आसमान पर चढ़ गया। उन्होंने भीमा की पीठ पर एक जूता जड़ दिया। फिर तो भीमा भी आपे से बाहर हो गया, हाथ में कुछ लाठी-डण्डा लेने के बजाय, घूँसों से ही उनकी धुनाई करने लगा। जेठा और लाला दौड़कर आ गये। उन्होंने बाप को छुड़ा दिया। मार खाकर करसन मुखी चुप हो गए। न रोये न चिल्लाए।

लाला ने गाँव भर में कहा, "भीमवा आज बुढऊ क मार डारत, मुला हम छोडाय लीन।"

यह बात आग की तरह आसपास के गाँवों में फैल गयी।

मुखिया होकर कोई आदमी अपने बाप को मारेगा? तो आखिर बात क्या होगी? रमण सोचता रहा। इतने में बदरी से हीरूभाई आ गये।

"चलो मास्टर।"

"कहाँ?"

"सोमपुरा।"

"क्या वहाँ सफाई का कार्यक्रम रखा है?"

"सफाई तो करनी है किन्तु दूसरी। भीमा मुखी को डाँटना-फटकारना है। इसी तरह माँ-बाप मार खाते रहेंगे तो यह दुनिया जाएगी रसातल को।"

रमण ने आनाकानी की। किन्तु बेटा पंचों में बैठे यह सोचकर मूलजी ने हीरूभाई की बात का समर्थन किया। अन्त में रमण तैयार हो गया। वह भी ससुराल जाना चाहता था इसलिए। डाँटने-फटकारने से कोई सुधर सकता है इस बात पर उसे विश्वास नहीं था। इन दिनों तो हीरूभाई का सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही उसे नाटकीय लगता था।

रास्ते में उसने हीरूभाई से पूछा :

"हम वहाँ मूर्ख तो नहीं मान लिये जायेंगे ?"

"मूर्ख होंगे तो मान भी लिये जायेंगे।" कहते हुए हीरूभाई ने, करसन और भीमा के बीच हुई मारपीट के क्या-क्या कारण हो सकते हैं इस बात को लेकर तमाम अनुमान लगाए। रमण को अजीब-सा लगा जैसे आज हीरूभाई के बारे में उसे अपनी धारणा बदलनी पड़ेगी। आदमी के भीतर के जहर को भी यह आदमी पहचानता है। सुधार देने की वृत्ति के पीछे मात्र आदर्श ही काम कर रहा हो यह बात नहीं है। मनुष्य की मूलभूत वृत्तियों को ये जानते हैं, ये सतही सुधारक नहीं हैं। परिणाम के बारे में पहले से ही जानकारी होने के बावजूद निराश हुए बिना अमुक कामों में लगे रहते हैं।

उन्होंने बताया कि करसन और भीमा के बीच हुए झगड़े के मूल में भीमा की पत्नी और करसन का अवैध सम्बन्ध भी हो सकता है। हो सकता है तखत के घर का आतिथ्य मात्र दिखावा हो ? मुझे तो वह औरत ऐसी नहीं लगती। भीमा भी कोई अच्छा आदमी तो है नहीं। बाप पर हाथ उठाने का हक तो उसे नहीं ही है। किन्तु हम उन लोगों के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जा रहे हैं। ऐसे लोगों के लिए जो इसी प्रकार की हरकत कर सकते हैं। उनमें से यदि एकाध को भी सुधार सकेंगे तो भी बहुत है। आज तक जिन लोगों ने भी पंचायत की है वे अपने ही स्वार्थों से ऊपर नहीं उठ पाये हैं हम यदि इतना भी कर सके तो...

रमण ने सोचा—क्या वह स्वयं अपने स्वार्थों से मुक्त हो सकता है ? हीरूभाई तो अपनी फकीरी में मगन हैं। पिछले पाँच वर्षों से तो वे इधर के गाँवों में "हीरू नंगे पाँव वाले" के नाम से मशहूर हैं। लोग उनका सम्मान करते हैं।

सीधे भीमा के घर जाना रमण को अच्छा न लगा। अतः वह हीरूभाई को अपनी ससुराल ले गया। रेती ने उनका स्वागत किया।

19

कंकू ने मेहमानों को हलवा और खीचड़ी बनाकर खिलायी। हीरूभाई ने खीचड़ी के साथ प्याज माँगा। उन्हें खीचड़ी, छाछ और प्याज बहुत रुचता है। उन्होंने रमण को भी प्याज खाने की सलाह दी। नरसंग शाम के वक्त प्याज खाना पसंद नहीं करता। बात निकलते कारण बताया :

"ठाकुरजी के परसाद के थरिया से पियाज सरक के बाहर गिर गै।"

हीरूभाई हँस पड़े। कुछ देर के बाद रमण को भी हँसने का मौका मिला। हीरूभाई का एक घिसा और फटा जूता मुहल्ले का कुत्ता खींचकर ले गया था। देवू खोज लाया। "जूते के साथ कुत्ते को भी ले आते तो हीरूभाई का उपदेश उसे सुनने मिलता।" —रमण मुस्कराते हुए बोला। जूता वापस मिलते हीरूभाई को

पुरस्कार प्राप्त होने की प्रसन्नता हुई। चप्पल को पहनकर उन्होंने अपनी प्रसन्नता दबा दी और रमण के मजाक को पचा गए।

मेहमान भीमा मुखी को समझाने आये हैं यह जानकर नरसंग चुप था। ऐसे बखेड़े में पड़ना भी शर्मजनक है कुछ इसी प्रकार का उसका भाव था। कंकू अंदर से ही बोली–"ऊ बदजात के घर नाहीं जायका है। गरियाये जरूर। और ऊ के औरत दुई महीना तक हमका ताना मारे।" कंकू दामाद को रोक लेना चाहती थी। हीरूभाई को जाना हो तो जाएँ, उनका क्या? "आगे नाथ न पीछे पगहा" दूसरों की भी यही राय थी।

कंकू के मना करने के बावजूद रमण हीरूभाई के साथ गया यह हेती को भी बुरा लगा। थोड़ी देर के बाद उसने नरसंग से कहा–"बापू, तुम पंचायत मां नाहीं गयौ?" नरसंग की इच्छा न थी। कंकू ने आग्रह करके उसे भी भेजा। "उनके बेइज्जती होये तो आपन कौन सोभा रहि जाये।"

भीमा की पत्नी ने उन्हें देखा किन्तु कोई ध्यान नहीं दिया। मुझे क्या मालूम कहाँ के मेहमान हैं। फिर भी चौधरानो वाले घमंड से बिछौना ले आयी। समाचार मिलते ही भीमा भी माना को साथ लेकर आ पहुँचा। लाला के साथ घमला आया। जेठा अपने दरवाजे पर पाँव लम्बा करके चिलम पीता रहा। मुहल्ले की स्त्रियाँ कान लगाकर सुनने के लिए एकत्र हो आयीं। नरसंग भी आ गया। थोड़ी ही देर में काफी लोग एकत्र हो गये।

बिन बुलाये ही खेत में से करसन भी आकर पंचों में बैठ गये। लालटेन के उजाले में उनका शरीर भीमा की अपेक्षा कुछ अधिक ही मजबूत और गठा हुआ दिखाई पड़ रहा था। उन्हें अचानक याद आया – इसी तरह एक दिन ज्योतिषियों की आगाही सुनकर मरने के लिए बैठे थे। ज्योतिषियों की आगाही गलत निकली और पिथू भगत की बात सही। इस बारे में उन्होंने थोड़ी बात की; भगवान ने भक्ति के लिए कुछ वर्ष और बढ़ा दिये हैं। इतने में घमला बोल पड़ा–

"यही बाकी रहि गवा रहा।"

सुनकर भी करसन चुप रहे। और किसी मौके पर घमला ने ऐसी बात की होती तो करसन लाठी-जूते से बात करते। किन्तु आज वह सिर्फ इतना ही बोल कर रह गये – "जस जी के भाग।"

हीरूभाई ने बात की शुरूआत की। जो भी हुआ, अच्छा नहीं हुआ। उनकी बात पर सब चुप रहे। थोड़ी देर बाद करसन स्वयं बोले–

"सिर-पाँव बिना के अफवाह है।"

"तो तुम्हारे घर लड़ाई नहीं हुई है?" – हीरूभाई ने अपनी प्रसन्नता जाहिर करते हुए पूछा।

"लड़ाई-बड़ाई तो रोज होत है।" बुड्ढा बोला।

"मैं मारपीट को बात कर रहा था।" हीरूभाई ने धीमे से कहा।

"ई सब गलत बात है।"

"गलत बात है ? मैंने भी सुना था कि......" रमण बोला। वह जैसे निराश हो गया था।

"तुमहू रमणजी पढ़ि लिखके कस बात करत हौ ? लाग होत तो निसान विसान होत कि नाहीं ?" करसन मुखी की आत्मीयता से रमण को आश्चर्य हो रहा था। वह समझ गया कि बुढऊ भी इसी में अपनी इज्जत समझते हैं कि बात ढँकी ही रहे।

किन्तु करसन के तीनों लड़कों की वजह से बात स्पष्ट हो गयी। वे तीनों आपस में ही लड़ने लगे। मुखी के तीनों लड़कों को रमण बहुत कम समय में ही जान गया था। उसने देखा कि जेठा बाप की इज्जत को ढँक के रखना चाहता था किन्तु लाला ने फालतू बकबक करके स्पष्ट कर दिया था कि भीमा ने बुड्ढे को मारा है।

हीरूभाई ने मान-मर्यादा की बात की। उन्होंने भीमा के बेटे का नाम पूछकर कहा कि यदि भीमाजी करसन पर हाथ उठायेंगे तो कल रणछोड़ भी ऐसा ही करेगा।

रमण ने देखा कि हीरूभाई भगवान या धर्म की बात के बीच में नहीं लाते। किन्तु ऐसे दृष्टान्त देते हैं कि बात सुनने वाले के गले उतर जाती है। उसने कुछ बोलना चाहा कि इतने में भीमा खड़ा हो गया, और अपनी पगड़ी उतारकर कहा कि उसने भयंकर भूल की है, पंच उसे माफ करें। अब करसन ने बात का सूत्र हाथ में ले लिया। सबके बोल लेने के बाद लाला ने भी भीमा को डाँटा। लड़का बाप को मारे इसमें उसे कोई आपत्ति न थी। किन्तु भीमा ने, मुखिया होकर भी, ऐसा किया यह बात उसे पसन्द न आयी। उसने स्पष्ट कर देना चाहा कि मुखिया होने की योग्यता सिर्फ उसी में है। वह बुढऊ को अपने घर ले जाने के लिए भी तैयार था। धमला ने उसकी बात का समर्थन किया। उसने कहा कि माँ-बाप की सेवा करने वाले को स्वर्ग मिलता है। यह बात भागवत में लिखी है। वह रमण और हीरूभाई से समर्थन चाहता था।

"तू अब ईहाँ से जात है कि नाहीं ?" जेठा ने कहा।

वह मजाक में ऐसा कह रहा है यह सोचकर धमला उसके पास ही बैठ गया। जेठा ने धक्का मारकर हँसी-हँसी में उसे गिरा देना चाहा किन्तु इससे धमला का सिर थूनी से टकराया। वह खड़ा होकर गाली देने लगा। जेठा ने उसका जवाब घूँसे से दिया। दोनों लिपट गये। नरसंग ने दोनों की गर्दन पकड़कर उन्हें अलग कर दिया। अलग होते समय दोनों गिर गये। लाला ने धमला को सँभाला और भीमा ने जेठा को। बैठते ही जेठा लाला पर गरम हुआ—"तुमका मुखियागीरी चाही न। लाव तो भैया आपन लाठी ई के सीधे सारंग के दरबार मां पहुँचाइत है।" भीमा ने लाठी नहीं दी बल्कि डाँटा। नरसंग ने कहा—

"जेठवा, अब तू चुप बैठ, ई मेहमान बैठे हैं नाहीं तो हमार हाथ उठे तो बतीसी टूट जाये।"

जेठा पगड़ी बाँधते हुए खेत की ओर चला गया। और लोग भी चले गये।

भीमा ने चाय बनवाई । माना, करसन, नरसंग, रमण और हीरूभाई देर तक बैठे रहे । करसन ने अपनी पीने की आदत के बारे में बताया । जवानी के दिनों में पखवारे में एक बार खेतों में महफिल जमती । उसमें सुखड़ी और खरगोश पकाया जाता । पिथू भगत ने रात में खेत-खेत घूमकर कलिया-मछली तो छुड़ा दिया किन्तु शराब पीने वाले पीते रहे ।

रमण, हीरूभाई और नरसंग जब वापस आये तो आँगन में मुहल्ले भर की स्त्रियाँ कलबल कलबल कर रही थीं । दोली माँ ने अपना पुराना तखत-पुराण खोल रखा था । करसन मुखी उसके घर गया उसमें उन्हें तखत का ही दोष दिखाई पड़ रहा था । उन्होंने उसे हिडिम्बा का नाम दे रखा था । हिडिम्बा रोज एक आदमी को खाया करती थी । भगवान के दरवाजे से वापस आ गये करसन जैसे आदमी को भी उसने नहीं बख्शा । औरत जात होकर भी कोई दूसरे गाँव के आदमी को अपने घर बुला ले जाए भला ! दोली माँ को न जाने कहाँ से पता चल गया था कि तखत का नया पति जनखा है । बेचारे को हमेशा चौखट के बाहर ही रखती है । अच्छा है उससे पानी नहीं भरवाती । अब उसे जो करना होता है, खुले आम करती है । चौमाहे में नदी के गहरे पानी में एक साधु के साथ तखत को नहाते देखने वाली एक काछिन ने दोली माँ को सब कुछ बता दिया था ।

कंकू ने बात बदलने के लिए बताया कि मेहमान वापस आ गये हैं । हेती को अब तखत के नाम से डर नहीं लगता था । वह अनिच्छा से अब उसके बारे में होने वाली बातों को सुनती । दूसरी बिदाई में जब वह गयी थी तो तखत ने कुएँ पर उसका घड़ा उठवाया था । उसने मुस्कराते हुए बात की थी और घर पर भी आने के लिए बुलाया था । बड़ी ननद ने दाँत दबाकर कहा था — ई रांड एक भतार के तो खाय लिहिस है दूसरो के न खाय लियै तो कहयो ।"

"करेगी जैसा भरेगी ।" कहने हुए हेती ने बात टाल दी थी । किन्तु उसके मन में यह ठस ही गया था कि तखत डायन नहीं है । दोली माँ कुछ भी कहती हों वह राक्षसी नहीं है नहीं तो वह क्यों किसी का घड़ा उठवाये और क्यों किसी से हँसकर बात करे ?

नरसंग लवजी को उसी खाट पर सुला आया जिस पर देवू सो रहा था । लवजी नींद ही में उठ बैठा और उठकर मुहल्ले की गली की ओर चल दिया ।

"अरे कहाँ जात है रे ?"

"स्कूल मां ।"—कहती हुई कंकू उसे उठा लायी । "कई बार ई सोवत मां गिनती बोले लागत है ।"

इस ओर आँगन में सोये रमण और हीरूभाई अपनी आंजणा पटेल जाति के लड़ाकू स्वभाव के विषय में बात करते रहे । हीरूभाई का कहना था कि हमारी बिरादरी के लोग झगड़ा होने पर तो एक-दूसरे के खून के प्यासे दिखाई देते हैं । पर वे जिस क्षण झगड़े से लौटते हैं, पूरे लौट आते हैं । मानो बैर जैसी चीज को

ये जानते ही नहीं । पिछले दो दशक में इन पाँच-सात गाँवों के किसी आंजणा ने आंजणा की हत्या की हो यह मुझे याद नहीं ।— उसी क्षण उन्होंने जम्हाई ली । उन्हें नींद आने लगी थी । परन्तु रमण सोचता रहा । ऐसा कोई नियम तो है नहीं, जैसा कि हीरूभाई ने बताया । पिथू भगत के मुँह से उसने एक घटना सुनी थी । छना के दादा अपनी जवानी में कुलत में पड़ गये थे । हर रोज आधी बोतल पीते और कभी-कभार आसपास के गाँवों के चोरों के साथ डाका डालने भी चले जाते । जिस पर भी चाहे हाथ उठा देते । उनके चार भाई थे । उन्होंने मिलकर बड़े भैया को बहुत समझाया पर वे नहीं माने । आखिर चौमासे की एक अंधेरी रात को तालाब के पास उन्हें आते देखा और चारों भाई पहुँच गए । डुबो दिया, पानी पर कुछ बुलबुले दिखाई दिए । फिर उनके शव की गठरी बना ली, श्मशान में गाड़ आए । एक आदमी ने यह देख लिया । उसने एक साधु को बताया । साधु ने शव पर बैठकर साधना की । छना के दादा ने जिन्न का रूप लिया । कुछ ही महीनों में इनके भाइयों को पता चल गया । बारह-पंद्रह वर्ष की मुद्दत में वे सभी मर गये । एक को सोते गला घोंटकर मार डाला था, दूसरा नीम के पेड़ से उलटे सिर गिरा था, तीसरे को यक्ष्मा हुआ था, जो चौथा मरा वह तखत के पहले पति का बाप था ।

रमण ने पिथू भगत से पूछा था—"उस प्रेत को आपने बोतल में बंद कर दिया था यह बात सही है ?"

आप जैसे पढ़े-लिखे लोगों को इन बातों से क्या ?— भगत ने बात टाल दी थी । वे कभी अपनी महिमा नहीं करते, न तो पंचों में बैठते । गाँव के चौक में बरगद के नीचे सारी बिरादरी के पंच मिले हों और सबकी आवभगत हो रही हो तब भी पिथू भगत अपनी राह मुड़ जाते ।

यकायक हीरूभाई उनींदी आवाज में बोले "इस सोमपुरा गाँव के चौक में इस करसन बुढऊ ने मेरे पिताजी पर हाथ उठाया था । जानते हो ?"

"उस वक्त तो करसन ऐसा था कि चाहे तो भगवान पर भी हाथ उठाता । किसीकी एक नहीं सुनता था । आज उसने पच्चीस आदमियों के बीच आपका कहा सुना, उसे कुदरत की करामत समझिए । समय समय का काम करता है ।"

अब हीरूभाई को नींद आ गई थी । रमण को प्रश्न हुआ : क्या ये अपने बापके अपमान का बदला लेने को तो प्रेरित नहीं हुए होंगे ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । झगड़ा शान्त करने के लिए तो हीरूभाई कहीं भी पहुँच जाएँगे ।

20

रमण और हीरूभाई सोमपुरा की चकरोड से होकर जा रहे थे कि इतने में पीछे से दौड़ता हुआ घेमर वहाँ आ पहुँचा । थोड़ी देर साथ चलकर उसने मेह-

मानों के कल के काम की प्रशंसा की फिर मुख्य बात पर आ गया। उसने रमण को रोककर पूछा—

'हीरू भैया सिफारिश करें तो…"

"क्यों, टीन का कोटा चाहिए ?"

"हमका का करे के है पतरा का ? ई हीरूभाई बदरी के हैं कि नाहीं ?"

"हैं।"

"गाँव मां इनके बात का असर है कि नाहीं ?"

"यह तो जैसा दिन जैसी घड़ी।"

"हमरे ससुर का तो ये पहिचानत हैं कि नाहीं ?"

"पूछना पड़ेगा।"

"मगा मनोर नाम है उनके।"

हीरूभाई जानते थे कि मगा ने अपनी बड़ी लड़की की शादी करते समय समधी के पास से अच्छी-खासी रकम ली थी। छोटी को तो खैर बदले में ब्याहा है। फिर भी मेरी लड़की बड़ी है ऐसा कहकर वह पैसा माँगे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। गाँव में सब मगा मनोर का मुँह देखना भी अशुभ मानते। उनके कहने से मगा लड़की को ससुराल बिदा कर दे यह नहीं हो सकता। वे यह नहीं चाहते थे कि लेनदेन से समस्या सुलझाई जाए। यह तो पुराने पंचों का काम है। उन्होंने घेमर का मन रखने के लिए बात-चीत की।

"तुम्हारे साथ हीरा की शादी हुई है।"

"हाँ, बड़ी के तो पहले ही हो चुकी थी। जब शादी भई तब छोटी भी कहाँ छोटी थी।"

"तुम्हारी शादी कब हुई यह मुझे मालूम नहीं है।"

"पार साल तो बदलामां हम अपनी बहिन लीलू के शादी किहा है। मगाजी कहते रहे कि पहले लीलू के हाथ पीला करौ फिर हीरा को ….." घेमर ने जीभ अपने दाँतों तले दबा ली। इतने बड़े आदमियों के सामने पत्नी का नाम ले लिया बड़ी गलती हो गई।

"कोई बात नहीं, पत्नी का नाम लिया जा सकता है, शौक से लिया जा सकता है घेमरजी। इस साल तो अभी मुहूर्त पन्द्रह दिन तक है। भेजा जा सकता है…" रमण ने कहा।

"हमरे बापू गये रहा। मगाजी बोले कि पार साल के खर्च के कर्जा अबहीं उतरा नाहीं और फिर से बिदाई के खर्च करी ?"

"तुम्हार का अंदाज है ?" हीरूभाई एकाध वर्ष अधिक ही कहेंगे ऐसा सोचकर घेमर उनका मुँह ताकने लगा।

"पन्द्रह वर्ष की होगी।"

"पार साल सोला भवा रहा अब पन्दरा होये ? तुमहू अच्छे आदमी हो।"

"बुरा मत मानो । बढ़े हुए वर्ष कम नहीं हो जाते ।" हीरूभाई हँसते हुए बोले । तब तक रमण गंभीर भाव से कह उठा—

"ऐसी कोई बात नहीं हीरूभाई, कहीं–कहीं ऐसे उदाहरण भी देखने को मिलते हैं कि आदमी का वजन ही नहीं, उसकी लम्बाई भी कम हो जाती है ।"

"इ तो बुढ़ापे बेर ।" घेमर ने विश्वासपूर्वक कहा ।

"नहीं, नहीं जवानी में..."

"हमार कसम ?"

"तुम्हारी कसम । मैंने अखबार में पढ़ा था ।"

"अखबार में छपने वाली सभी खबरें सच नहीं होतीं ।" हीरूभाई ने आश्वासन की निगाह से घेमर को देखा । थोड़ी देर बाद घेमर ने रमण की ओर देखा ।

"तो अब का करी रमणजी ?"

"हीरूभाई ही कोई उपाय बतायेंगे ।"

"ऐसा करो घेमरजी, तुम अभी-अभी मेरे साथ बदरी चलो ।"

"फिर ?"

"अपने ससुर से मिलो, उनसे बात करो ।"

"फिर तो वे हाथ मां लाठी ले के पीछे पड़े ।"

"मैं साथ में आऊँगा ।"

"तो भाई साहेब, तुम अकेले चले जाव न । हम तुमहूं से कहे देइत है कि सौ–दुई सौ देय के पड़े तो दीन जाये । तुम जरा......"

"किन्तु यह तो कन्या–विक्रय का कार्य है । इसमें मैं नहीं पड़ूँगा ।"

"अरे जो मफत मां काम होय जाये तो तुमरे यस भगवानौ नाहीं ।"

"वैसे तो मैं ऐसी झंझट में नहीं पड़ता हूँ किन्तु तुम्हारे लिए एक चक्कर लगा दूँगा ।"

घेमर राम–राम करके वापस आ गया । रमण और हीरूभाई के हँसते हुए चेहरे को देखकर उसने सोचा कि पढ़े–लिखों का कोई भरोसा नहीं ।

रमण की इच्छा व्यापार करने की है यह जानकर हीरूभाई को बुरा लगा । किन्तु उनके आग्रह से उसने एक वर्ष और नौकरी करते रहने की बात मंजूर कर ली इससे उन्हें थोड़ा संतोष हुआ । चलते ..चलते रमण ने कहा—"मैंने तुम्हारी बात रखी है तो तुम भी मेरी एक बात मान लो । घेमर के ससुर को तुम कहोगे तो वह जरूर मान जायेगा ।"

"किन्तु यह तो प्रश्न ही अलग है । मैं इसमें नहीं पड़ूँगा ।"

"तो अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाओ ।"

हीरूभाई अनिच्छापूर्वक मगा मनोर के घर गये । दालान में प्याज का ढेर लगा था । सूर्य ढलने लगा था जिससे धूप सीधी प्याज पर पड़ रही थी । प्याज

की कालिमा से छिलके चमक रहे थे । किन्तु इस दृश्य से मगा को कोई निस्बत न थी । उसकी आँखों में थकान और ऊब थी ।

"कैसे हो मगा काका ?"

"के, अरे हीरा, आव-आव ।"

"क्यों कपाल पर हाथ धरे बैठे हो ?"

"अरे ई पियाज का रोइत है । ससुरी सौ मन भई है मुला का करी ? गड्हा मां डारी ?"

"गड्ढ़े में डालने की बजाय मुझे दे देना । मैं हरिजनों में बाँट दूँगा ।"

"तू तो भैया उनके ही भला करबो । जिन्दगी मां पहली बार हमरे घरे आयो है वहू कौनो वसूली मां आयो हाये, देय नाहीं । भैया सब सुआरथ के साथी हैं ।"

हीरूभाई चौखट पर बैठ गये । मगा को खटिया के बारे में सूझा भी नहीं । वह पुनः प्याज पर अपना गुस्सा उतारने लगा ।

थोड़ी देर के बाद हीरूभाई मूल बात पर आये ।

"मैं कल सोमपुरा गया था ।"

"के हू के शादी-वियाह मां ?"

"नहीं, मैं तो अपने लड़के की शादी नहीं करूँगा । बड़े होने के बाद देखेंगे । मैं तो करसन ....."

हीरूभाई की बात काटते हुए मगा ने कहा-

"फिर कौनो अच्छा घर न मिले । हमार मानो तो कहूँ देख रखौ ।"

"देखें ।" हीरूभाई जानते थे कि मगा उनकी बात मानने के बदले अपनी ही बात ठसाने की कोशिश करता रहेगा ।

"सोमपुरा में तुम्हारे सबंधी से मुलाकात हुई ।"

"तू तो कौनो करसन मुखी की बात करत रह्यो न ?"

"हाँ, मैं और रमणलाल उनको मिलने गये थे ।"

"ई रमणलाल कौन है ?"

"वही, रमण, मास्टरजी । गोकुलिया वाले मूलजी का लड़का ।"

"मूलजी, ससुरे के घरे खाय क नाहीं रहा । लड़का पढ़ का लिहिस फिर तो नयी पगढ़ी और हाथ मां बेत की लाठी बिना घर से बाहेर नाहीं निकलत । मुला बहुत घमंड अच्छा नाहीं होत भाई । घमंड तो राजा रावण के नाहीं टिका ।"

"तुम्हारी बात ठीक है मगाकाका, लेकिन रमण बहुत सीधा आदमी है ।"

"तो ऊका का करे क ले गयौ रहा ? ऊ तुहरी तिनके हाथ मां झोली लटकाये बाला नाहीं न ।"

"हम तो भीमा मुखी और करसन को समझाने गये थे ।"

'करसन मुखी मौका चूक गया । मरा होत तो नाम होय जात । मुला सबही

कहत है कि रमण के बड़ा ससुर ऊका मरे नाहीं दिहिन ? मंतर मार के ऊके जीव सरग से वापस बुलाय लिहिन।"

"स्वर्ग से कि नरक से ?"

"अब तो ऊ नरके मां जाये।" मगा ने तखत का नाम लेकर करसन के विविध कुलक्षणों की बात करनी शुरू कर दी। प्रारंभ में तो रस लेते रहे किन्तु थोड़ी ही देर बाद हीरूभाई सावधान हो गये। उन्होंने हीरा की विदाई की बात कर दी। मगा थोड़ी देर हीरूभाई की ओर देखता रहा। फिर पास में पड़े हुए प्याज के एक गंठे को दूर फेंकते हुए उसने कहा—

"तुमका के फताजी मिले रहा ?"

"मैं तो उन्हें पहचानता नहीं।"

"नरसंगजी बात करिन होये ?"

"नहीं, तुम्हारे दामाद घेमरजी मिले थे।"

"घेमरजी ? का बात करत हौ ? घेमरजी कहूँ अस बात कर सकत हैं ?"

"हाँ उन्होंने ही कहा है।"

"धत् तोहरी महतारी क घेमरिया...अस कुजात सार दामाद मिला है ? गाँव भरे के सारे क सरमौ नाहीं आयी ?"

"इसमें शर्म किस चीज की ? तुमने उसके साथ शादी की है।"

'सादी कीन है तो यही कि ताँई ! इज्जत लिल्लाम करे कि खातिर ?"

"इज्जत की तो बात ही रहने दो।"

"का हे, तुहरे अकेले के इज्जत है ? सबका सुधारे निकरे हौ।"

"तुम व्यर्थ में गुस्से हो रहे हो।"

"हम गुस्सा भइन ? ई मगा मनोर के गुस्सा तुम अब हीं देखे कहाँ हौ भैया ? दुई भीलन का एकै तीर मां छेद डारा रहा। भूल गयौ का ?"

"मेरे सामने फालतू गप्प क्यों हाँक रहे हो ? क्या मैं तुमको जानता नहीं ?"

"काहे हम कस हन ? छिनारा करा है ? चोरी कीन है ? कौनो बामन कै हत्या कीन है ? जा. जायके अपने बाप से पूछ।"

"उनको पूछने की कोई जरूरत नहीं है। मैं जानता नहीं हूँ क्या कि अपनी बड़ी लड़की की शादी तुमने डलिया भर के पैसे लेकर की है।"

"तो का उनका पाल-पोस के तू बड़ा करिस रहा ? ऊके सादी खर्च तू दिहिस रहा ?"

"खर्च नहीं माँगा जाता।"

"तो तू न लिहिस। अपनी बिटिया के ऐसे भेज दिहौ। हम तो हिरिया क भेजब तबौ खर्चा लेब। हमका तो बिता भरके पतुआ के बदले जवान बिटिया भेजे का है।"

'तुम इस तरह कोई भी पैसा लोगे तो मैं तुम्हारे घर में पाँच नहीं [illegible]।"

"तो न स्व भैया। तुहरे पाँव से कौनो लछमी नाहीं झरत। कान खोल के सुन लेव हम तो पैसा जरूर लेव। तू कहे आयो है तो पाँच ज्यादा लेब।"

"पाप लगेगा।"

"सारा समाज पाप करत होय तो हम का पुन करके धरम राजा के घरे अलग खाता नाहीं खोलाने क है। पुन करे वाले तो सब सारे सतयुग मां मर गये।"

हीरूभाई को लगा यदि यहाँ अधिक बैठेंगे तो यह आदमी गुहार मचाकर पाँच आदमियों को एकत्र कर लेगा। आने वाले मेरी बात सुनने के बदले उसकी बात सुनेंगे। और फिर घर पर जबाब देना पड़ेगा वह अलग। शादी की रीति-रिवाज में हस्तक्षेप करने जैसा नहीं है। वे खड़े हो गये।

"फिर आयौ।"

"अपमान करवाने ?"

"ईमा कौन अपमान भैया ? साफ-साफ बात तुमसे नाहीं तो किसे करी ? तू कहाँ बाहेर के आदमी अहौ ? ले चल ई पियाज के पाँच रुपये मन के हिसाब से बेचवाय दियौ, हीरा के भेजे का एकौ पैसा न लेब।"

"पाँच रुपया मन तो गेहूँ भी नहीं है।"

"तो फिर किसान क सुधारे के बात छोड़ के घर के काम करो। ई तो सतवारे बनिया ...तौले जेस बात भा।"

"तुम्हारी बात सही है।"

"सही न हाये न। हम कहाँ नाहीं जानित। रमण मास्टर क देखौ एक बरस मा दस बीघा जमीन खरीद लिहिस और तू तो मूड़े पर ठीक से टोपी नाहीं पहिनतेव।"

"पहनना भी नहीं है।" हीरूभाई चल पड़े।

"ई तो भैया जस जी के भाग। अच्छा आयौ। बुरा न मान्यौ और पियाज के कौनो अच्छा गाहक मिले तो एकाध दिन मां भेज दिहौ। कोठरी मां जगह तो होय।"

हीरूभाई हाथ ऊँचा करके चले गये।

21

कर धमला के दरवाजे पर सिर रगड़कर चला जाता
रवाजा नहीं खुला। धमला के पाँव की निशानी
क जाता है और फिर किसी गंदे स्थान पर जाकर

आकर चक्कर मार चुका है। उसने धमला के
बड़ी सी रकम उधार लेकर गया है। लेकिन

उसे पैसे की चिन्ता नहीं थी। वह किसी अन्य कारण से धमला की राह देख रहा था। किसी को असलियत नहीं बताता था।

शनिवार शाम को भी महादेव में धमला की बात चल निकली। वह कहाँ गया होगा इस बारे में सबकी अलग-अलग राय थी।

"बम्बई कमाय चला गवा होये।" मोहन ने कहा।

"रोटी बनाय-बनाय के थक गवा रहा, बाबा होय गवा होये।" वीरा ने कहा।

"कौनो गुनाह मां आय गवा होये औ पुलिस पकड़ ले गै होये।" धमला के काका के लड़के कचरा ने कहा।

"गुनाह करके ऊ तो दूसरे का पकड़ावे अस है। कौनो नाटक कम्पनी मां भरती होय गया होये।" उमा ने शहर में नाटक देखा था।

"अब बरसातौ मां नाटक ? तुम हू उमा काका चलाये रहत हौ ?" घेमर उकड़ूं बैठते हुए बोला।

"सहर मां नाटक तो छपरा के नीचे होत है। चलौ गीत गाऊ। धमला जहाँ गवा होये उहाँ ऊका केवु बैठाय न लेये। वापस आये। खोटा रुपिया हेरात नाहीं।" नरसंग तबला कसते हुए बोला।

नरसंग ने तबला बजाया, घेमर ने मंजीरा लिया और मोहन ने गीत शुरू किया—

"नदिया किनारे गेंद खेलते रे कान्हा।"

खेतों की जुताई हो इसके पहले ही धमला आ गया। उसके साथ एक दूसरा भी "आदमी" था। उसने जेणी बहू के लड़के से नरसंग को बुलवाया।

दीये के उजाले में अनजान आदमी को देखकर नरसंग सोच में पड़ गया। देवू उसके पास में बैठा तो उस आदमी ने घूमकर देखा। धोती के नीचे दीख रहे पाँव, कपड़े छोटे पड़ते होंगे ? खिंची हुई छाती . अरे, साफे के नीचे लटकी हुई चोटी – नरसंग चिल्ला पड़ा—

"अरे तेरा नाश जाय। ई कीका बैठाय लाइस रे ?"

"हमरे कहे के पहिले पता चल गया।"

"कौने जात के आय ?"

"आसरम से लाइन है, ईका अपने जात के खबर नाहीं है।"

"आसरम से। तब तो ऊँची जात के होये। नीच जात के इज्जत होत नाहीं और केहू का आसरम मां डालत नाहीं। नाम का है ?"

"जौन धर देव।" स्त्री पहली बार बोली। उसमें लज्जा नहीं थी। थोड़ा सा भय था और थोड़ा सा संकोच।

"बोल, वीणा की वेली ?" नरसंग ने मजाक में पूछा।

"वेली राखौ।" धमला ने गम्भीरता से कहा।

देवू हँस पड़ा। पिछली गर्मियों में ही उसने घेमर के साथ सारंग में जाकर वीणावेली नाटक देखा था।

नरसंग उन्हें अपने घर ले गया । फिर पंचों को बुलाया । भीमा, माना, लाला, सब अपने साथ किसी न किसी को लेकर आये । बिना बुलाये आये हुए छना ने घमला को जाति से बहार कर देने की बात की । माना ने भी उसका समर्थन किया । कुछ फैसला हो इसके पहले ही स्नान करके आये घमला ने कल के लिए, सबको खाने का निमंत्रण दिया । अच्छे काम में उपयोग लाने के लिए उसने गाँव को सवा सौ रुपये दान देने का अपना संकल्प प्रकट किया । माना ने जमानत मांगी । कंकू से पूछा, गिनकर देखा तो एक सौ पैंतीस रुपये निकले । नरसंग ने सवा सौ रुपये लाकर भीमा के हाथ में दे दिये । घमा ने बदल में अपना एक खेत लिख देने को कहा । माना ने कागज मँग· वाया । नरसंग ने मना किया — घमा की जिन्दगी सुधरती हो तो उसे सवा सौ रुपए की चिन्ता नहीं थी । भीमा ने खड़े होकर सभी स्त्रियों को गीत गाने के लिए कहा । छना भी उत्सव के रंग में आ गया ।

कंकू ने वेली को गवन और छींटवाला घाघरा पहनाया । कौन कह पाएगा कि यह आंजणे की बेटी नहीं है ?

लवजी अभी देव से पूछ रहा था : यह आदमी था, उसमें से औरत कैसे हो गई ? लड़की के कपड़े पहन लें तो हम भी लड़की हो जाएँ, "तुहें लड़की बने क है ?"—देवू ने पूछा । "नाहीं" कहते हुए लवजी अन्य बालकों के बीच जाकर, जो देखा था जताने लगा ।

"अबे, गटा पुरोहित नाहीं आये ?"-नरसंग ने इधर-उधर देखकर पूछा ।

कोई बुलाने गया ही नहीं था । आखिर छना को जाना पड़ा । उसे भय था कि मेरे बुलाने पर वह सुनेगा नहीं । किसी ने सलाह दी कि एक-दो घूंसे जमा देना, चट खड़ा हो जाएगा । इस बात पर नरसंग ने टोका । ऐसी छेड़-छाड़ अच्छी नहीं, ब्राह्मण को सताना ठीक नहीं ।

इधर घेमर बजवैये के हाथ ढोल लेकर बजाने लगा । चेहर ने चिल्लाकर कहा : ए ढोलकिये, रहे दे अगले जनम मां तुझे ढोलकिये कै अवतार मिले ।

"भलो मिले, ई ढोलकिया हमसे मोटा ताजा है । अभी उजणा पूरा होये और पांच रुपए की कमाई करके चला जाये"

"तुम इका बुलावे गये रहयो, आधा हिस्सा पक्का काहे नाहीं कर लिहो ?" कहते हुए नरसंग ने सभी को हँसाया ।

गटा पुरोहित अपना काम शुरू करने से पहले, नरसंग से पूछ लेना चाहते थे— "अछूत होगी तो ?" अछूत नाहीं बामनी है, फिर भी छूत लाग बात होय तो घर जाकर छींटा ले लिहो ।"

गटा पुरोहित के सामने अब दूसरी समस्या खड़ी हो गई "ब्राह्मण हो तो आंजणा के साथ बियाही जाए ? महा पातक......सोचते-सोचते उपाय मिल गया ।

फेरा लगते ही लड़कियों ने गीत गाना शुरू कर दिया था। तीसरे ही गीत में वे सब रिवाज के मुताबिक गाली गाने लगीं—

"तेरे होंठ लाल, दाँत काले रे

छिनार बहू......"

धमला ने उन लोगों से प्रार्थना की—"गरियावे क होय तो हमका गरियाओ। हमार आदत पड़ गई है। ई अनजान बेचारी का काहे गरियावत हो। ई का अपने रिवाज के का पता?"

ढोलकिया ने धमला को आगे बोलने का मौका नहीं दिया।। वह दौड़कर उसके पास आ गया। धमला ने जेब से रानी छाप रुपिया निकालकर उसको दिया। वह नाचता हुआ आगे चला गया। पैसा, दो पैसा एक आना और कभी-कभी तो दुअन्नी भी उसकी ओर फेंकी जाने लगी। ढोलक की एक भी थाप चूके बिना धूल में गिरे सिक्के को वह झट से उठा लेता।

"घेमरिया भी जबरदस्त ढोलकिया लाया है। कहै क पड़े।"

"फिर। अंधेरे मां तीन जन बैठे रहे। केऊ के नाहीं हई के क्यां कहा?"

"जेणीबहू ने वर-वधू का स्वागत किया। इतना ही नहीं, धमला जब अपने घर में पाँव रखने जा रहा था तो बहन की रस्म-अदायगी के रूप में भी उसी ने उसकी राह रोकी। साड़ी खरीद देने का वचन देकर धमला घर के अन्दर गया।

सूर्यास्त के बाद उनकी गाँठ खोली गयी। जो रस्म धमला के घर पूरी करनी थी वह नरसंग के ही घर की गयी है यह कहकर गटा पुरोहित हट गये थे। धमला संतुष्ट नहीं हुआ। उसने सोचा कि दो-चार चक्कर लगवाने के बाद ही वह गटा को दक्षिणा देगा।

शाम ढलने के बाद उसकी इच्छा हुई कि पिथू भगत के पाँव छू आना चाहिए। जो उनके दिल से आशीर्वाद के एक-दो शब्द निकलें तो उद्धार हो जाए। घेमर को साथ लेकर वह भगत के खेत की ओर गया। बाहर पहुँचने-पहुँचते उसने तान छेड़ी "दादारे दादा मैं शादी करके आया, पाँव छूने वाली लाया, लाल घोड़े पर आया....."

पिथू भगत खेत में नहीं थे। घेमर चारों ओर देखकर आ गया। शाम को तो थे। कहाँ गये होंगे? दोनों एकदूसरे से पूछते रहे। वे वापस आये तब तक वहीं बैठे रहेंगे, उनका आशीर्वाद लेकर ही घर जायेंगे कहते हुए धमला अलाव के पास बैठकर बीड़ी सुलगाने लगा। घेमर ने भी एक बीड़ी माँगी। मिट्टी के घड़े में से दो-दो कुल्हड़ पानी पीकर किसी से कुछ बोले बिना एकदूसरे की मूक संमति से वे दोनों जन उठ खड़े हुए। और जिस तेजी से आये थे उससे भी ज्यादा तेजी से गाँव की ओर चल पड़े।

"ई तो बेइज्जती भै धमाकाका, अपने घरे सारा गाँव मुँह पीठ करे बैठ होये और हम इधर हैं।"

"अरे, अबहीं तो हम केहू के याद न आइब।"

"तुम हमका पहले कहे होतेब तो हम सारंग से मन-दुईमन बताशा न लय आइत।"

"अरे परसों तो ठीक भवा रहा।"

"सही बताऊ कहाँ से लायौ?"

"अहमदाबाद से।"

"तो होये कौनो अनाथ।"

"नाहीं ऊँच जात है।"

"हमार कसम?"

"तुहार कसम।"

"केतना देय के पड़ा।"

"एको पैसा नाहीं। दलाल क हम एकदम साफ कह दीन कि एक बरस तक हमरे घर के पानी भरे के परे। बाद के बात बाद मां। बहू क सुनाय दीन—तुहार गरज होय तो आऊ। गोबर-पानी करे के पड़ी, कपड़ा धोवे के पड़ी और बड़े के आगे पर्दा करे क पड़ी।"

"तोहरे अतनी अक्कल है इके हमैं आज पता चला।"

"अरे हम तो पूरे सोमपुरा का बेच आयी अस हन। ई तो भलाँ होय नरसंग कै कि ऊ हमका भजन-मण्डली मां लगाय तिहिस और हम काबू मां रहा।"

"अबहीं हमका मंडली के वसूली देय क बाकी है।"

"चल हम भर देई। तुहार बाप तो कंजस है।"

धमला और घेमर मुहल्ले में पहुँचे तब लोग गुड़ ले लेकर बिखर रहे थे। सब खुश थे। पता नहीं गुड़ खाकर या नयी बहू देखकर सबको ख़ुश देखकर वह भी खुश था। गुड़ बाँटने से नरसंग छुट्टी पा गया है देखकर धमला उसके पास गया।

"हम तुहरे खेते मां गये रहिन, भगत के आसीस लेय, मुला वे नाहीं रहे। कहाँ गये हैं!"

नरसंग घबराया तो नहीं किन्तु अभी और बैठने की इच्छा छोड़कर वहीं से वह खेत की ओर चल पड़ा। लाठी लेने घर भी नहीं गया।

22

नरसंग खेत में पहुँचा तब तक पिथू भगत वापस नहीं आये थे। बहुत समय बाद नरसग को बुढऊ पर गुस्सा आया था। एक बार बहुत पहले भी वे किसी का भूत झाड़ने बदरी गये थे। नरसंग ने तब भी उनका विरोध किया था। कंकू भी सप्ताह भर तक अपना गुबार निकालती रही थी।

एक बार भगत ने नरसंग से कहा था कि तुझे यह विद्या सीखनी हो तो चार दिन का काम है। नरसंग ने स्पष्ट मना कर दिया था। विद्या सिखाने की बात तो दूर बदरी से वापस आने के बाद उन्होंने स्वयं ही नरसंग से कहा था–'तू कहत होव तो ई सब छोड़ देई।" "हम कहां कहत है कि कूहू के भला होत होय तो न करौ। मुला तुम अस गाँव-गाँव भटकत रहौ तो काल केहू हम के ना कहे कि तुहार बाप तो धंधा करत हैं। तुम तो कभी एक पैसा नाहीं लायौ मुला एक दिन भीमा कै औरत हेती के महतारी से कहत रही कि तुहार ससुर तो सब का ठग के घर भर लिहिन है नाहीं तो तुहरे काने मां सोने कै बाली कहाँ से आवत? ई सब तो ठीक है, तुमका जौन करै के होय, अपने खेत मां बैठ के करौ, दूसरे गाँव मां जाय के..."

"दूसरे गाँव जाव आज से बन्द " कहते हुए बुढऊ की जबान थोड़ी लड़खड़ाई। नरसंग को भी लगा कि उसने व्यर्थ ही यह प्रसंग छेड़ा। उनको जो करना हो करें। लोगों को तो बाल की खाल निकालने की आदत है। उनका मन दुखता हो तो ··

बदरी वाले इस प्रसंग के बाद से उन्होंने बाहर जाना बन्द कर दिया था। गाँव में भी किसी को जरूरत होती तो खेत में ही आ जाता था। इसीलिए पिछले वर्षों से इस सिवान का नाम भगत की रहाई पड़ गया था। यहाँ एक छाया थी, चैन था...

सबेरे नरसंग बैलों को चारा डाल रहा था तभी पिथू भगत ने खेतों का थाला खोला। पशुओं के कान खड़े हो गये। नरसग चिलम भरकर पुनः खाट पर जा बैठा। कहाँ गये थे, क्यो गये थे ऐसा कोई प्रश्न मन में भी खड़ा न हो इस संकल्प के साथ वह बैठा रहा। चिलम पी वह भी दबे हुए होंठो से। बुढऊ को एक भी कड़वी बात न कर बैठे यह सोचकर उसने यूँ चिलम रख दी जैसे अपना गुस्सा अपने आप पर उतार रहा हो। वह फावडा लेकर खेत की बाड़ ठीक करने चल दिया।

भगत को अच्छा लगा। वे उठकर भैसों और बैलों की पीठ पर हाथ फिराने लगे। बछड़ा भी लाड़ से उनकी हड्डी चाटने आया। उसके दाँत आ गये थे। वे कहने जा रहे थे–"नरसंग बछवा के दुई दाँत होय गये।" नरसंग दूर मेड पर था। महासे के एक-एक बार से थोर की झुकी हुई डालें कट-कटकर नीचे गिर रही थीं। कंकू कब भैस के लिए खली लाई, कब उसे दुहकर चली गयी उसे पता भी नहीं चला।

हेती, देवू और लवजी घर से जब तक ब्यालू लेकर आये तब तक चार बीघे खेत की चारों मेड़ें साफ हो चुकी थीं। नरसंग अंगौछे से मुँह पोछते हुए आ पहुँचा। "चल बुढऊ को भी बुला ले। और उनका पूछना जरा कि काल रात का कहाँ मरै क गए रहा।"

बुढऊ घड़े में से चूल्लू भर पानी लेकर हाथ धोयें इतने में हेती चावल से

भरा हुआ तसला उनके सामने रखती हुई बोली—"बाबा बापू पूछत रहे कि काल रात के तुम कहाँ मर गयो रहा ?"

बुढऊ का पोपला मुँह खिल उठा। बेटे के मन में दबा हुआ अब तक का गुस्सा अब बाहर आ गया था। वह भी पौत्री के मुँह से प्रेम बनकर।

बुढऊ ने नास्ता करके शुरू से अन्त तक सारी बात विस्तार से बताई।

गाँव से ढोल बजने की आवाज आयी। ठीक उसी समय मगन अमथा और शंभू नायक, काँटे का दरवाजा हटाते हुए, "पिथू भा, भगत हो कि नाहीं" कहते हुए आये। भगत के हाथ की घूमती हुई माला रुक गयी। शंभू नायक को तो उन्होंने आवाज से ही पहचान लिया था। वे पास में आये तब तक माला के एक सौ आठ मनके घूम चुके थे।

"काहे नायक अतने कुबेरे ?" मगन अमथा को पहचानते नहीं थे, पूछा "कौन है साथ ?"

"ई तो टींबा के मगन अमथा, महाभोज नाहीं किहिन रहा ? वे।"

"आऊ बैठो।" भगत खड़े हो गये।

"बैठे के समय नाहीं है भगत। तुम्हरे शरन मां आइन है। मगनभाई के लड़का पे माता आयी हैं। गाँव के बाबा से कुछ नाहीं भवा। भगत, हम हूँ अपनी जिन्दगी मां पहली बार पीछे हट गईन हैं। बहुत जतन कीन मुला लड़का आँख नाहीं खोलिस तो नाहीं खोलिस। अब अतने मां हमें तो कौनौ दूसर आसरा नाहीं देखात है।"

भगत ने भगवान का नाम लेकर कहा—"जाव तुम लड़का अच्छा होय जाये।"

"तुम साथे आऊ और उके माथे पर हाथ फिराऊ। ऊके बिना··"

"नायक तुम नाहीं जानते ? हम अब दूसरे गाँव नाहीं जाइत।"

"इतना फेरा···"

"अरे हम तूमका कहित तौ है कि जाव लड़का को कुछ न होई। माता के कोप होत तो हमें इजन मिले बिना न रहत।"

नायक गुमसुम खड़ा रहा। मगन अमथा भगत के पाँव पड़ गया। उसे डर था कि यदि लड़का मर जायेगा तो उसकी माँ भी सिर पीटकर मर जायेगी। एक ज्योतिषी ने उसे बताया था कि तुम्हारी पत्नी के आते ही तुम्हारा समय बदला और लड़के के जन्म के बाद तुम पैसादार आदमी बन गये। अगर लड़के को कुछ हो गया तो···

भगत के आश्वासन का उस पर कोई असर नहीं पड़ा। ज्यों-ज्यों भगत मना करते गये त्यों-त्यों उसकी श्रद्धा उनमें बढ़ती गयी।

"सहर मां होत तो डाक्टर से जौन होबे होत तौन होत, इहां तो तुम ही बैठे हो···" मगन के पास भगत की चिरौरी करने के लिए अब शब्द नहीं रह गए थे। आगे नायक बोला—

"भगत तुमका तो जैसे ई सोमपुरा वैसे टींचा । नायक के बात आज रख लेव" और खाट के नीचे पड़ी हुई सोटी भगत को पकड़ा दी । खाट के सिरहाने रखी हुई पगड़ी को जैसे-तैसे बाँधकर वे चल पड़े । रास्ते भर नायक उनकी प्रशंसा करता रहा ।

भगत ने लड़के के शरीर पर हाथ फिराकर मुँह पर पानी छाँटा । मस्तक पर हथेली रखकर ऊँगलियों से मस्तक के किनारों को दबाया । थोड़ी ही देर में लड़के ने आँखें खोल दीं ।...

"बाबा, बताऊ तुम कस मंतर पढ़े रहयौ और का का करेव रहा ?"

"ई नाहीं पूछा जात पगली ।" नरसंग वहीं से खड़ा-खड़ा बोला, "ई बासन माँज के ईंधन लेके घर चल ।"

"बापू, ई लवा काल घेमर के नीम पर चढ़ा रहा ।"

"तू नाहीं चढेव रहा ?" लवजी पर देवू की फरियाद का कोई भी असर नहीं पड़ा था। अब देवू ने अपना बचाव किया–

"हमो तो बड़ हन, अपने गोरू की तांई के पाती तूरत है ? सही बताऊ हेती, तुम ई साल या एकौ बार नीम पर चढिऊ है ?"

हेती ने कोई जवाब दिये बिना ही डलिया सिर पर रख ली ।

"तो तू स्कूल जाबौ तो हमका पाती न तूरे क पड़ी ?"

"तू अब पढ़ै सारंग न औबो ?"

"मास्टर हम का तुहरे साथे बैटावे तो आयी ।"

"हाँ तुमका पांचवी मां बैठावें, बहुत होशियार हो न ।"

"तो तुम हमरे साथे दूसरी मां बैठेव ।"

"वाह भाई, दूसरी मां बैठेव । चौथी पास करके हम दूसरी मां आऊब ?"

"न जाबौ ? बापू पीटत-पीटत तलाव तक छोड़ के आय जैहैं ।"

"बापू तुम हमका पीटबौ ?"

"अब तू हमका बीड़ी पीये देबी ?"

लवजी को बुरा लगा । पहले वह नरसंग पर फिर देवू पर नाराज हुआ । बाबा के पास गया । थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा फिर सब कुछ भूलकर भगत की कमीज की जेबें टटोलने लगा । कुछ भी उसके हाथ में नाहीं आया ।

"कुँआ के थाला मां केहू न नहायेव नाहीं पीटे बगर न मानब ।" बैलों को ले जाते हुए नरसंग ने कहा । लवजी और देवू दोनों एकदूसरे की ओर देखने लगे । अभी हाल में तो कोई नहाने की हिम्मत नहीं करेगा यह बात वे दोनों समझते थे ।

भगत को मालूम था कि नरसंग के क्रोध की वजह कुछ दूसरी ही थी । वह जब दोपहर में खाने निकला तब उन्होंने कहा–

"अब कभौ दूसरे गाँव न जाव । भले सारंग के दिवाने बलावे आवैं ।"

"ई बात तो तुम पहलेव कहाँ नाहीं कहयौ है ?"

"तुम कहत होब तो ई सब छोड़ देई।"

"जौन तुहार मन होय ऊ करौ। हम तो एक भगवान क मानित है दूसरे केहू क नाहीं।"

"भगवान की माया बहुत बड़ी है भाई।"

"मालूम है।"

"मालूम होत तौ तुम अस उलटी बात न करतेव।"

"हम उलटी बात करा है ? तुमका रोका ?"

"मनई हाथ पकड़ के रौकै तबै रोकब कहा जात है ?"

"तुमका तो जौन काहित है सब उलटी लागत है। हम तुमका साफ-साफ कहते देइत है। बाहर तो ठीक तुम अपने गाँव मां केहू के डोरी-धागा कर देत हौ वहू हमका खराब लागत है। मुला हम तुमका कबौ कुछ कहा ? हेती के महतारी कुछ बोली ? तुमका ईमां कल्याण देखाय पड़त है तो ई करौ।"

"हमार कल्याण तो ई माला मां है। बाकी ऊ सब तो लोक..."

"लोक-कल्याण करे वाला ऊपर बैठा है। तुमरे धागा से सब जी जात होय तो विधि के लेख गलत है ?"

"हम कबौ कहा—"

"तब फिर छोडब ई सब। भगवान और तुमरे बीच काहे को दूरी खड़ी होन देत हौ ?"

भगत को यह सब यों ही नहीं मिल गया था। पर नरसंग का कहना था कि साधना की तब की, अब यह सब चलाए रहने में मोह नहीं है तो और क्या है ?

मोह ? पिथू भगत सोच में पड गये। हाँ थोडा मोह भी होगा। बात गलत नहीं – वाह वाह सुनने का मोह, गरम गरम सुखडी खाने का मोह...

नरसंग जब जूता पहन रहा था तब भगत ने कहा—

"केहू अधिकारी मिलै तो सब दे देयी।"

"देख के, जल्दी न करेव। नाहीं तो कौनों नालायक के हाथ मां हथियार चला लाये तो तुम्हार करा-धरा पानी मां चला जाये। केहू हैरान होये ई ऊपर से। चलो।" देवू और लवजी को बुलाने के लिए वह खेत के पास खड़ा हो गया। देवू ने आज लवजी को हैरत में डाल दिया था। पानी से भीगी मधुमक्खियों को लाकर उन पर राख डालकर, उनके परों को सुखाकर देवू उनको उड़ने के काबिल कर देता था। उस वक्त होठों को ऐसे हिलाता था, जैसे मंत्र बोलता हो। देवू के इस चमत्कार के विषय में लवजी ने नरसंग को बताया।

23

नरसंग ने लड़कों से कहा, "चलो, खायके आयेब, देखें क होय तो । ई तो लंबा चले ।" देवू और लवजी अनिच्छा से चल पड़े । थोड़ी देर पहले वे दौड़े थे अतः थके-थके से चल रहे थे । "इन लड़कों के भी तकरार देखे मां मजा आवत है ।" कहते हुए नरसंग भीमा और लाला की पत्नियों में चल रहे गाली-गलौच पर सोचता हुआ आगे निकल गया । मुहल्ले से हेती को जाते देखा, "कहाँ जात हो बहनी ?" "हेती शरमा गयी । वापस चलौ । मुखी के घर वालेन कै गाली सुनके कान के कीड़ा झड़ जाये ।" हेती बिना कुछ बोले ही वापस मुड़ गयी । और लड़कियों जो फुरसत में थीं वे चली गयीं । खेत से वापस आ रहे युवक—और प्रौढ़ अपनी-अपनी भूख भूलकर वहीं खड़े हो गये थे । कुल दरवाजे के पास और कुछ बीस-पच्चीस कदम की दूरी पर ।

"ई देखा ई, कस चिल्लात है रांड ।" भीमा की पत्नी पघी ने पास में खड़े हुए आदमी से फरियाद की ।

"रांड तू है और तुहार महतारी है ।" लाला की पत्नी जीवत ने बिना किसी संकोच के कहा ।

"हमरी महतारी तक गई छिनाल । पूरी की पूरी खाय गयी ।"

"इधर आ इधर । पटक के पेट फाड़ डाली । केतनेन कै पाप भरे हैं ।"

"अरे रांड, तू तो लहँगा मा केतनेन का छिपाये है । ई के नाहीं जानत ?"

"हम तो जस हन तस । मुला तू तो दिन—दुपहरेन सिवला के लिहे पड़ी रहिस ।"

अब भीमा की पत्नी पघी दाँत किटकिटाते हुए आगे बढ़ी । जेठा की पत्नी जोईती ने उसे पकड़ लिया ।

"तुमहू, आग लागे, ऊके यस होय जाबो ?"

"आवे दे ऊका इधर, ऊ कै पैदा करै वाली क आज न याद आय जाये तो कहेव कि कहा रहा"—लाला की पत्नी जीवत एक कदम आगे बढ़ती हुई बोली ।

"जीके भतार हिजड़ा अके के गेके वाला कोन है ?" भीमा की पत्नी पघी कुछ ठंडी पड़ती हुई बोली ।

"भतार तो तुहार मजबूत है । बाप का पटकत है और मेहरारू के पासे घुटना छिलावत है । घाँघरी ऊपर करके ।"

मुखिया की पत्नी के रोब से पघी देखते ही देखते एकदम नजदीक पहुँच गयी और जीवत कुछ करे उसके पहले ही इतनी जोर से धक्का मारा कि वह दीवार से जाकर टकराई । जीवत अश्लील गालियाँ देने लगी । उसने जीवत को उठाकर नीचे पटक दिया । छाती पर दो-तीन घूँसे पड़ते ही जीवत को ऐसा क्रोध आया कि उसने पघी के दाँत लगा दिए । थोड़ी देर दोनों ऊपर-नीचे होती रहीं । मौका मिलते ही पघी ऊपर आकर जोर से देवरानी पर गिरी । उसमें जैसे कोई राक्षसी शक्ति आ

गयी थी । जीवत के पाँव फैल गये थे । अन्य स्त्रियाँ ज्यों–ज्यों उसे खींचतीं त्यों–त्यों पघी दुगनी शक्ति से उसे दबाये डाल रही थी ।

"अरे पकड़ो–" एक देखने वाली चीख पड़ी। खेत की ओर से दौड़ते आ रहे जेठा ने यदि भाभी के अर्धनग्न शरीर की मर्यादा की जरा भी चिन्ता की होती तो आज लाला विधुर हो गया होता । यह बात जो वहाँ उपस्थित थे या तो अनुपस्थित सभी कह रहे थे ।

दोनों के मुँह लाल–लाल हो गये थे । स्तन का रक्त जम गया था । पेट पर काले–काले दाग पड़ गये थे । दोनों रो रही थीं । बड़ी अपनी इज्जत और छोटी मार की वजह से । भीमा के घर आते ही "तुमवां पानी नाहीं है" कहकर बड़ी तो शान्त हो गयी किन्तु लाला अभी सारंग की चौक में घूम रहा होगा ऐसा सोचकर छोटी उसके नाम को रो रही थी । वह आकर चौखट पर अपना सिर पटकने लगी । जेठा उसे उठाकर ले गया । उसकी पत्नी जोईती भी पीछे–पीछे आ पहुँची । "जान डेहरी के पीछे बोतल रखी है, एक पियाला भर लाव ।" जोईती जल्दी से शराब लेने चली गयी । तब तक भाभी को कहाँ–कहाँ चोट लगी है जेठा ने देख लिया था। दारू मलने का काम पत्नी को सौंपकर जेठा ने खेत से आ पहुँची उसकी लड़की को चुप करना शुरू कर दिया । भीमा आया तो उसने उसे भी भगा दिया । खरी–खोटी सुनाकर । भीमा, जैसे पाँव टूट गये हों, चलते–चलते खेत की ओर चला गया ।

जेठा चुपचाप अपने घर में गया । गत् वर्ष वह जब अंबाजी गया था तो वहाँ से बेंत की एक सोंटी लाया था । उसे उसने ढूँढकर निकाला । एकदम स्वाभाविक ढंग से चलता हुआ भीमा के घर गया और कोठरी की ओर देखते हुए पूछा–

"भाभी, बहुत दिन होय गवा है तुम मैके नाहीं गई हो, चलो दुई दिन की तोंई छोड़ आयी ।"

"हमरे घर से तुम बाहर निकारल हौ ?"

"तुम्हार घर ! साथे लाई रहा ?"

"तू अपनी बहिन का एकौ दिहिस रहा ?"

"हम ऊका सिच्छा तो दी है कि कुआँ–ताल मां कूद परेव मुला बड़ी भाभी कस न बलेव ।"

इस पर पघी ने कोई गाली दी ।

जेठा कुछ नहीं बोला और न ही उत्तेजित हुआ । उसने अपने हाथ ऊपर उठाया और सटाक से बेंत की सोंटी पघी के कंधों को छीलती हुई नीचे आ गयी । वह दो कदम पीछे खिसक गयी । तांबे का गोल लोटा उठाकर फेंका । सिर पर पगड़ी न होती तो जेठा की खोपड़ी आज फट जाती । फिर तो उसका धैर्य खो गया । वह आगे बढ़ा । पघी जेठा की दोनों टाँगों के बीच हाथ डालने गयी । जल्दी से वह पीछे खिसक गया नहीं तो आज उसकी जान भाभी की मुट्ठी में थी । लेकिन तब तक तो उसने दो–तीन सोंटी और जमा दी और भाभी की चोटी पकड़कर खींचता

हुआ घर के बाहर लाया। "अरे मार डारिस रे।" की चीख चारों ओर फैल गयी। लोग-बाग जब तक जेठा के हाथ से बेंत छीनें तब तक भाभी के शरीर में लाल-काली रेखाएँ उभर आयी थीं। द्वार से उठकर घर में जाते-जाते वह जहर पी लेने का धमकी देती गयी।

"तुमका पीये के होय तो हम लाय देई। मुला हम डराइत है कि तू भैया के लड़का के पियाय देगी।"

पचीभाभी की जुबान बन्द हो गयी थी। किवाड़ के साथ तीन-चार बार सिर टकराकर घंटो तक वहीं पड़ी रही। फिर उठकर, कपड़ा बदलकर, पोटली बाँधकर "तरा सत्यानाश हो।" कहती हुई वह मायके की ओर चल पड़ी।

लाला सारंग से आया तो उसके साथ पुलिस थी। किन्तु वह चकरोड से गाँव की ओर आने की बजाय खेत का ओर चला गया। रास्ते में ही उसे झगड़े का समाचार मिल गया था किन्तु उसे उसमें कोई खास रुचि नही थी। इस समय वह किसी बड़े काम में व्यस्त था। अतः "ई तो चला करत है" कहते हुए वह पुलिस वाले से दूसरी बात करने लगा। भीमा ने दो दिन पहले सरकारी पेड़ काटा था। लाला को वही बात याद थी। कल वह जब शाम को चाँदी की कटोरी माँगने गया तो पची ने सीधे जवाब भी नहीं दिया था। उसे तो चौधराइन होने का गुरूर था। फिर तो वह धमला के साथ सारंग चला गया था। दोनों ने अपनी बुद्धि और खुशामद से दो-तीन घंटे में ही कटे हुए वृक्ष की जाँच करने के लिए थानेदार को मना लिया था। और पुलिस को लेकर सोमपुरा आ गया था। धमला वही रुक गया था। सामान खरीदने के लिए। उधार सामान दे सके ऐसे किसी व्यापारी की खोज में वह सारंग के पूरे चौक बाजार में घूमा, अंत में तुरिया-कचरिया उसे उधार देने के लिए तैयार हो गये। धमला ने पचास-साठ आदमियों के लिए सामान खरीदा और भाड़े के इक्के पर सामान रखकर, खुश होता हुआ घर आ पहुँचा।

इक्के में भरे हुए सामान को देखकर वेली के मन में धमला की खरीद-शक्ति के प्रति सम्मान की भावना पैदा हुई। उसे लगा कि सब लोग उसे धमला कहते हैं किन्तु वास्तव में उसका मूल नाम धर्मराज रहा होगा।

जेणी बहू सामान उतरवाने आयी। अब वह धमला से पर्दा नहीं करती थी। वह धमला के कान के पास मुँह ले जाकर कुछ बोली। यह देखकर वेली सोच में पड़ गयी। धमला ने जोर से कहा-

"तुम्हू भौजी, सवेरे सवेरे अतनी बड़ी लड़ाई अकेले देख आयी और अपनी नई देवरानी के कुछ नहीं बतायेब?"

"का धमा भाई, का बात करत हौ? नई बहू सोचे कि ई सब ऐसे लड़त हैं। डेराय के कहूं मैके चली जाये तो ."

धमला को जेणी के शब्द जहर की तरह छू गए। यह रांड मेरी वेली को चली जाने की बात बता रही है यह सोचकर वह वेली के पास खड़े होकर बोला-

"अब तो सोमपुरा से हम जाई तो जाई ई न आये। तुम अब ई के अस काम बताऊ जौने ईहौ के गाली-वाली देय आ जाय। कौनो लिपटा-लिपटी होय तो..."

"लिपटा-लिपटी तो तुम...."

"धत् तेरी की, शरमाती नाहीं। ले चल आज तो बढ़िया चाय बना। तुहरे घरे दूध फाट न गया होय तो कटोरी भर लाव और मौसी के बुलाय लाव।"

जेणी दूध लेने चली गयी तो वेली बोली–

"दूध तो हम गरम करके रखे हैं।"

"तो पी जा न, ऊ अपने घर में से दूधौ न लावे और हम चा पिलाई ?"

वेली समझ गयी कि आदमी कच्ची मिट्टी का नहीं है। चाय पीते-पीते पधी और जीवत के झगडे की बात चली। पानी भरने जा रही जीवत को धमला ने बुलाया। थोड़े से आग्रह के बाद एक घड़ा पानी भरके जीवत ने आने का वादा किया।

'साथे जेठानी का बुलाय लाउस।"

'वे तो मैके गयीं।"

"आराम करे।"

"नाहीं, फ़ौज लावे। उनके तो इहौ मुखिया और उहौं मुखिया ?"

"ससुरी कवौ हमरे हाथ मां नाहीं आयी नाहीं तो......"

धमला अटक गया। वेली के सामने यह क्या बोल गया ? मेरी खराब छाप पड़ेगी तो ऊबकर चली जायेगी। अब तो मुझे राजाराम की तरह एक ही पत्नी वाली बात ध्यान रखनी चाहिए। बड़ी हों वे सब माताएँ, छोटी हों सब लड़कियाँ। और बराबर की हों वे ? किसी ने पूछा था ..वह हँस पड़ा। "क्यों अकेले हँस रहे हैं ?"

"अपने भाग पर। सारा गाँव कहत रहा कि धमा वांढा रह जाए। पर लावा तो हम कस औरत लाया ? तू ही बता, आँगन कै शोभा बढ़ाने अस औरत नाहीं लाया ?"

वेली हँस पड़ी। उसके सप्रमाण दाँतों का उजियाला देख धमा हरखाया।

"दांत पर तुहै सोने के खुमियाँ जडवाने क हैं ?"

वेली समझ नहीं पाई, धमा ने बताया कि ऊपर के चार दाँतों पर छोटे बरमे से बारीक छेद करके वहाँ सोने की खुमिया किस तरह जड़ी जाती है और उसके बाद रूपहले दाँत कैसे सुनहले लगते हैं।

"सारी जिन्दगी ?"

"नाहीं। बाद मां तो सोने के खमियाँ उखड़कर निकल जात हैं और दाँत काले होय जात हैं। मगर खट्टा-बट्टा न खाएँ तो चार बरस तक तो—"

"चार बरस के लिए सारी जिन्दगी के दाँत बिगाड़ दें ?"

"अरे पगली। चारे बरस कै तो सारी कीमत है।"

"आप जिसकी बात करते हैं वे चार बरस तो आपके और मेरे भी बीत चुके हैं।"

"हमार भले बीत होय पर अस न कहो कि तुहरो बीत गए हैं। हमार करेजा फाट जाये।"

"यों देखा जाए तो आप भी–"

"भीतर के कमरे मां चल, केहूके नजर लाग जाए।"

"आपने उन्हें बुलाया नहीं था?"

"देर भई, काहे नाहीं आई?"

जीवत अब तक नहीं आयी थी। घमला उसके घर की ओर गया। लाला का दरवाजा अन्दर से बन्द था। भीमा के दरवाजे पर करसन बैठा था और पधी दालान में बैठी-बैठी सभी बातें बता रही थी। उसे कैसी-कैसी गालियाँ सुनाई गईं, ताने मारे गए, सारी बातें कुछ उदाहरणों के साथ बताईं। वह एक ही बात बारंबार कह रही थी–"तुम आज दौड़ के आय के हम को वापस न लायेव होते तो हम कुवां-ताल मां गिर जाइत फिर हमरे गेदहरा कै का होत?"

घमला के आने से पधी के क्रमबद्ध रुदन में विक्षेप आया। करसन के सामने घमला अपनी नयी पत्नी की बात कर रहा था तब तक पधी बोली–"भाड़ मां जाय सब, मुँहो मीठ नाहीं करायेव, बनियनी लाए कि बामनी उ का, सवाद नाहीं मिला।" घमला झट से खड़ा हो गया और आधा सेर गुड़ ले आया। फिर बुढऊ के पाँव पड़कर आशीर्वाद लिया। उसे याद आया कि कल पिथू भगत का आशीर्वाद लेने गया था। "इस नीच के पाँव कहाँ छू लिए" पछताते हुए वह घर गया। किन्तु दरवाजे पर खड़ी वेली को देखकर उसकी भी खुशी वापस लौट आई।

24

भीमा के हाथ से लम्बरदारी छिन गयी थी। बिना पूर्व-अनुमति के वृक्ष काटने का अपराध प्रमाणित हो चुका था। लाला के साथ आया हुआ सिपाही अकेले ही जाकर भीमा से पूछ आया था। भीमा अपनी पत्नी की चिन्ता में था। जेठा ने उसे गली में खींचकर सबके सामने कैसे बेंत से पीटा था यह सारी बात रणछोड़ ने बता दी थी। फिर करसन बुढऊ पतोहू को वापस बुलाने गये थे। वह अकेला बैठा था और ऊबा हुआ था अतः बिना किसी की परवाह किये उसने सिपाही से साफ-साफ कह दिया था –"वह पड़ी हैं लकड़ियाँ, तुम्हें ले जानी हों तो लाओ तुम्हारे सिर पर रखा दूँ।"

लाला ने मुखिया बनने का आवेदन दरबार में भेज दिया था।

अब भीमा को चिन्ता हुई। वह माना से मिला। माना ने विभिन्न रास्ते बताये। उनमें तीन मुख्य थे। दीवान के दामाद से मिलकर काम निकलवा लो। इस में पचास रुपये खर्च हो सकते हैं। रमण मास्टर और हीरूभाई से मिलकर काम

निकलवा लो। उसमें कोई खर्च नहीं था किन्तु रमण पिथू भगत से पूछे बिना कुछ करेगा नहीं। और हीरूभाई तो कुछ दिन पहले ही हमें पहचान गये हैं। तीसरा रास्ता था – करसन बुढऊ किसी न किसी तरह दरबार में जायें। वहाँ राजा के पाँव पर सिर रगड़ें, रिरियायें और अपनी पचीस-तीस वर्ष की राज-भक्ति की दुहाई दें। राजा खुश तो समझ लो काम बन गया। भीमा को तीसरी राह अधिक अनुकूल लगी। घर में जो भी धन था सब पत्नी के हाथ में था। जब तक वह जेठा की नाक नहीं काट लेता तब तक वह उससे बोलेगा भी नहीं। रमण मास्टर और हीरूभाई तो उसका बनता काम भी बिगाड़ सकते हैं यह दहशत उसके मन में घर कर गयी थी। माना के साथ जाकर उसने बुढऊ से बातें की। बुढऊ जाकर थानेदार से मिले।

'तुम मुखिया होते तो मैं साथ में आकर दरबार में बात करता। यह तो तुम कायदे के काम को बेकायदे करवाना चाहते हो। अब तो भविष्य में लाला कोई गलती करे तो शिकायत लेकर आना, अगर वह तुम्हारा लड़का नहीं हो तो।" थानेदार की अंतिम बात बन्दूक की गोली की तरह करसन के सीने को बींध गयी। बुढऊ शाम को दीवान के घर गये। दीवान थके हुए थे। उन्होंने करसन की बात सुनी भी नहीं।

"अब लम्बरदारी भूल जाओ। तुम्हारे घर में लम्बरदारी नहीं टिकेगी।" दीवान ने पीठ घुमा ली थी।

"वैसे तो साहब ललवो हमरे लड़का आय।"

"तो फिर ?"

"हम भिमवा के साथे रहित है।"

"तो अब लाला के साथ में रहो।"

करसन को असफलता का दुख न था। संयोग बैठे और लाला कहे तो वे उसके साथ रहने चले जायेंगे। किन्तु पर्वी – वे चिन्तित हो उठे। अब और कितने साल हैं ? जैसे एक नयी जिन्दगी जीनी हो, वह जिम्मेदारी महसूस करते हुए सोमपुरा की राह पर चल पड़े। रास्ते में जेठा मिला। उसने आँख उठाकर देखा भी नहीं। यह छोटा था तो कितना प्यारा था ? उसकी शादी की तो सारे गाँव को गुड़-चावल खिलाया था। आज उसने सामने भी नही देखा। चल दूँ सब कुछ छोड़कर ? कहाँ ? क्या कोई भी मुझे सम्मान से नहीं पुकारेगा ?

बुढ्ढे ने भीमा से बात तक न की। नाती रणछोड़ को पास में बैठाकर सीख देने लगे कि पढ़-लिखकर होशियार बने और बड़ा होकर गाँव का मुखिया बने। रणछोड़ एक-दो वर्ष बड़ा होने के बावजूद देवू के साथ ही पढ़ता था और शिक्षक की मरमर्सी और मुखिया का लड़का होने की वजह से हर साल पास हो जाता था। जब वह पाँच साल का था तो शरीर से बहुत लुंज था अत उसे थोड़ी-थोड़ी दारू पिलायी जाती थी। इसी वजह से आज तेरह वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते वह सोमपुरा के किसी भी पक्के शराबी को मात कर सकता था। बुढऊ की बात

सुनकर उसे लगा कि वह अवश्य ही मुखिया बनेगा। लाला काका के तो कोई लड़का है ही नहीं। वह खुश हुआ। खेत के बीच से घर जाते हुए उसने एक जन की मेड़ पर एक साल पहले रोपे हुए आम के पौधे को एक ही झटके में उखाड़ फेंका। फिर दूसरी मेड़ से दो साल के नीम को तोड़ डाला। इतना करने के बाद उसे विश्वास हो गया कि वह अवश्य ही मुखिया बन जायेगा। घर पहुँच-कर उसने यह खुशी अपनी माँ को बतायी। पधी ने फटकार कर कहा—"तेरे बाप के सिर।"

पधी ने ताबड़-तोड़ कई संदेशे मायके को भेजे। अफवाहें भी उड़ती हुई वहाँ पहुँची किन्तु उसकी सुद्ध लेने या लाला और जेठा को फटकारने टींबा से कोई नहीं आया। पधी मन ही मन कुढ़ती रही। अंत में वह चुप बैठ गयी और लाला-जेठा के घर खेलने के लिए जाते अपने लड़के को गालियाँ देनी बन्द कर दीं।

लाला ने नये-नये वस्त्र सिलवाये। भीमा से भी चार-अंगुल अधिक बड़ी छड़ी हाथ में रखने लगा और खेती के प्रति लापरवाही बरतने लगा। जीवत की जिम्मेदारी बढ़ गयी थी। एक दिन जेठा ने लाला को सुना भी दिया था – ऐसा करो भाई साहब, कि तुम्हें गाँव में ही रहना पड़ता है तो तुम गोबर-कंडा, चौका बर्तन कर लिया करो, भाभी को कुछ ही दिनो में खेत का काम आ जायेगा। दूसरा मुझसे जो भी बनेगा करूँगा।

लाला काम करने लग गया। दूसरे ही दिन उसकी मुखियागीरी की कसौटी हो गयी।

जेठा शराब पीकर सो रहा था कि कुछ लठैतों ने आकर उसे घेर लिया। खाट का पौताना ढीला होने के कारण उसके पाँव पर पड़ने वाली लाठी की उसे चोट नहीं आई। सिर पर किया वार बीच में हाथ के आ जाने से हाथ में लगा। जेठा ने बैठना चाहा कि कंधे पर पड़ी हुई लाठी गले के नीचे, पसली को तोड़ती चली गयी। पीठ पर चोट खाकर भी वह सभला और झट से कूदकर दूर खड़ा हो गया। "दौड़ो दौड़ो" चिल्लाता हुआ वह लाठी तक पहुँच गया—"आऊ सारे अब, जतने जन होव आय जाव।" फिर उसने मदद के लिए गुहार मचाई।

"अरे आइत है रे।" नरसंग की कड़कती हुई आवाज सुनाई दी। "अरे दौड़ घेमरिया।"

शरीर चकनाचूर हो जाने के बावजूद रास्ते का अंदाज लगाकर जेठा दौड़ने लगा, लेकिन उसने अनुभव किया कि उसके हंसली टूट गई है।

"नरसंग काका हो ओहह···"

नरसग जब तक घेमर के पास पहुँचा तब तक दो आदमी घेमर को गिराकर चले गये थे। "रहे देव, अब ससुरे न पकड़ मां आइ हैं।" घेमर पड़े-पड़े ही बोला। नरसंग पीछे दौड़ता ही गया। उसने ताककर ऐसी लाठी मारी कि उसमें

से दो पकड़ में आ गये । दोनों के हाथों को उनके ही साफे से बाँधते हुए नरसंग ने घेमर से कहा -

'ले पकड़, लै जा इनका ।"

"कहाँ, मामा के घरे ?"

"हमरे खेते मां ।" फिर उन लोगों से पूछा—

"तुम कतने जन रहेव ?"

"चार ।"

"तुम तो दुई हौ । एक और एक दुई ।" घेमर ने दो बार गिनकर बताया ।

"ई देखो । चिरई के जीव जाय लड़के के खिलौना ।"

"लेव तब, तुम इनका ले जाव. हम उन बाकी दूनौ का पकड़ के लाइत है ।"

"चल अब चुपचाप, तूका गाँव मां जायके बहादुरी बघारे के होये । तुहैं जौन कहै के होय काल कहेव, मुला इन दूनौ जने के जीव बचावै के होय तो चुप रहौ ।"

"हम हीं मार डारी इनका, कहौ तो ।"

"मनई के बाँध लिहे के बाद मारा नाहीं जात ।"

एक हाथ में माला और दूसरे में लाठी लिए हुए पिथू भगत चले आ रहे थे ।

"कहाँ चले पिथू बाबा ?"

"तुम्हरे पास आवत रहिन ।"

"लाठी तो ठीक मुला माला के का काम रहा ?"

"माला ?" भगत ने देखा तब उनको पता चला कि उनके हाथ में माला है । नरसंग को हँसी आ गयी । बुढऊ की आदत पड़ गयी है । टट्टी जाते हैं तो बस उतनी ही देर वे माला अलग रखते हैं । नहीं तो वह हाथ में ही रहती है ।

उन लोगों ने बड़ी देर तक अपना नाम नहीं बताया ।

"चल घेमर गाँव वालेन के सौंप दें, भले फिर इनका टुकड़ा करैं या सिर के बल लटकावैं । हरामी लोगन का बचावा तमौ मूँग का मिर्च बतावत हैं ।"

"नरसंगजी जाय देव, तुम्हार नेकी कभौ न भूलब ?"

"नरसंग काका, ई तो मगन अमथा के छोट भाय, सार नानिया । महाभोज मां ई हमका सफेद बीड़ी पियाइस रहा । कलेण्डर ।"

पिथू भगत ने अलाव में लकड़ी की छाल डाली । आग जली । दोनों पहचान में आ गये । मगन अमथा का छोटा भाई नानिया रोने लगा और पत्नी का भतीजा चेलिया आसमान की ओर नजर किए बैठा रहा । नरसंग ने दोनों के हाथ खोल दिये ।

तब तक गाँव की ओर से कुछ लोगों के आने की आवाज आयी । पिथू भगत ने नरसंग से कहकर उन दोनों को छिपा दिया । उन्हें डर था कि ये दोनों अगर गाँव वालों के हाथ में आ जायेंगे तो वे इन्हें मार ही डालेंगे ।

लाला, छना, जीवन, धमला और अन्य कुछ लोग आ पहुँचे। धमला के हाथ में खाली म्यान ही थी। लाला चकरोड से ही चिल्लाया।

"नरसंग।"

"आओ-आओ।" नरसंग के बदले घेमर बोला। उसका हाथ दबाकर नरसंग ने उसे चुप रहने का संकेत किया।

"जेठिया कहत रहा कि तुम आगे से पहुँच गयौ रहा। केहू हाथ मां अबा? लाग तो नाहीं?"

"ई घेमर के थोड़ा सा लाग है। बच गवा।"

"हमार खोपड़ी मजबूत है..." घेमर जीवन का हाथ पकड़कर अपने सिर पर हाथ फिराने लगा।

"जेठा को कतना लाग है?"

"हाथ, पाँव सूज गवा है। मगर गटई के हड्डी टूट गै रही तो त्रुढऊ बैठाय दिहिन है। ससुरे एकौ हाथ मा नाही आयें।"

जीवन कसमसाकर रह गया। घेमर ने मार खाकर भी बहादुरी दिखाई थी और हमलावरों को पीछे हटा दिया था।

भगत ने घेमर के सिर पर पत्तियाँ पीसकर बाँध दी थीं। बोले—

'जाओ, सब जनु घरे जाय के सोय जाव।"

सुबह छना ने भीमा के पिछवाडे दो आदमियो के पाँवो के निशान देखे। वे निशान टीबा की ओर गए थे।

पिथू भगत नानिया और चेलिया को टीबा तक छोड़ने गये थे। मगन अमथा के घर पाँच आदमियों को इकट्ठा करके उन्होने समझाया था। भगत की बात पर पघी का भाई हँस पड़ा था, फिर बोला था—"जेठिया सार जिन्दा रहिगा। हमार लाठी..."

"बैठ-बैठ अब, लाठी वाले! हमका ढकेल के तू कहाँ लुकाय गइस रहा? ई तो हम ई भगवान के आदमी क मिल गइन नाहीं तो तू हमका वापस लौवेत? पाँव पड़ो इनके जो तुम्हरे पास आये हैं। काहे चेलिया, बोलत काहे नाहीं?"

"हमार तो ई काका अहीं। हमसे कुछ बोला जाई? हमार बाप साला गदता रहा जौन हमका कह दिहिस : जा चेलिया। उनका कहाँ पता है कि चेलिया मर गवा कि जिन्दा है?"

मगन ने चेलिया को शांत करके घर भेज दिया। नानिया दूध-भात खाकर सो गया। अन्य जो लोग बैठे थे वे भगत को गाँव की सींव तक छोड़ने आये। मगन ने भगत के हाथ में सौ रुपये देते हुए कहा—'जेठा क समझाय दिहौ कि रपट न करे। ई दवाई के खर्चा।"

भगत जेठा का हाल पूछने आये हैं वह जानकर सभी को आश्चर्य हुआ। लाला की पत्नी तो खुशी से फूली नहीं समाती थी—"पिथू बाबा आये, अब तो जेठा भाई दुई दिन मां अच्छे होय जायँगे।"

लाला ने बहुत आग्रह किया परंतु भगत ने टींबा वालों का नाम नहीं बताया। जेठा सौ रुपये लेने के लिए तैयार न था। भगत ने कहा "ले लेव, सावन महीना मां कुवाँरी कन्या क खवाय दिहो।"

पैसा देकर भगत वापस जा रहे थे कि जेठा ने आवाज दी "पिथू बाबा!"

"का भवा रे?" लाला घबराया।

"ला, पानी ले आव।" जेठा ने पत्नी से कहा।

बुढऊ की समझ में बात आ गयी।

"लाऊ हमका अँजुरी मां पानी देव पिथू बाबा। आज से शराब छोड़ देव।"

"अरे अबही तो तुमका अतना लाग है। देही पर मले क होई।"

"मले क होये तो मले मुला मुँह मां एक बूँद न डारब। आज हम पिये बिना सोयत होईत तो कौने ससुरे की हिम्मत रही कि..." कहते हुए वह उठ बैठा।

उसे पानी का सौगंध दिलाकर भगत ने लिटा दिया। आशीर्वाद दिया। भीमा और करसन अपने ओसारे में बैठे-बैठे दुखी चेहरे से, चिलम पीते रहे।

"नालायको, ऊके हाल तो पूछ आऊ।" कहते हुए भगत अपनी राह चले गये।

25

हीरूभाई रमण को बुलाने आये थे। टावा वालो को डाँट-फटकार पड़नी ही चाहिए। ऐसे ही लाठी लेकर निकल पड़े, यह कोई अच्छी बात है?

"किसे फटकारेंगे?" रमण ने पूछा।

हीरूभाई ने सुने हुए नाम बता दिये।

"आप मानते हैं कि वे गुनाह कबूल करेंगे?"

"तुम्हारे ददिया ससुर सब जानते हैं। उन्हे साथ में ले जायेंगे।"

"आपको जाना हो तो जाओ अकेले। मै अभी से बता देता हूँ कि वे भी साथ नहीं आयेंगे।"

"तुम किसी अच्छे काम मे हमारा साथ दो यह..."

"इसमें काम क्या है? आप तो सलाह देने जा रहे हैं और वह भी बिनमाँगी। मेरी मानो तो यह सेवा-वेवा सब छोड़कर घर का काम करो। लड़के बड़े होंगे तो तुम्हारे नाम को रोयेंगे।"

हीरूभाई अब तक ऐसे कड़वे शब्दों के अभ्यस्त हो गये थे। काढ़ा पीने के बाद उन्होंने बात का विषय बदला। देशी राज्यों के विलीनीकरण की चर्चा हुई। काश्मीर का प्रश्न युनो में ले जाने वाली बात रमण को पसन्द नहीं आयी। हीरूभाई के अनुमान के अनुसार गुड़-शक्कर के भाव अभी ठीक नहीं हुए थे। रमण ने कहा बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं।

"तो तुम इस वर्ष तम्बाकू का धंधा छोड़कर गुड़-शक्कर के धंधे में पड़ो। इसी में बरकत है।"

"पड़ भी सकता हूँ और वह भी तम्बाकू का धंधा छोड़े बिना ही। तम्बाकू के गोदाम के लिए तो मैंने नींव भी खुदवा दी है। चलो दिखाऊँ ?"

हीरूभाई ने बिना किसी रुचि के तम्बाकू के भावी गोदाम की जगह देखी।

"कमा कमाकर क्या करोगे ?"

"सुखी होऊँगा।"

"मैं कमाये बिना ही सुखी हूँ।"

"वह तो तुम्हें ऐसा लगता है। लोगों को भी लगना चाहिए न ?"

"तुम बी. ए. हुए तो मैंने तुमसे बड़ी उम्मीद की थी।"

"अभी भी कर सकते हो, कभी काम आऊँगा।"

"बदरी में स्कूल खोलना है, पैसा दोगे ?"

"पहले कमाने तो दो। फिर तुम्हारे उपकार का भी बदला चुकाऊँगा।" कहते हुए रमण ने संक्षेप में बात खत्म की। हीरूभाई चले गये। रमण भी खाना खाकर सारंग चला गया।

एक दिन अचानक उसे अहमदाबाद की याद आ गयी। फिर बालूभाई भी याद आये। इस दीपावली पर जब हेती चली जायें तो चार-पाँच दिन के लिए अहमदाबाद हो आऊँगा। बालूभाई के घर पर रुकूँगा। गत वर्ष जब वह यहाँ आये थे तो कुछ दिनों उनकी आवभगत की थी। उन्हें भी एक मौका दूँ।

दीवाली की छुट्टियों के पूर्व ही रमण ने बालूभाई को पत्र लिखकर अपने आने के बारे में सूचना दी। उसके बाद मिडल स्कूल के विद्यार्थियों के प्रवास की योजना हेड मास्टर ने बताई। रमण उन बच्चों के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। घर का एक पैसा खर्च होने वाला नहीं है। साथ में हेती का टिकट भी ले लेंगे तो कौन पूछने वाला है ?

रमण का छोटा भाई गलबा हेती को बुला लाया उसके चौथे दिन ही प्रवास पर जाने की योजना थी। रमण ने हेती से बात की। उसने इतना ही कहा—

"अपनी माँ से पूछा ?" रमण मुख्य बात भूल गया था। सुबह मां से पूछा तो उसने उल्टा प्रश्न कर दिया—

"उसने आवे की तांई कहा है ?" यह प्रश्न अनपेक्षित था।

"वह ऐसी बात कहती होगी माँ ? तुम भी..."

"ऊ न कहिस होय तो साथ लै जाय के बात कहाँ पैदा होत है ?"

"मैंने ही सोचा कि जाऊँ तो लेता जाऊँ।"

"झूठ नाहीं बोला जात भैया। बहू न बोली होय तो उस बात सुझावो न करे। पराई घर से आयी है अबहिन से तुमका घुमावे लाग ?"

हेती पानी का घड़ा लेके आयी तो बात अटक गयी। जब घड़ा खाली करके वह चली गयी तो रमण ने कहा—

"तुम पिताजी से तो बात करना।"

"तुम हीं पूछ लिहौ।"

"मुझे शर्म नहीं आयेगी ?"

"शरम आवत तो का नाहीं रहा ? बहू के गरमी न लागै यही की-तौंश पत्थर जैसे आपन कड़ी फड़वाय के दरवाज लगवाया। कह दिओ सारी जिन्दगी हवा खात रहैं।"

"उसके भाग्य में हो तो खायें भी।"

"हमार तो फूट रहा..."

रमण गुस्से में उठकर गोदाम की ओर चला गया। रास्ते में बड़बड़ाता रहा कि अब तो तुम कहो तब भी नहीं ले जाऊँगा उसे अहमदाबाद।

दोपहर में मूलजी खाना खाने आया तो वाली ने तुरंत पतोहू की बात चलाई।

"ई कौनो अच्छी बात है, मुँह झौंसी। आदमी तो बाहर जाये। ऊके पीछे पड़ा जात है।"

"तू का बोलत है, हमका समझ नाहीं आवत।"

"पतोहू अहमदाबाद जाये।"

"तो जाय।"

"हाँ, जाय। फिर पीछे सारा गांव का कहे तुमका मालुम है ? अबहीं तीसरी बार आयी है वहू मां·"

"तू धीरे बोल। अन्दर बैठी-बैठी सुनत न होये ?"

"तो हम कहाँ ऊसे डेराइत है ?"

"तुमका डेरायक के कहत है ? मुला तू फालतू न बोल। अबहीं तो पिथू भगत जिन्दा हैं। सुनि हैं तो उनके आत्मा का कहे ?"

"काहे, सबके आत्मा है। पतोहू हमका पूछे बिना अहमदाबाद जाय ऊमा हमार अपमान नाहीं न ?"

हेती ने सब कुछ सुन लिया था। उसने सोचा था अब वह नहीं जायेगी। उसने रमण को मना कर दिया था। रमण ने भी बिना कुछ बोले चाले उसकी बात मान ली थी।

रमण बिल्कुल चुप था। हेती भी अपनी आदत के मुताबिक ननदों के साथ हँसकर बात करना भूल गयी थी। मूलजी के घर सास-पतोहू में बोला चाली हो गयी है यह सुनकर पास-पड़ोस में किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। सब वाली की आदत जानती थीं। पतोहू ने वाली को क्या जवाब दिया होगा इस बारे में मुहल्ले की स्त्रियों ने अपनी-अपनी धारणाओं के अनुसार अनुमोदन लगा दिया।

दूसरी ओर वाली अब हेती को भेजने के प्रयत्न में थी। हेती मना कर रही

थी । रमण कहता था, मुझे उसे लेकर जाना ही नहीं है । किन्तु वाली ने तय कर लिया था कि वह बहू को भेजकर ही रहेगी ।

वाली अब सोमपुरा वालों की प्रसंशा करने लगी । हेती तो अब रानी थी । सब ज्यों-ज्यों आग्रह करते त्यों-त्यों वह मना कर रही थी । "भाड़ मां जाय, मन होय तो जाई न ।" ननद की समझ में कुछ नहीं आ रहा था । "लोग दूसरे आदमी के साथ नाहीं जाते ? तुम तो·· चलो अब हठ किए बिना तैयार होय जाव । गलबा गाँव-बाहर तक छोड़ आये ।"

"चलो भाभी ठिकाने तक नाहीं हम कलोल तक छोड़ आयी ।"

"कलोल से अहमदाबाद दूर नाहीं है ।"

"हम नाहीं देखा है । कहूँ भूल जाईं तो सड़क पर काले-काले घोड़े आंखिन पर डब्बी चढ़ाय के आइमिन भागत हैं कि अपने जस तो नीचे आय जाय । तुम भी भाभी घोड़ागाड़ी मां बैठेव, और रानी बाग घूमै जायेव ।"

स्टेशन पर हेती को देखकर रमण को हर्ष हुआ । अपनी आदत के अनुसार हेती ने आँखें नीची कर लीं । सोलह के सोलहों विद्यार्थी उसी की ओर घूर रहे थे । "हे-हे साहेब की यह मेहरारू" "जा, जा उनके बहिन अस लागत है ।" "अबे गधेड़ी के बहिन होय तो अस चिपककर खड़ी रहे ।"

"साहब इसने मुझे गधेड़ी के कहा ।"

"सही तो नहीं है न ?" रमण ने पूछा ।

सब लड़के हँस पड़े ।

"तो बस पगले जो बात गलत है उसकी क्या चिन्ता ? और प्रवास में निकलने के बाद किसी भी बात का बुरा नहीं मानते । चलो हम सब तय कर लें कि प्रवास पूरा होने के पहले कोई किसी बात का बुरा नहीं मानेगा । हँसेंगे, कूदेंगे, गायेंगे, खायेंगे और खाकर सो जायेंगे और ··

विद्यार्थियों ने कहावत पूर्ण की : "मार के भाग जायेंगे ।"

"गाड़ी के डिब्बे से कोई मत भाग जाना ।"

सब एक साथ हँस पड़े ।

"साहब, गाड़ी के आगे जाना है क्या ?"

"तो तू आगे चल ।"

सभी लड़के खुश थे । हेती भी धीरे-धीरे दुल्हन से कन्या बन गयी थी । गाड़ी आने के बाद गलबा वापस चला गया । "हमें नाहीं पढ़ाया···" उसने अपने बाप को दोष दिया । उसे अभी भी याद है कि वह स्कूल में नयी स्लेट तोड़ने भर को ही जाता था । फिर भी न पढ़ाने के लिए वह बाप का दोष निकालकर चुप हो गया ।

कालूपुर स्टेशन पर बालूभाई आये थे । हेती को देखकर वे दूर से ही छोटे बच्चों की तरह ऐसे किलक उठे कि हेती डर गयी — ऐसे दौड़ते हुए आकर भेंट तो

नहीं पहेंगे ? बीच में रमण उन्हें भेंट गया था और दोनों एकदूसरे को छोड़ नहीं रहे थे ।

विद्यार्थियों को दो-दो की पंक्ति में रखकर स्टेशन से बाहर निकाला । हेती का टिकट भी विद्यार्थियों के कंसेसन में ही आ गया था । टिकट चेकर ने पूछा और कहा "इनका कंसेसन नहीं चलेगा । यह मास्टर जैसी नहीं दिखती हैं ।" बालू भाई मदद के लिए आ पहुँचे -

"शिक्षक का स्त्रीलिंग बताओ ?"

"शिक्षिका ।"

"शिक्षिका तो चलेगा न ।"

"हाँ ।"

"तो लो यह चाय पिओ ।" कहकर उन्होंने चवन्नी पकड़ा दी । बालूभाई आगे चले । रमण ने हिसाब लगाया । कंसेसन से छ आने का फायदा हुआ था । अब दुवन्नी बची है । हाँ, लेकिन चवन्नी भी तो बालूभाई ने ही दी थी । लड़कों के दूर चले जाने पर बालूभाई बोले "साले मक्खीचूस, फर्स्ट क्लास में बैठाकर लाने योग्य भाभी को तू कंसेसन में लाया है । घर चल, माँ से डाँट दिलवाता हूँ ।"

"इन बकरों को धर्मशाला के डब्बे में बन्द करके तेरे घर आता हूँ ।"

"चलो भाभी हम दोनों चलते हैं, यह आयेगा ।"

हेती रमण को देखने लगी ।

"हाँ, हाँ जाओ । इसकी माँ इससे अच्छी हैं । नहीं तो मैं खुद तुम्हें इसके साथ नहीं भेजता ।"

घोड़ागाड़ी पर बैठकर हेती बालूभाई के बंगले पर पहुँची । माँ ने तो जैसे उसे आँखों में ही बैठा लिया । रह-रहकर उसके रूप की प्रसंशा कर रही थीं । बालूभाई ने कहा -

"बस मां, इसी हेतीभाभी की तरह सुन्दर कन्या ला दे, मैं शादी के लिए तैयार हूँ ।"

26

"ई कौन नदी आय ?" शाम को एकांत मिलते ही हेती ने मन में घुमड़ रहे प्रश्न को रमण से पूछा । रमण हँस पड़ा । पास-पड़ोस में सुनने वाला कोई न था यह उसे अच्छा लगा । एक स्नातक की पत्नी यह भी नहीं जानती कि अहमदाबाद किस नदी पर बसा हुआ है । उसने मन का भाव छिपाकर मधुरता से कहा—

"तुम तो कक्षा दो तक पढ़ी थीं ।"

"सब भूल गई, कतने साल होय गये ?"

"इस प्रकार तो आगे चलकर तुम मुझे भी भूल जाओगी ।"

"अब हैरान करे बिना ई नदी के नाम..."

"साबर–"

"नहीं।"

"क्यों नहीं ? साबरमती के अतिरिक्त और कौन-सी नदी अहमदाबाद में बह सकती थी !"

पुल से गुजरते समय हेती को यह नदी बड़ी विचित्र लगी। यह लोहे का पुल, बड़े-बड़े खूँटे। एक बार दादाजी देवू को ईसा मसीह के बारे में बता रहे थे—उनकी छाती में लगी कीलें इस नदी के पुल में दिखाई दीं। पलभर हेती बेचैन रही। क्या यह वही साबरमती है जिसमें कितनी ही बार वह नहा चुकी है ?

बालूभाई का बंगला गुजरात कॉलेज के पास था। विद्यार्थी थे स्टेशन के नजदीक धर्मशाला में। रमण चिन्तित था। लड़कों को और हेती को अलग-अलग घुमाने ले जायें ? बालूभाई की माँ रमण की परेशानी को समझ गयीं। उन्होंने बंगले के ऊपर वाले दोनो कमरों को साफ करवाकर वहीं विद्यार्थियों को बुलवा लिया। किन्तु रमण ने उन्हे लाकर बालूभाई के नये गैरेज में रोकने की योजना बनाई। बालूभाई ने अपनी तीनों बसों को बाहर निकलवा दिया और गैरेज खाली करवा दिया।

सब को गेरेज में टिकाकर, एक घंटा आराम करने के बहाने वह हेती के पास गया। पहली मंजिल की गेलरी में खड़ी–खड़ी वह राहगीरों को तथा कभी-कभार रास्ते से गुजरती मोटरगाड़ियों को देख रही थी।

"क्या कर रही हो ?"

"आँय ?" हेती चौंकी।

"क्यों चौंक पड़ी ?" रमण उसकी ओर देखकर बोला।

"हमे लाग कि इहाँ हमे के पुकार के बुलाये ? अब तक सब केहू हेती बहेन, हेती भाभी कहत रहे।"

"चलो कमरे में बैठो, अराम करें।"

"अतनी टाइम आराम ?" कहते हुए वह रमण के पीछे–पीछे अन्दर गयी। रमण पलंग पर बैठ गया। हेती खड़ी रही।

"आओ, बैठो ?"

"अंहँ।" करके, मुँह घुमाकर, दीवाल पर टँगा फोटो देखती हुई वह खड़ी रही। रमण ने दरवाजा भिड़ा दिया।

"दरवाजा बन्द न करो !"

"क्यों ?"

"जी ऊबत है।"

"बंद नहीं किया है। भिड़ाया है। तुम्हें आराम नहीं करना ? तुम थकी नहीं हो ?"

"बिल्कुल नाहीं ।"

"तो ठीक है खड़ी रहो किन्तु मुँह फेरकर खड़ी रहने की ज़रूरत नहीं है ।"

हेती मुँह फेरकर उसके सामने आ खड़ी हुई । फिर पलंग पर हाथ रखकर नीचे बैठ गयी । बहुत समझाने पर कि नीचे नहीं बैठा जाता, वह खाट के कोने में बैठी ।

दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी । हेती झट से खड़ी हो गयी । रमण ने लेटे-लेटे ही कहा—खुला है ।

बालूभाई थे । रमण धीरे से उठकर बैठ गया । हेती खिसककर दीवाल के पास पहुँच गयी । बालूभाई ने रमण के पास बैठते हुए उसके कंधे पर हाथ रखा । थोड़ी देर हेती की ओर देखते हुए उन्होंने शिकायत के स्वर में रमण से कहा—

"तुझे विद्यार्थियों के साथ नहीं बल्कि अकेली भाभी को लेकर यहाँ आना चाहिए था ।"

"ये तो हमहूँ का आपन विद्यारथी समझत हैं ।" हेती संकोच से हंसती हुई बोली ।

"वाह ! भाभी तुझसे कहीं अधिक बुद्धिमान लगती हैं, रमण ।"

"हर आदमी दूसरे की पत्नी के बारे में इसी तरह सोचता है ।" रमण ने ठंडे स्वर में कहा । "किन्तु मेरी पत्नी मुझसे अधिक बुद्धिमान हो इसमें कोई आपत्ति नहीं है ।"

"तभी तू सीधा रहेगा ।" बालूभाई ने बिना कुछ समझेबूझे कह दिया । किन्तु हेती ने उसमें से कोई दूसरा अर्थ नहीं निकाला । बालूभाई के आग्रह से वह दूसरे पलंग पर बैठ गयी थी । बालूभाई ने देखा हेती के हाथ में काले अक्षरों में कुछ गोदा हुआ है । पास में पढ़ने की अपनी इच्छा को रोककर वे खड़े होते हुए बोले—

"अभी तो मुझे मित्रों को सूचना देनी है कि तुम दोनों आये हुए हो ।"

"हम चले जायें फिर सूचना देना ।"—रमण भी खड़ा हो गया ।

"क्यों ? तुम लोग आये हो इसका लाभ औरों को भी मिलना चाहिए । भाभी लोकगीत सुनायेंगी और..."

"पहले इससे पूछ लो कि इन्हें गाना आता है कि नहीं ?"

"क्यों जब मैं तेरे गाँव आया था तब तूने नहीं बताया था कि यहाँ सभी स्त्रियों को गाना आता है ?"

"वह तो सब साथ में हों तब ।"

"तो क्या भाभी को दोएक गीत भी नहीं आते होंगे ?"

"पूछो उसीसे ।"

बालूभाई ने पूछा लेकिन हेती ने साफ-साफ कुछ नहीं कहा । वह खड़ी-खड़ी पता नहीं क्या सोचती रही । इन अनजान आदमियों के बीच...।

"क्या सोच रही हो ? बालूभाई को सीधा-सीधा जवाब दे दो ना ।"

"काहे का जवाब ? हम कहाँ गाबे वाली हन ?" हेती के चेहरे पर रोष की छाया थी । रमण ने नजर नीची करके ठंडी सांस ली । अब आगे क्या बोलें, बालूभाई की समझ में नहीं आ रहा था ।

"मुझसे भूल हो गयी भाभी, मुझे आप लोगों के रिवाज के बारे में पता नहीं था ।"

"इसमें रिवाज की क्या बात ?" रमण ने हेती की ओर अपनी पीठ घुमाते हुए उपेक्षा दिखाई । "यह व्यर्थ की जिद है । हम लोगों के स्वभाव में यह जड़ता तुम्हें बारंबार दिखाई देगी ।"

बालूभाई ने देखा हेती की आँखें गीली हो गयी थीं । वे पछताते हुए नीचे चले गये । रमण ने हेती को बाथरूम की राह दिखाई । हेती गंभीर थी । दुखी थी । उसने कोई जवाब नहीं दिया । "तो क्या मुझे तुम्हारा मुँह धोना पड़ेगा ?"

तीर निशाने पर बैठा । हेती हँसते हुए गयी, मुँह धो आयी । आँचल से मुँह पोंछकर सिर पर ठीक से ओढ़ लिया ।

रमण ने नीचे आकर चाय पी । फिर सभी विद्यार्थियो को एक पंक्ति में खड़े हो जाने का आदेश देने लगा । एक विद्यार्थी कम था । उसे बस में से ढूँढ लाया । सोलहों को दो-दो की पंक्ति में खड़ा करके दरवाजे से बाहर निकलकर दाईं ओर मुड़ जाने की आज्ञा दी । बंगले की चौखट पर खड़ी हेती को भी बुलाया । हेती पाँव में बिना कुछ पहने हुए आ गयी यह उसे पसन्द नहीं आया । उसने धीरे से उसे समझाया । बालूभाई खुश हुए ।

हेती को आगे करके रमण दरवाजे से बाहर निकला । तब तक पीछे-पीछे बालूभाई भी खिंचे चले आये ।

"इधर किस ओर चले ?"

"साबरमती आश्रम ।"

'दूर पड़ेगा ।"

"बस मिलेगी तो बैठ जायेंगे ।"

'वहाँ तक पैदल मत जाना, भाभी थक जायेंगी ।"

"इतनी चिन्ता थी तो यह नयी बस खड़ी है इसी को भेज देना था न ?"

"पहले कहा होता तो ड्राइवर का इन्तजाम करके रखता ।"

'कल इन्तजाम रखना ।"

"जरूर जरूर ।"

रमण ने प्रसन्नता से हाथ उठाया । बालूभाई मुस्करा दिये । अकेले रह जाना अच्छा नहीं लगा । वे माँ के पास आ गये ।

"माँ, यह असफल जोड़ी नहीं है ? रमण ग्रेज्युअट और हेती मात्र दूसरी तक पढ़ी है । वह भी गाँव के स्कूल में ।"

"इतना पढ़ी है, वह भी बहुत है।"

"लेकिन इतने से क्या ? वह रमण को समझ सकती है ?"

"यह तो हम कैसे जाने ? रमण अपने मन से लाया है इसलिए उसे अच्छी जरूर लगती होगी।"

"रमण तो शायद उसे बाहर की दुनिया बताने और इस प्रकार उसे सुधारने के लिए लाया होगा।"

"अब शादी के बाद सुधारने की बात भूल जानी चाहिए। इससे दोनों के बीच तनाव बना रहता है। दिन सुख के बदले दुख में गुजरते हैं।"

"यह सब कुछ मेरी समझ में नहीं आता।"

"तू जब तक शादी नहीं करेगा, कुछ नहीं समझेगा। मेरी बात मान, वेणी भाई सेठ की मंझली लड़की तेरे लिए ठीक रहेगी।"

'लेकिन वह तो बहुत चंचल है और...."

"शादी के बाद ऐसी नहीं रहेगी।"

वेणीभाई सेठ की लड़की वीणा बी ए. के अंतिम वर्ष में थी। जब से उसे पता चला कि बालूभाई के साथ सगाई की बात चल रही है, वह सावधान हो गयी थी। जहाँ भी मुलाकात होती, अपना अच्छा प्रभाव डालने के लिए वह मुक्त होकर बोलती और बालूभाई को चुपचाप सुन लेना पड़ता। वे स्वयं भी दो-चार अच्छे वाक्य बोलकर उसे प्रभावित करें ऐसा मौका ही नहीं मिलता। इसलिए अभी तक उन्होंने शादी की अनुमनि नहीं दी थी। दोनों घर लगभग बराबरी के थे और बुजुर्गों ने तय कर लिया था। अतः अब मात्र वर कन्या की सम्मति का ही इन्तजार था।

शाम को विद्यार्थियों को खाना खिला देने के बाद बालूभाई की माँ ने रमण और बालूभाई को खाना खिलाते समय वीणा के बारे में बात की। माँ का मानना था कि रमण सूझ बूझ वाला लड़का है। अतः उनका विश्वास था कि वह कोई रास्ता निकालेगा।

"कल सुबह दोनों वेणीभाई शेठ के घर चले जाओ।"

"इसी समय क्यो नहीं ?" रमण ने बालूभाई की ओर देखते हुए कहा।

"इस समय नहीं जाएँगे।" बालूभाई को यह जल्दबाजी अपने आत्म-गौरव के खिलाफ लगी। किन्तु इससे उनके जाने की इच्छा तो प्रकट हो गयी थी।

अंत में तय किया कि उस ओर घूमने के बहाने जायेंगे और किसी ने देख लिया और बैठने का आग्रह किया तो बठेंगे।

बालूभाई ने हेती को तैयार होने के लिए कहा। वह तैयार ही थी। सिर पर ठीक से ओढ़कर खड़ी हो गयी।

रमण ने बालूभाई को एक ओर ले जाकर धीमे से कहा, "तुम इसको साथ ले चल रहे हो लेकिन जरा सोचविचार लो। वहाँ इसका ध्यान रखोगे कि वीणा के साथ बात करोगे ?"

बालूभाई का विचार दूसरा था। वीणा और हेती आपस में बात करें और वह बीच में बोलकर वीणा को प्रभावित करें। हेती वीणा को पसन्द करे तो उसकी पसंद को स्वीकार कर ले और शादी में जल्दबाजी की अपकीर्ति से भी बच जाये।

वे दोनों जाने की योजना बना रहे थे लेकिन हेती ने सोच लिया था कि वह साथ नहीं जाएगी। वह बालूभाई की माँ से बात करने लगी। उनके आग्रह के बावजूद वह जाने को तैयार नहीं हुई। थोड़ी ही देर में वे लोग उन्हीं पाँवों वापस आ गये। उनको देखते ही हेती समझ गई। बात कुछ बनी नहीं।

थोड़ी देर बैठकर इधर-उधर की बातें करने के बाद रमण को लगा क्यों न तम्बाकू के व्यापारी से भी मिल लें? अब तो वह घर पर आ गया होगा। आधे घण्टे की छुट्टी लेकर वह दो घण्टे बाद वापस आया।

दूसरे दिन बालूभाई की नयी बस का उद्घाटन किया गया। विद्यार्थियों, रमण और हेती के साथ बालूभाई भी कांकरिया और चंडोला का पर्यटन कर आये।

वापस आये तो बैठक खंड में माँ के साथ वीणा को बैठे देखकर बालूभाई शरमाये, रमण खुश हुआ और हेती को अचरज हुआ।

वीणा जाज्वल्यमान थी – उसकी आवाज में उद्दण्डता नही, दृढ़ता थी। रमण की समझ में नहीं आया कि बालूभाई क्यो मना करते होंगे?

हेती को लगा कि यदि वीणा के बस की बात हो तो खुद उसे बालूभाई से मना कर देना चाहिए। नहीं... नही ऐसा कहीं होता होगा?

खाने के बाद वीणा अकेली हेती को साथ लेकर ऊपर के खंड में गयी। बालूभाई की माँ ने इन दो दिनो में देखा था कि किसी भी अनजान आदमी की सद्भावना जीत लेने की हेती में एक स्वाभाविक शक्ति थी।

वीणा बहुत कुछ पूछती रही और हेती उत्साह से उत्तर देती रही। सोमपुरा को, गोकुलिया को, शादी, रहन-सहन, रीति रिवाज, शिक्षा सभी विषयो को लेकर बातें हुईं। वीणा ने देखा कि हेती स्वयं अशिक्षित है यह हीनता-ग्रंथि उसमें नहीं है। उसकी आवाज में स्वाभिमान की अनुगूँज है। माया है, ममता है। चापलूसी नहीं। आँचल का किनारा हाथ में पकड़े रहने, कलाई पर चूड़ियाँ घुमाते रहने की उसकी आदत वीणा को अच्छी लगी। थोड़ी देर बाद ही उन दोनो के बीच ऐसी आत्मीयता हो गयी कि वीणा हेती के झोले से उसका दूसरा जोडा कपड़ा निकालकर पहनने लगी। हेती ने उसकी मदद की। फिर तो वीणा ने भी अपनी साड़ी हेती को पहना दी। हेती न न कहती रही किन्तु वीणा ने उसकी एक न सुनी। फिर बोली अब चलो नीचे। हेती दरवाजा बन्द करने लगी तो वीणा बोली–

'मेरी कसम, नहीं आओ तो। चलो उन लोगों को ऐसा बनायेंगे कि उन्हें भी याद आ जाये। तुम थोड़ी देर बोलना मत। मै तुम्हारी भाषा बोलूँगी। और हाँ एक बात, तुम इस तरह शरमाकर, नीचे देखते हुए मत चलना। मै जहाँ तक

ओढ़ा रही हूँ उससे अधिक सिर मत ढँकना। नजर सीधी रखकर चलना। हाँ मेरे पीछे-पीछे आओ।"

बालूभाई और रमण अहमदाबाद-सारंग के बीच बस सेवा प्रारम्भ करने की बात पर चर्चा कर रहे थे। बालूभाई की माँ सुन रही थीं। वीणा और हेती को बदले हुए भेस में आते देखकर वे चौंकी किन्तु वीणा ने उन्हें संकेत से चुप कर दिया।

"भाभी।" बालूभाई कुछ कहने जा रहे थे किन्तु वीणा से नजर मिलते ही वे रुक गये। "माफ करना, तुम्हें भाभी कहने का मेरा कोई इरादा न था।"

"अनुमान से पहले ही तुम हमको पहचान गये।" रमण की ओर देखते हुए वीणा ने कहा। रमण ने वीणा के कपड़ों में सजी हेती को देखा। हेती शरमाकर ऊपर भाग गयी। कपड़ा बदलने।

वीणा आराम से बैठ गयी। माँ ने सगाई की बात चलाई। रमण ने बालूभाई से कहा कि निर्णय घोषित कर देने के लिए आज का दिन शुभ है। बालूभाई ने खड़े होते हुए कहा-"देखो माँ, वीणा को मना करने के लिए मेरे पास कोई कारण नहीं है। सच बात तो यह है कि सहमति दर्शाते हुए मुझे संकोच हो रहा है। मेरा मानना है कि वीणा को मुझसे भी अच्छा पति मिलना चाहिए। यदि मै इतना भी नहीं समझ सकूँ तो धूल में मिल जायें मेरे आदर्श। गाँधीजी...."

"यूँ गाँधीजी को बीच में लाने की जरूरत नहीं है।" रमण ने बालूभाई का हाथ पकड़कर उनकी जगह पर बिठा दिया।

"लेकिन यदि मैं इतना भी स्वीकार न कर सकूँ तो मेरे जैसा...."

"वीणा बहन, तुम बालूभाई के इन शब्दों को याद रखना और भविष्य में जब ये अपनी होशियारी बघारें तो...।"

वीणा थोडी देर और बैठकर अपने बंगले पर चली गयी।

दो बजे पर्यटन वापस चला। बालूभाई स्टेशन तक छोड़ने आये। माँ ने हेती को साड़ी के लिए पन्द्रह रुपये दिये। "मुझे?" रमण ने हँसते हुए हाथ फैलाया। "बस सर्विस शुरू होगी तो तेरा भी कुछ हिस्सा रखेंगे।" माँने कहा और बालूभाई ने सहमति प्रकट की। फिर से एक बार बस-सेवा की बात चल निकली थी। "तू यदि सारंग में सँभाल ले तो एक चौथाई हिस्सा तेरा। मुनीम से बातचीत करने के बाद मैं लिखूँगा। तू जाकर कलोल और सारंग के बीच का मार्ग तय करके संपूर्ण विवरण लिखना।" दो-तीन दिन के अंदर ही सारा काम कर लेने का विश्वास दिलाकर वह चल पड़ा। नफा की बात सोचकर वह खुश था। किन्तु खुशी उसने छुपा ली थी।

रास्ते भर खर्च का हिसाब लगाता रहा। स्टेशन पर पहुँचने के पहले ही उसने सभी विद्यार्थियों को एक-एक रुपया वापस कर दिया। पाँच रुपये बच गये तो उसने अपने पास रख लिए। हेड मास्टर को दे देगा। जमा करने होंगे तो छात्र फंड में जमा कर लेंगे।

सभी विद्यार्थी सारंग के ही थे। अतः देर रात को घर कैसे पहुँचेंगे इसकी चिन्ता न थी। रमण को अपनी चिन्ता थी इसलिए उसने स्टेशन के पास की होटल से एक लाठी ले ली। फिर चल पड़ा। हेती बार-बार पीछे रह जाती थी।

"अँधेरे में तुझे डर नहीं लगता ?"

"तुम हो न।"

"तो मेरे साथ चल।" कहकर वह रुका और उसने हेती का हाथ पकड़ लिया। हेती ने हाथ नहीं छुड़ाया। उसे लग रहा था जैसे वह हवा में चल रही हो।

"बस अब छोड़ देव।"

"क्यों अच्छा नहीं लगता ?"

"लगता तो है पर चलत नाहो बनत।"

"थकना तो बताना गोद में उठा लूँगा।"

"थाक तो बहुत लाग है।"

रमण ने उसे उठाने का नाटक किया।

"बस चलो अब जल्दी-जल्दी। नाहीं तो घेर पहुँच-पहुँचत आधी रात होय जाये।"

"आधी रात क्यों, दस भी नहीं बजेंगे। आधा तो आ भी गये हैं।"

"सामने केहू आवत जान पड़त है।"

गलबा था। वाली ने उसे भेजा था। उसके अनुमान से आज गाड़ी जल्दी आ गयी थी। व्हीसल सुनकर वह जल्दी-जल्दी चल रहा था। आधे रास्ते में मुलाकात हो गयी। कलोल स्टेशन से खरीदी हुई दालमौठ से एक मुट्ठी उसने गलबा को दी। वह खाता रहा और अहमदाबाद के बारे में पूछता रहा। अब रमण कुछ कदम आगे चल रहा था। गाँव के नजदीक आते-आते तो वह काफी आगे निकल गया था।

27

बदरी से हीरूभाई की चिट्ठी आयी थी? एक तरफ छपे हुए, खाकी, त्रिकोण और चौरस वर्गाकार कागज पर लिखी हुई उस चिट्ठी में मात्र एक ही वाक्य था— "चार आने लेकर एक-दो दिन के अन्दर ही बदरी आ जाओ।"

हीरूभाई को आखिर चवन्नी की क्या जरूरत आ पड़ी। चार आने तो क्या रमण को हीरूभाई के पास चार रुपये भी भेजने में कोई आपत्ति न थी किन्तु इन दिनों उसके लिए बदरी तक जा पाना संभव न था। आज तम्बाकू का स्टोक जाँच करने आबकारी विभाग का अफसर आने वाला था, उसके स्वागत के लिए रुकना था, उसे खुश करके वापस भेजा जा सके इतने पैसों की भी व्यवस्था करनी थी।

यूँ तो चतुराईपूर्वक उसने अभी आधी तम्बाकू किसानों के यहाँ ही रहने दी थी और दो-तीन दिनों के बाद अहमदाबाद के व्यापारी के यहाँ भेजे जाने वाला माल भी उसने गोदाम में संग्रह करने के बजाय तीन भिन्न स्थानों पर रख छोड़ा था। अफसर गोदाम का निरीक्षण करने वाला था और शक होने पर उसकी तोल-माप भी करने वाला था।

अफसर मिलनसार था। माल के वजन के बारे में उसने किसी भी प्रकार का शक नहीं किया। सुन्दर स्वागत के लिए आभार माना और व्यापार विकसित करने की सलाह देकर चलता बना।

हीरूभाई की दूसरी चिठ्ठी आ गयी थी–"चार आने खर्च करने की इच्छा न हो तो यूँ ही चले आओ। "यूँही" शब्द पर उसका ध्यान गया। हीरूभाई लिखने में भी बोल-चाल का ही प्रयोग करते हैं। जाना ही पड़ेगा नहीं तो संभवतः तीसरी चिट्ठी के बदले वे स्वयं आ पहुँचेंगे। और तम्बाकू का व्यापार बढ़ाने के लिए फटकारेंगे भी। सारंग का आदमी कमाये तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु गोकुलिया का और वह भी उनकी जाति-बिरादरी का आदमी कमाये यह उन्हें बहुत खलता है। खलने दो खलता है तो। अरे ज्यादा-से-ज्यादा कुछ खरी-खोटी सुनाएँगे।

"अहमदाबाद से ट्रक आये तो दौड़कर मुझे बुला लाना। मैं बदरी जा रहा हूँ, हीरूभाई के यहाँ।" घर पर खाना खाने आये गलबा से रमण ने कपड़े पहनते हुए कहा।

"ट्रक जो आवे वाली है तौ जात काहे हो फिर?"

"यह तो मैं भी नहीं जानता। किन्तु हीरूभाई चिट्ठी पर चिट्ठी भेजे जा रहे हैं।"

"अरे ऊ हीरू उपानपगा।" हीरूभाई को पहचानने के मामले में गलबा अन्य लोगों के साथ ही था।

"अरे ऐसे भले आदमी को सम्मान की निगाह से देखने में तुम्हारा क्या बिगड़ जाता है?"

"ठीक है, अब उनका हीरूभाई कहब, बस?" गलबा का उत्तर सुनकर गलबा की माँ और बहन हँस पड़ी। रमण ने गद्दे के नीचे दबाकर रखी टोपी पहनी और चल पड़ा।

हीरूभाई के यहाँ पशाभाई को देखकर रमण को आश्चर्य हुआ। उनका ऐसा मानना था कि हीरूभाई तो पशाभाई की नजर में चिट्ठी के चाकर थे। कांग्रेस सेवादल के संगठनकर्ता की हैसियत से उनकी वर्तमान कार्यनीतियों पर संतोष प्रकट करते हुए पशाभाई ने कहा कि यदि मेरा बस चले तो मैं तुम्हें जिलाधीश बना दूँ।

रमण को यह बात समझने में देर नहीं लगी कि पशाभाई और हीरूभाई के बीच इस समय कोई मनमुटाव है। पशाभाई ने अपने विरोधियों की निन्दा प्रारंभ करते हुए धीरे-धीरे यह प्रमाणित करने की कोशिश की कि हीरूभाई जैसे सज्जन कार्यकर को ऐसे तिकड़मी लोगों का हथियार नहीं बनना चाहिए।

"आपका हथियार बनना चाहिए, यही न ?"

रमण ने साहसपूर्वक कहा । हीरूभाई को लगा किसी चींटी ने काट लिया होगा । दूसरे ही क्षण पशाभाई ने हल्की-सी स्मिति के साथ रमण को देखा । उन्हें तुरन्त याद आ गया था कि वे सारंग की मिडिल स्कूल की कमिटी के सदस्य हैं । रमण को उनके साथ सम्मान से बात करनी चाहिए । मन ही मन सोचते हुए उन्होंने पाँव खींचकर खाट पर रखे और आराम से बैठते हुए बोले–

"मास्टर, कब से बैठे हो, हम तो भूल गये रहिन । अबहिने आयौ, है न ?"

"आपकी निगाह पड़ी तभी आया कहा जाऊँगा, ठीक है न हीरूभाई ?"

हीरूभाई ने रमण के व्यंग्य की ओर ध्यान नहीं दिया । वे किसी चिन्ता में हैं इस बात का अहसास रमण को हो गया था । पलभर को शांति छाई रही । पशाभाई ने बगल खुजलाते हुए कहा–

"देखो मास्टर, तुमसे हमे छुपाना का ? बात ई है कि हीरूभाई हमरे सामने पड़े हैं । अस तो हम नीचे देखी अस आदमी नाहीं हन ई तो तुम जानत हो । हीरूभाई खुद चुनाव लड़त होय तबौ हमका कौनो आपत्ति नाहीं रही । इनका तो हम पहले से जानित हैं । दूसरे के चढ़ाये से यहि साइत ये हमरे सामने पड़े हैं । हम जानित हैं कि दूध कै उबाल केतनी देर रहत है । कल उठ कै यही हीरूभाई उन लोगन के साथ छोड़ दे हैं । पछतइ हैं ।"

"हीरूभाई को भविष्य में पछताना न पड़े इसलिए आप स्वयं उन्हें समझाने आये हैं ।"

"मास्टर तुम बोले मां बहुत काबिल हो । मुला अब मजाक छोड़के बात के कौनो राह निकारो । अगर हीरूभाई खुदै डेलीगेट बना चहत होंय तो हम इनका टेका देई ।"

"मैं भी समर्थन करूँगा ।" रमण इस बार गंभीर होकर बोला । किन्तु पशाभाई से उसका मजाक छिपा नहीं रह सका । हीरूभाई कुछ बोले इसलिए उनके सामने देखते हुए, पाँव के पास से तिनका उठाकर उसे पेना बनाकर दाँत कुरेदने लगे ।

"मुझे तो सेवादल का काम नहीं छोड़ना है ।" हीरूभाई ने दृढ़ता और आत्म-संतोष प्रकट करते हुए कहा ।

"किन्तु डेलीगेट होने के पश्चात् सेवादल का कार्य करने में अधिक सुविधा नहीं रहेगी ?"

रमण की इस जिज्ञासा का समाधान पशाभाई ने दिया–

"नियम बहुत उल्टा है भैया, सेवादल मां काम करे वाले का चुनाव मां भाग लिये के मनाही है ।"

"इस हिसाब से तो हीरूभाई आपके विरोधी के लिए सदस्य भी नहीं बना सकते ।" रमण को पशाभाई की ओर से समर्थन मिले इसके पहले ही हीरूभाई ने कहा–

"सदस्य संख्या बढ़ाकर ही तो पार्टी को प्रजा के बीच लोकप्रिय बनाना है। बदरी का किसान कांग्रेस का सदस्य क्यों न बने ?"

"इससे फर्क क्या पड़ेगा ?"

पशाभाई हँस पड़े। हीरूभाई को अच्छा न लगा। ये लोग पार्टी के नेता बनकर सत्ता हथियाना चाहते हैं। न तो इन्हे पार्टी की कुछ पड़ी है और न ही देश की। उन्होने अपना क्रोध दबाते हुए कहा–

"आपके समर्थकों की ओर से सदस्य बनाये जायें यह बात हलवे की तरह आपके गले के नीचे उतर जाती है लेकिन यदि कोई व्यक्ति कांग्रेस की और देश की सेवा को लक्ष्य में रखकर सदस्य बनाता है तो आपके गले में वह गोखरू की तरह चुभता है।"

"देखो मास्टर, हीरूभाई ऐसा कभी नही कहेंगे कि वे खुद पूनमचन्द के समर्थक की हैसियत से सदस्य बना रहे है।"

रमण खड़ा हो गया।

'क्या यार हीरूभाई, उस पूनमचन्द का समर्थन कर रहे हो ? वह तुम्हारा क्या भला करेगा ? तुम तो बन्दर के सामने चना डालने वाली बात कर रहे हो।"

"हम सब लोग बन्दर की जाति के ही तो वंशज हैं।"

"किन्तु उसकी क्या योग्यता है ? पांच आदमियो को गाली दे सकता है यही न ?"

"वह ईमानदार आदमी है।"

पशाभाई अस्वस्थ हो उठे थे।

"अपनी बात तुम जानो किन्तु पशाभाई और पूनमचन्द दोनों में यदि एक व्यक्ति को पसन्द करना हो तो मै तो पशाभाई को ही पसन्द करूँगा। मुझे तो बनिये की जाति पर जरा भी भरोसा नही है।"

पशाभाई उठकर चल दें इसके पहले ही रमण खड़ा हो गया।

"बनिया तुम्हारा साझेदार बने तो तुम्हे कोई आपत्ति नहीं है।" हीरूभाई का संकेत बालूभाई की ओर था।

"बालूभाई तो मेरा कॉलेज समय का मित्र है। जबकि पूनमचन्द तो···है क्या उसके पास ?"

"सच बोलने का साहस।"

"उसमें तो सिर्फ सच बोलने का साहस है, जबकि पशाभाई में तो बहुत कुछ करने का साहस है।" रमण इस बार गंभीर न रह सका।

"देखो मास्टर, तुम दूनो तरफ ढोल न बजाऊ। तुम्हें हीरूभाई क समझावै क होय तो समझाऊ नाहीं तो कहे देइत है कि पुनमवा जैसे पाँच आदमियों को हराने की मुझमें शक्ति है।" पशाभाई जोशीली भाषा बोलते-बोलते शुद्ध उच्चारण करने लग गये थे। रमण को यहाँ भी मजाक सूझा–

"पाँच व्यक्ति यदि आपके सामने खड़े होंगे तो उनके वोट बँट जायेंगे और वे खुद हारेंगे।"

पशाभाई पुनः खाट पर बैठ गये। इस बार ऐसा लगता था कि काफी देर तक बैठने का धैर्य उनमें आ गया है। फिर बोले-"क्या हमने स्वयं सुखी होने के लिए देश को आजाद करवाया है?"

"मुझे आपत्ति इस बात से है कि आप अकेले ही सुखी होना चाहते हैं।" हीरूभाई ने शांति से कहा।

"मैं तो हीरूभाई ऐसा मानता हूँ कि हर आदमी अपने प्रयत्नों से ही सुखी हो सकता है। इतने साल से इस क्षेत्र में काम कर रहे हो, कहो परिणाम क्या आया? यह पशाभाई जैसे बड़े आदमी स्वयं चलकर आपके घर आये हैं, यही आपकी सिद्धि है। किन्तु आप इस बात से संभवतः सहमत नहीं होंगे।"

'पशाभाई आये यह बड़ी खुशी की बात है किन्तु उन्होंने बुलाया होता तो मैं इन्हें स्वयं मिलने जाता। सम्माननीय हैं।"

"दो-तीन संदेश तो भेजे थे।"

"उनमें तो धमकी थी।"

"आप मुझसे मिले होते तो पता चलता कि धमकी थी या प्रेम।"

"तो वैसा प्रेम पूनमचन्द के प्रति क्यों नहीं रखते?"

"पूनमचन्द को लेकर तुम दोनों आओ फिर देखना। मेरे प्रति जो भी शिकायत हो बताओ। हम समाधान खोज निकालेंगे और एकदूसरे के सहयोग में काम करेंगे।"

"पशाभाई की बात उड़ा देने जैसी नहीं है, हीरूभाई।"

हीरूभाई कुछ नहीं बोले। सोनीबहन दूध का दो कप काढ़ा तैयार कर लायी थी जिसे पशाभाई और रमण के हाथ में पकड़ाकर वे घर में चली गयीं। थोड़ी ही देर में खाली हाथ वापस आ गयीं। सुपारी नहीं मिली थी। पशाभाई की आदत सुपारी खाने की थी। कोई बात नहीं, कहकर वे खड़े हुए, फिर चल दिए जैसे सुपारी लाने जा रहे हो। रमण अभी भी काढ़ा पी रहा था। उसे लगा कि पशाभाई ने पहले उठकर अविवेकपूर्ण व्यवहार किया है किन्तु क्या करे। पशाभाई के अविवेक पर उसका क्या बस चलता। उस पर भी जूता पहनते हुए वे बोले-

"उठो मास्टर, काढ़ा पीने में भी कितनी देर लगाते हो?"

"आप अधूरी बात छोड़कर चल दिये?" रमण हीरूभाई की ओर देखते हुए पशाभाई से बोला।

"अधूरी क्यों? तुम दोनों मेरे घर आओगे।" वे पीछे की ओर मुड़े और बोले।

"हीरूभाई ने अब तक ऐसी कोई बात नहीं की है।"

"इसमें कहने की क्या बात है ? मास्टर तुम पढ़े हो लेकिन गुने नहीं । हीरूभाई मेरे घर नहीं आयेंगे तो कहाँ जायेंगे ? किसी दीन गरीब का कोई काम अटक जाता है तो उनके कहने से मैं ही मदद करता हूँ, वह बनिया नहीं । पूछो इनसे ।"

"आपकी उदारता कहाँ छिपी हुई है, पशाभाई ? अन्य काला बाजारिये तो अपना ही घर भरते रहते हैं जबकि आप···"

"अंग्रेजो के जमाने में हमने भी काला-बाजारी की थी, सच है किन्तु···"

"तब भी जनता तो दूसरी नहीं थी ?"

"तो क्या यह जनता तुम्हारे साथ कभी कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने के लिए तैयार हुई थी, जेल में हम गये थे कि ये लोग ?"

"जो भाग्यशाली थे वे जेल में गये और जो अभागे थे वे शहीद हो गये ।" हीरूभाई की आवाज में व्यथा थी ।

"तुमने उल्टी बात कही ।" पशाभाई ने एक वक्ता की-सी दृढ़ता से कहा—"जो शहीद हुए वे तो अमर हो गये । हम आज की इस माथापच्ची में पड़े हैं । ठीक है भाई यह सब भी । जिसका जैसा भाग्य । तम दोनो कल आवो ।"

"परसों आये तो नहीं चलेगा ?"

"जब ठीक लगे तब आना । मै हीरूभाई के घर पर आया हूँ इस तरह दूसरे किसी के यहाँ नहीं जाता । घर पर ही रहूँगा । फुरसत से आना ।"

"तो कल शाम को हो, ठीक है न हीरूभाई ?"

हीरूभाई ने मौन रहकर सहमति दी । फिर मिलेंगे कहने के बाद पशाभाई कुछेक कदम आगे बढ़े फिर खड़े हो गये । घूमते हुए बोले—

"तुम सदस्य बनाना तो जारी ही रखो हीरूभाई । रमणलाल को भी खीच लो इस में ।"

"मै तो शिक्षक हूँ इसलिए···"

"क्यों हमें शिक्षित लोगो की जरूरत नहीं ?"

"लेकिन मैं राजनीति में हिस्सा नहीं ले सकता ।"

"मैं कहाँ तुमसे ऐसा कोई वचन ले रहा हूँ ?"

"यह आपकी मेहरबानी है किन्तु मुझे तो अभी अपने पाँवों पर खड़ा होना है ।"

"कोई काम हो तो कहना, संकोच मत करना ।"

रमण ने हाथ उठाकर पशाभाई से पीछा छुड़ाया । हीरूभाई के मुँह पर के भावों में कोई अन्तर नहीं आया था । जहाँ पशाभाई बैठे उसी स्थान पर आसन जमाते हुए रमण बोला—

"देखा हीरूभाई ? पशाभाई आये थे तुम्हे मनाने के लिए लेकिन गये हैं मुझे प्रलोभन देकर ।"

"तुम उनका दाँव-पेच समझ गये यह बहुत अच्छा हुआ ।"

"किन्तु कभी मुझे मदद तो करेंगे न ?"

"किस चीज में ?"

"इसी व्यापार-धंधे में ।"

"इस बारे में तो मै नहीं जानता लेकिन राजनीति में तो उन्होने इधर किसी भी नये कार्यकर्ता को आगे नहीं आने दिया है। उनका बस चले तो मुझे भी किसी दूसरी जगह भेज दें। इसके लिए वेतन बढ़ाना पड़े तो अच्छी खासी रकम अपनी जेब से भी निकाल सकते हैं। उन्हें कोई व्यक्ति काँटा लगे तो उसे फूल की तरह बड़ी सरलता से चुनकर अलग कर देगे । किसी को पता भी न चले—स्वयं काँटे को भी···"

"भले ही वह काँटा बबूल का हो या गुलाब का ।"

"पशाभाई आज तक ऐसे ही काम करते आये हैं इसलिए आज तक उनकी इज्जत पर आंच नहीं आयी है। हजार-दो-हजार की काली कमाई में से पाँच-पच्चीस का दान देकर इज्जत बढ़ा लेने की कला उन्हें आ गयी है ।"

"आप मार्क्स के विचारों से परिचित लगते है ।"

"इस बारे में मैंने कुछ सुना जरूर है। किन्तु अपने यहाँ इन सभी विचारो को समन्वय करने वाले गाँधीजी जैसे युगपुरुष हो गये हैं तब किसी अन्य के विचारों के पीछे दौड़ने की क्या आवश्यकता है !"

'मैं दौड़ने की बात नही कर रहा हूँ, किन्तु अपनी समझदारी को विकसित करने के लिए..."

"समझदारी विकसित करने का वक्त ही कहाँ है ? लोगों के काम से ही फुरसत नहीं मिलती । तुम वह सब पढते रहना और कोई खास चीज जानने को मिले तो मुझे बताना ।"

"अवश्य । लो यह चार आना, यदि मुझे कांग्रेस का सदस्य बनाना चाहते हो तो ।"

"शिक्षको को इस सब में नहीं पड़ना चाहिए यदि यह मानते हो तो..."

"मुझे क्या मानना ? आप आग्रह कर रहे हों तो क्या मै चार आने के लिए मना कर दूँगा ? वैसे, मेरे पास अभी इन बातों के लिए समय नहीं है ।"

"मैं भी मात्र शिक्षक ही रहा होता तो ठीक था ।"

"इसमें पछताने की कोई जरूरत नहीं है । मैं भी हमेशा के लिए मुदर्रिसी में नहीं पड़ा रहना चाहता । व्यापार व्यवस्थित हो जाये कि नौकरी छोड़ देनी है ।"

'तुम अपना ज्ञान व्यापार में लगाओगे ?"

"ज्ञान कैसा हीरूभाई ? शिक्षक होने के बाद मैंने एक भी पुस्तक ऐसी नहीं पढ़ी जिसके बारे में आपसे बात कर सकूँ । मेरा मन सिर्फ पैसा कमाने में लगता है ।"

"पशाभाई ने मुझे जितना निराश किया था उससे अधिक तुमने किया। ठीक है भाई, मुझे तो दूसरों के मुँह से पान चबाना है।"

रमण थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोला। खड़ा हो गया। प्यास नहीं लगी थी फिर भी उठकर पानी पिया। हीरूभाई चटाई बिछाकर बैठ गये। पीछे रखे हुए चरखे को झुककर उठाया। तकली भरकर पूनी हाथ में ली, सूत बनने लगा तो रमण की ओर देखते हुए बोले

"तुम तो रमणलाल, कातना भूल गये होंगे?"

"भूल तो नहीं गया किन्तु आता है यह कहने का भी क्या अर्थ? अब कातने का वक्त ही कहाँ है?"

"हूँ" हीरूभाई ने हल्की सी मुस्कराहट के साथ तकली और सूत पर नजर गड़ाई।

"तो मैं चलूँ? परसों आप सीधे सारंग आ जायेंगे कि मै पहले यहाँ आऊँ?"

"यह तो उल्टा पड़ेगा। मैं गोकुलिया आऊँगा। कितने बजे आऊँ? चार बजे के करीब आऊँगा। ठीक है? तुम कहाँ होगे?"

"घर पर ही होऊँगा।" गोदाम पर बैठा मिलूँगा यह जवाब भी सूझा था किन्तु हीरूभाई तमाकू के क्रय-विक्रय के बारें में कुछ पूछेंगे इसलिए रमण ने बात बदल दी। जब वह चला तो हीरूभाई ने कहा—"आना रमणलाल।"

"अवश्य।"

हीरूभाई ने आज "रमणलाल" कहकर क्या मेरे प्रति अपनी भावनाओं को बदल दिया था? या मैंने पशाभाई से जो बातें कीं वही इन्हें पसन्द नहीं आयी?

28

"काहे भैया रमण, काहे कतरात हौ?"

'जरा जल्दी थी पभाकाका, कैसी है तबीयत?"

"तबीयत का होये भला? अबहीं रोज आधा सेर लहसुन खाय सकि है।" कमर पर हाथ रखकर पभा मुखी खड़े हो गये।

रमण से कच्चा लहसुन खाने वालों की डकार सहन नहीं होती थी। जैसे तारकोल और गंधक की मिश्रित दुर्गंध। कभी-कभार तो उससे भी अधिक बुरी और असह्य। उसके पिताश्री आजकल लहसुन, गुड़ और घी मिलाकर-सवासेर-डेढ़ सेर बखन सुबह पेट में डालते थे। उन्हें शांतिपूर्वक चबा चबाकर खाते हुए देखकर रमण उनके धैर्य पर चकित रह जाता। कोई काम की बात शुरू होते ही वे ठीक सामने आकर बैठते और चिलम पीना शुरू करने के पहले कम से कम दो डकार खाते। तब उनके सामने टिके रहने के लिए रमण को मरणान्तक प्रयत्न करना पड़ता।

दूर ही खड़ा था । वैसे पभामुखी के प्रति रमण के हृदय में सम्मान था, सिर्फ इसलिए नहीं कि वे हीरूभाई के मामा लगते थे वरन् इसलिए कि गोकुलिया के मुखिया होने के बावजूद उन्होंने कभी किसी गरीब को सताया नहीं । वे रिश्वत नहीं लेते थे और "तुलसी हाय गरीब की कबु न खाली जाय"–इस दोहे को दोहराते रहते थे । थानेदार या सरकार के अफसरों का आतिथ्य करने में कभी कसर नहीं छोड़ते थे । दो-पाँच रुपए की दक्षिणा भी देते थे पर भगवान के सिवा किसी से माँगते नहीं थे । इन्हें पढ़े-लिखे लोगों से बातें करने का शौक था । पगड़ी लपेटते हुए पभा मुखी रमण के साथ हो लिए । बोले :

"तुम टींबावाली बात तो सुने होबौ ?"

"क्या ? मगन अमथा ने पक्का मकान बनवाया है यही न ?"

"ईमां कौन बड़ी बात है ? अरे सेंदूर झरत है ऊ वाली बात ?"

"सिन्दूर झरता है ? मतलब ?" रमण को इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं था । उसके पाँव रुक गये ।

"टींबा के एक कुँवारी के हथेली से सेंदूर झरत है ।"

"आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं ?" रमण पभा मुखी के साथ-साथ चलता हुआ बोला ।

"तुहरे जैसे पढ़े लिखे आदमी से हम मजाक करब ? होय सके तो एक दुइ दिन मां हमैं दरसन करे जाय क है ।" मुखी आराम से स्वाभाविक गति में चलते हुए बोले ।

"किसी ने यों ही बात उड़ा दी होगी ।"

"सधुआ भगवान शंकर के कसम खाय कै कहत रहा । आज सबेरे ऊ दरसन करिके आवा है । माता कै शक्ति. और का ?"

'कमाल की बात है । हथेली से सिंदूर गिरता है !"

"आज तो हमैं देर से पता चला । काल सवेरेन निकर जाब । अपने बुढऊ से कहेव आवे क होय तो ।"

"उन्हें मालूम पड़ा होगा तो खेत से सीधे ही चले गये होंगे ।"

"अबहीं गाँव मां हम अकेले जानित हैं । हम सधुवा का मना कीन है । ऊ केहू से न बताये । यक दाई हम जाय आई, जो सही बात होय तो जौका जाय क होय ऊ जाय ।"

रमण पभामुखी की इस सावधानी से प्रभावित हुआ । लोग तो अफवाह को ही सच मानकर, जैसे मेले में जा रहे हों टोली की टोली उमड़ पड़ते हैं । कौन जाँच-पड़ताल करने वाला है कि थाली में भरा रखा सिन्दूर हथेली में से झरा है या फिर किसी बनिये की दूकान से आयी हुई पुड़िया से ।

रमण ने पभामुखी की धर्मनिष्ठा और व्यावहारिकता की प्रशंसा की । उत्तर में [illegible] [illegible] दिया "मेरे भांजे हीरू जैसे सेवक हरेक गाँव में हों तो जनता की [illegible]

दूर हों, हमारा जमाना तो गया-" कहे हुए पभा मुखी अपनी गली में मुड़ गये और रमण का मन चमत्कार की गुफा से निकलकर व्यापार में समा गया। वह सीधे गोदाम की ओर गया। न तो वहाँ ट्रक था और न ही गल्बा। घर गया। मूलजी खाट पर बैठे बैठे पाँव की ठेंठ खुरच रहे थे। ओसारे के ताक पर रखे हुए रेंड के तेल के दीपक का उजाला उनकी एड़ी पर पड़ रहा था, किन्तु एड़ी को नोंचने के लिए उन्हें किसी उजाले की आवश्यकता न थी।

रमण ने जूता निकालकर धूल झाड़ी। मूलजी ने ऊपर देखा। रमण है यह जानकर सीधे बैठ गये।

"ससुरा आवा नाहीं।"

"किसकी बात कर रहे हो?"

"काहे? गल्बा कहत रहा कि तमाकू के व्यापारी आवे वाला रहा ट्रक लेके।"

"आयेगा।"

'आय के वापस न चला गया होय। इहाँ के दूसरे कै भला देख कै राजी होत हैं? रस्ता मां केहू कह दिहिस होय कि बारू वाले रस्ता से ट्रक न निकरे।"

'बालू से तो निकल आयेगा किन्तु रास्ते में भरे हुए पानी से कैसे निकलेगा?"

"तो फिर ट्रक आये कैसे?"

'अहमदाबाद किस दिशा में है?"

'लेव, करौ बात।" मूलजी घर में जाकर पत्नी से बोले-"अरे सुनत है? भैया हमसे पूछत हैं कि अहमदाबाद किधर है?" ठेंठ खुरचना वे अब भूल गये थे। वाली खिचड़ी के नीचे की आँच कम करके चूल्हे के पास से आ गयी थी।

"पढ़े-लिखे लड़कन की तई तो माँ-बाप गँवार होत हैं।"

"तुम्हें तो माँ, पूँछ पकड़ में आए कि बस। अहमदाबाद किस दिशा में है यह पूछने से क्या नुकसान हो गया?"

खिचड़ी जल जाने की चिन्ता से वाली चूल्हे के पास गयी। माल के देर से आने से गोदाम में पडा रह जायेगा। लेनदारों को क्या जवाब दूँगा। रमण को खटारा न आने की चिन्ता में डूबा देखकर मूलजी ने कहा कि आयेगा जब आना होगा ट्रक को।

"माल और दस दिन तक पड़ा रहेगा तो लेनदारों को क्या दूँगा? है आपके पास कुछ?"

"अपनी महतारी के पूछो, साइत घर मां पचीस-त्तीस पड़ा होय।"

"वैसे तो मेरे पास भी पाँच सौ पड़े हैं किन्तु माल तो बारह हजार का खरीदा है।"

बारह हजार!

मूलजी को साँस घुटती हुई महसूस हुई। उनके लड़के ने बारह हजार का माल खरीदा है! अब क्या होगा? वे [illegible] उठे और चिलम में [illegible] भरने के [illegible]

जाकर चूल्हे के पास बैठ गये। बारह हजार!! वाली से बात करने में भी उनकी जुबान लड़खड़ा रही थी। किन्तु सांत्वना की उन्हें इस कदर जरूरत थी कि बात किये बिना भी नहीं रह सकते थे। माल देने वाला तो बारह हजार लिए बिना मानेगा नहीं और ट्रक का क्या ठिकाना? वह तो न भी आये। घर-गृहस्थी, जमीन-जायदाद-जेवर सब कुछ बेचे तो बारह हजार का न होगा। उसने बिना पूछे-बाँचे इतना बड़ा संकट क्यों मोल लिया?

रमण ओसारे के नीचे से उठकर गोदाम की ओर चला गया। मूलजी की बात सुनकर वाली ने कोई उत्तर नहीं दिया।

भैंसों के आ जाने से मूलजी और वाली की बात अटक गयी। बड़ी लडकी ने सिर पर से ईंधन का बोझ उतारा। छोटी लड़की ईजू ने हाथ के डिब्बे को खड़े-खड़े ही फेंका जो मूलजी के पाँव के पास आकर रुका।

"इधर आए तौ एक लगाई। अस फैंका जात है पागल?" पास में आ गयी ईजू को मूलजी ने उठाकर गोद में बैठा लिया।

"अब बहुत दुलार करके इका बिगाड़ो न।" भैंस की नाँद में चारा डालने जाते हुए वाली ने कहा।

मूलजी भोजन करके खेत की ओर चले गये। लडकियों ने खाकर बिस्तर बिछाना शुरू कर दिया। रमण के आते ही उसके हिस्से का दूध गर्म कर दिया गया। गलबा आया, खाना खाकर, एक शब्द भी बोले बिना गाँव में चला गया, रमण ने लालटेन जलाई और पुस्तक खोलकर बैठ गया। हरिणी नक्षत्र अभी सामने के घर की खपरैल पर पहुँचे कि तीसरे घर से बुलौवा आ गया—"रमण कै अम्मा, सुँघनी सूँघे न औबो?" पड़ोसिन की समधिन आयी हुई थीं।

रात्रि के दूसरे प्रहर की शांति में पुस्तक पढ़ते हुए रमण को तीसरे घर में हो रही बातें सुनाई दे रही थीं। सिंदूर झरने वाली बात को ध्यान से सुनने पर मालूम हुआ कि जिस युवती की हथेली से सिंदूर गिर रहा है उसका नाम माणेक है। वह मगन अमथा की मौसी की लडकी है। और बदरी के भगा मनोर के बड़े और मूर्ख लड़के के साथ ब्याही हुई है। अभी गौना नहीं गया है। होगी लगभग सत्रह वर्ष की। गोरे तो सब होते हैं किन्तु यह तो सौंदर्य की पटरानी है।

रमण को लगा कि इन लोगों की बातों में अतिशयोक्ति अवश्य होगी। और उसमें भी भगा मनोर के बेचारे बड़े लड़के को मूर्ख कहने की क्या जरूरत थी? क्या नाम बताया उसका? हाथी। उसकी पत्नी की हथेली से सिन्दूर झरता है यह जानकर उसे कैसा लगा होगा? या हो सकता है उसे अभी, कुछ मालूम ही न हो। भगा को भी कोई कहेगा तो दो दिन तक तो सच नहीं मानेगा। अरे हाँ, भगा तो घेमरजी का ससुर है। घेमर अवश्य खुश होगा। अब तक शायद एकाध बार देख भी आया होगा। साले की पत्नी की हथेली से सिन्दूर गिरे इसे तो वह अपने ही हाथ का चमत्कार मानता होगा।

तम्बाकू का ट्रक नहीं आया यह याद आते ही रमण पुनः चिन्तित हो उठा । सुबह एकाध आदमी तो पैसा माँगने आ ही जायेगा । वह भी क्या करे ? दीवाली पर दलहन बेचकर जो पाँच-पच्चीस घर में रखे होते हैं वे तो पहले ही खर्च हो जाते हैं । अधिकांश लोग तो कर्ज में कुछ कमी कर पाते हैं, यह भी उनके लिए संतोष की बात होती है । पूस महीने तक तो किसानों के हाथ एकदम खाली हो जाते हैं । जिसके घर कोई दुधारी हो वह घी बेंचवाकर थोड़ी आमदनी करके फुटकर खर्च निकाल लेता है । गाँव में दस-प्रतिशत लोगों के पास भी ओढ़ने के लिए गरम कपड़े नहीं होते । जो चादर वस्तुओं को बाँधकर रखने के उपयोग में लायी जाती है वही इस समय ओढ़ने के काम आती है । हीरूभाई सुधार की रट लगाये हुए हैं । क्या मतलब है इसका ? जब तक गाँवों की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं आता तब तक अन्य सुधारों से कुछ नहीं हो सकता । विचारों-विचारों में ही उसे नींद आ गई । बातों से फुरसत पाकर कहीं आधी रात तक वाली वापस आई । लालटेन बुझायी, ईजू को व्यवस्थित सुलाया और उसीके पास सो गयी, सिर तक ओढ़कर । उसे बन्द आँखों से भी सिन्दूर झरता दिखाई पड़ रहा था ।

सुबह पभामुखी टींबा जाते हुए, मूलजी को भी साथ लेते गये । अच्छा हुआ कि ट्रक रास्ते में मिल गया और मूलजी उसे रास्ता बताकर निश्चिंत हो गये । अब तो रोज के दो चक्कर मारकर ट्रक तीन-चार दिन में सारी तम्बाकू उठा ले जायेगा । मूलजी ने अनुमान लगाया । पभा मुखी रमण की होशियारी की प्रसंशा कर रहे थे । मूलजी ने उनका समर्थन किया क्योंकि ट्रक देखते ही उनके सिर से बारह हजार का बोझ उतर गया था ।

मुखी ने सारंग से टींबा का सीधा रास्ता पकड़ा । मूलजी की इच्छा थी कि सोमपुरा होकर चलें । इस उजाड़ रास्ते से होकर जाने के बजाय सोमपुरा में नरसंग समधी के घर हुक्कापानी करके और पिथू भगत आना चाहें तो उनको भी साथ लेकर जाना ठीक रहेगा । पभा मुखी का गणित अलग था । दोपहर होते-होते टींबा से वापस आकर सोमपुरा में खाना खायें । उनकी छोटी साली सोमपुरा में ब्याही थी और पिछले काफी समय से उसके यहाँ जाना नहीं हो पाता था । मूलजी को यह बात पसन्द आयी । मुखी की साली के यहाँ खा-पीकर समधी के यहाँ जायें और अपने रिश्तेदार का सेर भर घी बचायें यह बात उनके स्वभाव के अनुकूल थी ।

टींबा गाँव में पहुँचकर उन्होंने तय किया कि किसी के घर जायेंगे नहीं । भगा मनोर के समधी का घर उनमें से किसी ने नहीं देखा था । एक लड़के से पूछा, किन्तु उसे भी नहीं मालूम था । गली में से गुजर रहे एक बुजुर्गने अपनी तरफ से पूछा—"आओ पटेल, राम-राम, कौने गाँव के हो ? मूलजी ने जवाब दिया—"हमका नाही चीन्हो ? गोकुलिया के पभा मुखिया ।" पभा ने तुरन्त जोड़ा—"अब तो भैया, सबही तुमका चीन्हे । इ हैं रमण मास्टर के बुढऊ – मूलजी ।"

इस तरह स्वागत करने वाले को पभा मुखी न पहचानते हों यह उन्हें मंजूर

न था। "तुम अपने मगनलाल के काका तो नहीं ?" अनुमान सही निकला। रामजी मगन अमथा के तीसरी पीढ़ी के काका होते थे। जब से महाभोज हुआ है तब से इसी रूप में पहचाने जाएँ यह उन्हें पसन्द था। पहले की बात दूसरी थी।

रामजी पाँच-छः दिन से एक बार भी खेत में नहीं जा सके थे। वैसे तो वे किसी का हाथ-पाँव उतर गया हो तो ठीक करके बाँध देते और कहीं हाड़-गाड़ तो नहीं टूट गया, यह बता देते थे। किन्तु उनकी ख्याति एक वैद्य जैसी ही थी। सिंदूर झरता है इस बात की प्रतीति भी सबसे पहले उन्हें ही हुई थी। माताजी के सामने दीया जला देने की सूचना भी उन्होंने ही दी थी। दूसरे दिन शाम को सारा गाँव एकत्र हो गया था लेकिन तब सिन्दूर नहीं झरा था। तीसरे दिन रामजी बुढऊ जाकर बैठे और माणेक घर से ओसारे में आयी कि उसकी हथेली से सिंदूर उड़ने लगा था। उसके बाद तो जैसे अस्त होते हुए सूरज की एकाध किरण बादलों को भेदकर नीचे आए उसी प्रकार एक धार सी बन गई थी। रामजी बुढऊ ने पगड़ी का एक कोना बिछा रखा था। सवासेर सिन्दूर बाँधकर वे घर आये थे। सिन्दूरवाली पगड़ी एक सन्दूक में रखकर वे मगन अमथा से मिलने निकले थे। वह दूसरे के घर बैठा था, वे वहीं पहुँचे और माणेक के आँगन में मंडप बाँधने के लिए बाध्य किया था।

"बिना देखे मै कुछ नहीं करूँगा।"

'मैने देखा वह गलत है ?"

"काल साम का सारा गाँव एक्ट्ठा होय के तो भजन गाइस रहा, काहे नाही गिरा रहा सेंदुर।"

"अस कहूँ सबका माता के दरसन होत है ? ई हम अबहीं गये रहे तो पगड़ी के खूँटे में कम से कम सवासेर सेन्दूर बाँध लाइन है। चलो बताई।"

मगन अमथा ने रामजी बुढऊ से पगड़ी दिखाने के लिए मना किया। ऐसी बात में वहम करना अच्छा नहीं है। मंडप बंधवा देने में क्या हानि ? दो-चार दिन के बाद सिन्दूर झरना बन्द हो जायेगा तो मंडप समेट लेगे।

दीपक और थाली सामने रखकर बैठ रहने के लिए माणेक तैयार नहीं थी। रामजी बुढऊ ने उसे बड़ी मुश्किल से मनाया था। उन्हे एक ओझा रबारी ने बताया था कि सिन्दूर सात दिन तक गिरेगा। जो लोग दरशन कर जायें वे भाग्यशाली। फिर तो माताजी चली जायेगी। यह बात सुनकर माणेक को बड़ी मजबूरी में तैयार होना पड़ा था : घर-खेत का सारा काम उसकी माँ के सिर पर आ पड़ा था।

दो दिनों से माणेक एक ही जून खाना खाती थी। शाम को मात्र दूध पीती थी। सातवें दिन वह निराहार उपवास करने वाली थी। ये सारी बातें बताते-बताते रामजी बुढऊ सबसे पहले उन दोनों मेहमानों को अपने घर ले गये। चाय पीकर दर्शन करने निकले।

टींबा से सोमपुरा की राह में पाँव रखते ही मूलजी ने कहा—

"हम तो सेन्दुर झरत नाहीं देखा।"

"थाली भरी नाहीं रही ?"

"मुला ई तो... का मालूम कि..."

"अस सक नाहीं कीन जात भले आदमी, माताजी नाराज होय जाँय तो..."

"सक तौ मन मां बिलकुल नाही है । ई तो माता के हथेली से सेन्दुर झरत देखित तो केहू से बात करत बनत ।"

मूलजी ने पगड़ी में बंधी सिन्दूर की गाँठ खोली–

"देखो-देखौ मुखी, ई सेन्दुर कै रंग......"

"सेन्दुर जैसे है न ।"

"हमै तो कुछ अलग लागत है ।"

"तौ फिर तुमका मोतिया बिन्द होय गवा है ।"

"अरे नाहीं भले आदमी, तुम जरा आँखी से ध्यान से देखौ ।"

"रंग अलग होय तो सेन्दुर काहे है ?"

मूलजी चुप हो गये । गाँठ बाँधकर पगड़ी का सिरा लपेट दिया ।

29

सारंग के बाजार में गुजरते समय हर बार की तरह आज भी पभा मुखी की नजर पशाभाई की कोठी की तरफ गयी । रमण और हीरूभाई को भी वहीं बैठा देखकर उनके पाँव स्थिर हो गये ।

"देखौ मूलजी । केहू कै निगाह पड़त है इधर ? भानजे कै, तुम्हरे रमण कै कि पशाभाई कै—केहू क पड़ी है अपनी तरफ देखे के ?"

"अरे मामा, आप !" हीरूभाई उठकर सीढ़ियों तक आये । छत की कड़ी से लटकती जंजीर पकड़कर उल्लसित होकर झुकते हुए बोले–

"अरे मुखी आउ, आउ ।" पशाभाई ने तकिया का सहारा लेते हुए गद्दी पर ठीक से जमते हुए कहा ।

"देर होत है, जाई ।" पभा मुखी के बदले मूलजी ने उत्तर दिया ।

कुछ नहीं कहूँगा तो पिता को बुरा लगेगा यह सोचकर रमण भी दोनों से ऊपर आकर बैठने का आग्रह किया । पशाभाई ने एक ओर खिसकते हुए दोनों बुजुर्गों को बैठने की जगह कर दी । वे दोनों थोड़ी देर बैठे फिर इधर-उधर की बातें करके चले गये । ये लोग बैठे थे । मेहसाना से पूनमचन्द आने वाले थे । लेकिन पशाभाई को पूनमचन्द का इन्तजार नहीं था । उन्हें लग रहा था कि समस्या की जड़ में तो हीरूभाई हैं ।

"तो हम लोग पूनमचन्द की राह देखते रहें कि बात आगे बढ़ायें ?"

"यूँ आपको उन्हीं के साथ बातें करनी हैं । मैं तो आपके सामने चुनाव लड़ूँगा नहीं । लड़ भी नहीं सकता, जब तक सेवादल में हूँ......"

हीरूभाई की बात को काटते हुए रमण ने कहा—"यानी आगे चलकर हीरूभाई राजनीति में पड़ेंगे सही।"

"ये पड़े या नहीं, हमें तो उनकी सलाह के अनुसार ही चलना है। हम ठहरे सांसारिक आदमी और यह तो सही अर्थों में जनता के सेवक हैं।"

"अब कृपा करके आप मेरे बारे में बोलने के बजाय मुद्दे की बात करें।" हीरूभाई जैसे ऊबते हुए बोले।

"मुझे लगता है पशाभाई हमें यही समझाना चाहते हैं कि पूनमचन्द उनके विरोध में खड़े हैं यह किसी के हित में नहीं है।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है रमणलाल।" पशाभाई ने नम्र होते हुए कहा—"कोई व्यक्ति मेरे विरुद्ध पक्ष का चुनाव लड़े, लड़ सकता है। महात्माजी की सलाह के विरुद्ध सुभाषबाबू चुनाव नहीं लड़े थे? और यह पूनमचन्द तो मेरी ही मदद से आगे आया है। मुझे दुःख है तो मात्र इस बात का कि मेरा ही दूध पीकर बड़ा हुआ ..."

"आप जितना समझते हैं उतना हीन वह नहीं है।"

"तुम में जितने गुण हैं उतने उसमें होते हीरूभाई तो......"

"मैं उसे अपने आपसे अच्छा मानता हूँ।"

"वैसे तो मध्यकाल के सभी सत सारी दुनिया को अपने से अच्छा मानते थे।" रमण ने परिहास किया जो इस समय हीरूभाई को पसद न आया।

"देखो पशाभाई," थोड़ा आगे खिसकते हुए हीरूभाई बोले—"आपको पूनमचन्द के बारे में कुछ कहना हो तो वही कहो जो सच हो। आप यदि उससे प्रार्थना करेंगे तो वह चुनाव नहीं लड़ेगा इसका विश्वास मै आपको दिलाता हूं। किन्तु एक ओर तो आपको निर्विरोध चुनाव जीतकर जिले तक पहुँचना है और दूसरी ओर आप पूनमचन्द के ऊपर निरन्तर आरोप लगा रहे हैं। आप जानते हैं कि वह कितना अच्छा आदमी है। फिर भी आक्षेप किए जा रहे हैं यह मुझे पसद नही है।"

"पूनमचन्द मेरे विरुद्ध प्रचार करे इससे तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है।"

"क्या प्रचार किया है उसने?"

"गत सप्ताह वह सांकलचन्द से कह रहा था कि पशाभाई जिले का सबसे बड़ा काला बाजारिया है।'

"विशेषण सांकलचन्द ने लगा दिया होगा। वैसे आप काला बाजारिये नहीं हैं ऐसा तो कोई नहीं कह सकता।"

"साकलचन्द कौन है?" बात को दूसरी ओर मोड़ने के आशय से रमण ने पूछा।

"तुम नहीं जानते।" हीरूभाई ने जल्दी से कहा और दूसरा आक्षेप जानने के आशय से पशाभाई का मुँह देखने लगे।

पशाभाई बहुत गंभीर थे।

"बात बहुत सीधी-सादी है। तुम्हें यदि कांग्रेस के आदर्शों का पालन करना है तो कार्यकर्ताओं की सभा में प्रतिज्ञा लेकर डेलीगेट बनो और फिर अपनी योग्यता के अनुसार जिला कांग्रेस के प्रमुख बनो।"

"तुमने बहुत सीधी-सी शर्त रखी। गाँधीजी के प्रभाव में आकर कइयों ने ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ले ली थी। लेकिन बाद में ....." रमण की बात पूर्ण हो उसके पूर्व ही पन्नाभाई हँस पड़े।

रमण उठ खड़ा हुआ।

"पूनमचन्द की राह नहीं देखनी ?" पन्नाभाई ने कहा।

"मुझे तो काम है।"

"तो हीरूभाई तुम बैठो। मास्टरजी को देर हो रही हो तो उन्हें जाने दो।"

रमण के जाने के बाद, पलभर चुप रहकर पन्नाभाई ने उसके प्रति जिज्ञासा प्रकट की। यह लड़का तुमने अच्छा पकड़ा है। बोलने में दबंग है लेकिन अभी कच्चा है। बड़ों की उपस्थिति में थोड़ा ध्यान रखकर बोले तो ठीक है। कभी-कभी तो मेरा भी ख्याल नहीं रखता। तुम उसे आगे जरूर लाओ लेकिन उसे आसमान पर मत चढ़ा देना, नहीं तो किसी दिन बुद्धि और व्यापार दोनों का दीवाला निकाल देगा।" हीरूभाई ने सबकुछ सुनकर इतना ही कहा—"कुछ बातूनी तो ज्यादा है। है काम का।"

रात्रि का भोजन करते समय अचानक हीरूभाई के मस्तिष्क में एक विचार कौंधा-"मैं रमण को साथ लेकर आया था और अकेला जाने दिया। वह अभी घर नहीं पहुँचा होगा और मैं खाने बैठ गया।"

दूसरी ओर गोकुलिया की राह पर चल रहे, जूते की नोक पर छड़ी बजाते हुए रमण को रह-रहकर एक ही विचार सता रहा था कि मैं हीरूभाई को छोड़कर चला आया हूँ। थोड़ी देर से घर पहुँचा होता तो क्या हर्ज हो जाता ? इधर अंधेरे में किसी को मालूम हो कि मैं जा रहा हूँ और जेब में पैसे होंगे इस आशा से गला दबा दे तो ? यह रास्ता देर रात गए सलामत नहीं रहता।

गलबा को, भेजने की बात मैंने मान ली होती तो ठीक था। हालाँकि ऐसी छोटी-छोटी बातों में कायरता दिखाना अच्छी बात नहीं है। यदि गलबा न डरता हो तो मैं क्यों डरूँ ? मुझसे तो वह तीन वर्ष छोटा है। शरीर भी तो मुझसे अधिक मजबूत नहीं होगा।

इधर वह कुछ खोया-खोया रहता है। काम न हो तो नजर भी नहीं मिलाता। कहीं कर्ज वगैरह तो नहीं लाद लिया सिर पर ? उस दिन शाम को चेला जो कहता था वह कहीं सच तो नहीं है। उसके पास से गलबा ने रुपए दो रुपए लिए भी हों। लगता है चार-छह दिन में महफिल जमा लेने की आदत पड़ी है। कोई बात नहीं। सुखड़ी खायेगा तो तंदुरस्ती बनेगी। हालाँकि इन दिनों वह कुछ ढीला दीखता है।

अचानक उसे हेती के शब्द याद आये–

"एक दिन रांड तखत कहत रही कि, मुई रांड झूठें कहत रही होय, मुला हमसे तो कसम खाय के कहत रही कि उ नहाय बैठ है ई देखके गलबा भैया सीधे चले के बदले तिरछी रखी खटिया क छुइके निकरे और बार-बार मुड़के देखत रहे। मुला तुम गलबा भैया क कुछ कहेव ना। गर्मी मां उनके दुलहिन के भेजि हैं न! ई तो होय। जब तक आदमी लैन बाहर न निकर जाय तब तक न बतावे क चहीं। नाहीं तो एक बार छेड़े गये पर हाथ मां नाहीं आवत।"

रमण घर पहुँचा तो मूलजी उसी की राह देख रहे थे। बोले–

"अतनी देर कौन जात है? हम तो आवे के विचार करत रहिन।"

"देर तो हो जाय, इसमें क्या हुआ?"

"तुमका तो कुछ नाहीं मुला हमार जिव घबराय लागत है।"

"अब कभी देर नहीं करूँगा।" कहते हुए रमण ने संक्षेप में बात खत्म की। फिर हाथ-पाँव धोकर खाने बैठा। गलबा के बारे में पूछा। वह खाकर सिवान चला गया होगा।

आज लालटेन और चिराग दोनों चूल्हे के पास रखे थे। रमण ने एक पुस्तक उठायी लेकिन रख दी और लेट गया।

वाली और मूलजी मेथी के लड्डू बना रहे थे। वाली ने लालटेन रमण के पास लाकर रख दी। मूलजी ने सूखे आटे से हाथ साफ किए बाद में मिट्टी रगड़कर खूब धोएँ। धोती के छोर से हाथ पोंछे। खाट के पैताने बैठते हुए बोले–

"काल टैम होय तो अपने बड़े ससुर कै समाचार लै आऊ।"

"हाँ भाई, जाय पड़े हाँ। ई सब खुसहाली उनहिन के परताप से है। हमरे तो पतोहू अतनी अच्छा आयी है कि पाँव पड़तै घर सुधर गा। हम मजाक नाहीं करित है हाँ भैया।"

रमण को लगा, सच बात है। जब से हेती ने घर में पाँव रखा है तभी से घर की हालत सुधरी है। नहीं तो जब कॉलेज में दाखिला लेने निकला था तो जेब में एक पैसा भी न था। नरसंगजी के मथूर बानेया के यहाँ उधार दिलायी रकम, हीरूभाई की मदद और उन्हीं की मदद से प्राप्त फ्रीशिप, बालूभाई के प्रताप से मिले ट्यूशन आदि की वजह से ही अन्तिम वर्ष लहर-मस्ती में निकल गया। चाहा होता तो लगे हाथ। एलएल. बी. भी हो गया होता।

किन्तु अब तो हेती पढ़ने जाने की अनुमति नहीं देगी।

वह सिर तक चादर खींचकर लेट गया। आँखें बंद करते ही गोकुलिया और सोमपुरा के बीच की दूरी खत्म हो गयी। उसे अपनी हथेली में हेती के हाथों का ताजा और कोमल स्पर्श महसूस होने लगा।

९

30

पिथू भगत का समाचार लेने जाने में रमण को कुछ समय लग गया। तम्बाकू से मुक्त होकर उसे हिसाब लिखना था। कितना माल सीधे-सीधे निकाल देना और कितने माल का बिल बनाना है इस बारे में उसे अहमदाबाद के व्यापारी की ओर से आवश्यक सलाह मिल गयी थी।

मूलजी ने जब दो-दो तीन-तीन बार कहना शुरू कर दिया तब उसने सोचा कि शनिवार को स्कूल से सीधे सोमपुरा जायेगा और रविवार को सारा दिन वहीं रहेगा।

उसका अनुमान था कि पिथू भगत बीमार है अतः घर पर ही होंगे। तीन बजे वह ससुराल पहुँचा तो देवू नंगी खाट पर बैठा लेसन कर रहा था और हेती छोटा चना कूट रही थी। वह पलभर दरवाजे के पास ही खड़ा रहा। गणित के सवाल में देवू का असली चेहरा छिप गया था और ऐसा लग रहा था जैसे उसका प्रतिबिम्ब मात्र दिखाई दे रहा हो। किन्तु रमण की नजर तो हेती की पीठ पर गड़ी हुई थी। दाहिने हाथ में लिया हुआ मूसल तीन फूट की ऊँचाई तक उठकर ओखली में पड़ता था। इस प्रकार एक तो धक्के का, दूसरे आवाज के बिखरने का – दोनों प्रकार के स्वर सुनाई पड़ रहे थे। आवाज तो थी ही, किन्तु मूसल जिस त्वरा से ऊपर जाता था और जिस सहजता से नीचे आता था उससे हेती के बायें कंधे और हाथ की रम्य मुद्रा सृजित होती थी। उसने कई स्त्रियों को कूटते हुए देखा था किन्तु उनके हिलते बदन सुशोभित नहीं होते थे और न ही कार्य के गौरव को ही बढ़ाते थे। जबकि यह–

सवाल का सही उत्तर मिल जाने से देवू उछल पड़ा और उसकी एक पुस्तक उछलकर हेती के पास जा गिरी। वह चौंकी। मूसल रखकर उसने क्रोध से देवू की ओर देखा और उसी क्षण चौखट पार कर अन्दर आ चुके रमण की निगाह उसकी निगाह से जा मिली। चेहरे पर के क्रोध की लालिमा हया में परिवर्तित हो जाने से अधिक ताजगी आ गयी।

अब तो देवू खाट से उछला और रमण का दाहिना हाथ पकड़कर झूल गया। उसका उल्लास या रमण हेती का नेत्र-मिलन दो में से कौन उत्कृष्ट था, कह पाना आसान नहीं।

"आइए।" धीरे से, नजरें झुकाकर, मात्र स्वयं ही सुन सके इस प्रकार हेती ने रमण का स्वागत किया। देवू बाखड़े पर रखे बिस्तर को उलट पलट कर एक गद्दा निकाल लाया। और खाट पर पड़ी हुई एक कापी को वहाँ से उठाये बिना ही गद्दा बिछा दिया। हेती ने वहीं ओखली के पास ही ठहरकर पैर में चिपके चने के छिल्कों को झाड़ा, धीरे से कपड़ों को झाड़ा और घर के भीतर चली गयी। किन्तु दूसरे ही क्षण वह पुनः बाहर आ गयी।

देवू पानी का ग्लास ले आया। हेती ने बाखड़े पर गद्दे व्यवस्थित करके पूछा–

"रस्ता भूल गयो हो का ?"

"भगत का समाचार लेने—"

देवू हँस पड़ा—

"वे तो ठीक होय गयें । अब आयो है समाचार लेय ।"

"फुरसत मिली तब आया ।"

"इहाँ आवे के फुरसत कहाँ मिलत है ?" हेती अभी भी वहीं खड़ी थी । आँगन से होकर गुजरने वाले की निगाह उस पर पड़े ऐसा न था । और रमण उसके सामने था । स्वयं रमण के सामने है इस अहसास में अब संकोच कम, आनंद अधिक था ।

"जरा तम्बाकू का हिसाब बाकी था ।"

"बहुत कमाई करत हौ ।"

"किसने कहा ?"

"तुम्हारे बुढऊ ।"

"उन्होंने तो अंदाज से कहा होगा । किन्तु दो हजार तो अवश्य होंगे ।"

"दो हजार ।" देवू ने हेती की ओर देखा और रमण की जेब फैलाकर देखने लगा ।

'रहै दे भई, तुहें तो ईयां से कुछ न मिले ।"

"ईमां तो कुछ नाहीं देखात । दु-तीन कागज हैं ।

रमण ने बनियान की जेब से रुपया निकाला—

"लो ।"

"अतना सारा ?"

"ले लिया जाता है । खर्च करना ।"

"काहे मां । हम तो माई का दे देब । ले हेती तू दे दिहिस ।"

देवू की इस उदारता पर रमण खुश हुआ । उसे याद आया कि जब वह छोटा था तब यदि कोई मेहमान दो पसे या एक आना दे जाता था और माँ ले लेती थी तो कितना बुरा लगता था !

"अपने बस्ता मां रख ले" हेती ने रुपया नहीं लिया, "माई के देय की जरूरत नाही है ।"

"लवा का आठ आना देब ।"

"उसको भी एक रुपिया दूँगा ।" रमण ने तुरंत ही निर्णय लिया "कहाँ गये लवजी ?"

"बुलाय लाई ?" कहते हुए देवू दौड़ पड़ा । देवू का इस तरह भाग जाना हेती को अच्छा नहीं लगा । उसने दाहिने हाथ का टेका बालड़े से लिया । चूड़ियाँ खनक उठीं ।

रमण उसी की ओर देख रहा था । हेती की नजर मिलती थी और झुक पड़ती

थी । दस–बारह फुट के अंतर में फैला हुआ मौन कितने ही भावों का आदान-प्रदान कर रहा था । हेती अपनी विवशता की गहराई में उतरती जा रही थी और रमण की कल्पनाओं में रह–रहकर अधीरता आ जा रही थी । खड़े होकर थाम लूँ उसके कंधे को ? प्रथम दृष्टि में दिख गयी, कंधे और गर्दन के बीच की कोमल ढलान का स्पर्श कर लूँ ? कुछ भी बोलने से मान भंग समझते ये होंठ, कहने वाली बातों को सूचित करने के पूर्व ही झुकती हुई आँखें ..यह एकान्त हम दोनों का ही है फिर–

अचानक हेती ने कुछ निर्णय किया और बाखड़े के पास से दरवाजे तक आयी और चौखट का सहारा लेकर गली की ओर देखने लगी ।

गद्दे के नीचे दबी हुई कापी को बाहर निकालकर रमण अक्षरों को देखने लगा ।

"सुन्दर हैं ।"

हेती ने घूमकर उसकी ओर देखा, एहसान से ।

"तुम भी सुन्दर हो ।"

वह प्रफुल्लित हुई । न मालूम क्यों उसकी इच्छा हुई कि जाकर इनके कान उमेठ दूँ । दूसरे ही क्षण उसने मुँह घुमा लिया और झाँककर दरवाजे के बाहर देखा । देवू लवजी का हाथ पकड़कर ला रहा था । इस समय रमणजी आये होंगे यह बात वह मानने के लिए तैयार न था क्योंकि उसकी आँखमिचौली का खेल अपनी चरम सीमा पर था ।

"रमणजी आये हैं हेती ?" लवजी ने दूर से ही पूछा, जरा रूआब से ।

हेती कुछ न बोली । लवजी अकुलाया ।

"झूठे हो तुम ।" कहकर वह देवू से अपना हाथ छुड़ाकर भागा ।

"लवजी ।" हेती की आवाज सुनकर वह रुक गया । हेती ने इशारे से उसे बुलाया ।

"क्या है ?" पूछता हुआ रमण दरवाजे तक आया । अन्दर घूमकर जा रही हेती का कंधा उसके सीने में जरा–सा छू गया, जरा–सा ही......

रमण की नजर दृष्य में थी और मन आकस्मिक रूप से अनुभवित भाव में ।

आँगन तक वापस जा चुका लवजी रमण को देखकर दौड़ा और सीढ़ियों से कूदते समय गिरते–गिरते बचा । रमण ने उसे दोनों हाथों से उठाकर खाट पर बिठाया । फिर जेब में हाथ डालकर नोटों का बंडल निकाला और जो सबसे नया दिखने वाला एक रूपये का नोट था लवजी को दे दिया ।

इतने में दोलीमाँ आ गयीं । रमण ने पहचाने बिना ही उन्हें राम–राम किया । दोलीमाँ ने टींबा की बात चलाई । रमण अनिच्छा से सुनता रहा । देवू ने बुढ़िया से पूछा–

"तुम दरसन कर आयी दोलीमाँ ?"

"दरसन जोगमाया के हम नाहीं करे चाहत तो दुई बोल [illegible] हम टेंवा जाब ?"

"तुम तो बहुत लोगन के सेन्दुर झरत देखे होबौ ?" देवू ने फिर पूछा ।

"काहे के सेन्दुर ! सब धूर राखी । नट लोग नाही जादू देखावत हैं ! वैसे कौनो बाबा खुस होय के दुई बोल बोल गवा होय तौ सेन्दुर तो झरे । ईमां कौन बड़ी बात है । सब पागल हैं, बौडम ।"

हेती ने छोटी सी कटोरी में चाय दोलीमाँ को दी ।

"मेहमान क देव भाई ।"

देवू ने रमण के आगे कप रख दिया था । यह देखकर दोलीमाँ ने कटोरी मुँह से लगाई । फिर ठंडी होने के लिए नीचे रख दी और मक्खी न पड़ जाये इस-लिए ऊपर हाथ से पंखा करती रहीं ।

चाय पीकर रमण खेत में जाने के लिए तैयार हुआ । लोटा में हेती ने डोरी का फुंदा कर दिया । ऊपर से प्याला ढंक दिया । लवजी की इच्छा थी किन्तु उसे लोटा पकड़ने को नहीं मिला । देवू ने अधिकार और कर्तव्य दोनों भावनाओं के साथ कार्यभार संभाला ।

लवजी ने चलते-चलते एक कुतिया पर ढेला फेंकने के लिए देवू की संमति चाही । देवू ने चेतावनी दी कि जब तू अकेला होगा, कुतिया तुझे काटेगी । "वह ससुरी बहुत भौंकती है" यह कहकर लवजी आगे हो लिया । देवू ने समझ लिया कि उसके पिल्लों को यह परेशान करता होगा । लवजी की अपनी राय से वह उन बच्चों को खेलाता है, सताता नहीं ।

खेत में पहुँचकर देवू ने चाय का लोटा बरोसी की राख में रख दिया ।

"यह क्या मेथी बोई है ?"

"देवू हँस पड़ा" तुम भी रमणजी, अतना भी नाहीं पहिचानते । यह तो रूजका है रूजका । रमण ने सुन रखा था कि यह पशुओं के चारे के काम आता है ।

देवू जब तक किसी को मेहमान के आने की सूचना दे उसके पहले ही नरसंग की निगाह पड़ चुकी थी ।

"अरे आऊ रमणजी ।" दूर से ही उसने प्रेमभरी हाँक लगायी । कुएँ के पास खाट पर सो रहे पिथू भगत ने सुना तो बैठे और खोदी गई शकरकन्द को एकत्र कर रही कंकू ने अपने सिर के पल्लू को ठीक कर लिया ।

रमण भगत की ओर मुड़ गया । देवू चाय का लोटा लेकर उसके पीछे-पीछे गया । बुढऊ कुछ सुस्त दिखाई पड़े । मेहमान बिल्कुल नजदीक आये इसके पहले ही उन्होंने खड़े होकर गुदड़ी बिछा दी ।

"अरे आऊ ब्योपारी ।" पिथू भगत ऐसा मजाक करेंगे इसकी रमण को कल्पना भी न थी ।

"राम-राम" करते समय वह थोड़ा सा झुका। भगत के अन्तर्मन से आशीर्वाद निकला। उनके होंठ फरके और पुन: बन्द हो गये। रमण के कंधे पर उन्होंने अपना लम्बा, वृद्ध हाथ रख दिया।

"बैठो तकिया के ओर बैठो।"

रमण को लगा कि भगत उसे अधिक ही सम्मान दे रहे हैं किन्तु वह विरोध कैसे करे वह उसकी समझ में नहीं आया।

"अब ठीक है?"

"और तो सब ठीक है मुला अवहीं देहो मां हिम्मत वापस नाहीं आयी है।"

"अब तो उम्र भी हो गयी है न?"

"उम्र तो कुछ नहीं, पहले के जमाने में ऋषि-मुनि तो कतनी उम्र तक जियंत रहे? हम दस साल पहले एक सौ दस साल के साधु देखा रहा। चेहरा देखौ तो तुम्हरे जैसे, खात का रहा जानत हौ? छटाक भर चाउर और अतनी दाल।"

मानने जैसी बात न थी, किन्तु विरोध करने से लाभ ही क्या था? उसने मात्र आश्चर्य प्रकट किया-"अच्छा!"

"तुमका लागत होये भला अस होत है? मुला हम मानित है। हमका जरा कबौ-कबौ ज्यादा खाय लेय कि आदत है नाहीं तो जतना कहौ हम जी के बतायी।"

"आदमी को बुढ़ापे में जीवन से ऊब नहीं होती?" पिथू भगत को कभी ऊब नहीं आई। क्या दुःख है? क्या कमी है? देखिए ये सारे रंग खेत में खिले हैं। अभी दिन ढलने लगेगा और आम के उस पेड़ की चोटियाँ चमकने लगेंगी। देखते रहेंगे प्रभु की लीला। भगत को इन दिनों थोड़ा सा ऊँचा सुनाई देता है सब कुछ। घी-दूध खाना बंद नहीं किया। इस बार ऐसा हुआ कि गटा पुरोहित भगत को सुखड़ी खाने बुलाये गये। घी तो हिसाब से था मगर आटा जरा कच्चा रह गया था। अपच होने से बुखार आ गया, वरना पूछ लें नरसंग से, कभी गिरने-टकराने से हड्डी टूटी होगी पर बीमारी की तो बात ही नहीं।

भगत को अपच हो जाय इतना खाने का शौक है यह जानकर रमण को आश्चर्य मिश्रित खुशी हुई।

देवू खाट खींच लाया था। लवजी ने मदद की थी। वे दोनों खाट को खींचते हुए लाये थे।

थोड़ी ही देर में टींबा की काछी औरतें शकरकन्द खरीदने आ गयीं। नरसंग तराजू-बाँट लेकर बैठ गया। कंकू हाथ-पाँव धोकर साफ पानी की कुंडी के पास पानी की पतीली माँजने बैठी। देवू समझ गया। माँ शकरकन्द उबालना चाहती है। वह बाल्टी लेकर गया। नरसंग ने काछिनों को तौलकर देने के पहले सबके खाने भर को एक बाल्टी शकरकन्द छाँटकर निकाल लीं।

पिथू भगत खड़े होकर ईंटों का चूल्हा तैयार करने लगे। कंकू को अच्छा लगा। फिर भी उसने कहा-

"तुम बैठो बाबा, हम सब करित है ।"

"ईमा कहाँ हमें काँटा गड़त है ।"

"अरे, मेहमान का लागे कि हम बुढ्ढे पास से काम कराइत है ।"

"आदमी चलत-फिरत रहै तौ देह अच्छी रहत है ।"

"मेरे पिताजी तो ऐसा नहीं मानते। घूमने को मिले तो घूमते हैं और बैठने को मिले तो बैठे रहते हैं ।"

"खेते का तो अब सब गलबाजी सँभारत होई है?" कंकू ने पूछा।

"हा, मजूरी करने में पीछे नहीं हटता । लेकिन काम बताना पड़ता है, नहीं तो भूल ही जाए।"

चूल्हे पर पतीली में अदहन रखा गया। उसमें साफ करके शकरकन्द डाली गयी। नरसंग काछिनों से मुक्त होकर बैठा ही था कि लवजी चिल्लाया-"हैं! हेती आयी।"

कंकू किसी विचार में डूब गई।

रमण जैसे उपकृत हुआ। उसे विश्वास हो गया कि यह स्वयं मुझे अपने से दूर नहीं रहने देना चाहती।

कंकू उसकी ओर चली गयी। बोली-"तू न आयी होत तो ठीक रहा।" भैंसों के लिए चारा काटते हुए उसने कहा, "घर अच्छा नाहीं लाग, का करी अकेले बैठे-बैठे? चना छटैके बाद पानी भरा फिर आइन।"

"अच्छा भवा आइव तो। गंजी उबाले क रखा है। अब सबही देर से आये तबौ ठीक है। ई चारा डारे के बाद तू थोड़ा भैंस का पानी पिला।"

पिथू भगत धीरे-धीरे ईंधन डालते जा रहे थे। लवजी ने एक-दो बार संकेत किया कि शकरकन्द उबल गयी होंगी। देव कुछ न बोला था हालाँकि भूख उसे भी जोर से लगी थी।

बुढऊ की दलील स्पष्ट थी, "ई ढक्कन एक बार खोल देई, भाप उड़ जाये तो पाकत देर लागे।"

कंकू भैंस दुहने बैठ गयी। नरसंग पास ही खड़ा रहा। हेती शकरकन्द की पतीली उतारने लगी। रमण इस समय हेती का आकार देख रहा था-उसका झुकना, आँचल को हाथ में पकड़कर पतीली को नीचे उतारना, पानी का छानना और अंत में बैठ जाना-यह सब वह देख रहा था।

थोड़ी ही देर में सारा परिवार वहाँ एकत्र हो गया था। देवू और लवजी ने दूध के साथ शकरकन्द खाई। भगत कपड़े की पोटली में बंधी छप्पर में सहेज कर रखी गुड़-चाय ले आये। चाय बनने लगी।

इतनी मीठी शकरकन्द!

तारों का प्रकाश खेत में उतर आया था। भगत बुरादा डालकर अग्नि जला देते थे। ज्वालाओं में चेहरे दीख जाते थे। रमण वहाँ बैठे हुए प्रत्येक आदमी के

साथ आत्मीयता का अनुभव कर रहा था। कंकू और हेती के उठने के बाद नरसंग ने कहा—"चलो रमणजी, हम भी उठें। लोग कहेंगे कि मेहमान का अतनी देर तक खेते मां बैठाय के रखे हैं!" रमण ने एक क्षण पूर्व ऐसी कल्पना भी नहीं की थी कि इस अपूर्व सुखमय परिस्थिति को छोड़कर अचानक उठना पड़ेगा।

31

"ओ हो! रमणजी आये हैं। कहे क पड़े माई, रमणजी आये हैं!!" नरसंग के आँगन में पाँव पड़े उसके पूर्व ही घेमर बोला। उसकी आवाज सारी बस्ती में पहुँची होगी और जो लोग फुरसत में बैठे होंगे उन सबको सुनाई दी होगी।

घेमर सूर्यास्त तक हल हाँककर अभी अभी घर आया था। और उसके पिता फता ने खाकर जो अध धोया तसला रख दिया था उसे ठीक से धोकर माँ उसमें खाना परोसे इसकी राह देख रहा था। इतने में हलवे के बनाए जाने की सुगन्ध आयी। "कीके घरे मेहमान आये हैं?" घेमर के पूछने पर चेहर ने कहा—"ऊतो हेतिया के पटेल आवा है, वही मास्टर।" "कौन रमणजी? तो जरा मान से बुलाव, अस कजर यस कब तक रहनी?" घेमर ने माँ को आज पहली बार कंजर नहीं कहा था। किन्तु चेहर को पहली बार बुरा लगा और साथ ही गुस्सा भी आया।

"ई करछी मूडे मां मारब, भूँके बिना या तो बैठे रह।" चेहर ने भात से सना हुआ एक हाथ जितना लम्बा लकड़ी का करछा बाहर निकाल भी लिया।

"इ बुढाय गयी तबौ वैसे के वैसे रही। रमणजी ने तुहार का बिगाड़ा है कि दुकारा तूने?" घेमर ने तसला उसकी ओर ठेलते हुए जरा धीमी आवाज में कहा।

चेहर ने गुस्से ही गुस्से में पाव भर के बदले आधा सेर दूध घेमर के तसले में डाल दिया। फिर ध्यान आते ही बड़बड़ायी—

"भवानी काटा, पूरा तसला भर गवा तबौ नाहीं नाहीं करत?"

"तसला तौ महेरी से भरा है। दूध तो ऊपर है।" कहते हुए घेमर हँसा: फता भी हँसा। चेहर का गुस्सा भी घेमर के नेवाले के साथ मन्द पड़ गया। खाने के बाद घेमर बोला—

"माई, हम जरा नरसंग काका के इहां जाय के आइत है।"

"मुला मेहमान का तो खाय ले दे।"

"काका बीड़ी ले गये औ हम का तलब लाग है।"

"तू तो भई धान और धूनी के किनारा अलगे नाहीं होय देते। जा, अपने उमा काका के घरे चिलम पीके आये।"

"अपने उनके साथ कहाँ बोल-चाल है?"

"अब मेल होय गवा है। काल तुहार जतन काकी माठा माँगे आयी रही।"

"ओहो, तो कहती काहे नाहीं।" कहते हुए घेमर वहाँ के लिए चल पड़ा।

थोड़ी देर वहाँ बैठकर उसने काकी से दुअन्नी माँगी। उसे जेब में रख घर से बाहर आ गया। अभी वह दो कदम भी नहीं चला होगा कि ज़ोर से बोला—

"अरे! रमणजी आये हैं। कहै क पड़े भाई रमणजी आये हैं।"

"सुनो, घेमरजी आये।" लवजी बोला। देवू ने कहा कि ऐसा नहीं कहा जाता। बाहर से आये हुए मेहमानों के नाम के साथ ही "जी" लगाते हैं।

"तो हमरे नाम मां के "जी" लगाइस रहा?" लवजी ने पूछकर सभी को हँसाया।

घेमर ने थोड़ी ही देर में तो तमाम प्रश्न पूछ डाले। रमण संक्षिप्त जवाब दे रहा था। उनमें से कई को तो घेमर समझा भी नहीं होगा। किन्तु रमणजी बात को टाल रहे हैं यह बात उसने न मानी। उसका मानना है कि पढ़े-लिखे लोगों के जवाब देने का तरीका ही यही है। उसे इतनी देर में नरसंग से दो बार चिलम पीने को मिल चुकी थी, इसका भी संतोष था।

"चलो नरसंग काका, महादेव मां आवत हो न?"

"तुम जाव हम तो....।"

"उत्सव है हम केहू के, विरिया कहत रहा।"

"मेहमान हैं, तौ थोड़ा बैठव....."

"रमणजी न आउहैं उत्सव मां?" घेमर ने उठते हुए पूछा और कोई जवाब न पाकर सीढ़ियों से उतरते हुए कहा—"आयें वो दुई शान कि बात करि हैं।"

रमण ने सौजन्यता की वजह से कहा—"फिर मिलेंगे घेमर भाई।"

घेमर ने बाहर से पूछा—"तो फुरै तुम न औबो? देवू, तू इनका लै आवे तो असली हमार दोस्त।"

"यौ हम ले आई तो?" लवजी ने पूछा।

"तो तू हमार साहेब।" कहते हुए घेमर पहुँच गया। उमा, दोलीमाँ का बड़ा लड़का चेला, शहर में रहने वाला काला ये सब एक के बाद एक इस तरह आते गये कि नरसंग की मड़ैया भर गयी।

काला इस वर्ष से घर पर ही रह गया था और हर रोज दोनों भाइयों के बीच झगड़ा होता अतः दोली माँ के कहने से नरसंग ने उनका बँटवारा कर दिया था। इस दीपावली से उनके बीच बोलचाल थी।

"हम सहर मां जायके मजूरी कीन और तुम पढ़ेव।" काला ने दूसरी बार कहा। इस बार चेला बोल पड़ा। "जैस जीके भाग।" उमा को भी सूझा—"तबौ काला तो हम सबसे जादा भागसाली, कुछ समय तौ ईंके छाहें माँ निकला।"

"तो ईमां कौन कमाई?" कहते हुए काला ने जेब से बीड़ी निकाली। बीड़ी पर से बात तमाकू तक पहुँच गयी। भाव ठीक है यह जानकर सभी ने अगली फसल में दो-दो बीघा तम्बाकू बोने की सोची। "खेड़ा जिला के पाटीदार तमाकू बेचकर संपत्तिशाली हो गये हैं।" कहकर रमण ने उनका समर्थन किया।

"अपने तो व्यापारी घर के हैं फिर काहे के चिन्ता ?" काला ने रमण को अच्छा लगे इस आशय से कहा।

"मैं तो सब कहीं नहीं भी पहुँच पाऊँ। मगन अमथा को देना। मैंने सुना है कि वह भी तमाकू के धंधे में पड़ने वाला है।"

"हमरी तई तो पहले आप।"–चेला का कहना था कि बिरादरी का एक आदमी आगे बढ़े तो दूसरे पचीसों को सही राह दिखाए। उमा ने समर्थन किया–बाड़ होगी तो बेल चढ़ेगी। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। फिर सब चले गये। रमण उनमें से ठीक तरह से किसी को भी नहीं पहचानता था। काला को तो पहली बार ही देखा था। किन्तु उसने सबके साथ आत्मीयता का अनुभव किया। यह उन्हें इस प्रकार देखता रहा जैसे उनके प्रति आभार प्रकट कर रहा हो। ये लोग तो बिना सोचे-समझे बोल रहे थे किन्तु उनके प्रति हमारी भी कोई जिम्मेदारी है या नहीं ? हीरूभाई ने इस तरह की जिम्मेदारी अपने सिर पर उठाई है तो इसमें आदर्श की अपेक्षा वास्तविकता अधिक है। पूरी जाति में पहला पढ़ा-लिखा उनके जैसे ही व्यवहार करे नहीं तो उस व्यक्ति और समाज के बीच कितनी गहरी खाई आ जाए।

बतन के यहाँ से वापस आकर हेती दो खाटों के बीच से बहुत संकोच के साथ निकल गई। कमरे में जाकर माँ के पास बैठ गयी। थोड़ी देर पहले पानी पीने गया लवजी कंकू की गोद में सिर रखकर सो गया था. देवू को उम्मीद थी कि रमणजी उसके साथ अवश्य मंदिर में आयेंगे। रमण को भी लग रहा था कि थोड़ी देर के लिए बाहर चला जाये तो इन लोगों को भी कुछ खुलापन मिले। इसलिए ज्यों ही देवू ने उत्सव की बात निकाली वह तुरन्त खड़ा हो गया।

थोड़ी ही देर में वे मंदिर पहुँच गये। भजन मंडली के सभी सदस्यों ने खड़े होकर ऊष्मा से उनका स्वागत किया। राम जुहार की। घमला ने लालटेन की लौ बढ़ा दी। नरसंग आकर बैठा ही था कि घमला ने उसके आगे तबला खिसका दिया। नरसंग ने स्वभाव के अनुसार कहा–

"बजाना था न ?"

"बेकार मां खींच-खींचकर तोड़ देय क रहा ?" घेमर ने कहा।

नरसंग तबला चढ़ाते हुए बोला–"बीरा का हाथ सधत जात है।"

"अस तो ठचक-ठचक हमहूँ बजाइत है।"

घेमर ने व्यवस्थित बैठते हुए कहा। "मुला फटाफट बोले के काम तो नरसंग काका के।"

"फटाफट" देवू हँसा और घेमर की जाँघ पर कुहनी टेकता हुआ बोला।

"ठीक से बैठ भाई, नाहीं तो मजीरा लाग जाये।" घेमर ने ठंडेपन से कहा। किन्तु देवू वैसे ही बैठा रहा। नरसंग से निगाह मिलते ही वह सीधे बैठ गया और रमण की ओर ताकने लगा। आँख मिलते ही पूछा–

"गरबी आवत है ?"

"नहीं ।"

"पढ़ा-लिखा आदमी अस अपनी तरह गावत है ?" घेमर रमण को सम्मान की दृष्टि से देखते हुए बोला ।

'पढ़े-लिखे आदमी गावत है ई तो सुनेव है ।" धमला ने इस विश्वास से पूछा जैसे बैठे हुए लोगों में एक मात्र उसीने शिक्षित लोगों को गाते हुए सुना है ।

"चलौ गरबी बोलो ।" नरसंग के कहते ही मोहन ने ऊँची मधुर आवाज में मीरांबाई की गरबी छेड़ दी—

"झगड़ा लागा रे जमुनाजी के तीर ।"

रमण गरबी सुनते-सुनते सोचने लगा : गोकुलिया में भी एक ऐसी ही मंडली हो तो ? कुछेक तंबूरे वाले भगत अवश्य हैं किन्तु वे तो मात्र अपने पाँच-सात साथियों के साथ बैठते हैं । सारे गाँव के सो जाने पर गाना प्रारंभ करते हैं और सुबह लोगों के जागने के पूर्व खत्म कर देते हैं । इस तबले और मंजीरे की ताल में एक उल्लास है ।

भजन-मंडली के सदस्यो में कुछ ऐसे भी थे जो नरसंग के तबले की आवाज सुनने के बाद घर से निकलते थे । अनुपस्थिति के दंड की चिन्ता उन्हें न होती । आज भी लगभग ऐसा ही हुआ । दूसरी गरबी पूरी हो तब तक तो मंदिर के आगे घेरा बहुत बड़ा हो गया था ।

वे लोग बड़ी देर तक रास करते रहे । अभी वे रास बन्द करके बैठे ही थे कि इतने में पिथू भगत मंदिर की जाली के पास दिखाई दिये । इससे पहले एक अनहोनी हो गई थी :

रास खेलाने की बात सुनते ही घेमर मंदिर की कोठरी से पित्तल के डंडे ले आया । मंडली के बीच डंडे इस तरह रखे कि इनकी खनक सुनाई दे । घेमर को यह आवाज बड़ी प्यारी लगती ।

रास खेलने वाले सब खड़े हो गए थे । वे पंद्रह थे, दो डंडे बीच में पड़ रह गये थे । या तो एक खेलैया बढ़े या कम हो । मगर बैठ जाए कौन ? जो ठीक से खेलना न जानता हो । नरसंग ने कहा कि सभी एक सरीखे हैं । घेमर की राय थी कि धमाचाचा सबसे बड़े है वे बैठ जाएँ । धमा ने तर्क किया—क्या बड़े से भक्ति नहीं होती ? अब घेमर ने साफ कह दिया : खेलते-खेलते वे किसी को चोट पहुँचाते हैं । धमा ने सभी से पूछा, बिना संकोच बता दें, किसी को चोट लगी हो तो ?

घेमर अब समझा : धमा चाचा जान-बूझकर वैसा खेलते थे । खुद भी वैसा ही खेलकर बताएगा । उसका उत्तर सुनकर रमण भी हँस पड़ा ।

धमा ने देवू को रास खेलने के लिए खड़ा कर दिया । नरसंग को अचरज हुआ । देवू लय-ताल के साथ पैर रखता है । एक रास पूरा हुआ और अब देवू-लबजी की होशियारी को लेकर बातें शुरू हुईं । इतने में जीवन आ पहुँचा । उसे

देखते ही देवू ने रास के डंडे उसके हाथ में थमा दिये। वह जानता है कि सारे गाँव में जीवन सबसे बेहतर खेलता है। जमीन पर उसके पैर का ठमका देखते ही बनता है।

"तु ही खेलो भैया। जीवन ने कब उसके हाथ से पित्तल के डंडे लिए और देवू के पैर के पास जमीन पर सटाके से क्यों दो वार कर दिये—उस क्षण तो किसी को पता नहीं चला।

मंदिर के सामने प्रांगण में पीपल का ऊँचा पेड़ है। इसकी डाली पर घोंसला है। उसके अंडे खाने पीला सा चितकबरा साँप ऊपर चढ़ा था। वह देवू के पैर के पास गिरा था। जीवन ने इसे गिरते ही देख लिया और वह देवू के पैर की ओर मुँह कर सके इससे पहले ही मार डाला।

पुण्यशाली को बचाने ठाकुरजी ने सोते जीवन को जगाकर भेजा। इसमें किसी को शंका न थी।

साँप की इस जाति को किसान सबसे ज्यादा जहरीली मानते थे। इसके काटने पर आदमी पानी पीने को भी नहीं रूक पाता। रमण ने कुछ और ही पढ़ा था पर वह बोला नहीं। उसके देवू को अपने पास बिठाया और उसकी पीठ पर हाथ रखा।

नरसंग आनंद और चिन्ता के मिश्र भाव अनुभव कर रहा था। अचानक जीवन आ पहुँचे और देवू को बचा ले—इस घटना के पीछे उसका मन मँडराता रहा।

उसने महादेवजी से कह दिया अगर आज देवू को कुछ हो जाता तो मैं अपना सर—नरसंग सावध हो गया। भगवान की भक्ति की जाती है या इस तरह—

उसी पल पिथू भगत हाथ में छोटा सा डंडा लेकर आ पहुँचे।

यह क्या? बुढऊ? उन्होंने ध्यान से देखा। इस समय यहाँ?

"भगत आये।" धमा ने कहा। देवू खड़ा होकर उनके पास गया। भगत ने उसके सिर पर हाथ रखा।

भगत मंदिर के चौतरे पर बैठ गये। देवू उनकी गोद में। सब आपस में बात करने लगे, "बुढऊ का खेतं मां बैठे-बैठे सब देखात है। नाहीं तो इधर वे कहाँ आवत हैं। वे और उनके माला।"

भगत ने कहा कि गाना-बजाना अचानक बन्द हो गया इसीलिए उन्हें अचानक शक हुआ और वे चल पड़े। यह सुनकर लोगों ने सोचा—बुढऊ के मन जरा भी बड़प्पन का भाव नहीं है। पिथू भगत तो भाई पिथू भगत ही हैं।

"चल मोहन, आपन गरबी शुरू कर।"

मोहन के एक पंक्ति गा लेने के बाद ही नरसंग का हाथ तबला पर पड़ा। फिर तो लय और ताल में लहराता हुआ, रात्रि के और शीतल होते जा रहे वातावरण में फैलता हुआ, संतुलित और भरा-भरा उल्लास—

"हरि बिन कुछह न होय रे ऊधवजी ।
प्रभु बिन पल न रहाय रे ओधवराय हमको ।
थोड़े-थोड़े जल में मछरिया रे तड़पे ।
अलक तलक जीव जाय रे ओधवराय हमको ।"

देवू और रमण जब घर पहुँचे तो हेती जाग रही थी ।

32

बातचीत हो पायी होती – हेती हमेशा सोचती रहती । रमण रविवार पूरे दिन सोमपुरा में रहा । दो बार तो वे दोनों अच्छे-खासे समय के लिए अकेले भी पड़े। देवू और लवजी की उपस्थिति में तो बात करने में सहयोग भी मिलता था । किन्तु न तो कुछ कहा गया न पूछा गया । नजर मिलती रही । उनकी उपस्थिति में अंतर उमगता रहा ।

रविवार गया और सोमवार आया । रमण देवू के साथ बैठकर बातें करता रहा । बीच-बीच में लवजी भी टपक पड़ता । घर के भीतर खाट पर बैठकर वह जो कुछ बोला था वह सब हेती ने सुना था भले वह कोठरी में खड़ी हो, चूल्हे के पास बैठी हो या दरवाजे से झांक रही हो । कोई बात कहने का मन करता था किन्तु होंठ नहीं खुलते थे । वह ससुराल में होती और इतने समय तक साथ रहे होते तो चुभने वाले वाक्य भी बोल गयी होती । यहाँ वह आभारी थी । कम से कम आये तो सही । और उस पर भी दो रात यहाँ रहकर गये । यहाँ तो सब उन्हें कितने सम्मान से देखते हैं । हेती को संतोष था, आनन्द था इस तरह साथ रहने का । किन्तु उनके यहाँ आने का महत्त्व तो उनके चले जाने के बाद उसकी समझ में आया ।

जब वह देवू के साथ सारंग की ओर जाने के लिए निकला और, कंकू तंदुरस्ती का ख्याल रखना, सँभालकर काम-काज करना, वाली बहन को आशीर्वाद कहना– आदि कहने लगी । मुहल्ले की अन्य स्त्रियाँ भी उसके साथ हो लीं । हेती को लगा वह स्वयं कितनी बातें करना चाहती थी ।

वे गाँव के किनारे पहुँचे होंगे, अब सारंग की लीक पकड़ी होगी । देवू आगे होगा और वे पीछे – उसका मन अन्त तक रमण के पीछे लगा रहता किन्तु माँ ने बात में लगा लिया । फिर खेत में जाना था ।

कृष्ण जन्माष्टमी बीत जाने के बाद चारे का बोझ उठाने के लिए खेत में जाना पड़ता तब उसे जैसा लगता कुछ वैसा ही आज लग रहा था । किन्तु बोझ उठाकर चलने में तो स्फूर्ति रहती थी, आज तो पाँव उठाने में मेहनत पड़ रही थी । घर से निकलते समय चप्पल पहनना भी वह भूल गयी थी ।

सामने से धमला जल्दी-जल्दी चला आ रहा था । ऐसा लगता था जैसे खोये हुए पशुओं को ढूँढ़ रहा हो । वह बोला–

"रमणजी घरे हैं न बहिनी ? काल्ह हमैं उनका चाय पियावे ले जाय के रहा मुला मौका नाहीं मिला। आज सीधे तुहरे खेत मां गइन। उहाँ भगत के साथे बात करे लागिन देर होय गयी।" चलते-चलते इतना बोलकर हेती के सामने खड़े होकर उसने फिर पूछा—"घर ही हैं न ?"

"गये वे तो।" शर्म से दबी हुई आवाज से कहती हुई हेती आगे चली गयी।

आखिर में घमला ने तय किया कि यहाँ से सारंग की चौक तक जाकर रमण को पकड़ा जा सकता है। और अगर चाय न पीयें तो पान तो खिलायें ही। भगत का संबंधी मेरा संबंधी और वैसे भी ऐसे आदमी के साथ अच्छे संबंध हों तो कभी काम आ सकते हैं। ठंडी की जुताई, बरसात में घास देती है।

घमला की तेज चाल रास्ते में मिलते लोगों से बात की वजह से कम हो जाती थी। जब से वह वेली को लाया है तब से उसका बात करने का तरीका भी बदल गया है। पहले वह अपनी बात कहता भर था, सामने वाले की सुनता भी न था। नीरस बात हो तब भी धैर्यपूर्वक खड़ा रहता था और कभी-कभी सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए मामूली-सी बातों में भी पूछ-ताछ करता रहता था। किन्तु यह नई आदत आज उसे बुरी लगी। वह रमण तक नहीं पहुँच पाया।

बाजार में पहुँचने पर एक दूसरे आकर्षण ने उसे रोक दिया। तुरिया और कचरिया अपनी दूकान से नीचे उतरकर एक-दूसरे को एक वचन में संबोधित कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि निकट भविष्य में गाली-गलौज पर उतर आयेंगे।

थोड़ी देर तक घमला यों ही खड़ा रहा। वह तय नहीं कर पा रहा था कि किसका पक्ष लें। तुरिया और कचरिया दोनों के साथ उसका अच्छा सम्बन्ध था। जब पैसे नहीं होते थे तब उधार माल खरीदने के लिए वह उन्हें किसी तरह मना लेता। तुरिया को मनाता तो कचरिया मना कर देता और कचरिया को मनाता तो तुरिया नाराज हो जाता। अंत में यह धमकी देकर कि तुम्हारी दुकान पर कभी माल लेने नहीं आऊँगा और न ही परिचितों को आने दूँगा। वह उठने लगता तो उनमें से एक उसे रोक लेता और घमला माल खरीदता।

इस तरह की पुरानी बातें याद आने से उसे लगा कि तुरिया-कचरिया मारपीट करें तो अच्छी बात है। किन्तु ज्यों ही वे गाली-गलौज तक पहुँचे, घमला बीच में आ गया और उन्हें समझाया।

रास्ते में टींबा वाले मिल गये। मगन अमथा ने तो घमला की ओर देखा भी नहीं। रामजी बुढऊ ने राम-राम किया। अगली एकादशी को चंडीपाठ रखा है। आसपास के सभी गाँवों की भजन-मंडलियों को आमंत्रण भेजा है। घमला ने कहा—"सोमपुरा कै नेवता हमैं मिला इतना बहुत है। अपने मेम्मर नरसंग पिथू का तो हम कहि देबे।" पिथू भगत की बात शुरू होने पर मगन अमथा ने भी बात में रुचि दिखाई। घमला ने मगन अमथा की प्रशंसा करके बात आगे बढ़ाई। उसने एक बात यह भी कही कि तुमने महाभोज किया जिससे माता प्रसन्न हुई और माणेक

के हाथ से सिन्दूर भरा। रामजी ने अनिच्छा से धमला की बात का समर्थन किया। देर हो जायेगी का बहाना करके कदम बढ़ा दिये।

वह घर पहुँचा तो वेली उसकी राह देखते-देखते ऊब गई थी और खाना खाकर सो गयी थी। वह जागती थी फिर भी धमला के आने पर उठी नहीं। धमला रसोई में गया और कठौती में रखी दाल रोटी बाहर लाया। वेली बीमार नहीं है इसका जायजा लेकर वह लोटा भरकर हाथ-पाँव धोने बैठा। अब भी वेली नहीं उठी तो वह खाने बैठ गया। लाल कुत्ता ओसारे में आकर वेली की खाट के अगले पहिये के पास बैठ गया और धमा की तेजी से खाने की क्रिया को देखता रहा। धमा को लगा कि लालिया आज बिलकुल भूखा है। रोटी की घी चुपड़ी पर्त वह खुद खा गया और एक टूक उसकी ओर दूर आँगन में फेंका। लालिया धीरे से उठा और रोटी का टुकड़ा मुँह में लेकर अपनी मूल जगह पर आ बैठा और धमा के ढंग से विपरीत बहुत धीरे से खाने लगा। वह पट पट दुम हिलाता था, जो वेली को नापसंद था। वह खड़ी हुई, हाथ में जूता लिया और मारने के लिए उठाया। धमा ने उसे रोका। 'लालिया तो जूते भी खा जाता है।' धमा की बात सही थी। जब कुछ भी न मिले, लालिया किसी का जूता उठाकर ले जाता, नये-पुराने का भेद नहीं करता और कूड़े के ढेर की सलामत जगह पहुँच जाता, इस तरह जूते चबाने की लालिये की आदत को धमा उसकी 'मुखवास" कहता।

धमला को लग रहा था कि वेली को सोमपुरा रास नहीं आया। ऐसे फुरसत के क्षणों में वह उससे सुख दुख की बातें करता। उसके भूतकाल के बारे में पूछता और तंदुरस्ती का ध्यान रखने को कहता। उसकी बनाई रसोई की प्रसंशा करता और सारंग जाते समय दो तीन बार और वह भी दबाव देकर पूछता कि तेरे लिए क्या लाऊँ? वेली ने एक बार मजाक में कहा भी कि दातून लाना। धमला ने उसे रामलीला में सुना हुआ एक गीत सुनाया–

"तुम एक बार मारवाड़ जाना रे मेरे मारवाड़ी।
मारवाड़ से दातून लाना रे मेरे मारवाड़ी।"

वेली हँस पड़ी थी। उस समय उसे गोद में उठा लेने की इच्छा हुई थी।

कई बार खेतों में काम करते करते उसे वेली की याद आ जाती और वह मेंड़ पर बैठकर बीड़ी पीने लगता। उसने तो सभी के तानों का मुँहतोड़ जवाब दिया। लोग कहते थे पन्द्रह-बीस दिन रहेगी और धमला के खर्च का बदला देकर चली जायेगी। लेकिन यह तो यहाँ कैसे हिल-मिल गयी है। कौन कह सकता है कि यह परजातिनी है। यह तो अभी दुबली पड़ गयी है नहीं तो परी जैसी थी, परी जैसी।

"चल एक दफा अहमदाबाद घूम आये।"

–धमला ने मन की बात कही।

वहाँ मेरा क्या है? वेली कहने जा रही थी किन्तु रुक गयी। यह सब कहने का क्या मतलब? धमला के साथ वेली का मिलाप कराने वाला दलाल को भी बोला

था उससे अलग कहकर – सच कहकर क्या लाभ होने वाला था ? यदि वह चोरी में न पकड़ा गया होता तो आज यह मजदूरी न करनी पड़ती । लेकिन उसने चोरी भी तो मेरे लिए ही की थी न ? इतने वर्ष बीतने में कहाँ देर होती । मैं दलाल की बातों में आ गयी और गाँव का दूध-घी खाने यहाँ आ गयी । चौका-बरतन साफ करके भी तो पेट भरा जा सकता था । किन्तु दलाल ने मेरे घर आना प्रारंभ किया तब से पास-पड़ोस वाले भी गाली देने लगे थे और मुझे ऐसे देखने लगे थे जैसे मैंने देह बेचनी शुरू कर दी हो । उससे तो यह गोबर-पानी अच्छा । कौन जाने वह जेल से छूटकर कहाँ जाता ? और वह भी जब खूब चढ़ाकर आता था तो कैसा बोलता था । उससे तो यह–

"काहे बोली नाहीं ?" धमला ने चिलम भरकर फिर से पूछा–"तुमका इहाँ दुःख पड़त होय अब तो नाहीं लागत ?"

वेली की आँखें भीग गयीं । क्यों ? इसका कारण दो में से किसी को नहीं मालूम था ।

"ससुर कुछ समझ नाहीं आवत, हमरे ननिहाल नाहीं और तुहरे पियर नाहीं । मनई दुई दिन मन बहलावे जाय तो कहाँ जाय ? ई तो हम कहा कि तुमका अमदा-बाद याद आवा होय तो दुई दिन चलके घूम आयी । पहले तो हम जब अमदाबाद जात रहिन तो बिना नाटक देखे वापस नाहीं आवत रहिन । समझी ? हम छोट के रहिन तो हमहू रामलीला मां भाग लियत रहिन तुमका मालूम है ? ऊ गाना–अस तो हमार साहू गावत रहा मुला असलियत मां तो ऊ होंठै हिलावत रहा । आवाज तो हमार सुनाय पड़त रही–

"सदा संसार में सुख-दुख दोनों एक से मानो ।
रखें ज्यों राम रहिए उस तरह वह रीत पहचानो ।"

धमला को यह गीत बहुत दिन बाद याद आया था । उसकी आवाज अब कुछ भारी हो गयी थी । पहले हारमोनियम के साथ गाता था तब सुर-ताल दोनों संतुलित रहते थे । आज उसे ध्यान आया कि भजन-मंडली में ऊँची आवाज में गरबी गा-गाकर उसने अपनी आवाज की मिठास खो दी है । किन्तु अकेले गाने की अपेक्षा मंडली में गाने का मजा ही कुछ और है । दमादम तबले और टनटनाते हुए मँजीरे की आवाज से उछलकर बाहर आती ऊँची आवाज वाला गला कितनों के पास है ? जबकि नरसंग भाई तो गाने वाले के गले के अनुसार तबले में आरोह-अवरोह लाते हैं । मुझे सब कुछ आया परन्तु तबला बजाना नहीं आया...

वेली अभी भी उसी विचार में डूबी थी । एक भव में कितने भव हो गये ? पहले ही यह आदमी मिला गया होता तो ?

धमला खेत की ओर चल पड़ा । वह जैसे चला कि वेली को याद आया लाला मुखिया आये थे । बुला गये हैं । क्या काम बताया नहीं है । धमला पहले मुखी के घर की ओर चल पड़ा ।

लाला आज सबेरे से खेत में गया ही नहीं था। टीबा से भीमा का साला आया था। इन दिनों जेठानी-देवरानी में बोलचाल हो गयी थी और जेठा भी पहले जैसा स्वस्थ, ताजा और मजबूत होकर वैमनस्य भूल गया था। किन्तु वह आज "राम-राम" करके वहाँ से चला आया था। इतने में आवाज आयी-"अरे मुखिया घर हैं ?"

"कौन है ?"

"दूसर कौन ? तुम्हार धरमराज।" जेठा ने जिन्दगी में पहली बार धमला को धरमराज कहा था। उसके कहने के अनुसार धमला शादी के बाद काम करने लगा था। जेठा को दुश्मनों को छोड़कर मेहनती आदमी पसन्द थे।

"लेव, हमार तो भाग खुला है, जेठा भैया हमार इज्जत करै लागे।"

"अरे भाई, कहै वाले कहिन नाहीं है ? नारी नर का नूर।" जेठा ने ठंठी आवाज में कहा। और तीन फूँक चिलम की मारकर खेत में जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। धमला ने जीवत भाभी से थोड़ी बात-चीत की फिर लाला से पूछा-

"का काम रहा मुखी ?"

"काम तौ का रहा..."

"अरे तबौ ?"

"अरे ऊ रमण मास्टर दुई-तीन दिन तक इहाँ पड़े रहे। कुछ उल्टा-सीधा करैं तो नाही आये रहा न ? काल भिमवा सारा दिन नरसग के खेते मां बैठा रहा।"

"ईमा कौन नई बात है। काम के दिन चौबीस घंटे काम करत हैं औ फुरसत मा दिन भर केहू के पास बैठ के ऊके काम बिगाडत हैं।"

"तू तो लंबी-चौडी बात करे लागेव। हमका जान पड़त है कि भिमवा फिर से मुखियागीरी वापस लेय के चक्कर मां है।"

"तो पिथू भगत के खेते मा ऊका मुखियागीरी मिल जाये ?"

"रमण मास्टर ?"

"ऊ तो अस बात मा पड़त होई हैं ?"

"तुम सच कहत हौ ?" लाला ने चिलम नीचे रख दी।

"तुम्हार कसम गलत कहत होई तो। और अब तो मुखिया-उखियागीरी होय कि ना हो का फर्क पड़त है ? ऊ दिन गये।"

"हम सुना है ई दफा चुँगी और दंड सब लेय के हक सारंग के राजा के पास से चला जाये।" लाला ने सिर से पगड़ी उतारते हुए कहा।

"सारंग के राजा की का बात करत हौ ! सारंग के बनिया कहत रहा कि पूरी गायकवाड़ी चली जाये। सब एक राज होय जाये।"

"गाँधीजी जिन्दा होते तो वे राज करते।"

"अस तो अपने ऊ खेड़ा जिला के पटेलवा जोरदार है। मुला राज तो नेहरू करे।"

"नेहरू बामन हैं नाहीं ?"

"अस तो वल्लभवा कहाँ नाहीं न राज मां ? कुछ बात मां तो जब दूनौ जनें राजी होय तबै ठराव पास होत है। तुम बैठो हमका तो खेते मां जाय का है। भैंस पियासी होये।" धमला उठ खड़ा हुआ–"हम बैठे हन तब तक तुमरे मुखिया-गीरी का आँच न आये।" बाहर आने के बाद उसे टींबा के चंडीपाठ की बात याद आयी। वह जितना जानता था उससे भी अधिक सूचना उसने लाला को दी।

सिर पर एक बड़ी–सी जिम्मेदारी के बोझ को महसूसता हुआ वह खेत की ओर गया। इस समय वह अपनी राह पर अकेला था।

33

सारग में लगते कृष्ण जन्माष्टमी के मेले की बिसात इसके आगे कुछ न थी। टींबा का पूरा चौक आदमियों से भरा पड़ा था। आने जाने का कोई रास्ता नहीं था। लगता था पूरा समूह का समूह घेम रहा हो। सोमपुरा वाले टींबा के विशाल गौचर की ईर्षा करते थे। वहीं पर चंडीपाठ और माता के मन्दिर का मुहूर्त होने वाला था। चंडीपाठ का विचार भले ही रामजी बुढऊ को आया हो, मन्दिर बनवाने की बात तो मगन अमथा के ही दिमाग में आयी थी। पशाभाई का भी सहयोग मिला था और उन दोनो ने तीनेक दिनों में तो आसपास के गाँवों से दो हजार सात सौ उन्नीस रूपये की बड़ी रकम एकत्र कर ली थी। मगन अमथा ने रमण मास्टर को भी साथ लेने की बात की थी किन्तु पशाभाई ने तीन की संख्या बुरी होती है कहते हुए पूछा था, "तुम्हारी जाति में इस समय सबसे अधिक इज्जतदार आदमी कौन है ? रमण मास्टर या तुम ?" पशाभाई जानते थे कि लोग मन ही मन हीरूभाई का सम्मान करते हैं किन्तु ऐसे काम के लिए वे साथ नहीं आयेंगे। वे तो उल्टा प्रश्न करेंगे "टींबा में माता का एक मन्दिर तो है फिर दूसरे की क्या जरूरत ?" जो भी हो पशाभाई इस समय हीरूभाई को महत्त्व देना नहीं चाहते थे। निर्विरोध चुने जाने के लिए पूनमचन्द को बैठा देने में उन्हें नाकों चने चबाने पड़े थे और उसकी जड़ हीरूभाई ही थे। अतः उनका महत्त्व बढ़ाने वाले कामों से तो हीरूभाई और रमण को दूर रखना ही अच्छा। ये बातें मगन की समझ के बाहर थीं। ऊपर से यह और हुआ कि एकत्र की गई सारी रकम पशाभाई ने उसी के हाथ में पकड़ा दी। तब तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही। "हम तो उल्टा–सीधा काम करने वाले माने जाते हैं। कल उठकर तुम्हारी जाति का कोई निन्दा करने वाला तैयार हो जाये इसलिए इस रकम को तुम्हीं रखो और व्यवस्था करो। तुम्हारे सामने कोई उँगली नहीं उठायेगा। जो आदमी हजारों रूपये खर्च करके महाभोज करेगा वह

माता के काम में जो घर का ही भरेगा, उसमें जोड़ेगा।" मगन अमथा को पद्माभाई के ये शब्द याद रह गये थे। कम से कम पचीस आदमियों से उसने कही होगी यह बात।

पद्माभाई उस दिन दोपहर के समय आने वाले थे। आस-पास के गावों के सभी प्रतिनिधियों को एकत्र कर रखने की सूचना भी उन्होंने दे रखी थी। साथ ही रसोई शुरू करने के लिए तेल के दस डिब्बे उधार भी भेज दिये थे। प्रतिनिधियों को दो-दो टुकड़े सुखड़ी परोसना है और बाकी जो भी आठ आने देकर जाये पूरी सब्जी खाकर जाये। अधिक देना हो तो उसकी इच्छा। तुम देखना मन्दिर के लिए उस दिन पाँच हजार रुपये एकत्र हो जायेंगे।

"आवे का भूल न जायौ, तुम बड़े आदमी ठहरे।"—मगन ने दुबारा याद दिलाया।

"बड़े काहे के भले आदमी ? माता के आगे तो सब छोटे हैं।"

पद्माभाई की महानता मगन के दिल में बस गयी थी।

माणेक को अब सब माँ कहने लगे थे। थोड़े दिनों से माणेक को अनाज खाना बन्द करा दिया गया था। इस बारे में दो खबरें थीं। कोई कहता था कि माणेक ने स्वयं अनाज छोड़ दिया है तो कोई कहता था कि किसी ज्योतिषि ने माँ को फल और दूध देने के लिए कहा था। इस जगह पर माणेक को सुबह जल्दी लाया गया था। कहा जाता है कि वह चलकर आयी है। अब माणेक को उसके माँ-बाप के घर वापस नहीं जाने दिया जायेगा। इस मंडप के पीछे कच्चा दालान है उसी में रहेगी। कुछ दिनों पक्के कमरे की व्यवस्था हो जायेगी। टींबा के ब्राह्मण की विधवा लड़की माँ के साथ रहेगी। गाँव वाले उसे प्रतिमाह पंद्रह रुपये देंगे। पूरा मन्दिर बन जाये उसके बाद तो यह जगह सारंग के जैनों के देरासर जैसी हो जायेगी। इन बातों में नरसंग का मन नहीं लग रहा था। क्योंकि वह माणेक का दर्शन मात्र करने आया था। वह देखना चाहता था कि मनुष्य के चोले में देव के उतरने से उसका तेज कितना बढ़ जाता है।

नरसंग को माँ के दर्शन की अनुमति मिली। दरवाजे पर बैठी महिला ने तिरछी रखी लकड़ी हटा ली। नरसंग आगे बढ़ा। सामने के पटे पर फूल पड़े थे। दोनों ओर घी के दो दीपक जल रहे थे। थोड़ी देर पहले की गयी लोहबान धूप की गंध अभी भी हवा में थी। माणेक की आँखें बन्द थीं। उसने तकिये का सहारा भी लिया था। शरीर सूख गया था। नरसंग ने हाथ जोड़कर जगदंबा की स्तुति की। उसके होंठों के फड़कने से जो आवाज हुई उससे माणेक का ध्यान-भंग हुआ। उसने आँखें खोलीं। उसने धीमे से हाथ उठाए और नरसंग के आगे जोड़ दिए। देती छोटी थी तो उसकी भी आँखें ऐसी ही थीं। हाँ ठीक ऐसी ही

नरसंग खो गया। भक्ति-भावना वात्सल्य में बदल गयी। इतने में मगन अमथा के साथ दो महाजन दर्शन करने आये और नरसंग ने मुँह दूसरी ओर

घुमाकर आँख की कोरों को साफ किया । ऐसा क्यों हुआ यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था । वह बाहर आकर सीधे सोमपुरा की राह पर चल पड़ा । हेती, देवू और लवजी को ढूँढकर जल्दी आ जाने की हिदायत देने के लिए भी नहीं रुका । उसे ऐसा क्यों हुआ ? खेत में जाकर वह बुढऊ से पूछना चाहता था, वह वहाँ से जल्द से जल्द चला जाना चाहता था किन्तु बिखरे हुए आदमियों के बीच से होकर निकलना किसी लहलहाते हुए बाजरे के खेत से होकर गुजरने के समान था । उसे लगा कि उसकी आँखें फिर से गीली हो गयी हैं । उसने बाहर आकर पीछे मुड़कर देखा । आदमी, आदमी और सिर्फ आदमी...उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था । एक बार स्वप्न में भी इतने ही आदमियों को देखा था जैसे रेल'''।

दोपहर ढलने के बाद संख्या कम होने लगी थी । आदमियों से छलकते हुए मैदान में यहाँ-वहाँ उजाड़ दीखने लगा था । पशाभाई ने बैठकर भाषण दिया था। उन्होंने टींबा को नए यात्राधाम की उपाधि दी थी और माणेक पर माता प्रसन्न हुई हैं इसलिए आंजणा जाति को भाग्यशाली कहा था । लगे हाथों उन्होंने हीरूभाई की बुराई और अपनी प्रसंशा भी कर दी । यह कार्य उन्होंने अगले चुनाव को ध्यान में रखकर किया था ।

सबके साथ सोमपुरा की राह पर चले-चलते अचानक धमला रुक गया । तबला घेमर को पकड़ाया । घेमर ने समझा कि धमा काका चौक से कुछ खरीदना चाहते हैं किन्तु बात कुछ दूसरी थी ।

"अरे हम तो पशाभाई से दुबारा मिलने नाहीं कीन । उनका बुरा लागे ।" सब धमला की बात पर हँस पड़े । किन्तु वह गंभीरता से वापस आ गया । वह पहुँचा तो पशाभाई कबके चले गये थे । धमला को इसका अफसोस नहीं हुआ । विभिन्न गाँवों के प्रतिनिधि बैठे थे । लगभग पचीस जन थे । उनमें किसी ने उसका स्वागत नहीं किया, किन्तु वह स्थान देखकर उनके बीच बैठ गया । उसके आने से जैसे बात अटक गयी थी । माना ने धीरे से विस्फोट किया—

"सब मामला अपने धमाभाई का सौंप देव । अमदावाद से एकाध उठाय लायेंगे और मगाजो के लड़के के—"

यह सुनकर बुरा तो धमला को लगना चाहिए था किन्तु खड़ा हो गया मगा मनोर—

"तुम ससुरे सोमपुरा वाले बहुत फट पड़ा है, अस आसरम कै अनाथ हमे अपने घर मां न चाही । हमार हाथी तुम्हार धमला न आय, समझे ?"

धमला को यह बात भी बुरी लगी क्योंकि उसे तुरन्त याद आया कि माणेक मगा के बड़े लड़के हाथी के साथ ब्याही है । और वह भी बदले में कन्या दिये बिना । पैसा दिया होगा । कोई नहीं बोला तो मगा बोला—

"हमरे बदरी मां कौनो आंजणा के घरे आज तक परनात औरत नाहीं आयी । जो आयी होय तो ऊके हुक्कापानी बन्द कराय दीव गै है । काहे 'मुखी बोलतेव काही नाहीं ?"

तिकम मुखी ने मगा की ओर देखकर सिर नीचे कर लिया। वे मगा को समर्थन देना चाह ही रहे थे, किन्तु माणेक पर देवी प्रसन्न हैं उसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। कुछ गलत निकल जाये तो माँ की निगाह में आ जायेंगे। उसने मगा से कहा–

"बैठ भाई बैठ, ई सब बड़मनई तुहरै तकलीफ दूर करै एकठा भा हैं। कहौ भाई जीका बौन कहै क होय कहौ।"

थोड़ी देर की शांति के बाद मगा ने हिंमत जुटाकर कहा–

"तुम सब ही कौनो रस्ता निकारे बिना जाबौ तौ हम तौ माणेक क लै जाब।"

"ई का बोलत हो मगाजी?" रामजी बुढऊ खड़े हो गये। मगन अमथा ने उनका हाथ पकड़कर बैठा लिया। गोकुलिया के पभा मुखी ने देखा कि अब उनकी बात सुनी जायेगी।

"भैया, हम तो ई बात जानि त है कि जीके जस भाग।"

"तो अतने सब मा अकेल हमारे फूट है?"

– मगा ने अपनी बेचेनी पर काबू पाते हुए कहा।

"नाही, सब लोग यह समय देवी के पाँव छुवो और अपने-अपने घरे जाव। मगाजी के सवाल आजि हल होय जाय ई जरूरी नाही है। बैसाख मां बिरादरी एकठा करौ। देखा जाये।"

"मानाजी ने लाख रुपया की बात कीन है। बैसाख क अब कहाँ देर है? उठ मगा चल।" तिकम मुखी उठ पड़े और उनके साथ सब उठ खड़े हुए।

घर वापस आते समय धमला पिथू दादा के पास रुक गया। बातचीत चल पड़ी–

"ई माणक के सेन्दुर के बारे मां हमें कुछ खास समझ नाही आवा। तुम कुछ समझे होव तो बताऊ।"

'हम समझत होइत तो ई माला काहे फिराइत?"

भगत की बात की ओर ध्यान दिये बिना ही जैसे किसी उलझन में पड़ा हो, नरसंग बोला–"ई माणेक अइसे केतना दी जी है?"

भगत थोड़ी देर बाद बोले–"आज का भवा, एकादसी?" बस बात यहीं रुक गयी।

34

दो वर्ष से लगातार सूखा पड़ रहा है। इस वर्ष भी ऐसा ही लगता है। पूरे इलाके में लोग चिन्तित हैं। माणेक मर गयी। दूसरा क्या? देवीजी रूठी हैं।

दो महीने देर से बारिस हुई! खूब बरसा। घंमर जैसे लोग दो-दो दिन गहरे गलियारे के पानी में तैरते रहे। नरसंग ने अपनी जवानी के दिनों की याद की। किन्तु शिवा बाबा ने अपनी रट नहीं छोड़ी। यह हरा अकाल है। दीवाली पर

देखना। देवी न रूठी हों तो। उसकी भविष्यवाणी सच निकली, अनुमान से विपरीत, बहुत देर से।

पूरे इलाके के श्रद्धालुओं को बड़ा आघात पहुँचा था। उस दिन टींबा गाँव में तो सन्नाटा ही छा गया। माता के मन्दिर से सोना-रूपा के सभी जेवर चोरी में चले गये थे। जगदम्बा की मूर्ति तो मगन अमथा ने नई ही खरीदी थी। गाँव के हर मुहल्ले में इस समय यही बातें हो रही थीं। भाँति-भाँति के अनुमान किए जा रहे थे। कोई कह रहा था कि दो माह पहले खराब चाल-ढाल की वजह से निकाले गये पुजारी का काम होगा तो किसी का कहना था कि ठण्डी में आये हुए नागा बाबाओं का काम है। मगन अमथा को कुछ भी नहीं सूझ रहा था किन्तु शाम को पंचायत-घर में एकत्र लोगों ने जब दबाव डालकर उससे पूछा तो अनिच्छा से जीभ दबाकर बोला कि हम लोगों ने मगा मनोर के बड़े लड़के हाथी की समस्या सुलझाने में आनाकानी की, यह उसी का परिणाम हो सकता है।

रामजी बुढऊ ने प्रश्न किया—"बोलौ भैया, सबही बताऊ कि अब कौन का जाय ?"

"कहत होव तो थाने में रपट कीन जाय।" मगन अमथा ने बुझती-सी आवाज में कहा।

"के कर खिलाफ रपट करबो ?" रामजी के प्रश्न पर अधिकांश लोग चुप हो गये।

"मुला सरकार के पुलिस-खाता जाँच-पड़ताल तो करे, हमें आशा तो नाहीं मुला साइत कहूँ से पता चल जाय।"

"तो करीन फरियाद ?"

"हाँ।"

"तुम रपोट लिख देव, हम भेज देई।" मुखी ने कहा, रूआब के साथ।

"ई सब झंझट फिर हमका डारबो ? पारसाल चंडीपाठ के समय औ माता के मूरती के थापना के समय व्यापार मां कतनी चोट पड़ी रही। अब फिर धक्कम-धक्का सुरू ? तुम्हार सबके इच्छा होय तो डारैं फिर से नवा चंदा और लिखा हमार यक्यावन।"

नये चन्दे के लिए कोई तैयार नहीं था। दुबारा चोरी नहीं होगी इसका क्या भरोसा ? तमाम तरह की दलीलें दी गयीं। और अंत में तय किया गया कि कुछ न किया जाय !

मगन अमथा को इस घटना से इतना सद्मा पहुँचा कि उसे अब इस बारे बात करना भी अच्छा नहीं लगता था। रह-रहकर एक ही विचार आता था, जैसे बाड़ से साँप सिर निकालता हो। मगन को हचकोला लग जाता। वह सोचता—माणेक की मृत्यु के लिए क्या वह स्वयं जिम्मेदार नहीं है ? बुढऊ तो पुराने जमाने के आदमी। मैंने तो दुनिया देखी है। क्या मुझे मालूम नहीं था कि इस तरह

के उपवास का क्या परिणाम आने वाला है ? मौसी की लड़की और बहन में फर्क ही क्या है ?

अचानक उसके मन में एक विचार कौंध गया। क्यों न पिथू भगत से सारी बातें करूँ ? कल तो सोमपुरा जाना ही है। मन हल्का हो जायेगा।

उसने सोचा कि खेत में भगत अकेले हों तो ठीक है। किन्तु जब वहाँ पहुँचा तो नरसंग भी था। नरसंग ने मगन अमथा का स्वागत किया। मगन ने नरसंग को गेहूँ के बाकी पैसे दिये। फिर वे इधर-उधर की बातें करते रहे।

नरसंग बैलों को पानी पिलाने के लिए उठा तो मगन अमथा ने मंदिर की चोरी वाली बात निकाली। भगत सुनते रहे। किन्तु चोरी हो ही क्यों ? मगन प्रश्न को दुहरा रहा था जिससे कि भगत कुछ बोलें। भगत ने सिर्फ इतना कहा कि माने उसके लिए धर्म। उन्हें सोमनाथ के शिवलिंग के टूटने वाली बात याद आयी। वह ज्योतिर्लिंग कहा जाता था इसकी तो उन्हें जानकारी न थी किन्तु भोला भीम और गजनी का बादशाह आदि उन्हें याद थे। उन सब की बात कर उन्होंने मगन से प्रश्न किया—यदि महादेव के मन्दिर का लिंग टूट सकता है तो तुम्हारे टींबा के मन्दिर में चोरी नहीं हो सकती ? मगन की चिन्ता चोरी के विषय में न थी, माणेक ने उपवास किया था इसलिए वह मर गई या माता ने उसे बुला लिया इस बारे में वह उनका अभिप्राय जानना चाहता था।

भगत थोड़ी देर विचार करते रहे फिर बताया कि वह स्वयं किसलिए एक बार भी दर्शन करने नहीं आये। कहा कि चमत्कार हो सकता है, चमत्कार को भगवान मानकर चलने लगें तो जहाँ-जहाँ चमत्कार हो वहाँ-वहाँ दौड़कर जाना पड़ेगा। उनके चिन्तन का सार यह था कि भगवान की खोज के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। भगवान तो इस माला में भी नहीं हैं, वे तो मन में हैं।

"पर हम चंडीपाठ करावा, मंदिर बनवावा इमां गलत का कौन ?" मगन अपने मूल प्रश्न तक पहुँचना चाहता था।

"कौन कहत है कि गलत करेव है ? अस कुछ होत है तब दुनियादारी मां गटई तक बूड़े अपने लोग का देवता-पितर के याद आवत है। यह रस्ता से आवत जात लोगन का देख के हमहूँ खुस होत रहिन। ई सारंग मां बंबई से एक सास्तरी जी कथा कहे नाहीं आवत रहें ? का नाम उनके ? बड़े भारी पंडित हैं। वे एक असल बात किहिन रहा।" बैलों को ले जा रहे नरसंग ने ठिठुक कर जवाब दिया "पांडुरंग।" ऊ कहिन रहा कि भगवान के सच्चा रूप कौन ? आनन्द के। ऊ सास्तरीजी समझावत रहें वह आनन्द मां तुम पहुँच जाव तो भगवान हाथ लाग जाँय समझो !"[1]

मगन को भगत की इस बात में जरा भी रुचि न थी। सुनते समय वह अपनी मनोदशा को साफ करने के लिए कोई आधार ढूँढ़ रहा था। इतने में उसे एक साधु की जल-समाधि की बात याद आ गयी। उसने पूछा—

"तो माणेक समाधि लिहिस यही कहा जाये न ?"

भगत कुछ बोलें इसके पहले ही, बैल बाँधकर वापस आ चुके नरसंग ने बैठते हुए कहा—

"खराब न मानौ तौ कही मगनलाल ।" मगन भावहीन चेहरे से नरसंग की ओर देखता रहा । "बताई ? तुम टींबा वाले मिलके माणेक का मार डार्यो ।"

मगन का मुँह फीका पड़ गया। वह नीचे देखने लगा । छपरे के ऊपर से बरतन निकाल रही हेती भी किंकर्तव्यविमूढ़ सी देखती रह गयी । भगत ने हाथ के इशारे से ऐसा न बोलने के लिए नरसंग से कहा किन्तु वह जैसे धुन में हो, बैठे-बैठे एकदम आगे बढ़कर मगन के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—

"ई हमार हेती खड़ी है । अब मानो कि काल ई के हाथे से सेंदुर झरै लागै तौ का हम ईके खाना-पानी बन्द कराय देब ? चार हाथे के कोठरी बनाय के ऊ माँ बन्द कर देई ? अरे भले मनाई, ई मन्दिर होय की जेल ?"

"नरसंग !" भगत ने धीमी आवाज में उसे रोकना चाहा किन्तु वह रुका नहीं ।

"देबी होय या देवता, अरे साच्छात भगवान काहे न खुस भये होंय तो का दुनिया छोड़ दीन जात है ? नाहीं, हम तो नाहीं छोड़ा चाहित, दूसरे से छोड़ाइत है । भूखे मारित है, आँय ? तब तौ पूरे गाँव पर देवी खुस हैं । ई तुहार गाँव । बिटिया के बियाहे मां पैसा ले हो तो ऊपर जगदंबा खुस होइ हैं । छोड़ौ न सब बड़ाई ।"

नरसंग को भी लगा कि वह कुछ अधिक बोल गया है । अच्छा हुआ जो बुढ़ऊ ने उसे फटकारकर चुप कर दिया—

"हम अस बोली ऊसे नियाय करै वाले हन तो ई मां बड़प्पन नाहीं है । तूका ई मां परेसान होय के कौन जरूरत है भाई ?" बुढऊ ने बहुत समय बाद नरसंग को आज दुकार कर बुलाया था ।

"सही बात बताई तब ? वह दिन हम टींबा से मंडली का पीछे छोड़ के काहे आय गइन रहा ? हियां कौनो काम तो रहा नाहीं । मुला हम दरसन करे गइन । माणेक का हाथ जोड़ा । पर जैसे उन्से निगाह मिली हमरे मन मां जैसे बज्र गिर पड़ा । हमैं लाग कि जैसे हमार हेती हड्डी कै पिंजरा होय के पड़ी है । तुम्हार कसम, जो वह दिन दुई दाई हमार आँख भीज न गयी होय ।"

हेती छपरिया के पास से हट गयी थी । उसकी आँखों से निरन्तर आँसू बहे जा रहे थे । किसी को न पता चले इसलिए वह जाकर बाजरे की पूलियों के ढेर के दूसरी ओर बैठ गयी । एक-दो बार अश्रु पोंछने से भी चेहरा साफ न हुआ । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या हो गया है ।

इस तरफ पिथू भगत ने शांति से बात को मोड़ दिया था—"जौन होय क रहा भवा । अब तो भगवान के नाम लैके मन मनाय लेव । तबौ मन व्याकुल रह जाय तो गरीब-दीन के सहायता करो । बाकी नरसंग के एक बात सही है कि देवता

खुस मयें होय तो दुनिया छोड़ देय ई नियाय गलत है। तुम तौ गाँधीजी का देखे होवौ। बंबई मां रहे हो तुमहिन कहौ, लोगे उनका महात्माजी काहे कहत रहें ? वे काम करत-करत अपने भीतर झाँक लेत रहें। समझयौ ! आदमी आदमी के धरम पाले वही मां सही धरम है। नाहीं चमत्कार बतावे कि तई नागा बाबा आपन "काली रोटी सफेद दाल" खाय कि ताई कतनी धमाल करत हैं ?"

इसी समय वहाँ लवजी आ पहुँचा। उसने काली रोटी सफेद दाल का अर्थ पूछा। अब तक मौन बैठे सब कुछ सुन रहे देवू ने उत्तर दिया—"मालपूआ और खीर।"

"तौ हमहूँ नंगाबाबा बनब।" लवजी ने उत्साहपूर्वक कहा।

"ई जाँघिया पहरे हो, निकाल डारो बस।" —

नरसंग ने हँसते हुए लवजी को गोद में उठा लिया।

ठीक उसी वक्त भैंस को हाँकते हुए ला रहे घेमर की आवाज सुनाई दी—"अरे कस हो नरसंग काका ! का हाल है पिथु बाबा ! ओहो मगनलाल हियाँ बैठे हैं ! हम इनके गाँव जात रहित।" भैंस चिल्लायी।

सब समझ गये कि घेमर भैंस को बाहने जा रहा है। नरसग ने सोचा कि यदि यह यहाँ आकर बैठ जायेगा तो इसकी भैंस चिल्लाती रहेगी। वह बोला—"जा भाई जा, जाय आव। गाँव के भैंसा से नाहीं बाही ?"

"सार ठूँठ होय गा है, सुंघतौ नाही। भैसिया तौ काल्हे से पानी फेंकत है।"

घेमर ने आपबीती सुनाई। वह और उसका बाप फता दोनों अलस सुबह उठकर भैंस को लेकर दूर के विहोल गाँव को चले थे। वहाँ के एक सेनमा के भैंसे के बारे में सुना था। उसके पास गया कोई ढोर खाली नही लौटता। रास्ते में पेशाब-पानी के लिए बाप-बेटे रुके। भैंस ने मुँह फेर लिया। फता ने कहा कि यह सही दिखा में खड़ी है। घेमर की एक न सुनी, और लौटने की दिशा में आगे-आगे चलते रहे। सूरज उगने तक वापस सोमपुरा आ पहुँचे। देवू ने कहा कि सोमपुरा में रुकने के बजाय आप चलते रहते तो तीस-पैंतीस साल में विहोल गाँव जरूर पहुँच पाते। पृथ्वी गोल है। यह बात लवजी की समझ में नहीं आई। वह पूछे बिना नहीं छोड़ता।

घेमर भैंस को पानी पिलाने कूंडी के पास ले आया। उसने देखा कि चरस खींचने का रस्सा एक जगह टूटा है। "आप उसे जोड़ना जानते हैं ?" लवजी ने पूछा। "तो ? यों ही बड़े हो गये होंगे ?" 'नाहीं फताचाचा की गालियाँ खाकर" —देवू ने कहा।

इसी तरह की बातें उनके बीच होती रहीं। फिर घेमर की बिनती पर नरसंग ने देवू को साथ भेजा। भैंस लेकर दोनो टींबा चले गये और लवजी पिथू बाबा के पास आकर बैठ गया। उनकी बातें जब समझ में नहीं आयी तो, थोड़ी ही देर पहले डलिया लेकर घर के लिए निकली हेती को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा। वहाँ तक

पहुँचने में उसे देर नहीं लगी क्योंकि हेती धीमे-धीमे चल रही थी । उसके पेट में दुःख रहा था – उसे मितली-सी आ रही थी ।

35

हेती को गोकुलिया तक छोड़कर देवू दूसरे दिन दोपहर में वापस आया । घर पर पाँव रखते ही वह घबरा गया । खाट पर पिथू बाबा पेट के बल सो रहे थे और नरसंग उनकी पीठ में मालिश कर रहा था । तेल ? पानी ? नहीं, कोई अन्जान गंध आ रही थी । पिथू बाबा की पीठ में काला-काला बड़ा सा दाग देखकर वह समझ गया कि बाबा को कुछ लग गया है । गिर गये होंगे । उस दिन भैंस उन्हें मारने दौड़ी थी ।

देवू कुछ नहीं बोल सका । वह आ गया है इस ओर ध्यान देने के बजाय नरसंग बुढ़ऊ की पीठ में शराब की मालिश करने में ही व्यस्त रहे । देवू साँस साधे बाबा के आगे जाकर बैठ गया । 'बहिनी का छोड़ आइस बेटा ?'' बुढऊ ने बन्द आँखों से ही पूछा । देवू ने कुछ बोलना चाहा किन्तु बोल न सका । वह सिसक पड़ा । एक बार मुँह खुलने के बाद तो वह जोर से रो पड़ा । बुढऊ ने आँख खोली । उन्हें अधिक चोट नहीं लगी है यह जताना चाहते थे किन्तु सिर उठाने में उन्हें तकलीफ हुई । और मालिश बन्द कर बैठाकर देने के लिए उन्होने नरसंग को संकेत किया । नरसंग ने दुबारा कहा-"पड़े रहौ न, जरा घिस लेव देव । कहूँ-कहूँ खून जम गा है ।"

"पर लाग का है ?" देवू ने नरसंग से पूछा ।

'बछवा मारिस है ।'' बिल्कुल ठंडी ऊबी हुई आवाज में नरसंग ने कहा । देवू उसकी मनोदशा समझ न सका । उसकी नजर पिता से अब तक नहीं मिली थी ।

कमरे में गया । कंकू आटा छान रही थी । उसने सारी बात बतायी । बछड़ा बैल को हूरने गया । बैल ने सींग उठाया । कंकू तो सिवान में बैठी-बैठी देख रही थी । ऐसा तो रोज होता था । किन्तु बछड़ा आज चिढ़ गया था । वह बैल को मारने गया । उसने एक ही झटके में पगहा तोड़ डाला । कंकू ने आवाज देकर बाड़ के पास खड़े बाबा को बुलाया । बछड़ा खुला हुआ था और बैल बँधा हुआ । बूढ़ा बैल बछड़े का नुकीला सींग लगने से चिल्ला उठा । धीरे धीरे आ रहे पिथू भगत दौड़ पड़े और जो लकड़ी उनके हाथ में आयी उसीसे उन्होंने बछड़े के सिर में मारा । पलभर के लिए तो बछड़ा बैल से अलग होकर पीछे हट गया किन्तु जब बुढऊ ने दूसरी बार डंडा जमाया तो वह उनके सामने आ गया और उनके सीने में एक हुरा मारकर उन्हें गिरा दिया । कंकू लाठी लेकर पहुँचे इसके पहले तो उसने फिर से बुढऊ को सिर पर उठाया और पटक दिया । वह तो पास के खेत में ईंधन के लिए अरहर की खूँटिया बीन रही शेनमी आ पहुची नहीं तो कंकू की हिम्मत न

थी कि बछड़े को डराकर भगा सके। आस-पास कोई पुरुष नहीं था जो लवजी की पुकार सुनकर आ जाता। नरसंग दूसरे खेतों को देखने गया था। लवजी उन्हें बुलाने दौड़ा। कंकू और शेनमी ने बुढऊ को उठाकर खाट पर लिटाया और कंकू ने स्वयं कूए की कुंडी तक जाकर नेवर के पानी से बुढऊ के छींटा मारा था। "जा न बाहिनी, हम तुमका पाँच सेर गोहूँ देबै, जल्दी से जाय के फना भाई के खेते माँ कहिके आय जा न कि घेमर ढेलाडिया से एक बोतल दवायी लै आवे।" शेनमी गयी तो श्वसुर की खाट के पास बैठी कंकू को रोना आ गया। बुढऊ ने धीरे से कहा-"दारू का करे क मगायो है ? हम कहित है उ पाती लेके पीस के थोड़ा घाव पर मलौ। नरसंग नाहीं आवा अबहीं ?" अंतिम शब्द बोलते-बोलते उनकी आवाज़ बैठ गयी। कंकू के दिल में दहशत बैठ गयी। ऐसा क्यों हुआ ? अभी-अभी तो इन्होंने स्वयं ही करवट बदली थी। अंदर तो चोट नहीं लग गयी ?

वह आगे कुछ और सोचे उससे पहले ही नरसंग खेतों के बीच से दौड़ता हुआ आया। अधिक नहीं लगा है यह दिखाने के लिए बुढऊ ने अपने हाथ का टेका लेकर बैठना चाहा, बैठ नहीं सके। एक दो शब्दों में कंकू से पूछने पर नरसंग सब समझ गया। मोती कुंभार अथवा हबला को बुलाकर लाने के लिए लवजी को भेजकर नरसंग जल्दी-जल्दी चला। चला तो क्या दौड़ा था...

कंकू से एक तरफ खाट पकड़वाकर वह बुढऊ को नीम की छाया में लाया। एक तो यह कहकर कि उन्हें अधिक नहीं लगा है बुढऊ ने बछड़े को न मारने के लिए कहकर और फुसला-पटाकर खूँटे से बाँध देने के लिए नरसंग को सलाह दी। नरसंग चुपचाप सुन रहा था। बुढऊ जानते थे-नरसंग का क्रोध...उन्हें पानी पिलाकर, पूरे शरीर पर हाथ फिराकर, हड्डी टूटी नहीं है इसका विश्वास करके नरसंग उठा। भगत ने फिर कहा-"बछड़े को '-लेकिन इस बार नरसंग ने उन्हें बोलने नहीं दिया-"तुम कहत होव तौ इके पूजा करी।" थोड़ा आगे जाने के बाद वह फिर भुनभुनाया-बेकार माँ लाड़ करकर के पशु का सिर पर चढ़ाय लिहिन है।" उसे खाली हाथ चकरोट की ओर जाते देख कंकू ने हाथ में लाठी लेकर जाने के लिए कहा। नरसंग खाली हाथ ही गया। कंकू वहीं लाठी लिये खड़ी रही।

नरसंग ने दाये हाथ से बछड़े का टूटा हुआ पगहा पकड़कर चकरोट में प्रवेश किया। बछड़ा चुपचाप पीछे-पीछे आ रहा था। किन्तु जैसे ही उसकी निगाह बुढऊ की खाट और लाठी लेकर खड़ी कंकू पर पड़ी। वह घबराया और पीछे मुड़कर उसने भागना चाहा। नरसंग ने एक बार तो पगहा छोड़ दिया किन्तु फिर उसकी नाथ पकड़कर दायें हाथ से धक्का देकर उसे जोर से खींचा। अब तक अपने कंधे तक बढ़े हो गये, कृषि-कार्य में योग्य हो चुके अपने पुत्र जितने ही प्रिय बछड़े की पीठ पर बायें हाथ की कुहनी इतने जोर से मारी कि बछड़ा नीचे नम गया। गिरते-गिरते बचा।

"अरे मार डारे क है का ? छाये में खाट पर लेटे घायल भगत अपने हाथ

का टेका लेकर उठ बैठे थे। नरसंग ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और नकेल पकड़े हुए बछड़े को खींचते हुए कुएँ के पास वाले खूँटे पर बाँधने के लिए ले गया। खूँटे में भैंस की एक फालतू जंजीर पड़ी थी। उसीसे उसने पगहा में दुहरी गाँठ बाँध दी और बड़-बड़ाने लगा। इतने में उसकी नजर दूसरी ओर गयी। खड़े होकर चलने की कोशिश कर रहे भगत थोड़ी ही दूर चलकर गिर पड़े थे। उसे उस ओर दौड़कर जाना पड़ा। खाट पर व्यवस्थित सुलाकर "पड़े रहो ठीक से बोले बिना"—कहकर हाथ में पैना लेकर उसे थोड़ा सबक सिखाने के लिए जाने लगा था कि भगत भरे हुए गले से बोल पड़े—"हमार कसम है जो तुम ऊका मारौ तौ......"

नरसंग को पैना फेंक देना पड़ा। बैल एकटक बुढऊ की खाट की ओर देखे जा रहा था। नरसंग की आँख भीग गयी। इतने में मोती कुम्हार आ गया। बुढऊ को देखा। हड्डी नहीं टूटी है यह जानकर संतोष व्यक्त किया। फिर कंकू से पीने के लिए पानी माँगा। नरसंग से चिलम भरने के लिए कहा और जमकर बैठ गये।

चिलम पी लेने के बाद थोड़ी देर इधर-उधर की बातें होती रहीं फिर मोती कुम्हार ने कहा—

"मानौ चहे न मानौ भगत के लाग जादा है। हमार मानौ तौ इनका घरे ले चलो। हुवां दवादारू करत बने, हियां तौ गरमी मां .."

"हमहूँ कबसे यही कहा चहत रहिन।" कंकू ने कहा।

भगत के मना करने के बावजूद मोती कुम्हार और नरसंग ने उनकी खाट को दोनों ओर से उठा लिया और घर ले आये।

भगत के शरीर का हाल पूछने आते लोगों को मोती कुम्हार संक्षेप में बता देते। उन्होंने छोटे बच्चों को डाँटकर भगा दिया। वहाँ घेमर आ पहुँचा। वह मोती से कुछ पूछे बिना ही हाँफता हुआ भगत के सिरहाने पहुँच गया। बोतल एक ओर रखकर भगत के गले से लिपटकर छोटे बच्चे की तरह रोने लगा। नरसंग उसे डाँटने गया पर ऐसा करते खुद उसकी आँखें गीली हो गईं।

देढ रुपया और एक आना लेकर घेमर पहुँचाने गया। वह ढेखाडिया के ठाकोर से शराब खरीद लाया था। वह पौने दो माँगता था। घेमर ने कहा था कि असल होगा तो देढ़ दूँगा, वरना सवा रुपया। कंकू ने देगची से पैसे निकाले, गिने और एक आना जोड़कर घेमर को दिये। वह बिना गिने ही जेब में डालकर चला। यह सुनकर कि कंकू ने डेढ़ पर एक आना ज्यादा दिया है, नरसंग ने हँसते हुए कहा : शाम को घेमर लौट आए तो सौगंद देकर पूछना। सवा रुपये से ज्यादा वह ठाकोर को देगा नहीं। दे तो फिर घेमर कैसा।

देवू जब घर पहुँचा तो नरसंग दूसरी बार भगत के शरीर में शराब की मालिश कर रहा था। कंकू हलवा बनाने की तैयारी कर रही थी।

देवू बड़ी देर तक बैचेन रहा। बड़ी देर से उसे प्यास लगी थी किन्तु अब वह पानी पीने उठा। फिर अंदर की चौखट पर बैठ गया-"बाबा का बछवा मारिस है ?" यह प्रश्न उसे बार बार सता रहा था। कुछ समझ में नहीं आ रहा था जैसे सिर पर पत्थर पड़ रहे हों।"

"तू भैंसिया का पानी पिलायेव रहा ?" नरसंग ने कंकू से पूछा।

"नाहीं .." कंकू को धक्का लगा। उसे इतना आघात लगा था कि सब कुछ भूल गयी थी।

"हम पियाय आइत है..." देवू खड़ा हो गया। लवजी भी साथ था। वापस आते ही लवजी ने कहा-

"अम्मा, देवू और बछवना दूनो रोवत रहें।"

यह वाक्य सुनने के पहले ही नरसंग चौखट से बाहर आ गया था। उसका मन आज बिल्कुल सूना-सूना लग रहा था।

खेतों में उसके प्रवेश करते ही पशु खुश हो गये। सिर्फ दूर बँधा हुआ बछड़ा खड़ा हो गया और डर की वजह से पीछे खिसककर बाड़ से सट खड़ा हो गया। उसके कोमल सफेद कूल्हे में काँटे गड़ने लगे। किन्तु नरसंग ने तो अब तक उधर देखा भी न था। दूसरे पशुओं के सामने चारा डालने के बाद भी उसकी ओर नहीं देखा। खाट छाये में खींची और जाकर पड़ा रहा।

टींबा की ओर जा रहा शिवा बाबा पगडंडी पर खड़ा हो गया। भगत का हालचाल पूछा। नरसंग को बहुत बुरा लगा। गाँव से ही आ रहा है तो घर जाकर ही क्यों न समाचार ले आया ? वह कुछ बोले कि इसके पूर्व ही बाबा ने स्पष्टता कर दी कि टींबा जाने की जल्दी थी। परमा शेनमा गाँव से दो भैंसे खरीदकर ले गया है लेकिन अब तक पैसे देने नहीं आया है। नरसंग के मन में अचानक कुछ कौंध गया-'नरसंग पटेल, बोलो, इ बछवा बेचे के है ? खूँटे पर ही चार सौ एक गिनाय देई।"

उसने इनकार करने के साथ ही उसे धमकाया भी था। परमा ने कबूल भी किया था कि इस प्रकार पालन-पोषण कर बछवा तैयार करने की समझदारी बहुत कम किसानों में होती है। नहीं ही बेचना चाहिए ..

"शिवा, एक काम करबी भैया ?" नरसंग के सिर पर जैसे भूत सवार हो- "परमा से कहेव कि आज के आजे इ बछवा का हाँक ले जाय। जब तक गरहक न मिले खर्चा तो हम देबे करब, ऊपर से पाँच रुपया फालतू और दुउ रुपया तुमका।"

शिवा कहने जा रहा था कि ऐसा तैयार बैल बेच देना मूर्खता है। इसके साथ हल में चल सके ऐसा बैल ढूँढ़ने से भी नहीं मिलेगा। किन्तु दो रुपये की लालच ने उसे चुप ही रखा। वह खेत में आ गया। नाली से पानी पीते हुए उसने कहा-

"मरकहा जानवर तो के हो जान ले लेय।" और चल पड़ा। मरकहा तो"

नाहीं रहा मुला . तू परमा का भेज्यो, दु-तीन दिन मां, नाहीं तौ फिर बुढऊ..." नरसंग ने देखा कि शिवा दूर निकल गया इसलिए वह चुप हो गया। दो-तीन दिन बाद बछड़ा इस खेत में नहीं होगा यह सोचकर उसका कलेजा काँप उठा। बछड़े को चारा डालकर उसकी पीठ पर हाथ फिराने की उसकी इच्छा होने लगी, किन्तु वह मुँह फेरकर, आँख बन्द करके पड़ा रहा। आम के बगीचे की ओर से कोयल के गाने की आवाज आ रही थी। उसने कान बन्द कर लिये।

इसी तरह दोपहर बीत गयी। एक पल के लिए भी आँख न लगी। दिन ढलने लगा। वह खाट में उसी तरह पड़ा रहा। छाया तो उसके ऊपर से कब की चली गयी थी।

मानो वह परमा शेनमा की राह न देख रहा हो। कहा तो उसने था दो-तीन दिन के लिए किन्तु उसे भय था कि कहीं परमा आज ही न आकर बछड़े को हाँक ले जाये . उसकी आशंका सही निकली। शिवा और परमा चक में आये। पूरी बात पलट दूँ? वह बछड़े को बेचने की बात सुनेगी तो कुएँ में ही कूद पड़ेगी—और बुढऊ? वह उठा नहीं। कुछ बोला भी नहीं। शिवा बोला—"बिचार बदल तौ नाहीं दिहौ? कहत होव तौ परमा हाँक लै जाय, पाँच दिन मां तौ इ गरहक ढूँढ़ निकारे। हम दूसर सब बात ईका बताय दी है।"

नरसंग कुछ बोला नहीं। इस बार परमा ने पूछा। "हाँक लैजा!"—कहकर नरसंग उठ बैठा।

"तौ चलौ खोल दियो।"

नरसंग नहीं बोला तो शिवा ने फिर पूछा-"बिचार बदल गया होय तौ..." वह घुमकर बैठ गया। जबान पर गाली को उसने रोक लिया था। वह उसी तरह बैठा रहा जैसे सारी दुनिया से नाराज हो।

सभी जानवर खड़े हो गये थे। बैल नाँद के साथ सींग रगड़ रहा था। मुँह छुपाकर बैठे नरसंग को बंद आँखों से सब कुछ दिखाई पड़ रहा था – परमा बछड़े की नाथ पकड़कर खींच रहा है। शिवा पीछे से सोंटा उठा रहा है, फिर दोनों उसे पुचकार कर चक के बाहर ले जा रहे हैं। और फिर नरसंग से बैठा नहीं रहा जा सका। वह पगड़ी से मुँह ढँककर लेट गया।

36

पिथू भगत ने मुश्किल से दो रातें घर में काटी थीं। पहली रात तो पीड़ा की वजह से नींद नहीं आयी ऐसा उन्होंने मान लिया था। दिन तो मुलाकातियों से बात-चीत में निकल गया। नरसंग दोपहर में खाना खाने आया और बिना कोई बात किये ही चला गया। माँ के कहने से देवू दवा मलने बैठाः "बेटा, हमार कहा मनबो?" देवू की गर्दन उस वृद्ध एवं वात्सल्यपूर्ण चेहरे पर झुक गयी।

"देख ई बोतल है न ? ईका अपने घूर मां उड़ेल आव, तुहार महतारी न देखे ।"

देवू ने बोतल उठाई और जाकर सारी शराब नाबदान में उड़ेल दी । कंकू ने जाना पर कुछ न बोली ।

देवू सारंग की लाइब्रेरी से गत सप्ताह एक पुस्तक ले आया था । रमण ने सिफारिश करके उसे सदस्य बना दिया था । एक वृद्ध आदमी पुस्तकों को रजिस्टर में दर्ज करने का काम करता था और दो-चार दिनों में एक मर्तबा पुस्तकों की आलमारी से धूल झाड़ने का काम कर देता था । कौन से दर्जे में पढ़ता है यह जानकर उसने देवू की ओर थोड़ी देर तक देखा फिर बोला था–"इतना छोटा लड़का पुस्तकें पढ़ेगा ? क्या समझेगा ?" उसने कुछेक बाल-पुस्तकें दिखायीं । "आई यम नॉट अ चाइल्ड – मैं बच्चा नहीं हूँ" देवू ने कहा । रमण ने प्रेम से और वृद्ध लाय-ब्रेरियन ने आश्चर्य से उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे शाबाशी दी थी ।

"कौन सी पुस्तक दूँ ?"

"पन्नालाल की ।"

"उनकी तो दो ही पुस्तकें अपने पास हैं । "मळेला जीव" और "पाछले बारणे ।" कहीं पड़ी तो होगी किन्तु तुझे बड़ा आदमी बनना हो तो रमणलाल वसंत-राय देसाई की पुस्तकें पढ़ जा ।"

"यह तो स्वयं ही दिन-प्रतिदिन बड़ा होता जाता है । इसके लिए पुस्तकें पढ़ने की जरूरत नहीं है । 'पाछले बारणे' हो तो निकाल दीजिए ।" रमण ने कहा ।

"पन्नालाल के प्रति आपको अनुराग लगता है मास्टर ।"

"अपनी ही जाति के हैं न ।"

"वे कडवा अथवा लेउआ पटेल नहीं हैं ?"

"नहीं, आंजणा हैं । क्यों देवूजी, अपनी जाति के लेखक की पुस्तक पढ़ना अपना फर्ज है कि नहीं ?"

"पुस्तक अच्छी हो तो ।" देवू को इस उत्तर के लिए सोचने की आवश्यकता न थी । लाइब्रेरियन को जब पता चला कि देवू रमण का साला है – पिथू भगत का पौत्र है, तो कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ ।

अमीचन्द सेठ ने जब यह लाइब्रेरी खोली थी तब उद्घाटन के समय पिथू भगत भी उपस्थित थे । सेठ ने उन्हें कालीन पर से उठाकर अपने पास बैठाया था। और दीवान साहब से पूछा था–"भगत को तो आप पहचानते ही होंगे ?" दीवान ने हँसते हुए कहा था-"पिथू भगत मुझे न पहचाने तो कोई बात नहीं किन्तु मैं इन्हें न पहचानूँ ऐसा संभव है ? जिसके घर सेठ अमीचन्द भी जायें···"

रमण ने बात काट दी । वह जानता था कि यह वृद्ध महोदय बहुत ही बातूनी हैं । राज्य की पुरानी बात चल पड़ी तो पुस्तकों को एक ओर रखकर बोलेंगे और बोलते ही रहेंगे···

"बेटा आ…" अचानक भगत उठ बैठे थे।

"बाबा, तुम अपने आप उठ बैठे ? माँ ! माँ…बाबा…" देवू जोर से बोला। कंकू घबराकर बाहर आ गयी। किन्तु देवू के चेहरे पर खुशी देखकर वह अन्दर के दालान में ही रुकी। सिर पर ठीक से ओढ़ा और बाहर बरोठे में आयी।

"बुआ, घबराय दिहिस।" वह हँसते हुए बोली।

"अब बाबा, तुम सोय जाओ, देखो सोते बनता है ?"

—देवू सारंग के नये डाक्टर की नकल करते हुए बोला।

"हमका नहाय के रहा थोड़ा।" बुढऊ संकोच में बोले।

"पानी गरम करे देइत है।" कंकू अन्दर चली।

"ठंडा चल जाई।"

किन्तु वह पानी गरम करने चली गयी।

बुढऊ ने देवू की ओर देखकर कहा—"बेटा !"

देवू ने तुरंत पुस्तक से निगाह उठाकर उनकी ओर देखा। हमार माला ले आऊ तौ नहाये के बाद थोड़ा फिराई, मन का चैन पड़ै।"

"तुमका नहवाय कै लै आई, कहाँ होये ?"

"अपने काका से कहेव, हेर दे हैं।"

"आज सबेरे लवा खाना ले ग रहा तौ काका माला फिरावत रहे, लवा कहता रहा। बाबा, ई कौन रिवाज है कि बाप क काका कहौ।"

"जौन कहौ तौन नाम मां का धरा है ?"

"तौ तुम राम-राम बोल के काहे माला फिरावत हो ?"

"राम माने भगवान, कबीरदास कहि गये हैं—

रामनाम कै मरम है आना, दशरथ-सुत का लोग बखाना।"

"मतलब ?"

"मतलब बाद मां पूछेव।" कंकू ने पीतल की बाल्टी में पानी भरकर रख दिया था। बुढऊ नहाने बैठ गये।

वह जब बाबा की पीठ मलने लगा तो अन्दर से कंकू की चेतावनी सुनाई दी—"अरे जहाँ लाग होय हुँवा दुखायेव न।"

रमण आ पहुँचा।

रमण पियू भगत का समाचार लेकर ससुर से मिलने खेत पर ही जाना चाहता था। वह जान लेना चाहता था कि छोटा बैल—जैसा कि लोगों का कहना था नरसंग ने बेच डाला है या नहीं ? हेती ने खास कहलवाया था कि वह स्वयं जाकर देख आये और कहे कि पैसे के लिए बेचा हो तो पैसा तो किसी से ब्याज पर भी मिल सकता था। किन्तु घर के एक सदस्य की तरह पला हुआ बछड़ा…

हेती को दोनों समाचार अलग-अलग प्राप्त हुए थे। दादा को चोट लगी है इसके साथ बछड़े को बेच देने की बात का सीधा संबंध है इसकी तो वह कल्पना

भी न कर सकी थी। सद्‌भाग्य से सूचना देने वाले ने भी इतना ही कहा था कि बुढऊ को लगा है। यदि उसे यह पता चलता कि बछड़े ने उन्हें मारा है तो उसके मनोमस्तिष्क पर क्या असर पड़ता इसकी कल्पना करना रमण के लिए भी मुश्किल था।

रमण और देवू के साथ खेत में जाने को बुढऊ ने इच्छा प्रकट की तो कंकू ने आवाज देकर दोलीमाँ से कहा : इन्हें समझाओ। उसका मानना था कि बिलकुल अच्छे हो जाने के बाद ही बुढऊ को खेत पर जाना चाहिए। मन में बूढ़े ससुर की सेवा करने की इच्छा थी और पूरे मुहल्ले वालों को बताना भी चाहती थी कि देखो हेती नहीं है फिर भी अकेली मैं कितने सारे काम कर सकती हूँ और ससुर के लिए दोपहर में आधा सेर घी का पकवान भी बना सकती हूँ। बछड़े को बेच देने के लिए उसने नरसंग को कुछ नहीं कहा था और देवू-लखजी ने भी उसकी सलाह का ख्याल रखा था। घेमर ने एक बार बात चलायी भी थी किन्तु देवू ने उसे चुप कर दिया था। घेमर चुप तो नहीं रहा था किन्तु अपनी योग्यता के अनुसार उसने बात अवश्य बदल दी थी—

"नरसंग काका के जगह हम होई तौ बछडवा का बेच डारित या तौ कहीं छोड आइत। सोने के कटारी होय तबो का भवा ? ऊका टेटें मां करवा बात है पेट मां नाहीं।"

घेमर की बात की ओर बुढऊ ने कोई ध्यान न दिया। कंकू को लगा कि बुढऊ बछड़े के बेचने की बात जान गये हैं इसीलिए उनके चेहरे का रंग फक पड़ गया है। नहीं तो जिस दिन लगा उस दिन जो आदमी हँसकर बात कर रहा था वही आदमी आज देह पर बैठी मक्खी भी न उड़ा रहा हो यह कैसे हो सकता है। बुढऊ को खेत में जाने से रोकने के पीछे एक यह भी कारण था।

किन्तु दोलीमाँ ने कंकू की बात का समर्थन करने के साथ ही उलटे यह भी कहा कि उन्हें तो खेत ही अच्छा लगेगा। जिसे जहाँ अच्छा लगता हो वहीं अच्छा लगेगा। वह भजन नहीं सुना है ! हम तो मोर को पिंजरे में बन्द करके पछताये। दोलीमां ने अपनी भाषा में यह पंक्ति कहते हुए हंस के बदले मोर कह दिया था। न तो उन्हें और न ही किसी और को यह मालूम था कि यह भजन नरसंग ने अपने मन से बनाया था। फिर मंडली में गाया भी था। टींबा की माणेक को मंदिर में बैठाकर लोगों ने जब मार डाला था उसके बाद ही यह भजन रचकर नरसंग के मन को शांति मिली थी। किन्तु पिछले तीन दिन से उसे चैन न था। बाप-बेटे की लगभग एक जैसी दशा थी। दूसरे ही दिन रात को पिथू भगत की नजरें खपरैल भेदकर ताराच्छादित आकाश देख लेना चाहती थीं। तारे देख देखकर ही उन्हें सोने की आदत थी। जबकि खेत में सो रहे नरसंग को रात में बैल की दो आँखों के पास उससे भी अधिक पैनेपन से चमकती दो दूसरी आँखों का अभाव बुरी तरह साल रहा था। किन्तु अब किया भी क्या जा

सकता है ? वह जाकर कहे तो परमा शेनमा बछड़े को वापस ला सकता है, परमा ने यदि किसी ग्राहक को बेच भी दिया हो तब भी वापस ले आयेगा। परमा का कहना था—"हम तो नरसग पटेल के गोरू के पाँव छूके सोमपुर मां जाइत है तो कभो खाली हाथे वापस नाहीं आइत है।"

किन्तु अब क्या हो ? थूककर चाटा नहीं जा सकता। बछड़ा पगहा तोड़कर स्वयं चला आये तो दूसरी बात है। किन्तु ऐसा कैसे हो सकता है ? शिवा बाबा कल कह रहा था कि बछड़ा अभी भी ठीक से चारा नहीं खाता है।

भगत के साथ धीरे-धीरे आ पहुँचे रमण और देवू जब चक में दाखिल हुए तो नरसंग कुएँ की जगत पर खड़ा-खड़ा टीबा की ओर देख रहा था। कुछ सोच-समझकर देवू ने बुढऊ को इस ओर ही नीम के नीचे पड़ी खाट पर बैठाया। बैठने के लिए मजबूर किया। फिर वह रमण के साथ कुएँ के पास गया।

नरसंग ने बुझते स्वर में स्वागत किया। सबकी कुशलता का समाचार पूछा। रमण कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गया है और भविष्य में सत्ता के लिए चुनाव भी लड़ने वाला है यह समाचार उसने कुछ दिन पहले ही शंभू नायक के मुँह से सुना था। किन्तु इस बारे में उसने रमण से कुछ न पूछा। टोपी, कुर्ता और धोती खादी की है यह देखकर ही वह समझ गया। यह देर-सबेर राजनीति में जरूर जाएगा। वह इतना तो कब का समझ चुका था कि हीरूभाई की तरह सेवा-भावना से प्रेरित होकर मेरे दामाद ने ऐसे कपड़े पहने हों यह बात नहीं है। सारंग और कलोल के मध्य चलने वाली बस की आमदनी, तम्बाकू के व्यापार की आमदनी और नये खरीदे ट्रक के भाड़े की आमदनी—वह कभी कभी गिनने लगता कि दामाद कितना कमाता होगा। किन्तु इस बारे में उसे अधिक कुछ समझ में नहीं आता। लड़की सुखी रहेगी। इस ख्याल मात्र से ही उसका मन संतुष्ट हो जाता। वह काम में लग जाता।

रमण आज ही घर चला जाना चाहता था। नरसंग ने कोई आग्रह न किया यह देखकर देवू को आश्चर्य हुआ। किन्तु फिर उसने भी हठ नहीं किया। रमण ने चकरोट होकर घर जाने के बजाय सीधे खेतों के बीच से ही सारंग की राह पकड़ी। बहुत दिनों के बाद उसने हेती को बछड़े के बेच देने वाली बात बतायी थी। इस बीच नरसंग ने एक दूसरा बैल खरीद लिया था जो दो-तीन वर्ष चले ऐसा था।

पूरे सत्रह दिन तक नरसंग और पिथू भगत के बीच ठीक से बातचीत नहीं हो पाई। कोई काम हो तो एक शब्द, आधे शब्द से निपट जाता। भगत किसी से बात करते तो आसपास बैठा नरसंग कान धरता। देवू या लवजी नरसंग से कुछ पूछते तो भगत के कान चौकन्ने रहते।

बछड़े की जगह बूढ़े बैल को खरीदा उसके बाद घर से चाय लेकर आये देवू ने नरसंग से पूछा :

"उस दिन आप भजन-मंडली में बता रहे थे कि आदमी जल्दबाजी करने की

आदत छोड़ दे तो दुनिया के बहुत से पाप रुक जाएँ। तब फिर आपने बछड़ा बेच देने में-"

नरसंग क्या कहता है यह सुनने भगत छड़ी का सहारा ले खड़े होकर पास आए। नरसंग ने देवू से कहा कि उसने जिन्दगी में ऐसी जल्दबाजी कभी नहीं की, पर तू ही बता, हमारा ढोर मुझे मारे तो तू उसे बेच डाले या नहीं ?

"हमारा ढोर आपको कभी मार सकता है ?"-देवू ने कहा।

"बस, यही कहना था मुझे इतने दिनों से - भगत बोल पड़े - बछड़े ने जान-बूझकर मुझे चोट नहीं पहुँचाई थी। सो तो ऐसा है कि-

नरसंग और आगे सुने बिना खड़ा हो गया। भगत वहीं रुक गए। वे देख रहे थे नरसंग के मुँह पर पछतावे का भाव...दोष किसे दें, कुदरत-

अब नरसंग भी रात सोते समय माला फिराता है। अब उसका मन दुनियादारी में नहीं लगता। वेमर की पत्नी को लिवाने जाना था। दो बार आकर फला कह गया था। अन्ततः शर्म त्याग कर घमर भी बुलाने आ गया था किन्तु नरसंग ने एक ही उत्तर दिया था - देवू को ले जाओ।

इस वर्ष मुहल्ले में किसी के ब्याह नहीं था। उतरते बैसाख कोई शुभ दिन देखकर देवू को गोकुलिया भेजना था, हेती को लिवा लाने के लिए, गोद भरने के लिए। पहली सौरी मायके में ही हो यह रिवाज रमण को पसंद न आया। किन्तु उसने आपत्ति न की। उस दिन उसने ट्रक को भाड़े पर नहीं भेजा। हेती और देवू अगली सीट पर बैठ गये तब रमण ने ड्राइवर को सूचना दी - धीरे से चलाना और बिल्कुल....'नाही सारंग के चौक तक।" भाईबहन साथ ही बोल पड़े। हेती की आवाज देवू की आवाज के नीचे दब गयी। रमण न सुन सका।

कंकू और दोलीमाँ हेती के स्वास्थ्य की बहुत देखभाल करतीं। हेती को पेट के भीतर मीठा-मीठा दर्द महसूस होता। आँखें बंद करके वह अपने भीतर उतर जाती और अपने गर्भ मे विकसित हो रहे शिशु की आँखो में देखने लगती।

नरसंग को कुछ दिन पहले ही पता चला था कि बछड़ा इस समय गोझारिया के एक कुणबी के घर है। परमा ने उसका पता और ठिकाना भी बता दिया था।

इतने दिनों में बछड़ा बिकते-बिकते तीसरे घर पहुँच गया था। और हर सौदे में परमा को ही बीच में पड़ना पड़ा था। ज्यों ज्यों दिन बीतते जा रहे थे बछड़ा अधिक से अधिक मरकहा होता जा रहा था। खेती के काम में तो पीछे नहीं रहता किन्तु उसे खूँटे से खोलते समय या हल में नाँधते समय हाथ में लाठी रखनी पड़ती थी। यह बात सुनकर परमा को आश्चर्य हुआ था। किन्तु जब नरसंग ने सुना कि बछड़ा आधा सूख गया है तब उसे दुख हुआ। और वक्त निकालकर एक बार उसके पुट्ठे पर हाथ फिरा आने की उसकी इच्छा तीव्र हो उठी। विचार तो कई बार हुआ किन्तु घर वालों को गोझारिया जाने का कारण क्या बताए ? बेचराजी से

वापस आते समय गोझारिया उतरकर सोमपुरा आने का रास्ता है यह पता चलते ही उसने वहाँ जाने का मन ही मन तय कर लिया।

वर्षा ऋतु थी। इस मौसम मे दोपहर के समय बैल खूँट पर बंधे हो इस बात की संभावना नहीं थी। नरसंग ने घर तो ढूँढ निकाला। किन्तु सामने से सूखा जवाब मिला। नरसंग अपने स्वभाव के प्रतिकूल धीमे स्वर में बोला–

"भैया हमहूँ किसान होई। अतना तो हमहूँ क मालुम है। मुला औ कौना लड़का साथे भेज दियो तो हम तुम्हरे सिवाने तक जाब़ी औ ऊके पीठी पर थोड़ा हाथ फिराय लेई।"

"ओहो, तौ लेव न हमहिन साथे आइत है। हमहूँ क खेते जाय क है।"

थोड़ी देर बाद नरसंग ने पूछा–

"चले मां कस है?"

"यक लम्बर।" कहकर उसने सिवान का रास्ता बताया।

"काहे हुवाँ तक न औबो?"

"काहे तुहार नौकर हन का? ई आँजणा के जाति–"

नरसंग क्रोधित न हुआ। उत्तर भी नहीं दिया। पटेल में थोड़ी बुद्धिमानी आयी।

"हम ई खेते मां देख कै आइत है। हरवाह सोवत होय तौ जगाय देई। तुमका अकेले जात डर लागत होय तो खड़े रहौ, आइत है। बछवना तुमहूँ क मौरे दौरत रहा का?"

नरसंग कुछ बोले बिना आगे बढ़ गया। रखवाला सचमुच सो रहा था। आवाज सुनकर जाग गया।

आवाज सुनकर बैलों ने ऊपर देखा। सबने अपने सींग हिलाए। बछड़ा दौड़ा। किन्तु नरसंग से निगाह मिलते ही रुक गया। फिर पीछे खिसका और जैसे अपनी जगह पर ही बैठ गया।

नरसंग नीचे बैठ गया। बछड़े के माथे पर हाथ रखकर प्रेम से अपना सिर उस पर रख दिया। फिर उसके कान अपने गालों पर रगड़ने लगा, जैसे कोई छोटा बालक पिल्ले से खेल रहा हो।" रखवाला आकर पीछे खड़ा हो गया।

नरसंग उठ खड़ा हुआ: "उठ भाई जस भाग मां लिखा होय, तस करा।"

वह लौटने लगा। बछड़ा भी खड़ा हो गया और रखवाले या उसकी उठी हुई लाठी की ओर ध्यान दिये बगैर नरसंग के पीछे पीछे चल पड़ा।

लाठी की आवाजें सुनकर नरसंग ने पीछे देखा। उसका चेहरा लाल हो गया–

"अरे नालायक, काहे बेचारे क मारत है?"

"तौ तुहरे पीछे आवै देई? हमैं मालुम है तुम ईके काने मां मंतर मार के ले जात हौ। चोर के कौनो जाति होत है?"

"अरे ई तौ उनरके के मूल मालिक है। उल्टा-सीधा न बोल।" वापस आ पहुँचे पटेल ने कहा।

"बोलौ पटेल, बेचै क है ?"

"बेंच की ताईं खरीदा रहा ?"

"तौ तुहार मरजी । जा भाई जा ।" नरसंग की आवाज सुनकर बछड़ा रुक गया था ।

"अच्छा पटेल अब चली । राम-राम, तुमका खरी दुपहरिया मा तकलीफ दीन ।" थोड़ी दूर चलकर फिर से नरसंग ने कहा–

"बोलौ, फिर पूछित है, बेचै क है ?"

"मूल कीमत मिलत होय तौ–" रखवाला बोल उठा ।

"अरे पाँच रुपया जादा ।" नरसंग ने आवेश में कहा ।

"नाही, मुला छोडब ना एकौ रुपया ।"

"चलौ, आजै रोकड़ा गिन देव । नाहीं तो पिथू भगत कं लड़का नाही ।"

"तौ तुम नरसग पिथू, पिथू भगत कै लड़का होव ?"

"उनकी खातिर तो इ सब भवा ।" नरसंग ने सक्षेप में बताया । पटेल खुश हो गया । "जाव पोन्च कम दिहौ । औ फुरसत पैसा ले जाव । अरे आपन पगड़ी दे, बाँध कै लै जाय ।"

रखवाला अपनी पगड़ी उतारने जा रहा था तो नरसंग ने मना कर दिया । "पगड़ी तौ हमरे लगे कहाँ नाहा न ? मुला बाँधे कै जरूरत नाही न । देख्यौ पानी के धार की तिनके बहत चला आये ।"

ऐसा ही हुआ । सीधे पिथू भगत के पास जाकर बछड़ा रुका और उनका नंगा कन्धा चाटने लगा । भगत बोले–

"नरसंग, चार महीना कै दर्द आज मिटा देही मे ।"

37

सोमपुरा में उस दिन दो बच्चे जन्मे थे । धमला पिता बना था, और नरसग दादा ।

धमला भाग्यशाली था । गाँव की स्त्रियों की मान्यता थी कि अधिक उम्र होने के बाद गर्भ रहने से बच्चे के जन्म के समय खतरा अधिक होता है । किन्तु वेली को अधिक सहन नहीं करना पड़ा था । उसका बच्चा जैसे उछलकर बाहर आ गया था । किन्तु उसके बच्चे के रोने की आवाज कुछ विचित्र थी । उसकी ओर मात्र एक ही दायी का ध्यान गया था और वह थी दोलीमाँ ।

धमला के यहाँ से अभी–अभी दोलीमाँ आकर अपने घर बैठी ही थीं कि कंकू हाँफती हुई आयी–

"मरी पहेले बातौ नाही किहिस, अब कहत है, अम्मा हमें कुछ होत है । देखौ न, ई पानी अस कुछ.."

दोलीमाँ जैसे वृद्धावस्था की थकान को झाड़कर फट से खड़ी हो गयीं और अपनी आदत के अनुसार धीरे–धीरे किन्तु खुशी से स्वयं से बतियाते हुए कंकू के आगे चल पड़ीं।

हेती ने माँ को जगाया था तो देवू भी जाग गया था। उसने मुँह–अंधेरे में देखा तो माँ एक खाट और गुदड़ी कोठरी में ले जा रही थी। वह समझ गया।

दोली माँ और कंकू हेती को हाथ का सहारा देकर कोठरी में ले गयीं। कंकू ने किसी अन्य को बुलाने के लिए दोली माँ से पूछा।

"हम बलाय लायी अम्मा ?" देवू खाट पर उठकर बैठते हुए बोला।

"तू सोय जा भैया" दोली माँ ने कहा "ई माँ तुहार काम नाहीं है।"

देवू संकोच के साथ सो गया।

कंकू तेजी से बाहर गई। जतन के साथ वापस आयी। फिर कंकू के साथ कौन सी स्त्री आयी उसे आवाज से देवू नहीं पहचान सका। "बिटिया रोवत नाहीं है मुला दुखत बहुत होये अस लागत है हाँ कंकू। मुला चिन्ता ना कर्यो, अब्बै भगवान औतार ले हैं।"

देवू की इच्छा हुई कि दादा से कहकर आ जाये। किन्तु क्या ? इस बारे में कहीं उनसे बात की जाती होगी ?

देर होती जा रही थी और कंकू की आवाज में घबराहट बढ़ती जा रही थी। दूसरी स्त्रियाँ बीच-बीच में इधर–उधर की बातों में लग जाती थीं किन्तु हेती की दशा के बारे में दोली माँ का अभिप्राय पाकर चुप हो जाती थीं। गंभीरता से किसी न किसी काम में लग जाती थीं। देवू को ऐसा लग रहा था जैसे सारी स्त्रियाँ हेती को कोई उबटन लगा रही हो।

अचानक वह उठ बैठा। रमणजी की कही हुई बात उसे याद आ गयी– "तुम्हारी बहन को कभी कोई तकलीफ हो तो सारंग से डॉक्टर माने को बुला लाना। उस समय यदि उन्हें कोई सवारी नहीं मिलेगी तो वे चलते हुए भी आयेंगे। मैंने उनसे कह रखा है।" बात मन में बैठ गयी। रमणजी ने इसी बारे में कहा होगा।

उसके मन में विचार आया कि लवजी को जगाये। किन्तु उसे जागने में देर लगेगी और राह में भी धीरे-धीरे चलेगा। मुझे कोई डर नहीं। दौड़ता हुआ जाऊँगा तो पन्द्रह मिनट में डॉक्टर माने के दवाखाने पहुँच जाऊँगा। तो जाऊं ? माँ से कहूँ ? मना कर देगी तो ? दोलीमाँ तो मना ही कर देगी। देखूँ ? भय– काहे का भय ? रोज इसी रास्ते से तो पढ़ने जाता हूँ। कल इसी कोने में डंडा पड़ा था। साथ लेता जाऊँ। आवाज न हो इस प्रकार वह खाट पर से खड़ा हुआ। डंडा हाथ में आ गया। चप्पल भी। नहीं, चप्पल नहीं पहननी है। पट्टी टूटने वाली है। क्या काम है ? धीरे से बाहर आकर उसने दरवाजा उढ़का दिया।

गाँव के बाहर आते ही वह दौड़ने लगा। पूर्व दिशा का उजाला अब लालिमा में बदलने लगा था। दिन निकलने के पहले तो वह डॉक्टर को लेकर लगभग आधी

दूर तक आ चुका होगा। डॉक्टर भी जल्दी-जल्दी चलेंगे तो — वे मास्टर के दोस्त ही तो हैं। गत वर्ष ही तो वे होरहा खाने गोकुलिया गये थे। हेती ही तो कहती थी। दौड़ते हुए देवू के मन में विचार भी उसी गति से आ जा रहे थे। डॉक्टर मुझे पहचानेंगे न ? नहीं पहचानेंगे तो कोई बात नहीं, कह दूँगा, रमणजी ने कहा था...

डॉक्टर अपने घर के कपाउंड में घूम-घूमकर दातून कर रहे थे। दरवाजा अन्दर से बन्द था। देवू को खोलना नहीं आया। आवाज सुनकर डॉक्टर स्वयं आये। उन्होंने देवू को पहचाना। "कौन देवजी ? मास्टर ने मुझे कहा था। यद्यपि मुझे आशा नहीं थी कि कोई बुलाने आयेगा। कैसी हैं तुम्हारी बहन ?"

"मुझे चिन्ता हुई, दौड़ता हुआ आया हूँ। रमणजी ने "

"हाँ हाँ, ठीक है" बात करते करते ही डॉक्टर घर में गये। कपड़े बदले, बक्सा लिया। एक मिनट भी वे चुप न रहे। बम्बई से यहाँ आने के बाद उन्होंने गुजराती सीख ली थी।

डॉक्टर माने को देवू के साथ बात करने में आनन्द आया। उससे भी अधिक आनन्द आया उसके साथ दौड़ते हुए चलने में। क्षण भर के लिए तो उनकी इच्छा हुई कि इस लड़के को गोद में उठाकर दौड़ने लगें। एक हाथ में बक्सा दूसरे में देवू। देवू के मुहल्ले में प्रवेश करते समय उन्होंने उससे पूछा—'अहमदाबाद गये हो ?" "नहीं।" हम साथ में ही चलेंगे।" देवू कुछ न बोला। डॉक्टर ने महसूस किया— यह लड़का बातों में साथ तो देता ही है किन्तु बीच-बीच में गंभीर हो जाता है। समझदार लगता है।

कंकू रो रही है क्या ? देवू घर में दौड़ गया। दोली मां और जतन हेती के पांव में कुछ घिस रही थीं। "का भवा अम्मा ? हम डॉक्टर साहेब क बुलाय लाइन है।"

कंकू खड़ी हो गयी। आँसू पोंछे

"साहेब तुहरे आगे कोंछ फैलाइत हैं, हमरी बिटिया क जियाय लेव।"

"जिलाने वाला तो ऊपर बैठा है।" डॉक्टर ने इन लोगों की भाषा में बात करने का प्रयास किया। और पानी गर्म करने की सूचना दी।

कंकू की चिन्ता कम तो हुई किन्तु जब तक हेती बोलती नहीं है तब तक

"कैसी हो हेती-बहन" डॉक्टर भाभी कहने जा रहे थे। सुधार लिया। हेती ने उत्तर नहीं दिया। गर्म पानी आ गया। डॉक्टर ने इन्जेक्शन तैयार किया। फिर पूछा—"क्यों बोलती नहीं हो हेतीबहन ? मुझे नहीं पहचाना ?"

दोलीमाँ से चुप नहीं रहा जा सका। "तुमहूँ साहेब कस सवाल पूछत हौ। बिटिया होस मां होय तौ......"

"अरे दादी माँ मुझे आते हुए उसने देखा है। इसने शर्म से आँखें बन्द कर ली हैं। इतनी पीड़ा में भी यह शरमा रही है इसलिए मैं कह सकता हूँ कि इन्हें अब कोई खतरा नहीं है।"

"मुला अब हीं तो ?"

"सहन नाहीं होत रहा, का बोली ?" हेती बोली। डॉक्टर ने इन्जेक्शन दिया था, यह इसीका असर था ? इतनी जल्दी ? सब यही मान रहे थे कि हेती होश में नहीं थी।

"बिटिया सही बताऊ, अबहीं तुम बेहोस नाहीं रहिस ?"

"डॉक्टर खड़खड़ाकर हँस पड़े। स्वयं होश में नहीं है यह बात आदमी को पता नहीं होती, इसे समझाना इन लोगों को संभव न था।

देवू डॉक्टर को बैठने के लिए चौकी देकर बाहर आ गया था। लवजी तमाम प्रश्न पूछ रहा था किन्तु वह किसी का जवाब नहीं दे रहा था। बीच में डॉक्टर जोर से हँसे यह भी उसे नहीं पसन्द आया। लवजी उससे चिपककर बैठ गया।

"अरे मुला ई आदमी के होय ई तो बताव ?"

'डाक्टर।"

"डाक्टर ? अपने गाँव मां डाक्टर कहां से ?"

देवू कुछ न बोला। थोड़ी देर में डॉक्टर बाहर आये। उन्होंने हाथ धोए। 'अभी थोड़ी देर है।" उन्होंने देवू की ओर देखते हुए कहा—"हम चाय क्यों न पीये ?" देवू हँस नहीं सका। डॉक्टर ने उसकी मनोदशा समझकर उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—"बहन का स्वास्थ्य ठीक है। चिन्ता मत करो।" फिर रुककर लवजी की ओर देख कर बोले—"स्वास्थ्य माने ?"

"तबीयत"—लवजी को डॉक्टर से बात करने में मजा आया।

चाय पीते समय डॉक्टर एक बार अन्दर गये। फिर शीघ्रता से बाहर आ गये। चाय को ठंडी करके पीने का धैर्य उनमें न था, देवू को लगा। किन्तु शीघ्रता की वजह दूसरी थी यह बात उसकी समझ में बाद में आयी। वे तुरंत अन्दर गये। हेती से कुछ कहने लगे कहते रहे। फिर जैसे दोली माँ को उन्होंने कोई सूचना दी हो। और देवू चौंक उठा. लवजी खड़ा हो गया। बच्चा जोर से रोया था।

"भानजा आवा।" घर से बाहर आते हुए दोली माँ ने जैसे सारे मुहल्ले को सूचना देते हुए खुशी से कहा। लवजी अन्दर दौड़ा। देवू ने रोककर पूछा—"कहाँ चले ?"

"मान्जे क देख आई, एक चुम्मा ले आयी ? कस होये ?" देवू ने उसे अन्दर न जाने दिया। कारण भी नहीं बताया। लवजी मन मनाता हुआ बैठा रहा।

कंकू ने फीस के बारे में पूछा। डॉक्टर ने कहा "सवा महीने के बाद भानजे को खिलाने आऊँगा तब दोनों विजिट की फीस एक साथ ले लूँगा।"

देवू के साथ लवजी भी डॉक्टर को छोड़ने गया। रास्ते में मिल गये और अत्यधिक खुश दिखाई पड़ रहे धमला ने सुसंस्कृत आदमी की तरह डॉक्टर को नमस्कार किया। डॉक्टर ने जवाब देकर कहा—"तुम्हारा गांव मुझे अच्छा लगा। अब तुम वापस जाओ।"

देवू खेत की ओर चला गया। लवजी भानजे को देखने घर की ओर।

देवू दस दिन तक हेती से बात न कर सका। बार बार इच्छा होने के बावजूद भीतर के कमरे में जाकर भानजे को देखने का साहस न कर सका था। लवजी तो पहले ही दिन कंकू के पीछे-पीछे भीतर के कमरे तक पहुँच गया था। भानजे को देखकर ही उसने चैन लिया। फिर वर्णन करने लगा। देख तो सही हेती, कैसा पेंडुक जैसा है। उसकी हथेलियाँ और एड़ियाँ रमणजी के कुर्ते की खादी जैसी हैं उजली उजली। कैसा गरीब है बापुरा। तनिक भी रोता नहीं। मैं इसका मामा लगता, ला मैं उसे अपने हाथों में उठा लूँ। नहीं, अभी सोने देता हूँ। ए भानजे तुझे सोना है न? सो भैया। भगवान तुझे यहाँ छोड़ने आये तब क्यों रोया था? मैं नहीं था क्या? मैं तुझे भगवान की तरह संभालूँगा। मेरा बेटा! सोता भी है और मेरी ओर पैर भी हिलाता है।

कंकू ने लवजी की पीठ पर थप्पड़ लगाई क्योंकि इसने भानजे को "बेटा" कहा था। लवजी अपनी भूल कबूल करके एक ओर खड़ा हो गया। अवसर मिलते ही भानजे को शकर चटाने की अभिलाषा करने लगा। लवजी द्वारा सुनी हुई ऐसी बातों से देवू को समाचार मिलता। स्कूल में रमण मिलता और कुछ पूछता तो वह लवजी की सुनी हुई बातें दुहरा देता। उसकी समझ में एक बात नहीं आ रही थी। "यह सवा महीने का छूआछूत किस लिये?" दोली माँ की बात क्या बुरी है कि दूसरी औरतें पन्द्रह-बीस दिन में काम करने लग जाती हैं। उसे बार-बार लगता कि यदि वह डॉक्टर मा'ने को बुलाकर न लाता तो? "बहुत पागनपन करिस भाई तू तौ, मुला ठीक कर्यो, जौन मन मां आवा तौन कर्यो, हमें अच्छा लाग।" पिथू भगत ने कहा था।

"डोरा धागा बांध के दुसरे का जियावे वाले के घरे डाक्टर!" नरसंग ने मजाक में कहा।

देवू कहने वाला था कि वह तो रमणजी ने कहा था इसलिए। किन्तु नहीं, ऐसा नहीं कहा जाता। रमणजी का नाम ही बीच में नहीं लाया जा सकता। उसने कहने के लिए कहा था एक बार—"सोमपुरा नहीं आना है मास्टर?" रमण ने हँसते हुए कहा था—"शरमा के मार डालना है क्या?" देवू समझ गया था।

देवू देखता और लवजी से बताता कि स्कूल छूटने के बाद रमणजी अक्सर पद्माभाई की दुकान पर आकर बैठते हैं। खादी के वस्त्र उन्हें अब रास आ गए हैं। चुनाव की बात चल रही है उसमें उनका नाम भी लिया जा रहा है। पद्माभाई दिल्ली जायें और रमणजी बम्बई। हीरूभाई? जहाँ हैं वहीं रहें। संभवतः उन्होंने दिल्ली या बम्बई दो में से एक भी नहीं देखा हो। लवजी के मन में प्रश्न उठता — रमणजी बम्बई जायेंगे तो वहाँ जाकर क्या करेंगे? कांग्रेस के टिकट से भी बंबई जाया जाता है और रेलवे के टिकट से भी। दोनों में अन्तर क्या है? दूसरे दिन स्कूल छूटने के बाद वह जरूर रमणजी से पूछेगा, उसने तय किया।

38

लोगों को इतनी जल्दी कैसे जानकारी मिल जाती होगी ? मैं बम्बई और पशाभाई दिल्ली – यह गणना तो अब तक मेरे मन में ही थी । उन्हें लोकसभा में भेजने से विधानसभा की सीट मुझे ही मिलेगी यह बात लोगों को कैसे मालूम हुई ? पशाभाई दिल्ली के ही योग्य हैं इस समाचार को फलाने के पीछे जो आशय था, लोग जरूरत से ज्यादा जल्दी समझ गये । पिथू भगत तक ने तो कहा–

"तुम अबहिनै से अतना हुँसियार होय गयौ हे तौ आगे चलके का करबौ ? मुला अतना याद राखेव कि केहू के चिता पर आपन खिचड़ी पकावे वाला कबौ सुखी नाहीं होत । सुख तौ मन के मिलकर होय । हम सोचत रहिन कि तुम हीरू-भाई के साथे काम करबो । मुला तुम पशाभाई के सेवा करे लाग्यो । ठीक है । जौन अच्छा लागे तौन करो । हम तौ जियब तक तुहैं आगे बढ़त देख के राजी होय और भगवानौ क परार्थना करन कि कौनो बुरा कदम तुम से न उठवावै ।"

रमण पिथू भगत की सलाह लेने नहीं आया था । वह तो हेती और डेढ़ महीने के बच्चे को देखने गया था । औपचारिकता के नाते खेत पर भी चला गया तो वहाँ अनिच्छा से बात निकल आयी थी । वह चुप रहा । जब तक टिकट मिल जाये वह क्या बोल सकता था ? पशाभाई की मदद से यदि यह चुनाव मै जीत जाऊँ तो दूसरा चुनाव तो मै खुद पशाभाई के खिलाफ भी जीत सकता हूँ, इतनी योग्यता मैं पेदा कर लूँगा । पशाभाई के विरुद्ध सोचते हुए उन्हीं की मदद माँगने जाते समय उसे अपराधबोध नहीं हो रहा था । उसे मालूम था कि गरज नहीं होगी तो पशाभाई भी उसे चूसी हुई गुठली की तरह दूर फेंक देंगे ।

रमण को यह भी मालूम था कि टिकट मिलने के बाद हीरूभाई की मदद अवश्य मिलेगी किन्तु उसे यह नही मालूम था कि टिकट दिलाने में हीरूभाई कितने सक्रिय बन सकते हैं । और उनकी सक्रियता को ऊपर बैठे हुए नेता कितना महत्त्व देंगे ? हीरूभाई आज कांग्रेस सेवादल के जिलाधिकारी हैं, उनका अधिकार मात्र सेवा करना है । सब जानते हैं कि राजनीति विषयक इनकी समझदारी में किसी प्रकार का धुंधलापन नहीं है । किसी सभा में वे बोलते हैं तो सामान्य प्रजा को लक्ष्य करके बोलते हैं, प्रभावक दृष्टान्त देते हैं, निश्चित समय में वक्तव्य पूरा करके बैठ जाते हैं, श्रोता हुलास के साथ तालियाँ बजाते हैं । सब जानते हैं कि सच बोलते समय वे अनुशासन-भंग की परवाह नहीं करते । एक बार रमण ने हीरूभाई से कहा था । "शुद्ध सोने के गहने गढ़े जा सकते हैं क्या ? उसमें तांबा मिलाना पड़ता है ।" "शुद्ध सोने से मुझे क्या वास्ता ? मुझे तो यहाँ का तांबा ही गढ़ना है ।" हीरू-भाई चाहते थे कि इस इलाके के प्रजा-रूपी तांबे में ये लोग मिलावट न करें, इसकी मूल शक्ति को क्षीण न करें ।

एक बार बात चलने पर रमण ने पशाभाई को दिल्ली भेजने वाली बात चलाई–

"वह तो अन्ततः समिति को तय करना है। किन्तु मान लो कि पशाभाई को पसन्द किया जाता है तो वे दिल्ली जाकर करेंगे क्या ?"

"वैसे तो गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ से कुल मिलाकर २२ लोगों को भेजना है। वे सब जाकर क्या करेंगे ?"

"दूसरों की बात हम थोड़ी देर के लिए छोड़ दें। हमें जिसे वोट देना है उसकी बात करें।"

"इस बारे में उनसे ही पूछना पड़ेगा। किन्तु वे भाषण तो देंगे ही।"

"किस भाषा में ?"

"क्यों ? आवश्यकता होने पर वे अंग्रेजी शब्दों का भी इस्तेमाल नहीं करते ? वाक्यों में नहीं तो शब्दों में बोलेंगे। और अन्ततः हिन्दी तो है ही। वाक्य के अन्त में 'है" लगा देंगे, बस हो गयी हिन्दी। वैसे उनमें सभाक्षोभ तो नहीं ही है।"

"हाँ क्षोभ तो उनको सुनने वालों को होगा।"–

हीरूभाई की बात से रमण ठहाका लगाकर हँस पड़ा।

"किन्तु पशाभाई तो बम्बई जाना ही पसन्द करेंगे। उनके व्यापार-धंधे के अनुकूल यही होगा।"

"हमें उनकी अनुकूलता को ध्यान में रखना होगा ?"

"तुम्हें जाना है विधानसभा में ? तो पहले से ही तैयारी कर लो। प्रदेश-समिति और प्रान्तीय समिति तक नाम पहुँचाना पड़ेगा। देखो कहीं यह मत मान बैठना कि हीरूभाई कहेंगे तो तुम्हें टिकट मिल ही जायेगा।"

"मान लीजिए कि आपकी शुभेच्छा से मुझे टिकट मिल जाये तो जीतने की उम्मीद तो है ?"

"मान लीजिए ? तुमने तो मान ही लिया है।"

"हीरूभाई आप इतनी जल्दी हमारा इरादा समझ जायें यह अच्छी बात नहीं है। मैं तो मान रहा था कि मैं राजनीतिक निपुणता से बात कर रहा हूँ।"

"राजनीतिक निपुणता कोई गोकुलिया के रास्ते में पड़ी हुई है क्या ? वह सरदार पटेल के पास थी, उन्हीं के साथ चली गयी।"

"आप तो शायद ही कभी सरदार पटेल की प्रशंसा करते थे, आज क्यों ?"

हीरूभाई जल्दी में थे। उन्होंने कहा "तुम्हें यदि विधानसभा का टिकट चाहिए तो मात्र अकेले पशाभाई की ही छत्रछाया काफी नहीं है। अहमदाबाद-बम्बई का एक चक्कर लगा आना पड़ेगा।"

रमण का अनुमान था कि काँग्रेस का टिकट प्राप्त करना आसान कार्य है। पशाभाई यदि ऊपर भेजे जाते हैं तो नीचे की सीट के लिए प्रजा के स्तर और जातियों की मतसंख्या का विचार करना ही पड़ेगा। पटेलों और चौधरियों के वोट एक ही व्यक्ति को मिलें यह दोनों के हित में है। किन्तु यह गणना बाद में समझानी है। पहले तो बालूभाई की सिफारिश का लाभ लेकर ऊपर बात पक्की करनी चाहिए।

बालूभाई ने अपना संपूर्ण उत्साह इस दिशा में लगा दिया था। किन्तु अभी पशाभाई को प्रसन्न करना था। वे कभी-कभी टालमटोल कर जाते और कभी-कभी कह देते कि चुनाव ही नहीं लड़ना है।

"आराम से इस गद्दी-तकिये पर बैठा हूँ। इसे छोड़कर सारंग और दिल्ली के बीच का चक्कर लगाऊँ?"

"वहाँ भी आराम से ही बैठना होता है।" कहते हुए रमण ने दिल्ली जाने के लाभ गिनाये, फिर कहा—"अब आपका नाम घोषित किया जा चुका है, ऐसे में अगर आप आनाकानी करेंगे तो आप ही नहीं, हम भी बदनाम होंगे और सारंग की तो नाक ही कट जायेगी।"

"किन्तु प्रजामंडल वाले मुझे दिल्ली भेजने के लिए तैयार होंगे? जब से ये लोग कांग्रेस में घुसे हैं तबसे हमारा सोचा हुआ कुछ करने ही नहीं देते। नहीं भाई नहीं, इस माथाकूट में मुझे नहीं पड़ना है। अपने लिए तो यह बाप-दादा का धंधा और खेती पर्याप्त है। और सेवा की भावना है तो लोगों की सहायता भी होती ही रहती है।"

पशाभाई को तैयार करने में नाकों चने चबाने पड़े। और वे चुन लिए जायेंगे यह विश्वास पैदा करने में तो और भी मेहनत करनी पड़ी। इसमें पशाभाई ने कितना नाटक किया यह तो रमण की समझ में नहीं आया। उसके बाद सब कुछ आसान था। पैसा था, अपनी जाति के लोगों का पीठबल था और था कांग्रेस पार्टी का दिया हुआ टिकट—"दो बैलों की जोड़, जिसे सके न कोई तोड़।"

दूसरे दिन हीरूभाई आये। उन्होंने पशाभाई से कहा कि आप जीतें इससे हमें खुशी ही होगी किन्तु आप जीतेंगे कैसे?

पशाभाई ने अपना गणित समझाया। जीतने के लिए तो एक वोट ही अधिक काफी है। उनकी गणना से उनके पास पचीस हजार वोट अधिक आ रहे थे।

"तब तो आप पचीस हजार से हारेंगे।"

—हीरूभाइ ने पूरी गंभीरता से कहा।

पशाभाई चौंके।

"अरे, तुम और पूनमचन्द मिलकर मुझे हराना तो नहीं चाहते? कहो तो पहले से ही अपना नाम वापस ले लूँ।"

"वापस लेने की बात नहीं है। कांग्रेस ने आपको टिकट दिया है। अतः मुझे और पूनमचन्द को काम करना ही है। किन्तु लोकसभा का चुनाव जीतना आसान काम नहीं है। एक तो आप को अपनी भाषणबाजी की आदत सुधारनी पड़ेगी।"

"धत तेरी की, हम भाषण दिहे बिना जीतब?" पशाभाई का भय अब कम हो गया था। आम बातचीत और भाषण की भाषा के बीच के फर्क को स्पष्ट करने के लिए वे थोड़ी देर बोलते रहे। हीरूभाई सुनते रहे। कभी-कभी तो इतना ऊंचा,

इतना उबाऊ भाषण करते हैं कि आदमी आपको वोट देने का निश्चय करने के बाद भी आपको सुनकर...हीरूभाई योग्य जगह रुक गये ।

"भले मनई दुई साल पहले कहे क रहा न । अब तक सुधार न भइल ? हम तौ सोचत रहिन कि पूरे जिला मां अच्छा मां अच्छा हम हीं बोलित है, दूसर नम्बर सांकलचन्द ।" वे जैसे बदरी के किसी ग्रामीण से बात कर रहे हों।

"देखो, एक तो धीरे-धीरे बोलना ।"

"फिर दूसरे ? कहिए साहब, लिखते जा रहा हूँ ।"

पशाभाई ने भाषा की स्विच बदल दी थी ।

"दूसरे यह कि कम बोलना ।"

"ठीक है, यदि भूल जाऊँ तो धोती काछे खूँट पकड़कर खीच देना ।"

"नहीं, यह ठीक नही है । आपने धोती ढ़ीली पहनी हो और खुल जाये तो ? भाषण करते समय आप ऐसे आवेश में होते हैं, तन मन से इतने एक हो गये होते हैं कि आपको यदि कमर से पकडकर बैठाया जाये तभी बैठेंगे । हम ऐसा करना ठीक नहीं समझते । आपको ही याद रखना होगा ।"

"चलो याद रखेंगे, तीसरे ?"

'भाषण में ऐसा मत कहना कि हमने तुम्हें आजादी दिलायी है तो अब हमें राज करने दो, अर्थात् वोट दो ।"

"समझ गया, आत्म-प्रसंशा नहीं करूँगा । चौथे ।"

"कोई प्रश्न पूछे तो सुनना झल्लाना मत ।"

"यह भी समझ गया । और ?"

"अमीर, गरीब सभी को प्रणाम करना ।"

"करूँगा, यह भी करूँगा । और ?"

"परिणाम का इन्तजार करना ।"

पशाभाई खुश हो गये । ये सारी बातें मीटिंग के पहले हो गयी थीं, अतः उन्होंने मीटिंग में भी इतना अच्छा व्यवहार किया कि स्वयं रमण को भी आश्चर्य हुआ । जिन कार्यकताओं को पशाभाई से शिकायत थी वे भी अनुकूल हो गये । चुनाव की प्राथमिक रूपरेखा खुद रमण ने तैयार की ।

हिसाब-किताब की जिम्मेदारी पशाभाई ने अपने ही ऊपर रखी । सहयोगी के रूप में हीरूभाई को चाहते थे किन्तु हीरूभाई ने यह भार रमण को सौप दिया ।

सबके जाने के बाद रमण देर तक बैठा बातचीत करता रहा । उसका मानना था कि भगत कहें तो सेठ अमीचन्द आर्थिक मदद कर सकते हैं । सारंग के श्रोताओं और नागरिकों के वोट भी सेठ जहाँ कहें वहीं गिरेंगे । एकाध बार वे मेरे घर आ जाते तो मेरे जीतने की संभावनाएँ बढ़ जातीं ।

तो क्या भगत को मिलूँ ?

रमण सोमपुरा गाँव में जाने के बजाय सीधे भगतवाड़ा में ही गया । वे

बैठके ही बैठे माला फिरा रहे थे। पीठ में दर्द था और पाँव में सूजन, रमण को देखकर वे खड़े हो गये। आघात पहुँचा। अचानक खड़े हुए इसलिए उनकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया था। क्षण भर को रमण दिखाई नहीं दिया, चिन्ता *खुद की नहीं, रमण की थी, अतः उन्होंने आँखें बन्द करके भगवान से प्रार्थना की थी—इसकी विपत्तियाँ मुझे दे देना भगवान !*

स्वागत करने में विलंब हुआ तो रमण को लगा कि संभवतः मेरा चुनाव लड़ना भगत को पसन्द नहीं है, इसलिए जानबूझकर उन्होंने ऐसा किया है। पूछूँ ?

भगत के चेहरे की ओर देखते ही उसे अपनी भूल समझ में आ गयी—"अरे आपकी तबीयत ठीक नहीं है ?" भगत खुश होने की कोशिश कर रहे थे। बीच में रमण ने उनके पाँव की सूजन देख ली थी।

"आपको तो दवाखाने में दाखिल किया जाना चाहिए। मैं डॉक्टर माने से कहूँगा। कल ही देख जायेगा।"

"इके जरूरत नाहीं है। ऊ लाग रहा वही असर रह ग है। डाक्टर क काहे हैरान कर बौ ?"

"किन्तु आपका इलाज करना हमारा फर्ज है।"

"ई समझत हौ यही बहुत है। मुला केहू से ईलात कराउब कौनो अच्छी बात है ? महातमा गाँधी हट्टे कट्टे भगवान के हियां गये रहा।"

"आपको तो अभी कम से कम दशक जीना है।"

"भगवान कै इच्छा।"

रमण को महादेव मंदिर का वह भजन याद आया—

थोड़े थोड़े जल में मछरिया रे तडपे
अलक-तलक जीव जाय रे ओधवराय हमको।

रमण ने सेठ अमीचन्द के बारे में औपचारिक बातें करने के बाद पूछा—"वे मुझे कोई सहयोग दे सकते हैं ? एकाध सप्ताह पहले आ जायँ तो ..."

भगत ने तुरंत एक पत्र बम्बई सेठ के पास रमण से ही लिखवाया। दस्तखत करते समय उनसे पेन भी नहीं पकड़ी जा रही थी। हस्ताक्षर करके नीचे लिखा—"समय से आ जाओगे तो मिलूँगा, सेठ सुखी रहो।" इतना लिखते-लिखते तो जैसे एक युग बीत गया हो। अक्षर भी इतने टेढ़े-मेढ़े हो गये थे कि रमण को भी पढ़ने में तकलीफ हो रही थी।

उसने पत्र को लिफाफे में रखा, पोस्ट किया और पशाभाई से मिलने चला गया।

रमण ने तय कर लिया था कि स्कूल की नौकरी से त्यागपत्र दे देना है। उसने पशाभाई से चर्चा की।

"यह ज्यादा अच्छा है। किन्तु हम तुम्हारी छुट्टी ही मंजूर करवाने का प्रयास करेंगे।"

"लेकिन मैं वेतन नहीं लूँगा।"

"यह बाद की बात है। और वैसे भी मेरे ही साथ तुम भी चुनाव में जीतोगे तो फिर नौकरी करने से लाभ भी क्या !"

"आप बैठे हैं फिर मुझे चिन्ता की क्या आवश्यकता ? हारूँगा तो आपके यहाँ क्लर्की कर लूँगा।"

रमण की यह बात पशाभाई के भीतर तक असर कर गयी। उन्हें बार-बार अपनी पराजय का भय सताया करता था। उनकी प्रतियोगिता में खड़ा हुआ उम्मीदवार पैसे-टके से उनसे अधिक सम्पन्न था। वह भी था उन्हीं की जाति का। उसके पास सिर्फ एक चीज नही थी : कांग्रेस का टिकट। फिर भी.... फिर भी उन्हें एक शक्तिशाली व्यक्ति से सामना करना है यह बात पशाभाई जानते थे। संभवतः पराजय स्वीकारनी पड़े। किन्तु यदि रमण उनके साथ हारने के लिए तैयार है तो फिर अफसोस किस बात का ? देखा जायेगा। आगे बढ़ा हुआ कदम पीछे नहीं लेंगे। पशाभाई को वीर नर्मद की बड़ी-सी पगड़ी और भगवान का मुकुट दोनों याद आये। कल वे एक अरसे के बाद स्वामिनारायण के मंदिर में गये थे और एक ही फेरे में अनेकों प्रार्थनाएँ कर आये थ।

39

चुनाव में अभी बारह दिन शेष थे। सारंग में एक ही दिन में दो चुनाव कार्यालय खोले गये थे। एक पशाभाई और रमणलाल की ओर से और दूसरा विरोध पक्ष की ओर से। मुहूर्त निकालने वाले ज्योतिषी अलग-अलग थे किन्तु उन दोनो को एक ही दिन एक ही समय मिला था। सारंग का बाजार पशाभाई की ओर था। जिन व्यापारियो को पशाभाई पसन्द न थे वे चुप बैठे थे। जहाँ सारे व्यापारी वहीं हम भी। पशाभाई को उनके इस उत्तर से संतोष नही हुआ था इसलिए उन्हें भी मुहूर्त के दिन कार्यालय की मुलाकात लेने आना पड़ा।

तुरिया-कचरिया कुछ भिन्न स्वभाव के थे। उन्होने सोचा था कि जब तक पशाभाई स्वयं बुलाने नही आयेंगे तब तक नही जायेंगे। वक्त गुजरता जा रहा था किन्तु कोई बुलाने नहीं आया। अतः उन दोनो के बीच का रास्ता निकाला। उनमें से एक पशाभाई के कार्यालय में जा आया और दूसरा विरोध-पक्ष के।

सोमपुरा के दो व्यक्ति ऐसे थे जो विरोध-पक्ष के खेमे में गये थे। वे थे माना और भीमा।

चमला सारी शाम बिगाड़कर गाँव भर के इज्जतदार आदमियो से कह आया था—"भिमवा और मानिया दूनौ विरोधी गुट में शामिल होय गे हैं। अपने गाँव के दामाद क ने हरावा चाहत हैं। समझयों ? बोलौ का कीन जाय ? रात का नरसंग के घरे इकट्ठा भवा जाय ?" किसी ने मना नहीं किया था किन्तु फालतू झंझट में कोई पड़ना नहीं चाहता था ? सब अपने ही घर बैठे रहे। नौ बज गये थे।

अचानक वायुवेग से एक समाचार सारे गाँव में फैल गया—पिथू भगत को "अमान्न" दिया गया ।

आज शाम को ही भगत ने नरसंग से कहा था—"भैया हमार खटिया खेत से घर ले लेव, आन नाहीं पहत की चल पाइब ।"

रात्रि को खपरैल के नीचे भगत का जी घबराया था । शरीर पसीना—पसीना हो गया था । वे बोल न सके थे । जैसे लकवा मार गया हो । नरसंग ने देवू को भेजकर परिवारवालों को एकत्र किया था । सबने अपने—अपने सामर्थ्य के अनुसार अमान्न दिया । किसी ने एक मन बाजरा कबूतरों को डालने की बात की, किसीने सवा मन गेहूँ की बात की । किसी ने ब्राह्मण को सीधा देने की बात की, किसीने पाँच एकादशी व्रत की बात की । नरसंग ने आने वाले सावन में कथा सुनने की प्रतिज्ञा ली । कंकू रोते—रोते क्या बोली यह किसी को सुनाई न दिया । थोड़ी देर गमगीनी छाई रही । देवू आँसू पोंछते हुए खड़ा हुआ । हेती के पास से भानजे को ले आया । दादा का बायाँ हाथ उठाकर उसके सिर पर रखा । भगत सचेत हुए—"सुखी रहो बेटा मामा-भानजे दोनों ।" सबने सुना ।

अन्दर बैठी हेती अपने मन पर से काबू खो बैठी । जैसे कोई बाँध टूट जाने से सारा पानी जोर से बह निकलता है, उसका क्रंदन फट पड़ा । लवजी चौंका । अभी तो बाबा जीवित हैं और हेती रो रही है ? थोड़ी देर बाद लवजी को पता चला कि उसकी आँखों से भी आँसुओं की धार बह चली है ।

जिसे भी भगत के अमान्न के बारे में पता चला, धक्का पहुँचा । धमला ने जिसे-जिसे दोपहर के बाद कह रखा था सबको महादेव के मंदिर में एकत्र किया । अमान्न देने की तो उसकी भी इच्छा थी किन्तु उसने सोचा सब एकत्र होकर रमणजी को समर्थन देने की कसम खायें तो यही समाचार मैं अमान्न में दे आऊँ ।

सबको एकत्र करने में समय लगा । दूसरी ओर माना और भीमा ने एक दूसरा ही दरबार जमा रखा था । उन्होंने करसन बुढऊ को खेत से घर पर बुलाया था और बताया था कि विरोध पक्ष मे रहने से क्या क्या लाभ हैं । सब कुछ सुनने के बाद करसन ने भीमा की ओर मुँह करके इतना ही कहा था—"जो तुम हमरे खून के होव तो रमणजी के सामने न पड़व ।" पानी पीकर वे खेत में वापस जा ही रहे थे कि भगत को अमान्न देने का समाचार सुना । वे बैठ गये । ठंडी साँस छोड़ते हुए बोले—"फूल पहले झर जात हैं । और कांटा बाद मां सुखात है । नाहीं माना ! जा उठ, दूनो जने जाव और भगत जीयत होंय तो कह आऊ कि हम तुहरे चिता मा हड्डी न डारब । अरे भगत के घर वाले तुहार का बिगाड़िन रहा कि तुम गयो और विरोधी लोगन की चाय पी आयो ? जाव, धमला नरसंग के घरे सबका एकट्ठा करत रहा । भगत का अमान्न देय आये होंई हैं तो सब ही एकट्ठा होये । कहे आऊ और अमान्न भी दे आऊ । और आज से इ समझ के चलेव कि घर फूटे घर जाय ।"

घमला सबको कसम खिलाकर नरसंग के घर पहुँचा तो मान्ना और भीमा सबके साथ बैठे थे। उसने अमान्न दिया—"जहाँ तक जियब एकादशी के निराजल उपवास करब औ वह दिन सही बोलब चहै जान चली जाय।"

घमा के शब्दों ने वातावरण की गंभीरता कम की। माला फेरते नरसंग की ऊँगलियाँ पलभर के लिए रूक गईं। क्या आज भजन नहीं गाये जा सकते? उसने घमा से बात की। वह तबले ले आने खड़ा हुआ। नरसंग ने मना किया। "यों ही गाएँगे, धीरे-धीरे, उनकी आत्मा को तनिक भी खलल नहीं होनी चाहिए।"

मैं नहीं गा पाऊँगा नरसंगचाचा—कहते हुए घेमर आँगन में जा बैठा।

लवजी सो गया था। कंकू ने कसम देकर हेती को लेटने के लिए मजबूर किया था। वह जब छोटी थी, कभी-कभी रोती हुई दादाजी की गोद में सर रखकर सो जाती, आज वैसे ही पास में सो गई।

रात भर भजन होता रहा। सुबह होने को आयी थी। नरसग दीपक की बाती ठीक करने उठा था। नजर गयी तो देखा—

"अरे, बुढऊ तो गयै।"

कंकू रोने जा रही थी कि नरसंग ने रोक दिया। इतने समय रोओ मत। बच्चे जाग जायेंगे।

कंकू ने पानी डालकर पोंछा मारा। उमा और घेमर ने भगत की देह नीचे उतारी। नरसंग ने नयी धोती ओढ़ाई। रोते हुए देवू को भेंटकर वह स्वयं रो पड़ा।

मुहल्ले में जो जागा वह दौड़ता हुआ आया और रोने की विधि में जुड़ गया। जिस नरसंग ने कंकू को बिलखने-चीखने से मना किया था वह खुद अपने ऊपर से अधिकार खो बैठा और बिलख-बिलख कर रोने लगा। सब तो थोड़ी देर में शांत हो गये थे किन्तु कंकू और हेती तो जैसे किसी की बात ही नहीं सुन रही थीं। जब भानजा जाग गया तभी वे दोनों चुप हो सकीं।

घेमर और उमा सारंग जाकर कफन ले आये। अरथी बाँधने लगे। फता खींचकर रस्सी बाँध रहा था। देवू ने पास जाकर कहा: "फताचाचा ज्यादा न खींचे, चीरा उभर आयेगा।" वह जानता था कि जो बाँधा जा रहा है, शव है, पर मान नहीं सकता था कि ये दादाजी नहीं हैं।

असह्य क्रंदन के बीच भगत की देह को श्मशान ले जाया गया। नरसंग ने लकड़ी सुलगाकर हाथ में ली, परिक्रमा करके अग्नि लगा दी। थोड़ी ही देर में अग्नि ने भगत की देह को मानों ममतापूर्वक अपने आँचल में समेट लिया।

नरसंग ने चिता की ओर देखा। कम से कम दस-बारह साल पहले चल दिए। उसे एक अभाव खलने लगा। आँखों की कोर भीग गयी।

नरसंग अलग जाकर बैठ गया। ऐसा लग रहा था जैसे आज उसकी जवानी खत्म हो गयी है और कंधे पर बुढ़ापा सवार हो गया है।

घाट पर एकत्र लोग इधर-उधर की बातों में व्यस्त थे। धमला इस समय माना तथा अन्यों को कांग्रेस की उपलब्धियों के बारे में बता रहा था। उसमें से अधिकांश तो उसने कल ही सुना था। उसने माना की ओर देखकर पशाभाई की प्रसंशा शुरू कर दी।

छनिया ने चिलम सुलगाते हुए पूछा—

'ई ससुर पशाभाई कौन है ? हम तो सारंग के एक-एक बनिया क पहिचानित है।"

"तू तो पहिचनतै होबो। काहे न पहिचनबो ? सबने उधार की तईं मना किहिस होये।" जो मजाक धमला को करना चाहिए, माना ने किया। धमला बोला—

"पशाभाई बनिया नाही, कणबी है। मुला बेपार मां बहुत पहले से पड़े हैं। बहुत बड़े सेठ समझौ न।"

'पटेल होय तबै अतना जोर मारत है नाही तो कौनो बनिया मां अतनी ताकत कहाँ कि दिल्ली-दरबार तक जाये।"

"अरे, दरबार जस अब कुछ नाहीं, सब अपने जैसे हों। तुम जवाहरलाल के नाम सुनेव है ?" धमला अब सारी बात व्यवस्थित ढंग से समझा देना चाहता था।

"ऊ झवेरीलाल नेरू ! अंग्रेज तक भगाय के दिल्ली के गद्दी पर चढ़ बैठा है वही न'-छना कम नहीं जानता था।

"गद्दी पर तो राजा बैठत रहें, अब तौ कुरसी मां बैठा जात है।"

"तौ नेरू क तुम राजा नाही कहतेव।"

"प्रधान मंत्री कहा जात है झवेरीलाल तो..."

कोई दूर से बोला। जेठा था। उसकी आँखें लाल थीं। आँसू छिपाने की कोशिश में उसका सारा चेहरा लाल हो गया था। स्मशान में आने के बाद वह यह पहला वाक्य बोला था।

'तौ फिर पशाभाई दिल्ली जाय के परधान बनि हैं ?"-छना ने पूछा।

"परघान तौ का बनि हैं ? धौईं मूरी अस मुँह लेके वापस अइहैं। परधान बनब खेल न होय। अपने सरदार वल्लभ भाई परधान रहें। अब तौ उनके जैसे केहू होय तो।" धमला अपने श्रोताओ में उत्साह बढ़ाने के लिए बोला।

"तौ पशाभाई परधान न बनबे होंय तो काहे उनका वोट देय ?"

"वे अपने रमण के साथ देत हैं यही से।"

"तौ रमणजी दिल्ली जइ हैं।"

"नाहीं, वे बम्बई जइ हैं।"

"बम्बई मां का है ?"

"समुन्दर, तुमका जाय क है ? जायक होय तो रमणजी क कही कि एक बार साथे ले जायें, सामान उठावे क।" माना ने कहा।

सब हँस पड़े।

'सब ही का मेहरारू की तिनके दाँत निकारत हौ ? है कौनो दुख गाँव के नाक जैसा आदमी मरा है ?" जेठा बड़बड़ाया।

धमला के द्वारा प्रारंभ चुनाव-चर्चा खत्म हो गयी ।

घेमर ने एक बाँस तोड़-फाड़कर चिता पर डाला, दूसरे बाँस को गाड़ा और उसमें लोटा लटका दिया, घी की अन्तिम बूँद तक चिता में डाल दी । कपड़ा और अन्य बर्तन पड़े थे वहीं लोटा भी रख दिया ।

"चलौ सब ही नहाय आई, कुँवा चलत होता हुँआ ।"

किसकी रहँट चालू होगी आज ? सब लोग तो यहीं थे । घेमर ने उपस्थित लोगों को गिनना शुरू किया । लगभग नब्बे लोग थे ।

"नरसंग काका सुनत हौ, अतने आदमी केहू के मरे पर आये होय हैं ?"

"बुढऊ क सबसे मया रही । रस्ता मां कुकरौ बैठा होय तो उका उठाये बिना किनारे से चले जात रहें ।"-नरसंग ने घेमर को यह भी बताया कि बेच दिये बछड़े को वापस ले आने पर बुढऊ को चैन मिला था-"तू इसे ले न आता तो मेरी मौत बिगड़ती ।" भगत समझ नहीं पाये थ कि बछड़े ने उन्हें क्यो मारा । नरसंग ने आज कहा : तब से तय कर लिया कि हम सब कुछ समझ सकते हैं ऐसा मान लेना ठीक नहीं । भजन-मंडली के बीच बैठकर ज्यादा बोलना ठीक नहीं, बोलने से क्या ?

नरसंग ने संकल्प किया कि हर साल उस तिथि को गाँव के बैलों को आराम देने की शर्त पर दान देने के विषय में पंचो से बात करूँगा । भगत को बड़ी माया थी इन अबोल प्राणियों से.....

सब नहा-धोकर अधभीगे हुए कपड़े पहने चौराहे पर खड़े थे । नरसंग पास के कुँए से हाथ-पाँव और सिर धोकर पहुँच गया । सिर ढँक लिया ।

कुल्ला करके सब अलग हुए । गाँव की स्त्रियाँ भी घाट पर जाते समय इस प्रकार हाय-हाय करने लगीं, जैसे कोई जवान आदमी मर गया हो । अपने बाप के मरने पर भी कंकू ने इतना छाती नहीं कूटी थी । दूसरे दिन उसे हरारत हो आई ।

हेती और लवजी के अतिरिक्त सब लोग उदासीनता में डूबे थे । लवजी भानजे को खेलाता और हेती घर का कार्य करती । बीच-बीच में दादा की याद आ जाती तो लोगों की निगाह चुराकर आँसू पोंछ लेती ।

40

करसन बुढऊ ने जो कहा उसमें कितना सच है कितना झूठ इस बारे में किसीने विचार नहीं किया । खाने के लिए कहने आया नाई भी खड़ा खड़ा सुनता रहा । अब वह घर-घर यह बात मिर्च-मसाला लगाकर पहुँचायेगा ।

करसन बुढऊ ने भी सोचा नहीं था कि गोकुलिया में उनकी इतनी आवभगत होगी । तीनेक वर्ष पहले तखतवाली बात को लेकर वे कितने बदनाम हुए थे ! ऊपर से भीमा ने हाथ भी उठा दिया था । चलता है सब, बुरे दिन भी आते हैं ऐसा

सोचकर उन्होंने अपना मन मना लिया था। अब कोई उन्हें सम्मान देगा इसकी आशा उन्होंने त्याग दी थी किन्तु पिथू भगत के देहावसान के दूसरे ही दिन सारंग के दरबार ने उनका बुलौवा भेजा। वे भयभीत हो उठे। दूसरे मुखियाओं को तो दरबार, दीवान और थानेदार, मूली-भाजी समझते थे। तो क्या करसन मुखी का अपमान होगा ?

सब कुछ खत्म हो गया। मेरी मुखियागीरी गयी। दरबार का राज्य खत्म हुआ। सारा जमाना उलटपुलट गया। गोखरू के बीज जैसा मूलजी का रमणवा मास्टर तो बना ही, अब उसे राज में कुर्सी भी चाहिए। ठीक है भाई बिरादरी में फूट पड़ने का डर है, नहीं तो उसका समर्थन करता कोई ? कल तक जिसे हाथ-पानी लेना नहीं आता था उसे आज पूरे मुल्क का राज्य चाहिए। कहीं दरबार ने इसी बारें में तो कुछ कहने के लिए नहीं बुलाया है ? देखते हैं क्या होता है ? तेल देखो, तेल की धार देखो। हमें तो पुराने ढंग से ही चलना है।

करसन को दरबार की गढ़ी में जाते हुए देखने वाले तो तमाम थे किन्तु उनके और दरबार के बीच क्या बात हुई यह किसी को मालूम न था। इस बारे में तो करसन बोले वहीं मानना पड़े।

उन्होंने अभी-अभी बताया था कि उन्हें देखते ही दरबार ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। वे तो नीचे बिछाये हुए गलीचे पर बैठने जा रहे थे, दरबार ने उनको हाथ पकड़कर चौकी पर बैठाया। फिर कहा था–

"अरे तुम लोग बदल जाते हो ?" उनका मानना था कि यदि रैयत बदल जाये तो उनका राज्य वापस मिल सकता है। यह घर में बैठे-बैठे सालाना नहीं चाहिए। उसमें से तो नौकरों का खर्च निकल जाये यही काफी है। अपनी व्यक्तिगत खेती न होती तो जेवरात बेचने की नौबत आ गई होती।

करसन बुढऊ ने बताया कि हमने तो कह दिया : आपकी आज्ञा भला हम टाल सकते हैं ? हमारे लिए तो आप ही माँ-बाप। आपके अमलदारों ने भले हमें कभी हैरान किया हो किन्तु आप तो हमेशा हमारे लिए भगवान की तरह दयालु रहे हैं। आप जैसा कहेंगे हम वैसा ही करेंगे। पर इस समय तो हमें आपका साथ चाहिए। अपने रमणजी चुनाव में खड़े हैं, उन्हें जिताने में आपकी मदद चाहिए। दरबार भोले जरूर हैं, लेकिन अहमक नहीं। हम कहें वह सब फटाफट मान जायें तो काहे के ? उन्होने सामने से सवाल किया–"तुम्हारा रमण हमारी बात को मानेगा ?"

"अरे कैसी बात कर रहे हैं बापजी ? चुनाव जीतने के बाद वह सबसे पहले आपका पाँव छूने आयेगा। और हमारी बात नहीं मानेगा तो किसकी मानेगा, और फिर क्या दुबारा नहीं जीतना है उसे ? मैं रमण से कह दूँगा कि जीतकर सीधे आपको जुहार करे आकर।"

बस, इसी एक शर्त पर दरबार ने बुढऊ के उम्मीदवार को अपना समर्थन दिया

था । रमण इन बातों को सुनते समय साथास गंभीर बना रहा । जिससे हँसी न आ जाये । उसे कोई आपत्ति न थी । हाथ जोड़ना, पाँव पड़ना, चापलूसी करना, धुत्कारा सुनना – जो करना पड़े, जो सहना पड़े, सबके लिए वह तैयार था । अमीचन्द सेठ के उसने पाँव छुए थे । इस घटना का असर सारंग में अच्छा पड़ा था । बनिए लोग बात करने लगे हैं – हम तो इन आंजणा लोगों को बन्दर जैसा समझते थे किन्तु निकला सीधा-सादा । जैसे सेठ के पाँव छुए वैसे दरबार के छू लूँगा । दरबार के पाँव छूने से यदि उनकी बिरादरी में हमारे विषय में अच्छी राय खड़ी हो तो मुझे क्या हर्ज है ! उसने सोचा कि चुनाव के पहले ही दरबार की वंदना कर आऊँगा ।

पभा मुखी के आँगन में जाति-बिरादरी के पंचों को खाने के लिए बैठाकर वह मगन अमथा को लेकर घर गया । अनियाससुर मर गये हैं इसका शोक तो है किन्तु मेहमानों की सेवा में कमी नहीं रहने दी । भोजन की सामग्री पभा मुखी के घर पहुँचा दी गई । सारंग से रसोइया बुलाया, उससे भोजन तैयार करवाया । इतनी सेवा करने वाले आदमी को हम अपना समर्थन न दें तो निगुने कहलायेंगे, बदरी के मुखिया ने दो बार कहा । करसन बुढऊ ने उन्हें तीसरी बार कहने से रोका । हमने समर्थन तो दिया है तभी तो यहाँ बैठकर खा रहे हैं । नहीं तो दूसरे के घर खाने के लिए हम पाँव रखें ?

घमला ने संदेश भेजा था – रमणजी से कहना कि सोमपुरा के बारे में बेफिकर रहें । भगत का शोक न होता तो सारे गाँव के जवानों को लेकर मैं आपके आँगन में आ पहुँचता । किन्तु अभी तो गाँव को सभालकर बैठे रहना पड़ेगा । फिर भी काम हो तो कहलवाना । आधी रात को भी हम लोग आकर खड़े हो जायेंगे ।

लाला रमण को संदेश देने उसके घर की ओर चला । रास्ते में तखत दिखाई दी । उसने घूँघट निकाला । लाला को आश्चर्य हुआ । यह रांड अब किस लिए घूँघट निकालती है ? सोमपुरा छोड़कर गोकुलिया आये हुए भी उसे पाँच-सात वर्ष हो गये हैं । अब इसे हम से क्या ? इसी ने हमारे बुढऊ की इज्जत मिट्टी में मिलायी और अब हमसे घूँघट निकालती है । उसने सोचा कि बिना बोले निकल जाऊँ किन्तु ज्यों-ज्यों तखत की हिलती हुई भरपूर काया उसके पास आती गयी त्यों-त्यों लाला के मन का पूर्वग्रह कम होता गया । लाज मे ढँके हुए मुँह के नीचे और चोली के ऊपर की खुली हुई चमकती चमड़ी की तरफ उसकी निगाह गयी और वहीं चिपककर रह गयी । वह गली के बीच ही लाज करके खड़ी रह गयी । तखत खेत में से ईंधन सिर पर रखकर घर की ओर जा रही थी । उसी बात को लेकर उसने कहा—

"मेरी लाज करनी थी तो गोकुलिया क्यों आयी ?"

"मुझे कहाँ आना था ? तुम्हारे गाँव के इज्जतदार लोगों ने मुझे मारकर भगा दिया था ।"

"रहै देव अब, रहै देव ।"

"तुहार कसम........"

लाला को पसंद आया । तखत ने मेरी कसम खाई ! मन पर काबू रखकर उसने कहा-

"जस जीके भाग ।"

"जौन कहो, ठीक है । चलौ घरे खाय के जायौ ।"

लाला ने रमण के चुनाव और आज के भोजन के बारे में बताया । तखत को मालूम था । रमण के भाई गलबा ने उससे कल शाम को ही सारी बात बता दी थी । उससे अधिक बात न की । "आना" कहकर चली गयी । लाला रमण के घर गया । रमण घर पर नहीं था । थोड़ी देर बाद आयेंगे ऐसी सूचना मिली । वह रुका नहीं । वहाँ से पभा मुखिया के घर आ गया । पभा मुखिया और करसन दोनों हुक्का पी रहे थे । वह करसन बुढऊ के पास बैठ गया और हुक्के में एक फूँक मारने की राह देखने लगा । उसे याद आया कि उसने खाने के बाद हुक्का पिया ही नहीं था ।

इस समय पशाभाई पटेल के बारे में पभा मुखी बोल रहे थे और मूलजी बीच-बीच में हुँकारो भर रहे थे ।

"ई पशाभाई न होते तो आपन रमण आगे न आवत ।"

"बुढऊ, तुमका कतनी बार कहा आपन रमण आपन रमण न करा करौ । अब तो ऊका आपन रमणलाल बोलौ ।" करसन बुढऊ ने बड़प्पन से कहा ।

बात ही बात में हीरूभाई का जिक्र आया । यह करसन बुढऊ को अच्छा नहीं लगा । किन्तु अभी पभा मुखिया को नाराज नहीं करना है ऐसा सोचकर वे चुप रहे ।

मूलजी हीरूभाई का गुणगान करने लगे । पभा मुखिया के चेहरे पर खुशी फैल गयी । और जब मूलजी ने कहा कि वे तो दीपक के समान हैं, हीरूभाई न न होते तो रमण इतना आगे न आता, तब तो पभा मुखी हीरूभाई और रमण के बीच का अन्तर ही भूल गये-

"दूनो अपनै हैं न ? काहे बुढऊ बोलतेव काहे नाहीं ?"

ऐसा पूछा जाना करसन बुढऊ को पसन्द आया । लाला को हुक्का देते हुए उन्होंने कहा-

"देखौ, यह बात याद रखौ पशाभाई अपने हैं ई मन मां बैठाय रखौ । दुनो जाति अलग है । उनके जाति वाले भले उनका बड़ी जाति कै मानें मुला अपने अतना समझ क है, कि कणबी मतलब कणबी । वन हूँ किसान हमहूँ किसान ।"

नरसंग और देवू कुँए की जगत पर बैठे थे । रोज सुबह पिंडदान की जिम्मेदारी देवू के सिर थी । शाम तक उसके माथे पर तिलक लगा रहता । सपाचट सिर, माथे पर तिलक और गले में कंठी - इस वेश में देवू बटुक जैसा दिखता था । उसको देखकर लवजी ने उसे ब्राह्मण-ब्राह्मण कहकर चिढ़ाने की कोशिश की किन्तु वह गंभीर बना रहा ।

दादा के गुजर जाने के बाद एक बार भी वह हँसा नहीं था । कल रात सोते समय वह सिसक रहा था । सुबह होते कंकू ने नरसंग से बताया था । नरसंग ने बाद में देवू को बहुत समझाया कि बुढऊ तो अब स्वर्ग गये – भगवान के दरबार में । अब मन नहीं छोटा करना चाहिए । मन से खुश रहना चाहिए । उनके जैसी मौत बहुत कम लोगों को मिलती है । इतने में टटिया एक ओर खिसकाकर लाला बाड़े में आ गया ।

"बुडऊ गये तौ का रस्ता बन्द हो गा ?"

"अरे आऊ लालाभाई । तुम्हार बात सही है । बुढऊ क दिल बहुत बड़ा रहा ।"

"अस तौ नरसंग भाई कै उदारता मां कहाँ कमी रही है ?" लाला बैठ गया और बात करने लगा ।

देवू को लाला की प्रसंशा में कोई रस नहीं मिल रहा था । वह लाला की परवाह किये बिना "हम तौ जाइत है" कहकर उठ पड़ा ।

"बेटवा क पढ़ायेव अन्न तक ।"

'भाग मां होवे ऊ करं । बाकी हम ईका कौनो काम मां न लगाऊब ।"

'काठा कै मजबूत होये ।'

"अस तौ छुट्टी के दिन देर तक चारा काटत है ।"

"हमरे भीमा क रणछोडिया ईसे साल-डेढ़साल बड़ा होने । मुला पानी क यह गिलास दै देय का मजाल है । पढ़े मां कस है ई तो ऊके महतारी जानत है । देवला से एक दर्जा पीछे होये ।"

"नाहीं पढ़त तौ साथे व है ।"

"मुला देवला नम्मर जादा लावत है ।"

"तुमहूँ सच्चे मुखिया हौ लाला भाई । मारे गाँव के लड़को की खबर रखत हौ ।"

"नाहीं भैया नाहीं, ई ता होंसियार लड़का की ताई मन मां ममता होत है । जीके लड़का न होय ऊ तौ ..." लाला की आवाज धीमी होकर गले में फँस गयी ।

"तुम कहाँ बुढ़ाय गयौ है ?"

"और सब तौ ठीक है नरसंग भैया. मुला भगवान यह अभागे के भाग सुधारे तो ठीक है । एक लड़का तौ देय ।"

"बुरा न मानौ तौ कही । तुम मुखिया भयौ तब से मनमां आवत है तब खेते मां जात है । तुम्हार साझेदार पुर चलात हैं, चारा काटत हैं । पटलानी बने बाद उनके तो कामकाज बाढ़त है ईके विचार करेव है कबौ ! ई सब तौ ठीक भैया एक काम करौ । सारंग वाले वैद का यक दिन अपने घरे बुलाऊ । ऊ दवा देये तौ असर होये । जीवत भाभी के पेलौठे का दस साल हो गया होये न ! ऊके बादै कौनो कभी आयी होयो दवाई से अच्छा होय जाये । बुढऊ कहत रहें कि देही मां गरमी बाढ गयी होय तबौ गरभ नाहीं रहत ।"

"हमें तो सबही दुसरी औरत के सलाह देत हैं।"

"ई तुम्हार काम न आय। देखे व ऐसे झंझट मां न पड़ेव : बीबत मामी के गले मां मुँगरा बाँध के पछताबो। दुखी होबो ऊपर से। किसमत मां लड़का नाहीं है तो भले पाँच औरत करौ "

"दूसर और करी तो कहेव।" कहते हुए लाला खड़ा हो गया।

लाला गया। नरसंग बाड तक उसे छोड़ने गया। बैल के घुँघरू बजे। बुढऊ की याद आ गयी। मन को दूसरी ओर मोड़ने के लिए काम खोजने लगा। बैल-भैंस को चारा डाला। नांद भरी हुई थीं। पानी पिलाया। इतने में कंकू आ गयी।

"दोली माँ कहत हैं कि बुढऊ के बरही मां गाँव भर खवाया जाय।"

"तुहार मन होय तौ गाँव बुलाया जाय।"

"कतना कर्ज होये ?"

"होय जौन होय "

"अच्छा रहे न ?"

'बस अच्छे रहे। बस। मुला तुमहिन वताऊ अपने बुढऊ के पीछे कर्जा करी ई बुढ़ऊ के आतमा का सान्ती मिले ?"

कंकू को समाधान मिल गया। रिवाज के मुताबिक ही खिलायेंगे। बरही के दिन चुनाव भी था।

देवू सुबह से ही छपा हुआ कागज लेकर घर घर बाँट रहा था। घेमर रसोई के काम में लगा था। वह भी थोड़ी देर के लिए मुक्त हुआ। दो-तीन लोगों को देवू ने समझाया इसी से घेमर को भी सब कुछ मालूम हो गया। फिर तो वह भी सामने के मुहल्ले में जीवन को लेकर सभी को समझाने लगा। जिस पर दो बैलों की छाप देखो उस पेटी में कागज डालना। सामने से घमला और लाला चले आ रहे थे। देवू ने उन्हे खाने के लिए आमंत्रित किया।

"अरे, हमका लड़का मानत है ?"

"पिथू दादा के तरफ से तुम लड़के हौ न ?"

देवू के उत्तर से दोनों प्रसन्न हो गये। दोपहर बीतने के बाद दो थाली भरकर देवू और घेमर हलवा लाये। बाहर से चुनाव-व्यवस्था में आये लोगों के साथ लाला, माना वगैरह ने भी एकएक निवाला खाया। "यह तो भगवान का प्रसाद है' कहकर वे संतुष्ट हुए।

नरसंग सबसे फुरसत पाकर वोट देने आया। लाला ने घमला से कहा—

"तु बेकारे मां जल्दीबाजी करेव। हम नाहीं कहत रहिन की नरसंग देर सबेरे अइहैं जरूर।"

"हम तो गड़बड़ कीन।" घमला ने नरसंग से कहा- 'तुम्हारे नाम के वोट हम डार आइन।"

"काहे तुहार नाम नाहीं रहा !"

"रहा । मुला हम सोचा कि तुम न अइहो ।"

"पर हमार वोट तुम डार आइ ई चले !"

"चलें तो न, पर सब साहेब पहचान वाले रहें फिर काहे मना करें !"

नरसंग वापस मुड़ा । लाला को अचानक सूझा—

"खड़े रहो, खड़े रहो नरसंग भैया ।"

"का है !"

"लिस्ट मां पिथू दादा के नाम है । तुम उनके नाम के वोट डार आऊ ।"

"नाहीं हम से ई काम न होये । औ वहू बढ़ऊ के नाम के ! नरसंग वापस चला गया । कुछ देर के बाद मगन अमथा को बिदा देकर करसन बुढऊ वोट डालने आ पहुँचे । उनका पौत्र रणछोड सूची में इनका नाम खोजने लगा । नहीं मिला । लाला ने सूची देवू को दी । उसे भी बुढऊ का नाम दिखाई नहीं दिया । सूची छापने वालों पर करसन बुढऊ कुपित होने में ही थे कि घमा ने मार्ग खोज निकाला : जाइए, पिथू भगत के नाम पर वोट दे आइए । इनका नाम सुची में है । वे बड़बड़ाते आगे बढ़े, घमा के संकेत पर शान्त हुए और पिथू भगत के नाम का वोट डाल आये और चले गये ।

"रमणजी आवें तौ कहेव कि सब ठीकठाक होय गवा है ।" वे ऐसा ही कुछ कहना चाहते थे । किन्तु नरसंग का चेहरा देखकर वे कोई बात न कर सके । पानी पीकर उठ खड़े हुए । नरसंग भी उनके साथ ही खड़ा हो गया । बरही को लेकर कोई काम बाकी न था । थोड़ी देर बात करते रहे फिर दोनों चुपचाप चल पड़े ।

करसन बुढऊ और नरसंग दोनों की राह अलग हुई । अकेले होने के बाद नरसंग को याद आया कि खेत सूना पड़ा है । दो कदम चलने के बाद तो उसे सारा सिवान सूना लगने लगा । चकरोट, बाड़ा, पेड़ किसी पर भी नजर नहीं रुकती । भगत नहीं हैं – भगत नहीं हैं – जैसे सारी दिशाएँ हाहाकार कर रहीं थीं । फसलों और वृक्षों से हरियाली जैसे गायब हो गयी थी । उसके स्थान पर चारों ओर पीला बवंडर खड़ा हो गया था । उस ओर का वीराना मानो नजदीक आ रहा था । नरसंग भगवान का नाम लेकर जी हल्का करने का प्रयत्न करने लगा । पाँव में कुछ शक्ति आयी किन्तु अन्दर से पुनः चीत्कार गूंज उठी – पिथू बाबा नहीं हैं, पिथू बाबा नहीं हैं । अपने खेत में कदम रखने से पहले नरसंग ने एक नजर की । फिर वही गूंज । कोई अन्तर नहीं आया । आखिर मन मजबूत करके बाड़ पार करके खेत में प्रवेश किया ।

सहवास

1

सोमपुरा के महादेव मंदिर में विकास योजना की सभा आयोजित थी। बड़े बड़े लोग आने वाले हैं। मुखिया ने सारंग से बड़ी-बड़ी पेट्रोमेक्सें मँगवायी थीं। गाँव के मुहल्ले-मुहल्ले में ढिंढोरा पिटवाया था।

चौक के अंधकार में दरार पैदा करती हुई पेट्रोमेक्स मंदिर में आयी, उसे देखने के लिए तो आज पहली बार ध्वजा भी लहरा रही थी। उजाले ने ऐसा जादू किया कि लोग पतंगे की तरह खिंचे चले आये। जो लोग मात्र मनौती मानने या प्रसाद चढ़ाने मंदिर में आते थे वे भी आज मात्र भक्तिभाव से प्रेरित होकर चले गए थे।

किसी ने धमा से पूछा तो उसने संक्षेप में बताया कि सरकार आज यहाँ खैरात बाँटने आने वाली है, हर पाँचवे वर्ष आयेगी।

लालटेन आज पेट्रोमेक्स के आगे बौनी हो गयी थी। उसकी ओर सहानुभूति से देखकर धमा भाषण सुनने लगा।

"सभाध्यक्ष श्री करसन चाचा, अतिथिविशेष श्री पशाभाई, विधानसभा के सदस्य श्री रमणभाई भाई श्री हीरूभाई, बहनों तथा भाइयो।

"सर्वप्रथम तो मुझे आप सब के प्रति आभार प्रदर्शित करना चाहिए। मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि आप लोग इतनी बड़ी संख्या में यहाँ उपस्थित होंगे। मुझे अभी-अभी आदरणीय श्री पशाभाई ने बताया कि अपना सोमपुरा गाँव अच्छे कामों में हमेशा आगे रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपनी सामुदायिक विकास-योजना के कार्यों में भी यह गाँव नेतृत्व लेगा। तथा हमारे और इस इलाके के उत्साह में अभिवृद्धि करेगा।

"7 मई सन् 1952 को हुई डेवलपमेण्ट कमिश्नरों की एक कान्फरेन्स को संबोधित करते हुए प्रधान मंत्री ने कहा था— "मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये सामुदायिक केन्द्र मात्र अच्छी स्थिति वाले क्षेत्रों में ही कार्यरत नहीं रहेंगे बल्कि दूसरे आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों में पिछड़े हुए इलाकों की समस्याओं के समाधान के लिए भी प्रयासरत रहेंगे।"

"31 मई सन् 1952 के दिन भारत सरकार तथा अमेरिकन सरकार के प्रतिनिधियों के मध्य विकास कार्यक्रम के बारे में एक समझौता हुआ है। भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों के चुने हुए क्षेत्रों में ग्राम-विकास के लिए पचपन केन्द्र निश्चित किये गये हैं। कितने ? पचपन।

"बीजापुर-कलोल सामूहिक विकास परियोजना 1952 के अक्टूबर माह की दूसरी तारीख को, पूज्य राष्ट्रपिता की जन्मजयंती के शुभ अवसर पर, अपनी तहसील के 51 गाँवों में लागू की गई। आप जानते ही होंगे कि इस समय 1953 का अप्रैल

चल रहा है । मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि गत सप्ताह में इसी तहसील के 57 गाँवों को अपनी योजना में समाविष्ट कर लिया गया है । इस में सोमपुरा भी सम्मिलित है । मुझे आशा है कि ..."

विकास-अधिकारी का वक्तव्य यहाँ आकर अटक गया । मंदिर के बरामदे में रखी पेट्रोमेक्स भभकने लगी थी ।

पशाभाई ने खड़े होकर कहा "अरे अभी मेरे सामने धमलवा बैठा था, कहाँ गया ?"

"इज्जत से बलाऊ पशाकाका, हम तुहार नौकर न अहिन । समझयो ?" धमला ने ऊँची आवाज में कहा, और ज्यों का त्यों अपनी जगह पर बैठा रहा ।

"अरे भाई, मैंने तो प्यार से पुकारा है । अब उठ जरा बत्ती ठीक कर ।"

"हमें आवत होत तौ बैठे रहित ?"-धमला ने धीरे के कहा ।

देवू सँभालकर बत्ती के पास गया । हवा भरी । उजाला बढ़ा ।

रणछोड ने पिन किया । पेट्रोमेक्स बुझ गयी । रणछोड ने पुनः पिन किया तो जोर से केरोसीन बाहर आया । देवू ने बत्ती की हवा निकाल दी और देखने लगा । हीरूभाई आ पहुँचे और उनके साथ रमणलाल भी ।

पेट्रोमेक्स पुनः जले तब तक तो धमला भजन-मंडली की लालटेन ले आया । विकास अधिकारी ने धमला का आभार माना किन्तु बोलने से मना कर दिया ।

पशाभाई ने विकास अधिकारी की होशियारी की, सोमपुरा की जनता की, गत चुनाव में अपनी पराजय की, सामूहिक विकास योजना की और अपनी आज तक की सेवा की बातें कीं । उनके बैठने पर बज रही तालियाँ हीरूभाई के उठने तक चालू रहीं । लोगों ने उन्हें ध्यान से सुना । हीरूभाई ने चुनाव के समय के बंबई राज्य के गृहमंत्री श्री मोरारजी देसाई की पराजय की याद दिलाई । पशाभाई को आश्वस्त करना चाहा । पशाभाई पुनः खड़े हो गये । बोले – मोरारजी भाई तो पराजय के बाद भी मुख्य मंत्री बने थे । मुझे यदि उपमंत्री बना दिया जाये तो मैं पच्चीस बार हारने के लिए तैयार हूँ । सब हँस पड़े, हीरूभाई बैठ गये । रमणलाल कुछ न बोले, श्रोताओं ने अर्थ लगाया कि ससुराल है, बोलने में शर्म आयेगी । सही बात है, ससुराल यानी ससुराल ।

चौक से दूर पेशाब करने गये हीरूभाई और रमणलाल वापस आ गये । उन्हें देखकर घेमर उठ खड़ा हुआ । उन्हें वापस आया जानकर उसे प्रसन्नता हो रही थी । उसने लाला की जाजम बिछाई और उस पर उन्हें बैठने के लिए आमंत्रित किया ।

"हम तो सोचा रहा कि तुम दोनों जने गये ।"

"तुम कहते हो तो चले जायें ।" रमणलाल ने घेमर के कंधे पर हाथ रखा ।

"हम कौनो पागल हन का जौन तुम्हरे जैसे बडे आदमी का जाय क कहब ? एक तो तुम गाँव के दमाद ऊपर से यमले ।"

हीरूभाई बार-बार इधर-उधर देख रहे थे ।

"कीका हेरत हो ?" जीवन ने पूछा ।

"करसन बुढऊ कहाँ गये ?"

"आजके सभा के अध्यक्ष ।" बोलने के साथ घेमर हँस पड़ा ।

"नशा करे के समय भा इतौ..." वीरा बोलते-बोलते रुक गया । उसका ध्यान नहीं था कि लाला यहीं बैठा है । जीवन ने उसकी जाँघ में चुटकी काटकर उसका ध्यान उधर खींचा था । लाला कुछ नहीं बोला । बाप की निंदा के समय वह अपने आँख-कान बन्द कर लेता था ।

"अभी भी बुढऊ.." रमण को यह अच्छा नहीं लगता था कि अपना समर्थक शराब पीये । और करसन तो उन्हें विजयी बनाने वालों में से एक थे । ऐसा और लोग ही नहीं स्वयं रमणलाल भी मानते थे ।

"ई बात ससुरी हमरे समझ मां नाहीं आयी ।" घेमर हीरूभाई की ओर खिसक-कर बैठ गया । "रमणजी और पशाभाई दोनों जने एकसाथ खड़े रहें । तो फिर एक जीत गवा और एक हार गवा – ऐसे कैसे भवा ? हमरे गाँव मां तो बराबर-बराबर वोट पड़े रहें ।"

लोकसभा और विधानसभा की सीटों के मध्य अंतर समझाते हुए हीरूभाई ने पशाभाई की हार के कारणों को बताया जिसे सब लोग बड़े ध्यान से सुनते रहे ।

"पशाभाई हार गये तबौ एक सूत भर दुबराने नाहीं ।" जीवन ने कहा ।

"उनके कौन नुकसान होय गवा ?" घेमर बोला ।

"नुकसान कहां नाहीं हाय गवा ? पैसा खर्च हुआ कि नाहीं ?" धमा ने बीड़ी बुझाते हुए कहा ।

चुनाव के पीछे पशाभाई ने जितना खर्चा किया था उसका अंदाज जानकर ही लोगों का मुँह खुला का खुला रह गया । रमणलाल ने जो बातें बताई थीं उसमें अतिरंजना न थी । सब को पता था कि खर्च का हिसाब किसके हाथ में था ।

"मास्टर तुम कितना खर्च करेव ? अपनी जेब से ?" लाला ने पूछा ।

"पाँच हजार हो गये होंगे ।" हीरूभाई की ओर देखते हुए रमणलाल ने संकोच से कहा । फिर, जैसे अपनी बात को प्रामाणित करते हुए बोले – पशाभाई का और मेरा खर्चा एक साथ हुआ था इसीलिए इतने में ही काम चल गया नहीं तो अधिक खर्च हो जाता । और इन हीरूभाई का तथा आप लोगों का सहारा न होता तो कितना खर्च करते फिर भी....."

"का ई बात सही है कि अंतिम दिन रात मां तुम ढेखाडिया और दूसरे गाँव मां पैसा बांटे गयो रहा ?" जीवन ने पूछा ।

"हम तौ कहूँ नाहीं गइन रहा, सारंग की ऑफिस मां बैठे रहिन ।"

"ई बात सही है कि तुम आठ रात दिन सोयेव नाहीं रहा–? कसमौ खाय का ?"

"यह बात सही है ।"

"लछमन चौदह वर्ष के बनवास मां एकौ दिन नाहीं सोये रहा....." धमला ने

शुरू की बात संभवतः लम्बी चलती किन्तु इतने में ही देवू और लवजी मेहमानों को बुलाने आ पहुँचे।

रमणलाल ने अपने ससुर नरसंग में एक अजीब सा परिवर्तन देखा था इन दिनों। उनकी गंभीरता, जरूरत से ज्यादा न बोलने की उनकी आदत, आत्मप्रसंशा से बचने की वृत्ति...सब कितना अच्छा लगता है! जब कि, जब से वह विधानसभा का सदस्य बना है अपने पिता श्री के भीतर इससे विपरीत ही लक्षण देखकर वह घबरा जाता है। "लेकिन करे क्या?"

सब लोग नरसंग के घर पहुँचे। घेमर अपने घर से एक खाट खींच लाया और देवू दोलीमाँ के आंगन से टूटी खाट उठा लाया। धमा, लाला, जीवन, वीरा आदि खाट पर बैठ गये, और लोग थोड़ी देर खड़े रहे फिर चले गये।

आज शाम के बाद घर में अंधेरा नहीं हुआ। सबके मन में एक उमंग थी। लड़के तो त्यौहार के दिन भी इतने उत्साहित नहीं होते। शाम को घर के काम से फुरसत पाते ही कंकू आँगन में आ बैठी थी। दोली माँ जैसे उसकी राह ही देख रही हों। हौले-हौले आकर वह भी बैठ गयी थीं। मंदिर के सामने चौक में भाषण हुआ था। उससे भी अधिक एकाग्रता से बातें यहाँ हो रही थीं। इन दिनों उनकी बातों के विषय में एक नये स्थान का नाम जुड गया था – बंबई का। दोली माँ बंबई के बारे में बहुत कुछ पूछना चाहती थीं। किन्तु नरसंग सभा के पूर्ण होते ही घर आ गया था और बात बंद हो गयी थीं। नरसंग और कंकू हेती और भानजे की बातें करने लग गये थे। इस वर्ष पूरे साल में हेती मात्र तीन बार यहाँ आयी थी। उसमें भी जब वह शिवरात्रि के दूसरे दिन आयी तब तो अपने लड़के को वहीं छोड़ आयी थी। "नाहीं उठत, एक खुरजी जतना भारी होय गवा है।" हेती के ये शब्द मां को शूल की तरह लगे। "बोलिस न मुँह झौसी, फूल जंसे भानज का खुरजी कहत सरम नाहीं आवत? पाँच मन कै बोझ उठावे अस है और पौवा भर के भानज का गोद मां नाहीं उठाय पाउन? खबरदार, अब ऊका लिहे विना आइस घर मां पांव न धरे देब। का हम तुम का नाहीं खेलावा है? पागल, असना तौ साच क रहा कि ऊका देख के सब कस खुस-खुस होय जात हैं? कैसो काम काहे न होय, छोड़ के तुहार बाप ऊका नाहीं उठाय लेत? बह दिन कस गावत रहें, कस नान लइका की तिनके आगे ताली बजावत रहें?" आगे बोलते-बोलते कंकू की आवाज गीली हो गयी थी।

सब आकर बैठे कि कंकू ने बाहर आकर मुन्ने का समाचार पूछा। रमणलाल ने संक्षेप में उत्तर दिया, लवजी ने विस्तार से। वह गत सप्ताह ही गोकुलिया गया था, परीक्षा पूरी होने के दूसरे ही दिन। उसके मुताबिक उसके और भानजे के बीच जैसी दोस्ती थी वैसी और किसी के साथ नहीं थी। उसने उसका नाम भी वाल्मीकि से सरल करके वालजी कर लिया था। यह नाम अब सबकी ज़ुबान पर छा गया था। उसकी राशि का नाम रखने की इच्छा रमणलाल के मन में ही दब

कर रह गयी थी। गोकुलिया में अब किसी के द्वारा परिचय पूछे जाने पर लवजी स्वयं को बालजी का मामा बताता था। रमणलाल का साला हूँ यह कहने में उसे हीनता-सी महसूस होती।

हीरूभाई ने ठण्डा पानी पीने के बाद चाय-कॉफी पीने से इन्कार कर दिया। रमणलाल ने और लोगों के लिए चाय बनाने को कहा। हीरूभाई मुक्त होकर खाट पर लम्बे हो गये। घेमर ने कहा–

"थक गये हो तो पाँव दबाई।"

"हीरूभाई किसी से सेवा नहीं करवाते।" रमणलाल ने तकिये का सहारा लेते हुए कहा।

अभी भानजे की बात निकली थी तभी से धमला कुछ पूछने को था। किन्तु उसे बोलने का मौका अब तक न मिला था। चाय से गर्म हो गयी पीतल की रकाबी को खाट के पाये रखते हुए उसने कहा–

"ई हमार फूलजी ठीक से बोलत नाहीं ईके का कारण होये ?"

"फूलजी ?" रमणलाल फूलजी के बारे में कुछ नहीं जानते थे।

घेमर ने उसका परिचय दिया।

"कुछ बच्चे जल्दी चलने लगते हैं और कुछ जल्दी बोलते हैं।" रमणलाल के इस उत्तर से धमा को संतोष हो जाता किन्तु लवजी बोल पड़ा–

"हमार भानजा बालजी तो ग्यारा महीना मां चलै सीख लिहिस रहा और अब तौ सब बोले लाग – मामा, काका, पापा, भाई, खाबै, देना, जाना, चलना– सब कुछ. बाकी का बचा बोलौ ?"

"ऊतौ धमाकाका के फूलजी भी सब बाले।" देवू ने कहा। उसने कुछ दिन ही पूर्व माँ और दोली माँ की बातचीत में सुना था कि धमाकाका के लड़के में बचपन से ही कोई कमी है। संभवत: वह बोलना न भी सीख सके। गत महीने ही धमाकाका ने मनौती रखी थी। अभी तक कोई फर्क नहीं पड़ा है।

इस बात के बदले और कोई बात चली होती तो अवश्य हीरूभाई की आँख लग गयी होती। नरिये की दलान पर से सरक कर उनकी खाट तक आ रही ठंडी हवा उनके निरोगी फेफड़े में पहुँच रही थी। पानी के साथ पी हुई मोगरे की सुगंध शरीर भर में फैल गयी थी। आज का सारा काम संतोषजनक तरीके से पूर्ण हो गया था। नींद न आने का कोई कारण न था। परन्तु न बोलते लड़के की समस्या उन्हें सुई की तरह चुभी। उठते हुए उन्होने पूछा "सुनता तो है न ?"

"सुनत तो है, मुला समझत होय अस जान नाहीं पड़त।

"बहरा तो नहीं है ?" हीरूभाई ने स्पष्टता माँगी।

"नाहीं।"

"बस तौ, चिन्ता की कोई बात नहीं है। जो सुनेगा, बोलेगा। देर सबेर बोलेगा जरूर।" किसी को समझाना उनके लिए महत्त्वहीन बात थी। उन्होंने लवजी

से पानी माँगा। पीकर सो गये। सब बैठे रहे, वे सो गये। थोड़ी देर में सब खड़े हो गये। रमणलाल के सोने भर को जगह थी, किन्तु ससुर बैठे हों तो सोना अच्छा लगेगा भला!

"सबेरे, सोकर उठते ही न भागेव, चाय-पानी करके आराम से जायेव।" नरसंग हाथ में लाठी लेते हुए बोला।

"हीरूभाई से पूछना पड़ेगा। मुझे तो कोई जल्दबाजी नहीं है। जाओ, आपको देर हो रही है।"

नरसंग के साथ ही देवू भी खलिहान पर चला गया। लवजी रमणलाल के साथ ही सो गया।

सारा गाँव सो गया था। अकेले महादेव मंदिर की ध्वजा फरक रही थी।

रात में रमणलाल ने एक स्वप्न देखा। तम्बाकू के गोदाम के आगे, ऑफिस वाला भाग सजाया हुआ है। ऊँचे पलंग पर तकिये का सहारा लेकर तखत बैठी है। उसने मुगलाई वस्त्र पहने हुए हैं। गलबा उस पर गुलाब-जल छाँट रहा है, और मना रहा है। तखत उसकी ओर देखती भी नहीं। आराम से हुक्का पी रही है। हुक्के की चिलम में मोगरे की सुगंध है। रमणलाल की आँख खुल जाती है। थोड़ी देर बैठे रहते हैं, फिर लेट जाते हैं। आँखें खुली हैं। पूर्व दिशा गुलाबी हो रही है। हवा इतनी स्फूर्तिदायक है कि मन उड़ने-उड़ने को करता है। हीरू-भाई उठ बैठते हैं। धरती को छूकर मस्तक पर लगाते हैं। खड़े हो जाते हैं।

"चलो मास्टर उठो, खेत पर चलकर कुल्ला-दातौन करके आते हैं।" रमण-लाल का इंतजार किये बिना ही वे चल पड़े। "हम नहा-धोकर आते हैं।" रमण-लाल ने दरवाजे की ओर देखे बिना ही कहा और चल पड़े।

2

रमणलाल का अनुमान था कि हीरूभाई जल्दबाजी करेंगे और उनके साथ ही निकल चलने के बहाने सास-ससुर की और विशेषकर सालों की इजाजत लेकर चलते बनेंगे। किन्तु हीरूभाई तो जैसे आज की सुबह सोमपुरा के नाम ही डायरी में लिख लाये थे।

देवू को वे मध्यम सैनिक शिविर में भेजना चाहते थे। उसके साथ दूसरे दो-तीन लड़के और तैयार हो जायें तब तो सोमपुरा में सेवादल केन्द्र खोला जा सकता है। देवू तो कबका उनके मन में बस गया था। किन्तु जब तक वह पन्द्रह-सोलह वर्ष का नहीं हो जाता तब तक उसे उत्तरदायित्व सौंपना उस पर अत्याचार करना था। लड़का तो जैसा कहोगे, करेगा किन्तु वे मानते थे कि जो करे उसे समझकर करे तो ठीक। आज उन्हें लगा कि यह मौका है। देवू की इच्छा हो तो उसे उसके माता-पिता मना नहीं करेंगे। इसके लिए रमणलाल भी सिफारिश कर सकते हैं। कांग्रेस के टिकट पर चुना गया एम. एल. ए. कांग्रेस सेवादल को

प्रोत्साहित न करे यह कहीं चलता होगा ? वैसे हीरूभाई को अच्छी तरह मालूम था कि जो लोग काम लेकर उनके पास दौड़ते हुए आते हैं, उल्टा-सीधा काम करवाते हैं, वे लोग भी सेवादल का काम शायद ही करते हैं। स्वयं बदरी में ही सेवादल का केन्द्र स्थापित करने में उन्हें कितने वर्ष लग गये ! गोकुलिया अभी तक बाकी है। सारंग में जो दो केन्द्र चलते हैं वे एक-दूसरे की खींचातानी में, न कि सेवा की भावना से।

सारंग के स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या जानकर वे आश्वस्त हुए।

बकुल, हरजीवन, रणछोड, सोमा, माधेव सभी को आना चाहिए। देवू के पास से अंदाज लेकर हीरूभाई हरेक के घर की मुलाकात लेना चाहते थे। पहले लड़कों के साथ बात-चीत, फिर उनके माँ-बाप से। व्यवस्थित समझायेंगे। कोई जबरदस्ती नहीं है। यह बात सच है कि यह सेवाकार्य है किन्तु लड़के को कितना सीखने को मिलता है, समझने को मिलता है ! रमणलाल बीच-बीच में समर्थन देते जाते थे। जरूरत होने पर देवू भी बोलता। भीमा और करसन बुढऊ ने रणछोड को भेजने का आश्वासन दिया। सब औरों के भी घर गये। रास्ते में देवू ने कहा जब तक रणछोड की माँ हाँ न कह दे तब तक उसका कोई ठिकाना नहीं। बकुल को सेवादल में बिल्कुल रस न था। वह इंजीनियर बनना चाहता था। हरजीवन आता किन्तु परीक्षा के बाद वह माता-पिता को उनके काम में मदद करता था।

देवू को शिविर में भेजने के बारे में हीरूभाई ने भोजन करते समय कंकू से भी बात की। कंकू राजी थी। अब एक ही समस्या थी। लवजी भी देवू के साथ शिविर में जाना चाहता था। यदि वह नहीं मानेगा तो संभवतः देवू को भी रुकना पड़े।

रमणलाल ने समाधान ढूँढ निकाला। देवू शिविर जायेगा तब आठ-दस दिन के लिए हेती और बालजी यहाँ रहने के लिए आ जायेंगे। लवजी को यह शर्त मान्य थी। देवू के साथ शिविर जाने की अपेक्षा हेती और बालजी के साथ घर पर रहना उसे ज्यादा पसंद था। हेती और भानजा यहाँ आयेंगे यह जानने के बाद शिविर जाने का देवू का भी उत्साह ठंडा पड़ गया था। इसके बावजूद गणवेश सिलवाने के लिए देवू मेहमानों के साथ सारंग गया।

अचानक रमणलाल ने पूछा "हीरूभाई, आप कभी झूठ बोलते हैं कि नहीं ?" देवू भी उत्तर सुनने के लिए उत्सुक था।

"इस प्रश्न का उत्तर धर्मराज भी नहीं दे सकते थे। मुझसे क्यों पूछते हो ?" हीरूभाई ने उल्टी पहनी चप्पल सीधी करते हुए कहा।

"आप कभी झूठ बोलते होंगे, ऐसा मै नहीं मान सकता।" रमणलाल ने प्रश्न फिर से खोदा।

"मैं भी ऐसा नहीं मानता। किन्तु कुछ कहा नहीं जा सकता। किसी ने कहा है कि आदमी जब तक अंतिम सांस न ले ले तब तक उसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।"

देवू के पास कागज होता तो वह यह वाक्य लिख लेता ।

आगे की बात उसकी समझ में नहीं आयी । मोरारजीभाई देसाई का नाम उसने सुना था । उसने कल ही सुना था कि वे गत चुनाव में हार गये हैं । किन्तु वे मात्र उन्नीस वोटों से हारे हैं यह सुनकर उसे आश्चर्य हुआ । वे हारने के बावजूद बम्बई राज्य के मुख्य मंत्री बन गये यह रहस्य जानने के लिए उसने हीरूभाई से पूछा । हीरूभाई के मन में मोरारजी के प्रति सद्भावना थी । देवू की समझ में नहीं आया कि विधानसभा के इतने सारे सदस्यों के जीतने के बावजूद कांग्रेस को एक हारे हुए सदस्य को मुख्य मंत्री बनाने की कौन-सी जरूरत आ पड़ी थी । प्रजातंत्र अर्थात् प्रजा का राज्य यदि होता है तो एक ही व्यक्ति पर सारे लोग आश्रित क्यों हो जाते हैं ? जिन लोगों को कांग्रेस ने टिकट दिया है उन्हें योग्य मानकर ही दिया होगा ? फिर ?

देवू के मन में अभी समाधान नहीं हुआ है यह देखकर रमणलाल सोच में पड़ गये । हीरूभाई को लड़के के स्वभाव का यह लक्षण पसंद आया । जब वे पढ़ते थे तो उनका स्वभाव भी कुछ कुछ ऐसा ही था । संक्षेप में और आदेश के रूप में कही हुई कोई भी बात उनके गले नहीं उतरती थी । कोई उन्हें झक्की कहता, कोई पीछे-पीछे निन्दा करता ।

देवू ने दरजी को गणवेश का नाप दिया । रमणलाल और हीरूभाई सेठ अमीचन्द से मिलने जाना चाहते थे । देवू ने स्वयं वहाँ जाने से इन्कार कर दिया । वह पुस्तकालय में चला गया । थोड़ी देर अखबार पढ़ता रहा । फिर दो पुस्तकें लेकर बाहर आ गया । एक पुस्तक को बगल में दबाकर दूसरी को पढ़ते हुए वह सोमपुरा की राह पर चल पड़ा ।

सामने से घमला और वेली आते हुए दिखाई दिये । बच्चे को वेली ने आँचल में छिपा रखा था । अभी भी धूप थी । ये लोग कहाँ जा रहे होंगे ? देवू ने पूछा ।

"फूलजी का नजर लाग है, सबेरे से कुछ खात-पियत नाहीं हैं ।" घमला और वेली लगभग एकसाथ बोल पड़े ।

"नजर लाग है तो शिवा बावा के बतावे क रहा......"

"ऊ गाँव मां नाहीं रहा । पिथू भगत जिन्दा होते तौ उनके नजर पड़ते ही लड़का खेले लागत ।" कहते-कहते घमला ढीला पड़ गया ।

"पिथू बाबा के बिना तौ हमहूँ को कतना धक्का लागत है ? मुला का करी ? तुम अस करौ डॉक्टर माने का बताय दियो, मुला दवाखाना तो सबेरे खुलत है ।"

घमला ने देवू को भी साथ चलने के लिए कहा । वह जानता था कि देवू साथ रहेगा तो डॉक्टर असमय भी दवा दे देगा । देवू वापस मुड़कर उसके साथ चल पड़ा तब पल भर को ऐसा लगा जैसे घमाकाका की उम्र घटकर लवजी की जितनी हो गयी है ।

डॉक्टर माने ऊँची आवाज में "मुद्राराक्षस" नाटक का अनुवाद पढ़ रहे थे। देवू को देखकर वे संस्कृत शैली के प्रभाव में बोल पड़े "अरे कुमार, इस ग्रीष्म के अति ऊष्ण दिन में और वह भी मध्याह्न अभी-अभी पूर्ण हुआ है, ऐसे क्षण, तुम्हारा आगमन कैसे हुआ ?"

देवू ने बाहर खड़े धमा-वेली को ओर इशारा कर दिया।

"चिकित्सालय प्रातःकाल में खुलता है किन्तु तुम साथ में आये हो तब हम अवश्य ही अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। हमें पक्षपात में विश्वास है।"

देवू ने उनकी इस मजाकिया भाषा की ओर ध्यान नहीं किया। डॉक्टर माने शांत हो गये। सभी को बैठक में बुलाया। धमला और वेली नीचे बैठ गये। देवू खड़ा रहा।

"लड़का अच्छा है, मेरे जैसा स्वस्थ हो सकता है, संभालो तो।"

"साहब ई बोलत नाही।"

"बोलेगा, जरूर बोलेगा। शाम को तो बोलेगा ही। यह देखो न इसकी छाती में कफ जम गया है। रात को रोया था ?" वेली ने सिर हिला दिया।

"इस समय धूप में लेकर आये यह अच्छा नहीं किया। किन्तु यह दवा ध्यान से पिलाना। पिलाओगे न ? कि फेंक दोगे ?"

"कस बात करत हौ साहब ? हम गवांर होब मुला तुम्हार बात टाल सकित हैं ?"

डाक्टर ने दवा दी फिर भी धमला और वेली उठे नहीं।

"तुम लोगों को जाना हो तो जाओ। पानी पीकर जाना हो तो पीकर जाओ।" डाक्टर ने नौकर को बुलाया।

"ऊतो हम बाहर के नल माँ से पी लेब ..मुला साहब..."

डाक्टर की समझ में कुछ नहीं आया। उन्होंने देवू की ओर देखा।

"का कहत हो धमाकाका ?" देवू खड़ा होता हुआ बोला।

"फीस के पैसे .. ।"

डाक्टर हँस पड़े।

"मैंने कब माँगी है फीस ? कोई माँगे तभी पैसा देना चाहिए समझे ?"

"ये तो माँगने वालों को भी न दें ऐसे हैं, फीस इसलिए लिए भर दोपहर में आपके आराम में खलल पहुँचाया।"

"छोटे बच्चों का इलाज करना मुझे बहुत अच्छा लगता है। परसों सुबह इसे ले आना।"

"अच्छा हो जाय तबो ?"

"अच्छा हो जाने के बाद भी बच्चे को एक बार तो बताना ही चाहिए।"

"साहब, ई बोले कब ?"

"जिस उम्र में तुमने बोलना सीखा उस उम्र में।"

घमला फुर्ती से खड़ा हो गया । उसे याद आया, किसी ने कहा था – तुझे अन्य बच्चों की अपेक्षा देर से बोलना आया था !

देवू के हाथ से पुस्तक लेकर डाक्टर देखने लगे, अतः उसे रुकना पड़ा । डाक्टर ने नौकर को बुलाकर दो ग्लास सरबत बनाने के लिए कहा । फिर उन्होंने "मुद्राराक्षस" की कथा बतानी शुरू कर दी । देवू को आनन्द आया ।

"कौटिल्य मेरा आदर्श चरित्र है । यदि मैं डाक्टर होने के बजाय लेखक बना होता तो एक बड़ा-सा नाटक लिखा होता – विष्णुगुप्त चाणक्य ।"

देवू देर तक बैठा रहा । सवा पाँच बज रहे थे । डाक्टर उसके साथ ही बाहर निकले । "मुझे धूप से अधिक धूल बुरी लगती है ।"

"और बरसात में ?"

"अरे वाह । मैं हरियाली का आशिक हूँ ।" डाक्टर ने देवू की ओर देखा । पूछा–"आशिक माने मालूम है ?"

"प्रेमी । आप हरियाली के प्रेमी हैं !"

"जब मैं कालेज में पढ़ता था तो मेरे कुछ मित्र लड़कियों को हरियाली कहते थे । मैं इस निर्णय पर आया हूँ कि हरी होने की वजह से ही धरती माता कही जाती है ।"

"फिर शादी के बारे में क्या सोचा ?"

"यह प्रश्न पूछने के लिए तुम अभी बच्चे हो दोस्त ।"

"आपने गत वर्ष मुझसे बात की थी ।"

"अच्छा ललिता वाली बात ?" यह तो पचास प्रतिशत तय था । अर्थात् मेरी ओर से बिल्कुल तैयारी थी । किन्तु उसने साफ मना कर दिया ।" रुककर डाक्टर ने स्पष्टता माँगी "साफ मना कर दिया ऐसा कहा जा सकता है ?"

"यही कहा जाता है !"

"हाँ, यदि उसने हाँ कहा होता तो शत-प्रतिशत निश्चित था । गाँव में वह रहना नहीं चाहती थी ।"

"सारंग तो गाँव नहीं है ।"

"तुमने अहमदाबाद देखा है ? वीरक्षेत्र वडोदरा देखा है ? मनमोहक मुंबई देखी है ?"

"मुंबई देखी होती तो वडौदरा और अहमदाबाद तो अपने आप देख लेता ।"

"तुम होशियार हो । फिर मिलेंगे । मुझे यहाँ से वापस जाना चाहिए । मेरे आगे लगातार धूल उड़ती रहे मुझे यह पसंद नहीं है ।"

"डाक्टर साहब, एक प्रश्न पूछूँ ?"

डाक्टर रुक गये ।

"आप सबके साथ इसी तरह बात करते हैं ?"

"नहीं, सिर्फ तुम्हारे साथ ।"

"तब तो ठीक है।"

"नहीं तो ?"

'नहीं तो ..." देवू कुछ बोलने के बजाय जोर से हँस पड़ा।

"हाँ, तुम्हारा अनुमान सही है। लोग कहने लगेंगे कि डाक्टर पागल हो गया है।" दोनों अलग हो गये।

घर पहुँचते ही देवू एक पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ गया। दूसरी पुस्तक लवजी ने छीन ली। इतने में कुछ लड़के दौड़ते हुए निकले। देवू के पूछने पर उन्होंने इतना भर कहा।—"जल्दी आऊ घोघबाबा के थान पर।"

देवू जल्दी जल्दी चल पड़ा। घोघ की थान के पास पंद्रह जन खड़े थे। छना का मझला लड़का पड़ा हुआ था। आजकल भायचन्द कुँभार ओझा का काम करने लगे थे। वे अपने खेत में थे। छना का बड़ा लड़का उन्हें बुलाने गया था। "अब हीं ओझा नाहीं आवा।" कहकर देखने वाले व्याकुल हो रहे थे।

"लेकिन काटा किसने है ?" देवू ने पास में खड़े आदमी से पूछा।

"दूसर का, साँप। छना ने खेत मां हम दस दिन पहले करिया—कीरा देखा रहा।"

"दूसर केहू न होय, पूर्वज होय।"

"पूर्वज होय तो कुछ नाहीं। ई तो काटकर, मनौती लै के उतर जाये।"

पूर्वज वाली बात देवू के मन में नहीं उतरती थी। वह छना के पास जाकर खड़ा हो गया। लड़के ने आँख खोलकर बन्द कर ली। दूसरे ही पल उसका बदन ऐंठने लगा। मतली होने लगी। देवू की निगाह छना से मिली। देवू उससे कुछ कहना चाहता था। देखने वाले फिर घुसफुस करने लगे "भायचन्द अब हीं नाहीं आये। कहूँ बाहर तो नाहीं चले गये ?"

हिम्मत करके देवू ने कहा—

"छना काका हमार मानो तो सारंग के दवाखाना ले जाव।"

"काहे हमरे लड़का क मार डरवे हौ का ? बड़े डाक्टर वाले बने हौ।"

देवू दो कदम पीछे हट गया। कोई कुछ बोला नहीं। उसे बुरा न लगा क्योंकि उसे स्वयं नहीं मालूम था कि डाक्टर माने के पास साँप के जहर की दवा है या नहीं।

भायचन्द कुँभार के आने तक सूर्यास्त का समय हो गया था। उन्होंने दिया जलाया और दाने डाले। दाने के न दिखने पर माला के मनके गिनते हुए घोघबाबा की अनुमति ली, तब तक काफी भीड़ एकत्र हो गयी थी।

ओझा अग्यिार करते जाते थे, मंत्र पढ़ते जाते थे और अपने अंगूठे को मुँह में रखकर चूसते जाते थे। बीच-बीच में पास में रखे पात्र में थूकते जाते थे।

दो तीन बार मंत्र मारने के बाद भी जब लड़का हिला तक नहीं तब जीवन ने कहा "टेंबा लै जान हमार कहा मानो तो, वहां एक रबारी बहुत गुनी है।"

लोग खाट पर लिटाकर लड़के को ले गये। किन्तु शाम को पता चला कि वह टींबा पहुँचते-पहुँचते राह में ही चल बसा था।

नरसंग को मृत्यु के भयानक अदृश्य हाथ का आभास हुआ। उसके भीतर प्रतिकार की वृत्ति जाग्रत हो उठी। यदि काटने वाला देवता नहीं है और मनुष्य का अपराध क्या है यह भी न बता सके तो यह सब नाटक करने की आवश्यकता ही क्या है? क्या जरूरत है इन स्थानों पर सिर झुकाने की? बुढऊ कहते थे—हम जिस तरह पक्षी और गिलहरी को मार नहीं डालते उसी प्रकार साँप को भी नहीं मारना चाहिए। उसमें भी अपनी जैसी ही जान होती है। वह कहीं पेट भरने के लिए आदमी को थोड़े ही काटता है.. लोगों का कहना है कि साँप के मुँह में सवा मन का ताला होता है। कहाँ गया वह ताला? और इस साँपने जीव लेने के लिए नहीं तो और किस लिए काटा है? उसे ढूँढकर मार क्यों न डालें? खेत पर आ जाने के बाद नरसंग की विचार-तंद्रा टूटी। देवू भी लाश के पीछे-पीछे जाने के बजाय खेत में आकर बैठ गया। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था।

वह और नरसंग घर पहुँचे, लवजी अभी तक दीपक की रोशनी में पढ़ रहा था। और कंकू की बात मान नहीं रहा था। देवू उसके पास बैठ गया।

लवजी ने अंतिम पृष्ठ पूर्ण किया तब उसकी आँखों की कोर भीगी थी। आँसू का एक बूँद लुढ़ककर पुस्तक के पुराने पृष्ठों पर फैल गया। उसने पुस्तक बन्द करके देवू के हाथ में देते हुए कहा—"ई किताब तुम न पढ़ो।"

कंकू और नरसंग उसे विस्मय भरी निगाहों से देख रहे थे।

3

बीतते चैत की शाम अभी शीत नहीं हुई थी। लवजी ने अपने वस्त्रों को धोकर धूप में डाल दिया था। साबुन और नील का उसने संतुलित उपयोग किया था। कपड़े धोने के मामले में वह देवू से होशियार है, वह साबित कर देना चाहता था।

अभी वह चरकर वापस आ रहे एक बछड़े को उठाकर खिलौने की तरह दुलार ही रहा था कि चक में प्रवेश करती हुई जीप की आवाज सुनाई दी। लवजी सुध-बुध भूलकर मात्र आसमानी जाँघिया पहने हुए उस तरफ दौड़ पड़ा। उसकी गौर-वर्णी देह खुली हुई थी और अस्त होते हुए सूर्य की सुनहली किरणें बड़ी सरलता से उससे खेल रही थीं।

"अम्मा अम्मा, बालूभाई हैं।"

बालूभाई जीप से उतरते ही उससे लिपट गये। लवजी को नहीं मालूम था कि बालूभाई के पीछे जीप से उतरी एक नाजुक कन्या की आँखों में उससे भेंटने की चाह छलक रही थी। उससे निगाह मिलते ही लवजी ने उसका भी स्वागत

किया । बालूभाई का हाथ पकड़कर, पीछे आ रही कन्या को मुड़-मुड़कर देखकर, यह प्रतीत करता हुआ कि वह आ रही है, लवजी उन्हें खाट तक ले गया । गुदड़ी से नीम के सूखे बौर और धूल झाड़कर उसे व्यवस्थित बिछाया । अतिथि-स्वागत का यह उसका प्रथम अनुभव था । देवू होता तो संभवतः वह कुछ न करता । सिर्फ इस अपरिचित लड़की को घूर-घूर कर देखता रहता । किन्तु जिम्मेदारी पहले । उसमें किसी भी प्रकार की गफलत नहीं होनी चाहिए । माँ पिताजी से कहेगी — लवजी तो बहुत होशियार हो गया है ।

कंकू आ पहुँची थी और उनके स्वागत में लग चुकी थी । किन्तु लवजी का ध्यान उस ओर न था । लड़की गुदडी पर पड़ रही सूर्य-किरणों में बैठ गयी । लवजी संकोच के कारण कुछ कह न सका किन्तु आँखों में लड़की के रूप की प्रसंशा का भाव था । लड़की भी समझ गयी थी कि यह लड़का मुझे देखकर बहुत खुश हुआ है । कितना सुडौल है । उसने जाँघिया के बदले कच्छी पहनी होती तो चित्रित किये हुए ग्वाले जैसा प्रतीत होता ।

"जाब भैया, कपड़ा पहन आओ ।" कंकू ने बड़े सम्मान से लवजी से कहा । अनपेक्षित से लवजी सचेत हुआ कि वह अब चौदह वर्ष का हो गया है । मेहमानों के सामने इस तरह मात्र जाँघिया पहनकर खड़ा नहीं रहा जाता । वैसे तो उसने सोचा था कि कपड़ो को व्यवस्थित तहाकर कथरी के नीचे दबाकर रख देगा और उसी पर बैठ जायेगा जिससे कपड़ा इस्त्री हो जायेगा । किन्तु मेहमान आ गये । चलो अच्छा हुआ । अच्छे हैं । हेनी बहन भी बालूभाई और वीणाबहन की बहुत प्रसंशा करती हैं ।

कंकू मेहमानो से बात कर ही रही थी कि लवजी सफेद चमकते कपड़े पहनकर आ गया ।

"अब ठीक है ?" उसने बालूभाई से पूछा ।

"नहीं, ठीक तो पहले था ।" लड़की बोल पड़ी । कंकू को यह लड़की बहुत चंचल लगी । वह कुछ पूछे इससे पहले ही बालूभाई ने उसका परिचय दिया -' यह जैमिनी है, वीणा की छोटी बहन । कुछ वाचाल अधिक है । कलकत्ता में रहती है ।"

"इतनी दूर ?" लवजी के मुँह से निकल गया । जैमिनी से आँखें मिलते ही उसकी आँखों में कलकत्ते का दृश्य ढूँढने लगा । उसे लगा—कलकत्ता में भी अपने जैसे ही आदमी होते हैं ? हर कहीं मनुष्यों जैसे ही मनुष्य होते हैं ? देवू को मालूम होगा । आने दो पूछेंगे ।

बालूभाई एक विशेष काम से आये थे । उन्हें, आजादी के पूर्व रजवाड़ों के खिलाफ प्रजा-आंदोलन पर एक लेख लिखना था । उन्हें ज्ञात हुआ था कि सारंग के दरबार के खिलाफ सन् 1938 में किसान-सत्याग्रह में जाग्रति और निभयता की भावना थी । दैनिक पत्रों एवं छुटपुट लेखों से थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त हो चुकी थी । रमणलाल तथा हीरूभाई ने विस्तृत पत्र लिखा था और अन्त में सर्वेक्षण के

लिए भी सलाह दी थी। हेती ने रमणलाल को बताया था कि संघर्ष में मेरी माँ को एक गोरे सिपाही का चाकू लग गया था जिसका निशान अभी भी है। अतः बालूभाई ने सोचा था कि सर्वप्रथम सोमपुरा की मुलाकात लें। जैमिनी भी गाँव देखना चाहती थी। एक पंथ दो काज। और वे लोग बिना किसी पूर्व सूचना के आ पहुँचे थे।

कंकू की आँखों के समक्ष पन्द्रह-सोलह वर्ष पहले की घटना आग की लपट की तरह कौंध गई।

बालूभाई ने दो कापियाँ निकालीं। एक पूरी भर गयी। उसे लवजी को पकड़ाकर दूसरी में लिखना शुरू किया।

डूबते हुए सूर्य की किरणें लवजी के गाल पर पड़ रही हैं। जैमिनी देखे जा रही है। लवजी का ध्यान पढ़ने में है। किसान सत्याग्रह की पार्श्वभूमिका के बारे में बालूभाई ने लिखा था कि—

सन् 1927 में सारंग के राजकुमार का विवाह हुआ। मुखियाओं ने तय किया कि भेंट-स्वरूप राजा को, दो वर्ष तक प्रति बीघा पाँच आने अरिरिक्त महसूल दिया जाये। किन्तु धूर्त अधिकारी ने अशिक्षित किसानों से प्रति बीघा पाँच आने के बजाय प्रति रुपये पाँच आने का अतिरिक्त देय लिखवा लिया। 1934 में राजकुमार ने राजभार संभाला। दूसरे ही वर्ष एक नया बखेड़ा—"खेतों में, रास्तो के किनारे या फालतू जमीन में वृक्ष लगाने वाले आठ आने के सरकारी कागजात पर आवेदन करके सरकारी अनुमति ले लें। बिना अनुमति के वृक्ष लगाने वाले पर इक्यावन रुपये का दंड किया जायेगा।

राजा जब विदेशयात्रा पर चले गये तो दीवान ने जोरजुल्म बढ़ा दिया। सैनिकों में काठियावाड़ी मकराणी भरती किये गये। प्रजा में असंतोष बढ़ने लगा।

सन् 1937 में कांग्रेस जीत गयी। कृषकों में विरोध की भावना जाग्रत हो चुकी थी। सितम्बर में किसान-समिति की रचना हो चुकी थी। राज्य के बारहों गाँवों के प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित हुए थे। उनमें से कइयों ने साहस किया और वे सादरा गये। अंग्रेज पोलिटिकल एजेण्ट को सारंग के कानून के विरोध में आवेदन-पत्र दिया। सरदार वल्लभभाई पटेल से भी मिलकर आये। उन्होंने रविशंकर महाराज को असलियत की जाँच करने का काम सौंपा। महाराज सारंग में आकर रह गये। अपनी जाँच की रिपोर्ट दी—"किसानों की आर्थिक स्थिति राज्य के कर-भार से दिनों दिन बिगड़ती जा रही है। किसानों में अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करने की तथा उस हेतु नुकसान बर्दास्त करने की हिम्मत भी है।"

कुछ दिनों पश्चात् गायकवाड के राज्य की हद में "किसान-परिषद" बुलाई गयी। परिषद ने लगान की दर का विरोध किया। प्रस्ताव पेश किया गया कि "राज्य की किसी भी नीलामी में हिस्सा न लिया जाय। राज्य को भेंट देकर जमीन

नहीं ली जायेगी ।" दूसरे ही दिन दो हजार किसानों का एक समूह सादरा पहुँचा । राजनैतिक एजेन्ट ने उचित समाधान लाने का विश्वास दिलाया ।

इस ओर दीवान ने बांटो और राज करो वाली नीति अपनाई । भ्रामक लाभों की घोषणा की और प्रतिनिधियों की गिरफ्तारी की । आवेदन देने आये कृषकों पर लाठियाँ चलवायीं । इस पर सारंग के महाजन-मंडल ने कृषकों पर हुए अत्याचार के विरोध में दो दिन की हड़ताल की घोषणा कर दी । सारंग से बम्बई में जाकर बसे लोगों ने वहाँ पर सभाएँ आयोजित कीं और किसानों के अहिंसक आन्दोलन का समर्थन किया और वहाँ से छः सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मंडल सारंग पहुँचा ।

किसानों को प्रोत्साहन मिला, उनकी हिम्मत बढ़ी । महसूल रोको आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया । सोमपुरा के पिथू भगत अन्य प्रतिनिधियों के साथ गाँव-गाँव घूमते थे और लोग मानते थे कि उनमें चमत्कारिक शक्तियाँ हैं अतः सामान्यतः डरपोक लोग भी दृढ़ता से महसूल रोको आन्दोलन के प्रस्ताव से सहमत हो गये ।

इसके पश्चात तो राज्य के पुलिस अधीक्षक ने एक-एक गाँव में सिपाहियों को भेजकर अत्याचार करना प्रारंभ किया । प्रारंभ में तो लोगों ने समझा कि गाँव पर डाकुओं ने हमला किया है किन्तु बाद में पता चल गया कि रक्षक लोग ही मृत्यु का भय दिखाने आये हैं । अहमदाबाद के एक दैनिक अखबार ने अपने दिनांक 20 जनवरी 38 के अंक में एक समाचार दिया – राज्य के सिपाहियों और उनके भाड़े के गुंडों ने छापा मारा, सोते हुए लोगों को उठाकर घर बाहर निकाला और घरों को सील लगा दी । एक प्रसूता को, उसके नवजात बच्चे को अन्दर ही बन्द करके बाहर निकाल दिया गया । सुबह सात बजे बन्द किए गए मकान को जब दोपहर में दो बजे खोला गया तो पता चला कि बच्चे के एक पैर को बिल्ली ने नोंच डाला है । बच्चा बेहोश था ।

लवजी पढ़ते-पढ़ते खड़ा हो गया । जैसे कि वहाँ अन्य कोई न हो इस प्रकार वह नोट को पढ़ते पढ़ते खलिहान की ओर गया । वहाँ बबूल के तने का दो-हाथ जितना लम्बा टुकड़ा पड़ा हुआ था । उसने उसमें जोर से पाँव की ठोकर मारी । बालूभाई, जैमिनी और माँ बैठी थीं । जब उस ओर उसका ध्यान गया तो देखा कि वह लड़की उसकी ओर ही देखे जा रही थी । क्या वह कुछ पूछना चाहती है ? बिल्ली ने नन्हें बच्चे को पाँव में काट लिया उसका क्या हुआ ।

"माँ, तुझे याद है ? आन्दोलन के समय कौनो लड़का के पाँव···"

"काहे ? आपन जीवन । कतना उपाय करागा और पिथूबाबा डोरा बाँध दिहिन तब ऊ बचा ।" कंकू ने जरा ऊँची आवाज में कहा ।

लवजी को याद आया । जीवन की माँ ने एक बार कहा भी था कि अगर पिथूबाबा नहीं होते तो हमारा जीवन नहीं बचता ।

बालूभाई अब जो जो भी पूछते थे कंकू उसका उत्तर मुक्त मन से दे रही थी। आँधी की तरह उसे सब याद आता जा रहा था।

"माँ, तुमका डर नाहीं लागत रहा तब ?"

"काहे क डर ? और उहो अपने गाँव माँ ? तुमका मालुम नाहीं न कि ई हमरे हाथे माँ का लाग है ?"

"हम समझा कि खेत मां काम करत के हंसिया लाग गै होये। तुम हमका पहले कहे होतिव तौ हम बदला न लै लेइत ?"

जैमिनी हंस पड़ी। उसने बालूभाई के कान में कहा—इसकी बोली मुझे बहुत अच्छी लगती है। यह छोटा सा हो जाये तो मैं इसे गोद में लेकर खिलाऊँ। जैसे गोपियाँ कृष्ण को खिलाती थी।"

"कृष्ण तो काले थे, यह गोरा है।"

"कृष्ण का एक अर्थ और होता है। खींचने वाला। जानते हैं आप ? जैमिनी का विश्वास था कि बंगाली शिक्षक ने उसे जो शब्दार्थ सिखाया है वह बालू भाई ने नहीं पढ़ा होगा।

"बहिनी का कहत हैं ?" कंकू ने पूछा। बालूभाई ने जैमिनी से अनुमति ली। उसने कहा कि कहाँ इनकी निन्दा की है। कहो न।

सुनकर लवजी हँस पड़ा। बोला "मैं तो छोटा ही हूँ। सारा गाँव मुझे लवा कहता है। सिर्फ शिक्षक लोग ही सम्मान देते हैं।" फिर जैसे अपनी बात को सच प्रमाणित करने के लिए वह माँ के पास जमीन पर बैठ गया। जैमिनी ने देखा माँ का हाथ कैसे अनायास ही लवजी का सिर सहलाने लगा है। उसकी इच्छा भी नीचे बैठने की हुई। किन्तु कपड़े गंदे हो जाते। माँ के अभाव की याद आते ही उसका रोम-रोम सिसक उठा। आज वह तेरह वर्ष की हो गयी है। माँ के अवसान को दस वर्ष हो गये। माँ की याद आते ही बड़ी बहन के पास दौड़ आती है। वीणा बहन समझती हैं। किन्तु कंकू तो जैसे धरती की तरह असली माँ है। जैमिनी जहाँ थी वहीं बैठी रही। किन्तु आँखें तो उसकी कंकू लवजी के संबंधों में खोई रहीं।

इतने में बैलगाड़ी आ पहुँची। लवजी उठकर दौड़ा। देवू ने बैल खोला। गाड़ी मोड़कर सही जगह पर रखने में लवजी ने देवू की मदद की। जैमिनी को आश्चर्य हुआ। उसने बालूभाई का ध्यान खींचा। उन्होंने कहा कि लवजी ने यदि मदद न भी की होती तो भी अकेले देवू ने ही यह काम कर लिया होता।

नरसंग हाथ-पैर धोकर आया तब तक बालूभाई चलने के लिए तैयार हो चुके थे। रात के नौ बजे तक वापस पहुँचना था। वीणा चिन्ता करेगी। और यह भी परसों कलकत्ता चली जायेगी।

"बस !" लवजी ने क्या कहा, कोई समझ न सका।

नरसंग ने जब चाय पीने के बहाने उन्हें थोड़ी देर के लिए रोक लिया तो

बालूभाई ने पुनः सारंग सत्याग्रह की बात चलाई। बालूभाई ने चाकू लगने वाली बात पूछी तो नरसंग बोल पड़े—"ऊमाँ तो हमहूँ रहिन।"

राज्य के ही आदमी लूटपाट करायें, डाकुओं की तरह अचानक छापा मारें, किसानों को एकत्र करके मुर्गा बनाएँ, नेताओं के घर की तलाशी लें, बैलगाड़ी में लोहे की जंजीर से उन्हें बाँधकर नाधा जाय जुलूस में शामिल युवकों को लातों से पीटा जाय, सत्याग्रहियों के सीने पर बंदूकें रखी जायें और मुलाकात के लिए प्रतिनिधियों को बुलाकर जलियाँवाला बाग के हत्याकांड का यहाँ पुनरावर्तन करने की धमकी दे ऐसे में स्त्रियाँ भी आन्दोलन में शामिल हों इसमें आश्चर्य की कौन सी बात ? नरसंग ने बताया कि सोमपुरा में औरतों की बहादुरी ने अपना रंग दिखाया था।

एक बहुत ही खतरनाक मकराणी थानेदार को सोमपुरा में तैनात किया था। वह अपने साथियों के साथ गाँव के चौक पर कब्जा किये बैठा था। उसकी नजर के सामने देवियों के छोटे मंदिर के पास गाँव की स्त्रियाँ बैठी आन्दोलन के गीत गा रही थीं। धमा ने कंकू से पूछकर पिथू भगत को बुलाना चाहा।

कंकू उसे रोकने वाली थी किन्तु धमा को अपनी समझदारी पर अतिरिक्त विश्वास था। वह भगत को बुलाने के लिए चल पड़ा। वे आयेंगे और मंत्रशक्ति से उस गोरे को फाड़ डालेंगे। यह फटेगा नहीं तो भी उसकी हवा तो जरूर निकल जाएगी। मकराणी क्रोध में तो था ही। उसे लगा कि धमा ने स्त्रियों से मिलकर उसका मजाक उड़ाया है। नियम का भंग करते हुए धमा को सींव की ओर जाते देख उसका क्रोध भड़क उठा। उस पर झपट पड़ा। धमा को बोलने का भी अवसर दिये बिना ही मकराणी उसे पीटने लगा। शहर में रहकर नाजुक बन चुके धमा से यह मार सही नहीं गयी और वह छोटे बच्चो की तरह रो पड़ा। किसी को कुछ सूझे उसके पहले कंकू वहाँ दौड़ आयी। बीच में पड़ी। मकराणी के उठे हुए डंडो को अधर में पकड़कर उसने छीन लिया। मकराणी ने चाकू निकाल लिया। फिर भी वह धमा के आगे से नहीं हटी। उत्तेजना में सुधबुध भूल गये मकराणी ने चाकू से वार कर दिया। कंकू ने ऐन मौके पर हाथ हटा न लिया होता तो कलाई के ऊपर वाले भाग में चाकू हड्डियों तक घुस जाता। फिर भी घाव तो लगा ही। रक्त की तेज धार वह निकली।

कंकू अभी भी हाथ फैलाये खड़ी थी, महाकाली की तरह। उसके पीछे खड़े धमा ने गुहार मचाई। लोग दौड़ पड़े।

मकराणी अब गालियाँ बक रहा था। उसके पीछे उसके सिपाही बंदूक ताने खड़े थे। नरसंग को दूर से तो एक स्त्री का आकार और चाकू ही दिखाई पड़ा था। उसने कूदकर मकराणी का चाकू वाला हाथ पकड़ा तब पता चला कि कंकू को लगा है। "अरे तू है ?" उसी क्षण नरसंग ने मकराणी का हाथ ऐसे उमेठा कि कट की आवाज सुनाई पड़ी। जब वह "छोड़ साले" बोला तब लोगों को मालूम पड़ा मकराणी की आवाज फट गई है।

पीछे खड़े सिपाही गोली चला देने की धमकी दे रहे थे। उनकी धमकी की कोई परवाह किये बिना ही अन्य स्त्रियाँ भी वहाँ आ गयीं और जैसे तरकश से तीर निकालने में समय नहीं लगता, पुरुष भी लाठी कुल्हाड़ी लेकर एकत्र हो गये।

नरसंग के धक्के से मकराणी चित गिर गया था और नरसंग उसके सीने पर पैर रखने ही जा रहा था—

"तुहार गोली खाये के बाद भी मरे के पहले तुहरे जैसे चार का मसल डारब अस हन। साले नामर्द, औरत पर हाथ उठावत है ?" इस गर्जना के साथ वातावरण थर्रा। उठा।

इतने में करसन मुखिया प्रकट हुए। वे सारा दिन अंतर्धान रहे थे। गाँव जानता था कि मुखिया हमारे पक्ष में हैं परन्तु राज्य का लिहाज रखते हैं। नरसंग के पैर के नीचे कुचलने से मकराणी को बचाने के लिए करसन मुखिया को पिथू भगत की कसम खिलानी पड़ी फिर कंकू के हाथ से बहते रक्त को सभी को दिखाकर बोले-"मूरखों इका बचावे के कौनो उपाय करौ नाहीं तौ धनुक-बाई होय जाये।'

नरसंग का क्रोध रहरहकर भड़क उठता था। वह गाँव की सीमा से इन राक्षसों को खदेड़े बिना एक कदम भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। किन्तु कंकू थी कि उसे छोड़कर घाव पर पट्टी बंधवाने भी नहीं जाना चाहती थी।

धमा लाला के साथ पिथू भगत को बुलाने के लिए निकल पड़ा किन्तु भगत को इस घटना का आभास पहले ही हो चुका था और वे खेत से चल पड़े थे।

घाव साफ करने के लिए छगन कहीं से शराब ले आया था। असह्य पीड़ा के बावजूद कंकू दीवार के सहारे बैठी थी। किन्तु पिथू भगत को देखते ही उसे रुलाई आ गयी। लालटेन लेकर जंगली पत्ते लाने गये नरसंग और मोती भी आ पहुँचे। भगत ने सारी बातें सुनकर माला फेरना शुरू कर दिया। कंकू ने अपने आँसू पोंछे।

घाव पर पत्तो को रखकर पट्टी बाँध दी गयी। हाथ को झोली में लटकाया गया। अचानक हेती और देवू की याद आ जाने से वह घर की ओर चल दी। भगत ने कहा-'दुख के साथे दुख भोगने की तैयारी होय तौ इन सबको पाठ पढ़ाय देव।" राज्य के उच्चाधिकारी के पास शिकायत करने सादरा जाना था। अभी ही।

बच्चों को किसी को सौंपकर जाने के लिए कंकू तैयार थी। भगत ने कहा कि अन्य किसी को क्यों, मै ही हेती और देवू को संभाल लूँगा। किन्तु तुम्हें पैदल नहीं जाना है। फिर ? बैलगाड़ी से जाने में खतरा था। बीच में सारंग आयेगा। ठीक है, आठ आदमी मिलकर खाट पर उठा ले जायेंगे। दो आदमी और रहेंगे, जो आगेपीछे रहेंगे। हथियार-बन्द। इस भयानक पीड़ा में भी कंकू शरमा गयी।

इस तरह लाश की तरह, खाट में पड़ा रहा जाना होगा भला ? किन्तु श्वसुर

की आशा थी, अन्य कोई उपाय नहीं था, पालन करने के सिवा। नरसंग ने रास्ते में धमा से मजाक में कहा – 'पुराने समय में महारानियाँ इसी प्रकार पालखी में बैठा करती थीं।'

उस दिन धमा ने हंसने में साथ देने के बजाय गंभीर सलाह दी थी। पिथू चाचा ने कहा है कि चुपचाप तेजी से आगे बढ़ना, राज को टोह मिल जाए इससे पहले मकाखाड़ की धर्मशाला में पहुँच जाना।

कोई सामने आकर देखे तो सही। नरसंग ने कमर में तलवार बांधी थी और हाथ में लोहे से जड़ी लाठी रक्खी थी। सब तेजी से चले। तीन कोस काटने में देर कितनी? यह आ गया मकाखाड़।

धर्मशाला को बाहर से ताला लगा के भीतर बैठे सब चिलम पी रहे थे। वहाँ घोड़े की टाप सुनाई दी। नरसंग ने कंकू की ओर देखा। वह इस दशा में भी चलने को तैयार थी।

सारंग का दीवान गायकवाड की सीमा में सिपाही भेजेगा, यह किसी ने सोचा नहीं था, फिर भी जरूरत खड़ी होने पर पिछले दरवाजे से कंकू को लेकर मोहन, काना और नरसंग को निकल जाना था। धमा सिपाहियों को ऊटपटांग समझाता रहेगा, वे नहीं मानेंगे तो पकड लेंगे और क्या? लड़ना नहीं था।

कंकू को लेकर नरसंग आदि निकल गये इसके बाद धमा ने देर तक साथियों को चुप रखा। दरवाजा टूटने का भरोसा हो जाने पर चिल्लाना शुरू कर दिया: "बचाओ बचाओ। धर्मशाला लूटने डाकू आये हैं।"

बाहर का मोरचा संभालना पड़ा, इस कारण सिपाही तुरन्त दरवाजा तोड़ नहीं पाये। धर्मशाला के मुनीम ने गायकवाड सरकार का आदेशपत्र माँगा। बहस में समय बीतता गया। आखिर थानेदार मकराणी टूटा हाथ झोली में लटकाये आ पहुँचा। मुनीम को बंदूक की नली दिखाकर दरवाजा खुलवाया।

"कहाँ गई वह औरत?"–सिर्फ पाँच पुरुषों को देखकर थानेदार चीख उठा। उसने सुना था कि उस घायल औरत को लेकर फरियाद करने सब पोलिटिकल एजेण्ट के पास जा रहे हैं, धमा ने भी धीरे से बोलकर उसकी शंका दृढ़ की "हम को सादरा पहुँचने दिया होता तो–"

दीवान ने थानेदार को इसलिए भेजा था कि सब को समझा-बुझाकर सारंग ले आए, वे फरियाद करने न पाएँ। भय से, लालच से किसी भी तरह सब को वापस लाना था।

दूसरी ओर मकाखाड़ से निकलते ही नरसंग ने विचार बदल दिया था। काना के साथ हथियार गोकुलिया के पभा मुखिया के घर पहुँचा दिये थे और सादरा न जाकर वह कंकू को लेकर लींबोद्रा स्टेशन से अहमदाबाद की गाड़ी में बैठ गया था।

अहमदाबाद पहुँचकर उन लोगों ने स्वामिनारायण मंदिर में डेरा डाला।

डाक्टर से दवा लेकर प्रमाणपत्र लिया। एक सज्जन ने अखबारों में समाचार दे दिया। इतने बड़े घाव के बाद भी एक कृषक-महिला ने जिस साहस का परिचय दिया था, उसकी प्रशंसा हुई। अखबारों ने शिकायतों पर अधिक भार दिया।

फिर तो सारंग के दीवान ने राज्य के पुलिस अधिकारी को बर्खास्त कर किसी तरह अपने आपको बचा लिया। किसान आन्दोलन जारी रहा। इन्द्रपुरा में आयोजित सभा में स्त्रियों ने पुरुषों से कहा कि तुम लोग जेल में चले जाओगे तो संघर्ष हम जारी रखेंगे। लड़ा कैसे जाता है उसका नमूना कंकू ने प्रस्तुत कर दिया था।

अब तक सम्पूर्ण उत्तर गुजरात तथा मध्य गुजरात तक सारंग सत्याग्रह की अग्नि प्रज्ज्वलित हो चुकी थी।

प्रजा में संघर्ष के बढ़ते प्रभाव को देखकर राजा को अन्ततः दीवान को भी बर्खास्त करना पड़ा। "जन्मभूमि" ने अपने 1938 के 7 मई अंक में लिखा "अद्भुत"। इंग्लैंड में पढ़ रहे राजा के छोटे भाई ने सारंग की राज्य-व्यवस्था को मध्ययुगीन कहा और चेतावनी दी कि अन्तिम सार्वभौमत्व राजाओं का नहीं प्रजा का है।

दूसरे ही महीने में 18 जून को पाँच हजार के मानवसमूह की उपस्थिति में समझौते का मसौदा पेश किया गया। प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने प्रजा और उनके प्रतिनिधियों की प्रशंसा कर, एकता, स्वच्छता तथा सुधार के लिए मार्गदर्शन दिया। लवजी को आज सरदार की बात सच लगी।

× × × ×

देवू ने हाथ जोड़ कर अतिथि को बिदा किया। जमिनी जैसी बालिका को भी देवू प्रणाम करता है यह देखकर लवजी को हंसी आ गई।

कंकू की आँखों से पिथु बाबा की याद के आँसू अभी सूखे न थे। यह काम भी लवजी को ही करना पड़ा। कंकू ने उसे गोद मे ले लिया। सिर पर गाल पर और कंधे पर प्यार से सहलाती रही। जीप जितनी गति से दूर होती जा रही थी उससे भी कई गुना लवजी छोटा होता जा रहा था। दस वर्ष का, सात का, तीन का, एक का, दूध के दाँत निकल रहे हैं वह चलना सीख रहा है, गिरकर फिर उठ रहा है।

"गाँव मां तुहरे उमर के केहू महतारी के गोद मां नाहीं बैठत।" देवू ने कहा। जैसे डाँट रहा हो।

"अस माँ है केहू के, जौ न बैठे ? बोल !"

देवू के पास कोई जवाब न था।

4

सूर्यास्त के पूर्व ही देवू गोकुलिया पहुँच गया। घर पर गलबा और रमणलाल के अतिरिक्त सभी थे। ईजू आंगन में बैठी थी। देवू को देखते ही शर्मा कर घर में भाग गयी। हेती दौड़कर बाहर आयी। उसका चेहरा खिल उठा था। पीछे आकर उसका पल्लू खींच रहे वालजी की ओर भी उसका ध्यान नहीं था। एक के बाद एक इस प्रकार उसने सबकी खबर पूछी। देवू ने उत्तर देते देते ही भानजे को उठा लिया। ईजू अन्दर के दरवाजे की दरार से यह सब देख रही थी।

मूलजी और वाली को देवू के साथ बात करता छोड़ हेती अंदर गयी। झुक कर देख रही ईजू को उसने प्रेम से चिकोटी भरी। फिर अल्यूमिनियम के प्याले में पानी भर कर ले आयी। देवू ने पूछा एम. एल. ए. साहब नहीं दिखाई पड़ रहे हैं। सास-ससुर पास में न बैठे होते तो हेती ने फटाक से जवाब दिया होता किन्तु इतने वर्षों के बाद भी उसने कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया था।

'खेते माँ गये हैं।'' मूलजी बुढऊ ने जवाब दिया।

"इस समय क्या काम है?"

"पाँव ढीला करे।" वाली ने कहा।

देवू ने मान लिया कि यही बात होगी। किन्तु यह सच न था। कई वर्षों से रमणलाल के मन में एक बात घूम रही थी। मुहल्ले की औरतें तखत और गलबा के अवैध संबंधो की बात करती हैं इस बारे में हेती ने दो-एक महीने पहले ही बात की थी। पिछले महीने मूलजी बुढऊ ने ससंकोच कहा था—"आज तौ गलवा भिनसारेत खेते माँ आवा रहा।"

रमणलाल ने मन को समझा लिया था।

लोगों की तो आदत है बात करने की। गलबा थोड़ा वाचाल है ही। स्त्रियो के साथ बैठकर बात करना उसे अच्छा लगता है। उनके साथ हँसी-मजाक और दोस्तों के साथ जलसा करने की आदत तो है ही। युवक किसी के खेत में देर तक बैठे हों और भूख लगे तब सुखड़ी बनवाकर खा लें तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। तखत एक रुपया लेकर सुखड़ी बना देती है यह बात किसी से छिपी नहीं है। लोग गलबा को, पता नहीं व्यर्थ ही हैरान-बदनाम कर रहे हों। बात में कोई सार न हो और उसमे कहें तो उसे बुरा लगेगा। खेती का सारा कार्य वह करता है और चार आने भी अगर उसे खर्च करने के लिए चाहिए तो वह माँ के पास से माँग कर लेता है। ऐसे सीधे सरल आदमी से ऐसी गंभीर बात को लेकर डाँटना सचमुच हृदय-भंजक है। उसका हृदय तो टूट ही जायेगा और ऊपर से वह जो सम्मान देता है उसमें भी कमी आ जायेगी।

रमणलाल ने गलबा से नहीं कहा होता किन्तु एक पखवारे पहले रात के नौ बजे के करीब हीरूभाई आ पहुँचे। उनकी खाट बिछाने के लिए वह गोदाम की

ऑफिस पर गया । वहाँ पहुँचकर हाथ की टार्च जलाने के साथ ही उसने जो दृश्य देखा वह उसके भुलाये नहीं भुल रहा था । अच्छा था कि हीरूभाई उस समय खाना खाने बैठे थे और हेती उन्हें परोस रही थी । उनमें से किसी ने भी वह दृश्य देखा होता तो ? कितना आघात लगता ?

तखत की दोनों जाँघों के बीच दबा हुआ गलबा......रमणलाल ने तुरन्त टार्च की रोशनी नीची कर ली । उसे यह क्या सूझा कि उसने झरोखे से रोशनी अंदर फेंकी ? डूबती आवाज की फुसफुसाहट अथवा दो शरीरों के स्पर्श से उत्पन्न बातचीत .. ..रमणलाल कुछ कदम पीछे खिसककर चुपचाप खड़े रहे । दूसरी ओर के दरवाजे से वे लोग चुपचाप चले जायें इसकी राह देखते रहे ।

थोड़ी देर बाद, पीछे का दरवाजा खुला है कि नहीं यह देखने के लिए झरोखे से उन्होने फिर से प्रकाश फेंका । आँखें यह क्या देख रहीं हैं आज ? उस दरवाजे के पास ही दो नग्न शरीर, लिपटे हुए .....रमणलाल ने इस बार प्रकाश वापस लेने में विलम्ब किया, एक क्षणभर का विलम्ब । गलबा द्वारा उठाई हुई, सौन्दर्यवृष्टि करती तखत की कोमल काया......एक बार फिर से देखने की उनकी इच्छा हुई । शरीर की चेतना तनावपूर्ण हो चुकी थी । फिर तो अन्दर से आ रही गाली सुनकर ही आपे में आए—"यह साला ढीठ, नोखे कै बत्ती लावा है, सीधा रहत है ? अब सारे अन्दर उजेर करिस हड्डी तोड़ डारब हाँ छगला ?" गलबा की आवाज में हाँफ और कंपन दोनों थी । अजगर और बाघिन लड़ते हुए लगभग थक चुके थे। किन्तु अभी दो में से किसी को मोक्ष नहीं मिला था ।

रमणलाल वहाँ से चुपचाप चले आये थे । गोदाम में तो कितने दिनों का कूड़ा पड़ा होगा ? रहने दो, हीरूभाई भी यहीं सो जायेंगे । यह तो मैंने इसलिए सोचा था कि हम दोनों जन आदत के मुताबिक देर तक बातें करेंगे और तुम लोगों की नींद में खलल पड़े......कहने के बाद रमणलाल को अपनी बात की निरर्थकता का बोध हुआ । हीरूभाई नींद खराब करके शायद हो बात करते हैं । ज्यादा से ज्यादा ग्यारह, साढ़े ग्यारह तक । चुनाव के दिनों में भी उन्हें रात के बारह से सुबह चार बजे की नींद तो चाहिए ही थी ।

उन्हें फिर गलबा-तखत की याद आयी । एक भिन्न मुद्रा उनके मस्तिष्क में जन्मी । मेरा मन कितना मैला है। मै जिस वस्तु को नापसंद करता हूँ उसे ही याद करता हूँ । यह अच्छी बात नहीं है.........

हीरूभाई तो खाना खाकर अपने पभा मामा के यहाँ सोने चले गये । मामा के यहाँ चिराग बुझ गया था इसलिए मात्र खाना खाने रमणलाल के साथ आये थे। रमणलाल भी हीरूभाई के साथ मुखी के यहाँ थोड़ी देर बैठकर वापस आ गये । चैन नहीं पड़ रहा था । एक बार पुनः गोदाम की ओर जाने की इच्छा हो रही थी, हाथ में लाठी लेकर । 'लाठी मारे पानी नहीं अलग हो जाता' वाली कहावत याद आयी ।......

नींद नहीं आ रही थी। कमरे में जाकर दिया जलाया। पिछवाड़े का दरवाजा खोल दिया। थोड़ी देर बाद पानी पीने के लिए उठी हेती ने पूछा 'काहे नींद नाहीं आवत?'' "नींद आये ऐसा नहीं लगता। तुम मेरी खाट अन्दर ले आओ।" हेती थोड़ी दूर चुपचाप खड़ी रही। बच्चा सो रहा था। दिया बुझाने के बाद रमणलाल ने मन की बात हेती से कही। हेती ने कहा "हम गलत कहत रहिन? तुम हमार बात नाहीं सुनेव।" "अब क्या करें?"—उसे अपने नजदीक खींचते हुए रमणलाल ने पूछा। "कौनो दिन मौका देख के गलबाभाई क समझाऊ और उनके ससुरार एक दिन होय आऊँ।'' दूसरी सलाह रमणलाल के मन में नहीं उतरी। वह अभी सोलह साल की भी नहीं होगी और यह गलबा... ..'' अस नाहीं बोलते, सब आदमी एक जैसे होते हैं। तुम उनसे कहेव, कबौ मौका पाय कै समझायौ मुला उल्टा-सीधा न बोलेव। नाहीं तो झगड़ा होय और घर कै इज्जत चली जाये। और तखत रांड तो हैये अस है। लोग त्यारी थोड़े कहत हैं कि अपने पहले भतार का दबाय कै मार डारिस .. ..हमै मालूम रहा कि ई गलबाभाई पर कबै से दाँत धरे रही। ई दूसर भतारौ ईका भिखारी और हिजरा मिला है।"

हेती के सो जाने के बाद रमणलाल उठ बैठे। कमरे के बाहर की सृष्टि देखने की इच्छा हुई। तारों की उजास में पृथ्वी पर के वृक्ष इस तरह शांत दिख रहे थे जैसे चित्र में बने हों। उनकी निगाह रह-रहकर वृक्षों की चोटी पर अटक जाती थी। हल्का-सा प्रकाश शीतल पवन से मिलकर सुहाना लग रहा था। इस पवन के स्पर्श की कोमलता वृक्षों की चोटी अवश्य अनुभव करती होंगी जैसे अभी उसकी ऊँगलियाँ हेती की आँखों को, कानों को और होठों को छू रही थीं तब वह कैसी गहरी ठंडी साँस लेती थी! पवन उन्हें पुरुष की तरह दिखाई देने लगा। पवन की विभिन्न लहरें उन्हें पवन-पुरुष की ऊँगलियाँ लग रही थीं और नीचे फैली प्रकृति नारी......हाँ पवन ही स्त्रीकेसर और पुँकेसर का योग करता है। वह मात्र निमित्त ही नहीं कर्ता भी है......यह दृश्य मुझे लुभावना लगता है तो एक स्त्री और एक पुरुष के मिलन को देखकर मैं क्यों क्रोधित हो उठा? प्रकृति पुरुष को जाग्रत करती है, प्रेरित करती है यदि यह सच है तो मुझे इस तरह बेचैन होकर प्राकृतिक नियम पर समाज का बनाया हुआ कानून लागू करने का अपराधी बनना चाहिए? मान लो गलबा मेरा भाई नहीं है और तखत मेरे लिए अपरिचित है... और वे मुद्राएँ उस महाशिल्पी के अदृश्य हाथों का खेल है......मैं उस दृश्य को स्वाभाविक-प्राकृतिक घटना मानकर नहीं चल सकता? ऐसा संभव नहीं है? यह कोई आदर्श नहीं है, व्यावहारिक समझ है।

सो जाने के विचार से वे अन्दर आये। लेट गये। प्रश्न हुआ – इस प्राकृतिक दृश्य को देखकर जिस तरह के विचार मुझमें उत्पन्न हुए यदि वैसे ही विचार सभी को आने लगें तब तो समाज के भय की समस्या कितनी आसानी से हल की जा

सकती है ? लोग चरित्र की इन बातों से अपनी निंदावृत्ति को संतुष्ट करते हैं। क्या वे इसे तटस्थता से नहीं देख सकते ?

रमणलाल ने उस समय धैर्य से काम लिया। उस घटना के पन्द्रह दिन बाद आज तम्बाकू कूटने के लिए घर ठहर गये थे। दोपहर का सूर्य ढल चुका था ? रमणलाल खेत में चल पड़े।

हलवाहा रहट चल रहा था और गलबा गर्मी के बाजरे के लिए क्यारियाँ ठीक कर रहा था। रमणलाल घूमते हुए उसके पास पहुँचे।

"ई देखौ न भैया, कतना कम पानी आवत है।"

'तुम रहट हाँकते तो अधिक पानी आता।"

"काहे हमका थकान नाहीं लागत का ?" कहते हुए उसने जोर-जोर से कुदाल चलाना शुरू कर दिया।

"रात देर तक जागने से तो बैठे रहने से भी अधिक थकान लगती है।"

"रात मां का हम अकेले जागित हैं ? साथ बैठे होई तो रात का देर होय जाय। तुमसे बुढऊ कहिन होइ हैं।" गलवा ने साधारण भय और आशंका से कहा।

"बुढऊ तो क्या कहेंगे ? यह तो लोगों की बातें उड़ती-उड़ती आयी हैं।"

गलबा ने आँखें नीची कर लीं। फिर अचानक क्रोध से बोल पड़ा—

"लोगन ससुरे क का है ? हम कहाँ केहू के घरे कूदे जाइत हैं ?'

"इसमें क्रोधित होने की क्या बात है ? तुम व्यर्थ में जागते हो यह गलत है ?"

"अब न जागब।" इस बार गलबा की निगाह नीची ही रही।

"हाँ, तो यूँ बोलो न ! हम किसी के धर यों ही बैठे रहें। किन्तु देर तक बैठे रहने पर जिसे दूर से नहीं दिखाई पड़ता वह क्या सोचेगा !"

रमणलाल को विश्वास था कि उनके कथन को समझना गलबा के लिए संभव न था। किन्तु उन्होंने अपने मन की बात कह दी इसका उन्हे संतोष था।

"मक्कार की दोस्ती बुरी होती है।" मन ही मन बुदबुदाते हुए वह उठ खड़ा हुआ। रमणलाल को लगा कि इससे अधिक कहना भूस पर लीपना जैसा होगा। उन्होंने विषय बदलकर दूसरी बातें करनी शुरू कर दी।

'इस वर्ष तेरी पत्नी के लिए पुराने जेवरात फिर बनवाने पड़ेंगे। तुम्हारी भाभी कहती थी कि इस वर्ष तुम्हारा गौना हो जाना चाहिए। तुम्हारे ससुर ने कहलवाया है कि चूड़ियाँ ले जाकर कड़े बनवा दो। क्यों बोले नहीं कुछ।"

"लेव, हम का बोली ? बुढऊ क बोलो बन्वावें।"

"अरे, मैं जाऊँगा। सोने की चेन भी लेनी है।"

"हमरी भौजी के पास कहाँ है चैन ? रहे देव। बादमां दुइ चेन इकट्ठा बनवायेब। सोना के भाव .."

"मालूम है, सोने का क्या भाव है ?"

"शादी-विवाह के समय आये पर पंचानबे से सौ होय जाये ।"

"तुमको तो सब मालूम है ।"

"तुम सोचत हों अतने मूरख हम नाहीं न ।"

"मैंने जो कहा सब गाँठ बाँध लिया तुमने, एँ ?" कहकर बिना किसी उत्तर की अपेक्षा किये रमणलाल चल पड़े । थोड़ी देर हलवाहे के साथ बात करके घर की राह पकड़ी ।

रास्ते में शंभू नायक से भेंट हो गई । नायक की मंडली भवाई का खेल करती है । लेकिन आमदनी बहुत कम है । रमणलाल से नायक ने नौकरी माँगी । फिर वालजी की लोरी गाने आऊँगा और बड़ी बख्शीश ले जाऊँगा – कहते हुए अपनी राह ली ।

रमणलाल घर पहुँचे तो एक ऊचो खाट पर बैठकर देवजी अपने लटकते हुए पाँव पर भानजे को झूला झूला रहा था । रमणजी को देखते ही बालजी बोल पड़ा "पप्पा आये ।"

वह किसलिए आया है इस बारे में वह अपनी बात पूर्ण करे इसके पहले ही मूलजी हँस पड़े । घर की ओर मुँह करके वे बोले–"सुनत हौ, ई तुहार दमाद सारंग मां बहुत बड़ा दवाखाना बनावे कै बात करत है । अब हीं बिताब भर कै हैं और चिंता सारी दुनिया कै । ई पिथू भगत के घर मां सब ऐसे हैं ।"

रमणलाल ने देखा देवू में एक आश्चर्यजनक दृढता और स्वस्थता है । उन्होंने पिछले कुछ महीनों में दवाखाने के लिए कितना प्रयास किया है, बताया । सेठ अमीचन्द पचास हजार देने के लिए तैयार हैं किन्तु बाकी की रकम कौन देगा ? पशाभाई और जवाबदारी लेने के लिए तैयार नहीं हैं । बनियों और पटेलों के बीच इन दिनों कुछ तनावपूर्ण स्थिति है । वक्त आने पर सब ठीक हो जायेगा ।

"बाबा जिन्दा होते और उन्होंने अमीचन्द शेठ से कहा होता तो उन्होंने सारा खर्च दे दिया होता ।"

"जितना आसान हम सोचते हैं, काम उतना असान नहीं है देवजो । मुझे चुनाव के समय उन्होंने कितना चन्दा दिया था, मालूम है ?"

"किन्तु सारंग के अमीर से अमीर और गरीब से गरीब सभी लोगों का वोट तुम्हें मिला वह तो उन्हीं के कहने से कि कोई और कहने आया था ?"

रमणलाल चौंक उठे । यह सोलह वर्ष का छोकरा बातों को कहाँ से कहाँ जोड़ देता है । और वह जो बातें जानता है उनकी तहों तक से परिचित होता है ।

शेठ सारंग में हैं, फिर तो कल ही उनसे मुलाकात लेते हैं ऐसा कहकर रमणलाल ने देवू की पढ़ाई के बारे में फिर सेवादल शिबिर के बारे में बातें कीं । इतने में घर से खाने के लिए बुलौवा आ गया । ईजू दौड़ती हुई बाहर आयी और पड़ोस के घर में घुस गयी । उसने पावों में कुछ नहीं पहना था किन्तु देवू के कानों में पायल की झनकार गूँज उठी ।

हेती ने हाथ धोने के लिए पानी का लोटा लाकर रख दिया । देवू आँगन में आया । और घर के बरामदे में छोटी छोटी किन्तु कोमल कलाइयों में चूड़ियाँ खनक उठीं । देवू ने उधर देखा । आँखें चेहरे में और चेहरा दीवाल के पीछे छिप गया ।

इसके बाद वह वहाँ जब तक रहा उसकी आँखों के समक्ष दो शर्मीली आँखें चमकती रहीं । वातावरण में नई नई चूड़ियों की खनक रह–रहकर उत्पन्न होती रही ।

5

देवू सेवादल का शिबिर पूर्ण करके खादी की आसमानी नेकर, सफेद शर्ट और टोपी पहने ग्राम सुधार का कार्य करके सोत्साह वापस आ रहा था । उसने खेत के बीच की राह पकड़ी थी । सामने से उसे घेमर आता हुआ दिखा । उसने कई बार आवाज दी तब भी घेमर ने जब उसे देखकर अपना मुँह घुमा लिया तब देवू को किसी अमंगल घटना के घट जाने का आभास हुआ ।

वह इसी उधेड़बुन में घर तक आ पहुँचा । ताला बंद था । लवजी भी माँ के साथ ही खेत में गया होगा । शायद खाद डाली जा रही हो । बरसात को अब देर ही कितनी है ? सफेद बादलों का आवागमन प्रारंभ हो गया था । उसके खेत में खाद डालने का काम चल रहा था । वह सीधे खेत की ओर चल पड़ा ।

देवू को आता देखकर लवजी छपरी पर चढ़कर कूदने लगा । लवजी अब बच्चा नहीं है । शाला में शिक्षक-दिन मनाया गया तो वह ऊपर के दर्जे के विद्यार्थियों को पढ़ा आया था । पर आज देवू को देखकर शरारती बच्चा हो गया ।

कई दिनों के बाद बेटे को आता देखकर कंकू की छाती में मातृत्व का संचार हुआ । बाँहों में भर लूँ । चूम लूँ ? वह उसके सर पर हाथ रखने जा रही थी कि पता चला-हथेली गोबर और मिट्टी से सनी हुई है । देवू माँ के पैरों के पास ही बैठा । नरसंग की आँखों से वत्सल आनंद की अदृश्य तरंगें छूटती थीं । माता-पिता के बीच स्नेहसभर शांति में झूलता देवू पलभर अशब्द बैठा रहा । उसने देखा क्या काम चल रहा है । गोबर के ढेर को फावडे से काटने पर उसका स्निग्ध काला रंग उभर आया था । मजदूरन औरतें एक ओर बैठी थीं और लवजी ने देवू की पीठ पर स्थान ग्रहण किया था । देवू उसके लिए खाने की जो चीजें खरीद लाया था, लवजी ने मजदूरनों में भी बाँटी थीं ।

नये कपड़े गंदे होंगे – उसकी परवाह किये बिना ही देवू गोबर भरवाने के कार्य में जुट गया ।

बाद में माँ और लवजी से चेहरबाची के बर्ताव के बारे में उसे पता चला, उससे उसका मन खिन्न हो उठा । उसने तय किया कि वह घेमर के घर वालों के

साथ कभी बात नहीं करेगा । क्या समझती हैं चेहरचाची अपने आपको ? वह थोड़ी देर अन्यमनस्क हो सबके साथ वहाँ बैठा रहा । फिर नहा–धोकर घर वापस आ गया । दो दिन तक उसने चेमर के घर की ओर मुँह तक नहीं किया । किन्तु तीसरे दिन जब वह दालान में बैठा था तब उसकी अकुलाहट बढ़ गयी । बिना किसी बात के चेहरचाची माँ को ऊटपटांग बोल जायें ? फिर उनके घर वाले ऊपर से उन्हीं का पक्ष लें ? आज तक की अच्छाई भूल गये ? दोली माँ, माँ और लवजी की बताई हुई बातें रह–रहकर उसे भीतर तक आन्दोलित कर देती थीं । सम्पूर्ण घटना पुनः क्रमबद्ध उसकी स्मृति में चित्रपट की तरह घूमने लगी ।

सात दिन पहले की बात है । दोपहर ढल चुकी थी । छपरैल की छाया आँगन तक फैल चुकी थी । दुपहरिया भर मित्रों के साथ जीवन के आम के नीचे गिल्ली-डंडा खेलकर लवजी वापस आया था । माँ ओसारे में सो रही थी, सिर ढँक-कर । लवजी ने लोटा भरकर हाथ पाँव धोया, पानी पीया और सीढ़ियों पर आ बैठा । जैसे वह जबसे आया है तभी से कंकू जाग रही हो, बोली "भर दुपहरिया न खेला कर भैया, कतनी गर्मी पड़त है ।"

लवजी ने स्पष्टीकरण दिया कि वह छाया में खेल रहा था । कंकू ने उसे फटकारा कि तू रात को पुस्तक लेकर बैठता है इससे अच्छा दोपहर में बैठकर पढ़े और शाम को खेला करे तो ?

'मंझा का तो सब अपने–अपने खेत मां काम करै चले जात हैं ।"

"सब लड़के काम करत हैं, एक तू ही कुछ नाहीं करत ।"

"ले, जब होत है तब "कुछ करत नाहीं, कुछ करत नाहीं" बड़बड़ावा करत हौ । सबेरे नास्ता लेके खेत मां नाहीं गइन रहा ? " लवजी क्रोधित होता हुआ बोला ।

"गयौ रहा ।" कहते हुए कंकू ने बात खत्म की । किन्तु उसके मौन हो जाने से ऐसा नहीं व्यक्त हुआ कि उसने लवजी की प्रसंशा की हो । अपने बारे में कोई अपमानजनक बात करे यह लवजी से सहन नहीं होता था ।

अब क्या करें ? लवजी की इच्छा अभी पढ़ने की तो नहीं ही हो रही थी । उसने एक कंकड़ी गुड़ निकाला, खाकर पानी पीया । फिर बोला–

"माँ, हम चेहरचाची के घर जायके आइत हैं, सुपारी ले आई ।"

कंकू को याद आया-हीरा वहू ने दो - तीन बार लवजी से आने के लिए कहा था । किन्तु इस समय–।

"अरे..." कंकू कुछ कहे इसके पूर्व ही लवजी तीन घर पार कर चुका था । उठकर हाथ-मुँह धोए, मटके का ठंडा पानी पीकर, अन्दर से झाड़ू लाकर बरामदा बुहारने की तैयारी करे, इसके पहले ही उसे चेहर की ऊँची आवाज़ सुनाई दी । वह बाहर आयी । चेहर ने इतनी जोर से धक्का मारा था कि लवजी गिरते–गिरते बचा । नीचे पड़ी लकड़ी के साथ टकराने की वजह से उसके दायें पाँव की ऊँगली

छिल गयी थी। किन्तु लवजी को इसका ध्यान न था। वह सिसकता हुआ चला आ रहा था। सुपारी गिर जाने का उसे दुख न था। किन्तु दुतकार और धक्का.. इस भयानक अपमान के आघात से अनायास ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे।

कंकू अवाक रह गई। उसकी आवाज तक न निकली। कल तक कंकू बहन, कंकू बहन कहने वाली चेहर को अचानक यह क्या हो क्या था ? इस समय तो वह और भी जोर-जोर से बड़बड़ा रही थी। यह रांड चिल्ला-चिल्लाकर सारा गाँव एकत्र कर लेना चाहती है क्या ?

कंकू को याद आया कि हीरा बहू दिन में दो-दो बार मेरे घर झाँककर चली जाती है यह चेहर को अच्छा नही लगता। कभीकभार तो बहू बैठ भी जाती है। कंकू उसे उसके घर के काम की याद दिलाती है तब भी वह उठने का नाम नहीं लेती। वह सब से कह देगी : निपट कर आयी है और फिर बातो में लग जाएगी। अभी तो वह ससुराल में मुश्किल से तीसरी बार आयी है किन्तु उसे विश्वास हो गया है कि सास के साथ उसकी बनेगी नहीं। ऐसी बातों का कंकू समर्थन नहीं करती किन्तु वह उसका मुँह कैसे बन्द कर सकती थी ? कल तो चेहर जब बहू को बुलाने आयी तो आंगन में खड़े-खड़े थोड़ी देर तक कनमंजा लेती रही। बहू उसकी निंदा कर रही है और कंकू चुपचाप सुने जा रही है यह देखते ही वह वहाँ से वापस चली गयी थी. मन में गाँठ बाँधकर। इसका मतलब यह हुआ कि दोनों देर तक रोज बैठकर मेरी बुराई करती हैं। उसने कंकू की चौखट पर कभी पाँव न रखने की कसम खायी थी और लीर्ली को भेजा था कि अभी जाकर भाभी को बुला लाये।

क्या करूँ ? फाड़कर खा जाऊँ ? चेहर के मन में शांति न थी। शाम को खेत पर जाकर उसने फता से बात की थी। फता क्रोधित हुआ था—"आपन तोबड़ा तौ देख, पागल कुकुरिया जैसे तो देखात है। पूरे मुहल्ले मां यही एक घरे उठब-बैठब है, उहौ बन्द करावे क है ?"

हीराबहू और कंकू दोनो मिलकर चेहर की निन्दा करती हैं इससे फता को कोई आपत्ति न थी। चेहर और कसमसा उठी थी। किन्तु करे क्या ? घुटती रही। उसने घेमर से कहा। घेमर ने भी टके-सा जवाब दे दिया—"वह दिन हम उसे पानी मांगा रहा तो तुम हमका बड़बड़ाय लागी रहा कि हमरे देखते बहू का कठोर बात कहत हौ और अब हम हिन से ऊका फटकार देवावा चहत हौ ? तुमहिन डाँटो। डाँटे मां तुमसे जादा हुँशियार केहू नाहीं है।"

चेहर ने बहू के साथ बोलचाल बन्द करके उस बात को जैसे ताला मार दिया हो। क्या मेरा कोई नहीं है ? दूसरे दिन दोपहर में उसे नीद न आयी। आँगन में बैठी घूर रही थी कि लवजी आ पहुँचा। उसने सुपारी माँगी कि उसकी आग भड़क उठी। गालियाँ दी और धक्का मारकर निकाल दिया। वह गिरते-गिरते बचा।

लवजी घर पहुँचा। कंकू ने उसे खीचकर सीने से लगा लिया। चेहर ने

सब कुछ देखा किन्तु उसने बड़बड़ाना बन्द नहीं किया। जतन बाहर आयी। दोली माँ भी अपनी अँटारी से खाट पर उठकर बैठ गयीं। अन्य स्त्रियाँ भी एकत्र हो गयीं।

लवजी के पाँव की उँगली से रक्त बह रहा था। उसने उसके पाँव में रूई का फाहा रखकर पट्टी बाँधी।

'का करै जात हौ, ऊ बदजात के घरे ?" कंकू की आवाज श्लथ थी।

जतन ने चेहर को मनाना चाहा तो चेहर की आवाज और भी बुलन्द हो गयी। कंकू को तो वह अब तक कई बार कुशब्दों से टकोर चुकी थी। इस समय जतन को अपने पक्ष में मानकर वह मनबढ़ हो गयी थी–

"क्या समझत है ई रांड़..."

"रांड" शब्द कान में पड़ते ही कंकू क्रोध से झल्ला उठी। सीढ़ियाँ उतरकर वह आँगन की छाया तक आयी–

"काहे रे तूका ? बोलै कै अक्कल है ?"

"नाहीं तूका अक्कल है। हमरी पतोहूक बैठाये कै ऊकै कान भरे क है। अस तौ बहुत साहूकार बनत है मुला कंहू के सुख देखा नाहीं जात।"

"तौ अब अपनी पतोहू क घर मा बन्द रख।"

"ऐसे करब, तुहरे जैसे बदजात के घरे..."

"मुँह संभाल के बोल हां..."

"नाहीं तो का कर लेबी रे ? रांड, छिनार..."

बस। इतना काफी था। कंकू अपनी सुध-बुध भूल गयी। कोई शायद ही इतना उग्र रूप धारण करता हो। उसका चेहरा तमतमा गया। जैसे अभी आँखों में खून बहने लगेगा।

"तू हमका छिनार कहिस ? इधर तो आव, खड़ी खड़ी चीर न डारी तौ।"

जतन बीच में पड़ी।

"तुहरे पाँव पड़ीत है। वापस जाव। देखौ गाँव भर इकट्ठा होत है।"

जतन के कहने से कंकू वापस नहीं जाती। किन्तु दोली माँ आ पहुँची। उन्होंने अपना काँपता हुआ हाथ कंकू के सीने पर रख दिया। देवू की कसम खिला दी। किसी तरह महा मुश्किल से वह शांत हुई। "तुम्हरे जैसे का ई हलकट के आगे जाय क चही ? नरसंग भैया सुनि हैं तो का कहि हैं ?"

कंकू घर चली गयी। लवजी खाट खड़ी करके, उस पर चढ़कर छत की खपरैल पर से एक छोटी सी लाठी निकाल रहा था। दोली मां देखते ही समझ गयीं। वे हँस पड़ीं। बोलीं–

"रहै दे भैया, जवान रही तौ फता मार लाठी मार लाठी ऊकै हड्डी तोड़ डालिस रहा तबौ ई वैसे के वैसे रही।"

कंकू हाँफ रही थी। पानी पीकर वह दोली माँ के पास आकर बैठी। लाठी

उतारने में सफलता नहीं मिली थी अतः लवजी भी निराश था । उसी मनोदशा में वह आकर माँ की गोद में बैठ गया ।

हीरा बहू की आवाज सुनकर दोली माँ उठ खड़ी हुई । वे अब तक चेहर के खिलाफ थीं किन्तु हीरा बहू की आवाज सुनकर उन्हें बुरा लगा ।

तीसरी ही बार आयी बहू सास के खिलाफ बोले भला यह बात अच्छी है ?

वह हौले-हौले पता के आँगन में पहुँच गयी । देखा कि चौखट के अन्दर ऊकडूं बैठी हीरा बहू हाथ की चाँदी की चूड़ियाँ उतार चुकी थी और अब हाथी-दाँत के कड़े उतारने में लगी है । सँकरे मुँह के कड़े उसके मोटे हाथ से बाहर नहीं आ रहे थे ।

"अरे जतन जाना जरा खेत से घेमर का बलाय लाव । बहू कै कँडा उतार देय ।" दोली माँ बोली ।

इतना सुनते ही हीरा ने चूडियों वाला अपना हाथ अपने सिर पर मारा और रोने लगी ।

वह सारे जेवरात अभी उतारकर अपने मायके चली जाना चाहती थी । और दुबारा फिर इस चौखट पर पाँव नहीं रखना चाहती थी ।

कंकू और चेहर के झगड़े में जतन घबरा गयी थी । अब वह सास-बहू के झगड़े में रस लेने लगी । वह बहू को तो ऊपर-ऊपर डाँट समझा रही थी किन्तु हकीकत में वह मन ही मन खुश थी ।

माँ और कंकू लड़ रही हैं, यह समाचार घेमर तक पहुँचाने के लिए लीली खेत में दौड़ गयी थी । घेमर हाँफता हुआ आकर देखता है कि पत्नी और माँ के बीच साधारण सी बोलाचाली हो रही है । उसका मन बैठ गया । देखने-सुनने वालों को उसने हाथ जोड़कर विदा किया ।

घर के भीतर गया तो वह चौंक पड़ा । उसे देखकर भी हीरा ने पर्दा नहीं किया । यह क्या ? माँ रोने लगी थी, "ई हमका घरौने जाय क कहत है ।"

दोली माँ क्रोधित हुई, "तौ जा न घरौने, बेशर्म, झूठी । अरे हम इहां कबसे बैठी हन और हम कुछ नाहीं सुना ।"

जतन बोल पड़ी "ई खुद हीरा बहू क दुसरे जाय क नाहीं कहत रहीं ? अब बात पलट दिहिन ।"

अब जतन के साथ लड़ने की शक्ति चेहर में न थी ।

"कसम हमरे लीली कै, ई हमका गाली न दिहिस होय तौ । तुम तौ ऊ का रोके मां लाग रही जौन हमैं मार डारे आवत रही, घर मां तो ई हमरे ऊपर चढ़ी आवत रही ।" चेहर ने रोने की लाख कोशिश की किन्तु उसे सफलता न मिली ।

'तू हमरी महतारी क गाली दिहिस ?" अभी भी बेपर्दा बैठी पत्नी को देखकर वह क्रोध से बोला ।

"दिया तौ नहीं मुला अब बिना कौनो बात के ई हमका देहैं तो हमहूँ कहे

देइत है, गाली देब ।" कहते हुए वह कोठरी में जाने के लिए मुड़ी । वह देखे नहीं इस प्रकार उसने हीरा पर हाथ उठाया ।

आधी रात को जब वह हीरा के पास गया तो वह बोली–"तुम हम पर हाथ उठायो ? जाव बाहर, नाहीं तो गुहार लगाउब, सारा गाँव एकट्ठा करब ।"

घेमर ने उसे समझाकर दुनियादारी, छोटे-बड़े का लिहाज क्या होता है वगैरह बताया । अपनी बातों का कोई असर नहीं हो रहा है यह देखकर गुस्सा होकर और इसमें भी सफलता न मिली तो अन्त में खुशामद करके पत्नी को मनाने की कोशिश की । किन्तु हीरा एक से दो न हुई ।

घेमर बाहर आँगन में सोने के बदले खेत में चला गया । दूसरे दिन भी यही हुआ । पति-पत्नी के बीच अनपेक्षित दूरी बढ़ती जा रही थी ।

जितना दोष उसे माँ का दिखता था उतना ही कंकू चाची का भी । उनके जैसी समझदार से भी बोले बिना नहीं रहा जा सका । घेमर के दुःख की सीमा नहीं थी ।

वह जब भी खाना खाने घर आता तब माँ और पत्नी के बीच कुछ-न-कुछ बकबक होती रहती । अथवा माँ उसे खाते-पीते कोसती रहती । घेमर तीन दिन में ही ऊब गया था ।

देव्र सारंग से वापस आ रहा था तब घेमर ने उसे पहचाना था । किन्तु उसे भय था कि वह उसे समझाकर वापस बुला लेगा । घेमर बदरी जा रहा था । ससुर से कहने कि वह अपनी लड़की को वापस बुला ले ।

घेमर ने खुदकुशी करने का विचार कभी नहीं किया था । परन्तु यह कदम उससे भी विकट था । हीरा ने आकर उसे महका दिया था । मेले में हजारों लोगो से मिलने की खुशी दूसरे दिन सिकुड़ने लगती । जब कि हीरा यहाँ आई तब से लेकर अंग अंग में अजीबों गरीब ज्वार उफनता रहा । घेमर हमउम्र दोस्तों में हँसमुख माना जाता है । पर इन दिनो तो उसकी खुशी बेहद बढ़ गई थी । सब इसकी इज्जत करने लगे थे । ऊबड़खाबड़ आँगन और डावाडोल सा घर उसे इतना प्यारा कभी नहीं लगा था । कुछ दिन पहले ही घेमर ने जीवन से कहा था – "हीरा कहे तो उसे कंधे पर बिठाकर सारे गाँव घुमाऊँ भले ही लोग मुझे पागल मान लें ।"

उसे एहसास हो गया था कि हीरा मायके जाएगी उसके साथ ही घर-खेत दोनों वीराने हो जाएँगे । फिर भी वह जैसे अपनी अरथी की चिट्ठी कटवाने चला था ।

6

गुड़ मँगाकर रख लेना, हम सोमवार को रुपया लेकर आयेंगे – टींबा से मगन अमथा का संदेश था ।

नरसंग बाड़ा साफ कर रहे थे। कंकू हरी-हरी घास डलिया में भर-भरकर एक किनारे ढेर लगा रही थी। देवू लकड़ी काट रहा था—ईंधन के लिए। लवजी पास में रखी बैलगाड़ी के जुआ पर बठा बैठा पाँव हिला रहा था, साथ ही 'सौराष्ट्र की रसधारा" पढ़ रहा था। बीच में देवू से कुछ पूछता बताता जा रहा था। कभी-कभार "लकड़ी इस तरह फाड़ने से जल्दी फटेगी" जैसी सलाह भी देता जा रहा था। ठीक इसी समय वसूली पर निकले और टींबा से सोमपुरा आये विठ्ठल कापड़िया ने लवजी की सगाई का समाचार सुनाया। बनिया पहली बार इतना अच्छा लगा था।

कंकू तो यह समाचार सुनकर खुशी से विह्वल हो गयी थी। विठ्ठल बनिया मगन अमथा की लड़की की प्रसंशा किये ही जा रहा था, नरसंग सुन रहे थे। कंकू का ध्यान उनकी बातो में न था। उसका मन इधर-उधर भटक रहा था। मगन अमथा के घर से रुपया। बड़ी बात है।

लवजी वहीं का वहीं बैठा था। उसने मात्र पैर हिलाने बन्द कर दिए थे। बस एक पृष्ठ उलटकर दूसरा पढ़ने लगा था। देवू थोड़ी देर विट्ठल के पास खड़ा रहा, फिर लकड़ी फाड़ने लगा।

लवजी ने पुस्तक बन्द करके पास में रखी जो नीचे गिर पड़ी। नीचे कूदकर उसने पुस्तक पर से धूल झाड़ी और देवू के पास जा खड़ा हुआ।

"हमैं सादी नाहीं करना।"

"पुस्तक में पढ़ रहा है कि मुँह से बोल रहा है?" देवू ने निगाह कुल्हाड़ी की ओर ही रखकर पूछा।

"जा, तू माँ और पिता का कह आव।" – लवजी की आवाज में दृढ़ता थी।

"क्या?" देवू ने अभी लवजी की बात को कोई महत्त्व नहीं दिया था।

"साफ-साफ कह दे कि लवजी सादी न करे।"

"किन्तु यह तो सगाई की बात है, शादी कहाँ करना है?"

'बाद मां सादी करे क पड़े के नाहीं?"

"हाँ। तुझे अकेले को शादी नहीं करनी पड़ेगी। सारी दुनिया ..।"

"तुम उल्टी बात ना करो, हम झूठ नाहीं कहत।"

"तो क्या कहता है?" देवू ने उसकी ओर देखा—"कि तुझे शादी नहीं करनी है?"

"हाँ, ऐसे ही।"

"तो तुझे बाँधकर शादी करायेंगे।"

'अरे, हम तुम्हार का बिगाड़ा है?"

"इस तरह पागलों की तरह बकवास मत कर।"

"हम सही कहित है देवू, सादी कै कोनो अर्थ नाहीं न।"

"तो शादी न करने का भी कोई अर्थ नहीं।"

"देख, गौतम बुद्ध ने सादी करके घर छोड़ा रहा, उनसे अच्छे विवेकानन्द, बिना सादी के सब कुछ छोड़िन, जिन्दगी से पहले मुक्ती पाइन।"

देवू भौंचक्का होकर लवजी की ओर देखता रहा। सचमुच वही बोल रहा था। यह उसके मन की जन्मी बात थी, किन्तु अभी से......संभव है। सब कुछ संभव है।

"जा, तुझे एक वचन देता हूँ। जब तू समझदार हो जायेगा तभी तेरी शादी करेंगे। मैं माँ और पिताजी को समझा दूँगा। किन्तु सगाई में विघ्न मत डालना। उस दिन चेहर चाची नहीं ताना मार रही थीं?"

"केहू ताना मारे तो वहू काम करी जौन इच्छा न होय? अपने हीरूभाई क नाहीं सबही उघाड़पगा कहत है, वे कबौ विलायती जूता पहिनिन?"

"अरे लेकिन तेरी यह उम्र सोचने की? शादी के बारे में?"

"हम मना करित है। विचार कहाँ करित है?"

"तर्क में तुझसे कोई नहीं जीतेगा। कृपा करके तू जा ऊपर बैठ के पढ़। छाया भी आ गयी है।"

"तू जौन आजकाल दाँत दबाय कै बोलत हौ, हमैं बिलकुल अच्छा नाहीं लागत।" लवजी ने देवू के शुद्ध उच्चारणों की इस प्रकार आलोचना की और फिर वहाँ कुँए के पास चला गया। लेटकर पढ़ने लगा।

विट्ठल के चले जाने के बाद कंकू का उल्लास आसमान को स्पर्श कर रहा था। उसने देखा लवजी पढ़ रहा था। यह लड़का रात-दिन पुस्तक में ही मुँह घुसेड़ रहता है। भला इसे क्या स्वाद मिलता होगा?

ईंधन फाड़कर देवू उसके पास आ बैठा।

लवजी ने उसका सारा आनन्द छीन लिया था। अभी यदि वह माँ को बताता है तो माँ सिर पीट लेगी।

उसने सगाई की खुशी के बजाय परेशान करने वाला एक प्रश्न पूछा-

"मगन अमथा कै लड़की कौने दर्जा मां पढ़त है?"

"पढ़त है कि नाहीं यही कै जान है? और पढ़ै लायक तौ अब होये।" नरसंग ने कहा।

"और न पढ़त होय तबौ का भवा?" कंकू ने सहजता से पूछा-"ऊ का कहाँ बजार खोल के बैठे क है?"

देवू माँ के जवाब से संतुष्ट न था। उसने दूर अटारी पर लेटे, पाँव पर पाँव रखे पढ़ रहे लवजी की ओर देखा।

"माँ, वे लोग रुपया देय आवे तब उनका खराब लागै इ तिनकै उनसे कही कि पढ़ावें।"

"भला अस बोला जात है, पागल!" कंकू ने इतने स्नेह से कहा कि देवू निरुत्तर हो गया।

"ऊ तो हम बाद मां कौनो टींबा जाय के कह आउब। तुम चिन्ता न करो। हमें जान पड़त है कि बात सुन के लवा तुमसे पूछत रहा होये।"

देवू हर्षित हो गया। कुएँ की ओर गया। कंकू और नरसंग कुएँ के चौतरे पर बैठकर हाथ धोने लगे। देवू उमंग के साथ कूदता हुआ छपरी पर गया और लवजी के हाथ से पुस्तक छीन ली। निगाह मिलते ही दोनों के चेहरे खिल उठे। देवू गाने लगा—

"भरी जवानी माँ पहुँचे लवजी भैया,
दादा ने हँस के बुलाया।"

आगे की पंक्ति याद न आने से उसने माँ से पूछा। कंकू ने पहले तो ऐसे ही बताया फिर खुद भी खुश होकर गाने लगी—

"काहे रे बेटा तेरा दिल दुखे
काहे रे आँखों में आँसू आये ?
नाही रे दादा मेरा दिल दुखे
नहीं रे आँखो में आँसू आये।
गोरी-गोरी कन्या न देखना ओ दादा
गोरी को रोज नजर लग जायेगी,
काली सी कन्या भी न देखना ओ दादा
काली तो कुटुम्ब लजायेगी,
ऊँची कन्या भी न देखना ओ दादा
ऊँची रोज तोरण तोड़ डालेगी।"

लवजी हँसते हँसते उठ बैठा—"अतनी तो कतनी ऊँची होये कि तोरण तोड़ डाले, हे देव !"

बेटे के प्रश्न से कंकू और नरसग दोनो को हँसी आ गयी। देवू निश्चिंत हो गया। लवजी अब मना नहीं करेगा। जब कि लवजी ने अपना निर्णय बदला नहीं था। वह तो अपने आपको विवेकानंद समझ रहा था। लवजी पढ़ने में व्यस्त हो गया। अचानक उसे पुस्तक में मगन अमथा का बड़ा सा आँगन दिखाई देने लगा। आँगन बृहद् से बृहत्तर होता गया।

और सोमवार आ पहुँचा। मगन अमथा ने नरसंग के आँगन में पाँव रखते ही सुनहरी चैनवाली अपनी घड़ी में देखा — सवा सात बजे थे। अमृत मुहूर्त में आ पहुँचने का संतोष हुआ। अब डेढ़ घंटा बातों में गुजारना था। नौ बजे काल मुहूर्त खत्म होगा और शुभ शुरू होगा। इसमें जल्दबाजी न हो यह उन्होंने देवू से कह रखा था।

नरसग गटा पुरोहित को बुलाने के लिए देवू को भेज रहे थे कि मगन अमथा ने नरसंग से मुहूर्त वाली बात की। नरसंग ने कहा कि गटा को पहले कहना पड़ेगा नहीं तो कहीं चला जायेगा।

"वह तो ठीक है किन्तु रमणलाल आयें उसके बाद ही...।"

"माँ, रमणजी आवे वाले हैं" लवजी की गंभीरता अचानक लुप्त हो गयी। "सुनी की नाहीं माँ ?" वह अन्दर दौड़ता चला गया। माँ गुड़ की भेली तोड़ रही थी। वह थोड़ा सा गुड़ लेकर बाहर आ गया।

देवू की इच्छा थी कि रमणजी आ जायें तब गटा पुरोहित को बुलाने जाये। वह जानता था कि पुरोहित आते ही जल्दीबाजी करने लगेंगे।

नरसंग घर के भीतर गया यह देखकर देवू भी उसके पीछे चला गया। घेमर का घर छोड़कर वह सारे मुहल्ले में आमंत्रण दे आया था। उसने, जैसा माँ ने कहा था, वैसा ही किया था। उसी के ऊपर छोड़ा गया होता तो वह घेमर के घर भी कह आया होता। "गुड़ बाँटेगा कौन ?" उसने पूछा। थाली में गुड़ रखते हुए नरसंग ने कहा-"काहे घेमरवां नाहीं है का ?"

दूसरे ही पल नरसंग को चेहर-कंकू वाला झगड़ा याद आया। "अरे ऊके कहिस है कि नाहीं ?"

"कहै और ऊ न आवे तो ?" कंकू ने जवाब दिया।

"न आवे तौ ऊके मरजी, पर बाद माँ कुछू आपन गलती तौ न निकारे ?" कंकू की संमति लेकर नरसंग ने देवू को आमंत्रण देने के लिए घेमर के घर भी भेजा।

देवू गया। घेमर ओसारे में बैठा था। उसकी एक आँख अन्दर की ओर थी। उसके चेहरे पर क्रोध है या दुख स्पष्ट नहीं हो रहा था।

हीरा के सामने शाम की पकी हुई खिचड़ी से भरा तसला रखा था। पास में ही दूध से भरी हुई बटुली रखी थी। चेहर ने इन दिनों बहू को परोसना बंद कर दिया था। उसका कहना था कि घर उसका है, बहू को जो खाना हो खाये, पीना हो पिए। लड़का बहू को सिर पर चढ़ायेगा तो क्या होगा ? वह कहावत नहीं है गधे के ऊपर हौदा ! यह कौन से गोत्र की है यह भी पता लगा लिया होता तो यह दिन देखना न पड़ता। पर मैं तो कहती हूँ कि भैया यह सब तुम्हारा है। दूध में नहाओ और घी में खाओ...।

देवू आ न गया होता तो घेमर हीरा से कहने वाला था "खाय क होय तौ खाय नाहीं तो चली जाय अपने मैके।"

"का हो घेमर भाई, माथे पर हाथ रख के बैठे हौ ? चलो गुड़ खाय।" देवू की आवाज में कुछ आत्मीयता और नरसंग के द्वारा प्रेरित हिंमत थी।

घेमर बिना कुछ बोले देवू की ओर देखता रहा। देवू को लगा कि यह अभी रो पड़ेगा। उसने फिर पूछा-"फताकाका घरे नाहीं हैं का ?"

"वे तो न अइहैं।" चेहर ने चूल्हे के पास से जवाब दिया।

"तू भूँके बिना बैठ रह न चुपचाप।" घेमर उठ खड़ा हुआ। "सब का कह आयें अब बाद मां हमका बलावे आये हैं। यही के नाम दोस्ती है।" घेमर

की आवाज मंद थी अतः वह इलथ है उसका आभास न हुआ। "जाव हम काका क बलाय के आइत है।"

"हीरा भाभी, तुम हूँ ..''

घेमर ने देवू को रोका, "नाहीं, कहूँ नाहीं जाय क है। चौखट के बाहर पाँव रख बौ तौ चमड़ी उधेड डारब।"

"अस मत बोलो हाँ घेमर भाई, तुम तौ भजन मंडली के सदस्य हो।"

"ईका बाबा न बनाई तौ हमार नाम हीरा नाहीं।"

"का करबी रे तू ? जहर देबी ? कुँआँ मां ढकेलवी ? वह तोहरे साथे आयी।"

वह बड़बड़ाता हुआ खेत पर चला गया, पिता को बुलाने। देवू सोचता हुआ घर आ गया। आखिर क्या करें कि इनके बीच का मनमुटाव मिटे।

वालजी को लेकर हेती भी आ पहुँची। रमणलाल नहीं आ सके थे। कोई जरूरी काम आ पड़ा था।

टीका चढ़ा। गुड़ बाँटा गया। सब कुछ शांति से पूर्ण हुआ।

घेमर की बहुत इच्छा थी कि वह मेहमानों को अपने घर चाय पीने ले जाये। किन्तु चाय की पत्ती घर में होगी कि नही इस बारे में उसे कुछ मालूम न था। देवू ने एक पुड़िया में थोड़ी सी चाय उसे दे दी।

बाहर मेहमान बैठे थे उस समय भी सास–पतोहू की बकबक चल रही थी। लोगों में बाहर मगा मनोर और उसकी लड़की हीरा की निन्दा हुई। हीरा सुन रही थी। मगन अमथा ने कहा पति परमेश्वर होता है। उमा ने कहा 'हमका तौ ससुर दूनौ तरफ से दुख। लोग कहत है कि लड़का बहू क बुलावत नाहीं, मुला बहू खुद जब हाथ न धरै देय–"

अन्दर से खौलते हुए तेल की तरह हीरा की आवाज आयी। "पूरी रात तो ऊपर से उतरतें नाहीं..."

बाहर जैसे मुर्दनी छा गयी। पतीली से लौटे में चाय छान रहे घेमर का हाथ काँप उठा। उसके पास पीतल की रकाबी पकड़कर बैठा देवू खड़ा होकर अपने घर चला गया।

थोड़ी देर बाद नरसंग मेहमानों को बुलाने आये। मगन अमथा ने घर परिवार की बात निकाली। नरसंग ने समर्थन नहीं किया। "सब बराबर होत हैं। आदमी माने आदमी। बुढऊ एक कहानी कहत रहें—एक राजा के एक राजकुमार देव रहा दूसर दानव जैसे।"

घेमर स्वस्थ हो चुका था। उसने समर्थन किया। मगन अमथा अपने विचार पर अडिग रहे।

उठते समय मगन ने घेमर को एक तरफ बुलाकर समझाया "जरा मन पर काबू रखो। अभी पन्द्रा दिन पहले एक औरत हमरे गाँव माँ कुआ मां कूदी है। बात माँ कौनो दम नाहीं रहा, यही बोलै न बोले वाली बात। समझयो ? ई तुम्हरे

घर से अब हीं जौन ई समझो ऊका काल बोला काल । औरत हद तक गुस्सा होय जाय तो समझो कालका बन जात है हाँ ।"

घेमर ने कहा मैं कल से घर में पाँव ही नहीं रखूँगा फिर मार-पीट की बात आएगी ही कैसे ? मगन अमथा चले गये ।

लवजी को आज नया अनुभव हुआ था । शिक्षा को सभी महत्त्व देते हैं । यह शिक्षा का ही परिणाम है कि मगन अमथा जैसे लोग उसके यहाँ सगाई करने आये । वह स्वयं, पिथू भगत का घर, हेती की चिन्ता और रमणलाल की सिफारिश । यह चार चीजें मिली न होतीं तो शायद ही यह सगाई होती । अर्थात् इस घटना में उसका महत्त्व सिर्फ एक चतुर्थांश है ? बस ?

विवेकानन्द के गुरु रामकृष्ण परमहंस तो कोई खूबसूरत न थे । फिर क्या थे ? उसे रामकृष्ण परमहंस का एक वाक्य याद आया—"हाथी को नहलाने से क्या होता है ? फिर से वह तो सिर पर धूल मिट्टी डाल लेगा और ज्यों का त्यों हो जाएगा । किन्तु हाथीखाने में बन्द करने से पहले ही यदि उसे कोई साफ करके नहलाये तो वह साफ ही रहेगा ।"

7

हीरा ससुराल में आने के बाद प्रारंभ के पन्द्रह दिनों में जितनी स्वस्थ और प्रसन्नचित्त हो गयी थी उसके बाद के एक सप्ताह में उतनी ही सूखकर काँटा हो गयी थी । चेहर के लिए भी वह अब सिर का बोझ बन गयी थी । उसे अब बदरी भेजे भी किस तरह ? दो दिन बाद उसे आये पच्चीस दिन हो जायेंगे । उसका बाप भी मुँहझौंसा बेगैरत निकला । लिवाने भी नहीं आता । लीली का आदमी भी अब छोटा नहीं रहा । वह आया होता तो उसके साथ ही भेज देती ।

कंकू और चेहर के बीच अभी बोलचाल न थी । बहू से जो भी कहना होता, चेहर जतन के माध्यम से कहलवाती । किन्तु हीरा पर अब जतन का भी कोई असर नहीं था । जब तक बदरी से कोई बुलौवा नहीं आता वह यहाँ से जाने वाली नहीं है । कहाँ यह कोई पराया घर है ? किन्तु पिछले कुछ दिनों से उसे यहाँ के प्रत्येक व्यक्ति में, प्रत्येक वस्तु में एक परायापन लगता । इतना परायापन उसे कहीं भी, कभी भी नहीं लगा । अब तो घेमर भी उसके लिए अजनबी हो गया था । इससे तो अच्छा था वह मार पीट ही करता रहता । उसके पास तो रहता था । अब तो वह दिनों दिन दूर होता जा रहा है । उन मेहमानों की उपस्थिति में उससे बहुत बड़ी भूल हो गयी । उसके बाद तो वह घर पर आता ही नहीं । लीली खाना खेत पर ही दे आती है ।

हेती भी आयी और तीसरे दिन ही चली गयी । एक बार भी मिलने नहीं आयी । कैसी हो भाभी पूछ लेती तो ? किससे बातचीत करे ? आदमी उसस

में पड़ा हो किन्तु उसे पसीना भी न आ रहा हो ऐसी स्थिति हीरा की हो रही थी।

घेमर स्वयं को काम में व्यस्त रखता। भले उसमें मन लगे या नहीं उसमें जुटा रहता। दोपहर का समय तो नीम के नीचे लेटे-लेटे निमकौर गिनता रहता। घर की ओर आते जाते काला, चेला या उमा थोड़ी देर उसके पास रुकते। उमा को अफसोस होता। वह घेमर को सांत्वना देता: कोई दो शब्द बोल दे तो आखिर क्या बिगड़ गया? घेमर चुपचाप सुनता रहता। फिर अन्त में कहता लेकिन मुझे तो उसने दो कोड़ी का बना दिया। चारों ओर फजीहत करवा दी। उमा कहता कि तुम्हारे खिलाफ गाँव में कोई कुछ नहीं बोलता। सब उसी को कोसते हैं कि मगा मनोर की लड़की कितनी कुलच्छनी निकली।

कुलच्छनी? घेमर को यह भी स्वीकार न था। हीरा गाँव भर में, गाँव के बाहर भी निन्दित हो यह भी उसे अच्छा नहीं लगता था। अन्ततः तो हीरा के साथ वह भी, उसका घर भी बदनाम होता था।

कल माना चाचा कह रहे थे – तुम में दम हो तो दे दे तलाक। तेरी दूसरी शादी करवा देने वाले हम अभी बैठे हैं। पाँच ही दिन में सब निपटा न दें तो कहना।

घेमर ने कोई जवाब नहीं दिया था। तलाक? नहीं नहीं। ऐसा कैसे हो सकता है? हीरा कोई उसकी दुश्मन तो नहीं है। माना चाचा तो कहें। उनका तो काम ही इस प्रकार दूसरों का काम बिगाड़ना है। उन्हें तो अपना स्वार्थ देखना है। नहीं नहीं, वह दूसरों के घर चली जायेगी? उसके गोरे-गोरे भरे हुए हाथ, गाल से कोमल उसकी छाती...... मंदिर के स्तंभ जैसे उसके पाँव..... ।

इन सबसे एक सरीखे बंधन में हीरा जब उसे बाँहों में लेकर सीने से चांपती तो घेमर खो जाता, सलामत हो जाता। तेज गति से घूमते लट्टू की स्थिर दिखाई देने की रीति से वह सो जाता, चौमासे में भरे तालाब में हाथपैर हिलाये बिना पल दो पल पड़े रहने में इतनी निश्चिंतता न थी – उस सुख की स्मृति धीरे-धीरे विलीन हो जाती और "सारी रात ऊपर से उतरते नाहीं......" काँटे की तरह उसके मन में यह बात चुभती रहती।

बस? सब खत्म? वह मायके चली जायेगी तो फिर कभी नहीं आयेगी? वह झक्की तो है ही, बाप की तरह। न भी आये।

खाना देने आयी लीली ने बताया कि आज सुबह से ही भाभी रो रही है। उससे भी कोई बात नहीं करतीं। घेमर को आघात पहुँचा। मेरे घर उसे इतनी तकलीफ है। उसने लीली से एक बात पूछने के लिए कहा। वह कहती हो तो वह स्वयं मायके छोड़ आने के लिए तैयार है, दुनिया की लाजशर्म त्याग कर। किन्तु इस तरह रोते रहने से तो अच्छाभला आदमी भी पागल हो जाता है। और दुःख सहे जा सकते हैं किन्तु मन का दुःख? उसे तो बाँट लेना चाहिए। पिथू भगत नहीं कहा करते थे?

वह हीरा को छोड़ने के लिए खुद बदरी जायेगा, यह निर्णय लेने के बाद उसका मन पुनः दुविधा में उलझ गया। लोग क्या कहेंगे। माँ तो छः महीने तक ताने मारेगी......कोई दूसरा नहीं जा सकता?

उसे देवू की याद आयी। कंकू काकी से कहे तो देवू को भेज देगी। बदरी पहुँचाकर आ जाये। यूँ तो वह बड़ी निडर है, किन्तु कोई मर्द जात उसके साथ हो तो ठीक है। ठीक लगता है। उसके मायके वाले ऐसा तो नहीं कहेंगे कि देखो कैसे दूध की मक्खी की तरह घर से भेज दिया।

कंकू से कहने में उसे संकोच हो रहा था। देवू को एक ओर ले जाकर उसने उससे बात की। देवू ने कोई आनाकानी नहीं की। माँ-बाप से पूछने की आवश्यकता भी नहीं महसूस की। उस रात भयानक तूफ़ान के साथ वर्षा हुई, पूर्व की ओर से। देवू कुछ कहने ही जा रहा था कि नरसंग ने कहा—"उठ भाई चल, गाँव मां कहू के घर के टिन उड़ गवा जानो।"

देवू को आश्चर्य हुआ। पिता को कैसे पता चला? उसने तो कोई आवाज नहीं सुनी है। आँधी में उत्पन्न विभिन्न आवाजों को पहचानना संभव है? हाँ, संभव है यदि उस समय अपना मन शांत हो। अपने भीतर भी आँधी न चल रही हो तो।

जेठा के घर की टिन गिर गयी थी। किसी को चोट नहीं आयी थी। जेठा एक ही वाक्य बारबार बोले जा रहा था। "अच्छा भवा केहू के घर पर नाहीं गिरा। खपरैल फूट जात। आदमी के लागत ऊ ऊपर से।"

मुहल्ले के नुक्कड़ पर नरसंग और देवू को धमला मिल गया। बात करते-करते वह भी उनके साथ उनके घर जा पहुँचा। जेठा की टिन के बारे में बात करते-करते अचानक घेमर की पत्नी के बारे में उसने कंकू से कहा—'भौजी, कौनो रस्ता निकारो। ऊ बेचारी बहुत रोवत है। हमार मन फाट जात है।"

कंकू का जवाब तैयार था—"आव ऊका बदरी छोड़ आऊ।"

"मुला हमरे साथे फता अपनी पतोहू क भेजे भला? ऊ तो कहे कि तू तो कहूँ बेंच आवे।" धमला की बात पर लवजी को हँसी आ गयी। मगा मनोर की बेशर्मी के बारे में नरसंग ने कुछ कहा। फिर देवू बोला—

"माँ, हम काल हीरा भौजी क बदरी की सींव तक छोड़ आयी?"

"तुहार बाप कहत होंये तो जाव छोड़ आऊ।" कंकू ने कहा। फिर थोड़ी देर बाद स्वयं बोली "जा भाई जा छोड़ आव। बेचारी घर के कोने मां बन्द रहत है। ई ऊमर मां ई दुख? ई चेहर कब सुधरे?"

"तुहरे कहे से न सुधरे। सब अपने-अपने स्वार्थ से सुधरत हैं।' नरसंग ने धीरे से कहा।

"सही बात है मैया, सही बात है। ले बैठो, हम जाइत है।" धमा उठ खड़ा हुआ। उसे अपना कोई स्वार्थ याद आ गया था।

"अब खाना खाय कै जाव ।" कंकू ने कहा ।

"फिर घरे ऊ ।" इस शिकायत में वेली के प्रति उसका प्यार झलक रहा था ।

"घरे न बतायेत की खायेव है । फिर खाय लिहौ ।" लवजी ने गंभीरता से सलाह दी । लवजी का कंधा थपथपाकर धमला चला गया । उसका लड़का बोलना सीखेगा कि नहीं इस पर कंकू ने अपनी शंका और चिन्ता दोनों जाहिर कीं । नरसंग देवू को घर पर रहने के लिए कहकर हाथ में लाठी लेकर खेत पर जाने के लिए तैयार था । "भाई, तू जल्दी उठकर हीरा बहू क बदरी के चौक तक छोड़ आयो । जल्दी वापस आय जायो तो घर की तईं ईंधन ले आयो ।" नरसंग ने कहा । देवू ने स्वीकृति में सिर हिलाया ।

घेमर के घर के बाहर आँगन में ठहरकर नरसंग ने कहा – "अरे कौन है ? बहू क देवू सवेरे, भेज आये, सुना ? चेहर घूँघट निकालकर बाहर आयी । नरसंग चलता बना । चेहर को बोलने का मौका नहीं मिला । वैसे भी वह नरसंग की आवाज सुनकर काँप उठी थी ।

घेमर महेरी खाकर अंदर के दरवाजे के पास टेका लगाये बैठा था । माँ अंदर आयी । घेमर ने ऊपर देखा । माँ के चेहरे पर कौन सा भाव है उसकी समझ में नहीं आया । अच्छा हुआ । वह खुद जो कहना चाहता था. इतने दिनों के बाद घर आकर उसे कहकर नरसंग काका ने उसका बोझ हल्का कर दिया था । अब वह इन्तजार करने लगा । माँ कुछ बोले तो ठीक है । सास बहू के बीच फिर से संबंध जुड़ जाए तो अच्छा है । एकांत मिलने पर किसी बहाने वह स्वयं भी हीरा से बातचीत करना चाहता है । उस दिन वह अनजाने में सबके बीच जो बोल गयी थी उस बारे में वह अब कोई बात नहीं करना चाहता । किन्तु कोई भी बात हो सकती ।

घेमर बैठा रहा । माँ चौका-बरतन करके रसोई बन्द करके चौखट पर आकर बैठ गयी । बैठी–बैठी सुँघनी सूँघने लगी बिना बोलेचाले । बात शुरू करने के लिए घेमर को कोई बहाना नहीं मिल रहा था । उसने कोठरी की ओर झाँका । हीरा दूसरी ओर मुँह किये बैठी थी । हमेशा की तरह आज उसकी गर्दन तनी नहीं थी– झुकी हुई थीं ।

"तौ हम सिवाने पर जाइत है माँ ।" घेमर उठ खड़ा हुआ । उसे लगा हीरा की चूड़ियाँ खनकी हैं । किन्तु उसने मुँह घुमाकर नहीं देखा । आँगन में आ गया । इच्छा हुई कि देवू से मिल लूँ । किन्तु नरसंग काका के आँगन में उजाले का चिह्न भी नहीं दिखाई दिया । वह गाँव में चला गया । कोई साथी मिले तो दो घड़ी बात करने के लिए । मन के गहरे से इच्छा भी थी कि रात को वापस आऊँ और......और.,. और... पूछूँ कि..... ।"

वह गली में जैसे गया था वैसे ही वापस आ गया । परिंदा भी पर मार रहा था । घर आकर उसने पानी पिया । वह भी ओसारे में ही सोती हुई सी

लगी। लीली उसके पास ही सो गयी थी। उसके लिए अलग खटोला न था। बीड़ी सुलगाने के बहाने उसने माचिस जलाई। हाँ, ऐसा ही था। हीरा का एक हाथ लीली से लिपटा हुआ था। घेमर को अच्छा लगा। बुझी हुई तीली लेकर वह बाहर आया। खेत की राह पकड़ी।

थोड़ी सी वर्षा हुई थी किन्तु उसे लग रहा था कि उमस है। हवा का नामोनिशान नहीं है। जा आदमी बरसात की पहली फुहार से ही पगला उठता था उसे आज मिट्टी की सोंधी-सोंधी गंध भो नहीं महसूस हो रही थी।

उसे नींद नहीं आयी। फता के खर्राटे सुनाई दे रहे थे। आधी रात को, आकाश के स्वच्छ हो जाने से वह रात भर तारों को देखता रहा।

पूर्व दिशा में लालिमा फैलने लगी थी। देवू की आवाज सुनाई दी–"घेमर भैया. ई बकस तौ बहुत भारी है, चलौ ढेखाडिया तक हमै छोड़ौ···" घेमर उठ बैठा। यह स्वप्न नहीं था। यकीनन देवू की ही आवाज़ थी। जूता पहने बिना ही, और पगड़ी भी हाथ में ही लेकर चकरोट तक गया।

"अरे, तेरा भला होय, अतनी बड़ी पेटी उठाइस ? बहुत मजबूत हौ तू तो"

"तौ का होय ? तुहार माई उठी नाहीं। भौजी बोली चलौ पेटी लै लेव। गाँव से बाहर निकरे पर हम बक्स लै लीन।"

"ई कम मजबूत है का।" देवू के सिर पर से डेढ़ मन जितने वज़न की पेटी उतारते हुए घेमर बोला। "भूखे मरत है ई तौ का खाक पेटी उठाये ? हम झूठ कहित है देवू ?"

"हम तौ अस पाँच पेटी उठाय लेई। मुला तुहार महतारी अतनौ नाहीं कहिन कि बहू फिर आयौ। सबका आसीरबाद कहयौ। जागत रहीं तबौ आँखी बन्द किहे पड़ी रहीं।"

"भाड़ माँ जाय पड़ी रही तौ। सारा दिन पड़ी रहिहैं। तू कुछ बुरा माने बिना जा और आराम कर।"

"का आराम करब ? लोग का कहि हैं ? हम नौ न नैहर के भइन न ससुराल के।"

"अस बात होय तौ चल वापस। केहू तुहरे तरफ ऊँगली करे तो कहेव। ई तौ हम बोलित नाहीं तब तक। तुहें मालुम नाहीं। ई तो तेरे नाम से ऊ दिन हमार माई कंकूकाकी के साथे झगड़ा किहिन नाहीं तौ तू समझत का है कि हमार माई कुतिया की तरह भूँकत रहें और हम बोली ? पूछ ले ई देवू से हम कबौ अपनी माँ के पच्छ लीन होय तो। बोल देवू सही बात बताव।···"

"कबौ-कबौ महतारी के पक्ष लेय के पड़े हाँ घेमर भैया। माँ तो माँ होत है। सही बात है कि नाहीं भौजी ?"

"हाँ।" हीरा ने अनिच्छा से कहा।

'माँ हो कि बाप, हम तौ सही बात जानित है। बस दो टूक बात। बिना कौनो गल्ती के माँ कुछ बोलें तौह साफ-साफ कह देब, केहू के लिहाज न करब।"

"पर भाभी वापस औबे न करे तो?" देवू ने मजाक किया। किन्तु घेमर गंभीर हो गया था। निर्जीव-सी आवाज में बोला—

"काहे, ई हमार जिन्दगी खराब करा चहत हैं का?"

हीरा पर इस वाक्य का अनपेक्षित प्रभाव पड़ा। पश्चात्ताप होने लगा।

"तुहार किस्मत तौ हम खराब कै दीन। वह दिन का बोल दीन। तुमहूँ क दुई टका के बनावा हमहूँ "

"कौनो बात नाहीं, बोला बैठ नाहीं रहत। समझी?"

"पर···"

"अब छोड़ न ऊ बात पगली। ई देवू है नाहीं तौ तुमका साफ कह देइत। तुम बोलीव ईमा हमार का बिगड़गवा? हँसी माँ कह दिहौ। सारी रात तौ का चौबीस घटा कै बात कहे होती तबो के तुमका जात बाहर करे वाला है? सही बात की नाहीं देवू?"

"ऐसी बातें तुम्हे मेरे सामने नहीं करनी चाहिए।" देवू ने गंभीरतापूर्वक कहा।

"एल्लो। काल तुम्हरो विवाह होये तो का करबो?"

"यँ तौ सारी रात किताब पढ़ि हैं।" –हीरा की आवाज में स्फूर्ति आ गयी थी।

पेटी को उठाकर हीरा के सिर पर रखते समय घेमर ने, देवू के देखते हुए हीरा की कमर में चुटकी भर ली।

"देखो देवूभाई, इनका के कहे कि अच्छे हैं?"

"तुम अच्छी हौ, बस बहुत है। देवू भैया, इनका इनके घर तक छोड़ आयौ।" घेमर खड़ा रहा। हीरा और देवू चल पड़े। हीरा प्रसन्न थी।

थोड़ी दूर चलने के बाद देवू ने कहा। "एक बात कहूँ भाभी? तुमने घेमर भैया के लिए जो बात कही थी वह मुझे भी बुरी लगी थी। मैं तो तुमसे बोलता भी नहीं। किन्तु उन्होंने ही कल मुझसे कहा कि तुम्हें छोड़ आऊँ। जिसे तुमने दुखी किया उसे ही तुमरी चिन्ता हुई।"

हीरा कुछ बोली नहीं तो देवू ने पीछे मुड़कर देखा। उसकी आँखें गीली हो गयी थीं। देवू आगे कुछ न बोला।

बदरी के नजदीक पहुँचकर हीरा ने बक्स अपने सिर से उतारकर नीचे रख दिया। फिर जैसे अपने छोटे भाई को दुलार कर रही हो, अपना हाथ देवू के कंधे पर रख दिया। दूसरे हाथ से देवू का चेहरा सहलाने लगी। देवू संकोच से मौन खड़ा रहा। हीरा ने भावावेश में उसे सीने से लगा लिया और लगातार उसके गालों को चूमने लगी। देवू के गाल हीरा के आँसुओं से भीग गये। वह

कुछ बोलना चाहती थी किन्तु रो पड़ी । उसने फिर देवू को अपनी ओर खींचा । उसकी भरी हुई छाती में देवू का चेहरा ढक गया ।

"भाभी, तुम इस तरह बीच रास्ते में रोओगी ? अब तो तुम्हारा गाँव आ गया । कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?"

हीरा ने कहा कि सभी को मालूम है, मेरे बारे में ।

"लेकिन उससे क्या ? घेमर भैया का दिल तो तुमने देख ही लिया ?"

"ऊ सब तुहरे कारन भैया । भगवान तुमका सौ बरस के करे ।" मायका नजदीक आ जाने की वजह से उसने अपना आँचल समेटना शुरू कर दिया था ।

हीरा ने देवू को वहीं से वापस कर देना चाहा । अब तो घर आ गयी है । अकेली चली जायेगी । किन्तु देवू ने कहा—

"मै यहाँ तक आ गया हूँ अब वापस जाऊँगा तो अच्छा नहीं दिखेगा । तुम्हे तुम्हारे घर तक छोड़ूँगा । पानी पीकर फिर वापस जाऊँगा ।"

देवू ने बक्स अपने सिर पर ले लिया । और आगे-आगे चल पड़ा ।

रास्ते में जीवन मिला । वह अपनी ससुराल मे आया था, खेतों में खाद डलवाने । देवू घेमर की पत्नी को छोड़ने आया है यह जानकर जीवन ने उसे शाबाशी दी । घेमर-हीरा के संबंध सुधर गये हैं यह जानकर उसे हर्ष हुआ ।

8

देवू का हीरूभाई के साथ परिचय 1953–54 के वर्ष में आत्मीयतापूर्ण संबंध में बदल गया । यह संबंध नाते-रिश्तेदारों के संबंध से कुछ ऊपर और गुरु-शिष्य के संबंध से कुछ नीचे था । स्वयं हीरूभाई के लिए देवू एक कमजोरी बन गया था । बिना मिले एक-दो महीने भी नहीं गुजरते । ऐसा हुआ हो तो लवजी बिना कहे न रहेता—"देवू, हीरूभाई इधर काफी समय से नहीं आये । तू ही बदरी जाकर उनसे मिल आ ।"

राजनीति और देश में घट रही ताजा घटनाओं की चर्चा तो स्कूल में भी पखवाड़े में एक बार होती ही रहती थी । किन्तु देवू को लगता जैसे ये अखबार में छपे समाचार हों । हीरूभाई के पास घटना, उसे जन्म देने वाली परिस्थिति की सूचना और समझ थी । कांग्रेस के ज्ञानी कार्यकर्ताओं का अध्ययन-शिविर चलता रहता था और उसी से हीरूभाई को जानकारियाँ मिलती रहतीं । स्वयं कांग्रेस के आंतरिक मसले और बाह्य नीतियों के बीच का संबंध समझ पाने में हीरूभाई रमणलाल से आगे थे । वे दोनों बात कर रहे होते तो देवू देखता रहता कि कौन किससे पूछता है । देवू को हीरूभाई की एक बात बहुत पसन्द थी वह यह कि हीरूभाई प्रश्नों का उत्तर बड़े संवेदनशील तरीके से देते थे । गत अगस्त की आठवीं तारीख को शेख अब्दुल्ला को बर्खास्त करके जम्मू काश्मीर के मुख्य मंत्री के पद पर बख्शी गुलाम

मुहम्मद को आसीन किया गया। इस बारे में हीरूभाई कितने व्याकुल हो गये थे। उससे भी अधिक तो वे पहली अक्टूबर की घटना के बाद परेशान हुए थे। भाषा के अनुसार प्रान्तीय रचना का समर्थन गाँधीजी ने किया था और यह बात बहुत अच्छी तरह हीरूभाई के मस्तिष्क में बैठ गयी थी किन्तु जिस तरह अलग से आंध्र प्रदेश की रचना हुई थी वह तरीका उन्हें इतना खल गया कि वे दस मिनट तक साध्य और साधन के बारे में बोलते रहे थे। अगले दिसम्बर के श्रीरामुलु के उपवास, मृत्यु, तूफान इस सब में प्रजा और सरकार ने जो रूख अपनाया था वह हीरूभाई की समझ में नहीं आया था। भाषावार प्रांतरचना होने से प्रशासन में सुविधा रहेगी, और प्रजा की समस्याओं को सुलझाने में मदद मिलेगी। किन्तु हुआ इसका उल्टा ही।

इस वर्ष देवू के अध्ययन में कमी आयी थी। जाड़ों में एक लाख ईंटों का भट्ठा लगवाया था। गत वर्ष, गाँव के दक्षिण में, नरसंग के चक से कुछ बड़े किन्तु चौड़े खड्डे के बीच की जमीन से घर बनवाने के लिए जरूरी टुकड़ा मिलता है यह जानते ही कंकू ने तय किया था कि एक टुकड़ा तो रखेंगे ही। पटवारी से मिलने के लिए नरसंग सारंग गये। दोनों लड़के भी स्कूल के लिए साथ ही निकले थे। देवू के मन में था कि एक घर बाहर बना दें और एक घर गाँव के अन्दर रहे? दोनों भाइयों के घर इतने दूर-दूर? दो टुकड़े रख लिये होते तो?

लवजी का ध्यान उनकी बातों में न था। वह चलते-चलते पढ़ने का अभ्यस्त हो गया था। सुन्दरम् की कहानियाँ पढ़ रहा था।

"क्यों लवा, मै गलत कहता हूँ?" देवू ने उससे पूछा।

"सही गलत जौन कहै क होय कह, हमें पढ़े दे।"

"अरे बड़े पढ़े वाला आवा है।" देवू ने उसके पास से पुस्तक छीन ली। लवजी ने सिफारिश की नजरों से नरसंग की ओर देखा। उत्तर में मिली मुस्कराहट।

"घर कै बात चलत है और तू हमरे पीछे पीछे किताब पर मुँह टिगैयाए धूल की तरह उड़े चले आवत हौ?"

"घर की बात मां कबौ नाहीं, आज काहे हमैं पूछत हौ?"

"बड़ा होकर तू कहाँ रहेगा?" देवू ने पूछा।

"पहले बड़ा तौ होय दे।" लवजी ने देवू के हाथ से पुस्तक छीन ली और पृष्ठ ढूँढने लगा।

जमीन खरीद ली गयी। नींव डार दी गयी। दीवाली के बाद ईंटें पकाने की बात तय कर ली गयी।

सब ठीक होता गया। देवू और लवजी की परीक्षा चल रही थी। लवजी को चिन्ता थी कि देवू का दसवां नम्बर भी नहीं आयेगा। वह देख रहा था कि देवू सबेरे तीन घंटे काम करके ही घर आता है। घी-गुड़ और रोटी और कभी-कभार तो दूध-रोटी खा लेता और तैयार हो जाता। बोझ उठाते-उठाते कभी-कभी तो वह

इतनी शक्ति लगाता कि नरसंग को डाँटना पड़ता था कि "पेट मां बल पड़ जाये भैया।" लवजी अपने हाथ पाँव में खुजली महसूस कर रहा था किन्तु वह मजबूर था। इस तरह के काम करने की शक्ति और योग्यता उसमें आ गयी है यह स्वीकार करने के लिए माँ, पिता या भाई कोई तैयार न था। कभी-कमार बलगाड़ी का जुआ पकड़ने का काम उसे मिलता। उसे लगता – इससे तो अच्छा है कि पढ़ें। ये लोग मुझे सिर्फ बोझ समझते हैं। आदमी नहीं।

लवजी देवू की पिंडलियों की प्रशंसा करता। कहता "तू पंडित बनने के लिए नहीं पहलवान बनने के लिए जन्मा है।" देवू हँस कर कहता – 'मै तो नेता बनूँगा।'

लवजी सोचता – देवू यदि मेरे जितना पढ़े तो कितना होशियार हो जाये। इस साल पता चलेगा कि बिना पढ़े वह कौन सा नम्बर आता है ?

देवू का तीसरा नंबर आया। काफी कम अंक आये थे। कोई बात नहीं। गणित, विज्ञान और अंग्रेजी में उसके सबसे अधिक अंक थ, गुजराती में बहुत कम थे। साहब ने अन्याय किया है ऐसा कहना उसे अच्छा नहीं लगता था। बिना पढ़े हुए मैं पहला नम्बर लाना चाहता हूँ यह ठीक नहीं है। अगले वर्ष की तैयारी ठीक-ठीक करूं। मैट्रिक में अच्छे नम्बर प्राप्त करने के लिए दसवीं से ही पूर्व तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए – रमणलाल कहते थे।

गर्मी में पिताजी सारंग जाकर राजगीर के साथ बात तय कर आये थे। पाँच सौ बयाना दिये थे। चुनाई गारे से करना था। कर्ज तो नहीं हो जायेगा ? माँ से पूछा था।

"कर्जा होय जाये तो हम कौनो लड़का के माथे पर लाद के जाब। ई हमार जेवर कौने काम आये ? औ अबहीं तौ केहू एको पैसा नाहीं मांगत। तुमका काहे कर्ज के चिन्ता होयगा ?

"तुमहूँ माँ उल्टी बात ....।"

"अरे, ई माँ बुरा माने के कौन बात है ?"

"बुरा लगे ही। देवू अब कोई बच्चा ता रहा नहीं। बुरा न लगे तो मुझे न लगे। समझी माँ ?" लवजी किन अर्थों में बोल रहा है यह देवू न समझ सका। वह परेशान हो गया।

घर बनना शुरू हुआ तो लवजी ने अपने जिम्मे दो काम लिए – राजगीरों और मजदूरों को चाय-बीडी पहुँचाना अथवा शाम के समय नींबू का शरबत देना। दीवाल की खाली जगह में रोड़ा भरना।

घर मुंडेरी तक बन गया था। हीरूभाई का संदेश आया कि समाज-शिक्षण के कार्यकर्ता तैयार करने के लिए शिक्षण-कार्य प्रारम्भ हो जाना चाहिए। तुम्हें जुड़ना है उसमें। देवू ने लवजी से जाने के लिए कहा। बहुत सीखने को मिलेगा। मुझसे तो यह काम छोड़कर जाते नहीं बनेगा। लवजी ने भी काम का ही बहाना बताया। चाय-पानी क काम कौन सँभालेगा ? रोड़ा कौन डालेगा ?

वहाँ से कोई जवाब नहीं गया अतः तीसरे दिन हीरूभाई आ पहुँचे। आते ही वे भी काम पर लग गये। एक मजदूर नीचे से ईंटें फेंकता था और दूसरा ऊपर बैठकर लोक लेता था। तुम नये लगते हो, कहते हुए हीरूभाई ने उसे ऊपर तक ईंटें फेंकने की कला बतायी।

ईंटों से भरी बैलगाड़ी लेकर नरसंग आ पहुँचे। देवू ईंटो को उतारने में उनकी मदद के लिए पहुँच गया। हीरूभाई भी पीछे-पीछे जा पहुँचे। नरसंग ने उन्हें सादर मना किया। सब काम कर रहे हो और अकेले मैं ही बैठा रहूँ? उनकी दलील का जवाब न था।

राजगीर के आते ही काम शुरू हो गया।

हीरूभाई शाम तक रहे। समाज-शिक्षण के अध्ययन शिबिर में जुड़ने की बात भी उन्होंने नहीं चलायी। दोपहर को खाने के बाद पूछा – "खपरैल डालना है कि टिन?" लवजी को विलायती खपरैल पसन्द थी।

हीरूभाई ने पशाभाई के पास से पुरानी टिन के पतरे खरीदवा दिये। हीरू-भाई के लिए भी आठ पत्तर निकाल दिये गये। नरसंग ने घेमर को बुलवाया – "अतना काम कर न भैया, बदरी जाय कै हीरूभाई के घरे ई आठ पत्तर डार आऊ।"

"हमसे अतना पत्तर उठे?"

"अतना बड़ा होयेगा मुला बैल कै बैल। गाडी मां भर कै डार आवे क कहित है।"

"मुला हमार बैल तौ . . . . ।"

"घरे रहै दे। हमारे गाड़ी और हमारे बैल। लवा क साथे लिहे जा।"

"देवू क साथे भेजौ तो एक दूसर काम...... ।"

"दूसर काम कौन.. .. नदी मां कांकर ग्वायक है का?"

'कांकर तौ नाहीं हाँ खरबूजा......" कहते हुए वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। शरमा के सिर झुकाकर चला गया।

नरसंग ने कंकू से पूछा – "ई घेमरिया कै औरत अबहीं नाहीं आयी?"

"के लावे गवा? चेहर क है तो फताभाई कै पाँव कांपत है। दोली माँ कै तबीयत ठीक होत तौ जाय कै कह अवती।"

"अरे उमवा माँ तौ अक्किल रही।"

देवू उठ खड़ा हुआ। उसे रोककर नरसंग ने दूसरे दिन बदरी जाकर घेमर की पत्नी को लिवा लाने के लिए कहा।

"पर तुम दूसरे घर के पंचायत माँ काहे पड़त हो? पिछले महीना माँ चेहर कहत रही कि अब तौ बहू क आने न पढ़उब।"

"हीरा से घेमर कै विवाह भवा है, चेहर कै नाहीं। समझी।"

"हम तौ सब समझित है मुला ऊ मुँझोसी कहाँ समझत है?"

"ऊ तौ बहू जब अंगना माँ आय कै खड़ी होये तब सब समझ जाये।" सीढ़ी पर खड़े देवू से पूछा-"तू कहाँ मंदिर माँ जात है भैया?"

"हाँ घेमर भैया के घरे होय कै।"

देवू ने चेहर काकी को हीरा भाभी को लिवा लाने के लिए किसी तरह समझाया। चेहर ने खुश होकर कहा "तू जात होय तौ लै आव न भाई। थोड़ी देर रुककर बोली, "नाहीं तौ घेमरिया लावेक कहत होय तो ऊकै तौ टांग तूड़ डारी।"

देवू ने हीरा घेमर की प्रसशा की और उठ खड़ा हुआ। गली में आकर वह मंदिर की ओर तेजी से चल पड़ा। माँ ने हाँ कह दी है यह जानकर घेमर को कितनी खुशी होगी? और हीरा भाभी को? गत वर्ष रोते-रोते हीरा ने सीने से लगा लिया था वह क्षण याद आया। वह स्नेह – वह स्पर्श। "भाभी?" वह मन ही मन बोल पड़ा।

वह महादेव के मंदिर पहुँचा तब लवजी नोटबुक खोलकर सबके बीच खड़ा था, हठ करके कह रहा था कि यह भजन मैंने आप लोगो के गाने के लिए ही लिखा है, गाते क्यो नहीं? पहले उसे गाओ, बाद में दूसरे–

मोती कुम्हार ने देवू को आते देखा और उनके सिर का बोझ कम हो गया– देवूभैया इसे गाकर बताएँ–

देवू ने लवजी-रचित भजन की प्रसशा की, फिर उसे सहलाकर नीचे बैठाया। समझाया: इसमे कुछ शब्द हम लोगो के लिए कठिन हैं। अगले शनिवार को थोड़ा सरल भजन लिख लाना हम जरूर गायेंगे। पिताजी को पहले से सुनाकर यह भी तय कर लेंगे कि किस राग में गाना है। ठीक है न?

लवजी सन्तुष्ट हो गया, उसने हठ छोड़ दिया।

9

सोमपुरा के अधिकाश लोग नरसंग पिथू के नये मकान की प्रसंशा करते थे। माना जैसे कुछ ऐसे भी थे जिनका कहना था कि पुराना माल लगाकर ऊपर से रंग करा दिया। कौन सी बड़ी बात कर दी? क्या हमको नही मालूम? और भैया, टिन पुराना होय तो चलो ठीक है। यह तो छत के ऊपर की लकड़ी भी पुरानी है। मै तो होऊँ तो लाकर मचान पर फेंक दूँ। लड़के बड़े होकर कमाने लगें तो बनवायें। किन्तु नरसंग को तो शेखी बघारनी थी, ऐसी बड़ाई के चक्कर में पड़ूँ ऐसा मै नहीं हूँ।

इस तरह की बातें करने वाला माना भी प्रसंसा तो कर ही आया था। नरसंग ने मन की बात की थी। हीरूभाई और पद्माभाई की वजह से लकड़ी-पतरे का हिसाब बैठ गया था। नहीं तो कितना कर्ज हो जाता। और यह तो अभी ढाँचा है। अभी और सब तैयार करते करते तो नाकों दम आ जायेगा। अपने जैसे

किसानों की बचत ही क्या है ? पर साल लवजो की बहू के लिए जेवर बनवाया उसी में सात सौ खर्च हो गये । वह तो घर पर ही ईंट पकवा ली । एक लाख में तीस हजार ईंटें तो बिक गयीं । और यह समझो न कि आधी मजदूरी तो घर वालों ने ही की । नहीं तो अपनी क्या हैसियत कि बिना कर्ज के मकान बनवा लेते ? डाक्टर माने कहते थे–नरसंग पटेल मजाक मत करो । दस हजार में भी ऐसा मकान नहीं तैयार हो सकता । दस हजार का नाम सुनते ही अपनी हालत खस्ता हो जाती है । लेकिन सच कहता हूँ माना : लोग भ्रमित हो जाते हैं छवा की करामात से । उसने बीस रुपये के रंग से इस दुमंजिले की खिड़कियों की तासीर ही बदल दी है । मैं झूठ कहता हूँ ?

माना ने पूछा कि पूजन कब करवाना है तो नरसंग का जवाब था – जल्दी भी क्या है ? आराम से करवायेंगे । फिर पैसे भी तो इकट्ठे करने पड़ेंगे ? माना का कहना था कि अभी तो लड़के की शादी भी करनी है यह क्यों भूल जाते हो। किन्तु फिर जैसे अपनी ही बात काट रहा हो बोला – वैसे भी खर्च ही कितना आयेगा ? तुम्हारा व्योहर ही वापस आ जाये तो शादी का खर्च निकल जाये ।

"सही बात है । ई किफायत ना होय तौ मुश्किल पड़ै । नाहीं तौ बीस बीघा जमीन वाले तौ कहाँ कम हैं गाँव माँ ?" नरसंग बोला ।

"हमार जमीन पच्चीस बीघा है । और भीमा, लाला, जेठा के भाग माँ तीस तीस बीघा है । मुला एक तरफ तुहार आवक रखौ और दुसरी तरफ हमार "

"जेठा के पास है पैसा ।"

"अरे नाहीं भैया ।"

"तबौ हम जौन कहित है सही है ।"

"पैसा होवे तौ चाटे । अब तौ जेठा केहू के पास बैठतौ नाहीं । ना तौ बैठे हमरे साथे और न तुहरी भजन मंडली मां । घरे और खेते के बीच भूत की तरह भटका करत है ।"

"भीमा के ससुराल वाले ऊका मार के गये तब से ऊके सभाव बदल गवा है ।"

"तुमका और पिथू बाबा क याद कौन करत है ।"

"शराब तौ हमेशा के लिए छूट गयी न ?"

"हाँ, मुला अब लाला शुरू होयगा है । बहुत पीयत हैं । मिलै तो थोड़ा कहेव । हमार कहा तौ मानत नाहीं ।"

माना उठ खड़ा हुआ । नरसंग ने उसे पुराने मकान पर चलकर चाय पीने के लिए बुलाया ।

माना ने चाय पीते-पीते फिर से लाला की बात चलाई । उसका मानना था कि लाला की मुखियागीरी जानेवाली है । पशाभाई या रमणलाल जैसे कोई बीच में न पड़ जाये तो वह स्वयं दो वर्ष के लिए मुखिया बन जाना चाहता था । नरसंग ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया अत. उसे शंका हुई ।

"तुम कहत होय तौ तुहरे देवू का···।"

"का कहयो मानाभाई !" कंकू ने घूँघट में से उन्हें घूरा ।

"देवू यह होसियार लड़का दूसरे के है ?" माना की प्रसंशा में भावना न थी । यह बात नरसंग से छुपी न रही ।

"भीमा के रणछोड, तुहार नारायण सब पढ़त हैं न ?" नरसंग ने कहा ।

"हम तौ साफ-साफ जानित है कि देवू एक दिन मुखिया बने ।"

"अपने जीयत तौ हम उका मुखिया न बनै देब । कबौ केहू कै दिन दुखावे क पड़ी, उल्टा-सीधा धंधा करै क पड़ी । ईसे अच्छा तौ खुद भले, खुद के काम भला ।"

माना को खुशी हुई । उसने भीमा को अपने पक्ष में कर ही लिया था । अब एक जेठा ही बाकी था । उसे अपनी ओर मिलाने में कितनी देर !

जेठा ने कहा – बने जिसे मुखिया बनना हो । मुझे नहीं बनना है । किन्तु अभी तो लाला जिन्दा है । तुम क्यों चिन्ता करते हो ?

"ऊका मुखियागीरी से हटाव कै बात चलत है ।"

"ससुरे, तुम हीं कुछ चक्कर चलाये होबौ ?"

माना गम खा गया । करसन बुढऊ को पास में बुलाकर माना ने शिकायत की कि जेठा ऊटपटांग बोल रहा है । "तू भी बौले ।" कहते हुए बुढऊ ने बात खत्म कर दी । उन्होंने जेठा से एक रुपिया माँगा । जेठा ने टके सा जवाब दे दिया – मेरे साथ रहते हो – औ तो संपत्ति सारी तुम्हारी है, किन्तु पहले तीनों भाइयों का बंटवारा बराबर करो । भीमा के पास आधा बीघा जमीन अधिक थी । बरतन-भाँडा और गाड़ी हुई संपति के बारे में भी जेठा ने जो कुछ सुन रखा था अभी उसके मन से निकला न था ।

बुढऊ जैसे आये थे वैसे ही चले गये । माना जेठा की व्यर्थ प्रसंशा करता रहा फिर उठकर बुढऊ के पीछे चला गया । जेठा को हँसी आ गयी । वह समझ गया था कि माना किस तिकडम में लगा हुआ है ।

सिर पर चारा लिये जा रहे छना को आवाज देकर जेठा ने रोका । उसे बुलाया । छना आना नहीं चाहता था । चलता गया ।

"गदहा सुनता नाहीं न ?" इस सरल प्रारंभ के बाद तो जेठा ने उसे एक से एक चुनी गालियाँ देनी शुरू कीं । अन्त में बोला कि अब मेरी चौखट पर पाँव मत रखना ।

चौखट के पास बोझ पटककर छना आया ।

"भले मनई, मेहरारू के गाली खवाने क है का ! जौन देर करावत हो ?"

"अपने माँ पानी होय तौ मेहरारू गाली तौ का देय, जोर से बोलबौ न करै ।"

"भैया सब के मेहरारू कहाँ बराबर होत हैं ! तुम तौ पिछले जनम मां पुन्य करेव रहा वही से ।"

"बस बस रहे दे । बोल तू का गाँव क मुखिया बने क है ?"

"काहे लाला भाई हैं न ?"

"माना ऊका निकार के..."

"हाँ, सुना तौ है हमहूँ । मानाभाई जौन सोच लिहिन तौन करिहैं ।"

"का खाक करिहैं ? तू तैयार होय तो..."

"तुहरे जैसे लोग हमका मेहमानन के बीच मां ठीक से बैठे न देत होंय तुम हमका मुखिया बनावे के बात करत हो ? गरीब आदमी कै काहे मजाक उड़ावत हो भले मनई ?"

"अरे तू गरीब है ? अब सीधे सीधे बोल दे । मुखिया बनै क है ?"

"तूमम तौ अस बात करत हो जैसे हुकम पत्र अबै जेब से निकाल देबो ।"

"ई बात बाद मा । तू एक बार हाँ तो बोल ।"

"खर्चा कतना होये ?"

'तोहरे बूते से जादा न होये । दस बीस तौ हम खर्च के देब ।"

"तब तौ झक मारे माना और माना कै बाप ।"

"फालतू बके बिना, बोझ उठाय के जा ।"

"चलौ उठवाओ । अकेले न उठे ।"

"देख साला, मुखिया बनै के पहले काम बतावे लाग । हम केहू कै बोझ नाहीं उठवाइत ।" छना ने अनमने भाव से पाँव उठाये । जेठा की पत्नी चारा ले रही थी । उसने बिना कहे छना का बोझ उठवाया ।

लाला स्वयं मुखियागीरी से त्यागपत्र दे आया था । माना के द्वारा प्रचारित अफवाह का असर व्यापक पड़ा था । धमला ने भी कहा था-"छोड़ दे पटेलाई, पाप कम होय तौ भगवान लड़का देय ।" लाला को अब लड़के की कोई उम्मीद न थी । गत वर्ष ही एक ज्योतिषि ने कहा था तब से उसका मन बैठ गया था ।

दिवाली की छुट्टियों में दूसरा प्रौढ़ शिक्षण-शिविर प्रारंभ हुआ । सुधरी हुई खेती के बारे में शिक्षा दी जानी थी । घर का काम चालू था फिर भी देवू शिविर में गया । नरसंग ने तो कहने के साथ ही छूट दे दी थी । किन्तु माँ को यह बात समझ में नहीं आयी थी कि दस दिन का समय क्यों खराब किया जा रहा है । लवजी ने भी व्यंग कसा था-"अब तो भैया पढ़ाई छोड़कर गाँव के बुड्ढों को पढ़ायेंगे ।" फिर उसी ने देवू की मदद भी की थी – जाने दे माँ, मैं नहीं हूँ क्या ? बढई खिड़की लगायेगा । बैठ-बैठे देखते ही तो रहना है न ? कुछ और ? यह तो मैं भी कर लूँगा ।"

शिविर में समाज – शिक्षण अधिकारी और कृषि अधिकारी के साथ देवू का अच्छा सा परिचय हो गया था । दो दिन तक हीरूभाई भी वहीं रुके । पद्माभाई पूर्णाहुति करने के लिए आये । भाषण पूर्ण करने के बाद सभी शिविरार्थी एक साथ खाना खाने बैठे तो देवू ने ताबड़तोड प्रश्न पूछकर उन्हें परेशानी में डाल दिया ।

अन्ततः उसने स्वयं कहा कि इस तरह मात्र भाषणबाजी से विकास-योजना सफल नहीं होगी। और उसमें भी आप तो ऐसा भाषण करते हैं कि शायद ही किसी की समझ में आता हो।

शिबिर के अधिकारी व्याकुल हो उठे। देवू रमणलाल का साला है यह जानकारी उन्हें थी। और इस समय पशाभाई स्वयं हँस रहे हैं यह देखकर वे भी मौन ही रहे। देवू ने भी उनके साथ कोई उद्दंडता नहीं की थी। उसकी आशु जवाबी, उसके चेहरे का तेज, उसका स्नायुबद्ध शरीर – कक्षा दस में अध्ययन करते विद्यार्थी के भीतर इन सारी चीजों का होना उनके लिए एक अजूबा था। उन्होंने देखा कि पशाभाई भी देवू को ममता से देखते हैं–"चल नवयुवक मेरे साथ सारंग तक।" कहते हुए उन्होंने अपनी जीप में देवू को बिठा लिया था।

देवू ने अधिकारी से कहा था-"साढे तीन महीने के बाद सोमपुरा के प्रौढ़ शिक्षण के वर्ग की परीक्षा लेने आइयेगा साहब।"

रास्ते में पशाभाई ने कहा–"अभी यह सारा शौक रहने दे और पढ़ाई में ध्यान दे भाई।"

"यह काम तो ऐसा है कि पढ़ते–पढ़ते भी हो सके।"

"तो तेरी इच्छा। मैं तो अपने अनुभव की बात कर रहा था। गत वर्ष हमारे पटेल टोले में प्रौढ़ शिक्षण के दो क्लास चले थे। शिक्षक भी कोई तेरे जैसे लड़के नहीं, शिक्षक ही थे। लगभग पचास जने पास हुए। शिक्षकों को चार चार रुपये मिले। स्लेट और लालटेन आदि जो बचा वह सब उन्हीं के पास रहा या क्या हुआ उसका तो पता समाज शिक्षण अधिकारी को भी नहीं होगा। मुझे एक आदमी ने बताया कि जिन पचास लोगों को पास किया गया था वे सब अब पढ़ना लिखना भूल गये हैं।"

"उन लोगों ने कुछ सीखा ही नहीं होगा। समझे पशा काका?"

"तू अच्छा मिला है भाई पशाकाका को समझाने वाला।" कहते हुए उन्होंने देवू की पीठ थपथपाई।

दीवाली के बाद देवू बीजापुर जाकर कक्षा के लिए जरूरी साधनसामग्री खरीद लाया। पहले दिन हीरूभाई को बुलाया गया। हीरूभाई के साथ समाज शिक्षण विभाग का फिल्म विभाग भी था। शंभू नायक भी उपस्थित थे। आधे घंटे तक उन्नत खेती और मेहनती किसानों के बारे में रील चलती रही। उसमें मूलजी के घर के सभी, पशा मुखी और अन्य अच्छे भैंस-बैल वाले किसानों को समाविष्ट किया गया था। रमणलाल भी सिर पर साफा बाँधे बाजरा काटते हुए दिखाई दिये। हेती को देखकर गाँव की सभी छोटी-बड़ी स्त्रियाँ एक साथ उसका नाम बोल पड़ीं।

देवू ने हीरूभाई से कहा कि रमणलाल कहाँ खेती करते हैं? उन्हें किसान क्यों बताया गया है?

"रील बनाने वाले को किसान के रूप में वे अच्छे लगे होंगे।"

"एम.एल.ए. के रूप में वे अच्छे होंगे किन्तु किसान तो वही होता है जो खेती करता हो।"

"वैसे तो रमणलाल हर वर्ष नयी जमीन खरीदते हैं।"

"हाँ, आज उनके पास पचास बीघा से अधिक ही खेती होगी।"

"सस्ते में मिलती है तो खरीद लेते हैं।"

"आपको यह योग्य लगता है?"

"वे न खरीदें तो कोई अन्य खरीद लेगा।"

"यह हीरूभाई बोल रहे हैं?"

देवू के अन्तिम प्रश्न पर हीरूभाई चौंक पड़े। यह लड़का उनके मन की बात कर रहा है। उनका भी यही मानना था कि साधारण स्थिति का किसान मजबूर हो तो उसका लाभ लेकर उसकी जमीन खरीद लेनी बेईमानी है।

देवू आगे बोला-"आपको उनसे कहना चाहिए कि इस तरह खेती खरीदते जाना कोई अच्छी बात नहीं है।"

"यह बात तो वे भी समझते होंगे।"

"मैं तो कहता हूँ कि यह पाप है। एम.एल.ए. होकर आदमी अपने मतदाताओं की तकलीफों को दूर करता है कि उसकी मजबूरी का फायदा उठाता है?"

"यह बात तुम ही उनसे कहना।" हीरूभाई ने सहज भाव से कहा। "अकेले वे ही इस तरह से कृषकों की जमीन खरीदते हो तो मैं जरूर उनसे कहता। किन्तु स्वयं मेरे मामा ही कहाँ नहीं खरीदते? मैंने उनसे एक बार कहा था। उन्होंने जवाब दिया कि मैं नहीं खरीदूँगा तो कोई दूसरा खरीदेगा। और बेचने वाला इतना समझदार तो होता ही है कि जिससे उसे ज्यादा दाम मिलेगा उसी को बेचेगा। इसीके साथ एक बात और विचारणीय है। खरीददार उस जमीन को सधाकर उसमें से अधिक उत्पादन करता है तो इससे भी राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होती है। किन्तु यह तर्क मेरा नहीं है। मैं तो यह ख्वाब देख रहा था कि स्वतंत्रता के बाद छोटे से छोटे आदमी का भी कल्याण होगा।

फिल्म पूरी हुई। भीड़ सभा में बदल गयी। हीरूभाई खड़े हुए और उन्होंने एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा अशिक्षित व्यक्ति बहुत समझदार होते हैं। अगर उन्हें अक्षरज्ञान मिल जाये तब तो जैसे सोने में सुगंध।

गाँव के लोगों के बीच खड़े होकर भाषण देने का देवू के लिए यह पहला अनुभव था। स्कूल की चर्चासभाओं में भाग लिया था। तब संकोच नहीं होता था। किन्तु वहाँ तो हर बार वह नया-नया संस्कृत श्लोक या गुजराती का कविता-पंक्ति के साथ बोलता था। यहाँ कौन समझेगा? संभवत: लवजी समझे। समझे या नहीं, गलती तो निकालेगा ही। खैर कोई बात नहीं। इन लोगों से क्या कहूँ? उसने इतना ही कहा कि सर्वप्रथम भजन मण्डली वाले भाइयों को शिक्षित करना है। कल से नहीं, अभी से। भले देर हो गयी हो।

अंत मे शंभु नायक ने एक भजन गाया और सभा विसर्जित हो गयी।

आज देवू को आश्चर्य हो रहा था। सब उसे सम्मान से बुला रहे थे। लवजी, घेमर, मोहन, बीरा, जीवन भी। देवू को लगा जैसे आज अचानक उसकी उम्र दो वर्ष अधिक हो गयी है।

लवजी ने स्वेच्छा से सबका नाम लिखना प्रारम्भ कर दिया था। सत्ताईस नाम आ चुके थे। वह खड़ा हुआ और बोला–

"काकाओ तथा भाइयो। बाकी लोगो में से भी यदि तीन लोग और नाम लिखवा दें तो तीस आदमी हो जायें।"

देवू ने उम्र में कुछ बड़े जेठा का नाम लिखने के लिए कहा पर एक शर्त पर–वर्ग में बैठने के बाद वे गालियाँ न बोलें।

जेठा सम्मत हो गया। उसने कहा कि यहाँ तो दो घण्टे ही बैठना है न? वह हर रोज रात आठ घण्टे तक एक भी गाली नहीं बोलता, जब नींद में होता है।

"यहाँ आकर भी सोना।" कहते हुए लवजी ने हास्य के छोर पर कलगी जोड़ दी। इस हँसी-मजाक के साथ सब बिखरने लगे थे कि मंदिर के दालान की छत के पत्थर गरज उठे। बरसात टूट पड़ी थी। लवजी मेहमानों के लिए छाता लेने दौड़ा। रास्ते में बिजली कौंधी। गाँव की गली के दोनों ओर के घर वर्षा में भी दिखाई दिये।

मेहमानो को आगे करके सब चले। घेमर और जीवन ने बीड़ियाँ जलाईं। भारी बरसात में भी उन्होंने मुट्ठी के बीच बीड़ियाँ इस तरह पकड़ी थीं मानो शंख का कवच। अब वे बारी बारी से फूँक लगाते थे, इससे ऐसा भास होता था कि बरसते अंधेरे में जुगनू खेल रहे हों।

10

मंदिर के बरामदे में प्रौढ़-शिक्षण का क्लास चलता था। लवजी की इच्छा हुई कि क्यों न नये घर की छत पर छात्रालय प्रारम्भ किया जाय? यह बात उसने देवू से भी की। माता-पिता को कोई आपत्ति न थी।

हाईस्कूल में पढ़ते चारो लड़को से देवू ने यह बात कही। रणछोड़ से तो विशेष रूप से कहा। यह जानते हुए भी कि पीना हानिकर है वह अक्सर करसन बाबा के पास जाता और पीता। देवू को इस बात की जानकारी थी। पहले दिन और सब तो आये किन्तु रणछोड़ नहीं आया।

"लवजी, जा और यदि रणछोड़ घर पर हो तो उसे बुला ला।"

"क्या करने के लिए?"

"छात्रालय में शामिल होने के लिए।"

"वह तो नहीं आयेगा।"

"यह निर्णय तूने यहाँ बैठे-बैठे कैसे ले लिया ?"

"बुद्धि से।"

"बुद्धि अकेले तेरे ही पास है ?"

'है तो सबमें, किन्तु मुझमें कुछ अधिक ही है।"

"तो बता कि मैं क्यों चाहता हूँ कि रणछोड़ यहाँ आये ?"

"अपना बड़प्पन दिखाने के लिए। यह दिखाने के लिए कि रणछोड़ तुम्हारा कहना मानता है।"

"मैंने तो ऐसा सोचा भी नहीं था। किन्तु मैं चाहता हूँ कि वह यहाँ आये, करसन बाबा से उसका मिलना-जुलना बन्द हो और पीने की आदत छूट जाये।"

"छोड़ेगा जब उसकी इच्छा होगी तब। हमें क्या लेना-देना ?"

"लो, कर लो बात। कोई सुधरता हो तो क्या तुझे खुशी नहीं होगी ?"

"सुधर कर भी लोग बिगड़ जाते हैं। मैंने कहीं पढ़ा था। किसी को सुधारने की चिन्ता हम क्यों करें ? मेरा तो मानना है कि लोगों को अच्छे-बुरे की चिन्ता ही छोड़ देनी चाहिए।"

"यदि ऐसा है तो तू प्रौढ़ शिक्षण की कक्षा में सहयोग क्यों देता है ?"

"अक्षरज्ञान मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है। सभी लोग एकत्र होते हैं तो अच्छा लगता है। लेकिन यदि तुम कहो कि जाओ और फलाने को उसके घर पर पढ़ाकर आओ तो मैं कदापि नहीं जाऊँगा। मैं तो उतना ही करूँगा जितना मुझे अच्छा लगेगा।"—लवजी के शिक्षक ने उसे शुद्ध भाषा बोलने के लिए तैयार कर लिया था।

देवू ने अंत में हरजीवन को भेजा। रणछोड़ घर पर नहीं था। उसकी माँ पधी ने कहा भाड़ में जाये तुम्हारा छात्रालय। मेरा लड़का दूसरे के घर जाकर रहेगा ? मालूम है कि बड़े नोखे का घर बनवाया है। भीमा ओसारे में बैठा बैठा सब कुछ सुन रहा था। वह कुछ बोला नहीं। गत वर्ष रणछोड़ एक विषय में फेल हो गया था। उसे प्रमोट किया गया था। इस साल तो कभी पुस्तक भी उसके हाथ में नहीं देखी गई, उसे कुछ चिन्ता नहीं है। जबसे पत्नी घर में आयी है तबसे कितना उड़ाऊ हो गया है। हरजीवन वापस चला गया। "वह घर पर नहीं है और उसकी माँ उसे भेजने के लिए मना कर रही थीं।" उसने देवू को बताया। रणछोड़ नहीं आयेगा यह जानकर देवू को बहुत दुःख हुआ। यदि वह सुधर आये और व्यवस्थित पढ़ाई कर ले तो गाँव के हित में वह कितना उपयोगी हो सकता है।

किन्तु देवू ये बातें कहे तो किससे कहे ?

वे मंदिर की ओर चल पड़े। दो दिन के बाद विकास योजना के शिक्षणाधिकारी प्रौढ़ों की परीक्षा लेने आने वाले थे। दो दिनों तक लगातार पाँचों जन मिलकर सबको पढ़ायेंगे। देवू जेठा के पास बैठा। उसे आश्चर्य हुआ। परीक्षा

का नाम सुनने के बाद दस दिनों में जेठा ने उल्लेखनीय प्रगति की थी । देवू ने उसे शाबाशी दी ।

"अरे इस उम्र में भी अगर मैं फेल हो जाऊँ तो मूँछ ही मुँडवा देनी पड़े !" कहकर वह चुप हो गया । धमला ने अपनी पढ़ाई बीच में ही बंद कर दी थी । देवू के कहने से उसने मान लिया था कि उसे सब कुछ आता है । वेमर को अपने घर के सदस्यों के नाम, आस-पास के गाँवों के नाम तथा बैल के बारे में तीन वाक्य लिखना आता था । वह अक्सर स्लेट में हीरा का नाम लिखकर सहपाठियों को दिखाता है ।

वह सोचता कि अब वह भी सारंग जायेगा तो अखबार को सीधा पकड़ेगा और फोटो के नीचे छपे नेता का नाम पढ़ा करेगा ।

देवू ने उसे बताया था कि अखबारों में नेताओं के फोटो छपा करते हैं ।

उस दिन २८ जून को नेहरु और चाउ एन लाई ने नई दिल्ली में पंचशील की महिमा की थी । देवू इन नेताओं के विषय में आदर के साथ बात कर रहा था । पहली नवम्बर को फ्रेंच उपनिवेश भारतीय संघ में विलीन हो जायेगा । कांग्रेस के अवाडी सम्मेलन में समाजवाद के विषय में पारित हुए प्रस्ताव को लेकर भी देवू ने सब कुछ जानकारी दी । रमणलाल और हीरूभाई अभी सम्मेलन से लौटे नहीं । दक्षिण भारत देखकर आएँगे । कभी-कभी दुर्घटना और मारपीट से संबंधित समाचार भी पढ़कर बताये जाते । देवू ने देखा कि इस प्रकार के समाचारों में सभी एक सी रुचि दिखाते हैं ।

जिस दिन शिक्षणाधिकारी साहब परीक्षा लेने आने वाले थे, किसी कारण से वे उस दिन न आ सके । आधे घण्टे तक इन्तजार करने के बाद देवू ने सभी को छोड़ दिया । हरजीवन ने बताया कि वह कल सम्भवतः बीजापुर जाने वाला है । विकास योजना की ऑफिस भी चला जायेगा ।

देवू ने एक पत्र लिखा –

आदरणीय महोदय,

कक्षा का समय पूर्ण होने के बाद भी हम लोगों ने आधे घन्टे तक आपकी राह देखी । अन्य कहीं व्यस्त होने के कारण आप न आ सके । अब संभव हो तो कृपया शनिवार को आप आये ।

– देवू चौधरी के वन्दन"

अपना काम खत्म करके हरजीवन विकास योजना के ऑफिस पर गया । पत्र पर देवू ने जिनका नाम लिखा था वे साहब अनुपस्थित थे । चपरासी ने चिट्ठी उसी विभाग के एक महिला-कर्मचारी की टेबल पर रख दी । थोड़ी देर में बेल की आवाज सुनाई दी । हरजीवन को अन्दर बुलाया गया । महिला ने उसे देखा ।

"कौन है यह गया ?"

"मुझे कह रही हैं ? मैं गधा नहीं कुम्हार हूँ ।"

उत्तर सुनकर महिला का क्रोध रंचमात्र भी कम न हुआ ।

"यह चिट्ठी तुमने लिखी है ?"

"नहीं, मैं तो सिर्फ देने आया हूँ । लिखी तो देवूभाई ने है ।"

"उससे कहना कि इस तरह चिट्ठी नहीं लिखी जाती । क्या समझता है वह अपने आपको ? वह हमको आदेश देता है कि शनिवार को आ जायें ? उसने हमको नौकर समझ रखा है ? वह हमें वेतन देता है ?"

"नहीं साहब देते हैं ।" हरजीवन के मुँह से निकल गया ।

महिला आग-बबूला हो गयीं । हरजीवन ने सोचा भी नहीं था कि उसकी बात का इतना अनर्थ हो सकता है । उसे और देवू को बहुत बाद में पता चला कि साहब और महिला के बड़े अच्छे और नजदीकी संबंध थे । महिला सुन्दर हैं, स्वस्थ हैं, तन से संपन्न हैं । अविवाहित हैं अतः इच्छानुसार किसी के भी घर की अतिथि बन सकती हैं । वे नये युग की नयी पैदायश हैं । उन्होंने संकल्प किया है कि गाँवों को अपनी ही तरह आधुनिक बनाना है इसलिए उन्होंने समाज-शिक्षण विभाग में अधिकारी पद पर अपनी सेवायें देने का काम स्वीकार कर लिया है । नहीं तो उन्हें कोई जरूरत नहीं है कि नौकरी करें – किसी की गुलामी करें । वे तो यह अपने शौक से करती हैं –

"किसी ने मुझे यहाँ रखा नहीं है ।" उन्होने हरजीवन से कहा – "स्वेच्छा से आयी हूँ ।"

"मैं क्या करूँ ?" हरजीवन ने मद्धिम किन्तु ठंडे स्वर में कहा ।

"तुम्हें बात करने की भी तमीज नहीं है ?"

"ग्रामीण हैं न हम लोग ।"

"वह तो तुम्हारे चेहरे से ही लगता है ।"

"तो मैं जाऊँ ? कोई जवाब देना है ?"

"जवाब ? ऐसे विवेकहीन पत्रों के जवाब नहीं हुआ करते । कहना कि ये श्रीमान खुद आकर मिलें ।"

"वे तो नहीं आयेंगे ।"

"यह तुम कैसे तय कर सकते हो ? उसे कहने दो । क्या करता है वह ?"

"मैट्रिक में पढ़ते हैं ।"

"इतने बड़े छोकरे में ऐसा रुआब ?"

"मुझे तो देवूभाई में कोई रुआब नजर नहीं आता ।"

"तुम्हें देखना ही नहीं आता ।"

"वह तो आप जो कहें, सब सही है ।"

हरजीवन अब कमरे से बाहर निकल जाना चाहता था । वह हिंमतपूर्वक बोल तो रहा था किन्तु भीतर ही भीतर घबरा गया था । वह इस दुविधा में था कि

साहब की अपेक्षा यह महिला उच्च पदाधिकारिणी होंगी। वह चलने के लिए उनकी इजाजत लेना ही चाहता था कि साहब आ पहुँचे।

महिला पुनः उबल पड़ी –

"कैसे कैसे आदमियों को आपने प्रौढ़ शिक्षण के कार्य सौंप रखे हैं ? पाँच वाक्यों का पत्र भी लिखना आता है इन्हें ? लो देखो।"

साहब ने चिट्ठी पढ़ी, वे प्रसन्न हुए।

"यह है सच्चा कार्यकर्ता। मैं शनिवार को जाऊँगा। जरूर जाऊँगा।"

"आप इसी तरह लोगों को सिर पर चढ़ा लेते हैं।"

"तुम तो हो ही उन्हें नीचे खींच लेने के लिए।"

महिला को साहब की यह बात भी अच्छी न लगी। उनका सिर नीचे हो गया। वे बुरा मान गयी थीं। हरजीवन स्वस्थ दिखाई दे रहा था। साहब के कहने से चपरासी ने उसे पानी पिलाया। साहब ने देवू के लिए लिखकर जवाब भेजा। समय पर न पहुँच पाने के लिए उन्होंने अफसोस व्यक्त किया था, और विश्वास दिलाया था कि शनिवार को अवश्य ही आयेंगे।

हरजीवन का बयान सुनकर देवू ने साहब की प्रसंशा की। महिला के लिए उसने कहा –

"वह तो ऐसी ही हैं।"

"ऐसी ही का मतलब ?" – लवजी ने पूछा।

"तू नही समझेगा" कहकर देवू ने उसे चुप कर दिया।

शनिवार को वे सब पुनः एकत्र हुए। साहब आज भी नहीं आये थे। आधे घंटे तक इन्तजार करने के बाद देवू ने सबको घर भेज दिया। शनिवार था अतः घेमर, मोहन, जीवन आदि सात लोग बैठे रहे। लवजी नये घर पर पढ़ने बैठा था। पीछे के गड्ढे मे सियार की आवाज आई। बाद में कुत्ते भौंके। लवजी की पढ़ाई में भंग हुआ। दरवाजा बंद करके वह अंधेरे में अकेला मंदिर गया। आज भी साहब नहीं आये हैं यह देखकर वह मुस्कराया : "जाकर माँ से कह दूँ कि दूध जमा दे" यह वाक्य देवू को पसंद न आया।

घेमर ने तबले निकाले। ज्यों-त्यों खड़खड़ाने लगा। जीवन ने झांझर संभाले। दो वाद्यों के बीच एक दूसरे से दूर भागने की स्पर्धा हुई। ऐसी बेताल आवाज सुनकर धमा फटी कमली ओढ़कर आ पहुँचा। हाथ में छड़ी नहीं थीं, इसलिए अंधेरे में गली पार करने के लिए "सदा संसार में सुख-दुख सरीखे मान लेने हैं।" गीत गाता आ पहुँचा। सब के अनुरोध पर धमा ने पूरा गीत सुनाया।

देवू आज बहुत निराश दिखाई पड़ रहा था। आज भी यदि साहब नहीं आयें तो ? आज से प्रौढ़ शिक्षण का सारा काम बन्द। शिक्षण-वर्ग से उसका इतना भावात्मक संबन्ध हो गया था कि उसने सोचा था कि पैंतीस वर्ष से कम उम्र के सभी लोगों को अक्षरज्ञान तो देगा ही देगा......।'

अचानक जीप की आवाज सुनाई दी।

साहब एक दूसरे गाँव की परीक्षा लेने गये थे। वहीं से वापस आये थे। उनके साथ उनका एक सहायक भी था। देवू की इच्छा तो हुई कि कह दे कि साहब आज तो सब सो गये होंगे, किन्तु ऐसा कहते हुए उसे सकोच हुआ। उसने साहब का स्वागत किया। जो लोग आ चुके थे घंटा सुनकर एक-एक करके आने लगे और अन्त में सब के सब लोग आ पहुँचे। इससे मात्र साहब और उनके सहायक को ही नहीं स्वयं देवू को भी आश्चर्य हुआ।

सब लोग मंडलाकार बैठ गये। लवजी ने हरजीवन से कहा – मुझे यदि परीक्षा लेनी हो तो मै इनमें से आधे लोगों को फेल कर दूँ। पता नहीं लवजी के इन शब्दों को सुनकर या स्वयं प्रेरित होकर साहब ने परीक्षा के विरुद्ध में एक प्रस्तावना प्रस्तुत की और एक संक्षिप्त वक्तव्य भी दिया।

लवजी बड़बड़ाया – साहब भाषण देने आये हैं कि परीक्षा लेने? देवू ने हाथ बढ़ाकर उसे चिकोटी काटनी चाही तो लवजी खिसक गया।

साहब का भाषण पूर्ण होते ही उनका सहायक खड़ा हुआ। सबको नमस्कार किया। फिर सबको सूचित किया – सब लोग अपना अपना नाम लिखकर दिखायें। सब लोगों ने तुरन्त नाम लिखकर झट से स्लेट ऊँची कर दी। साहब ने घेमर की भूल निकाली – तुमने मात्रा नही लगाई है। तुम्हारा नाम हीरो है कि हीरा?

सब ठठाकर हँस पड़े। "साला औरत का नाम लिखते हुए शरमाता भी नहीं।" जेठा हँसता हुआ बोला। घेमर ने खड़े होकर शिकायत की।

'साहेब, इनका सबका तौ पहले इन कै नाम लिखै बताइन रहा मुला हमका पहले यही नाम सिखवाइन है। झूठ कहत होई तौ पूछौ देवू भैया से।"

साहब स्वयं विनोदप्रिय थे। किन्तु उन्हें देर हो रही थी। घेमर ने दुबारा अपना ही नाम नहीं बल्कि "घेमर फता चौधरी" इस प्रकार पिता का नाम भी लिखा। साहब ने दो-दो वाक्य लिखकर सबसे पढ़वाया। परीक्षा पूर्ण हो गयी।

सोने की व्यवस्था देवू ने अपने नये मकान में ही कर रखी थी। रात को सोते समय साहब ने देवू से पूछा–नये क्लास कब शुरू कर रहे हो? मुझे तुमसे बड़ी उम्मीद है। तुम्हारा कार्य उदाहरण रूप होगा।

देवू ने बताया कि नये नामो की सूची बनाकर वह पत्र लिखेगा। वह निश्चय-पूर्वक नही कह सकता था कि गाँव की बहुएँ–लड़कियाँ पढ़ने के लिए तैयार होंगी कि नहीं।

सुबह देवू ने महिला अधिकारी वाली बात चलायी। "सब चलता रहता है, दुनिया है यह तो।" साहब की बात से देवू आश्वस्त न हुआ। "हरजीवन की जगह मैं होता तो उन्हें टके सा जवाब देकर आता। यह नौकरशाही..." साहब ने मुस्कराते हुए देवू के कंधे पर हाथ रखा और कहा "हम भी नौकरशाह ही हैं देवू भाई।"

"आपकी बात अलग है।"

"मेरे बारे में जैसा तुम सोचते हो, आवश्यक नहीं कि दूसरे भी वैसा ही सोचते हों। गलती अधिकारी बन जाने वाले व्यक्ति की नहीं है। गलती उसके पद के साथ जुड़ी विचारधारा की है, अधिकार की है।"

"हाँ, और वैसे भी स्त्रियों को तो कुछ विशेष ही अधिकार होता है।"

"मैं इस बारे में चुप रहूँगा। कोई चर्चा नहीं करूँगा।"

कप में चाय उडेल रहे लवजी से न रहा गया। वह बोला–"देवू भाई चर्चा करना ही कहाँ चाहते हैं। वे तो निन्दा कर रहे हैं।"

साहब ने लवजी और देवू के चेहरे की तुलना करते हुए पूछा–"तुम्हारे छोटे भाई हैं?" "हाँ, हैं तो छोटे भाई ही किन्तु मानते हैं खुद को बड़े भाई।"

"हम दोनों ही ऐसा मानते हैं।" लवजी बोला।

साहब ने लवजी की प्रसंशा की।

विजापुर के लिए रवाना होने के पूर्व वे कंकू से मिलने गये। "धन्य हैं बहन तुम्हें। तुमने अपने बच्चों को कैसे संस्कार दिये है!"

कंकू की आँखें नम हो गयीं। उत्तेजना-वश वह कुछ बोल ही न सकी। आज उसे लग रहा था कि उसका परिश्रम सफल हुआ। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि कोई इतना बड़ा साहब कभी आकर इन बच्चों की माँ की प्रसंशा करेगा...

जाने के पहले साहब ने देवू से, गाँव से निरक्षरता खत्म कर देने का वचन लिया।

एक महीने के बाद सोमपुरा के मंदिर में एक साथ पाँच क्लास चल रहे थे। बहुएँ तो तैयार नहीं हुई थीं। किन्तु कई चक्कर लगाने के बाद सोलह से बीस वर्ष की लड़कियाँ अवश्य आने लगी थीं।

नरसंग इस दृश्य को देखकर बहुत प्रसन्न होते थे। वे मंदिर के दरवाजे के पास बैठकर माला फेरने लगे।

थोड़ी देर के बाद भीमा करसन का लड़का रणछोड़ दिखाई दिया। थोड़ी देर तक वह दरवाजे के पास खड़े होकर लड़कियों की क्लास की ओर देखता रहा। फिर दो-तीन कदम अन्दर आया। नरसंग को वहाँ बैठा देखकर उन्हीं कदमों वापस चला गया। नरसंग की माला रुक गयी।

उन्होंने रणछोड़ की चाल पहचान ली।

चिंतित हो उठे।

रणछोड़ जैसे लोग भी यदि कुछ बुरा काम करते हैं तो बदनामी तो आखिर अपने ही लड़के पर आयेगी।

जरा ध्यान रखना पड़ेगा। देवू को भी सूचित कर देना चाहिए।

ऊपर वाला सब कुछ देखता है। अच्छा काम करने वालों का बुरा कभी नहीं होता। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी यही कहा है। हमें सावधान रहना चाहिए, चिंतित और भयभीत नहीं। यह भाव मन में जाग्रत होते ही उनके हाथ की माला पुनः घूमने लगी।

11

गत वर्ष जिन-जिन विषयों में नकल संभव न हो सकी उन सभी विषयों में फेल होने की वजह से रणछोड़ का मन अब पढ़ाई में नहीं लगता था। किन्तु पघी का कहना था कि एकाध बार फेल हो गये तो क्या हो गया ? यह मास्टर लोग भी कैसे हैं ? जब तक उनकी जेब न भरी जाये, वे लोग लड़के की ओर नजर भी नहीं उठाते। इन सालो को कोई न्याय की थोड़ी ही पड़ी है। अरे, नरसंग के देवा और लवा भी पढ़ाई में आगे आ गये हैं तो कैसे ? अपने बहनोई की सिफारिश से ही तो ? मेरा ससुर भी अभी तक मुखिया होता तो किस की हिम्मत थी कि हमारे रणछोड़ को फेल करता।

किन्तु पघी की मान्यता स्वयं रणछोड़ को भी गलत लगती थी। वह जानता था कि उसने पर साल कुछ भी नहीं सीखा है, कुछ भी नहीं पढ़ा है। फिर पास हो भी तो कैसे ? देवू के नये घर में सोने वाले सभी विद्यार्थी सुबह-शाम पढ़ते थे, स्कूल से छूटने के बाद एक घंटे और सुबह जल्दी उठकर दो घंटे। इसके बाद वे लोग घर के काम में भी हाथ बँटाते थे। देवू अपने प्रतियोगियों की अपेक्षा बहुत कम पढ़ता था। उसके बावजूद गत वर्ष वह प्रथम श्रेणी में पास हुआ था। रणछोड़ यदि देवू के छात्रालय में शामिल हुआ होता तो इस तरह फेल होने की नौबत न आती। किन्तु...माँ ? क्या कहे उसे ? शादी के तीसरे साल औरत आयी तब भी अन्दर सोने के लिए मना करती है। मेरा लड़का अभी बच्चा है, अभी बच्चा है ऐसी डुग्गी पीटती रहती हैं। बच्चा था तो अभी औरत को बुलाने की क्या जरूरत थी ? बच्चा है यह बात उसे कैसे मालूम ? इस वर्ष भी नहीं बुलवाया। बाबो तो जेठाकाका से कहते थे कि जा बुला ला। इतने में माँ पता नहीं कहाँ से टपक पड़ी ? नहीं, मेरा लड़का अभी बच्चा है। बच्चा है अभी ? देखो न मसें फूटने लगी हैं...यह क्या है ? और.. और.. गोरी ?

माँ के आग्रह की वजह से रणछोड़ कुछ दिनो तक स्कूल के नाम से घर से निकलता रहा और मारंगा के बाजार में चक्कर लगाकर चला आता रहा। माना ने भीमा को बताया। भीमा समझ गया था कि लड़के का मन पढ़ने में नहीं लगता। किन्तु पत्नी को कैसे समझाये। वह तो कह देगी कंकुवा को देखो, कल तक दो कौडी की थी। किन्तु आज फूलकर गुब्बारा हो गयी है। यह तो लड़के पढ़-लिख सुधर गये हैं इसीलिए। छोटा तो बाँढा ही रह जाता किन्तु उसे पढ़ा दिया तो मगन अमथा की निगाह में बस गया। जब उस रांड के लड़के पढ़ते हैं तो हमारा तो मुखिया का घर है। आज भले नम्बरदारी चली गयी है किन्तु मेरा रणछोड़ पढ़-लिखकर इतना होशियार बनेगा कि उसके सामने कोई चूँ चाँ भी नहीं करेगा।

भीमा का स्वप्न थोड़ी देर तो पघी के स्वप्न के साथ रहता किन्तु फिर अलग हो जाता। और कुछ नहीं तो रणछोड़ खेती के काम में ही मदद करता तो कितना अच्छा था। उसके अच्छे तो दोनों छोटे लड़के हैं। जैसा कहो वैसा करते तो हैं।

रणछोड़ इतना बड़ा हो गया है अभी हल की मूँठ पकड़नी नहीं आती । नरसंग, माना, मोहन आदि के लड़के तो अभी इस से छोटे हैं किन्तु वे हमेशा काम के लिए तत्पर रहते हैं । यह तो कहता कि एकाध बटाईदार रख लो या फिर कोई मजदूर रख लो । जिसके घर इतनी सारी जमीन हो वह क्यों मजदूरी करेगा ?

रणछोड़ अपने पिता से ही नहीं, मित्रों से भी कहता फिरता था कि मैं मजदूरी करने के लिए नहीं पैदा हुआ हूँ । यद्यपि उसने पढ़ाई छोड़ दी थी, फिर भी उसने अपने निर्णय में परिवर्तन नहीं किया था । चौमासे भर में उसने एक ही काम किया था । किसी दूसरे गाँव से, पडोस के मुहल्ले में आ बसे चतुर के घर पर उसने अपनी बैठक बना ली थी । चतुर की बड़ी लड़की गोरी दो बार ससुराल जाकर वापस आयी कि तीसरी बार कभी गयी ही नहीं । वह किसी न किसी काम से अक्सर सारंग आती-जाती रहती थी । एक दिन वह किसी अन्य जाति के युवक से हँस-हँसकर बात कर रही थी कि रणछोड़ ने उसे देख लिया था । एक दिन गोरी को अकेले वापस आते देखकर रणछोड़ के मन में इच्छा हुई कि क्यों न उसके मन की थाह ली जाये ? गोरी उससे भी हँस हँसकर बात करने लगी । किन्तु रणछोड़ को इतने से संतोष नहीं हुआ । उन लोगो ने क्या बातें की ? कहाँ कहाँ गये ? क्या किया ? आदि वह तो सबकुछ जान लेना चाहता था । "तुम तो बेशर्म होकर कंचुकी में हाथ डाल दो ऐसे हो रणछोड़ भाई ।" गोरी का इस तरह से मटक-मटक कर बात करना रणछोड़ को पसन्द आ गया था । उसने हाथ बढ़ाकर गोरी की खुली पतली कमर में चिकोटी भर ली थी । वह उभरे हुए लाल दाग को सहलाती हुई पास के बाड़े की ओट में खिसक गयी थी । रणछोड़ ने गोरी के पेटीकोट के ऊपर का, काँच की तरह चमकता हुआ हिस्सा भी देख लिया था । वह आस-पास देखने लगा । गोरी पास के खेत में घुस गयी और आदम कद ऊँची फसल में छिपकर खड़ी हो गयी । कोई यात्री नहीं दिखाई दे रहा है इसका विश्वास होते ही रणछोड़ भी खेत में घुस गया था । गोरी उसकी पकड़ में आ गयी थी । वह भी रणछोड़ के जांघिये में हाथ डालकर बैठ गयी थी। "ये काँटे .." वह इससे अधिक कुछ न बोल सकी थी । पास में पड़े दो-तीन काँटो को उसने हाथ से हटाते हुए गोरी के कपड़े ऊपर उठाने शुरू किये थे । गोरी ने उसका हाथ हटाते हुए उसकी ओर दया और तिरस्कार की दृष्टि से देखा था ।

"तू देख तो सही रांड ·" कहते हुए रणछोड़ ने गोरी के शरीर पर अपना अधिकार जमा लिया था । खुरदरी जमीन पर गोरी की पीठ छिल गयी थी । दोनों की हाँफ शान्त होते ही जब उसने उठना चाहा तो रणछोड़ ने फिर उसकी जाँघ दबा ली । "अभी भी ··?" रणछोड़ ने कोई उत्तर नहीं दिया और उस पर झुकते हुए उसकी गरदन पर अपना दाँत जमा दिया । "मार डालना है क्या ?" "साली मर जाये तो अच्छा है । सारंग के लफंगे तो तबाह होने से बच जायेंगे ?" गोरी ने कहा आज पहली बार वह किसी के वश में हुई है । यूँ कोई बात करते-करते

पीछे पीछे आये तो वह भला क्या कर सकती है। गरीब घर की लड़की की औकात ही कितनी ! फिर भी किसी के साथ सोने के बदले वह जान दे देना पसन्द करती। "बस . बस बस झूठी कहीं की, इस मामले में तो तू मुझसे भी अधिक होशियार निकली।" गोरी ने रणछोड का बस्ता लेकर नीचे बिछा लिया था। वह बहुत छटपटाई किन्तु रणछोड़ ने उसे नहीं छोड़ा। उसने उसे तीसरी बार अपने अधिकार में लिया। "झूठ न बोलती तो छोड़ देता।"

इस घटना के बाद रणछोड़ अपने साथियो से गोरी की बात अक्सर करता। चतुर को इस घटना का पता चल गया था। किन्तु किससे कहे कुछ ! एक बार तो भर दोपहर में वह और उसकी पत्नी कहीं से लौटे तो घर का दरवाजा अन्दर से बन्द पाया। काफी देर के बाद जब दरवाजा खुला तो उन्होंने किवाड़ के पीछे दो पैर झाँकते हुए देखे थे। उन्हें मालूम था कि वे पाँव किसके थे। पत्नी मटका लेकर घर से बाहर चली गयी थी और चतुर लोटा लेकर। किन्तु वहाँ से चले जाने की रणछोड़ को जल्दी नहीं थी। आज वह अठन्नी लेकर आया था···

चतुर की पत्नी ने रो-रोकर पधी से शिकायत की थी। लेकिन वह उसे खड़े खड़े ही चीर डालने की धमकी देने लगी। गरीब घर की औरत, बेचारी असहाय सी वापस चली गयी थी। पधी ने अपने मन को यह कहकर समझा लिया था— बचपन में तो सब नंगे होते हैं.. इस रांड की बिटिया ने ही मेरे बेटे की आदत खराब की होगी। उस दिन वह ईंधन लेने आयी थी तो उस गड्ढे की ओर क्यों गयी थी ! किसी दिन लड़के को पटाती हुई पाऊँगी तो छिनाल की टाँगें तोड़ दूँगी। पूरा गाँव जानता है कि वह छिनाल सारंग के लुच्चों-लफगों से चवन्नी वसूल करती फिरती है। बुढऊ से कह दूँ तो अभी चार छः आदमी एकत्र होकर उसके बाप को बुलवाएँ और पाँच सात रुपये दंड कर दें। तब सारी कमाई भूल जाये। इस तरह रणछोड़ को राह मिली थी।

जिस दिन नरसंग ने रणछोड़ को मंदिर के पास भटकते, ताक-झाँक करते हुए देखा था, कंकू ने उससे कुछ बात की थी। रात्रि-क्लास में देवू ने गोरी को शामिल करके स्वयं को चर्चा का केन्द्र बना लिया था। दोली माँ जीवित होती तो जरूर उसका झोंटा पकड़कर निकाल बाहर करती। बदजात औरतों की तो वह सख्त दुश्मन थीं ही, यदि वह गाँव की लड़की हुई तब तो उसकी आ बनी। उसे तालकुएँ में डूब मरने की भी सलाह देती। दोली माँ की मृत्यु के बाद कंकू के पास अब कोई ऐसा न था जिससे इन विषयों पर वह बात करके मन का बोझ हलका करती। अतः नरसंग को ही कभी कभी उसकी बातें सुननी पड़तीं।

उस मुहल्ले में नाम लिखने हरजीवन और लवजी गये थे। गोरी पड़ोस के घर में बैठी थी। थोड़ी देर पहले ही अनरी ने उसे चोटी करवाने के लिए बुलाया था। लवजी ने दोनों के नाम लिखे। अनरी अपने बाप की इकलौती लड़की थी। बड़े लाड़-प्यार से पली थी। ससुराल वाले भी सुखी थे। किसी के बारे में भी वह

कुछ भी बोलते हुए संकोच नहीं करती थी। उसके लिए अच्छे-बुरे में कोई भेद न था। जो अच्छा लगे वह अच्छा है और जो बुरा लगे वह बुरा। यही उसका सिद्धान्त था। काम होता तो वह गोरी को बुला लेती और काम निकल जाने पर उसे गाली देकर भगा देती थी। उसके और रणछोड़ के बीच के अवैध संबंधों से वह परिचित थी। एक बार शाम को वह गोरी के साथ दिशा मैदान गयी थी। वापसी में रणछोड गोरी को टक्कर मारता हुआ आगे निकल गया। अनरी बोले बिना नहीं रह सकी। "का कातिक के कूकूर अस सूंघत फिरत है, गाँव भर के साला।"

रणछोड़ बिफर उठा। खड़ा हो गया–

"कीका कहत है रे ?"

"जे अस होये ऊका !"

"अस तौ अस सही. तुहरे ठिंगने भतार से तौ अच्छे हन ?"

"गाँव भरके सार, गाँव कै आदमी होय के कस नंगी बात कहत है ?"

"साली नंगी बात तौ खुद बोली है, हमका कूकर बोलत है कुकुरिया ?"

"अब आगे से हट जा नाहीं तौ अपनी मांई क बुलाइत है।"

"बलाब. साली।" कहते हुए वह अनरी की ओर झपटा। गोरी कुछ बोले इसके पहले ही रणछोड़ ने हाथ उठाना चाहा। किन्तु अनरी ने झुके हुए रणछोड़ के कंधे पर इतनी जोर से लोटे का वार किया कि वह वहीं गिर पड़ा। फिर पड़े ही पड़े बोला 'दस दिन तू हमार पाँव न चाटत फिरं तौ हम भीमा करसन के लड़का नाहीं।"

"तू कीके लड़का अहिस, सारा गाँव जानत है।" कहते हुए अनरी आगे बढ़ गयी। रात को सोने के पहले उसने गोरी को बुलाकर कहा–"उसे कह दिहिस कि कबौ अब हमरे पास मां आये तौ ऊके नूनी काट डारब।"

दूसरे दिन मौका मिलते ही गोरी ने रणछोड़ को अनरी का संदेश दे दिया। जब तक उसे चित नहीं दूँगा तुझे हाथ नहीं लगाऊंगा – कहते हुए रणछोड़ आगे बढ़ गया था। उसके बाद अनरी और गोरी दोनों उससे सावधान हो गयी थीं। रणछोड़ को मौका नहीं मिल रहा था। और जबसे वे दोनों रात्रि-क्लास में आने लगी थीं तबसे तो और भी उसके लिए सब कुछ मुश्किल हो गया था। वह देवू से मिलने के बहाने अनरी पर निगाह रखने के लिए मंदिर पर आया था। उसने स्वप्न में नहीं सोचा था कि वहाँ नरसंग बैठे होंगे। फिर तो मंदिर में पाँव रखने की उसकी हिम्मत नहीं हुई थी।

नरसंग ने माला बनियान की जेब के हवाले की और रणछोड़ के पीछे पीछे चल पड़े।

आकाश में तारे न थे। किन्तु बारिस का कोई अंदेशा न था। नरसंग ने सोचा चलो भीमा के घर होते चलें। इस उम्र में लड़कों को डाँटेंगे तो प्रभाव पड़ेगा। एक बार ढीठ हो जाने के बाद तो फिर जैसे पत्थर पर पानी।

किन्तु वहाँ पत्नी का रवैया देखकर नरसंग को लगा कि यहाँ कुछ भी कहना निरर्थक होगा। उन्होने भीमा द्वारा ही चिलम पी और घर आ गये। मुहल्ले में उनके आने की बात सुनकर जेठा पीछे पीछे उनके घर पहुँचा। कंकू और नरसंग रणछोड़ की ही बात कर रहे थे। उनकी चिन्ता का विषय था कि मंदिर में पढ़ने आने वाली लड़कियों में से किसी के साथ रणछोड़ छेड़खानी करे और नाम देवू का आये तो ? ऐसी स्थिति में झगड़ा हो जाये और आपसी दुश्मनी हो जाये तो ? जैसे नीचो की दोस्ती बुरी होती है वैसे ही दुश्मनी भी।

जेठा आते ही उनकी वातो मे हिस्सा लेने लगा। पहले तो वह रणछोड़ का पक्ष लेता रहा किन्तु बाद में उसने मजाक छोड़कर रणछोड़ की, अनरी को चित्त करने वाली प्रतिज्ञा के बारे में स्वयं सबको बताया। गोरी ने किसी से इस बारे में कभी बात की होगी जिसे जोइती ने सुन लिया था। पत्नी ने उसी दिन सारी बात जेठा को बता दी थी। जेठा इसी घटना का इन्तजार कर रहा था कि भतीजा अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करे तो उसकी पीठ ठोके, हाथ से नही, लाठी से।

"नाहीं जेठा भैया, घरे फिर न तकरार किहौ। चहै जौन होय रणछोड़ अबहीं लड़का है। अपने बुढऊ क कहेब, वे उके नब्ज जानत हैं। उनके बात मान कै लड़का सीधा होय जाये।"

"हमरे बुढऊ खुद जब सीधे न होय तब . तुमहूँ भौजी कस भोली मीली बात करत हौ ? सही बात बताई हमका तो कोबो फरक नाही पड़त। अरे अनरी का ? अपनी महतारी वे इज्जत भले न लेय। जब से उके ननियौरे वाले हमका मारिन है तबसे तो हम सब छोट दीन है। तबसे तो वे न हमार भाई है न दुश्मन। अरे ईतौ हम कुछ दिन महादेव मा बैठिन और देवू ने हमका दुई अच्छर पढ़ाया इसे हमें लाग कि देवू के काम मा—"

जेठा अचानक रुक गया इससे ककू की उत्सुकता बढ़ने लगी।

'ऊके महतारी का बात करत हे तुमका मालुम है ? तुम्हार लड़का चतुर की लड़की का मनाय कै खुश कीन करत है। काहे ? अरे अब हमसे कहवाऊ न। कौनो दिन ऊके पेट फूल जाये और देवू के नाम आय जाये तौ ? भले काम रणछोड़िया करै या काला चोर।"

"अरे हम काल देवू से कह देब कि ई सब बन्द कर देय।" ककू बहुत व्याकुल हो उठी थी।

"काहे बन्द कर देय ?" नरसंग ने दृढता से कहा।

"केहू के बाप के डर लागत है का ? अरे हम मर गइन है ?" जेठा थोड़ा रुक कर फिर आवेश के साथ बोला—'सुनौ फिर, यही एक महीना पहले के बात होये। अपने गाँव के पाँच-सात जने बैठे रहे। ऊमां भीमा और माना भी रहा। एक जने का कहत रहे मालुम है ? ई नये पेड़ का काट डारा जाये तो ?"

"कौन था ऊ ?" नरसंग की आवाज में कंपन था। तुमका तौ नरसंग भाई

ई बात सुनके थोड़े गुस्सा आवा । हमतौ ई बात सुनके सुध-बुध के हाथे माँ लाठी लैके खड़े होय गइन रहा । अरे सब बीच मां न पड़ गये होते तो मानिया के भाई के हड्डी पसली तोड़ डारित । देवू ऊके का बिगाड़िस है ? गाँव माँ एक लड़का आगे निकरा तौ आस-पास के गाँव मां सोमपुरा-सोमपुरा होत है । ऊ योजना वाले साहेब अपने भाषण माँ देवू के उदाहरण देते हैं । और ये साले खुस होय के बदले जलत हैं ।"

जेठा की बात में नरसंग लीन हो गये थे । किन्तु उगते हुए पेड़ को काट देने वाली बात सुनकर कंकू के कलेजे में शूल-सा चुभने लगा था । उससे वह घबरा गई थी । क्रोध और भय के बीच में वह फँस गई थी । नरसंग ने चाय बनाने के लिए कहा । फिर भी वह थोड़ी देर तक खोई-खोई बैठी रही । नरसंग वह बात समझ चुके थे । उन्हे पिथू भगत की याद आयी । उन्होने अच्छे अच्छो से भी किस प्रकार टक्कर ली थी यह बात कंकू को बताई । कंकू में स्फूर्ति आ गयी । वह चाय बना लायी ।

थोड़ी देर तक और बात करने के बाद जेठा उन्हें आश्वासन देकर चला गया ।

नरसंग को बड़ी रात तक नींद नहीं आयी । वर्ग तो कब का पूर्ण हो गया होगा । लड़के नये घर की छत पर पढ़ते होंगे । लवजी सो गया होगा, आदि विचार आते रहे । देवू से रणछोड़ वाली बात करे या नहीं ? उसे कौन सी सलाह दें ? अपनी पढ़ाई को त्यागकर इन लोगो को ककहरा रटाने से क्या लाभ ?

एक सप्ताह के बाद पता चला कि देवू पाँचो वर्गो को पढ़ाने वालो को प्रति सप्ताह बदल देता है । सलाह लवजी की थी । "मै ही हमेशां क्यों लड़कियो को पढ़ाता रहूँ ?" लड़कियो का छोटा वर्ग छोड़कर पुरुषो के बड़े वर्ग का कार्यभार सँभालने के पूर्व ही लवजी ने गोरी का नाम सूची से काट दिया था । उसका दोष यह था कि पास मे बैठकर समझा रहे लवजी की जाँघ में उसने चुटकी भर ली थी । देवू ने लवजी के निर्णय को मान्य रखा था ।

गोरी का आना बंद होने के बाद अनरी ने आना बंद कर दिया था । रणछोड़ अभी अपनी प्रतिज्ञा भूला न था । किन्तु अब कभी रास्ते में जब वे दोनों मिल जाते तो उनकी आँखो से अंगारे गिरते थे । जन्माष्टमी के मेले में तो गोरी ने उन दोनों को बातें करते हुए देखा था ।

लगभग चार दिन बाद कुछ रात गए अनरी लोटा लेकर निकली । वह गोरी के आँगन से चुपचाप निकल रही थी । पाँव में दर्द होने की वजह से गोरी अभी तक सोई न थी । अनरी की चाल देखकर उसे कुछ शक हुआ । वह भी चुपचाप पीछे-पीछे चल पड़ी । गडहे के एकदम पास पहुँचकर उसने देखा कि रणछोड़ अनरी को उठाकर साफ जगह पर ले जा रहा है । वह रणछोड़ ही था । शराब की गंध भी आ रही थी । वह नजदीक गयी ।

देखते ही चिल्ला पड़ी–"अरे दौड़ो-दौड़ो रणछोड़ ने अनरी को मार डाला ।"

बचाने वाले पहुँचे इसके पहले ही रणछोड़ और अनरी उठकर पास के बाजरे के खेत में भाग गये। वह वापस आ गयी। उसके पाँव उठाए नहीं उठ रहे थे। गुहार मचाकर उसने कितनी भयानक भूल की थी, गोरी को इसका ख्याल आ गया था। किन्तु अब क्या किया जा सकता था ?

उसकी पुकार पर आ पहुँचे लोगों से उसने कहा कि भूत देखकर वह डर गयी थी। अनरी तो कब से अपने घर में सो रही है। अनरी की माँ ने गोरी की ही बातों का समर्थन किया। उसने कहा, "कहो तो जगाऊँ !"

"अरे ऊ बेचारी का कतना बुरा लागे ? सोवे देव और कवौ बातौ न करेव।' गोरी की माँ ने भी सलाह दी।

बाद में आ पहुँचे जेठा ने वापस जाते समय धीमे से कहा—"गाँव माँ सबसे जादा हुशियार निकरी ई ससुरी।"

दूसरे दिन जेठा ने रणछोड़ को ढूँढ निकाला। उसे सलाह दी देख, तुहरे मामा के लड़का अहमदाबाद मां कहूँ होटल चलावत है। ले ई भाड़ा और आजै चला जा। और छ महीने से पहले गाँव मा पाँव न रखेव नाहीं तौ हाथ-पाँव तोड़ डालब। समझेव ?

"तुमका का है ?" पास में बुढऊ को बैठा देखकर रणछोड़ में इतना बोलने का साहस आ गया था।

"हमका का है ? रांड...के..." कहते हुए जेठा रणछोड़ पर टूट पड़ा। अलाव के पास बैठा भीमा सब कुछ देखता रहा लेकिन पास नहीं आया।

करसन ने बीच में पड़कर जेठा से रणछोड़ को छुड़ाया और उसे भी जेठा की सलाह मान लेने की सलाह दी। रणछोड़ आँखें पोंछते-पोंछते खेत से बाहर निकल गया।

बुढऊ घर पहुँचकर इस लहजे में बोले जैसे कोई शुभ सूचना दे रहें हों 'बहू मुँह मीठा कराऊ। अपने रणछोड़ क नौकरी मिल गयी है। आज दिन अच्छा रहा तौ हम खेते से सीधे भेज दीन।" पथी ने दो दिन रोकर मन को समझा लिया। भीमा ने आकर शाम को सारी बात बताई थी। और आश्वासन दिया था कि लड़का बाहर रहकर सुधर जायेगा। तीसरे दिन स्वयं पथी ने भी कहा था: जेठाभाई ने अच्छा ही किया। मेरा मझला भाई भी पहले ऐसा ही था। वह अहमदाबाद में जाकर अब सोने के बटन पहनने लगा है। मेरा रणछोड़ तो उससे अधिक होशियार है।

12

रणछोड़ के जाने के एक सप्ताह बाद ही सोमपुरा से वेली चली गयी। सवेरे ही वह सारंग पहुँच गयी थी। वहाँ से वह स्टेशन की ओर जा रही बस में बैठ गयी। दुर्भाग्य से एक पुलिसवाला भी उसी बस में यात्रा कर रहा था। उसने जब पुरुषवेश में यात्रा कर रही वेली को देखा तो उसे यह पुरुष कुछ विचित्र लगा।

धोती के नीचे खुले पाँव में कड़े पहने हुए थे। बस के धुंधले प्रकाश में वह ठीक से नहीं देख सका। कमीज के ऊपर उभरा हुआ सीना देखकर भी वह सचाई नहीं जान सका था। किन्तु जब बस चल पड़ी और आगे चलकर बस जब मुड़ी तो वेली के सिर पर बंधा हुआ बालों का जूड़ा देखकर वह समझ गया। अब वह आराम से बैठ गया। जल्दी क्या है, स्टेशन आये तब देखा जायेगा।

जमादार ने अपना कार्यक्रम बदल दिया और वेली को लेकर वापस सारंग आ गया। वेली ने घमला के ही वस्त्र पहन रखे थे, अतः यह स्त्री किस जाति की है यह जान लेना कठिन न था। उजाला हो गया था। वेली सुन्दर लग रही थी। जब तक कोई उसे छुड़ाने नहीं आता तब तक कम से कम चौबीस घण्टे उसे बंद करके तो रखा ही जा सकता था। किन्तु अब कुछ नहीं किया जा सकता। जब देखा था तभी बस में से उतार लिया होता तो ठीक था।

जमादार ने उसे सारंग की पुलिस के हवाले कर दिया।

उधर घमला पासपड़ोस में वेली के बारे में पूछकर अब बैठा उसका रास्ता देख रहा था। आयेगी ही। आयेगी नहीं तो जायेगी कहाँ? और फूलजी जैसे दयनीय बच्चे को छोड़कर तो वह भला कहाँ जायेगी?

घमला को यह नहीं मालूम था कि फूलजी के कारण वेली बहुत दुखी रहती है। लड़के को जन्म देने के कारण साल-दो साल तक तो वेली बड़ी शुभ मानी जाती रही थी। लोग कहते कि पत्नी के आने के बाद घमला में एक शुभ परिवर्तन आया है और किसी से कर्ज लेने के बाद वह उसे याद रखकर वापस कर देता है। किन्तु जबसे उसने जाना है कि फूलजी का मस्तिष्क ठीक नहीं है तब से उसके भी हाथ-पाँव ढीले हो गये हैं। अब सब लोग उसे दया की दृष्टि से देखते हैं।

वेली को दुखी देखकर घमला उसे आश्वासन देने के बजाय उस पर झुंझलाने लगता। वेली की बेचैनी बढ़ जाती।

चाहे वह खेत से वापस आ रही होती, चाहे पानी भरने जा रही हो, अक्सर उसे कोई न कोई मिल ही जाता जो फूलजी की बात शुरू कर देता। वेली मन ही मन बेचैन हो उठती किन्तु क्या करती? पूछने वाले को कोई न कोई उत्तर तो देना ही पड़ता। किसी की उपेक्षा तो की नहीं जा सकती।

उसने छः महीने पहले ही घमला से कहा था—चलो खेत में झोंपड़ी बनाकर रहते हैं। मुझसे यह सब सहन नहीं होता। जानवर अपने बच्चों को नहीं पाल पोस लेते हैं? हम भी अपने फूलजी को पाल-पोस लेंगे और मेहनत-मजूरी करके रूखी-सूखी खाकर गुजारा कर लेंगे। गाँव में रहने की जरूरत ही क्या है?

किन्तु घमा ने हँसकर वेली की बात टाल दी थी।

वेली की परेशानी का क्या इलाज है? इस बारे में उसने कभी सोचा ही नहीं था। वेली तो अक्सर उसे कुछ बताती ही नहीं। वह मन ही मन घुटती रहती। घमा कुछ कहता तो वह हुँकारी भरना भी भूल जाती। फूलजी रोता रहता, जमीन

पर हाथ-पाँव रगड़ता रहता और वह सोचती रहती । उसकी समझ में ही नहीं आता उसकी सन्तान क्या चाहती है । धमा यह सब देखकर उसे डाँटता । वेली चुपचाप सुन लेती और बिल्कुल निर्विकार भाव से फूलजी को देखती रहती । धमा फूलजी को उठाकर उसे गुड़-रोटी खिलाता और उसे गोद में लेकर वेली के पास आ बैठता, "अरे पगली, अस का देखत बैठी रहत है ? तुहार आँख देख कै तो लागत है कि ऐसे तू पगलाय जाओ ।"

माना जब पुलिस लेकर धमाभाई के पास पहुँचा और उसने जब वेली के भाग जाने के बारे में बताया तो धमाभाई की जुबान से बस इतना ही निकला :
–"हम उका कबै कहा रहा कि तू पागल होय जाबी । आज सही होय गवा ।"

'ले, ई तुहार दरखास्त और आपन रपट लिख लाइन है । एक मां दस्तखत कै देव ।" माना ने कहा ।

"काहे ?"

"काहे ? वेली तुहार जेवर लैके नाहीं भाग गई है ?"

"हम अबहीं घरे नाहीं देखा ।"

"घर बाद मां देख लिहौ, पहले रपट तौ कर देव ?" पुलिस वाले की सलाह में कोई नवीनता नहीं थी । किन्तु धमाभाई उसे अबोध भाव से देखते रहे ।

'दुई बात है धमा ! जौ बिना बोले चाले औरत क घरे लै आवै क होय तौ उठौ चलौ । तुहरे अबहीं कौनों बैंत न होय तो जमादार साहेब क बाद मां खुश कीन जाये । बात क बतंगड़ बनै ऊके पहिले ऊका वापस लै आवा जाय ।'

धमाभाई बिना कुछ बोले चुपचाप पुलिसवाले की ओर और माना की ओर देखते रहे । माना ने विकल्प सुझाया ।

"और जौ ऊका सीधा कर देय क हो तौ यह साइत ऊ बन्द है । ई कागज पर दस्तखत कर दे ।"

"हम ऊके खिलाफ रपट करी ? कस बात करत हौ मानाभाई ?" धमाभाई की आवाज बिल्कुल थकी हुई थी ।

तौ तूका करे क का है ?"

"कुछ नाहीं । हम का करेक है ?" धमा की इच्छा यह भी बोलने की नहीं हो रही थी । अब तक की उसकी सारी समझदारी कबूतर के पंख की तरह झड़ गयी थी ।

"कुछ समझ मां आवे अस बोल ।"

"कुछ समझ मां आवत होय तो भगवान कसम । नाहीं तौ हम बैठे रहित चुपचाप ? सारी दुनिया क मूड़ पर न उठाय लेइत ?"

"तौ ऊका वापस न लौबी ?"

"हम काहे वापस लायी ? हम भगावा है ?"

'पर तुहार जेवर ?"

"चूल्हा मां जाय जेवर ।"

"बाद मां पछताबौ ।"

"बाद कै बिचार हम कब कीन है ?"

चलते समय माना ने फिर कहा–"अब हीं विचार कर ले धमा, कुछ करे क होय तौ ।"

"हमका कुछ नाहीं करे क है। ऊके जौन मन होय करै। आवे क होय तौ वापस आवे जाय क होय तौ जाय । जस ऊकै मरजी ।"

"धत् तेरी की नामर्द ।" माना ने तिरस्कार से कहा और चला गया ।

शाम हो चली थी, किन्तु धमाभाई सुबह से वहीं बैठे थे ।

नरसंग आ पहुँचे । उन्हें देखकर धमा की आँखें भीग गईं ।

"अरे ईमां सही बात का है ?"

"जौन तुम सुन होव वही सही है । हमका कुछ मालुम नाहीं न ।"

"मुला ऊका एक बार वापस तौ लै आवे क रहा ।"

"ऊ हमार फजीहत किहिस है ।"

"ठीक है, मुला ....." नरसंग थोड़ी देर चुप रहे किन्तु धमा से आँख मिलते ही वे आगे बोले – "चहै जस होय मुला अतने दिन तक ऊ तुहार घर संभारिस है। आज जमादार ऊकै उपर हाथ उठावैं, गाली देय, तौ तुमका अच्छा लगे ?"

"जमादार कै ऊ का बिगाडिस है जौन ऊ मारे ?"

"मरबै न करे, जुल्मौ करे । तू पुलिस कै जात क नाहीं जनतेव ! शिवा बाबा अपनी आँखी से देख कै आवा है कि जमादार मार-मार कै वेली से सब कबुलाय लिहिस है कि ऊ तुहरे घर से ही नाहीं भीमा के घर से भी जेवर चोराय कै......"

"भीमा के घर से ?"

"सब झूठ है । तू मानिया क नाहीं जनतिस ? ऊ सार आगे मीठ-मीठ बात करत है और पीछे...... ।"

"हम ऊका जानित तौ है मुला ऊ वह बेचारी क काहे हैरान करत है ?"

"हमार मान तौ एक काम कर । तुहरे घर से जौन गवा होय देख ले ।"

"घर मां रहा का जौन जाये ?"

"तू हमार बात नाहीं समझत । माना का करे जानत हौ ? तुहार जेवर भीमा कै आय ई बात मनवाय कै.. ... "

"ठीक है ठीक है ऊ जौन करावै तौन कम ।"

"हम दूसर बात कहित है । एक तौ तुहार जेवर जाये, दूसरी वेली क जेल होये । लोग तौ यही कहि हैं कि धमा कै औरत जेल मां गई ।"

"ठीक है ।"

"अब ठीक है ठीक है" बोले बिना खड़ा होय जा और सारंग जाय के... ।"

"सारंग जाई ? तुम साथ आवते तौ ....."

"ठीक है, आइत है। तू तयार होय कै हमरे घरे आव। हम रोटी खाय कै दस-पाँच घरे होय तौ रख लेई।"

धमा पीछे-पीछे आ पहुँचा। कंकू ने कसम देकर उसे रोटी खिलायी। फिर बोली –

"भैया हमार मानौ तो जस कै साथे तस न बनौ। जाव औ ऊका छोड़ाय कै ले आऊ।"

"भौजी, हम पिछले जनम मां कौन पाप कीन रहा कि......" धमा जोर से रो पड़ा।

कंकू ने आश्वासन भी ऐसा दिया कि धमा का घाव हरा हो जाये – "भगवान मुट्ठी भर मांटी दिहिन वहू...... ।"

"बस अब बात बन्द करौ। हम जाई।"

कंकू को विश्वास था कि नरसंग साथ में हैं तो अवश्य ही वेली को वापस ले आयेंगे।

नरसंग को विश्वास था कि वह साथ में है इसलिए जमादार धमा की बात अवश्य सुनेगा। फिर भी कुछ लिखने-पढ़ने की नौबत आयी तो? देवू को बुला लिया होता तो अच्छा होता। "जा धमा स्कूल से देवू को बुलाय लाव।"

धमा देवू को साथ लेकर जब पहुँचा तो जमादार चाय पीते हुए, नीचे बैठे नरसंग को डाँट रहे थे।

"तुम नीचे क्यों बैठे हो पापा? यह कुर्सी खाली पड़ी है।" देवू ने आग्रह से कहा –"उठो, माना काका के पास बैठो।"

"हमारे ऑफिस में तू हुक्म कर रहा है लड़के? शाबाश। क्यों पटेल, तुम्हारा लड़का है यह?"

जवाब देवू ने दिया –

"हाँ, मैं मैट्रिक में पढ़ता हूँ। मेरा नाम देवू है।"

"अच्छा – अच्छा पहचाना। आपकी प्रशंसा मैंने सुनी है। समाजसुधार का काम आप अच्छा कर रहे हैं। आपकी लाइब्रेरी और रंगभूमि के चौतरे के उद्घाटन में मैं आने वाला था किन्तु ऐसा ही केस आ पड़ा था इसलिए नहीं आ सका था।"

"स्कूल के नये रूम का उद्घाटन होने वाला है तब जरूर आना। जल्दी हो तो खाना खाकर तुरन्त वापस आ जाना।"

जमादार ने आभार व्यक्त किया और मूल बात पर आ गये।

नरसंग को आश्चर्य हो रहा था कि जो तर्क उन्होंने स्वयं दिये थे वही तर्क देवू भी दे रहा था। जब फरियादी ने कोई फरियाद नहीं की है तो किसी राह चलते को किसी कानून के तहत पकड़ सकते हो?

जमादार के पास संक्षिप्त सा जवाब था। "56–109 के तहत। हमें किसी

पर शक हो तो हम जांच के लिए पकड़ सकते हैं। और इस केस में तो सबूत, फरियाद और साक्षी सब हैं।"

"फरियाद किसकी है साहेब ?" पुलिस चौकी के बाहर बैठे हुए धमा ने अन्दर आते हुए पूछा।

"चोरी की फरियाद भीमा करसन के नाम की है। मानाभाई के द्वारा।"

"तो मैं भीमा काका को बुलाकर लाता हूँ। यदि उन्होंने फरियाद नहीं की होगी तो मानाकाका मैं तुम्हारे खिलाफ फरियाद करूँगा, कान खोलकर सुन लो।"

"देवूभाई, जरा धीरे से बोलो, यह पुलिस चौकी है।"

"आप लोगों का बर्ताव ऐसा ही रहा तो मुरझाने लगेगी पुलिस चौकियाँ" देवू का चेहरा लालसुर्ख हो गया था। नरसंग ने उसे शांत करने के लिए उसके कंधे पर हाथ रखा, "भाई, मैं तो तुझे समझदार समझता रहिन। साहब के इज्जत करक हम प्रजन के फरज है।"

"मुझे मालूम है मेरा फर्ज क्या है। और इन अधिकारियों को भी जानता हूँ। साहब ने अब तक तो आपका कहना माना नहीं है। मुझे बोलने दो।"

"तो बोलो, तुम्हारे बहनोई एम.एल.ए. हैं उसी के बल पर .."

"देखो जमादार, चापलूसी की बातें एक तरफ रखो। जिस दिन, मेरे बहनोई अन्याय कर रहे होंगे उस दिन मैं उन्हें भी इसी तरह कहूँगा।"

"छोटी उम्र में अधिक घमंड अच्छा नहीं होता।"

"यह घमंड नहीं आत्मविश्वास है। आपने वेली को गैरकानूनी ढंग से बन्द कर रखा है।"

"अपराधी ने जब स्वयं अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो तो मैं तुम्हारी बात सच कैसे मानूँगा ? लिखापढ़ी हो चुकी है।"

"सब की जड़ में वही माना है।" नरसंग ने धीमे से किन्तु देवू की ही दृढ़ता से कहा।

"मैं जानता हूँ कि आप अच्छा से अच्छा दस्तावेज फाड़ डालते हैं। आपको संकोच हो रहा हो तो लाओ मैं फाड़ डालूँगा।"

"सारे कागज तो विजापुर चले भी गये।"

"अच्छा ! सच कह रहे हो ?"

"तुम्हारे आगे मैं झूठ बोलूँगा ?"

"ठीक है। मैं आपकी बात सच मान लेता हूँ। चलो जमानत के कागज तैयार करो। पप्पा आप जमानत देकर वेली काकी को छुड़ा लीजिए। मैं देखता हूँ कि अपने मुखिया और जमादार क्या कर लेते हैं।"

"तुम इस तरह अधीर मत बनो। थानेदार साहब को आने दो। शाम तक हम कोई न कोई राह निकाल लेंगे।"

"कोई जरूरत नहीं है इसकी । यह बताओ कि यह केस जमानत पर छोड़ा जा सके ऐसा है कि नहीं ? बोलो, बोलते क्यों नहीं ?"

"ठीक है, कागज तैयार करवाता हूं । तुमको जाना हो तो जाओ । तुम्हारा यह मैट्रिक का साल है फाल्तू पीरियड मत बिगाड़ो ।"

"सलाह के लिए धन्यवाद । मैं अपनी पुस्तकें लेकर अभी वापस आता हूँ । हेड मास्टर से पूछ लूँगा । वे एल.एल.बी. हैं ।"

'वे मेरे भी मित्र हैं ।" जमादार ने आत्मरक्षा करते हुए कहा । "कभी-कभी मुझे उनसे सलाह लेनी पड़ती है ।"

"मैं तो ऐसा मानता था कि कानून जानने वालों को ही जमादार और थानेदार जैसे पद पर बैठाया जाता है । किन्तु अभी भी पहले जैसा ही डंडा-राज चलता है ।"

अपनी पुस्तकें लेकर, स्कूल से वह जब लवजी के साथ पुलिस चौकी पर वापस आया तो उसने, करसन बुढऊ, जेठा, हबड़ा बुढऊ, जीवन तथा अन्य दो युवकों को वहाँ बैठे चाय पीते पाया । वेली घूंघट निकाले बाहर बैठकर पाँव से कड़ा निकालने की कोशिश कर रही थी । धमा उसे तिरछी नजर से देख रहा था । नरसंग उठकर बाहर आ गये, "तुम दूनौ भाई घरे जाव, बुढऊ ने आते ही रास्ता निकाल दिया ।"

करसन बुढऊ की नयी पगड़ी पर एक उड़ती नजर डालकर देवू ने अपना मुँह घुमा लिया । उसके मन में एक ही बात रह रहकर उठ रही थी ।

शाम को जब सब घर वापस आये तो अलग-अलग शब्दों में एक ही बात लोगों की जुबान पर थी- 'वली को किराया देकर धमाभाई ने कलोल की बस में बैठा दिया । जेवर भी उसे ही ले जाने दिया । यह तो कैसा आदमी है ! कोई अपने ही हाथो से अपना घर बिगाड़ता है ?"

शाम को खाये-पिये बिना धमाभाई फूलजी को लेकर खेत में चले गये ।

फूलजी जागकर बैठ जायेगा या अपनी माँ को पूछने लगेगा तो वह क्या बतायेगा ? बोलने के अतिरिक्त धमाने कुछ सीखा नहीं है । आज वह भी व्यर्थ हो गया ।

आकाश में तारे जगमगा रहे थे । वृक्षों की पत्तियाँ खड़खड़ा रही थीं और फूलजी सो रहा था ।

धमा की आँखों में उगते हुए सूरज की लालिमा थी । अतीत की किसी रात को उसी गीत का लय फूट पड़ी जो गीत कभी उसने गाया था-

जगत में एक से सुख-दुःख यह बस मान लो भाई !
रखे जिस भांति तुझको राम वैसे ही रहो भाई !

13

हेती आठ महीने के बाद मायके में आयी थी । बड़ा भानजा वालजी स्वेच्छा से गोकुलिया में रुक गया था । छोटा विपुल तो अभी ग्यारह माह का ही था । स्वस्थ था । जो बुलाये उसी के पास चला जाता था । वह इतना सुन्दर था कि जो भी उठाता चूमता रहता । हेती चुप रहती । किन्तु कंकू को यह सब अच्छा नहीं लगता था । वह कहती "अरे लड़की तू क्यों किसी को देती है ? ऐसे नजर लग जायेगी तो ?"

"हमका सबका नजर नाहीं लाग और ईका नजर लाग जाये ?"

"तुम सब तो घूर मां खेलके बड़े भयेव है, और ई तो..."

"सोने के थरिया मां, आँय ? कुछ नाहीं अम्मा । सब जगह एकै बात है । सबके घरे माँटी के चूल्हा है ।"

जतन, चेहर, हेती और कंकू आदि बैठी हेती की सास की बात कर रही थीं कि इतने में लवजी ने आकर बताया कि धमा ने घर में क्रियाकांड रखा है । हीरा ने पूछा—

"कंकूमाँ धमाभाई ने क्रियाकांड काहे रखा है ?"

"वेली क वापस बलावे क ।" चेहर ने कहा ।

"अरे नाहीं रे, अस काहे बोलत है ?" जतन ने कहा—"जौन आदमी खुद भाड़ा दे के विदा कर देय ऊ आदमी ?"

अब वह कभी वापस नहीं आयेगा । धमा चाहे जितनी मानताएँ मान ले, क्रियाकाड करे । कुछ लोगों का कहना है कि गत माह धमा अहमदाबाद गया था । वहाँ पर उसका पता चला था । झोंपड़ी में रहती है और किसी बनिया के घर महराजिन का काम करती है । धमा ने साथ लाने के लिए आग्रह किया किन्तु उसने कहा कि वह सोमपुरा को छोड़कर और कहीं भी उसके साथ जाने के लिए तैयार है । अब पता नहीं धमा की बातों में कितना सच है कितना झूठ ? किन्तु कंकू का मानना है कि वह मिली ही नहीं होगी । नहीं तो इस क्रियाकांड के झमेले में पड़ने की क्या जरूरत थी ? किसी ने बताया कि फूलजी बोलने लगे इसलिए यह सब कर रहा है । कोई विपत्ति हो तो टल जाये ।

"कुछ नाहीं जाति बाहर की थी चली गयी ।"

"मरी गयी तो, लड़का का बेचारो जेणी बहू मां की तरह पालत है ।"

"चहै जितना पाले लेकिन माँ तो माँ होत है ।"

कंकू वेली का विरोध भी करती है और उसकी प्रसंशा भी । क्यों ? किसी की समझ में नहीं आ रहा था । हेती को इससे कोई विरोध न था । वह जानती थी की दो तरफा बोलने की माँ की आदत नहीं है । जैसा देखती है, बोलती है । सच...सच... ।

हेती का स्वभाव भी ऐसा ही था । और सब तलतं की बात निकलते ही

गालियाँ देने लगतीं जैसे तखत ने उनका कुछ बिगाड़ा हो । जब कि हेती चुपचाप सुन लेती ।

"हेती बहिन का ई बात सही है कि ऊ रांड खमांड वाले सजू के घरे दुई दिन रह कै आयी है ?" जगत ने पूछा "और कपड़ा छोड़ कै आयी है ।"

"सब बात तौ यही करत हैं ।"

"दुई दिन !" हीरा को बेहद आश्चर्य हुआ । "फिर ऊके भरत ऊका घरे रख लिहिस ?"

"घर कै चाभी तखत के पास होय तो !" चेहर ने कहा । उसकी बात सच थी । हेती ने समर्थन किया ।

तखत का पति तन-मन दोनों से दिवालिया था । रेहन पर रखी हुई चार बीघा जमीन भी छुड़ा नहीं सका था । अन्त में दूसरी दो बीघा जमीन रमणलाल को बेचकर "अभरामकुल नंदावे" गिरवी रख चार बीघा को वापस प्राप्त कर लिया था । बस एक ही खेत उसके पास था । न कुवां था और न बैल ही । तखत भैंस की देखभाल करती और वह स्वयं कहीं मिलती तो मजूरी कर लेता । नशे की भी ठीक-ठीक आदत थी । किसी के घर मजूरी पर भी न गया होता तब वह दोपहर में खाने घर पर आता था । किसी साधु ने उसे बताया था कि तखत किसी दिन उसका गला घोंटकर मार डालेगी और कहीं गाड़ आयेगी । यह प्रारंभ के पाँच वर्ष संभाल ले तो फिर कोई चिन्ता नहीं । वह स्वयं को बचा रहा था और तखत को पति की भूख नहीं थी । लोगों का कहना था कि तखत के बड़े लड़के की शकल सोमपुरा के करसन मुखिया से मिलती है । और दूसरा तो ऐसा है जैसे चतुर के लड़के का जुड़वा भाई । हेती का सोचना दूसरा था । उसे ऐसा लगता कि गलबा भाई छोटे रहे होंगे तो ऐसे ही रहे होंगे ।

...अच्छा हुआ वे समय पर सचेत हो गये और उस डायन के चंगुल से छूट गये ।

हेती को कभी कभी तखत पर दया भी आती । वह किसी का कुछ ले नहीं लेती । किसी की कभी निन्दा नहीं करती । घर में यदि कोई चीज खत्म हो तो किसी के यहाँ माँगने नहीं जाती । अपनी निन्दा सुनकर परेशान नहीं होती । फटकार सुनकर बस इतना ही कहती – आज तक मैंने किसी का घर बरबाद नहीं किया है ।

तखत को घर व्यवस्थित चलाने में भी तकलीफ महसूस होती थी । वह घी बेचकर अपना फुटकर खर्च निकालती थी । उसका दानेदार घी जब व्यापारी अपने डिब्बे में डालता तो उसका जी जल जाता । वह जानती थी कि ये व्यापारी लोग घी में वनस्पति घी मिलाकर बेचते हैं । एक दिन उसने भी सोचा । मुनाफा व्यापारी ही क्यों कमाएं । वह खुद ही क्यों न मुनाफा उठाए । वह स्वयं दूर-दूर तक जाकर घी बेचती ।

कुछ दिनों बाद स्थानीय व्यापारियों के दुष्प्रचार की वजह से सारंग में उसके घी का खपना बन्द हो गया। अतः अब वह दूर-दूर तक दूसरे क्षेत्रों में भी घी बेचने जाने लगी। सबेरा होते ही बटुली सिर पर रखकर चल पड़ती। उसके साथ हमेशा एकाध स्त्री होती थी। गाँव के शिवा महाराज तथा पना कुंभार ने भी यह काम सीख लिया था। गाँव से बाहर निकलने के बाद चार-पाँच लोग इकट्ठा हो जाते थे। दो गाँवों के बीच में खड़ा कोई बरगद का पेड़ या किसी खाली पड़े खेत में वे लोग थोड़ी देर विश्राम करते। वहीं उन लोगों का बिना संबंध का अंधकार ऊँचा-नीचा होता, उलटता-पुलटता। जो लोग उन्हें हवसखोर और नालायक मानते थे वे भी उनकी बातें ध्यान से सुनने के लिए समय निकाल लेते। शिवा तखत के साथ किए भोग का वर्णन करता। रेशम की तकिया जैसी उसकी छाती और फूल के ढेर जैसे उसके नितंब उसके – आदमी तो क्या कोई देवता भी उस पर मिट जाने को तैयार हो जाता। वह एक बात विशेष भार देकर कहता कि अन्य स्त्रियों की तरह तखत लकड़ी की तरह निष्क्रिय नहीं पड़ी रहती। सावन की भरी बहती नदी पर जैसे तैर रहे हों ''। इस बात में छिपी हुई कामुकता सुनने वाले को अपने साथ प्रवाहित कर ले जाती। किन्तु एक बार शिवा अपना होशोहवास खोकर पूरी जाति की बात करने लगा था तब वह मार खाकर घर गया था। उसके बाद तखत ने उसे अपने साथ लाना बन्द कर दिया था। पना कुंभार गूँगा था, कहना मानता था। उस दिन उसके साथ ही था।

जिस आदमी ने तखत को, घी खरीदने के लिए बुलाया था उसने वनस्पति घी के बारे में भी सुन रखा था। बदरी और गोकुलिया दोनों गावों से वह सख्त नफरत करता था। वह पहले हीरुभाई और फिर रमणलाल को गालियाँ देता। किसी रिश्वत के मामले में उसे अपनी पुलिस विभाग की अच्छी खासी आमदनीवाली नौकरी से हाथ धोना पड़ा था। घर जमीन थी। सस्ती मजूरी में उसे मजदूर भी मिल जाते थे। सजूजी का बुलौआ आने पर कोई उसे मना करने की हिम्मत नहीं करता था। सब मनमाना काम करते थे। सजूजी शायद ही कभी खेत की ओर ध्यान देते। उनके दो पत्नियाँ और एक विधवा भाभी थी। चार घर थे। दो नये, दो पुराने ' नये घर उनकी महफिल के लिए थे। खरगोश का माँस और महुए की शराब। प्याज भी साथ में। उसके बाद नौकरी छिन जाने का गम उन्हें नहीं सताता। नशा अपनी सीमा पार कर जाता तो सजूजी बड़बड़ाने लगते- "मैं राजा के भाई का लड़का। पढ़-लिखकर होशियार हुआ और बुरी सोहबत में पड़कर दिवालिया हो गया। अपने कुल की ओर भी नहीं देखा। घर में दो पतिव्रता स्त्रियाँ। उनसे तो कभी बोलना भी नहीं और इस घर में उन हरामियों के साथ महफिलें उड़ावें ? मैं चोटी पर से गिरकर गंदी नाली में आ पड़ा हूँ। सालों तुम जैसे के साथ ही रहकर अपनी इज्जतदार नौकरी से हटाया गया हूँ। मोती चुगने वाला हँस आज मछलियों से पेट भर रहा है।" बोलते-बोलते वे रोने लगते।

रोकर फिर संतुलित हो जाते और डींग हाँकने लगते। अपनी पिछली महफिल में उन्होंने सुना था कि गोकुलिया की स्त्रियाँ मिलावट वाला घी बेचने आती हैं और उन में भी जो ऊँची ताजी आती है उसे देखा हो तब तो हजूर घी तो क्या वह जहर भी बेचती हो ले लेने की इच्छा होने लगे। शराब के प्रभाव में सजूजी उसी रात गोकुलिया जाकर घी और जहर दोनों खरीद लाने के लिए तैयार हो गये थे। किन्तु जो लोग नशे में नहीं थे उन लोगों ने उन्हें रोक लिया था। और वादा किया था की घी का घड़ा लेकर जैसे ही वह खमाड की नींव में पाँव रखेगी कि हम आपको तुरंत सूचित करेंगे। आप उसे दुमहले पर बुलाकर पूरी की पूरी खरीद लेना।

तखत कंपाउण्ड के अन्दर तो आ गयी किन्तु ऊपर जाने में उसे घबराहट महसूस हो रही थी। इतने में बाहर से ठाकुर साहब का एक हजुरिया आया। "लाओ नीचे उतारो घी देखूँ।" कहते हुए उसने उसे बातों में लगा लिया। ठाकुर साहब ने कहा कि उनकी भैंस के ब्याने में अभी महीने डेढ़ महीने की देरी है। वे सारा घी खरीद लेंगे। तखत को विश्वास था कि खरीदने वाले को उसका घी पसन्द आयेगा। अब तक वह, हल्दी को उबालकर वनस्पति घी में डालकर उसे असली घी में परिवर्तित कर देने की कला सीख चुकी थी। वैसे भी वह उस बनावटी घी में भी चौथा हिस्सा देशी घी अवश्य डालती थी। उसे किसी ने बताया कि ठाकुर साहब के पाँवों में गठिया है इसीलिए बार-बार जीने से चढ़ने-उतरने में उन्हें तकलीफ होती है।

तखत को कुछ शक भी हुआ था। उसके अतिरिक्त उसमें थोड़ी सी संकोच की भावना अभी शेष थी। जीने पर चढ़ते समय उसे आज पहली बार आदमी से भय लग रहा था।

ठाकुर साहब ने घी की ओर देखे बिना ही पूछा—"क्या लोगी?"

तखत ने भाव बताया। वह ठाकुर साहब से निगाह नहीं मिला सकी।

जा रे, जा फाटक बन्द कर आ। भाव-ताल ठीक से किया जा सके —ठाकुर साहब ने अपनी आँखें छोटी करते हुए कहा। उस आदमी के साथ ही नीचे उतरने की बात सोचकर जैसे ही अपना घी उठाने के लिए झुकी, ठाकुर उसके पास खिसक आये। उसकी पीठ पर एक हाथ रखकर उन्होंने अपने दायें हाथ से रामपुरी चाकू चाँप दबाकर खोला। खटाक की आवाज सुनते ही तखत के होश उड़ गये। वह पतोली पर हाथ रखकर बैठ गयी।

ठाकुर साहब ने अपनी बात एकदम नग्न शब्दों में उसे बता दी। और रामपुरी चाकू को घी के वर्तन में डाल लिया।

बापू का हजूरिया भी फाटक बन्द करके आ गया था।

तखत रो रही थी—तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ भाईसाहब, मुझे जाने दो।

ठाकुर साहब और उनका हजूरिया बहरे हो गये थे। वे तो तखत के शरीर की प्रशंसा कर रहे थे।

"हम तुहार का बिगाडा है ठाकुर ? हमका जाय देव, हमार बच्चे···"

"तेरे बच्चे ? ?" बापू हँस पड़े " तू तो अभी कुंवारी है।"

"मैं तो तुझे अप्सरा कहता हूँ, जैसे तपस्या भंग करने आ गयी हो।"

अचानक तखत ने कुछ सोचा। उसने घी के घड़े में हाथ डाला किन्तु चाकू उसके हाथ में आये इसके पहले ही ठाकुर ने पीछे से उसका हाथ पकड़ लिया। फिर तखत के कंधे में उन्होंने इतनी जोर से दाँत गडाया कि वह श्लथ हो गयी।

हजूरिया ने चाकू बाहर निकाल दिया। चोली की गाँठ और नाड़े को काटे जाते समय चाकू उसकी चमडी में भी धंस गया था। और उसके बाद अपने नंगे शरीर को देखने की उसमें हिम्मत नहीं थी। हाथ-पाँव के बंधे होने से वह चुपचाप आँखें बन्द किये खाट पर पड़ी रही। इस बार कौन आया ठाकुर या हजूरिया ? यह भी वह नहीं देख पा रही थी।

शाम को उसके हाथ-पाँव खोल दिये गये। उसे बैठाकर उसके हाथों में एक कटोरी सुखडी दी गयी। उसे वह चुपचाप खा गयी। चाय आयी उसे भी वह चुपचाप पी गयी और फिर लेट गयी। पेट में भयानक पीड़ा हो रही थी। काफी रात बीत जाने के बाद ठाकुर पुनः उसकी खाट पर आकर बैठ गये। तब उसने उन्हें बताया कि उसके पेट में ढाई तीन महीने का बच्चा है। इतनी पीड़ा हो रही है कि जैसे पेट बाहर आ जायेगा। सजूजी को कुछ भी सुनाई नहीं दिया। वे पता नहीं कौन सी भाषा में क्या बड़बड़ाये। जिसका सारांश यह था कि उन्होंने अब तक तो जबरदस्ती की थी। अब वे चाहते हैं कि तखत उन्हें प्रेम करे। उन्हें अपना पूरा शरीर ही नहीं पूरा जीवन समर्पित कर दे। उन्होंने तखत की मसली जा चुकी छाती पर अपना सिर रख दिया और उसकी चिकनी जाँघों में सुबह की कोमलता तलाशा करने लगे।

तखत चुपचाप बैठी रही।

थोड़ी देर बाद वे उठे। एक छोटी सी अलमारी खोली और वहां से खड़े-खड़े बोले : "देख ये सौ के नोट हैं।" दूसरी अलमारी खोली : देख, ये सारंग की बनियना के जेवरात हैं। गत सप्ताह ही मुझे मरने में मिल गये थे। तुझे इन में से जो ले जाना हो ले जाना। किन्तु तू एक बार मुझे ..सुन रही है ?"

पता नहीं वह आदमी क्या बक रहा है ? तखत ने उसे देखा। सजूजी उस समय अपने घुटने पर सिर रखे बैठे थे। बड़बड़ा रहे थे -- मुझे किसी ने कुछ नहीं दिया। सब कुछ मुझे लूटना पड़ा, मुझे खुद छीनना पड़ा। तेरी जवानी को भी जैसे मुझे लूटना पड़ा। बाँधना पड़ा। मुझे माफ कर दे तखत।" उसकी जाँघों पर सिर रखकर वे नशे की हालत में ही रोने लगे थे। तखत पेट और कंधे के दर्द को अभी भूली नहीं थी किन्तु रामपुरी चाकू दिखाने वाला, यम जैसा दिखने वाला आदमी भी इस समय छोटे बच्चे की तरह उसकी जाँघों पर सिर रखकर रो रहा था। भीख माँग रहा था। जब उसके हाथ-पाँव बँधे हुए थे। तब वह सजूजी का गला ऐंठ

देने का अवसर ढूंढ रही थी। इस समय वह इस शराबी को दोनों पाँवों के बीच दबाकर भी मार सकती थी। किन्तु उसका क्रोध उतर चुका था। अब उसमें स्वार्थ भावना जग चुकी थी। पैसे और जेवरातों से भरे हुए खानों को देखकर उसकी शून्य हो चुकी बुद्धि पुनः सजीव हो चुकी थी। बस अब तो इस पार या उस पार।

सजूजी के गले पर हाथ रखते हुए उसने कहा–

"हमका पूरे दिन बाँध के काहे रखेव ? और तुम अकेले कम रहे व का ?" वह संभलते हुए उठी। अशोक वृक्ष टूटा नहीं था, मात्र झुक गया था।

ठाकुर साहब ने सुस्त आवाज में बताया कि वे नशे में थे। उसके पास कोई और आया था उन्हें मालूम नहीं।

"झूठ काहे बोलत हो। शराब तो अब्हीं कै पियो है। सब चले गये तब।"

बापू ने तखत की प्रसंशा की। उसे संगमरमर की पुतली कहकर सवा लाख रुपये की उसकी कीमत लगाई।

"बस करौ अब। चलौ उठौ। जब तुम अतनी दौलत देत हौ तौ हम आपन दुख भूल के जौन चहत हो सब दिहै देइत है। तुहार अरमान पूरा करे देइत है। उठो। हमरे जगह पर आउ। कहाँ है तुहार साफा, जौने से हमार पाँव बाँधे व रहा ?"

बापू ने अलमारी की ओर इशारा कर दिया। तखत ने उन्हें अपनी जगह लिटा दिया। उनके पाँवों को बाँधा, हाथ बाँधे और दीवार के पास पड़ी हुई अपनी चोली ढूँढकर उसे फाड़कर उसकी डाट बनाई। ठाकुर ने हैरान हुए बिना पूछा। यह क्या कर रही है ?"

"तुहरे मुँह से शराब के गन्ध आवत है। वही बन्द करित है।"

ठाकुर चुप हो गये। तखत ने उनकी कमर को हाथों से कसते हुए उन्हें चुटकी भरनी शुरू की। अपने शिथिल और पीडित अंगों से उन्हें संतुष्ट किया। फिर उठी। कपड़े पहने। पता नहीं क्या सोचकर अपने घाघरे से सजूजी के मुँह को ओढ़ाया। अपने बदन पर साड़ी लपेटी। उन्हें घी से नहलाया। अपने खाली घड़े में उसने नोट और जेवरात भरा और दीवार के सहारे खड़े भाले को लेकर रात के तीसरे पहर वहाँ से चल पड़ी।

घर पहुँचकर उसने देखा दोनों बच्चों के साथ उसका पति सो रहा था। उसे आश्चर्य हुआ। जो व्यक्ति इन बच्चों से कभी बोलता भी नहीं था वही इन बच्चों के साथ माँ की तरह सो रहा है। उसकी सारी थकान दूर हो गयी।

फटी हुई, खाली कोठी में उसने घड़ा रखा। ऊपर से फटी गुदड़ी डाली। फिर अंदर बैठकर ठंडे पानी से नहाई। कपड़ा पहनकर, खाट बिछाई। और छोटे लड़के को लेकर लेट गयी। पति उठा तो वह जाग रही थी। जाँघों के जोड़ में पीडा हो रही थी।

'काहे वापस आयी ?"

वह कुछ नहीं बोली। पति ने मुँह धोकर फिर उसकी ओर देखा।

"सजनी ने छोड़ दिया?"

"तुमसे के कहिस?"

"पभाकाका से खभांड कै एक आदमी शाम का कहगा रहा। ऊ तौ कहत रहा कि तुमका चार-छ दिन राख कै कहूँ बेच आये। या फिर मार कै कहूँ गाड़ दे ये। पभाकाका तौ हथियार लै के दस-बारा आदमी क भेजत रहें। मुला मूलजी कै रमणवा है न वहीं बीचे मां पड़ गवा। ऊ सार एक तौ आपन दुई बीघा जमीन ले लिहिस और..."

"ऊ जौन किहिन, अच्छा किहिन। नाहीं तौ फजीहत होत।"

"फजीहत। अरे तू हमरे फजीहत मां बाकी का राखि स है? कौनो दिन हमरे व पास आइस है?"

"लेव आऊ।" पेट का दर्द भूलकर वह बोली।

"शरम नाहीं आवत? सबेर होत है।"

"फिर बाद मां हम मर जाई तौ?"

"का भवा है?" पास में आकर उसने तखत के माथे पर हाथ रखा।

तखत ने इतना ही बताया कि शायद पेट गिर जाये। जैसा तुम्हें शक है कि ये बच्चे तुम्हारे नहीं हैं। किन्तु मुझे बराबर याद है ये बच्चे तुम्हारे ही हैं। ओह...उसकी आवाज धीमी पड़ गयी, आँखें भीग गयीं। उसे याद आया जब वह आयी थी तब यह आदमी माँ की तरह दोनों लड़कों को सीने से चिपकाये सो रहा था।

शाम को पेट का बच्चा गिर गया। रात होते-होते उसे बुखार चढ़ आया। पडोसियों ने उसके घर की ओर देखा भी नहीं। जब दो दिनों तक उसका बुखार नहीं उतरा तो पति डाक्टर माने को बुला लाया।

पन्द्रह दिनों में तखत ठीक हो गयी। और पन्द्रह दिनों तक इन्तजार करके पभा मुखिया ने गाँव के पंचों का निर्णय कहलवा भेजा — वनस्पति घी बेचने के लिए बाहर जाने वाले को अब जाति बाहर कर दिया जायेगा।

तखत की बात निकलने पर सब कहते — पाप का फल जरूर भोगना पड़ता है। यह तो डाक्टर होशियार था और उसने बचा लिया नहीं तो कुत्ते की मौत मरती। अब कैसी सीधी हो गयी है। शाम को पति के पीछे-पीछे आती है और सिर पर पल्ला ओढ़कर गोबर-पानी करती है।

तखत की निंदा में हेती ने भी अपना सुर मिलाया। किन्तु वह सोचती थी कि उसके पास पैसे कहाँ से आये। उसने सुना था कि तखत पक्का मकान बनवा रही है। सामान तो मँगाना भी शुरू कर दिया है। क्या यह सब "वनस्पति घी के बल पर हो रहा है? ससुराल जाने के बाद हेती ने रमणलाल से पहला प्रश्न यही पूछा था। रमणलाल ने तो उसे और भी अचमे में डाल दिया था। तखत उनसे मिल गयी थी। वह अपनी दोनों बीघा जमीन वापस माँग रही थी, डेढ़ गुना पैसा देकर भी।

हेती ने रमणलाल को सलाह दी कि वे जमीन को वापस कर दें।

रमणलाल ने तखत को आश्वासन दिया था कि दो-तीन बीघा जमीन तो उसे किसी की भी मिल जाएगी किन्तु अभी ताबड़तोब खर्चा करोगी तो खतरा है। पुलिस को मालूम है कि तुम्हारे पास पैसा कहाँ से आया है। वे लोग खाता-तलाशी के लिए आने वाले थे। किन्तु मैंने ही उन्हें रोका। बिना किसी रपट के तुम तलाशी किस आधार पर लोगे? वह घर में जो खर्च कर रही है वह पैसा तो मैंने दिया है।

तखत पाँव छूकर चली गयी थी। शाम को पति को भेजा था। उसने सब कुछ साफ साफ बताया था। वह शरीर बेचकर कमाई करके लायी है, किसी भले आदमी के घर हाथ नहीं डाला है।

रमणलाल ने हेती को बताया था कि तखत की निगाह अब बदल गयी है। पहले वहाँ सिर्फ आग थी अब प्रकाश हो गया है। उसका घर अब ऊपर उठ जाए तो आश्चर्य नहीं। तखत के खेत में कुँआ खोदा गया और पचास हाथ के बाद पानी मिल गया यह जानकर रमणलाल को खुशी हुई। गलबा ने थोड़े दिनों के बाद दस बीघे के परती में कुँआ खुदवाने की बात की थी जिसे रमणलाल ने तुरन्त स्वीकार कर लिया।

गलबा ने देखा आज तखत गंभीर दिखाई दे रही थी। उसके हाथों में नई चूड़ियाँ थीं और गले में तुलसी की माला। किसी और के गले में सोने की चैन भी शायद ही इतनी अच्छी लगे।

गलबा की पत्नी के साथ तखत बात कर रही थी – "इसी घर के सहारे हम सुखी हैं।"

14

वह उस भयानक रात में जो भी लेकर आयी है, असीम वेदना के बदले में लायी है, सजूजी की शर्तों को पूरा करके लायी है, चोरी करके या किसी का घर बिगाड़कर नहीं लायी है। उसके पति ने उसे बताया था : पूरी बात सुनने के बाद रमणलाल कुछ बोले नहीं थे। किसी अन्य के समक्ष स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता तखत ने महसूस नहीं की थी।

वैसे भी, कौन पूछने वाला था? खमाण में तीन दिन तक कैद रही उसके पूर्व भी तो वह लगभग जाति बाहर ही तो थी। कोई यदि सम्मान करता भी था तो किसी लालच की वजह से अथवा किसी के घर सौरी पार करने आयी हो तो।

उसने सुना था कि सजूजी रिपोर्ट करने वाले हैं। इस बात को आज महीना पूरा हो रहा है। फिर सुनाई पड़ा था कि बदला लेने वाले हैं। किन्तु ऐसा भी नहीं हुआ। उसने मन ही मन सोच लिया था कि यदि कभी पूछा गया तो पूरी की पूरी घटना को ज्यों का त्यों बता देगी। वैसे भी अब वनस्पति घी बेचने के लिए

कौन जा रहा है ! हनुमानजी के मन्दिर में उसने हेती की साक्षी में कसम खाई है कि वह अब कभी लालच नहीं करेगी। पति की और बच्चों की देखभाल करेगी। यह जनम तो खराब हो गया है किन्तु अगला जनम भी खराब न हो जाये इसलिए विधाता को प्रसन्न करेगी। यात्रा, व्रत, उपवास सब कुछ करेगी। अपने सौन्दर्य को नष्ट कर देगी। लोगों की निगाहों को लुभानेवाली जाँघों को सुखा देगी।

खमाण वाली घटना को लोग भूलने लगे थे कि अचानक विपत्ति पुनः तखत पर आ पड़ी। सजजी पंचों को लेकर गोकुलिया आ पहुँचे। पंचों में एक तो पभा-मुखी के समधी भी थे।

जो भी घटा था लोगों को बताकर सजजी ने अच्छा नहीं किया था। अब उनके हजूरिए ही उनका मजाक उड़ाते थे। वे सरेआम कहते फिरते कि ठाकुर साहब बुरे फंसे। गये थे दूसरे के जानवर को अपने खूँटे से बाँधने, खुद बंध गये। उल्टासीधा करके उन्होंने जो भी एकत्र किया था वह सब एक ही बार में चला गया।

उन्होंने बदला लेने के कई उपायों पर विचार किया। अन्त में यही एक मार्ग उन्हें कम खतरनाक लगा। पंचायत करने वालों को उन्होंने महामुश्किल से साथ आने के लिए राजी कर लिया। उनका इरादा था कि पंचो के बीच तखत को चोर प्रमाणित करेंगे और इस प्रकार खोई हुई इज्जत पुनः मिल जायेगी। जाति में पुनः सम्मान प्राप्त हो जायेगा। और यदि ऐसा नहीं होता है तो क्या फर्क पड़ता है ? इज्जत तो चली ही गयी है।

पंचों को लेकर सजजी सीधे मुखिया के घर पहुँचे। उन्हें लेकर वे लोग तखत के घर जाना चाहते थे। किन्तु पभा मुखिया जल्दबाजी को अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानते थे। उन्होंने पंचों से कहा कि किसी पढ़े-लिखे आदमी की सलाह लेनी चाहिए। हमारा रमण एल. एल. बी. है। बुलाऊँ उसे। भला मना कौन करता ? सौभाग्य से रमणलाल घर पर ही थे। आये मेहमानों का हाल-चाल पूछा। फिर बोले –

"देखो सजजी, जल्दबाजी करोगे तो तुम्हें ही हानि है। तखत का भला क्या जायेगा। सब जानते हैं कि वह पहले क्या करती थी। और सब यह भी जानते हैं कि उसने अब सब कुछ छोड़ दिया है। इसलिए अब गाँव में कुछ लोगों के दिल में उसके प्रति कुछ सहानुभूति भी पैदा हो गयी है। उन लोगों में एक मेरी पत्नी भी है। फिर, तखत पहले से ही कुछ परोपकारी भी है। दो-चार लोगों से मिल भी चुकी होगी। पभाकाका की बात तो मैं नहीं जानता किन्तु मेरे दिल में उसके प्रति हमदर्दी है। उन्होंने सजजी की आँखों में आँख डालते हुए कहा – "मेरी मानो तो उसे माफ कर दो। आप सुशिक्षित आदमी हैं। जो बुरा करेगा–भगवान उससे स्वयं बदला लेगा।"

पभा मुखिया को उम्मीद नहीं थी कि रमणलाल इतनी स्पष्टता से तखत का पक्षपात करेंगे। सभी के साथ वे भी रमण की बातों के प्रभाव में आ गये।

सजूजी ने समझा कि बाजी गई हाथ से। उन्होंने दयनीय निगाहों से पंचों की ओर देखा। कोई राह निकालो। उस छिनाल को बिना मजा चखाये यहाँ से वापस जायेंगे तो लोग मुँह पर थूकेंगे।

उसके घर जाना न हो तो उसे यहीं बुलाया जाये – मुखिया के समधी ने उपाय सुझाया।

रमणलाल ने सोचा कि शायद ये लोग उसे देखना भी चाहते हैं। उन्होंने उसे बुलाने का उपाय खोज निकाला।

पभा मुखिया के छोटे लड़के की पत्नी सगर्भा थी यह बात तखत जानती थी। संदेश मिलते ही कामकाज छोड़कर तुरन्त आ पहुँची। आकर देखती है तो यहाँ कुछ दूसरा ही मामला है। पास के कमरे के दरवाजे की ओट लेकर बैठ गयी।

मुखिया ने उसे कहा हम इस मामले को यहीं रफादफा कर देना चाहते हैं। एक बार तुम पर रिपोर्ट हो जायेगी तो .

"होय देव फरियाद। हम वनस्पति बेचत रहित ई बात सही है। मिलावट के बदले मां सरकार हमें सजा देये। मुला ई सजूजी कौन मुँह लेके आये हैं? हमका धोखा दे के ऊपर बुलाइन। तीन-तीन जने मिलके हमका चूसिन, शराब पी-पी के, हमारी जगह पर कौनो जानवर होत तो वहू मर गवा होत। इनके जुलम से हमार पेट गिर गवा। पंदरा दिन दवाई खावा। डाक्टर कहत रहा कि अब हम कबौ माँ न बनब। ई कौने मुँह से फरियाद करि हैं। करें देव फरियाद। कोरट माँ एक-एक के नाम न लिखाई तो हमारा नाम तखत नाहीं। हमारा माँ-बाप कौनो अच्छे घरे विवाह किहे होतें तौ किसकै हिम्मत रही कि हमरी तरफ ऊँगली उठावे।" कहते कहते वह रो पड़ी।

थोड़ी देर वह कुछ बोली नहीं। बीच में दो बार तखत की सिसकियाँ सुनाई दीं।

सजूजी ने अपने साथियों की ओर देखा। फिर बोले - "तू इतना ही बता दे मेरी आलमारी से कितनी रकम लायी थी?"

"कहूँगी कोरट माँ। तुम जौन दिहौ रहा तौन लाइन है। हम तुहरे गाँव माँ घी बेचे गई रहा देह बेचे नाहीं। हम समझा रहा कि तुम नशे माँ पछतात हो। हम मुँह बन्द रखी ई से हमैं लालच देत हौ। ई बात सही है कि तुहरे अलमारी से हम खुद निकारा रहा। तुम तौ खटिया मां बाँधे रहेव। हमारा घाघरा ओढे।"

सजूजी ने कूदकर तखत के एक ठोकर मारी। उन्होंने ताककर मारा था छाती में किन्तु लगा उसके कंधे में। तखत खड़ी हो गयी। सजूजी ने फिर से लात चलाई। तखत ने टाँग पकड़ ली। उनका जूता उसके हाथ में आ गया। वह झपटी।

रमणलाल बीच में आ गये।

"अलग हटो तौ रमणभाई, इनक मूँछ न उखाड़ डाली तौ हमार नाम तखत नाहीं ।" वह बाघिन की तरह छलांग मारने आ रही थी ।

इस बीच पभा मुखिया के घर की स्त्रियाँ वहाँ आ पहुँचीं । वे खुद मुखिया को ही सुनाने लगीं –

"नाहीं करे क है मुखियागीरी । छोड़ देव सब । झूठ क बहाना से बिचारी क बलायेव है और अब सब जने मिल कै ऊकै इज्जत लेय बैठे हो ? शरमाव जरा शरमाव ।"[१]

इस अनपेक्षित सहानुभूति के मिलते ही तखत का क्रोध आँसू बनकर बहने लगा । उसे पता नहीं क्या हुआ कि उसने दरवाजे पर अपना सिर इतनी जोश से पटका कि पीतल की जंजीर काँपने लगी । मुखिया ने घर की औरतों से कहा कि मुझे ताना देने से अच्छा है कि तखत को सँभालो । नहीं तो यदि वह मर जायेगी तो हमको ही पाप लगेगा ।

"पाप ? हमरे मरे से भला पाप लागे ? हम तौ कुलटा होई, छिनार होई, हम तौ हिडिंबा होई ।" वह फिर से दरवाजे से टकरायी । किन्तु इस बार उसका क्रोध पहले जैसा न था ।

"मुझे तो बस इतना कहना है" रमणलाल ने कहना शुरू किया "कि सजूजी का फर्ज था कि वे जाँच करें कि तखत के बरतन का घी शुद्ध था या नहीं । यदि मिलावट थी तो उन्हें फरियाद करनी चाहिए थी । किन्तु उन्होंने तो कुछ दूसरा ही किया । तीसरे ही दिन मेरा भाई गलबा कहता था कि गाँव में सब नामर्द बसते हैं । नहीं तो पच्चीस आदमी हाथ में लाठी लेकर नहीं निकल पड़ते ? मैंने यदि उसका सोचेसमझे बिना समर्थन किया होता तो उसने आक्रमण कर दिया होता । तब तुम बचे होते ठाकुर ?"

"हमारे आदमी छिप गये होते क्या ?" सजूजी के एक पंच ने कहा ।

"सब देखते रहते । सजूजी के साथ कोई नहीं आता । आज इनकी जात के सभी इज्जतदार आदमी इनकी हरकत से दुखी हैं ।"

–पभा मुखिया ने भी रमण की बातों का समर्थन किया ।

"हाँ बिना किसी गलती के कोई इन पर हमला करे तो सभी लोग जरूर आयेंगे । तब किसी को सजूजी के अवगुण ध्यान में नहीं आयेंगे ।" रमणलाल ने ठंडे कलेजे से कहा । इसका विपरीत असर पड़ा । सजजी उठ खड़े हुए । खाट पर पैर रखते हुए उन्होंने कहा–

"बस रमणलाल, अब बहुत हुआ । चुनाव में खड़े होना फिर आना । जैसे हम कुछ समझते ही नहीं हैं । चोर का पक्ष लेते हो । जरूर दाल में कुछ काला है । चलो सब । उठो । हम तो आये थे संप के भाव से । किन्तु ये तो तम्बाकू के धंधे में चार पैसे कमाकर फूल गये हैं । उठो चलो यूँ . गर्दन झुकाकर क्यों बैठ गए ।"

चाय तैयार हो गयी थी किन्तु सजूजी चाय पीने के लिए तैयार नहीं थे । वे पहले पंचों का निर्णय जान लेना चाहते थे ।

पभा मुखिया ने पहले कसम देकर सजूजी को चाय पिलायी । फिर निर्णय सुनाया ।

तखत ने निर्णय स्वीकार किया और उठकर अपने घर चली गयी ।

थोड़ी ही देर में तखत का पति तखत पर किये गये दंड के पन्द्रह मन अनाज का पैसा लेकर आया । उसने रुपयों को मुखिया के पास बिना कुछ बोले हुए रख दिया फिर हाथ जोड़कर सबसे राम-राम किया और चला गया ।

जाते समय सजूजी ने रमण की ओर तिरस्कार से देखा । यह संकेत था कि अभी हिसाब बाकी है । रमणलाल ने मन ही मन सोचा कि कभी यदि मौका मिलेगा तो तखत से कहेगा कि सजूजी के घर से लायी सपत्ति में से अब जो बचा हो वह किसी अच्छे काम में खर्च कर दे । यही सचमुच का पश्चात्ताप होगा । वह हेती से कह देगा । रमणलाल को इस बात से बड़ा आश्चर्य होता कि हेती जिसके अवगुण को जानती उसकी टीका जरूर करती किन्तु तिरस्कार कभी नहीं करती । क्या यह पिथू भगत के सस्कार हैं ?

पभा मुखिया खेत की ओर जाने वाले थे । रमणलाल उनके साथ ही चल पड़े । उन्हे तरह-तरह के विचार सता रहे थे । पूछा-

"मुखिया काका, आपने तखत के पुनर्विवाह की बात करके मुझे उलझन में डाल दिया है । उस स्त्री की ओर शायद आपने कभी निगाह ऊँची करके नहीं देखा होगा किन्तु मैंने देखा है । सुशिक्षित समाज में कोई स्त्री खूबसूरत होने के कारण भी सम्मान पाती है । मैं सोच रहा था कि यदि तखत आपके बड़े लड़के की पत्नी बनकर आयी होती तो हम लोगों के देखते ही देखते उसके लात खाने की नौबत न आती । यह भी जाने दो । मूल प्रश्न यह है कि तखत के हाथ से घी बेचने से लेकर अन्य जो भी उल्टे-सीधे काम हुए हैं वे होते ?"

"भाग नाम कै कौनो चीज होत है हो रमण ।"

"समाज बदले तो भाग्य भी बदल जायगा ।"

"ई सब तौ तुम और होरू जानो । हम लोग तो धरम और भगवान के डर के सीधे चलन और मुली हन । समाज और नेता और चुनाव ई सब तो आज है *काल न रहे । धरम सही है ।"*

रमण को लगा कि पभाकाका ने मेरी बात नहीं समझी है । वे इस समय यह पूछना चाहते थे कि पाप आदमी स्वयं करता है कि सामाजिक परिस्थितियाँ करवाती हैं । व्यक्ति, परिवार और समाज के बीच के सबंधों के बारे में चर्चा करके वे किसी [illegible] पर पहुँचना चाहते थे । किन्तु पभा मुखिया धर्म से भाग्य और भाग्य से [illegible] की सीढ़ियों तक ही जा सकते थे । परिस्थितियों का निर्माण कर [illegible] विचार ही उनके मस्तिष्क में नहीं उठता था ।

उन्होंने पुनः कहा–"हीरू ईमां समझे वाही से कहेव ।" किन्तु रमणलाल अभी निराश नहीं हुए थे ।

"मुझे यह बताइए कि एक बार पाप हो जाने के बाद उसका असर हमेशा के लिए पड़ जाता है कि किसी अच्छे काम से वह खत्म हो जाता है ?"

"कहावत तो ई है कि पुन्य पाप क नाश करत है ।"

"किन्तु पाप और पुन्य करवाता कौन है ?"

"लोभ । अच्छे बने क, अच्छे देखायक, नरकमां जाय से बचे क लोभ ।"

"आप तो बहुत कुछ जानते हैं ।"

"कुछ नाहीं जानित भैया, यही से तो एक धरम के मूल पकड़े बैठे नाहीं तो तुम्हारे अस भासण कर-कर के सारी दुनिया मां सुधार करे निकर पड़ित । तू अब ई सब लफडाबाजी बन्द कर और कौनो सुख–दुख के बात कर ।"

"अन्तिम प्रश्न । बस । यह बताइए कि आप अन्य मुखियों की तरह रिश्वत क्यों नहीं लेत ?"

"लेव, करौ बात । अतना धरम करे वाले से पूछत हो कि घूस काहे नाहीं लेइत ? काहे लेई ? लेके रखी कहाँ ?"

"आपको किसी प्रकार का व्यसन भी नहीं है ?"

"बीड़ा तो पीत है, पगले ।" उन्होंने बताया कि नरसंग ने बीड़ी पीनी भी बन्द कर दी । नरसंग अपनी आत्मा में उतरने वाला आदमी है ।

वे लोग नीम के पेड़ के नीचे बैठ गये । पभा मुखिया ने रमणलाल से कहा–सहजानंद स्वामी का एक भगत था–सगराम वाघरा । उसने एक विद्वान ब्राह्मण से एक बार पूछा था–"माया में मन होता है या मन में माया ?" "ई के जवाब मालुम होय तो बताऊ ?"

रमणलाल ने कागज पर सवाल लिख लिया ।

15

जिन मजदूरों ने रमणलाल और गलबा के साझे के कुएँ की खुदाई की थी वे ही सोमपुरा में भी आये थे । गोकुलिया में नदी नजदीक थी अतः पानी गहराई में मिला था । सोमपुरा में मजदूरी कम मिले यह स्वाभाविक था । नरसंग को मजदूरी के चालीस रुपये देने पड़े थे ।

जब से देवू ने पुस्तकालय का काम हाथ में लिया था देवू और नरसंग के बीच एक दरार सी पड़ गयी थी । प्रारंभ ही अशुभ हो गया था । समिति में सम्मिलित गाँव के प्रौढ़ लोग पुस्तकालय के स्थान के बारे में एकमत न थे । स्कूल किनारे पड़ रहा था । जिससे गाँव की शोभा में उसका कोई योगदान न था । ऐसा मकान तो मुख्य जगह पर होना चाहिए ।

देवू ने मकान का जो नक्शा प्रस्तुत किया था यह लोगों को पुस्तकालय कम मन्दिर अधिक लगता था। देवू का कहना था कि ऊपर छत न बनवाकर गुम्बद जैसा बनवाया जाय। यह योजना आर्थिक दृष्टि से भी कम खर्चीली थी।

लोगों का तर्क था कि ऐसा मकान टिकाऊ नहीं होता। माना ने ऐसे कुछ मकानों का उदाहरण भी दिया जो गिर चुके थे। किन्तु मुख्य समस्या यह नहीं थी कि मकान कैसा बने। समिति वालों में अधिकांश ऐसे थे जिन्हें मकान की मजबूती से कुछ लेना-देना नहीं था। उनका सवाल था कि मकान बनवाया कहाँ जाये ? देवू ने जिस जगह का प्रस्ताव रखा था वहाँ एक पीपल का वृक्ष था। वृक्ष के पास रहने वाले परिवार के सभी सदस्य इसलिए बहुत खुश थे कि अब वृक्ष काट दिया जायेगा। उनका मानना था कि जब तक पीपल की छाया हमारे ऊपर पड़ती रहेगी, हम सुखी नहीं होंगे। वहाँ फैली गंदगी भी दूर हो जायेगी।

किन्तु पीपल का वृक्ष काटे कौन ? समिति के सभी उम्रदराज लोग की तो बात ही छोड़ो, खुद देवू भी धर्मसंकट में था। उसने गीता पढ़ी थी। पीपल का महात्म्य उसे मालूम था। किन्तु वह वृक्ष काटने के पक्ष में इसलिए था कि पीपल के स्थान पर पुस्तकालय बनने वाला था। निजी स्वार्थ के लिए आदमी को पीपल नहीं कटवाना चाहिए किन्तु...

सभा विसर्जित हो गयी। लोग किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे। दूसरे दिन शाम को लवजी और माधव छोटी छोटी कुल्हाड़ियाँ लेकर पीपल की चौकी पर चढ़ गये। अभी उन्होंने एक दो वार ही किए थे कि माधव को नीचे खींच लिया गया। देवू रोके इसके पहले ही नरसंग ने लवजी को दो तमाचे पड़ चुके थे।

देवू लवजी के पक्ष में अधिक नहीं बोल सका था। उसे भी डाँट पड़ी थी। नरसंग ने बहुत समय बाद छोटे लड़के पर हाथ उठाया था और बड़े को मूर्ख और विधर्मी कहा था। देवू गंभीर हो चुका था। लवजी रोया तो नहीं किन्तु पूरे दिन उसने खाना नहीं खाया था। दूसरे दिन कंकू लवजी के पक्ष में आ चुकी थी। फिर भी वह खाने के लिए तैयार नहीं था। वह नरसंग की अपेक्षा पीपल पर अधिक क्रोधित था। पीपल कटे तो ही खाऊँगा।

उस समय तो उसे अपना संकल्प तोड़ना पड़ा किन्तु दूसरे ही सप्ताह ढेखा-डिया का एक मजदूर लाला के कहने से पेड़ काटने के लिए तैयार हो गया था। यद्यपि लाला का मकान पीपल के पेड़ से काफी दूर था किन्तु उनका ऐसा मानना था कि पीपल की वजह से ही वह निःसंतान हैं।

उसके पश्चात् तो जमीन मापने का काम, खुदाई और चुनाई का काम इतनी शीघ्रता से प्रारंभ हुआ कि लोगों को आश्चर्य होने लगा। देखते ही देखते उस स्थान की कायापलट हो चुकी थी। उसको पहचान पाना आसान न था।

लवजी और नरसंग के बीच पुनः सुलह हो चुकी थी किन्तु देवू का मन साफ नहीं हुआ था। उसके बाद वह पिता के साथ औपचारिक व्यवहार करने लगा था।

कंकू ने सोचा था लड़का बड़ा हो जाने के बाद माँ-बाप के साथ कम बोलता है।

रात को खाने के बाद नरसंग बैठे चिलम पी रहे थे। इतने में देवू आ पहुँचा।

"काहे अतनी देर से भैया ?" कंकू ने चिंतित स्वर में पूछा।

"सारंग में बैठा था। अहमदाबाद से बालूभाई आये हुए थे। रमणजी की साझेदारी में वे पेट्रोल पंप लगवा रहे हैं।" वह कंकू की जिज्ञासा शान्त करता हुआ बोला। नरसंग बिना बोले, चुपचाप चिलम पीते रहे। फिर वे उठकर चलने लगे।

"कुँए की सबसीडी मंजूर हो गयी है। काम पूरा होते ही पैसे मिल जायेंगे।" देवू बोला।

"ठीक है।" बस इतना बोलकर उन्होंने जूते में पाँव डाला और चल पड़े। देवू उनके साथ कुछ और बातें करना चाहता था। कोई बात नहीं, कल सही।

मैट्रिक के बाद उसने सोचा था कि विद्यापीठ में स्नातक हो जाये। हीरूभाई को उसका यह निर्णय पसन्द आया था। आज रमणलाल और बालूभाई ने उसे निराश किया था। सब स्वयं सेवक ही बन कर कंधे पर थैला लटकाकर निकल पड़ेंगे तो व्यवस्था-तंत्र में अच्छे आदमी कहाँ से आयेंगे ? देवू पढ़ने में अच्छा है यह जानकर बालूभाई ने उसे आई. ए. एस. करने की राय दी। परिणाम आने के बाद अहमदाबाद आ जाना। गुजरात कॉलेज के प्रिंसिपल परिचित हैं। उनके पास ले चलूँगा। कितने प्रतिशत आयेंगे ? सत्तर से कम तो नहीं ही, फिर राम जाने...

आज गाड़ी में कुमुदबहन मिल गयी थीं। वे हीरूभाई से मिलने जा रही थीं। देवू तथा हीरूभाई को वे समाज शिक्षण के क्लास के समय से ही पहचानती थीं। वे त्यक्ता थीं। सुन्दर थीं। उनकी आवाज बहुत मधुर थी।

"हीरूभाई से कोई काम है ?"

"हाँ। मेरे पति का पत्र आया है। उन्होंने लिखा है कि हीरूभाई यदि जिम्मेदारी लें तो वे मुझे लिवा जाने के लिए तैयार हैं।"

"जिम्मेदारी अर्थात् ?"

"अर्थात् यह कि मैं किसी के साथ हँसकर बात नहीं करूँ। पुरुषों की उपस्थिति में नहीं गाऊँ। यदि मेरी बदली मेरे गाँव में नहीं हो तो मैं नौकरी छोड़ दूँगी।"

"इतनी सारी शर्तें भला कोई क्यों मनवाना चाहेगा ?"

"तुम पति बनोगे तब पता चलेगा .. ... पति......"

लवजी के साथ वह नये घर में सोने के लिए गया। लवजी मजाक कर रहा था। देवू सोच रहा था – कुमुदबहन इतनी कोमल और सुन्दर हैं कि कोई भी शिक्षित व्यक्ति उनसे शादी के लिए तैयार हो जायेगा। यदि वे स्वयं को कुँवारी

कहें तो कौन नहीं मान लेगा ? कुमुदबहन के विचारों से निकलकर वह हीराभाभी के विचारों में खो गया था। गत सप्ताह उन्होंने पीछे से देवू की आँखें मीच लीं थीं। घेमर गाड़ी में गेहूँ भरकर ले जा रहा था। पीछे हीराभाभी हैं इस बात की जानकारी उसे न थी। वह खेतों के बीच से जा रहा था। चकरोट में उतर· कर वह चलने लगा था। इतने में पीछे चूड़ियों के खनकने की आवाज आयी और उसकी आँखें मीच ली गयीं।

"तुम्हारे सिवाय और कौन इस प्रकार रास्ते में आँख मींचेगा।

"पर नाम तौ बताऊँ ?"

"घेमर भाई क कहौ, सात दई नाम बतइ हैं।"

"बेसरम हैं वे तो।" हीरा ने हाथ हटा लिया था।

"इसीलिए तो तुमको इतने प्यारे हैं।"

"तुहरे जतना नाहीं।"

"सुना घेमर भैया ? हीराभाभी ने क्या कहा ? इन्हें तुमसे अधिक मैं प्यारा हूँ।"

"चलौ न, तुम कहाँ दूसर हौ ?" घेमर ने बैलों को हाँकते हुए कहा।

हीरा चाल बढ़ाकर थोड़ी आगे आयी।

"देवर मानो तौ देवर और भाई मानो तौ भाई, हमका तो देवूभाई पहले और सब बाद मां।'

"हमरी अम्मा के आगे अस कुछ बोलेव न नाहीं तौ खाय-पियै मां कसर करे लगि हैं। तुम अतने कहौ कि सारी दुनिया मां अगर केहूक अच्छी से अच्छी सास मिली होय तौ हीरा बहू क।"

"हम नाहीं कहत रहिन देवूभाई कि ये बेसरम है।"

"हीरा जल्दी जल्दी बैलगाड़ी के आगे बढ़ गयी थी। देवू नये घर की राह पर। वह मन ही मन कुमुदबहन और हीराभाभी की तुलना कर रहा था। लवजी बोले जा रहा था।

देवू हाँ-न कह रहा था बस ! देवू की कल्पना में हीराभाभी ने करवट बदली थी। उनका मुँह नहीं दिखाई दे रहा था। वे काम करते समय लंहगे को सहजता से घुटनों तक समेट लेती हैं।

उसे 'फिर मिलेंगे,' कहते हुए कुमुदबहन का उठा हुआ हाथ याद आया। उन्होंने कहा था – कभी तुम्हारा गाँव देखने आना है। रात को रुकें तो यहीं सोया जा सकता है न ?

लवजी कह रहा था –

"तुम को खबर है ? गोरी अपनी ससुराल से वापस आ गयी है। उसका पति अब दूसरी पत्नी लाने वाला है। अब गोरी कमायेगी और उसका बाप खायेगा।"

"तुझे यह सब कौन बताता है ? तू इन सब बातों में इतना रस लेता ही क्यों है ?"

"क्यों कोई आपत्ति है ?"

"जिसके बारे में सोचता है आदमी उसके जैसा ही हो जाता है।"

"तो क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं। यदि तुझे साधु होना है तो।"

"साधु किसे कहते हैं ?" अचानक उसे याद आया कि बचपन में उसने एक बार विवेकानन्द बनने की बातें सोची थीं। आज उसके मन में रामकृष्ण के बारे में विचार पैदा हो रहे थे। वह मौन हो गया। मन को जैसे पंख लग गये हों। यह कलकत्ता है। देवू लालटेन लेकर पढ़ने बैठ गया। हवा तेज थी। अतः लालटेन भनक रही थी। ऊपर छत पर जाकर अभी सोया नहीं जा सकता था। थककर उसने लालटेन बुझा दी।

"तुम्हारा परिणाम कब आ रहा है ?"

"अगले हफ्ते।"

"अच्छे नम्बर लाए तो शादी करने जाना ठीक रहेगा, क्यों ? सब कहते हैं किन्तु पापा कुछ नहीं बोलते। पूछने पर उन्होंने कहा था कि जब तक पीली चिट्ठी नहीं आती कैसे मालूम पड़ेगा कुछ ? इन दिनों हेती भी नहीं आयी। ईजू भाभी ने कक्षा पाँच के बाद पढ़ाई ही नहीं की। तुम पढ़कर अफसर बन जाओ और वे.........।"

"मुझे अफसर नहीं बनना है।"

"तो क्या खेती करनी है ?"

"हाँ।"

"तो फिर मैं क्या करूँगा ?"

"तू और चाहे जो करे पर खेती नहीं ही कर सकता।"

"क्यों नहीं कर सकता ? तुम कॉलेज में जाओगे तो मुझे पापा की मदद तो करनी ही पड़ेगी ? सब काम मजदूरों पर तो नहीं छोड़ा जा सकता ?"

देवू चिन्तित हो उठा। लवजी खेती के काम में लग जायेगा तो फिर उसकी पढ़ाई में हर्ज होने लगेगा। और इसकी आदत है कि जिस काम में लगता है उसी का होकर रह जाता है। खेती में लगेगा तो पढ़ना-लिखना सब भूल जायेगा। देवू ने आज पहली बार सोचा दोनों भाइयों में से यदि किसी एक को आगे पढ़ाई करनी हो तो लवजी पढ़े यही ठीक है। वह अधिक होशियार है। यह सत्य स्वीकार कर लेने के बाद पल भर के लिए तो वह बेचैन हो उठा। क्या मुझमें ज्ञान-पिपासा नहीं है ? यदि मुझे गाँव और समाज के हित में कुछ करना हो तो क्या ये बातें खेती करते-करते दिमाग में आयेंगी ? नहीं ही आयेगी यह भी नहीं कहा जा सकता। हीरूभाई ही कहाँ अधिक पढ़े-लिखे हैं ?

हेड मास्टर उस दिन कह रहे थे— रमणजी, देवू तो समाजसेवा के कार्य में पड़ जायेगा। पढ़ेगा लवजी। इस इलाके का नाम रोशन करेगा। देवू की शक्ति

छोटी उम्र में ही विभाजित हो गयी है। इस उम्र में कैरीयर का स्थान सेवा ले ले यह एक चिन्ताजनक बाबत है। तुम्हें चाहिए कि देवू को समझाओ। मैट्रिक के समय भी उसने प्रौढ़ शिक्षण का कार्य त्यागा नहीं था। ऊपर से पुस्तकालय के मकान का कार्य भी सिर पर ले लिया। देव उस समय थोड़ी ही दूरी पर खड़ा था। सब कुछ सुनाई दे रहा था। रमणलाल ने स्वाभाविक मुद्रा में कहा था – देवजी अधिक न पढ़कर खेती के काम में लग जायें तो भी मुझे अच्छा ही लगेगा। रखा ही क्या है नौकरी में?

उस दिन इस तरह से सोचने वाले रमणलाल ने आज फिर बालूभाई की उपस्थिति में क्यों आई. ए. एस. करने के प्रस्ताव का समर्थन किया? क्यों वे पल-पल में विचार बदलते रहते हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हें इसमें कोई खास रस ही न हो? यह तो ठीक है किन्तु यदि मैं कॉलेज जाऊँगा तो लवजी का क्या होगा? वह पिताजी की मदद करेगा और उसकी पढ़ाई खराब होगी। सभी शिक्षक लवजी से बड़ी बड़ी अपेक्षाएँ लिए बैठे हैं। वह स्कूल का नाम गुजरात भर में चमकाएगा।

हरजीवन और माधव ने आकर खिड़की खटखटाना शुरू कर दिया। छुट्टियों में ये लोग पढ़ने नहीं आते थे। कौन होगा जो सांकल खटखटा रहा है? लवजी ने पूछा। दुबारा पूछा। उत्तर न मिलने पर उसे क्रोध आया। देवू पुस्तक रखकर किवाड़ खोलने गया। लवजी उठकर देवू की खाट में लेट गया। उल्टी रखी पुस्तक को उठाकर उसने पढ़ना शुरू किया। पुस्तक पढ़ी हुई थी।

"लो, यह नाटक तो मैंने पढ़ा है। भैया तुम मेरी पढ़ी हुई पुस्तक मत लाया करो।"

"हरजीवन और माधव को अन्दर करके किवाड़ लगाते हुए देवू ने कहा– "अपने गाँव की लाइब्रेरी की पुस्तकें तू खुद ही खरीदना।"

इन दोनों के आ जाने से अब वे चार हो गये थे अतः सब लोग पत्ते खेलने लगे थे।

"भाई आज तुम विजापुर से जबसे आये हो तब से कुछ सोच रहे हो। ठीक है न?" लवजी ने पूछा। देवू ने उसकी ओर देखा जिसका अर्थ था कि तुम्हारी बात सच है।

मैट्रिक के परिणाम की, कॉलेज की, शादी की, खुद रहे कुँए तथा विकास-योजना की बातें होती रहीं। अपने यहाँ पुस्तकालय तो हो गया किन्तु ट्यूबवेल नहीं हुआ।

सब लोग ड्योढी के बाहर खड़े थे। सूनी गली में ठंडी पवन बह रही थी।

"योजना वालों ने, जो सबसे अधिक सस्ता था वही अपने गाँव के लिए मंजूर किया है। समाज शिक्षण के क्लास से जो भी आमदनी हुई थी सब रंगभूमि के चौतरे के निर्माणकार्य में खर्च हो गयी है। और यह लाइब्रेरी – लोगों ने मकान के लिए तो

पैसे दिये हैं किन्तु पुस्तकों के लिए कोई नहीं देगा, लिखकर रख लो।" लवजी के कथन का लहजा देवू को पसन्द नहीं आया।

"तू इतनी-सी बात क्यों नहीं समझता कि गाँव में आज तक जो भी काम हुए हैं सब लड़कों ने ही किये हैं।" देवू ने बोलना प्रारंभ ही किया था कि लवजी ने बात काटी—"मैं भी यही कहता हूँ : लड़कों से जो हो सका वह किया।"

"तुझसे बात में कोई जीत नहीं सकता।" देवू ने बात खत्म कर दी।

"आप ही बता रहे थे कि बदरी में सिंचाई मंडली कायम हुई, गोकुलिया में गेहूँ की दो नई नस्लें बोकर उत्पादन बढ़ाया गया, सारंग के पटेलों ने रासायनिक खाद का उपयोग बढ़ा दिया पर हमारे गाँव में इनमें से एक भी सुधार पर अमल नहीं हुआ।"

"मैं यह सब बताकर अफसोस कर रहा था, जब कि तू याद दिलाकर खुश हो रहा है।"

"आखिर कोई फर्क नहीं रहता।" लवजी धीरे से बोला।

16

गोकुलिया में महाभोज हो रहा है। सारी बिरादरी का महाभोज हो रहा है—यह समाचार सताइस गाँवों के मंडल में हर कहीं पहुँच चुका था। लोग पूछते—कौन रमणलाल करवा रहे हैं महाभोज? नहीं रे नेता लोग कहीं मुफ्त में खिलाते होंगे? महाभोज तो पभा मुखिया कर रहे हैं। क्यों नहीं पहचाना? अरे अपने हीरूभाई के सगे मामा···।

हीरूभाई ने कहा—आप तो अपना पैसा सुखी लोगों के जलसे में खर्च करना चाहते हैं। आपकी जगह यदि मैं होता तो यह पैसा मैं स्कूल बनवाने में खर्च करता।

मामा सोचने लगे। यह बात उन्हें पहले क्यों नहीं सूझी? एक अशिक्षित व्यक्ति भी जानता है कि श्रेष्ठ दान विद्यादान है।

इससे प्रतिष्ठा भी मिलेगी और समाज का काम भी होगा। मामा को सोचते देखकर हीरूभाई ने उन्हें राय दी। पभामुखी ने घर जाकर सारी बात की। हीरू-भाई का नाम सुनकर सब चुप थे, किन्तु खुश कोई नहीं था।

लोग पूछते—क्यों मुखी महाभोज का इरादा छोड़ दिया? खर्चा भारी पड़ा? अरे भाई महाभोज करवाना कोई खेल थोड़े ही है? हालत खराब हो जाती है, क्या समझे? कोई बात नहीं, आगे कभी भगवान दया करे तो करना। अभी तो स्कूल में दान कर देंगे तो नाक कटने से बच जायेगी। पढ़े-लिखे और अनपढ़ सब लोग यही कहते। क्या जमाना आ गया है! गाय को दुहकर कुतिया को पिलाने चले हैं।

रमणलाल भी लोगों को समझा-समझाकर थक गये थे। पभा मुखिया अकेले पड़ गये थे। जितनी देर घर में रहते लोगों के ताने सुन-सुनकर उनके कान पक जाते। खेत में सूना-सूना लगता। उन्हें एक अपराध-बोध होता रहा, जैसे उन्होंने दस-पन्द्रह हजार लोगों को पंगत में से उठा दिया हो। बेचैनी के मारे वे अपनी सुधबुध खो चुके थे।

उनके खेत के दो पड़ोसी अपने मन का गुबार निकाल रहे थे। इस गाँव में रमण जैसा कंगाल आदमी नेता हो गया किन्तु कोई दिलदार दाता नहीं पैदा हुआ। जिन गाँवों का बिरादरी में कोई नाम भी लेना पसन्द न करे उन गाँवों में भी अपनी जाति वालों ने महाभोज करवा दिया है, किन्तु गोकुलिया अभी भी गधे की ही सवारी कर रहा है।

एक दिन मुखिया के समधी आ पहुँचे। "यह क्या भले आदमी! हमारी नाक कटवा ली! प्रचार करने के पहले सब समझ-बूझ नहीं लेना चाहिए? तुम्हारे जैसा ईमानदार और सत्यवादी आदमी भी कहीं थूका हुआ चाटता है?"

थोड़े ही दिनों में ऐसा वातावरण खड़ा हो गया कि पभा मुखिया घर से बाहर निकलते तो सौ बार सोचते। रास्ते में किसी ने महाभोज की बात छेड़ दी तो?

अन्ततः नहीं रहा गया और वे बदरी की ओर चल पड़े। संयोग से हीरू-भाई घर पर ही थे। सारी बातें सुनकर हँस पड़े। दरवाजे की ओट में खड़ी उनकी पत्नी उनकी हँसी सुनकर आगबबूला हो गयी। भला इस में हँसने की कौन सी बात है? एक बार घोषित करने के बाद बात पूरी न की जाये तो लोग ताना तो कसेंगे ही। इसमें नवीन बात कौन सी है?

हीरूभाई ने फटी हुई कमीज़ को सुई-डोरे से सिलते हुए कहा—

"मामा, लोग कैसी आलोचना करेंगे यह बात मैं जानता था। किन्तु मैं आपको मजबूत आदमी मानता था। उस दिन मेरी बात मानकर आपने निर्णय बदल दिया तो मुझे लगा कि आपमें साहस है। मुझे अपनी माँ के गुणों की याद आ गयी थी। खैर जैसी आपकी इच्छा। आपने महाभोज करने के बजाय विद्यालय के लिए दान तुरन्त दे दिया होता तो संभवतः लोकनिंदा से छुटकारा पा जाते। इतने लोगों में से कुछ लोग आपके निर्णय के प्रसंशक भी मिल गये होते। किन्तु आपने मेरी बात मान ली फिर भी स्वयं को नहीं समझा सके। आपके मन में अन्तर्द्वन्द्व चालू रहा। नहीं तो आज तक का समय आपने लोगों की निन्दा सुन-सुन कर व्यर्थ नहीं कर दिया होता। मैं हरिजनों के साथ बैठकर भोजन लेता हूँ। कौन मुझे समझाने आता है? सब जानते हैं कि यह मजबूत कलेजे वाला आदमी है। इसने जैसा सोच लिया वैसा ही करेगा। आपने किसी लालच में आकर महाभोज का निर्णय नहीं बदला है बल्कि उससे बेहतर कार्य को अपने हाथों में लिया है। ठीक है। मुझे कहना था, मैंने कह दिया। मेरा फर्ज़ पूरा हुआ। अब आपको उचित लगे, करें।"

"तेरी बात गलत है अस हम कब कहा ?" मामा ने संकोचवश कहा और हीरूभाई को सिलाई करते हुए देखने लगे।

हीरूभाई स्वगत बोले – अपने इलाके में स्कूलों का कोई ठिकाना नहीं। गरीबों के लिए उद्योगों का अभाव है। जो दो पैसे से सुखी संपन्न लोग हैं वे अपनी ही प्रतिष्ठा को बढ़ाने में व्यस्त हैं। उनके पास इतनी फुर्सत कहाँ कि वे समाज के निचले तबके के लोगों को ऊपर लाने के लिए तकलीफें झेलें ? एक आशा की किरण दिखी थी। मामा व्यर्थ का खर्च करने के बजाय समाज–शिक्षण के कार्य में दान देंगे। जाति पाँत की सीमा तोड़कर विशाल धरती पर आकर खड़े होंगे, एक शुरूआत होगी

सोनी बहन चाय का कप रखकर चली गयीं। कुछ बोली नहीं। अन्दर बैठकर सुनने लगीं।

मामा जिस उलझन को लेकर हीरूभाई के पास आये थे उसमें कोई कमी नहीं आयी। हीरूभाई उनके साथ चलते–चलते गाँव के बाहर तक आये। बोले – "आपको, भाइयों को और सभी घर वालों को जो उचित लगे वह करना। मैंने तो आपसे वही कहा जो मुझे उचित लगा। मैंने जो बात कही उसका मलाल मत मानना। मैं वहाँ खाऊँगा नहीं किन्तु आऊँगा अवश्य। जो काम होगा, सब करूँगा। लोग झगड़े नहीं, गंदगी न करें, रसोई न बिगड़े आदि सभी कामों की जिम्मेदारी मेरी है। सबसे कह देना। मैं आऊँगा अवश्य। किन्तु खाऊँगा नहीं यह बात सिर्फ आपसे कह रहा हूँ मन में मलाल मत लाना। आना। फिर मिलेंगे। नमस्कार।"

सताइस गाँवों में आमंत्रण–पत्रिका भेज दी गयी।

हेली को शंका थी। शायद देव-लवजी नहीं आएँगे। उसने अपनी ओर से संदेश भेजा – दोनों भाई जरूर आएं।

इनके साथ घेमर–जीवन भी एक दिन पहले आ गये। काम में जुट गये। बिरादरी के अगुवाओं के बैठने के लिए मंडप बाँधा जा रहा था। वहाँ से तखत गुजरी। घेमर ने जीवन से थोड़ी माँगने के बहाने तखत के प्रति ध्यान खींचा। फिर भी तखत को इनके कुतूहल का पता चल गया। वह रुकी, पूछने लगी : "किस गाँव के मेहमान हैं ? खैरियत तो है ?"

तखत से बात करते घेमर को संकोच हुआ, लेकिन जीवन ने मोरचा संभाल लिया। इन दोनों की चाह तो सिर्फ तखत को देखने की थी, जब कि आज अवसर मिला बात करने का। जीवन बोले बिना रह न सका। कई औरतों के गले में सोने की मालाएँ भी मोठ की फलियाँ जैसी दिखाई देती हैं, जब कि तखत के गले में तुलसी की माला भी सुनहली शोभा देती है। ये शब्द कुछ दूर पहुँची तखत ने सुन लिये। उसने मुड़कर जीवन के प्रति उस तरह देखा मानो हँसता हुआ सूरजमुखी देखा। जीवन ने हाथ जोड़कर कहा : "भूलचूक माफ हो।" इसके जवाब में लालसुर्ख मुस्कुराहट और सूरजमुखी के स्थान पर मात्र सूरज .

जीवन को लगा कि यह औरत तो भली है। इसी पर खमाणवाले सजूजी ने तीन दिन अत्याचार किया होगा? वह अफवाह तो नहीं होगी। इस विषय में वह वेमर से बात कर रहा था कि हीरूभाई वेग से आते दिखाई दिये। दोनों ने मौन धारण कर लिया। उन्होंने देखा कि तखत मुखिया के घर की ओर गई। अचरज हुआ। इन्हें पता नहीं था कि दाई बनकर उसने मुखिया के बड़े लड़के की पत्नी को बचा लिया था, तब से लेकर तखत की चालचलन के विषय में यहाँ एक अच्छी राय बनी थी। आज उसे इसलिए बुलाया गया था कि वह घी को देखे, परखे और रसोइयों को देती जाए। उसने यह काम कुछ ही क्षणों में पूरा कर लिया। बाहर आई। नाई लोग बर्तन माँज रहे थे। तखत ने एक नाई को एक ओर हटाकर पित्तल की बड़ी गढ़ी संभाली। लहँगे का कच्छ लगाया और उस विशाल बर्तन को मांजने लगी। उसके पैर की पिंडलियों की चमक सह न पाने से जीवन ने नजर झुका ली।

पाप कहाता है, पराई औरत के पैरों की ओर यों देखना—

एक बार नरसंग चाचा ने आठ प्रकार के ब्रह्मचर्य के विषय में बात की थी।

सब बीड़ी पीकर काम के लिए लौटे इससे पहले तो तखत ने पित्तल की गढ़ी पर सुबह के सूरज की आभा उतारकर रख दी थी। गढ़ी को दो बार धोकर, ऊपर स्वच्छ कपड़ा बाँधकर, पानी भरवाकर वह रसोई के सामान की ओर गई।

हीरूभाई ने सभी को अपनी जिम्मेदारी की दुबारा याद दिलाई : परोसने का काम संभालेंगे टींबा के युवक, बदरीवाले रसोई में, पत्तर उठाने का काम करेंगे गोकुलिया के युवक, जिनकी अगुवाई करेगा गलबा, वेमर और जीवन पूरे मंडप पर नजर करते रहेंगे। हरेक पंगत में चार चार हजार व्यक्ति बैठेंगे।

एक प्रहर होते ही नजदीक के गाँवों से लोग आने लगे। मगन अमथा का पूरा परिवार ट्रैक्टर में बैठकर आया। उसमें स्त्री एक भी नहीं थी अतः शांति को देखने के लिए उधर निगाहें उठाने का लवजी के लिए प्रश्न ही नहीं ऊठता था। और अन्य लोगों की तरह अहोभाव से ट्रेक्टर को देखते रहने में उसे रुचि न थी।

स्थान-स्थान पर पान-बीड़ी के खोमचे लग गये थे। खिलौने की दूकानें लग गयी थीं। लवजी ने सोचा वह मास्टर साहब से कहेगा – जाति के भोजन समारोह पर निबंध पूछिए, फिर देखिए मैं क्या लिखता हूँ। लवजी के देखते ही देखते वहाँ का दृश्य विशाल होता गया। उसे याद आया एक बार वह शाम को हरे तालाब की सूखी तथा दरारों वाली सतह पर चला था और सुबह देखा था तो पूरा तालाब छलक रहा था। यद्यपि वह जानता था कि रात की बरसात की वजह से ऐसा हुआ है किन्तु उसे यह चमत्कारपूर्ण ही लग रहा था। आज तो वह यहाँ प्रारंभ से ही था। दृश्य विशाल से विशालतर होता जा रहा था। सवेरे का सूरज पूर्व दिशा में अपनी लालिमा बिखेर रहा हो कि अचानक उषा खिलखिलाने लगे, कुछ इसी प्रकार की इच्छा आज उसे दिन दोपहर में हो रही थी।

आज उसे सभी लोग अच्छे लग रहे थे। सगाई है तो देखना तो चाहिए ही। हमउम्र बार बार पूछते हैं – तेरी पत्नी कैसी है रे! पत्नी उम्र में उससे कुछ बड़ी भी हो सकती है। वे सबके सब आज शैतानियाँ कर रहे होंगे। पान की दुकानों के पास खड़े होंगे। हुड़दंग मचा रहे होंगे। अच्छा है। लवजी को शांति है। थोड़ा चलता है, ज्यादा देखता है।

लवजी विपुल को लेकर वहाँ पहुँचा तो हीरूभाई नास्ता करने उठने वाले थे। भानजे ने मामा को पान की याद दिलाई। देवू के पास से एक रुपिया लेकर दोनों चल पड़े। हेती का ध्यान जाये तब तक वे दोनों आँखों से ओझल हो चुके थे। रमणलाल ने सिर्फ देवू से ही कहा था कि हीरूभाई अब पूरे दिन खाना नहीं खायेंगे। इस बारे में किसी से चर्चा करने के लिए भी उन्होंने मना किया। लोगों को पता चलेगा तो वे मनाने का प्रयत्न करने लगेंगे।

हीरूभाई और रमणलाल चले गये। हेती पुनः देवू के साथ बातों में उलझ गयी। आज उसकी बातें खत्म ही नहीं हो रही थीं।

अलगौसे के बाद ईजू माँ-बाप के साथ, गलबा भाई के पास रहती थी। वह कबसे इस घर में आ जाना चाहती थी। यह बात हेती जानती थी। किन्तु देवू बैठा था और घर में आने का रास्ता ठीक उसी खाट के नजदीक से था। बहुत ही संकोच हो रहा था। वह जताना नहीं चाहती थी कि वह यहाँ आयी है।

हेती ने स्वागत करते हुए पूछा – "काहे नयी ओढ़नी नाहीं ओढेव?"

"मिली नाहीं। हिंया तुहरी अलमारी मां तो नाहीं."

"आपन साड़ी देई?"

"नाहीं, अम्मा नाराज होइ हैं!"

"न होइहैं।" "हेती खुशी-खुशी जाकर ईजू को वस्त्र दे आयी। फिर आकर बैठकर बातों में लग गयी। इस बीच अन्दर जाते समय ईजू देवू को दिख गयी थी।

गवन नामक साड़ी पहनने के बाद ईजू आकर हेती के पीछे खड़ी हो गयी थी। उसने स्वयं को चालाकी से ऐसी जगह पर छिपा लिया था कि वह तो देवू को देख सकती थी किन्तु देवू उसे नहीं देख सकता था। इसके अतिरिक्त उसे अपने भीतर यह विश्वास भी था वे औरों की तरह ताकझाँक भी नहीं करेंगे। देवू चुपचाप निगाह झुकाये मुहल्ले की बातें करता रहा।

ईजू संतुष्ट और शांत दिखाई दे रही थी। घर में चूहों ने बरतन गिरा दिया। बरतन की खनखनाहट से हेती का ध्यान अन्दर चला गया। ठीक इसी समय देवू का ध्यान भी अन्दर की ओर गया। और ईजू रंगीन चित्र की तरह आँखों में समा गयी। नया गवन पहने खड़ी क्षण भर पूर्व की कन्या इस पल पूर्ण युवती होने का आभास दे रही थी। लम्बी तो वह पर्याप्त थी ही। इस समय चौखट के पास खड़ी होने की वजह से देवू को वह अधिक ही ऊँची लग रही थी।

ईजू के भीतर कुछ ऐसे भाव थे जिनसे वह स्वयं अनभिज्ञ थी। किन्तु वह उन भावों को देवू तक पहुँचाये बिना रह नहीं सकती थी। वह अनचाहे ही आकर्षित होती जा रही थी। देवू से नजर मिलने पर वह शरमाई नहीं बल्कि उसके भाव की मिठास में वृद्धि हो गयी।

वह गयी और मामा-भानजे दुमंजिली बस की तरह आ पहुँचे। लवजी थोड़ी देर बाद विपुल को लेकर पुनः चला गया।

बूढ़ी वाली आयी। हेती ने सास को सम्मान के साथ बैठाया। वाली ने देवू का स्वागत किया। घर में सभी की खबर पूछी। देवू को तुरन्त रसोई में जाना पड़ा। वह उनसे और बात नहीं कर सका।

मुहल्ले के नुक्कड पर लवजी विपुल को समझा रहा था–"ईजू बुआ को ईजूमामी बोल तो तुझे पान खिलाऊँगा।" सहेली के आँगन में खडी ईजू देख रही थी और इन्तजार कर रही थी कि विपुल क्या कहता है ? इतने में देवू गुजरा। वह उसे देख पाये इसके पूर्व ही वह अंदर भाग गयी। नाक की सीध में जा रहे देवू का ध्यान उधर आकर्षित हुआ। यह मुखमुद्रा उसे बहुत अच्छी लगी।

लवजी और विपुल को पीछे छोड़कर देवू मुखिया के मुहल्ले में प्रविष्ट हुआ। सारा मुहल्ला छत्रपति बना हुआ था। मुहल्ले के बीच खाली पड़ी जमीन में मंडप सुशोभित हो रहा था। सुगन्धित धूप फैली हुई थी। इत्र की अपेक्षा देवू को धूप की सुगन्ध अधिक अच्छी लगती थी। जब तक जाति में अधिक पढ़े हुए लोग शिक्षक बने थे, व्यापारी बहुत कम थे। वे लोग पहले तो मशहूर व्यापारियों के मुनीम ही बने थे बाद में ईमानदारी की वजह से महाजन लोगों का सहारा पाकर आगे बढ़े थे। उन लोगों को रमणलाल ने मंडप में बैठाया था। घेमर ने उस मंडप का नाम 'सरदार कुँज' रखा था। और कागज के टुकड़े पर लिख भी रखा था। जीवन ने उसमें "जी" शब्द अपनी ओर से जोड़ दिया था। हीरूभाई ने देवू को वह चिट विशेष रूप से दिखाई। घेमर और जीवन सारा काम छोड़कर दौड़ आये। "आज खुशी के दिन भूल-चूक माफ गुरुजी।" इन शैतानों ने देवू को गुरुजी क्यों कहा यह बात उन मेहमानों की समझ में नहीं आयी। जब उन्हें पता चला कि सोमपुरा में प्रौढ़ शिक्षण का इतना अच्छा कार्य इसी नवयुवक ने किया है तो वे सब बहुत खुश हुए। देवू को अपने बीच बैठाया। व्यापार, खेती और नौकरी की बातें होने लगीं। रमणलाल ने भी बातों में हिस्सा लिया।

पाँच–पाँच सौ आदमियों की पंक्तियाँ बनाई गयीं। तीन-तीन पंक्तियों के मध्य एक-एक स्वतन्त्र रसोई घर जिनमें सभी प्रकार के पकवान रखे गये। परोसने वाले तैयार रहते थे।

भोजन परोसने में जहाँ भी कमी पड़ती थी वहाँ घेमर और जीवन पहुँच जाते थे।

शाम को विदाई के समय पभा मुखिया ने घेमर और जीवन को विशेष शाबाशी दी। और पूछा–"तुम सबका ई सिच्छा कहाँ मिली ?"

"सिच्छा तो खास नाहीं मिली। देवू भैया थार बहुत लिखे पढ़े सिखाइन है। मुला हम सबका पिथू बाबा और नरसंग काका के सोहबत मिली है। ई उनके आसीस समझो। ई जीवन तौ पहले से फुरती वाला है पर हम तौ पिथू बाबा के घर वाले क सहारे उमंग से काम करे सीखा हैं। छोटे पर तो हमहूँ अपने बाप की तरह कामचोर रहिन।" घेमर जानता था कि फता नहीं आये हैं फिर भी उसने चौकन्ना होकर चारों ओर देख लिया।

"फताकाका कै बुराई करे क जरूरत नाहीं है। चल जल्दी नाहीं देर होये। देवूभाई परेशान है।" जीवन ने कहा।

"अबहीं तो हीरूभाई खाय के बाकी हैं। हमका मालुम है कि वे सबेरे से काम करत हैं।"

"मेरी ही तरह मामा ने भी अभी नहीं खाया है।" हीरूभाई ने रमणलाल की ओर देखते हुए कहा।

घेमर ने देवू की ओर देखते हुए कहा कि शादी-विवाह के समय तो माँ-बाप कन्यादान तक भूखे रहते हैं लेकिन कमाल है! महाभोज में भी वही बात?

देवू ने कहा कि चलो रास्ते में बात करेंगे, यहाँ का शेष काम तो रमणजी संभाल लेंगे। लवजी भानजे को लेकर आगे गया है। नाराज हो जायेगा तो साथ के लिए भी नहीं रुकेगा।

देवू ने हार्दिक सम्मान व्यक्त करते हुए पभा मुखिया की ओर देखा—"मेरे पिताजी आपको बहुत याद करते है। कभी रात में रुक सकें इस प्रकार आइए।" कहते हुए उसने हाथ जोड़कर थोड़ा झुककर प्रणाम किया।

हीरूभाई न खाये तो देवू के लिए कोई आश्चर्य की बात न थी किन्तु भानजे के प्रति अपने प्रेम के कारण स्वयं पभा मुखिया ने भी नहीं खाया अतः उनके प्रति देवू का सम्मान बढ़ गया था। यह उनके आन्तरिक संबन्धों की विजय थी भले ही उन्होंने हीरूभाई की सलाह न मानी हो किन्तु उसका सम्मान तो था ही उनके हृदय में। देवू को लग रहा था जैसे किसी चीज का निर्माण हुआ हो, जैसे उसे कोई अर्थ प्राप्त हुआ हो। एक ओर बारह-तेरह हजार व्यक्तियों के कोलाहल भरे आमंत्रण-भोज का खुशी, दूसरी ओर दो व्यक्तियों का प्रिय भोजन के प्रति संयम, कितना संतुलन है। देवू ने यह बात किसी को भी नहीं बतायी।

कुछ दिनों बाद खेत में पिता को अकेले देखकर देवू ने पूछा — जाति वालों को भोजन कराना श्रेष्ठ है या स्कूल के लिए दान?

नरसंग ने कहा — अपने धर्म में भोजन कराने की महिमा अधिक है। आदमी स्वयं भूखा रहकर भी मेहमानों को अवश्य ही खिलाये। जो समर्थ हो वह पाँच को खिलाये, पचीस को खिलाये। पहले के जमाने में लोगों को खिलाने के बाद ब्राह्मणों को दक्षिणा भी दी जाती थी। अन्नदान। फिर धनदान। किन्तु आज विद्यादान की सख्त आवश्यकता है। पभा मुखिया ने पहले स्कूल बनवाया होता

फिर बाद में पूरे सत्ताइस गाँवों के बजाय सिर्फ स्कूल के विद्यार्थियों को ही खिलाया होता तो उनका मन अधिक प्रसन्न होता ।

हीरूभाई ने नहीं खाया इसलिए पभा मुखिया ने भी नहीं खाया यह जानकर तो नरसंग की आँखों में भी आँसू आ गये । वे खँखारते हुए बोले – अपने बड़प्पन पर काबू और सम्बन्ध क न भूलब यही के नाम धरम है ।"

–आगे की बात माला के मनकों ने अपने जिम्मे ले ली ।

"राम" शब्द के प्रत्यक्ष उच्चारण सा सूर्य वृक्षों के द्वारा रचित क्षिति के पीछे विरत हुआ ।

हवा भी निवृत्ति के क्षणों का अनुभव करने लगी ।

17

समाचार आया था कि गोकुलिया में धूमधाम से शादी की तैयारी चल रही है । तम्बाकू के गोदाम के पास पड़ी जमीन पर जब रमणलाल ने कोठी बनवाई तो वे उसमें रहने के लिए तभी से चले गये थे किन्तु दो काम अभी करवाने बाकी थे : एक तो उसको रंगने का कार्य, दूसरा पूजा का । पूजाकार्य ईजू के विवाह के वक्त ही हो जायेगा ऐसा उन्होंने सोचा था । गलबा ने तो गत वर्ष ही कहा था– "अब तो ईजू विदा करने लायक हो गयी है, फिर विवाह क्यों टाल रहे हो ?"

अगले वर्ष देवजी मैट्रिक हो जायेंगे । यह उत्तर किसी के गले नहीं उतरा था । क्यों शादी के बाद नहीं पढ़ा जा सकता है ? हेती का कहना था – नहीं ।

"शादी करेंगे तो खूब धामधूम से करेंगे ।" रमणलाल ने आश्वासन दिया था ।

"शादी के लिए सामान की खरीदी के समय रमणलाल ने गलबा के घर जाकर व्यवस्थित चर्चा की थी । उन्होंने सोचा था, माँ, बाप और गलबा को जो आवश्यक जान पड़े यही खर्च होना चाहिए । उन्हें ऐसा नहीं लगना चाहिए कि दो-दो सम्बन्ध होने के कारण मैं उनका पक्ष ले रहा हूँ । किन्तु गलबा अड़ा हुआ था । वह माँ–बाप को भी बोलने नहीं देता था । इस वर्ष की सारी बचत खर्च हो जाये और थोड़ा बहुत कर्ज हो जाये तो भी कोई बात नहीं । वाली ने उसे दो बार टोका और मूलजी ने भविष्य में आने वाले खर्चों के बारे में याद दिलाई फिर भी गलबा का उत्साह कम न हुआ । रमणलाल तो उल्टी मुसीबत में फँस गये थे । गलबा ने जिन मामलों की ओर संकेत किया था उधर तो उन्होंने सोचा भी नहीं था । तुम्हें और खर्च करना हो तो करो, नहीं करना हो तो मत करो, किन्तु खाना तो हम पूरे गाँव को ही खिलायेंगे । तुमने नये घर की पूजा भी नहीं की थी । लोग कहते हैं कि तुम्हारे भाई इतने आगे बढ़े फिर भी रहे अपने पिता की तरह कंजूस के कंजूस ही । मूलजी ने विरोध करना चाहा किन्तु वाली ने हँसकर उन्हें चुप करा दिया । गलबा को अच्छी बात सूझी–

"तुम ही कहो, लोग खाय अइहे तो खाली हाथ ? दो-दो रुपिया नेग न करि हैं ?"

"नेग तौ का वापस न करे क परी पागल !"–रमणलाल ने कहा ।

इसका तो ऐसा ही है । कोई पाँच रूपये देता है तो हम फूलकर गुब्बारा हो जाते हैं किन्तु जब उसके घर कोई प्रसंग आता है तो हमें कर्ज लेकर भी देना पड़ता है । हमने तो भैया अपनी जिन्दगी ऐसे ही गुजारी है, तुम लोग अपनी जानो – मूलजी बोले जा रहे थे । रमणलाल ने हँसी दबा रखी थी । उन्होंने माँ से राय माँगी । उनकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि गलबा आखिर सारे गाँव को आमंत्रित करने के लिए क्यों आग्रह कर रहा है । रमणलाल की समझ से जो कारण था वह सबके समक्ष कहा नहीं जा सकता था । गाँव में जो बदनामी हुई थी वह अब तक भाई को याद होगी । अब तो तख्त के बारे में भी अपमानजनक बात नहीं होता है । किन्तु जो एक बार हो गया वह हो गया । उस घटना को दबाने के लिए ऐसा ही कुछ किया जाना चाहिए ।

"पूरे गाँव को खिलायेंगे किन्तु एक शर्त पर । सारा खर्चा मैं करूँगा ।"

"काहे हमका भिखारी समझत हौ का ?"

"हम किसी से बतायेंगे नहीं कि खर्चा किसने किया है । किन्तु मुझे गृह-पूजा भी करवानी है । साथ ही साथ .."

"हम तौ तुमसे वही समय कहा रहा कि पूजा कर डारो ।"

"किन्तु उस समय सिर पर कितना कर्ज था यह बात तुझे कहाँ मालूम है ?"

"हमरे हिस्से माँ तुम कर्ज नाहीं दिहेव ।"

"व्यापार के कर्ज की बात थी । तुमने कहा व्यापार में हिस्सा नहीं रखना है । फिर ?"

मूलजी को बोलने का अवसर मिला–

"हम हीं ने मना कीन रहा । व्यापार तो अस कि ऊमां आज लाख कमाव तौ काल सवा लाख नकसानौ करौ ।"

"ई देखो, इनके मुँह से लाख से नीचे निकल तै नाहीं । लाख तो ठीक कबौ हजारौ हाथ मां आवा रहा ?" वाली ने कहा ।

"लड़कन के बढ़े पर माँ-बाप पागल होय जात हैं ।" मूलजी बोले ।

"अच्छा अब फालतू बात मत करो । देखो भैया तुमका जौन करे क होय करौ पर खर्चा तो आधा-आधा करा जाय । काहे हम कुछ समझित नाहीं ? ई हमरे हिस्से मां जौन जमीन और मिल्कत आयी है ऊ सब तुहरे कारण ।"

"छोट भाई, पालने मां होय तबौ बराबर क हिस्सा मिलत है । ई तौ तुहारा बहू हेती बहू के बराबरी करै लाग नाहीं तौ अबही अलगौझा काहे होत ?" मूलजी ने कहा ।

"ऐ दादा, हमका समझाऊ न हम कबौ - " गलबा की पत्नी अन्दर से बोली ।

"अब तू चुपचाप बैठी रह ना । तुहारा गलती के निकारत है ? सबही जानत है कि अलगौझा किहे बिना तुहरे मयके वाले इहां न भेजतै ।"

रमणलाल को आश्चर्य हुआ। ऐसी बात कहते हुए गलबा को शर्म भी नहीं आयी।

"अतना बड़ा होय गवा है तबौ है गदहा के गदहा।" वाली ने कहा।

"तुहार दूध पीक बड़े भइन है तुहै जौन कहेक होय कहौ।"

गलबा आज खुश था अतः उसकी मूर्खता के साथ ही उसकी बुद्धि में भी थोड़ा सा विकास हुआ है, रमणलाल यह स्पष्ट देख रहे थे।

देख भया, हम तौ तुहरे भले कै विचार करके तुहरे साथ आइन है नाहीं तो हेती बहू वही दिन बोली रहा कि घर खुला है।"

"तुम कौनो नई बात नाहीं किहेव है। सारी दुनिया क रवाज है कि माँ-बाप छोट लड़के के साथै रहत है।"

"तुझे सारी दुनिया के रिवाज की जानकारी कहाँ से मिली?" रमणलाल ने पूछा।

"अब तुम मजाक छोड़ कै काम की बात करौ। बोलो सारे गाँव क खवावा जाये कि नाहीं?"

"खिलायेंगे। पूछ ले तेरी पत्नी क्या कहती है?"

"हम काहे मना करीं? अच्छे काम मां हम सबसे आगे हन।"

"वाह बहू! वाह क्या बात कही!" वाली ने कहा।

तीसरे दिन रमणलाल सारे घरवालों को ट्रक में बैठाकर सारंग ले गये। घर में सिर्फ हेती ईजू और विपुल बचे थे। हेती से भी चलने के लिए कहा गया। किन्तु उसने यह कहकर मना कर दिया कि सास के होते हुए वह क्या करने जायेगी? यह तर्क गलबा की पत्नी को नहीं सूझा था। सारंग के चौक में घूमने की शौकीन थी वह।

हेती के पास एक दूसरा भी तर्क था। तो क्या ईजू बहन घर में अकेली रहेंगी? फिर उसके लिए अधिक आग्रह नहीं किया गया। सब जानते थे कि एक बार इन्कार करने के बाद हेती को मनाने का कोई अर्थ नहीं था। और शादी-विवाह के समय घर में एकाध बड़े आदमी को रहना ही चाहिए। विवाह की तिथि तय हो जाने के पश्चात् वर-कन्या की. सभी लोग अपने प्राणों की तरह देखभाल करते हैं।

नरसंग से यहाँ कुएँ की खुदाई जारी होगी। कुएँ की सतह से छः-सात बोरिंग भरने के बाद दस हाथ की जितनी गहराई बची होगी। फिर कुँआ गहरा किया जायेगा। कुएँ में से निकले पानी में से कीचड़ युक्त चिकनी मिट्टी बाहर निकाली जायेगी। बयालीस हाथ के बाद कभी भी पानी की कमी नहीं होगी।

"देवू तुम बोक्सिन वाले पटेल का जानत हौ?" नरसंग ने पूछा।

"सुना है वक्ता ठाकेडा भी बोक्सिन लाया है।"

"बरमेवाला?"

"हाँ, वह शायद, बोक्सिन पर आठ आने कम भी लेता है।"

"दो रुपये ।"–पता लगाने आये घेमर ने कहा ।

"तौ एक भाई जाय क शाम का उसे कह आऊ । तू जाइस लवजी ?"

"दोनों जन जायेंगे । मैं भाई को सँभालकर घर ले आऊँगा ।" लवजी की बात पर सब हँस पड़े । फिर उसने कहा कि अगले वर्ष से तो सारा काम उसे अकेले ही करना पड़ेगा । भाई तो कॉलेज पढ़ने जायेगा ।

देवू ने कहा कि कॉलेज में पढ़ने जाने की उसकी इच्छा नहीं है । और अब तो घर बैठे बैठे भी परीक्षा दी जा सकती है ।

नरसंग की समझ में कुछ नहीं आया । बिना पढ़ाये क्या आ सकता है । पूछा ।

देवू ने कहा कि लवजी को अपने दो-तीन शिक्षकों से भी अधिक आता है ।"

"आवा बहुत ।" नरसंग ने रुचि ली ।

"लवजी से पूछ लो ।"

"मेरे शिक्षकों से ही पूछना " लवजी ने यों कहा जैसे शिक्षकों की सच्चाई पर उसे पूर्ण विश्वास हो ।

सही बात है ? लवा क ऊ के मास्टर से ज्यादा आवत है ?" घेमर पूछे बिना नही रह सका । "तौ फिर अस करौ देवू भाई । तुम तौ गाँव मां रहौ । नरसंग काका क सहारा रहे और सब पंचायत करनेवाले भी ठीक रहि हैं । हम सब लोग लवा क खूब पढ़ावा जाये । ऊ कहे तो सब लोग मिलकै ऊका विदेस भेजा जाये ।"

"देवू क भी पढावे क तौ है ।" नरसंग ने अनिर्णय के स्वर में कहा ।

"मैं पढ़ने के लिए कहाँ मना कर रहा हूँ ? रमणजी जितना पढ़े हैं उतना तो मैं घर पर बैठकर ही पढ़ सकता हूँ ।"

"अतना तो बहुत भवा ।" सिर पर ईंधन उठाते हुए, थोड़ी दूर से ही कंकू ने कहा ।

"बियाह कब है नरसंग काका ?"

"महूरत तौ वे देखाइन हैं । वद एकादसी का आवा है । मुला विवाह कब आये अबहीं कहिन नाहीं न ।"

"चार दिन पहले आये ।" घेमर ने ऊँगलियों पर ग्यारह में से चार घटाते हुए बताया ।"

"सत्तमी क है न ?"

"का पता । दुई दिन पहलेव आय सकत है ।" नरसंग ने कहा ।

"सही बात है । शादी क सात आठ दिन बाकी है मुला देवू भाई वैसे क वैसे हैं । न तो कौनो सौख न कौनो बडाई । उलटे जैसे चिन्ता होय कौनो ।" घेमर ने देवू की ओर देखा ।

"नहीं–नहीं मुझे कैसी चिन्ता ?" देवू ने तटस्थता से कहा । जैसे किसी अन्य की बात कर रहा हो ।

"घेमर भाई की बात उड़ा देने जैसी नहीं है। ईजू भाभी अधिक पढ़ी नहीं हैं शायद इसीलिए उन्हें शादी के प्रति अधिक उत्साह नहीं है।" लवजी इस प्रकार बोला जैसे स्वयं से कह रहा हो।

"मेरे मन में तो इस प्रकार का कोई विचार भी नहीं आया।" देवू ने पहले के ही स्वर में कहा। नरसंग कुछ बोले नहीं। उन्होंने फिर देवू की ओर देखा।

"मैं यह सोच रहा था कि अच्छे मार्क्स आयें तो कॉलेज में जाऊँ। किन्तु घर......"

"ई चिन्ता तू काहे करत है भाई? अस होये तौ एक के जगह दुई हरवाह रख कै काम कराउब।"

"यह तो ठीक किन्तु घर का आदमी घर का होता है। लवजी अभी जितनी छूट से पढ़लिख सकता है वैसा नहीं कर पायेगा। आपको सहारा देने जाये..."

"इनका तो अस लच्छना देखत नाहिन।" घेमर ने कहा। नरसंग ने मौन संमति दिखाई। फिर बोले—

"देखौ, सौ बात मां एक बात। तुम घर के या खर्चा कै चिन्ता मत करौ। तुमका का पता? रमणजा का कॉलेज मां भेज क इन्तजाम के किहिस रहा? अरे दामाद को तई जे करिस होय ऊ अपने लड़का को तई न करे?"

"भैया तुम कॉलेज में दाखिला लो ही। साइंस में जाओ।"

"आई.ए.एस करना हो तो आर्ट्स में भी जाया जा सकता है। देश में जैसे अच्छे इंजिनियरों की आवश्यकता है उसी प्रकार अच्छे अफसरों की भी है।"

"देश की आवश्यकता को फिलहाल एक तरफ रखो, तुम्हें क्या बनना है?"

"मुझे? सच कहूँ? मुझे कुछ नहीं बनना है।"

"कुछ समझ में नहीं आता, तुम्हें हो क्या गया है।" लवजी उदास हो गया है।

दोनों भाइयों का वार्तालाप बहुत देर तक चलता रहा। किन्तु वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे। कॉलेज खुलने में अभी देर है। यह जानकर नरसंग को हर्ष हुआ। विवाह के बाद देखा जायेगा।

गोकुलिया से निरंतर समाचार आते रहते। बहुत जोरदार तैयारी चल रही है। मंडप बाँधने वाले ठेठ अहमदाबाद से आने वाले हैं। सारंग के वाघरी अपने बैन्डबाजों पर नयी नयी धुन तैयार कर रहे हैं। रमणलाल ने विधायक बनने के बाद जो भी कमाया है सब खर्च कर देंगे। दंपति को आशीर्वाद देने स्वयं मोरारजी देसाई आने वाले हैं। सारंग और गोकुलिया के बीच का रास्ता सुधारा जा रहा है। बहुत सारे लोग आने वाले हैं। बालूभाई नाम के एक शेठ हैं उन्होंने तो एक नयी गाड़ी भेज दी है। सारंग से स्टेशन से जो अतिथि आएंगे उनको लेने के लिए। सही बात है। मोरारजी देसाई अपनी कार थोड़े ही लेकर आयेंगे? व्यवस्था तो करनी ही पड़ेगी। जिसके जैसे संबंध। जिला के कांग्रेसी तो सब आयेंगे।

ठेठ सूरत से लोग आयेंगे। रमणलाल के विधायक बनने के बाद उनका परिचय बहुत बढ़ा है। वे तो पशाभाई से भी बड़े हो गये हैं। पशाभाई तो यह अपनी कोटी पर बैठे हैं। अब चाहे उनसे मिल सकते हैं। जबकि रमणलाल से मिलना हो तो पहले से पता लगाना पड़े कि वे घर पर हैं कि नहीं। थोड़े ही समय में कितने आगे निकल गये हैं। भाग्य की बात है, और क्या ?

कुछ लोग गोकुलिया की प्रसंशा करने से थकते ही नहीं थे वे नरसंग के घर की आलोचना भी करते थे। यह भला क्या तरीका ? बड़े लड़के की शादी के वक्त भी कुँए का काम चालू है। अभी कौन सा सूखा पड़ रहा था। अरे भई करते रहना मजूरी जिन्दगी भर कौन हाथ पकड़ने आने वाला है। पर विवाह के दो दिन पहले तो कुछ ऐसा करना चाहिए जो शोभा दे ?

शादी के चार दिन पहले देवू के कपड़े के माप के लिए मामा आये। घर में ताला बन्द देखकर खेत की ओर बड़बड़ाते हुए चल पड़े।

"माँ, देख वह मामा तो नहीं आ रहे हैं ?"

"कंकू ने खड़े होकर देखा।"

"हाँ तो रे ! तू तो सही पहचानिस ?"

"लो इनकी सुनो।" लवजी हँस पड़ा।

"मामा को नहीं पहचानूँगा ? मारंग में मिलते हैं तो आना-दो आना दिये बिना नहीं रहते।"

लवजी अपनी बात पूरी करे इसके पहले ही मामा आ पहुँचे। नरसंग के साथ राम-राम करके उन्होंने लवजी से कहा-"ले आठ आना लेता था तो आज रुपया ले।"

"अस बात है तब, अकेले बहिन से नाराज रहेव। इनके भानजे भी कस कबौ बतावौ नाहीं किहिन।"

"मामा ने मुझे एक बार कसम दी थी।" देवू ने कहा था।

"मुझे तो कभी नहीं खिलाया कसम-बसम। लेकिन मैं तो इसलिए नहीं बताता था कि मुफ्त में मिले हुए पैसे का व्यर्थ में हिसाब देना पड़ेगा।" लवजी की बात पर सब हँस पड़े।

बोक्सिन का काम देवू की देखरेख में छोड़कर नरसंग महमानों को लेकर घर चले गये। पिता की अनुपस्थिति का लाभ लेकर लवजी कुँए में उतर गया। फिर बाहर आया। देवू ने उसकी प्रसंशा की तो लवजी जोश में आकर फिर से उतरने लगा। देवू ने उसे रोक लिया "दो-चार दिन बाद फिर उतरना।"

"दो दिनों में तो पानी भर जायेगा।" लवजी ने कहा।

"तुझे तैरना नहीं आता है न ?"

"इस बरसात में हरी तलैया भरे तो मुझे तैरना सिखा देना। अरे हाँ, उस समय तो तुम कॉलेज चले जाओगे।"

"कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"मुझे पता चल गया है। तुम स्पष्ट तो मना नहीं करते किन्तु मन ही मन तय कर लिया है कि पढ़ोगे नहीं, मेरे लिए।"

"यदि ऐसा ही हो तो भी क्या हर्ज ? तेरी पढ़ाई न खराब हो यह देखने की जिम्मेदारी मेरी है कि नहीं ? और पिताजी से हम कब तक काम करवायेंगे ? पिथू दादा थे तो पिताजी ने अपनी कम उम्र में ही कामकाज संभाल लिया था। अब क्या हम उन्हें बुढ़ापे में भी शान्ति से माला न फिराने दें। दोनों जन पढ़कर नौकरी पर चले जाये और माता-पिता को अकेले खेती में खपने के लिए छोड़ दें ? पिताजी पच्चास वर्ष से ऊपर के हो गये हैं। मेरा सहारा भी कितना है ? जो लोग दो-तीन भाई हैं वे भी इतना उत्पादन नहीं करते। यह हम जो सफेद कपड़े पहने घूमते-फिरते हैं और मजा करते हैं वह किस के प्रताप से ? हमारा कर्तव्य कुछ नहीं ? तो क्या पंख निकलते ही उड़ जाने के लिए ? तब तो मानव-समाज की स्थापना ही न हुई होती। ठीक कबीलों में ही रह रहे होते।"

लवजी का सिर नीचे झुक गया। भाई के साथ कितनी उद्दंडता से व्यवहार करता आया है। घर से लेकर बाहर तक सब लोग क्यों देवू को सम्मान देते हैं, उसे आज पता चला।

18

रणछोड़ देवू की बारात में गया था। रेशमी कमीज में सोने का बटन, हाथों में सुनहली चेन वाली घड़ी और डोरी वाले जूते। गोकुलिया में तो थोड़ी देर तक ऐसे लगता रहा जैसे किसी शाहूकार का लड़का है। देवू के साथ बैठे हुए उसे देख-कर एक स्त्री ने दूसरी से पूछा भी तब किसी अन्य स्त्री ने उसे बताया, "नाहीं चीन्हेव ? अरे ई तौ भीमा करमन के बड़ा लड़का, रणछोड़वा। सहर मां रहिके सुधर गया है। कहत हैं कि बहुत कमात है घरे दमडी नाहीं देत। न तौ कबौ सोचत है कि चलौ महतारी-बाप से मिल आई। ई तौ दुलहिन क आने आवा है। देवूजी के साथे पढ़त रहा। बलाये होइ हैं तौ आवा होये। ठीक से रहै तौ ठीक। नाहीं तो कुलच्छनी तौ पूरा है।"

रणछोड़ सोमपुरा छोड़कर जब अहमदाबाद गया तो वहाँ कुछ दिनों तक होटल में कप तस्तरी धोता रहा। फिर ग्राहकों के स्वागत का काम संभालने लगा। कुकर-वाड़ा के बनिये के यहाँ मुनीम की नौकरी मिली तो वहाँ कुछ दिन रहा। फिर वहाँ से एक कॉलेज के होस्टल में भोजन परोसने की नौकरी करने लगा। किन्तु वहाँ भी उसका मन नहीं लगा। इतने में एक नये कॉलेज के होस्टल में रसोई के कन्ट्राक्टर की संभावना दिखी। वह अनुभवी तो था ही। मामा ने गारंटी दी। कुकरवाड़ा वाले सेठ ने सिफारिश कर दी। ठेका मिल गया।

अब वह बड़ा आदमी बन गया था। कॉलेज के लड़के उसे रणछोड़ भाई कहकर बुलाते थे। उसके हाथ के नीचे दो रसोइये तथा चार नौकर काम करते थे। सप्ताह में एक फिल्म देखता। खाना खाने के बाद पान खाता और सिगरेट पीता। वहाँ अच्छा खाकर स्वस्थ एवं सुन्दर हो गया था।

उसने जेब में हाथ डालकर एक चमकता हुआ पॉकेट निकाला। फिर इक्यावन रुपये का नेग दिया। यह देखते ही सभी के चेहरे फक पड़ गये। बड़े ही उत्साह से जेब से इक्कीस रुपये निकाल रहे धमा का हाथ भी रुक गया। उसे पहले से पता होता तो पचपन रुपये न लेकर आता? गेहूँ घर से बेचकर एक सौ पन्द्रह रुपये मिले थे। वे ज्यों के त्यों रखे थे। कल शाम जब वह फूलजी को लेकर बारात में चला तो घर से सैंतीस रुपये लेकर निकला था। सारंग आने के बाद उसने सोचा था कि यदि रात में सोते-सोते फूलजी अचानक उठकर कहीं चल देगा तो? उसे यहाँ कौन पहचानेगा? कहीं नदी की ओर चला जाये तो? वैसे तो नदी में अभी अधिक पानी नहीं है फिर भी उसे क्या मालूम की पानी में सोया नहीं जाता।

घर वापस आने तक देर हो चुकी थी। जेणाबहू ने कहा अब कहाँ जाओगे? सवेरे जाना। सलाह नेक थी। सुबह निकलते समय उसने दस रुपये घर में ही रख दिए और एक रुपया जेणाबहू को उधार दे दिया। इस समय उसके पास छब्बीस थे। पचीस से अधिक देने की स्थिति में वह नहीं था।

कुंकुम की थाली में नोट रखे थे। लवजी नाम लिख रहा था। जितने लोग बैठे थे सब परिचित थे।

"लवजी, थोड़ा उधार देबौ?"

"कितने? तुम्हारे हाथ में हैं उतने ही कि अधिक?" लवजी समझ गया था।

"दुई अधिक, सत्ताइस देव। रणछोड़ भाई ने एक रुपया हमें जादा देय क है।"

धमाकाका उसकी रकम से भी अधिक दे रहे हैं इस बात से रणछोड को कोई फर्क नहीं पड़ा। हमेशा अपमान से बुलाने वाले और अंतिम दिनों में तो गाली देने वाले धमाकाका ने आज सबके बीच उसे 'रणछोड़ भाई" कहा था।

लवजी ने बाद में बताया था 'धमाकाका तुम्हारे पचीस ही लिखे हैं। पिताजी तो कह रहे थे कि पन्द्रह लिखकर बाकी वापस कर दूँ।"

"अरे, फिर हमारी इज्जत के का होये?"

"लेकिन यहाँ तो हम दो ही हैं। तुम्हारी इज्जत को आँच नहीं आयेगी। सब लोग तो जानते हैं न कि तुम ने बावन दिया है।"

धमा के पीछे थोड़ी दूर पर खड़ा रणछोड़ सिगरेट पी रहा था। यह सुनकर वह कुछ दूर खिसक गया। लवजी ने बात बदलकर इशारे से उसे बुलाया। वह ऐसे आकर पास में खड़ा हो गया जैसे कुछ मालूम ही न हो। दो फूँक मारकर वह बोला – 'लो धमाकाका जरा टेस करो।"

"बहुत पिया है भई हमहूँ। हम बम्बई मां रहिन तब......"

"तुम्हारी बराबरी तो भला मुझसे की जायेगी ? आज रात को तो तुमसे "वीणा वेली" का गीत सुनना है।"

"वेली" का नाम सुनते ही धमा को बुरा लगा। "शाम की बात शाम को" कहते हुए उसने सिगरेट के धुएँ से फेफड़ों को भर लिया। "तुहरी उमर मां हमहूँ बहुत इस्तेमाल कीन है हाँ, बहुत मोटाई नाहीं कीन जात है।"

"लो, धमाकाका बुरा मान गये। लवजी तुम ही इनको समझाओ।"

"तूने वेली काकी वाली बात निकाली इससे उन्हें दुख हुआ है।"

"मैंने कोई जान-बूझकर नहीं निकाली है। जुबान से निकल गयी। और इन्हें भी बुरा तो नहीं लगाना चाहिए। नीच थी जो चली गयी।"

"नहीं रणछोड़, थी तो अच्छी।"

"इसका नाम है धमाकाका। दगा देने वालों की भी प्रशंसा करते हैं।" रणछोड़ दूसरा सिगरेट सुलगाकर वहाँ से चला गया। सामने से जेठा आ रहा था।

"अरे लवा, ऊ के रहा ? मोटर मां बैठ कै आवा रहा ऊ। बिल्कुल सफेद ?"

"भगवान जाने। होगा कोई रमणजी का मेहमान। हमें क्या लेनादेना ?"

"बाराती से जादा रमणजी इन सफेदपोसन कै चिन्ता करत हैं। सही बात की नाहीं लवजी ?" जेठा ने कहा।

"तुम्हारी बात तो सही है किन्तु मेरे पिताजी के सामने मत कह देना।"

"अरे का हम पगलाय गइन हैं ? और अतना अच्छा वियाह तौ हम कबौ देखा नाहीं।" कहकर वह देवू के पास आ गया।

देवू के मन में भी यही बात घुमड़ रही थी।

जेठा को देखकर देवू बोला – "मैं सोच रहा हूँ कि यह सारी बड़ी बड़ी तैयारियाँ किसके लिए की गयी थीं ? जिसकी शादी है वह तो एक ओर उपेक्षित पड़ा है। स्वागत तो बड़े बड़े लोगों का हो रहा है। यह प्रसंग उन्हीं लोगों के लिए था कि हमारे लिए ?"

"अस नाहीं सोचा जात। ई तो सबके संबंध रखै क पड़त है।" जेठा ने मन ही मन डरते हुए कहा। वह सोच रहा था कि कहीं मन की बात देवू के समक्ष खुल न जाये। वहाँ से भी उठ खड़ा हुआ।

फता, उमा, चेला और काला किसी गहरी चर्चा-विचारणा में व्यस्त थे। जेठा उनके पास चला गया।

"काहे हम का देख के चुप होय गयो ? का बतलात रहेव ?"

"गप्पाबाजी" – काला ने कहा।

इस क्षण इनकी बातचीत का विषय था : कैसे पैदावार बढ़ाएं और बचत करें। इन सभी को तखत के पास पूँजी देखकर अचरज हो रहा था। उसका पति वरवा सबको चाय के लिए बुलाने आया था। इसके घर के अहाते की सजावट देखने लायक थी। यह आय वनस्पति घी बेचने से हुई ? एक बार छना कचरिया

की दुकान से पाँच शेर वनस्पति घी का डिब्बा खरीदने बैठा था। दाम के विषय में पूछताछ चल रही थी वहीं जेठा पहुँच गया। उसने छना को बताया कि तेरे घर दुधारू भैंस न हो तो मेरे घर से घी ले जाना. वरना तेरे बच्चे यह घी खाकर सूख जाएंगे। छना ने मुस्कराते हुए जेठा को बताया कि वह मूर्ख नहीं है कि अपने बच्चों को वनस्पति घी खिलाए। यह ले जा रहा है शुद्ध घी बताकर बेचने को। जेठा को आश्चर्य हुआ - बेचने को? तू यह काम शुरू कर देगा तो ये तुरिया-कचरिया क्या करेंगे? उसने छना को बहुत डाँटा। पीटने की धमकी दी: घी की इस मिलावट को लेकर गोकुलिया तो बदनाम हो ही गया है, सोमपुरा को भी लज्जित करना है? जेठाने मिलावट करने वाले व्यापारियों को आड़े हाथों लिया: आज़ादी मिली उस दिन तो सभी ने तोरण बाँधे थे और रोशनी की थी। कहाँ गया वह सब?

घेमर आया, खाट की अदवान पर बैठा। जेठा की इच्छा थी कि घेमर रणछोड़ को बुला लाए। क्यों वह उससे कतराता चलता है? कुछ बिगाड़ा तो नहीं। खुद रणछोड़ भी जेठा चाचा से कहना चाहता था कि आपने मरम्मत करके मुझे शहर रवाना करके उपकार किया था। खेत में जाकर कहेगा। कौन कहता है कि मैं बचत नहीं करता? देखिए मेरे गले में सोने का डोरा, दूसरा घर पर छोड़-कर आया हूँ. उसके लिए...

जेठा ने रणछोड़ से और कुछ नहीं पूछा, सिगरेट माँगी। लजाना नहीं, अकेला फूँकता रहता है! रणछोड़ ने कहा: "आपको रास आए न आए, आपका गला खराब हो जाए।" हमें कहाँ गाने जाना है? अरे, हमारे गले तो गजवेली होते हैं. कुछ नहीं होगा।

एक सिगरेट जेठा ने और दूसरा घेमर ने जलाया। सब के बीच ये दो बहुत हो गए। दो दो दम लगाए बस, रंग के तो छींटे हुआ करते हैं, कुंडे नहीं।

लवजी आया। घेमर ने पूछा: टीके का कितना रुपया जमा हुआ। पाँच सौ के ऊपर। जेठा ने पूर्ति की। गाँव से दो-दो रुपये देने वाले बहुत से होंगे। आंकड़ा छः सौ से आगे निकल जाएगा। अच्छा कहा जाएगा अब खर्च क्या? गहने तो पहले से बनवाए होंगे। इसके जवाब में लवजी ने कहा कि उसे मालूम नहीं।

रणछोड़ की शादी हुई तब टीके का रुपया सवा तीन सौ से ज्यादा इकट्ठा नहीं हुआ था। रणछोड़ को इतना ही याद है कि पाँच रुपये उसे हाथ लगे थे, इतना याद है, "यह भी कुछ कम नहीं," कहते हुए घेमर उठा। रणछोड़ देवू के पास जाकर पत्ते खेलना चाहता था। घेमर ने कहा कि वह पत्ते खेलना नहीं जानता। "पकड़ रखना तो जानते हो न। पत्तों को भी क्यों, घेमर ने कहा कि वह खुद रणछोड़ को भी पकड़ रखने के काबिल है।" सब को हँसाने के संतोष के साथ घेमर बारात के पड़ाव की ओर गया, पभा मुखिया के घर।

समय बीत रहा था। दोपहर भी हो गई। पत्ते खेलने वालों को पता न

चला परन्तु घेमर के पेट में चूहे कूदने लगे थे। भोजन की देर हो तो रसोई की सुगंध लेकर लौटने के हिसाब से वह मंडप की ओर गया। अरे! आमंत्रित तो भोजन करने बैठ भी गए हैं। अब देर होगी तो भी आधे घण्टे की। वह लौटा। रास्ते में उसे क्या सूझा कि बारातियों के पास पहुँचकर जोर से बोला: चलिए, उठिए सब, जिमने। सुनते क्यों नहीं, चलिए।

सब इसी ख़याल में रहे कि नाई की पुकार हमें सुनाई नहीं दी इसीलिए घेमर बुला रहा है। देखते ही देखते पचपन साठ आदमी खड़े हो गए। चले, एक टोली की रचना हुई, बीच की जगह बालकों से भर गई, किसी ने पूछा: साथ में ढोली क्यों नहीं? "मंडप में बैठा होगा। हमें देखते ही ढोल बजाने लगेगा।" रणछोड़ ने पूर्ति की "आप लोगों को जिमना है या ढोल सुनना है? चलो, आगे बढ़ो।"

फर्ज अदा करने के भाव से टोली आगे बढ़ रही थी। रमणलाल की गली आ गई। घेमर उतावला चलकर आगे हो गया, मुड़कर सबके सामने खड़ा रहा।

"कहाँ चले सब?"

मूर्ख बनाया सबको। मुझे पूरा यकीन था कि यह धूतेरा अपने लच्छन दिखाये बिना नहीं रहेगा। जेठा सबके पीछे था। फला बेटे पर गुस्सा होकर फिर हंसने में सब को साथ देने लगे। लौटकर खाट पर आ बैठे। इस दूसरी घसान के कारण धमा जाग गया था। साफा बाँधते हुए बोला "अबे, मुझे छोड़कर खा आये?" "क्यों नहीं, अब आपके साथ दुबारा आयेंगे।" काला ने बताया। नरसंग पभा मुखिया सब घेमर के मज़ाक को लेकर बात कर रहे थे। लवजी को लगा कि पत्ते खेलने में हम घेमर भाई को साथ रखते तो ऐसा न होता। "अभी न होता तो बाद में होता।" कहते हुए घेमर छोटी बहन लीला से कहने लगा— "तुम्हारी भाभी सुबह बता रही थी कि मुझमें अक्कल नहीं। देखा?"

"अक्कल होती तो ऐसा करते?" हीरा ऊँची आवाज से बोली ताकि सब सुन सकें। "कल रात औरतों के साथ मिलकर गाने गाने लगे थे, आज ऐसा किया। "ऐसा याने? मेरी जगह कोई ऐरागैरा होता तो पिट जाता।"

बारातियों को भोजन के मंडप से इस प्रकार लौट जाना पड़ा यह सुनकर हेती आ पहुँची। चिन्ता और हास्य घुलमिल गये थे, लेकिन अंचल के पीछे चेहरा दिखाई नहीं देता था। उसने बताया कि जब आप साब आ ही पहुँचे थे तो लौट क्यों आये? जगह की कमी नहीं थी।"

नाई बारात को बुलाने आया तब तक हेती वहीं बैठी रही। "कमाल किया घेमर भाई आपने तो।" हेती को संतोष था कि किसी ने बुरा नहीं माना। भोजन में जब कुछ ज्यादा देर हो जाती है तो बारात में ऐसा वैसा मज़ाक करने वाला कोई निकल आता है।

पंगत उठ गयी थी। पहले बाहर के मेहमान खाने बैठे। बाद में बाराती।

शाम को रमणलाल और गलबा दोनों मंडप में आये, जहाँ बारात उतरी थी। रमणलाल खाट पर बैठ गये और गलबा शरबत तैयार करने लगा। अचानक याद आते ही वह बोल पड़ा "अरे कहाँ गवा ? जा दौड़ के बरफ लै आव। वहीं भूल गये। हुआँ पड़े पड़े गल जाये।"

देवू को लगा—यह आदमी अन्तिम वाक्य न बोलता तो कितना अच्छा था। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि बर्फ तुम्हारे लिए नहीं बल्कि उन्हीं सफेदपोश अतिथियों के लिए ही मँगाई गयी थी। हीरूभाई नहीं दिखाई पड़े। क्या आये ही नहीं क्या ?

उसने देखा रणछोड़ और रमणलाल बात कर रहे हैं और सब सुन रहे हैं।

सबको काँच के प्याले में शरबत दिया गया। रमणलाल उठकर देवू के पास आये। "क्या चलता है दूल्हे राजा ?"

"बहुत जल्दी आ गये मिलने।"

"बुरा लगा क्या ?"

"दूसरे के घर में बुरा लगाकर भी क्या किया जा सकता है ?"

"दूसरे का घर ? तुम्हारा तो यह दुहरा संबंध है।"

"इसी लिए तो ऐसा लगता है जैसे परायापन भी दुगना हो गया है।" देवू के वाक्यों में छुपा हुआ वैचारिक असंतोष रमणलाल के व्यस्त मस्तिष्क तक नहीं पहुँच सका। उन्होंने पुनः एक बार अपनी आदत के अनुसार मुस्काते हुए कहा—

"अच्छे लग रहे हो देवजी, कुछ स्वस्थ हो गये होगे।"

"स्वस्थ तो आप लग रहे हैं। किसी भी सफल नेता के साथ खड़े रह सके इतने स्वस्थ।" देवू की बात सच थी। माँस से भरे हुए लाल लाल गालों ने रमणलाल के चेहरे को गोल-मटोल बना दिया था। उनकी माँसल काया पर थोड़ी ही देर पहले पहना हुआ टिनोपाल वाला सफेद कुर्ता उनके सुबह वाले रेशमी कुर्ते की अपेक्षा अधिक शोभा दे रहा था।

देवू को रवीन्द्रनाथ टैगोर का एक लेख याद आया। साहित्य में सौन्दर्य और मंगल की चर्चा करते हुए उन्होंने एक बड़े समारंभ का दृष्टान्त दिया है। साज और शृंगार में कोई कमी न हो, जहाँ देखो वहीं रूप और रोशनी हो किन्तु यजमान द्वारा किये जा रहे स्वागत में ऊष्मा न हो तो ?

कहूँ ? नहीं। विवाह मात्र वर-कन्या का प्रसंग नहीं है। समाज की एक इकाई का उत्सव है। इसमें दूर के लोगों को बहुत-बहुत सभालना पड़ता है। भला मुझे ऐसा क्यों मानना चाहिए कि ये बड़े आदमियों के स्वागत में लगे रहे तो इसके पीछे उनका कोई स्वार्थ होगा ? सभी को अपने पद-प्रतिष्ठा के अनुसार कार्य करना होता है।

"तुमने अपने मार्क्स तो बताये नहीं।"

"मेरे बताने पर आप जानना चाहते हैं ?"

रमणलाल समझ गये। देवू सख्त नाराज है। उसे कुछ ऐसा आघात लगा है जिसका इलाज शब्दों से नहीं होगा। फिर भी प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

"वैसे तो मैं सारंग जाकर पता लगा आता। किन्तु यह सारा झमेला तुम्हारे लिए ही तो था। इसमें कोई कमी रह जाय तो? वैसे भी तुम्हारे मुँह से अच्छे परिणाम की बात सुनकर आनन्द के हिस्सेदार बन सकें यह मामूली बात है?"

"अच्छा बोल लेने की योग्यता हमेशा आपकी मदद करती रही है।"

रमणलाल हतप्रभ से देवू की ओर देखते रहे। हीरूभाई से नजर मिलने पर जिस भाव का अनुभव उन्हें होता है वैसा ही अनुभव आज हो रहा था। उन्हें लगा कि देवू कभी भी कहना नहीं मानेगा, यही नहीं वह अपने हित की बात भी नहीं सुनेगा।

लवजी आकर बैठ गया। उसने बिना पूछे ही बताया कि उसे नवमी कक्षा में इक्यासी प्रतिशत अंक मिले हैं। कक्षा में प्रथम है। देवू को तिहत्तर प्रतिशत मिले हैं यह बात लवजी ने रमणलाल को बता दी थी। अच्छे मार्क्स हैं। उन्हें तो सिर्फ चौंसठ प्रतिशत ही मिले थे।

बालूभाई ने देवू को आई. ए. एस. करने की सलाह दी थी यह बात इस समय उन्हें याद नहीं आयी। उन्होंने सोचा कि विषय वार अंक जानने के बाद तय करेंगे कि उसे आर्ट्स में जाना चाहिए या साइंस में। उन्होंने पूछा तो देवू ने बताया कि एक मात्र गणित में ही पंचानवे मार्क्स हैं बाकी में दो चार की ही कमी होगी, अर्थात् आगे पढ़ाई करनी हो तो उपयोगी हैं।

"क्यों?" रमणलाल चौंके।

"बी. ए. होकर भी यदि आपकी तरह ही पैसे के पीछे भागना हो तो मैट्रिक क्या बुरा है?"

"रमणजी का बी. ए. देवू के मैट्रिक के बराबर है।" लवजी बोला।

"मानता हूँ, किन्तु पढ़ना तो चाहिए ही।" रमणलाल ने लवजी से कहा।

"लवजी पढ़ेगा।" देवू ने कहा।

"लवजी, लवजी के लिए पढ़ेगा। तुम अपने लिए पढ़ो।" लवजी ने थोड़ा मजाक में कहा था। किन्तु देवू उदास हो गया। फिर दृढ़ आवाज में बोला जैसे संकल्प कर रहा हो:

"तब तो मुझे आगे नहीं ही पढ़ना है। मुझे अकेले अपने लिए तो नहीं ही पढ़ना है।"

"लवजी की बातों का यह अर्थ नहीं है।" हरजीवन बोलना चाहता था। लवजी ने उसे रोक दिया—"क्यों? बिल्कुल सीधी बात है, मैं पढ़ूँगा तो मेरे ही हिस्से में आयेगा। जैसे कि यदि मुझे नहीं आता तो यह मेरा अज्ञान है और..."

"अज्ञान व्यक्ति का व्यक्तिगत होता है, किन्तु ज्ञान व्यक्तिगत नहीं होता, हो नहीं सकता, होना भी नहीं चाहिए, नहीं तो साहित्य और संस्कृति नाम की कोई

चीज नहीं रह जायेगी । – यद्यपि देवू का यह किताबी ज्ञान था फिर भी रमणलाल को यह मानना पड़ा कि देवू का मैट्रिक उनके बी. ए. की अपेक्षा उच्चतर है ।

"तुम जैसा सोचो वह ठीक है । कॉलेज में जाना हो तो और कामधंधे में लगो तो – हर कहीं मुझसे जो भी संभव होगा मदद करूँगा ।"

"आदमी के लिए उसके परिवार की मदद पर्याप्त होनी चाहिए ।" देवू ने इस प्रकार कहा कि रमणलाल को बुरा न लगे ।

"परिवार का मतलब ?" रमणलाल ने भी मधुरता से पूछा ।

"मनुष्य का एक लघु-समूह । और गाँव यानी दीर्घ-समूह" – लवजी की हाजिरजवाबी का यह परिणाम था किन्तु देवू को इसमें एक अपना अर्थ प्राप्त हुआ । यहाँ भी वह एक बिखरे हुए मानव-समूह में ही बैठा है । सब मात्र अपने-अपने घर में सोच रहे हैं । दोपहर में हेतीबहन आयी थीं, वे भी यहीं की बनकर । भाई की शादी हो रही है इससे अधिक ननद की शादी हो रही है इस बात की खुशी ही उन्हें अधिक होगी ? ऐसा क्या हो जाता है कि आदमी देखते ही देखते बदल जाता है ? कल तक तो हम लोग एक साथ खेलते थे । एक दूसरे को हैरान करते थे । और आज ? ऐसा लगता है जैसे वे अब पिथू भगत की पौत्री नहीं हैं । बल्कि एक बड़े आदमी की पत्नी की शान से चलती हैं । क्या उन्हें भी पैसे का नशा हो गया है ?

हीरूभाई आ पहुँचे । देवू का अंतर्द्वन्द्व थम गया । शुभेच्छा के साथ ही उन्होंने प्यार की दो चपतें भी लगाईं । दूल्हे से लिपटी हुई औपचारिकता की जंजीर टूट गयी । क्यों एक दिन देर से आये ? हीरूभाई ने कान पकड़कर क्षमा माँगी । कारण बाद में बताया – अहमदाबाद गये थे । महसाना से सीधे जाना पड़ा । यह "आमची मुंबई" ने तहलका मचा रखा है । बालूभाई अपनी नयी कार में कुछ कार्यकर्ताओं को लेकर फटाफट बंबई पहुँच गये । नहीं तो वे भी आने के लिए कहते थे । टीका भी बाद में ही भिजवायेंगे ।

"अभिनन्दन और शुभेच्छाएँ आपके द्वारा भेज सकते थे ।" लवजी ने हीरूभाई के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा ।

"लवजी । यह कैसा तरीका है ?" देवू कहीं क्षमा माँगने के लिए तो नहीं कहेगा ? हरजीवन और माधव ने एक साथ सोचा ।

"यह तरीका हम दोनों के मध्य का है । हमारे बीच अच्छी दोस्ती है । सही बात है कि नहीं हीरूभाई ?"

"सही यानी ? बिल्कुल सही । एकसौ एक प्रतिशत ।"

"एक प्रतिशत बढ़ गया । यह बुरा हुआ ।" लवजी चुप नहीं हो सका । रमणलाल उठ खड़े हुए ।

"अकेले दूल्हे राजा के पास बैठे रहेंगे कि कन्या को भी आशीर्वाद देने आयेंगे ?"

"अरे मैं तो यह भूल ही गया था। शादी में दो पक्ष होते हैं।" हीरूभाई स्फूर्ति से उठकर खड़े हो गये।

"जनतंत्र की तरह, जिसमें शासन तो एक ही पक्ष के हाथ में रहता है।" कहते हुए लवजी भी रमणलाल और हीरूभाई के साथ चला गया।

"भाई तू कहां चलेव ?" खाट पर बैठे हुए नरसंग ने पूछा।

"आशीर्वाद देने।" कहते हुए लवजी ने सबको हँसाया। हीरूभाई तो चलते जाते थे – हँसते जाते थे। देवू को लगा वातावरण बदल चुका है।

19

नया कुआँ खोदने से जो मिट्टी निकली थी, देवू उसी की टेकरी पर गुम-सुम बैठा था।

भगतवाड़े के उत्तर में हरियाली फैली हुई थी। तालाब के किनारे वाले बरगद के पेड़ की पत्तियाँ हर बरसात में पहले की अपेक्षा कुछ अधिक ही हरी हो जाती थीं। विषम सपाटी वाला खेत भी हरी चादर ओढ़े सो रहा था। देवू ने निगाहें समेटकर फेर लीं। अपने खेत में देखने लगा।

दूसरे के खेत में और अपने में कोई विशेष अन्तर नहीं था।

मनुष्य बदल गये हैं किन्तु ये परिन्दे ज्यों के त्यों हैं। हर समय एक जैसी ही आवाज उड़ा देने से उड़ जाते हैं और थोड़ी देर बाद पुनः आकर वहीं बैठ जाते हैं। वे भयभीत तो हो जाते हैं। किन्तु दुखी नहीं होते। क्यों इनमें आकांक्षाएँ नहीं होतीं ? घोंसले बनाते हैं, कुछ दिनों बाद उन्हें छोड़ देते हैं। फिर नए वृक्ष, नये घोंसले।

मैं कहता था कि मुझे पढ़ने का शौक नहीं है। किन्तु ऐसा कभी सोचा भी नहीं था कि मैट्रिक के बाद पढ़ाई बन्द कर देनी पड़ेगी। सबने कहा किन्तु नहीं माना। कागविद्या जानने वाला वह काली टोपी मारवाड़ी भी कहता था – पटेल की किस्मत में शिक्षा बहुत है। विद्या का योग है और धन की कमी नहीं है। वह जो भी कहता था, सच निकलता था। फिर उसकी यही भविष्यवाणी क्यों गलत निकली ? यद्यपि घर बैठे भी परीक्षाएँ दी जा सकती हैं। ठीक है। रमणलाल कह रहे थे – घर बैठे-बैठे परीक्षा देकर मात्र पास हुआ जा सकता है। जबकि कॉलेज में स्पर्धा की भावना बहुत मदद करती है। तुम जैसे विद्यार्थी पर तो कॉलेज भी गौरव अनुभव करे ...

घर छोड़ने की इच्छा नहीं होती रमणजी। पिताजी को अब थोड़ा सा आराम नहीं मिलना चाहिए ? और लवजी पढ़ेगा ....

"दो वर्ष के बाद उसे भी तुम जैसे विचार आ सकते हैं।"

"तो मैं उसे जबरदस्ती पढ़ने के लिए मजबूर करूँगा।"

"तुम दूसरों पर जबरदस्ती करो और अपने पर दूसरों की सलाह का भी प्रभाव नहीं पड़ने दो।"

"सलाह देने वाला है कौन – यह बात भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।"

"तुम्हारी बहन ने कहा होता तो मान जाते न?"

"हेतीबहन ने कहा था कि मनुष्य यदि पढ़ लिखकर सुधरने के बदले लालची हो जाये तो पढने से क्या लाभ? मैंने उन्हें समझाया था कि अब तो लालची हो जाने को ही सुधर जाना कहते हैं।"

"तुम मेरे प्रति इतनी हीन दृष्टि रखते हो?"

"हकीकत को आप हीन दृष्टि कहते हैं।"

"तुम्हारी बहन को भी मैं लालची लगता हूँ?"

"यह तो बात की बात है। संभव है वे आपको लालची नहीं मानती हों। या आपका लालच उन्हें पसन्द हो। यद्यपि यह सच है कि वह कह रही थी कि पैसे और यश का क्या करना है; आदमी पूरे वर्ष में मुश्किल से बीस–पच्चीस दिन घर में रहता हो और वह भी शांति से न बैठे, शांति से बात न करे..."

"उनकी शिकायत सच हो सकती है किन्तु लोभी कहकर तो तुम मुझ पर अन्याय कर रहे हो।"

"मैं आपको कंजूस नहीं कह रहा हूँ। किन्तु आप ही बताइए क्या महत्त्वाकांक्षा स्वयं लोभ का ही एक प्रकार नहीं है?"

"कुछ आदमियों की महत्त्वाकांक्षाओं की वजह से ही तो सारा समाज विकास करता है, तुम यह क्यों नहीं स्वीकार करते?"

"उन्हीं कुछ आदमियों में आप हीरूभाई की गणना करते हैं कि नहीं?"

"हीरूभाई और मैं एक साथ काम करते हैं यह तो तुम जानते ही हो?"

"काम एक साथ करते होंगे, संभवतः बराबर करते होंगे किन्तु उसके पीछे उद्देश्य क्या है? इस प्रश्न का उत्तर संभवतः एक नहीं होगा। देखिए रमणजी, आप मेरे संबंधी हैं। बड़े भी हैं। सांसारिक बातों में मैं आपकी राय मान सकता हूँ किन्तु आपको मैं अपना गुरु मान लूँ ऐसा कोई मौका आपने मुझे नहीं दिया है। हीरूभाई के प्रति मेरे हृदय में सम्मान है। आपके जैसा बनने के लिए आपके जितना पढ़ने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं। और हीरूभाई के जैसा बनने के लिए तो सारा शिक्षण भी अपर्याप्त है.."

रमणलाल को बुरा लग गया था। हीरूभाई के प्रति उनके भी मन में सम्मान की भावना तो है किन्तु मैंने ज्यों ही तुलना की कि उनकी नजर बदल गयी थी। मुझे अदब से बात करनी चाहिए थी। संभव है, इस तरह बोलने का आत्मविश्वास भी हीरूभाई की वजह से ही आया हो। उन्हें कुछ भी कहा जा सकता है और उनसे कुछ भी सुनने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। उन्होंने तो स्पष्ट कह दिया था – इच्छा न हो तो नहीं पढ़ना चाहिए। जो जो लड़के मैट्रिक में अच्छे नम्बरों से

पास हुए हैं, उन्हें कॉलेज भेजने के लिए मैंने हर संभव प्रयास किये हैं। शिक्षा की लालसा को मैं दुर्गुण नहीं मानता। पढ़-लिखकर कुछ लोग खराब हो जाते होंगे यह बात सच है। किन्तु मेरे भेजे सभी विद्यार्थी ठीक निकले हैं। अब तो उत्साह में कमी आ गयी है किन्तु पहले तो मैं आकाश—पाताल एक करके भी उनके लिए व्यवस्था कर देता था। तुम्हारे जैसे सम्पन्न घर के लड़कों की बात अलग है। तुम्हें नौकरी पर गुजारा करना पड़े ऐसा नहीं है। तुम्हें आगे नहीं पढ़ना हो तो मैं भी आग्रह नहीं करूँगा। होश संभालने के बाद स्वयं शिक्षित हुआ जाता है। खेती करो, फुरसत में पढ़ो और गाँव के काम के लिए तत्पर रहो।

ईजू ने स्पष्ट और संक्षिप्त-सा उत्तर दिया था—

"तुम्हें पढ़ना हो तो पढ़ो, न पढ़ना हो तो न पढ़ो, पर मैं दुबारा स्कूल जाने वाली नहीं हूँ।"

उससे पूछने की क्या आवश्यकता थी ? मूर्ख। बात कैसे की जाती है, कैसे व्यवहार करना चाहिए। कुछ नहीं जानती। विदा के दिन कितनी खुश थी।

"मैं तो सबके साथ रहूँगी और कल से तुम अकेले। लो खाओ !"

"मैं भी तेरे साथ आऊँ तो अपने साथ ले जायेगी ?"

"ले जाकर कहाँ रखूँगी तुम्हें ? फिर तुम तो मुझे कहीं भी रोककर गाल पर चपत लगाओ, हाथ काट खाओ। शरम का तो नाम-निशान भी नहीं है। मेरी साड़ी खींचने लगो।"

"तुझे ओढ़नी ओढ़ना चाहिए, साड़ी नहीं।"

"क्यों मैं कोई छोटी बच्ची हूँ ? मैं छोटी होती तो मुझे विदा किया गया होता ?"

"तू कितने वर्ष की है ?"

"तुम्हारे जितने।"

"तब तो तू मेरे जितनी ही समझदार भी होती।"

"तुमसे अधिक समझदार हूँ। चार आदमियों को बुलाकर चाहे पूछ लो।"

"नहीं यह तो हम जब अकेले हों तभी देखा जा सकता है।"

"देखो, फिर वही बात शुरू कर दी न तुमने ? नहीं हाँ, ऐसा नहीं होगा। तुम्हें दाँत से काट खाना हो तो काट लो लेकिन वह सब नहीं। फिर तो मुझे हर महीने जाकर अलग बैठना पड़े। देखो इतने बड़े हो गये तब भी है इतनी भी समझ ?"

"अब मैं तुझे कैसे समझाऊँ कि .."

"उल्टा-सीधा समझाकर फुसलाना है, लेकिन मैं भी कोई ऐसी नासमझ नहीं हूँ।"

"नासमझ है, बिल्कुल नासमझ नहीं तो—"

"सीने में दर्द होने लगे इतना किस लिए दबाते हो ? बहुत ताकतवर हो मैं जानती हूँ।"

"तू सबकुछ जानती है। मात्र यही नहीं जानती कि इस अटारी पर तुझे भेजा गया है इसका क्या अर्थ होता है।"

"देखो फिर तुमने वही बात की। जैसे पहली रात को सोने दिया था वैसे ही आज भी सो जाने दो।"

"अच्छी बात है। तू ले मेरे सिर पर और पीठ पर हाथ फिराकर सुला दे।"

"क्यों नहीं ? छोटे बच्चे हो न ?"

"कोई बात नहीं। लेकिन इतना कहना तो मान ले।"

थोड़ी देर तक गाल, सिर तथा कान को सहलाकर वह कंधे पर चुटकी भर-कर करवट बदलकर लेट गयी थी। तुरंत सो गयी होगी।

मूर्ख, लापरवाह, कोई छोटी थी क्या ? छाती पर फूल तो खिलने लगे थे। मैं क्या इतना भी नहीं समझता ? ऐसा होता तो मैं उसके साथ सोने के लिए जाती ही क्यों ? घूँघट निकालकर जब वह धीरे-धीरे चलती थी तो बिल्कुल युवती लगती थी।

पागल, अब पत्र लिखती है—"एक दिन के लिए आ जाओ न ! मैं तुम्हें देखना चाहती हूँ।" जब कि इतनी होशियार तो है ही कि नीचे अपना नाम भी नहीं लिखा है। उसे इतना विश्वास है कि बिना नाम लिखे हुए भी मैं उसे पहचान जाऊँगा।

उस दिन घेमर पूछ रहा था—ब्रह्मचर्य आश्रम से निकलकर गृहस्थ आश्रम में पाँव रखा कि नहीं ? रात्रिशाला में उसे चारों आश्रमों के नाम बताकर कितनी बड़ी भूल की थी। लक्षणा में बात करना उसे आ गया है। एक प्रश्न को टाल देने पर वह दूसरा पूछता। अन्ततः उससे सचाई बतानी ही पड़ी—प्रथम रात्रि में तो वह थकी हुई थी, सो गयी। दूसरी रात को उससे पूछा, फुसलाया, प्रशंसा की, मनाया, जो भी हो सकता था किया, सभी उपाय आजमाया किन्तु मुझे ऐसा लगता है उसे इस बारे में कुछ पता ही नहीं चलता।

अरे देवूभाई तुम भी कमाल करते हो। पढ़-लिख गये हो, बस। कुछ समझते नहीं। अरे। औरत की जात को तुम नहीं जानते ? उन्हें तो हमसे दो वर्ष पहले पता चल जाता है। मैं अब समझ गया। प्रथम रात्रि की महिमा भला इतनी क्यों है ? अरे तुम्हें किसी से सलाह लेनी चाहिए थी। वह तो बेचारी शर्म ही शर्म में डूबी रहे। मना नहीं करेगी तो क्या अपनी तरफ से माँग पेश करेगी ?

तुम्हारी बात गलत है हाँ घेमर भाई, मैं आदमी का स्वभाव भी नहीं समझ सकता क्या ?

अंधेरे में न भी समझ में आये।

नहीं-नहीं आवाज को पहचानने के लिए अंधकार बाधा नहीं हो सकता। यौवन अपना मूल्य किसी से भी माँग सकता है। शर्म भला कब तक टिकी रह सकती है ! वह अभी छोटी ही है।

तब तो उसे ससुराल भेजने वाले भी गधे हैं और ऊपर अटारी पर तुम्हारे पास भेजने वाले भी गधे हैं। छोटे-बड़ों का फर्क एक तुम्हें ही तो मालूम है। है न?

कुछ स्त्रियाँ शरीर से तो विकसित हो जाती हैं किन्तु उनमें स्त्रीत्व एक दो वर्ष के बाद जाग्रत होता है। ऐसा मैंने कहीं पढ़ा है।

तब तो तुम एक ओर पुस्तक खोलकर रख लेना और दूसरी ओर जिन्दगी जीना। ठीक है?

पुस्तक तो मैंने बन्द ही कर दी।

यह भी बुरा किया। हम तो ऐसा मानते थे कि तुम बहुत-बहुत आगे जाओगे। और हमें भी प्रोत्साहित करोगे। नरसंग काका तो कह रहे थे कि चाहे जैसी भी परिस्थिति आये देवू को खूब पढ़ायेंगे।

उन्हें खराब परिस्थितियों का सामना न करना पड़े यह देखना मेरा फर्ज नहीं है?

लो चलो उठो, बादल घिर आये हैं। भिगोये बिना नहीं मानेंगे।

तुम जाओ, मैं बैठूँगा। फुरसत में हूँ अतः भीगूँगा।

हम तो कभी नहीं भीगे। फिर भी हमारा कुछ कहां बिगड़ गया। बैठो फिर। मैंने तो सोचा था बात करते-करते घर चले जायेंगे। बरसात में साली औरत भी मायके चली गयी है। अब पता नहीं कब उसके बच्चा पैदा होगा और कब वह हमेशा के लिए आ जायेगी?

घेमर के शब्द देवू को नहीं सुनाई दिये। उसका मन पंख लगाकर गोकुलिया उड़ गया था। ईजू छत पर खड़ी खड़ी बरसात की राह देख रही होगी

यहाँ आयी थी तो झाँझर उसने पहन रखी थी, अभी पहने होगी। भीगी हुई धरती पर पाँव पड़ते ही झन्न की आवाज आती होगी। वह पीछे मुड़कर उस आवाज को खोजने लगती होगी। अरे! यह कैसा पागलपन है! कैसी कल्पना है। पदचिन्ह भला घास पर पड़ते होंगे? छोटे छोटे चिन्ह तुरन्त मिट जाते होंगे। उसके पाँव भी उसकी हथेली की तरह ही कोमल थे। गले पर हाथ रखते ही वह हँस पड़ती। बहुत गुदगुदी लगती है। छूओ मत, मेरी कसम। तुम्हें भगवान ने कैसा बनाया है? सोते भी नहीं। आज कैसी उमस है? जरा भी हवा नहीं है। ऊपर टीन पर जाकर सो जाने की इच्छा हो रही है। "डर नहीं लगेगा?" तुम तो साथ में हो ही। इस जाँघिये में कैसे दिखते हो? इससे अच्छा लंगोट पहनो तो बिल्कुल साधु जैसे लगो। गलत कह रही हूँ क्या?

मैं सचमुच साधु हो जाऊँ तो?

मेरे गलबा भैया भी एक दिन पूछ रहे-मैं साधु बन जाऊँ तो तू क्या करेगी? मेरी भाभी ने तुरन्त उत्तर दिया-कल के बजाय आज ही बन जाओ। तुम्हें रोकता कौन है?

ईजू को हेती के साथ रहना चाहिए। उसके स्वभाव और संस्कार में सुधार

आयेगा। यद्यपि लालसा जैसी चीज नहीं है। बाल-स्वभाव भला इतनी जल्दी बदलता होगा ? हो सकता है गलबा की पत्नी ने उसे इस विषय में भयभीत कर दिया हो। अतः मात्र बैठे नहीं रहना चाहिए।

घेमर की भविष्यवाणी गलत निकली। बरसात नहीं हुई।

देवू को लग रहा था कि ईजू उसके इतने नजदीक खड़ी है कि वह हाथ बढ़ाये तो उसका आँचल हाथ में आ जायेगा। किन्तु वह इतनी चंचल है कि बिजली की तरह चमककर चली जाती है। और इस हरियाली में जाकर छुपकर पुकारती है— क्यों बैठे बैठे मुझे याद करते हो ? लो, आ जाओ। मुझे मेरे खेतों से ढूँढ निकालो। तुममें तो कहाँ शर्म नाम की चीज है ? तुम तो ऐसे हो कि मेरे पीछे पीछे दौड़ते हुए नदी तक आ जाओ। बोलो, गलत कह रही हूँ क्या ?

नदी में बाढ़ आयी थी तो हम सब देखने गये थे। माँ कहती थी पानी बहुत होगा, डूब जायेगी। अरे, कहीं डूबते होंगे ? क्या मुझे तैरना नहीं आता ? मैं तो नदी में भी तैर के दूसरे किनारे तक पहुँच सकती हूँ। इस तरफ मछलियाँ खूब हैं। वे जब मेरे पैर में काटती हैं तो गुदगुदी लगती है। ऐसे में मैं तैरना भूल जाती हूँ। बाकी तुम्हीं बताओ – क्या मैं डरपोक हूँ। कभी नहीं। भैया मुझसे आगे पढ़ने के लिए कह रहे थे। मैंने तो कह दिया नहीं पढ़ना है। पाँचवी कक्षा में मेरे सिवाय सभी लड़के थे। बात भी किससे करें ? ऊपर से वे सबके सब बुध्धु, तुम्हारे जैसा कोई नहीं था। और क्या मैं झूठ थोड़े ही कह रही हूँ। मैं कभी झूठ बोलती ही नहीं। नहीं पढ़ा तो नहीं पढ़ा मैंने। भैया से लोग डरते होंगे। उन्होंने बहुत कहा, मैंने स्पष्ट शब्दों में जवाब दे दिया – कल मैं ससुराल आऊँगी। तो क्या उनकी तरह कंधे पर झोला लटकाकर मैं भी स्कूल जाऊँगी ? फिर तो वे भी अहमदाबाद पढ़ने जायेंगे। बोलो, तुम मुझे उनके साथ भेजोगे ? और तुम भेजो तब भी मैं जाऊँगी ? दूसरी मिट्टी से बनी हूँ।

हाँ, सच है, यह सचमुच दूसरी मिट्टी की बनी है। घेमर की बात सच नहीं हो सकती। वह कितनी भोली और चंचल लगती थी ! जब भी आती छम-छम करती हुई आती जैसे लय-ताल में चलती। आते ही लालटेन बुझा देती।

अरे मुझे पढ़ना है।

कल पढ़ना।

कल भी तू लालटेन नहीं बुझा देगी यह कैसे मान लूँ ?

मालूम नहीं है ? कल तो मैं चली जाऊँगी ?

और वह देखते ही देखते चली गयी। और अब दो वाक्यों का पत्र लिखती है–"एक दिन के लिए आ जाओ न ? मैं तुम्हें देखना चाहती हूँ।"

रमणलाल का क्या अभिप्राय था इस वाक्य के पीछे कि–तुम्हारे इस निर्णय के पीछे कोई विशिष्ट कारण छिपा लगता है। "मैंने असंतोष या नापसंदगी की वजह से घर पर रहने का निर्णय नहीं लिया है। मैं घर पर हूँ इसमें बुरा भी क्या है ?

वे जो मानते हों, उन्हें मानने दो। यह कोई आदर्श नहीं है। मुझे जो व्यावहारिक लगा मैंने वही किया है। मेरी उम्र के तमाम लड़के पाँच-पाँच वर्षों से खेती का कार्य कर रहे हैं। आज तक मैंने जो भी किया है, अपने शौक से किया है, यह दिखा देने के लिए कि मुझे यह सब आता है। अब जो कर रहा हूँ वह काम है। बुवाई के समय पिताजी लगातार हल चलाकर हफ्ते भर में कितना थक जाते होंगे? लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी थकान की बात की? मैं तो एक ही दिन में बैठ गया था। "थक गया माँ मैं तो।"

और यह थकान तब उतरी थी जब लवजी की ओर माँ की बातें सुन-सुनकर वह बड़ी देर तक हँसता रहा था। गरम पानी से नहाकर जब उसने खिचड़ी और दूध खाया था तो कितनी मिठास लगी थी उनमें . सब लोग कहते हैं कि आज का खाया कल तक भूल जाते हैं। मुझे ऐसा नहीं लगता। भूलना चाहकर भी कुछ बातें कहाँ भूली जाती हैं?

ईजू की ऊष्मा...ऊष्मा भरी साँसें उसे भी बहुत अच्छी लगतीं। स्पर्श की ऊष्मा से जैसे उमस की तपन दूर हो जाती और उजाला होते-होते वह मुझे भी जगाकर खड़ी हो जाती थी।

अरे, मुझे क्यों जगा दिया?

तो क्या मैं अकेली जागूँ?

तुझे तो मालूम है कि मैं अभी सवेरे सोया हूँ। नींद ही नहीं आयी थी।

कहाँ से आयेगी? मन में मैल हो तो? मन में मैल होता तो तेरी हाँ-ना सुनने के लिए रुकता पगली?

मैं कहाँ झूठ कहती हूँ? तुम्हारा मन बार बार वहीं पहुँच......

वह तो पहुँचे, तू कहाँ पराई है।

पराई हूँ। एक बार नहीं सात बार पराई हूँ।

मैं तुझे अपना बना लूँगा।

फिर हाथ पकड़ा?

सच बता, मैं तुझे छूता हूँ तो अच्छा नहीं लगता?

अच्छा लगता है। तुम कहते हो तो गाँव में डुग्गी बजवाकर कह दूँ?

मूर्ख, खिड़की से बाहर सिर निकालकर क्यों बैठी है? कोई तेरा चेहरा देख लेगा तो? पहली बार में औरतें अपना हाथ भी किसी को नहीं देखने देती।

अब रहने दो न, सभी औरतों को मै जानती हूँ। यह तुम्हारी हीराभाभी भी कैसी हैं? तुझे छोड़ने आती हैं तब भी और जब भी आती हैं हर बार बिना चुटकी भरे नहीं जातीं। अपने घर बुलाकर ले गयी फिर तो पूछने लगी सब कुछ...।

तूने क्या कहा?

मैंने कहा कि जरा जोर से बोलो। मुझे सुनाई नहीं पड़ता। बहरी हूँ। क्या करती बेचारी। ओसारे में उनकी सास बैठी थीं।

'तुझे कैसे मालूम कि सास के साथ उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं।"

"यह तो नियम है। किसी भी सास-पतोहू के संबन्ध अच्छे नहीं होते। कोई चिल्ला लेता है तो कोई गम खा जाता है।"

'तू क्या करेगी ?"

"कोई भी समझदार क्या कर सकता है ?"

"हो सकता है तुझमें बुद्धि हो किन्तु तू समझदार तो नहीं है।"

"तुम समझदार हो लेकिन बुद्धिमान नहीं हो।" इतने में हीराभाभी ने खिड़की का किवाड़ खटखटाया था : "ईजू बहू !"

ईजू फटाफट सीढ़ियाँ उतर गयी थी। धीरे से सांकल खोली, फिर नववधू की तरह धीरे-धीरे चलने लगी थी। आगे-आगे हीराभाभी और पीछे-पीछे वह, उसी मद्धिम और संतुलित गति से। जरा भी जल्दी से चले और अस्त होता हुआ चंद्रमा उसे देख ले तो ?

अरे, बरसात कब आ गयी ? भिगोकर चली भी गयी ? किसी ने पीछे से आकर पानी तो नहीं छिटक दिया है ? देवू उठकर खेतों में घूम-घूमकर फसलों को देखने लगा।

20

लवजी स्कूल से छूटकर अखबार ले आता था, पुस्तकालय के लिए। देवू की विशेष सूचना थी कि अखबार घर में नहीं रखा जाये। मैं भी वहीं जाकर पढ़कर आऊँगा। अब तो वह कामके दिन भी नहीं थकता। आठ बजे के लगभग वह पुस्तकालय में जा बैठता। उसे देखकर कोई न कोई आ पहुँचता। कोई खड़ा रहता तो कोई चलते ही चलते पूछता—है कुछ नया पुराना ?

विकास योजना का समय एक साल बढ़ा दिया गया था। उस योजना से जो थोड़ा सा लाभ हुआ था उसीसे बैटरी वाला एक रेडियो खरीद लिया गया था। लोग समाचार सुनते थे।

अगस्त महीने के लगते ही लोग समाचार सुनने के लिए आतुर होने लगे। सब इतना तो जानते ही थे कि इस सारे झगड़े की मूल बम्बई है। "आमची मुंबई" का अर्थ धमला ने समझाया था। उसका मानना था कि बंबई गुजरातियों की है। हम गुजराती लोग तो बड़े शेठ साहूकार थे। मराठे लोग अपने यहाँ काम करते थे। वे कभी भी बम्बई को नहीं माँगेंगे। क्यों माँगेंगे ? बघारने के लिए ?

देवू ने बताया कि बहुत सारे मजदूर और नौकर बम्बई की माँग में शामिल हुए, सीधी-सीधी लड़ाई में या फिर पुलिस की अंधाधुंध गोलीबार में मारे गये। बम्बई महाराष्ट्र में मिला लेने के पक्ष में नौकर वर्ग के लोगों से लेकर शंकर राव

देव जैसे सर्वोदयी भी हैं। बम्बई के बदले में कोरा चेक देने की बात उन्होंने ही की है।

सोमपुरावासी इस समझौते के लिए तैयार थे। सीधीसादी गणना थी – ठीक ठीक रकम मिलती हो तो दे देना चाहिए। अनावश्यक झगड़ा किस लिए करें? और "गुजरात" का "महागुजरात" तो बनने ही वाला है। हो सकता है न भी बने – देवू का कहना था। कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, विदर्भ, महाराष्ट्र और बम्बई को "संयुक्त बम्बई" नाम देकर विशाल द्विभाषी राज्य बनाने का भी प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है।

"किन्तु बम्बई मिलेगी तो गुजरात को ही मिलेगी न?" हरजीवन की यही मान्यता थी। "नहीं मिलेगी तो कहाँ जायेगी?" प्रश्न लवजी का था।

"महाराष्ट्र में और कहाँ?"

"तूने मेरा प्रश्न समझा ही नहीं। बम्बई गुजरात में रहे या महाराष्ट्र में इससे वह अपनी जगह से एक इंच भी इधर-उधर तो होगी नहीं।"

"लवजी की बात सच है।" देवू ने कहा–"वह भारत में तो रहेगी ही। और अपने देश का नाम गुजरात नहीं, भारत है।"

"मैं तो भारत की भी बात नहीं करता। पाकिस्तान वाले कहते हैं – हँसकर लिया पाकिस्तान लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान – मान लो यह बात सच भी हो जाये तो जो पृथ्वी पर है वह वस्तु तो पृथ्वी पर ही रहेगी – करोड़ों वर्षों तक भी।" लवजी की ऐसी ऊँची ऊँची बातों की वजह से चर्चा नीरस हो जाती और अहमदाबाद और गुजरात की बातें भुला दी जातीं। पिछले कुछ दिनों से दंगे, आगजनी और गोलीबारी के समाचार आ रहे थे। देवू कहता – रेडियो यदि इस प्रकार गोल-गोल समाचार देता है तो बात समझी जा सकती है। वह सरकार का माध्यम है। किन्तु अखबारों को क्या हुआ है? मैं भी दो दिन से तीनों अखबार मंगाता हूँ। तीनों में अलग अलग समाचार आते हैं। इस प्रकार गलत समाचार छापकर ये अखबार वाले जनता को सरकार के खिलाफ क्यों भड़काना चाहते हैं? अंधाधुंध गोलियाँ चलाई जा रही हैं तो क्या सिर्फ इनेगिने ही लोग मारे जायेंगे? छानबीन करने के बाद सही समाचार क्यों नहीं छापा जाता?

तुम तो कहते थे कि अब अपनी ही सरकार है, अपना ही राज है तो फिर यह गोलीबारी क्यों?

मेरी भी समझ में नहीं आता–देवू सोच में पड़ जाता। ऐसा तो भला क्या हो गया होगा कि गोली चलानी पड़ी। अहमदाबाद में कांग्रेस हाउस जलकर भस्म भी हो जाता तो क्या फर्क पड़ता? मकान तो फिर बन जाता। किन्तु जो युवक विद्यार्थी मारे गये हैं वे फिर वापस लाये जा सकते हैं?

"गोलियों पर किसी का पता नहीं लिखा होता कि..." ठाकोर भाई देसाई बचाव करते हैं? सेवादल के शिविर में जब उन्हें सुना था तब तो उनके ज्ञान के

प्रति सम्मान उमड़ आया था। किन्तु यह बचाव? गोलियाँ अंधी होती हैं, सच है। तो क्या उसका बचाव भी अंधा ही हो? हीरूभाई अब ठाकोर भाई को बड़ा नहीं मानेंगे, किन्तु क्या ठाकोरभाई ने ये ही शब्द बोले होंगे?

समाचार पढ़कर देवू दुखी हो गया था। पिता ने भी कहा था – यह ठीक है कि राज्य भय से ही चलता है। लेकिन इतना भयानक नरसंहार?

जो लोग आजादी के लिए मरे वे गौरव से मरे। जो लोग जीवित हैं वे मरने वालों पर गर्व करते हैं। किन्तु इसे क्या कहा जा सकता है?

सेवादल के गणवेश में स्टेशन पहुँचने का आदेश था। हीरूभाई का आदेश पाकर वह दुविधा में उलझ गया। क्या आवश्यकता है? मोरारजीभाई देसाई की सभा की व्यवस्था के लिए? देवू की इच्छा न होते हुए भी वह गया।

स्टेशन पर जब वह पहुँचा तो हीरूभाई उसीकी राह देख रहे थे। अभी गाड़ी के आने में देरी थी। देवू को मिलाकर वे अठारह जन थे। प्लेटफॉर्म पर खड़े-खड़े जो बातें हो रही थीं वे विरोधाभासी थीं। सेवादल के सैनिक महागुजरात वालों के लिए मनमानी बात कर रहे थे। वे सब तो साम्यवादी हैं, गुंडे हैं, सरकार को गोली चलाने के लिए मजबूर करते हैं। संभव है और भी गोली चलानी पड़े। राज्य चलाना हो तो ।

देवू ने जोर से हीरूभाई से पूछा – हम लोग गोलीबारी का समर्थन करने जा रहे हैं? सुनकर सब चुप हो गये। हीरूभाई ने इशारे से देवू को शांत कर दिया।

गाड़ी आने में कुछ ही पल बाकी थे। हीरूभाई ने सोचा टुकड़ी का नायक किसे चुनें? देवू ही हर प्रकार से योग्य है किन्तु उसने गणवेश नहीं पहन रखा था। उन्होंने कहा होता तो स्टेशन के प्रतीक्षालय जाकर पहन आया होता। किन्तु वह किसी उलझन में है। पहले उसकी बात सुलझानी पड़ेगी। यदि उसका मन शांत न हुआ, वह बिना कुछ किए ही वापस चला जायगा। ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में वह अहमदाबाद को देखे यह उसके मानसिक विकास के लिए उचित है।

गाड़ी आ पहुँची। देवू बिलकुल बाद में हीरूभाई के साथ चढ़ा। गाड़ी चल पड़ी तब कहीं रमणलाल भी दौड़ते हुए आये और गाड़ी पर चढ़ गये।

"मोटे आदमियों को इतना दौड़ना नहीं चाहिए।" हीरूभाई ने कहा।

"और दौड़ना ही हो तो इतना हाँपना नहीं चाहिए।" देवू ने कहा।

"इस तरह दौड़ने से हार्ट फेल हो सकता है।" पीछे से आवाज आयी। एक प्रौढ़ की आवाज थी। देवू ने उसे घूरा। गाड़ी चल पड़ी तो उसने कहा– "काका, इस प्रकार नहीं बोलते।"

"मैं तो भलाई के लिए कहता हूँ। रमणभाई को मैं कहाँ नहीं जानता?"

"कैसे हैं, ठीक तो हैं सेठ?"–रमणलाल ने पीछे देखा। कुर्ते की जेब से रूमाल निकालकर मुँह पोंछते हुए उन्होंने कहा–

"बहुत समय के बाद मैं इतना दौड़ा हूँ।"

"दौड़ना तो आना चाहिए, नेताओं को तो विशेष। कहीं श्रोता लोग बिगड़ जायें तो उनके क्रोध से बचने में सिर्फ अपने पाँव ही मदद कर सकते हैं, बुद्धि नहीं।" देवू की बात पर हीरूभाई हँस पड़े। सभी ने अनुसरण किया।

देवू ने हीरूभाई को गंभीरता से देखते हुए कहा—

"हम कहाँ जा रहे हैं, मैं यह तो जानता हूँ किन्तु वहाँ किसलिए जा रहे हैं यह नहीं जानता।"

"शायद यह बात यहाँ पर उपस्थित लोगों में से किसी को नहीं मालूम होगी।" रमणलाल ने सबके चेहरे को पढ़ते हुए कहा।

"मुझे मालूम है। हम लोग मोरारजी का भाषण सुनने जा रहे हैं।" एक छोटे लड़के ने कहा।

"मोरारजी का उपवास तो हिंसा के विरोध में है।" देवू ने कहा।

"लोगों ने उन्हें सुना नहीं है इसलिए भी उनका उपवास है।" रमणलाल ने धीरे से कहा। हीरूभाई को यह बात अच्छी नहीं लगी।

"आप तो जानते हैं कि उनकी सभा में कैसा उत्पात हुआ है? यह गुजरात की प्रजा को शोभा देता है?"

"इसमें प्रजा का क्रम तो बाद में आता है। यह संघर्ष तो कांग्रेस और विरोध पक्षों के मध्य है।" रमणलाल यह बताना चाहते थे कि प्रजा को तो कांग्रेस के निर्णय से कोई आपत्ति नहीं है।"

"विरोध पक्षों में भी विशेषकर साम्यवादी लोग।" हीरूभाई ने इन्दूलाल याज्ञिक और जयंती दलाल का नाम लिया। वे दिनकर मेहता का नाम लेने ही वाले थे कि रमणलाल बोल पड़े—

"हालांकि अब तो सब एक ही हो गये हैं। सबकी राजनीति भी एक हो गयी है। चिल्लाओ, तोड़फोड़ करो, आग लगाओ। यदि लोग समय पर सचेत नहीं हो जायेंगे तो समझ लो कि साम्यवाद आ जाये वह दिन दूर नहीं।"

"लोग यदि साम्यवाद को योग्य समझते हैं, या साम्यवाद यदि उनके अनुकूल है तो वह आयेगा ही। वैसे भी रूस और चीन के साथ हमारे नेताओं के संबंध तो अच्छे हैं ही। तुम्हारे नेहरू ने "

"हम सबके नेहरू ने" हीरूभाई ने सुधार किया। देवू बिना किसी आपत्ति के बोलता रहा—

"1954 में अमेरिका के राष्ट्रपति आईजन होवर द्वारा मिले सैनिक मदद के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था जबकि उसके तीन महीने बाद ही चाऊ-इन लाई को आमंत्रित किया था।"

"नेहरू विश्वशांति में विश्वास रखते हैं। शीत युद्ध से संसार को मुक्त रखना चाहते हैं। गाँधीजी के अहिंसा के सिद्धान्त की स्थापना विश्व-स्तर पर करना चाहते हैं।" रमणलाल ने एक सफल वक्ता की मुद्रा में कहा।

"गाँधीजी का अहिंसा-सिद्धान्त देश में ही निर्मूल हो गया है। साबरमती के एक किनारे उनका आश्रम है और दूसरे किनारे उनका नाम भुनाकर खाने वालों के यहाँ से गोलियाँ चलायी जा रही हैं।" देवू के तर्क से सभी का हृदय आर्द्र हो उठा था।

"गोलीबार कांग्रेस सरकार की सबसे बड़ी भूल है। कांग्रेस को एक दिन इसका मूल्य चुकाना पड़ेगा। फिर भी मुझे विश्वास है कि राज्य-संचालन करने वाले यह गलती नहीं दुहरायेंगे। और हकीकत तो यह है कि जिस आदमी के नाम से गोलीबारी की गयी है यदि वह आदमी स्वयं कांग्रेस भवन में उपस्थित होता तो प्राण की बाजी लगाकर भी गोलीबारी नहीं होने देता।" हीरूभाई ने सविस्तार बताया कि ठाकोरभाई को गोलीबारी के कारण कितना आघात पहुँचा है।

देवू के दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा था। कांग्रेस के प्रति उसका क्रोध शांत हो चुका था। उसे विश्वास होने लगा था कि मोरारजीभाई का उपवास शांति-स्थापना के लिए शुभ होगा।

अहमदाबाद में शांति थी। उसका मन अशांत था — मनुष्य शांतिप्रिय होता है। भले ही वह श्मशान की शांति ही क्यों न हो?

वे लोग भद्र के हाइस्कूल में ठहरे थे। भोजन अच्छा था किन्तु देवू को स्वादहीन लग रहा था। यह समूह-भोज है या उन मृतकों का श्राद्ध? उससे खाया नहीं गया। पतल लपेटकर उसे फेंकने के लिए वह बाहर आ गया। उसने देखा एक ओर दो कुत्ते खड़े थे, दूसरी ओर दो लड़के शरीर पर गंदे चीथड़े लपेटे, उतरा सा चेहरा लिए ताक रहे थे। उसे एक धक्का लगा। उसके हाथ जड़ हो गये। पत्तल को किस ओर फेंकूं? कुत्ते की ओर या कुत्तों जैसे खाने के लिए झपट रहे इन लड़कों की ओर? घर पर भिक्षा माँगने आये भिखारी को उसने फेंककर भिक्षा नहीं दी थी। ये लड़के तो नीचे खड़े थे। उनकी ओर पत्तल का फेंकना मानवजाति का कितना बड़ा अपमान है? देवू जड़वत् हो चुका था।

"ओ मित्र! अपनी पूँजी को लिए हुए कब तक खड़े रहोगे?" जिला-संयोजक के शब्दों में व्यंग्य के साथ अभिमान भी था।

देवू की पकड़ ढीली हो गई। पत्तल किस दिशा में गिरी उसे नहीं मालूम। संयोजक को उपेक्षा-दृष्टि से देखता हुआ वह वहाँ से हट गया। हाथ-मुँह साफ किया। स्फूर्ति फिर भी नहीं आयी। बेचैनी बढ़ती जा रही थी। थोड़ी देर सोने को मिल जाता तो अच्छा था। हीरूभाई और रमणलाल दोनों गायब थे। पता चला प्रदेश समिति की मीटिंग चल रही है।

सारंग वाले खड़े खड़े अहमदाबाद के आलीशान थियेटरों की बात कर रहे थे।

देवू ने एक आदमी को "जन्मभूमि" पढ़ते हुए देखा। जाकर उसके पास खड़ा हो गया। लिखा था—"गुजरात कांग्रेस के पास विकल्प है ही नहीं। उसे अपने संकल्प पर दृढ़ रहना होगा।" मतलब यह कि महागुजरात की माँग का

प्रस्ताव नहीं आयेगा। हीरूभाई ने कहा था कि स्वयं ठाकोरभाई का भी यही मानना है कि यदि गुजरात का अपना स्वतंत्र राज्य बन जाता है तो न्याय-व्यवस्था का संचालन स्थानीय लोगों की भाषा में संभव हो सकेगा। भाषागत राज्यों की रचना का विचार मूलतः गाँधीजी का है। किन्तु इस समय, ऐसी परिस्थितियों में मोरारजीभाई झुके नहीं। कांग्रेस यदि हिंसा का सहारा लेगी तो उसके आदर्श

आदर्श जैसे गंभीर शब्द का मूल्य आज उसे घटता-सा लगा।

'जन्मभूमि" की भविष्यवाणी सच निकली। वही प्रस्ताव आया। लाल दरवाजा में एक छोटी-सी सभा आयोजित की गयी। संक्षिप्त भाषण दिये गये। राष्ट्र-गीत भी मद्धिम स्वरों में गाया गया। सभा बहुत व्यवस्थित हुई। विशाल जनसमूह समक्ष ऊँचे आसन पर बैठ, नारंगी का रस पी रहे मुख्य मंत्री···ये कहीं ऐसा तो नहीं सोच रहे हैं कि उनकी इस लघु तपस्या से गुजरात की प्रजा सुधर गयी है?

देवू सुन रहा था — सारंग वाले बात कर रहे थे—

"मोरारजीभाई दिखाई अच्छे देते हैं।"

"वह तो दूर से ही।"

"तो क्या पहाड़ हैं जो दूर से अच्छे दीखते हैं।"

"क्यों फालतू बकवास करते हो? शर्म नहीं आती? सेवादल के सैनिक होकर भी?"

"हम तो अहमदाबाद देखने आये हैं।"

"तो जाओ, देखो जाकर। यहाँ मोरारजीभाई को क्या देख रहे हो?" देवू ने कहा।

हीरूभाई आते हुए दिखाई दिये। रमणलाल भी आ पहुँचे। दुखी थे। बाद में हीरूभाई ने बताया कि रमणलाल मोरारजी से कहने गये थे कि प्रजा की माँग को ध्यान में रखें। मोरारजी ने उन्हें पूरी बात भी नहीं करने दी। धीमी किन्तु सख्त आवाज में उन्हें डाँट दिया था।

"हमारे नेता इतने समझदार हैं कि वे पूरी बात सुने बिना ही सब कुछ जान जाते हैं।" देवू ने कहा।

"ठाकोरभाई में भी यह बुराई तो है।" हीरूभाई ने कहा।

अहमदाबाद से वापस आकर यहाँ का समाचार देवू ने लवजी को दिया। लवजी ने अपने पिताजी को बताया कि भाई साहब कुछ बदले से दिखाई दे रहे हैं। दो दिन पहले ही सरकार की आलोचना कर रहे थे।

"मेरी जगह तू होता तो तू भी···"

"मैं तुम्हारी जगह पर होता ही क्यों? सेवादल कांग्रेस की गुलाम-संस्था है। इसीलिए तो मैं उससे जुड़ा नहीं।"

"जुड़ने लायक तो अब हुआ है। इस वर्ष उसके शिविर में जाना।"

"वक्त खराब करने।"

"जायेगा तो खुद सुधर जायेगा।"

"मुझे सुधारने वाला कौन पैदा हुआ है ? और मुझ में ऐब ही क्या है जो तुम मुझे इस तरह ··"

"कमाल है, तू तो नाराज हो गया ।"

"तो फिर ? अपमान बर्दास्त कर सकता हूं किन्तु गलत बात नहीं ।"

"समझ में नहीं आता कि तेरे साथ किस तरह बात की जाये ।"

"जब समझ में आ जायें तभी बात करनी चाहिए ।" लवजी बस्ता लेकर नये घर चला गया । वहाँ जाकर नोटबुक का पन्ना फाड़कर उस पर "समझदारी" के बारे में हरिणी छंद में कविता लिखने लगा ।

अच्छा हुआ कि वह कॉलेज में भर्ती नहीं हुआ । देवू सोच रहा था – आज यदि वह अहमदाबाद में होता तो किस पक्ष में होता ? कुछ विद्यार्थी भी गोलीबारी में मारे गये हैं ।

गोली चलते देखकर क्या वह वहाँ से हट गया होता ? नहीं । असंभव ।

वहाँ होता तो वह स्वयं मर गया होता, यहाँ वह मृतकों के पक्ष में है । क्योंकि परोक्ष रूप से गोलीबार का समर्थन किया है उसने ।

देवू के मन में खुद अपने प्रति ही असंतोष पैदा हुआ । निरंतर बढ़ता हुआ असंतोष......

21

लाला करसन के यहाँ से एक थाली भेंट में आयी थी । लवजी उसको घुमा-घुमाकर देख रहा था । साथ ही साथ माँ पर नाराज भी हो रहा था कि लाला के यहाँ की थाली माँ ने स्वीकारी ही क्यों ? कंकू ने उसे बहुत समझाया कि देवू की पत्नी को लड़का होगा तो वह भी एक बड़ी सी थाली लाला करसन को भेंट में भिजवा देगी । लवजी का कहना था कि यह तो कर्ज लेना हुआ । और तब तक कर्ज को याद कौन रखेगा ?

"तू इतनी सारी कविताएँ याद कर लेता है तो क्या माँ इतना भी नहीं याद रख सकतीं ?" देवू ने कहा ।

"माँ को याद रखना हो तो कोई बात नहीं । मुझे तो ऐसा लगा कि एक नयी जिम्मेदारी मेरे सिर पर आ पड़ी ।"

लवजी जब खाना खा चुका और तसले में हाथ धोकर उठा तो माँ ने पूछा –

"भैया, तुम अपने ससुर के चिट्ठी लिखेव रहा ।"

देवू चौंका । उसने तो किसी को पत्र-वत्र नहीं लिखा था । उसने लवजी की ओर देखा । वह बिल्कुल शांत था । देवू ने उससे इशारे से पूछा । लवजी ने चौखट पर बैठकर हाथ में एक पुस्तक लेते हुए कहा –

"मेरे मन में तो अपने ससुर के लिए जरा भी सम्मान-भाव नहीं है । मैं क्यों लिखूँगा पत्र ?'

"हमके का मालूम । मुला काल तुम्हरे बप्पा के धमाभाई कहत रहे ।"

"धमाभाई की बात इस गाँव में कोई तो नहीं मानता । अकेली तुम ही मानती हो ।"

"कसम खा कि तुम कागज नाहीं लिखेब ?"

"मैंने अपने समुर को आज तक एक भी पत्र नहीं लिखा । और भविष्य में भी लिखनेवाला नहीं हूँ ।" लवजी ने 'समुर' शब्द पर इतना भार दिया था कि देवू समझ गया भाईश्री ने यदि ससुर को नहीं तो ससुर की कन्या के लिए अवश्य कोई पत्र लिखा है । उसने सीधा प्रश्न किया –

"शांति के नाम पत्र लिखा था ?"

"बड़े भाई ऐसी बातों में रुचि लें, यह उन्हें शोभा नहीं देता ।"

"तूने जो भी किया हो वह अपने घर को शोभा देता है या नहीं बस इतना ही जानना है ।"

"घर की तो बात नहीं जानता किन्तु मैं ऐसा कोई काम नहीं करता जो मुझे शोभा नहीं देता हो ।"

"माँ ने स्पष्ट किया कि समधी को ऐसा पत्र मिला है जिसे पढ़ तो सब लेते हैं किन्तु किसी की भी समझ में नहीं आता । शान्ता ने भी पटापट पढ़ डाला था किन्तु उसे भी कोई बात पल्ले न पड़ी । मगनजी तो पत्र लेकर यहाँ आने वाले थे किन्तु उसे चूहा खा गया ।

"चुहिया ले गई होगी ।" लवजी बोला । देवू हँस पड़ा । माँ की समझ में नहीं आया ।

"क्यों रे, कविता तो नहीं लिख भेजी थी तूने ?"

"तुमने मेरी कविता पसन्द नहीं की फिर तो मुझे किसी अन्य से अभिप्राय माँगना ही पड़ता न ? हालांकि मूल बात दूसरी ही है ।" लवजी ने एक उदाहरण दिया । एक पति था जिसके नाम बहुत से पत्र आते थे । पत्नी अशिक्षित थी । उसे बराबर यह संदेह होता रहता कि निश्चित ये पत्र किन्ही खूबसूरत स्त्रियों के ही होंगे । जो स्त्री पति के अनेकों आग्रह से भी नहीं पढ़ी थी, वह उन पत्रों को पढ़ने के लिए अपने शक और कौतूहल की वजह से पढ़ना सीख गई । यदि इस कहानी में रंच मात्र भी सच्चाई है तो मेरी कविताओं को समझने के लिए भी शांता आगे पढ़ना चालू रखेगी । यह तर्क देवू के गले नहीं उतरा ।

'हो सकता है पढ़ाई कुछ जल्दी ही छोड़ दे ।"

"क्या छोड़ दे, किसकी बात कर रहे हो ?"

"शांता की । लवजी ने शांता के पास कविता लिखकर भेजी थी ।"

"कविता ?" कंकू नरसंग के लिए खाना लाकर लोहे के तसले में भर रही थी । यही उनका टिफिन था । बोली : "कविता ? वह क्या होता है ?"

"जैसे गरबी, गीत, गाना ।"

"गाना ? लवजी गाना लिखत है । धत् तेरी मेहन्दरा की ।" उसने टिफिन लाकर देवू के पास रख दिया था ।

"लवजी जो गाने लिखता है उनमें बहादुरी की बात आती है ।" देवू खड़ा हो गया ।

"बहुत देखा है ई कै बहादुरी, औरत के लगे गाना लिखत है । मरा, सरमातौ नाहीं है ।"

लवजी को शर्म के साथ ही माँ की नासमझी पर हँसी भी आ गयी । उसने बात को बढ़ाने के इरादे से कहा –

"माँ तुझे मालूम है ? इंजू भाभी ने भी भैया के पास पत्र भेजा है ।"

"तौ ईमा का बिगड़ गवा ? ऊ कै तौ गौना होय गवा है । भले रोज लिखैं ऊ तौ । पर तुहार तौ अबहीं सदियो नाहीं भय ।"

"मुझे कहाँ शादी की जल्दी पड़ी है । मैं तो पच्चीस वर्ष के बाद ही शादी करूँगा ।"

"तब तक का वे सब ही कन्या क घरे बन्द रखैं ? लड़की बाढ़त देर नाहीं लागत ।"

"माँ तू उसे लड़की कहती है । शांता तो मुझे केले के पेड़ जैसी लगती है ।"

"सरमातौ नाहीं ई तो पतोहू कै नाम लेत । ला तो लकड़ी ....।"

लवजी जल्दी से सिढ़ियाँ उतर गया । दोनों भाई खेत की ओर चले गये । बाहर पड़ी पुस्तक को कंकू लवजी के स्कूल बैग में रखने लगी । उसके चेहरे पर खुशी की लालिमा अब तक बरकरार थी ।

कंकू ने बुहारना शुरू किया कि चेहर आ पहुँची । दहलीज की सिढ़ियों पर खड़ी चेहर के मुँह पर रेत के कनों का कोई असर नहीं हुआ । वह बदरी से आये संदेश को लेकर परेशान थी । उन लोगों ने कहलवाया था कि हीरा को ले जाना । बुलावा भेजने पर मना कर देने वाला समधी अपनी ओर से कहलवाता है ! चेहर समझ नहीं पाई थी । कंकू के अनुमान से बताया कि बहू को गोद भरने जैसा कोई शुभ समाचार होगा । चेहर ने कहा कि बदरी से इतने लोग आते-जाते हैं, किसी ने बताया नहीं । बताने तो क्या उनकी जीभ कट जाती ? कंकू ने कहा कि लोग तुम्हें शुभ समाचार देने और तुम उन्हें बदले में गालियाँ देती । शायद बहू को लेकर भी कुछ भला-बुरा सुना देती । चेहर उसे अपना हक समझती है क्योंकि बहू उसकी है । इस पल भी उसने अपना हक अदा किया : आप ही बताइए, बहू अभी से बच्चे जनने बैठी तो – "लजाती भी नहीं ? बुढ्ढी होने आई ।" कंकू ने सास की मर्यादा समझाई पर चेहर ने बात नहीं बदली । जतन आ पहुँची । इसके बाद लाला के घर बेटा होने को बात को लेकर लाला की पत्नी जीवत और धमा के विषय में भीमा की पत्नी पधी की राय जाहिर हुई । कंकू ने नाराजगी व्यक्त की। वह बेचारा अपने ढोर जैसे बेटे से पलभर के लिए भी कहाँ अलग हो पाता है ?

जतन ने रणछोड़-अनरी प्रकरण चलाया । रणछोड़ ने सोने के गहनों से बहू को मढ़ दिया है । जब इस ओर आता है ससुराल पहुँच जाता है । उसकी सास ने पत्नी को बता दिया है—बटवारा दे दो, तभी अपनी बेटी को भेजूँगी ।

यहाँ कंकू की दहलीज पर महिला पंचायत के सदस्यों में वृद्धि हो रही थी, तो सामने उत्तर दिशा में बढई टोले के नुक्कड़ पर मनसुख सुतार और छना के बीच झगड़ा शुरू हो चुका था । कई दिन से छना हल का बाँसा बनवाने के लिए लकड़ी छोड़ गया था पर मनमुख ने अभी उसे छुआ भी नहीं था । जुताई के लिए तैयार किया खेत सुख रहा था । मनसुख ने कहा कि सुख जाए तो मेरी बला से । बड़ा साहू हो गया है तो सारंग जाकर क्यों गढ़वा नहीं आता ?

झगड़ा गालियों से आगे बढ़कर मारपीट की दिशा में मुड़ गया । आखिर छना ने मनमुख को उठा लिया । उसकी इच्छा मनमुख को गाँव के कुएं में डाल देने की थी । फता दूसरे लोगों की तरह देखता रहा पर कंकू आगे बढ़ी । वह पहुँचे इसमे पहले ही मनमुख युक्ति से छना की पकड़ से मुक्त होकर जमीन पर आ गया । धोती के छोर निकल गये थे पर गुत्थम-गुत्था चल रहा था । छना की पत्नी पानी का हंडा भरके घर लौट रही थी । उसने सर झुकाया, हंडे के दोनों मटके इन कुश्तीबाजों पर गिरे । दोनों को एक एक मटके की चोट पहुँची और पूरे भीग गये । काण्ड पूरा हुआ । छना का कहना था कि वह मनमुख को परास्त करने में ही था उसी पल इसकी घरवाली ने बाजी बिगाड़ दी. अब वह उसे जरूर पीटेगा ।

दूसरे ही क्षण छना मनमुख के आंगन में जा खड़ा हुआ और हल का बासा गढ़ने पर जोर देने लगा । आखिर फता ने मध्यस्थी की । "छना देना बाकी अनाज अभी ले आए और मनसुख गढ़ना शुरू करे ।"

समझौता पहले कौन कबूल करे ? तभी माना मुखिया कागज पेन्सिल लेकर आ पहुँचा : बोलो, पहले कौन फरियाद लिखवाता है ?

फता नई पगड़ी बाँधकर बदरी जाने को रवाना हुआ तब तक छना या मनमुख ने फरियाद नहीं लिखाई थी ।

22

नवम्बर आ गया था । यह तय हो चुका था कि इस क्षेत्र से कांग्रेस की ओर से उम्मीदवारी रमणलाल ही करेंगे । रमणलाल ने जनसंपर्क बढ़ाना प्रारंभ कर दिया था । पन्नाभाई की परोक्ष प्रेरणा से सारंग में पहली तारीख को एक विशाल जुलूस निकाला गया था । नेतागीरी पेथाभाई ने की थी । पेथाभाई रमणलाल की आँखों में तिनके की तरह खटक रहे थे । जुलूस के विजर्सन के पूर्व पेथाभाई ने एक लम्बाचौड़ा भाषण दिया था— "देश में चौदह-चौदह राज्यों की भाषावार रचना

हुई किन्तु हमें महागुजरात नहीं मिला। जिसके लिए संगठित होकर हमारे नौजवानों ने अपना खून बहाया, सीना तानकर शहीद हुए, हम उस महागुजरात को लेकर ही रहेंगे। हमारे विधायक रमणलाल स्वयं को पटेल कहते हैं किन्तु पटेलों के नौजवान लड़के मरे तो उन्हें रंजमात्र भी दुःख नहीं हुआ। उनकी जगह मेरे जैसा कोई हो तो त्याग-पत्र देकर प्रजा के बीच आकर खड़ा हो जाये। किन्तु ये सब तो स्वार्थ के साथी हैं। मैं कहाँ कहता हूँ कि कांग्रेस छोड़ दो। मत छोड़ो। अपने बुजुर्ग नेता पशाभाई ने कांग्रेस नहीं छोड़ी। किन्तु वे आज हृदय से हमारे साथ हैं। तुम देखना इस बार प्रजा का निर्णय चुनाव के पूर्व ही दीवारों पर लिखा गया है। बोलो – महागुजरात - जिंदाबाद। शहीदों - अमर रहो। कांग्रेस मुर्दाबाद। रमणलाल दगाबाज।

पेथाभाई को बम्बई की चिन्ता न थी। हमें यदि वह नहीं मिलती है तो महाराष्ट्र को भी नहीं मिलनी चाहिए। शिवाजी ने सूरत को कितनी बार लूटा था, जानते हो? किन्तु हमें इतिहास में नहीं जाना है। इतिहास ने अब रुख बदला है। पुराना वैमनस्य अब भूल जाना चाहिए। मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि बम्बई केन्द्र के हाथ में रहनी चाहिए। केन्द्रशासित राज्यों की संख्या छः तो है ही, एक और सही। किन्तु हमें तो बम्बई के साथ वाला महागुजरात लेना है। माँग तो रखेंगे ही। बाद में जोड़-तोड़ करनी पड़े तो करेंगे। बोलो महागुजरात -- जिन्दाबाद। शहीदो – अमर रहो। कांग्रेस मुर्दाबाद। रमणलाल – दगाबाज।

पेथाभाई के वक्तव्य के विरोधाभाग को रेखांकित करने वाला कोई श्रोता वहाँ उपस्थित नहीं था। और जो थे भी वे जुलूस में चलकर इतने थक चुके थे कि सभा विसर्जित होते ही भाग खड़े हुए।

पेथाभाई रेल्वे के निवृत्त अफसर थे। जब सारंग का राज्य था तब राजदरबार में जाने पर बैठने के लिए उन्हें कुर्सी दी जाती थी। इसके अतिरिक्त भी उनके पास एक योग्यता थी। वे पशाभाई के मौसेरे भाई थे। यद्यपि उम्र में कुछ बड़े ही थे किन्तु दिखने में पशाभाई जैसे ही स्वस्थ और सुन्दर थे। वे भी पशाभाई की तरह टोपी पहनने पर पशाभाई जैसे ही दिखाई देते थे। किन्तु उन्हें टोपी से सख्त चिढ़ थी। वे जैसे प्रतिज्ञा लेते हुए कहते – बेड़ियाँ पहन लूँगा किन्तु टोपी नहीं पहनूँगा। उनकी राय थी कि सारंग के व्यापारी सफेद के बदले काली टोपी पहनें। इस बात की चर्चा व्यापारी संघ तक पहुँच चुकी थी। अन्त में पशाभाई को समझाना पड़ा – "पेथा! तुझे खादी की टोपी का विरोध करना हो तो कर किन्तु मिल के कपड़े की टोपी तो तेरे आदर्शों में रोड़ा नहीं बनती। देखना किसी बच्चे को बहकाकर चौक में किसी टोपीधारी की बेइज्जती मत कर देना। इन बनियों को तू नहीं जानता। ये हाँ हाँ करते रहेंगे और जब वोट देने का वक्त आयेगा तो मनमानी करेंगे। रमण को हराना कोई खेल नहीं है।"

रमणलाल यह बात जानते थे कि पेथाभाई की शक्ति का केन्द पशाभाई हैं किन्तु

यह भंडाफोड़ कैसे करें ? हीरूभाई ने भविष्यवाणी की थी कि पशाभाई कांग्रेस नहीं छोड़ेंगे। हाँ, यह तभी संभव है जब उन्हें विश्वास हो जाये कि महागुजरात वाले शक्तिशाली नहीं हो जायेंगे और महाराष्ट्र में मिलीजुली सरकार की रचना होगी। चुनाव तक तो वे कांग्रेस नहीं छोड़ेंगे। पार्टी में रहकर भी विरोधी को मदद करने की कला उन्हें आती है। उसके हाथ में सबूत भी नहीं लगने देंगे।

"आप कहें तो मैं उनसे कहलवा लूँ – जनता के बीच।"

"यही कि वे कट्टर कांग्रेसी हैं ?"

"हाँ। वे दूसरे पक्ष में हैं ऐसा कहलाने से हमें क्या लाभ ?"

"लाभ तो कोई नहीं, किन्तु भीतर रहकर वे ज्यादा नुकसान कर सकते हैं।"

"तब मैं उन्हें उत्तेजित करूँ और ..."

"आप उन्हें अपने खिलाफ उत्तेजित कर सकते हैं। किन्तु किसी निर्णय पर पहुँचने के पूर्व वे सात दफा विचार करेंगे।"

"ऊपर से दबाव डाला जाये तो उन पर कोई असर नहीं पड़ेगा क्या ?"

"नहीं। वे जो कहेंगे उसका सबको विश्वास भी दिला देंगे। और अन्त में वही करेंगे जो करना हो।"

"तो जाने दो। मुझे तो आपका भरोसा है और इतना ही काफी है।"

"आश्वासन के लिए तो ठीक है। वर्ना पैसे तो तुम्हें पशाभाई से ही मिल सकते हैं।"

"उसके लिए शालूभाई तो हैं ही और मेरी खुद की भी थोड़ी बहुत पूँजी है।"

"सब मत खर्च कर देना।" – जाते समय हीरूभाई ने कहा।

इसका क्या मतलब हुआ ? रमणलाल सोच में पड़ गये थे। उनका आशय कहीं यह तो नहीं था कि मैं हार जाऊँगा ? पेथाभाई जैसों की तो क्या हस्ती है ? हाँ यदि कुछ नुकसान करेगा तो सिर्फ गोलीबार। इस क्षेत्र का एक भी लड़का न मरा होता तो कोई कठिनाई नहीं होती। किन्तु बिलोजा के पटेल का इकलौता लड़का.. और वह भी कितने विलंब से सूचना मिली ! लोगों का कहना है कि सरकार से जब छिपाये नहीं छिपा तो नाम जाहिर किया। इसका बहुत बुरा असर पड़ा है। उस क्षेत्र में तो सभा का आयोजन भी नहीं किया जा सकता। बैठे-बैठे पैसे उलीचने से क्या लाभ ? इस बार गोझारिया में ऑफिस ही नहीं खोलेंगे। यदि हारना ही है तो कम खर्च करना ही समझदारी है।

किन्तु इस प्रकार का समाधान रमणलाल के मन की शांति के लिए पर्याप्त न था। दूसरे ही दिन शाम को वे पशाभाई के घर पहुँच गये। पशाभाई छत पर बैठे हुए पूनमचन्द के साथ बातें कर रहे थे। पूछा : कौन है ?

"आपका सेवक।"

सुनते ही पशाभाई ने आवाज़ पहचान ली।

"आओ रमणलाल।"

"कोई महत्त्वपूर्ण बात चल रही हो तो थोड़ी देर नीचे बैठूँ।"

"आप बात से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। आओ, पूनमचन्द पधारे हुए हैं।"

रमणलाल ने हाथ जोड़कर पूनमचन्द को प्रणाम किया। पूनमचन्द ने भी जवाब में हाथ जोड़े। रमणलाल बैठ गये फिर वे हंसते हुए बोले—

"मैं नहीं कहता था कि सब आयेंगे।"

'पशाभाई इस इलाके की राजनीति के तीर्थस्थल हैं। यहाँ नहीं आयेंगे तो कहाँ जायेंगे ?"

"अवश्य आइए। किन्तु इस बार प्रसाद मिलेगा ही ऐसी उम्मीद मत रखिएगा।"

"पूनमचन्द यह क्या कह रहे हैं ?" उनकी आवाज में कठोरता थी।

"अपने पूनमचन्द तो सामने के पलड़े में जा बैठे, रमण।" पशाभाई ने बनावटी निराशा से कहा।

"पूनमचन्दभाई जैसे लोग निकल जायेंगे तो फिर कांग्रेस में बचेगा ही क्या ? उनके जैसे कार्यकर्ताओं की वजह से ही तो जिला कांग्रेस उज्ज्वल है।"

"जो सच्चा कार्यकर्ता होगा वह प्रजा के साथ रहेगा, किसी झक्की पार्टी के साथ नहीं।"

"किन्तु इस बार आप विजापुर उत्तर से खड़े होते तो ठीक था।"

"खड़ा हूँ, किन्तु कांग्रेस के टिकट पर नहीं।"

"तो कांग्रेस को भी आपको ही अपना प्रतिनिधि मानना चाहिए।"

"तुम्हारे शब्दों का मैं सार्वजनिक उपयोग कर सकता हूँ ?"

"आपकी इच्छा। मेरे शब्दों में यदि आपको इतनी गंभीरता दिखाई दे रही हो तो मैं आपका आभारी हूँ।"

"व्यक्तिगत चर्चाओं का उपयोग कभी आम-सभा में नहीं किया जाना चाहिए। यह बात गाँठ बाँध लो पूनमचन्द। नहीं तो कोई हमसे दिल की बात नहीं करेगा। राजनीति में तो जितना लाभ अपनी पार्टी के लोगों से बातचीत करने से होता है उससे अधिक लाभ विरोधी पार्टी के लोगों से मिलने वाली जानकारियों से होता है। तुम दोनों को कहाँ एक ही क्षेत्र से चुनाव लड़ना है ? तुम दोनों दोस्तों की तरह रह सकते हो।"

"अरे एक ही क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हों तब भी मित्रता में क्यों आँच आये ?" रमणलाल ने कहा।

"आँच तो आती है।" पूनमचन्द ने कहा—"चुनाव में तो व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप भी करने पड़ते हैं।"

"ऐसा करने से अन्ततः स्वयं को हानि होती है।"

"रमण की बात बिल्कुल सही है। आदमी को दूरदर्शिता से काम लेना चाहिए।"

"इसीलिए आप कांग्रेस छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। ठीक है न ?" पूनमचन्द ने कहा।

"तुम सब कांग्रेस छोड़ने के लिए तैयार हो तो मुझे भी सोचना तो पड़ेगा ही। और जब सारी जनता विरोध में आ खड़ी हो..."

"जनता अब जागृत हो रही है ।"

"गुजरात से अब कांग्रेस का खात्मा ही समझो ।" पूनमचन्द ने घोषणा की।

"आप कांग्रेस जिस दिन छोड़ेंगे उसी दिन ।" रमणलाल से बोले बिना नहीं रहा गया।

"अपने क्षेत्र के बारे में तो मैं कह सकता हूँ ।" पूनमचन्द ने घमंड से कहा।

"आप किसी भी पार्टी से क्यों न खड़े हों, जीतेंगे अवश्य ।" रमणलाल के इस कथन का समर्थन पशाभाई ने भी किया। अचानक उनकी आँखें चमक उठीं—

"तब तो पूनमचन्द, तू कांग्रेस से ही क्यों नहीं खड़ा रहता ? क्यों अपना केरियर खराब करता है ? कल हो सकता है कि तू मंत्री बना दिया जाये ।"

"महागुजरात की रचना होगी तब तो .." पूनमचन्द ने अपनी महत्त्वाकांक्षा की बात की।

"भविष्यवाणी तो नहीं की जा सकती है किन्तु मेरा मानना है कि कांग्रेस में रहना ही तुम्हारे लिए हितावह है ।" रमणलाल ने कहा।

"मैंने अपने हित के बारे में खूब सोचा है। किन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मैंने महागुजरात जनता-परिषद् को वचन दे दिया है। और यह भी कह दिया है कि साथ में पशाभाई को भी ले आऊँगा ।"

"देखते हैं, कौन किसे किस तरफ ले जाता है ।"

"अरे भाई मैं कोई श्रीकृष्ण तो नहीं हूँ कि एक को धड़ और दूसरे को सिर दूँ ।"

"मुझे तो आपको सारथि भी नहीं बनना है। आशीर्वाद मिल जाये बस काफी है ।" रमणलाल इतने अधिक निस्पृह क्यों बन रहे हैं यह उन दोनों में से कोई नहीं समझ सका। "आप भले ही अपने साथियों और साधनों दोनों को विरोधियों के हवाले कर दें किन्तु मेरे खिलाफ एक भी शब्द न बोलें, बस काफी है। हमारा इतना पुराना संबंध एक चुनाव की वजह से बिगड़ जायें तो मुझे चोट लगेगी ।"

"तब तो रमणलाल अब एक ही तरीका है ।" पूनमचन्द अपने दूध जैसे दाँत चमकाते हुए बोले।

"आप किस उपाय की बात कर रहे हैं, मैं जानता हूँ ।"

"मैं नहीं जानता। कहने दे रमण ।"

"पूनमचन्द कहना चाहते हैं कि मैं रास्ते से हट जाऊँ ।"

"शाबाश रमणलाल। तुम्हारी बुद्धि की भी बलिहारी है ।"

"इस चुनाव में बुद्धि काम नहीं आने वाली है। सिवाय कि .."

"गुजरात कांग्रेस स्वयं महागुजरात का प्रस्ताव पारित कर दे ।" पूनमचन्द ने मन की बात की।

"मैं तो कहना चाहता था कि पशाभाई तन, मन, धन से हमारी पार्टी के लिए काम करें ।" रमणलाल ने पूनमचन्द के लिए अनपेक्षित स्पष्टता की।

"यह असंभव है। पशाभाई हमारे हैं। तुम लोग उनका भाव भी नहीं पूछते ।"

"तुम लोग अर्थात् ? हम और तुम अलग कब थे ?"

"अलग ही थे न ? मेरा और पशाभाई का जबसे समझौता हुआ तब से मैंने

हमेशा उनकी भावनाओं की कद्र की है । वे लोकसभा के चुनाव में हारे तब भी जब मैं इधर से गुजरता था, उनसे सलाह लिए बिना नहीं जाता था । किन्तु अन्य लोग ? नमकहराम हैं । महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते समय भी उनसे पूछने आये हैं ?"

"पशाभाई को स्वयं भी आना चाहिए ।"

"जिला प्रमुख थे तब कहाँ नहीं आते थे ?"

"बाद में तो विशेष आना चाहिए था ।"

"गाँधीजी की सलाह लेने अपने नेता जाते थे कि नहीं ? देश में जो स्थान गाँधीजी का था वही स्थान जिले में पशाभाई का है कि नहीं ?" यह तुलना पशा भाई को अच्छी लगी थी ।

घर से खाने का बुलौवा आ गया । पशाभाई ने उठते हुए कहा कि अब खाना खाये बिना मुझसे तो एक शब्द भी नहीं बोला जायेगा । चलो ।

"मैं तो घर जाकर ही खाऊँगा ।" रमणलाल ने कहा ।

"अबे चल-चल । तेरे घर से मेरे घर का खाना खराब नहीं होगा ।"

"अच्छा ही होगा, परन्तु "

"अब नाटक किये बिना चल न भाई । इस तरह निराश हो जाने से चुनाव नहीं जीता जा सकता ।"

"हमारी पार्टी में आ जायें, जिताने की जिम्मेदारी मैं लेता हूँ"-पूनमचन्द ने टोपी उतारकर आलमारी के शीशे में अपना मुँह देखा ।

खाना खाने के बाद वे लोग पुनः बड़ी देर तक बातें करते रहे । पशाभाई दोनों को समझाते रहे । अन्त में वे दोनों उठ खड़े हुए । पूनमचन्द को बदरी जाना था । पशाभाई ने आग्रह करके उन्हें जीप में भेज दिया ।

वे दोनों जब हीरूभाई के आंगन में पहुँचे तब तक वही बात कर रहे थे--

"आप महत्त्वाकांक्षी नहीं हैं. ऐसा नहीं कह सकते ।" रमणलाल की आवाज थी ।

"प्रजा की आकाक्षा ही मेरी महत्त्वाकांक्षा है ।"

हीरूभाई ने उनकी आवाज से ही उन्हें पहचान लिया ।

"अरे जरा लालटेन जलाना ।" हीरूभाई ने पत्नी से कहा । मेहमान नहीं होते तो हीरूभाई का काम चिराग से ही चलता था ।

"क्यों सोनीबहन, हमारे लिए भैंस दुह रखी है कि नहीं ?" पूनमचन्द ने जूते निकालते हुए कहा ।

"आप आने वाले हैं यह जानकर तैयारी तो कर ही रखनी पड़ती न ? भाखरी बनाऊँ कि खिचड़ी से चल जायेगा ।"

"पूनमचन्द सोनीबहन को प्रिय लगते हैं । मुझे तो कभी इतने आग्रह से नहीं कहतीं ।" रमणलाल ने मन ही मन सोचा ।

रमणलाल ने बताया कि वे लोग पशाभाई के वहाँ से खाकर आये हैं ।

"तुम भी गये थे ?" हीरूभाई ने आश्चर्य से पूछा ।

"हाँ गया था। न गया होता तो अच्छा था। ऐसा लगता है कि पशाभाई अपने हाथ से चले जायेंगे। पूनमचन्द ले जायेंगे।"

"मतलब? पूनमचन्द कहाँ पराये हैं?"

"इन्हीं से पूछो। वे जनता से बिक गये हैं।" "जनता" शब्द से रमणलाल का अर्थ जनता परिषद से था। किन्तु पूनमचन्द यह बात नहीं समझ सके। बोले :

"मुझे इस चीज का गर्व है। यथा प्रजा तथा राजा।"

"स्पष्ट करो तो समझ में आये। कहीं कांग्रेस छोड़ देने की बात तो नहीं है?"

"यह समाचार जानने वालों में आप अन्तिम हैं। पूनमचन्द गये।" रमणलाल ने कहा।

"मुझसे बात किये बिना ही?" हीरूभाई दुखी दिखाई पड़ रहे थे।

"अभी निर्णय कहाँ घोषित किया है? आपको बताकर ही घोषणा करूँगा।"

"किन्तु तय तो कर लिया है।" रमणलाल बोले।

"इस जिले का क्या होने वाला है?" हीरूभाई भुनभुनाये।

"ऐसा कहो कि गुजरात का क्या होने वाला है। जिस माँग के लिए गुजरात का यौवनधन शहीद हो, समाज के सभी वर्ग के लोग समवेत स्वर में खड़े हो जायें उस माँग के प्रति गुजरात कांग्रेस उपेक्षा-भाव रखकर कब तक जुल्म कर सकती है।"

"जुल्म की बात नहीं है, और यह प्रश्न मात्र गुजरात का ही नहीं; महाराष्ट्र, विदर्भ और बम्बई का भी है। सौराष्ट्र भी इससे जुड़ा है।"

"पूरे देश की बात करो न?" पूनमचन्द ने व्यंग्य में कहा – किन्तु हीरूभाई पर इसका असर न पड़ा। "अंततः तो पूरे देश की ही बात हुई न?"

"मैं यह सब नहीं जानता। मैं सबसे पहले अपने विभाग के प्रति वफादार हूँ, फिर जिला, गुजरात, देश और सबसे बाद में विश्व के प्रति।"

"आपको मालूम होना चाहिए कि विश्व के बाद आत्मा का क्रम आता है। सबसे पहली वफादारी तो अपने प्रति होनी चाहिए।"

"रमणलाल, ऐसा नहीं कहा जा सकता कि तुम इस प्रकार की किसी वफादारी के लिए कांग्रेस से चिपके हुए हो।"–पूनमचन्द ने बोलते-बोलते बेधक नजर से देखा। रमणलाल ने कोई उत्तर देने के बजाय स्मित देकर संदिग्ध बने रहना उचित समझा।

"अब व्यक्तिगत चर्चा बन्द करके मुद्दे की बात करो।" हीरूभाई ने धीमे से कहा। उन्हें इस प्रकार की चर्चा उठा-पटक जैसी लगती थी।

"महागुजरात होना चाहिए कि नहीं?"

"होना चाहिए, और समय आयेगा तो होगा भी सही। किन्तु इस समय इस माँग को पेश करके तुच्छ लोगों के हवाले कर दें?"

"मतलब कि हम तुच्छ लोग हैं?"

"अभी तो तुम कांग्रेस में हो न?"

"नहीं। और यही बताने आया हूँ।"

"यही बताना था तो इसके लिए यहाँ आने की तकलीफ नहीं करनी चाहिए थी।" हीरूभाई का क्रोध उनकी आवाज और आँख दोनों से व्यक्त हो रहा था। किन्तु तुरन्त यह याद आते ही कि पूनमचन्द अतिथि हैं, उन्होंने अपनी निगाह झुका ली।

"गलती हो गयी। अब नहीं आयेंगे।"

"बुरा मानने की जरूरत नहीं है। साफ-साफ बताओ कि कांग्रेस में रहने से तुम्हें क्या आपत्ति है? प्रजा की ऐसी कौन सी सेवा है जो नहीं हो सकती?" वे घर में कोई सूचना देने के लिए खड़े हुए।

"सरकार में रहकर सेवा करने की इच्छा हो तो?" रमणलाल ने कहा।

"हाँ-हाँ यह भी इच्छा है। मंत्रालय में बैठकर मुझे क्या नहीं आयेगा? जो मंत्री बनते हैं वे क्या कार्य ऊपर से सीखकर आते हैं?"

"पूनमचन्द तुम्हें मंत्री बनना है तो ऐसा मौका तुम्हें कांग्रेस ही दे सकती है। ऐसा मानने की भूल मत करना कि जनता परिषद का यह शंभुमेला कोई करिश्मा कर देगा। यह इन्दुलाल हैं न ..इसमें कोई शक नहीं कि आदमी फकीर है किन्तु आज नहीं तो कल, कभी उनका दिमाग फिरे तो परिषद को बिखेर भी दें।"

"जनता परिषद अर्थात् जनता की परिषद। किसी एक आदमी का उसमें कोई मूल्य नहीं।"

"इन्दुलाल भी जनता परिषद की पूँजी हैं। जयंती दलाल हैं, साम्यवादियों की ओर से दिनकर मेहता हैं। किन्तु तुम्हें मालूम है कि इन लोगों में वैचारिक एकता की अपेक्षा मतभेद अधिक हैं?"

"आपकी बात विचारणीय तो है।"

"तो सोचो और शांति से निर्णय लो। हमारे साथ रहोगे तो कभी उत्साह से आगे बढ़ायेंगे।"

"हम तुम्हारी योग्यता से भलीभांति परिचित हैं।" रमणलाल ने पूनमचन्द के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

"मान लो कि कभी हम दोनों के मध्य स्पर्धा हो तो?"

"हीरूभाई के समक्ष कह रहा हूँ कि मैं हट जाऊँगा।"

"तो सोनीबहन कोफी बनाओ, अब चर्चा नहीं करनी है।"

पूनमचन्द सुबह जल्दी चले गये। उनके पुनर्विचार से रमणलाल थोड़ा शांत हुए थे। वे सूर्योदय के बाद गोकुलिया जाने के लिए निकले।

"आपने पूनमचन्द को मना लिया यह बहुत बड़ी सफलता है।"

"उसे मना तो लिया है किन्तु मुझे विश्वास नहीं है। दूसरे लोग बड़ी संख्या में जाएँगे तो यह भी कांग्रेस में नहीं रहेगा।"

"तो हम क्या करें?"

'अपना काम ।"

पूनमचन्द को जाना होगा जायेंगे । उनके साथ स्पर्धा नहीं करेंगे, यह वचन दिया है अपने आप टूट जाएगा । जिले से अधिक से अधिक एक मंत्री और एक उपमंत्री लिया जा सकता है । पूनमचन्द की अनुपस्थिति में कांग्रेस सरकार में लिए जाने की संभावनाएँ हैं । इस बार नहीं तो अगले चुनाव में सही । रमणलाल निश्चित हो चुके थे ।

23

पाँच अप्रैल 1957 को केरल में नम्बूद्रीपाद के नेतृत्व में प्रथम साम्यवादी सरकार की रचना हुई । देवू को जितना आघात इस घटना से लगा उतना तो रमणलाल के पराजित हो जाने से भी नहीं लगा था । रमणलाल ने चुनाव के समय ही स्पष्ट कर दिया था कि इस बार खतरा मोल लिया है । लोकसभा की सीट के लिए अन्य कोई नहीं बल्कि बालूभाई स्वयं खड़े थे । कांग्रेस ने उन्हें चुनाव टिकट उनकी संस्था–भक्ति की कसौटी के लिए दिया था । किन्तु उन्होंने तीन चार दिनो में ही संकल्प प्रदर्शित करना प्रारंभ कर दिया था–"जीतूँगा और जिताऊँगा ।" उनका कहना था – मुझे हमेशा अपनी योग्यता से अधिक मिलता रहा है ।

रमणलाल सोचते - धन्य भाग्य । बालूभाई के साथ चुनाव का अवसर मिला ।

"खर्च की फिक्र मत करना ।" माँ ने कहा था ।

"इस चुनाव भर का खर्च तो वीणाबहन स्वयं दे सकती हैं । अहमदाबाद विभाग के जितना चुनाव खर्च यहाँ नहीं आता ।"

"वसा तूफान भी तो नहीं होता ।"

"तूफ़ान तो नहीं होता । किन्तु इस बार थोड़ा संभालना पड़ेगा । हो सकता है मार भी खानी पड़े । यद्यपि हम लोग साथ रहेंगे तो लोग मुझे ही मारेंगे । तुम्हें तो पहचानते भी नहीं ।"

"मुझे नहीं पहचानते तो क्या, कांग्रेस को तो पहचानते हैं ।" बालूभाई का यह सूत्र प्रमुख था । उन्होंने तो एक सभा में भी कहा था–"मैं ऐसा दावा नहीं करता कि मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ । किन्तु तुम्हारे पास कांग्रेस के विकल्प में कोई पार्टी भी तो नहीं है ।"

रमणलाल को मालूम था, वे इस बार हारेंगे । और वे हार गये ।

"चलो जो हुआ, सो हुआ । हर बार भाग्य साथ नहीं देता ।" नरसंग ने गंभीरता से कहा ।

मगन अमथा इस चुनाव परिणाम से बहुत दुखी थे । पहले चुनाव में तो उन्होंने कुछ नहीं किया था किन्तु रमणलाल इस बार जब दुबारा चुनाव में खड़े हुए तो मगन अमथा ने उनके पक्ष में तनतोड़ परिश्रम किया था । किन्तु रमणलाल फिर

भी नहीं जीते । मगन अमथा दुःखी थे । और भगतबाड़े में बैठे नरसंग, लवजी और देवू से बात कर रहे थे । चुनाव के प्रचार के बाद खमाण से लौटते हुए रात के अँधेरे में रमणलाल पर सजूजी द्वारा भेजे गए मुण्डों के हमले को घेमर और देवूने विफल बनाया था । इन की सावधानी और साहस की बात सुनकर करसन बुढऊ भी खुश हुए ।

चुनाव की बात खत्म हो गयी थी । करसन बुढऊ ने नरसंग की कृषिकला की प्रसंशा प्रारंभ कर दी थी । लवजी और देवू जल्दी घर के लिए निकल पड़े । पुस्तकालय के लिए नयी पुस्तकें आयी हैं । अभी कोई काम नहीं था । नम्बर डाल दें तो अच्छा । इस बार किसी दूसरे का पुस्तकालय का कार्यभार सौंप देना चाहता था । मैट्रिक में अच्छे नंबरों से पास होना हो तो अभी से परीक्षा की तैयारी प्रारंभ कर देनी चाहिए । उमाशंकर जोशी तृतीय स्थान से पास हुए थे । वह स्वयं दूसरा नंबर तो लायेगा ही । इससे उत्तर गुजरात का नाम उज्ज्वल होगा । देवू भाई ने आगे पढ़ाई नहीं की । इसलिए कि छोटा भाई आगे पढ़ सके । मुझे इस तरह पढ़ना चाहिए जिससे उन्हें संतोष हो ।

देवू स्वयं में उलझा हुआ था । प्रौढशाला की ओर कितने दिनों से नहीं गया ! यह मेरा उत्तरदायित्व था । किन्तु मैंने मान लिया कि वहाँ सब कुछ ठीक ठीक ही चलता होगा । हकीकत तो यह है कि मैंने ऐसा भी नहीं माना था । इस बारे में कुछ सोचा ही नहीं था । पुस्तकालय की ओर भी इसलिए ध्यान जाता रहा क्योंकि उसमें व्यक्तिगत रुचि थी । तो क्या मनुष्य की रुचि स्वार्थ से जुड़े हुए परमार्थ में ही होती है ? या परमार्थ स्वयं समाज का स्वार्थ है और समाज का एक अंग होने के कारण स्वयं के बारे में भी यही सच है ? मनुष्य अपनी इच्छानुसार विश्व को देखना चाहता है, आखिर क्यों ? इसलिए कि उसे उसी में सुख मिलता है ? या

"लो, यह कालिदास ग्रंथावली देखो ।" लवजी ने देवू की विचार-तंद्रा को तोड़ा ।

"यह तो हिन्दी में है, कौन पढ़ेगा ? और इतनी महँगी पुस्तक…"

"अच्छी पुस्तकें महगी भी होती हैं । और इसमें तो कालिदास की संपूर्ण कविताएँ और नाटक संकलित हैं ।"

"तो क्या यह पुस्तकालय, हम दोनों के लिए ही है ?"

"क्यों, नौ लोग तो पुस्तकें ले जाते हैं । पाँच-सात लोग अखबार पढ़ने भी आते हैं । इतने लोग पर्याप्त हैं ।"

"गाँव की जनसंख्या के कितने प्रतिशत लोग हुए ?"

"हरेक जगह प्रतिशत नही देखा जाता । मनुष्य प्याऊ बना दे, काफी है, उसका कार्य पूर्ण हुआ । क्या वह प्यासों को भी ढूँढने निकले ?"

"प्याऊ क्या बला है जब यही लोगों को मालूम न हो तो ?"

"शराबखाने के बारे में मालूम है और प्याऊ के बारे में नहीं ! उसके बारे

में उन्हें जानकारी ही नहीं, विश्वास भी होता है। किन्तु बिना किसी स्वार्थ के उधर लोग मुँह भी नहीं करते।"

"उन्हें उनके स्वार्थ के बारे में तो बताना ही पड़ेगा?"

"हमें, अर्थात् आपको ऐसा लगता होगा। किन्तु जिनकी आप बात कर रहे हैं उन्हें ऐसा नहीं लगता।"

"तू क्या यह सब सिर्फ बोलने के लिए ही बोल रहा है?"

"नहीं, मैं जानता हूँ इसलिए बोल रहा हूँ। लोग तो इस इन्तजार में हैं कि हमने इस पुस्तकालय के लिए पीपल गिरवाया है, उसका फल कब मिलता है।"

"अर्थात्?"

"हम दोनों को नहीं तो दो में से एक को मर ही जाना चाहिए। यही वे चाहते हैं।"

"यह तो रूढिवादी अंधविश्वास है।"

"नहीं, यह लोगों की आन्तरिक इच्छा है। विश्वास न हो तो पूछ लो, हरजीवन आ रहे हैं। माधव नीम पर से गिरा था तब उसका पाँव टूट गया था। उसे तो अपने कर्मों का फल मिल गया। किन्तु अभी हम लोग बाकी हैं। इसलिए वे दुखी हैं। किन्तु मुझे आशा है कि..."

"अच्छा अब बस कर। ले इन नंबरवाली पुस्तकों को आलमारी में रख दे। हरजीवन तू इस लवजी को सुधार जरा।"

"यह तो स्वयं हम सब को सुधार दे ऐसा है।"

"तो मुझे क्यों लगता है कि इसके दिमाग में कुछ गड़बड़ी है?"

"आप बड़े भाई हैं इसलिए।" लवजी हँस पड़ा।

लवजी का काम पूरा हो गया था। अतः वह आकर पुस्तकालय के चौतरे पर बैठ गया था। वहीं बैठे बैठे आदमियों और कुत्तों को देख रहा था। देवू पुस्तकें देख रहा था। हरजीवन बेंच पर बैठा-बैठा पाँव हिला रहा था।

"लो, माधव भाई को तो गाड़ी हाँकना भी आ गया।" लवजी चिल्लाया।

बैलगाडी पर बैठा हुआ माधव खुश हो गया। पीछे मोहन आ रहे थे। उन्होंने कहा–

"भैया, मेहनत, मजूरी तो करनी ही पड़ती है।"

"और क्या? परीक्षा के बाद डेढ़-दो महीने तो हमारा लवजी भी रोज खेतों पर आया करेगा।" देवू ने पुस्तकालय के झरोखे से कहा।

"पुस्तकालय को तो चौबीस घण्टे खुला रहना चाहिए।" लवजी ताला ढूँढता हुआ बोला। देवू की इच्छा थी कि पुस्तकालय को बन्द कर दिया जाये। हरजीवन ने ताला पकड़ाते हुए कहा–

"सही बात है। यह बात गाँव वालों को भले ही अच्छी न लगे किन्तु गाँव के कुत्तों को तो अच्छी लगेगी ही।"

माधव आया। अचानक लवजी को याद आया—

"पटेल मास्टर माधव भाई के खास दोस्त हैं।" पटेल मास्टर गाँव के स्कूल में नये-नये आये थे। स्कूल के बच्चों के लिए मिले दूध के पाउडर आदि को हजम कर जाने के लिए बहुत बदनाम थे।

"लो, यह लवा भी...यार किसी के साथ बात भी न करें! उस दिन वे मिल गये। तू रास्ते भर बेचारे की हँसी उड़ाता रहा। मुझे रहम आ गया। दो पल बात कर ली। और क्या?"

"लवजी, दूसरों के साथ हम कैसा व्यवहार करते हैं—यह अपने लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। वह तो भूल जाता है।"

"आपको नहीं मालूम। उस दिन हम स्कूल जा रहे थे तब वह अपने स्कूल से कहीं और जा रहा था। मैंने पूछा - छुट्टी पर हो? तो मालूम है उसने क्या कहा? फ्रेंच लीव।" मैं तो उसके साहस और उसकी निर्लज्जता पर मोहित हो गया। फिर तो लिया आड़े हाथों। वैसे वह दिखाई ही देता है मूर्खों जैसा किन्तु है बड़ा उस्ताद। यह माधवलाल तो मैट्रिक के बाद शिक्षक बनना चाहता है इसलिए उससे कुछ मार्गदर्शन ले रहा था। नौकरी पाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है, गांव में बदली करवाने के लिए कितनी रिश्वत देनी पड़ती है आदि आदि।"

'यह सब झूठ है, हाँ देवूभाई।" माधव ने सख्त ऐतराज उठाया।

"सच हो तो भी क्या फर्क पड़ता है?" हरजीवन बोला।

"यह कुम्हार एक दिन मेरे हाथों मार खायेगा। इसे समझा दो। देवू भैया तुम्ही ने इसे बिगाड़ा है।"

"तब तो दोष मेरा है।" देवू के इन शब्दों पर लवजी को अकारण ही हँसी आ गयी। माधव चुप हो गया तो हरजीवन चला गया।

"माधव तूने हरजीवन को दुःखी किया।"

—देवू ने उठते हुए कहा।

"हमारा तो ऐसा ही चलता रहता है।"

"ये लोग यदि इसी तरह एक दूसरे को दुःखी न करते रहे तो इनकी दोस्ती निभ ही नहीं सकती।"

माधव हँसा—"लवजी की बात शत-प्रतिशत सच है।"

अलग होते समय देवू ने दूध के पाउडर के डिब्बे वाली बात चलाई। माधव ने टालमटोल की। अंत में उसने कहा कि चलो सुबह स्कूल जाकर उन्हीं से पूछते हैं और यदि कहने की बात हुई तो दो-चार बातें कहेंगे भी।

"तुम्हारी उनसे अच्छी मित्रता हो तो मत आना। तुम्हारी उपस्थिति में वे सच कबूलते हुए संकोच करेंगे।" देवू ने कहा।

"नहीं, मुझे सवेरे काम भी है।"

"तो ठीक है, मैं और लवजी चले जायेंगे।"

"नहीं तुम अकेले जाना। लवजी से वे घबराते बहुत हैं।"

"उनका बस चले तो इस गाँव से मुझे निकलवा दें।" देवू ने महसूस किया कि लवजी की बात भी ठीक है। फिर देवू ने ही मजाक में कहा—

"ऐसी महानात्मा के दर्शन मुझे अब तक नहीं हुए, अजीब बात है।"

"महानता दुर्लभ वस्तु होती है।"

"तब तो कल भी दर्शन नहीं होंगे।"

"स्कूल खुलते ही मत पहुँच जाना। नहीं तो बैठे रहना पड़ेगा। वे आयेंगे भी तो बन्द होने के समय।"

दूसरे दिन देवू स्कूल पहुँचा तो वहाँ सिर्फ शिक्षक ही थे। उसे हर्ष हुआ। वह तो इस उम्मीद से गया था कि वहाँ मात्र विद्यार्थी ही देखने को मिलेंगे।

बीरा खेत से घर की ओर जा रहा था। वह दूर से ही चिल्लाया। "आज तो मास्टर साहब आप दोनों इतनी देर से आये कि लड़के ऊबकर घर चले गये।"

"उन्हें आना ही नहीं चाहिए था। अब तो परिणाम ही बताना है।"

"परीक्षा ले ली?"

बीरा देवू को देखकर पास आ गया था। स्कूल के पास ही उसका खेत था अतः वह स्कूल की सही परिस्थिति से वाकिफ था।

"पढ़ाए बिना काम चल सकता है, किन्तु परीक्षा लिए बिना कहाँ चलता होगा भला?"

"परीक्षाएं ले ली जाये इतना ही काफी है?" देवू ने कहा।

दोनों शिक्षक थोड़ी सी मुस्कान के साथ देव का सम्मान कर रहे थे।

"आप बैठिए तो सही।" कहते हुए पटेल मास्टर ने स्कूल की उपलब्धियों को गिनाना प्रारंभ कर दिया। बीरा के चले जाने के बाद दूसरे मास्टर साहब की भी जुबान खुली। वे परमार थे जाति से। देवू मना ही करता रहा किन्तु वे उठकर चाय की व्यवस्था के लिए चले गये।

देवू ने कई तरह से दूध के पाउडर के डिब्बों के बारे में पूछा। पटेल साहब किसी भी तरह मानने के लिए तैयार न थे। देवू ने प्रमाण प्रस्तुत करने की धमकी दी और यह भी कहा कि यदि रपट कर दी जाये तो क्या परिणाम आ सकता है। पटेल साहब थोड़ा घबराए—

"हो सकता है, गलती हो गयी हो, किन्तु विश्वास कीजिए अब नहीं होगी।"

"लिखकर दो।"

मास्टर साहब लिखकर देने के लिए तैयार न थे।

देवू ने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि भविष्य में फिर से आपने डिब्बों को बेचा तभी मैं उसका उपयोग करूँगा। फिलहाल कुछ नहीं करूँगा। अंत में एक स्लिप में मास्टर ने काँपते हुए हाथों से लिखा "अब कभी भी दूध के डिब्बे नहीं बेचूंगा।"

देवू उठ खड़ा हुआ। परमार साहब चाय के बदले माधव को लिए चले आ रहे थे। उन्होंने माधव से मामले को संभाल लेने की प्रार्थना की। स्लिप पर लिख-कर दे देने के बाद से मास्टर साहब हर पल पछता रहे थे। माधव ने आश्वासन के लिए देवू की प्रसंशा करनी शुरू की। देवू ऊबकर चला गया। माधव शिक्षकों से कह रहा था –

"आपका तो क्या देवू भाई तो दुश्मनों का भी बुरा नहीं सोचते।"

उसके बाद देवू ने वह स्लिप पता नहीं कहाँ फेंक दी। उसे कुछ भी याद नहीं रहा। किन्तु पटेल साहब इतने भयभीत हो गये थे कि स्कूल खुला फिर भी नहीं आये। लगभग दस दिन तक परमार साहब ने उनका इन्तजार किया फिर पटेल के घर गये। पटेल साहब को यह तो विश्वास था कि वे बर्खास्त नहीं किये जायेंगे। क्योंकि वे पहले ही अधिकारियों की जेब भर आये थे। किन्तु फिर भी स्कूल आने की उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी। वे सोच रहे थे कि उनका स्थानान्तरण हो जाये तो अन्यत्र कहीं चले जायें किन्तु सोमपुरा तो नहीं ही जायेंगे। उन्होंने परमार से कहा भी कि जिस गाँव में अपना सम्मान न होता हो उस गाँव को अपनी सेवाएँ देते रहने से क्या लाभ? मैं जानता हूँ कि मैं महागुजरात के पक्ष में था इसीलिए देवू मुझसे ख्वार खाये बैठे हैं। किन्तु उन्हें मालूम नहीं है कि पेथाभाई मेरे साथ है। देवू कुछ भी करे, मेरी नौकरी को आँच नहीं आयेगी। तो फिर स्कूल चलते क्यों नहीं? बाद में एक साथ कितने दिन की हाजरी भरोगे? पटेल मास्टर ने अपना रवैया बदला – "सोमपुरा के पाँच आदमी मिलकर मुझे वचन दें कि मेरी नौकरी पर कोई आँच नहीं आयेगी, तभी आऊँगा।"

ऐसा ही हुआ। माधव के प्रतिनिधित्व में परमार साहब ने माना के घर पर पाँच आदमियों को एकत्र किया। उस सभा में छना ने तो यहाँ तक कहा कि देवू को बुलाकर डाँटना भी चाहिए। माना ने उसकी बात गाँव भर में फैला दी। गाँव की ओर से उसने दोनों शिक्षकों को आश्वासन दिया। कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। जितना हो सके उतना पढ़ाओ। हाँ, कुछ खरीदने बेचने के पहले गाँव से पूछ लेना चाहिए।

जब नारण ने लवजी को यह बात बताई तो वह बहुत खुश हुआ। उसने कहा – "ऐसा ही होना चाहिए। ऐसा होना बिल्कुल स्वाभाविक ही है।" उसने फिर नारण से कहा कि वह यह सब देवू को न बताए। अगले तीन दिनों तक तो देवू से नारण का मिल पाना संभव भी नहीं था। देवू बदरी गया हुआ था। हीरूभाई ने जिले भर से पचीस युवक कार्यकर्ताओं को बुलवाया था। पिछले कई वर्षों से उनके मन में, एक संस्था के निर्माण की बात घर कर गयी थी। नदी के किनारे गाँवों में रहने वाले लोग रोजगार के अभाव में चोरी जैसी प्रवृत्तियों में फंस जाते हैं। चोरी के अतिरिक्त कुछ अन्य दोष भी उनके भीतर घर कर गये हैं। हीरूभाई का मानना था कि यदि उनके बच्चों को योग्य शिक्षा दी जाये और

युवकों को उचित कार्यों में लगाया जाय तो भविष्य में वे लोग अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर लें : यह विचार जुगतराम और बबलदास को बहुत पसन्द आया था। महाराज का आशीर्वाद भी मिल चुका था। पिछले सात-सात महीनों से हीरूभाई और रमणलाल जमीन और चन्दे के लिए दौड़धूप कर रहे थे। बदरी और गोकुलिया के पूर्व की ओर साबरमती नदी के किनारे उन्हें सत्तर बीघे जमीन प्राप्त हो चुकी थी। चन्दे की रकम दिनों दिन अधिकतर होती जा रही थी। अकेले बालूभाई ने दस हजार रुपये दिये हैं साथ ही साथ संस्था का नाम भी सुझाया "प्रजा-भारती"। हीरूभाई ने पचीस कार्यकर्ताओं को इसलिए बुलाया है कि वे लोग संस्था का संविधान बना डालें। देवू ने सिर्फ एक ही बात कही कि मनुष्य को शिक्षा की अपेक्षा काम से अधिक सीखने को मिलता है। यह संस्था यदि नदीकिनारे की बस्ती के लोगों को काम दिलवाती है तो यह मानवजाति की बहुत बड़ी सेवा होगी। देवू ने जमीन देखी और उसे सुधारने के बारे में सोचता हुआ वापस गाँव आ गया।

24

लवजी बहुत दिनों के बाद खेत में गया था। देवू की हिदायत थी कि रात को ग्यारह के बाद पढ़ाई न करे। संभव हो तो सुबह जल्दी उठ जाया करे। सुबह नींद खुल तो जल्दी जाती किन्तु थोड़ी ही देर में पुनः आँखें बन्द होने लगतीं। लवजी ने एक मार्ग ढूँढ निकाला। आँख खुलते ही स्नान कर डालता। स्नान के लिए नैतिक रूप से स्वयं मजबूर हो जाये इसलिए उसने एक कार्य और प्रारंभ किया। वह सुबह उठते ही पहले गीता के एक अध्याय का पाठ करता। लवजी को शुरू शुरू में तो ऐसा लगा कि इस गाँव में पाँच बड़ी जल्दी बज जाते हैं। किन्तु बाद में उसकी आदत पड़ गयी। खेलकूद बिल्कुल बन्द हो गया था। शाम को सारंग से आने के बाद खेत में जाने की इच्छा होती किन्तु सूर्यास्त के बाद वहाँ जाकर देखा भी क्या जा सकता? नरसंग कहते कि हमारा लवजी इस वर्ष खेत में बहुत कम आता है किन्तु जब आता है तो पूरा खेत सूँघ डालता है। लवजी को यह बात अतिशयोक्तिपूर्ण लगती। यह सच है कि आदमी को सब कुछ सूँघ सूँघ कर प्राप्त करना चाहिए। किन्तु मैं तो थोड़ा ध्यान से देखता भर हूँ। सूँघने का समय ही कहाँ मिलता है?

परीक्षा की तैयारी अच्छी हुई थी। हाईस्कूल की नौ मासिक परीक्षा में अस्सी प्रतिशत अंक थे, बोर्ड परीक्षा में तो इससे कम नहीं आने चाहिए। लवजी संतुष्ट न था। किन्तु अफसोस भी न था। कोई बात नहीं, ठीक है। देवू ने कहा था अच्छे मार्क्स हैं। और अभी तो दो महीने शेष हैं परीक्षा के। और पढ़ो।

"एकाध दिन आराम करना है, फिर टूट पड़ना है। आज पुर चालू है? *शाम को आना है।*"

"आप कहते हैं तो स्वागत की तैयारी करके रखें ? देवू ने जानबूझकर 'तुम' के बदले 'आप' से संबोधन किया ।

"खेत की मेड़ पर कुत्ते को खड़ा कर देना । वह भौंकेगा तो भी ठीक है और दुम हिलायेगा तो भी ।" लवजी के इस उत्तर से देवू ही नहीं कंकू भी हंस-हंसकर दुहरी हो गयी । देवू को नरसंग का भोजन लेकर जाना था । लवजी को नये घर की छत पर जाकर सो जाना था । माँ ने बातों ही बातों में हलवा बना दिया । उन लोगों ने भर पेट खाया । लवजी को विश्वास था कि आज उसे नींद अच्छी आयेगी। स्वप्न भी आयेंगे । और संभवतः ख्वाबों में शान्ता भी आयेगी। वाह, कितनी नन्हीं सी है, परी जैसी ? जैसे नूरजहाँ की भतीजी हो । मुझे नाम लेकर बुलाया । जैसा ख्वाबों में करती है वैसा ही बाद में भी करेगी वह । आदमी जैसा चाहता है वैसा ही होना चाहिए । मैं अपनी भावी पत्नी से प्रेम करता हूँ इसमें किसी को आपत्ति नहीं है । क्यों हो ? इस विषय में अभी सिर्फ मैं जानता हूँ । शान्ता भी अब जानेगी । प्रेम को छुपाने में कितना आनन्द आता है !

लवजी अक्सर बड़ी देर तक पत्नी के विचारों में खोया रहता । अन्य किसी स्त्री का चित्र उभरता तो वह तुरन्त अपनी पलकों को खोल देता और थोड़ी देर बाद पुनः स्वप्नों में खो जाता । प्रेम एक ही व्यक्ति से हो सकता है । चलो अच्छा हुआ कि आज नींद नहीं आयी । शादी के बाद जब उसे पत्नी के रूप में यहाँ लाऊँगा तो आज के बारे में बताऊँगा कि परीक्षा के दिनों भी मैंने तेरे बारे में दो घंटे तक सोचा । बोल कम है ? वह कहेगी तुमने मुझसे इजाजत लिए बिना मेरे बारे में क्यों सोचा ? तो मैं जवाब दूँगा... क्या जवाब दूँगा ? कहो हर समय हर काम इजाजत लेकर ही किये जाते हैं ? मैं उसे हल्की सी चिकोटी काटूंगा और वह हँसती मुस्काती हुई और गाय की तरह घबराती हुई मेरे वश में आ जायेगी । जैसे गाय किसी सांड के वश में आ जाती है । लेकिन नहीं – गाय और सांड का अर्थालंकार आकर्षक नहीं है । हरजीवन से पूछूंगा । पिछले साल की सारी कविताएँ उसे पसन्द आयी थीं अभी यदि वह घर पर होगा तो उसे भी साथ लेकर जाऊँगा । उसने कुम्हार टोले के किनारे जाकर आवाज दी – मिस्टर प्रजापति हैं ? हरजीवन अपनी पत्नी को किसी बात पर डाँट रहा था, वह बाहर नहीं आया । लवजी ने अंदर जाकर उसका हाथ पकड़ा । "चल भाई चल, डाँटने का काम तेरी माँ कर लेगी । काकी जरा जिम्मेदारी निभा लेना ।"

भगतवाड़े के बाहर आने के बाद लवजी बोला – "अबे लल्लू, मुझे आज समय मिला तो मैंने सपने में पत्नी से प्यार करना शुरू किया और तुझे आज समय मिला तो पत्नी को डाँटना चालू कर दिया ? पसंद नहीं है तुझे क्या ?" हरजीवन ने कहा पसन्द है इसीलिए तो डाँटने में समय लगाता हूँ । हाँ, पसन्द ही आनी चाहिए । काठ के लड्डू वाली कहावत एकदम बकवास है । अपने देवू भैया जब

भी खोये-खोये दिखाई पड़ते हैं, मैं तो यही मान लेता हूँ कि ईजूभाभी के ख्वाबों में गोते लगा रहे हैं।"

"अरे ए, गत वर्ष गर्मी में वे क्यों नहीं आयीं ?"

"तुझे नहीं मालूम ? वे बीमार थीं।"

"क्या हुआ था ?"

"टाइफाइड। हालांकि ईजूभाभी पन्द्रह दिन में ही ठीक हो गयी थीं।। मैं स्वयं पता लगाने गया। तुझे याद नहीं है ?"

"मुझे अपनी पत्नी के बारे में भी कुछ याद नहीं रहता तो दूसरी स्त्री के बारे में तो ..अरे हाँ हम लोगों में तो दीवाली में भी विदायी होती है।"

"हाँ, लेकिन तब गलबाजी की पत्नी सौरी में थी। समधिन ने माँ को कहलवा भेजा था कि अब बिदायी फागुन में ही हो सकेगी।"

"यह भी अच्छा समय है। तब तक हमलोग भी छत खाली कर चुके होंगे। किसी को तकलीफ होगी तो पुस्तकालय में पढ़ लेगा।"

"तूने अच्छा याद दिलाया। मुझे शायद ही ऐसी बात सूझती। परीक्षा के ठीक बाद मैं देबूभाई के बदले खेत के अटाने पर सोया करूँगा। मैं छोटा था तब तो अक्सर वहाँ सोता था। पिताजी बात से बात निकाल-निकालकर अपने आप बोलते जाते और मैं उनकी रामायण सुनते-सुनते अपनी निगाह आकाश में बिछाए सो जाता।"

"अरे वाह। क्या प्रयोग किया है तूने "आकाश में निगाह बिछाकर" वाह। तुझे यह सारी बातें कहाँ से सूझती हैं ?"

"पढ़ने से।"

"असंभव। क्या हम नहीं पढ़ते ? देबूभाई भी किसी से कम पढ़ते हैं क्या ?"

"उन्हें भी ऐसी बातें सूझती तो होंगी ही, कहते भले ही न हों।"

"चल आज पूछते हैं।"

"आज नहीं। फिर कभी। आज तो बस मौज उड़ानी है। गप्प मारनी है। और खेतों में मटरगश्ती करनी है। देख, पिताजी क्यारी गोड़ते हैं और देबू पुर हाँकता है।"

वे दोनों बातें करते-करते जब देबू के पास पहुँचे तो लवजी कह रहा था — "एक दिन मुझे भी पुर हाँकना है। अपने यहाँ रस्टन इन्जिन लगे उसके पहले ही शौक पूरा कर लेना है।"

"ले पकड़ आज और अभी तू अपना शौक पूरा कर ले।" देबू ने अंगोछे को कंधे पर डाला और पुर भरने लगा। देबू की पीठ पर पड़े अंगोछे की पतली किनारी देखकर लवजी को पिताजी की पीठ याद आ गयी। हूबहू······

"क्यों उठता क्यों नहीं ?" देबू ने पुनः आवाज दी।

"जय गणेश परमेश्वर भगवान श्री राम" कहते हुए लवजी कुएँ के पास गया और घूमते हुए, पाट पर खड़ा हो गया।

"ले जरा बैल को पकड़कर बैठना । सफेद वाले को भूलकर भी मत छूना।"

"आप पीछे-पीछे आइए । ठीक है !"

"बराबर पकड़ रखना । अब चला "

"चल मेरे बाप ·· " लवजी ने भारी आवाज में कहा । बैल चल पड़े । क्यारी को गोड़ते हुए नरसंग देख रहे थे । लवजी ने उनकी ओर देखकर खखारा और फिर बहादुरी से हरजीवन की ओर देखा ।

पहली बार जब तक थाले में पुर का पानी उड़िल नहीं गया, देवू ने बराबर ध्यान रखा । किन्तु दूसरी-तीसरी बार में तो लवजी में पूर्ण आत्मविश्वास आ गया था । वह बोला –

"भैया, आप थोड़ी देर ऊपर, अटान पर बैठकर देखिये, कोई गलती हो तो बताना । मैं नहीं मानता कि आपको कोई दोष दिखायी देगा ।"

देवू ने मुस्कराकर उसका समर्थन किया किन्तु वह खड़ा रहा कुएँ के पास ही। दिखा तो ऐसा रहा था कि वह हरजीवन से बात करने में मशगूल है किन्तु उसका जरा-जरा ध्यान भी पुर पर ही था । छठी बार पुर ज्यों ही थाले में पहुँचा लवजी बोल पड़ा । बैल आखरी कदम उठाए कि इसके पहले ही रुक गये और पुर का पानी वहाँ थाले में उड़िले कि उसके पूर्व ही बैल वापस मुड़ चले । लवजी ने हाँ हाँ तो किया किन्तु बैलों ने उसकी आवाज पर कोई ध्यान नहीं दिया । भरा हुआ पुर कुएँ में वापस चल चुका था । मूंजरे के स्थान पर कोई और बैल होता तो क्या से क्या हो जाता । लवजी को घबराहट में कुछ सूझा ही नहीं था । उसने चरसे की रस्सी खींच ली थी ।

देवू ने तुरन्त पगहा खींच लिया और मामला सुधर गया । पुर कुएँ में छपाक से जा गिरा था । जैसे बादल गरजे हों । दूर वृक्षों पर बैठे मोर चिहुँक उठे थे । लवजी का रोम-रोम खड़ा हो गया था । हरजीवन घबराकर अटान पर खड़ा हो गया था । देवू पूर्ववत स्वस्थ, प्रसन्न था ।

नरसंग ने क्यारी में खड़े-खड़े कुछ पूछा जो स्पष्ट सुनाई न पड़ा । देवू ने पुनः पूछा । फिर उसने बताया – कुछ नहीं ।

जब भाई और हरजीवन के साथ अलाव के पास खाट पर देवू आराम से बैठा तब लवजी को याद आया कि दुर्घटना कैसे घटी थी । वह पिछले क्षणों में खो गया । जब वह तीसरी बार पुर को खींच चुका तो वह मूंजरे की पूँछ पकड़कर चरसे की रस्सी पर बैठ गया था । वह बैठे-बैठे गतिशील था और खेत स्थिर थे। वे विशाल हरे-भरे खेत । पल भर के लिए उसे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे स्वप्नों में आयी शांता का स्पर्श, उसका रूप, उसका रंग सब विकसित होकर खेतों की हरियाली में परिवर्तित हो चुके हों । धानों की द्विरंगी छटा, पश्चिम में फूले सरसों के फूल, दक्षिण में शकरकंद के पौधे, लहलहाती हुई सौंफ और इन सबके मध्य

गेहूँ के खेत में झुके हुए, क्यारी गोड़ते पिताजी··· ··इन सबको निहारना, परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास होने से कम सुखद नहीं था। बल्कि ····

"मैंने यदि कॉलिज की पढ़ाई चालू रखी होती तो खेती भी इतनी ही अच्छी हो सकती थी। किन्तु तीन खेतों के बदले में इस ओर के जो खेत लिये गये और भगतबाड़े को जो पन्द्रह-सोलह बीघे का फार्म बनाया गया यह " यह तो आत्म-प्रसंशा है। देवू ने ज्यों ही महसूस किया, चुप हो गया।

"पिताजी तो स्वयं इन परिवर्तन के लिए मना कर रहे थे न?"

"उनकी एक बात सच थी कि जमीन के वे टुकड़े अपनी जमीन की तरह उपजाऊ नहीं थे। फिर भी उनके लिए तो अपना खेत यानी अपना खेत। भले ही वह इधर-उधर हो क्यों न पड़ा हो। अरसे से उसको वे जोत रहे हैं, तरह-तरह की यादें उससे जुड़ी होती हैं। जिस तरह दूसरों के खेत ले लेने का लालच नहीं है उसी प्रकार अपने खेतों को छोड़ने की इच्छा भी नहीं है। किन्तु माँ ने तो तुरन्त कह दिया था कि देख भैया, जमीन तो अब तुझे देखनी-भालनी है। हम तो अब पाँच-दस तक किसी तरह पिसट-घिसटकर काम आयेंगे। उसके बाद या तो खाट तोड़ेंगे या पाट।"

लवजी ने महसूस किया कि अन्तिम वाक्य माँ का नहीं हो सकता। माँ की भाषा वह अच्छी तरह से पहचानता था। देवूभाई भूल गये होंगे। मूल कहावत कोई दूसरी होगी। छोटी किन्तु प्रभावशाली। वे कभी भी नही चाहेंगी कि वे खाट और पाट, पाट और खाट के बीच की जिन्दगी बितायें। वृद्धों की दुर्गति उन्होंने देखी है। दोली माँ जब मरने वाली थीं तब उनके परिवार वाले उनकी कितनी उपेक्षा करते थे! जब वे मर गयीं तो काला की पत्नी कह रही थी—"चलो, पिंड छूटा। वे भी मुक्त हुईं और मैं भी।"

हरजीवन ने कहा यदि सभी किसान इसी तरह खेतों की अदला बदली करके सामूहिक खेती करे तो कृषिकार्यों में, रखवाली में कितनी अनुकूलता रहे। देवू को यह संभव नहीं लगता था।

लवजी उठ खड़ा हुआ।

"चल हरजीवन, खेतों की प्रदक्षिणा कर आए।"

"मुझे तो बीच खेत से चलना अच्छा लगता है।" हरजीवन भी उठ खड़ा हुआ।

"हाँ, जब तक तू दो-चार पौधों को तोड़ेगा नहीं तब तक तुझे चैन कैसे आएगा? अगर तू ऐसा न करे तो कुम्हार कैसा?" लवजी की यह बात देवू को अच्छी न लगी। वह भी चल पड़ा।

"सरसों के फूल तो मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। किन्तु उनकी सुगन्ध अजीब लगती है। यदि यह थोड़ी सी भी मधुर होती तो मैं उस पर कम से कम पाँच कविताएँ लिखता।"

"निबन्ध तो अभी भी लिखा जा सकता है।"

"मजाक मत करो।" वह जैसे बुरा मान गया हो और शांति की खोज में जा रहा हो, इस प्रकार आगे बढ़ा। देवू और हरजीवन वापस मुड़ चले।

कुएँ के पास वे सब एक साथ ही पहुँचे। अभी वे बात कर ही रहे थे कि कंकू भैंसों को दुहकर, दूध लेकर आ पहुँची। दो तसलों में खिचड़ी भी लेती आयी।

"गरम है, अबहीं तौ, चलौ लड़कौ खाय क होत तो।" नरसंग ने छप्परे पर से एक खाली तसला उठाते हुए कहा।

हरजीवन ने इन्कार कर दिया। लवजी को अपना मन मार लेना पड़ा।

"लेव एक-एक कटोरी दूध पीये क होय तो। गरम है।"

लवजी घर पर तो गर्म दूध ही पीता था। पहली कटोरी हरजीवन गटगटा गया। दूसरी लवजी। हाथ से मुँह पोंछते हुए हरजीवन ने कहा-

"मेरी माँ, ऊपर का आधा दूध निकालकर जमाए बिना इस तरह पीने के लिए नहीं देती।"

"उपर घी होत है।" कंकू ने कारण समझाया। "मुला वहू कहाँ दूसरे पेट मां जात है।"

हरजीवन खुश हो गया। आज उसे समझ में आया कि देवू और लवजी इतने उदार क्यों हैं?

लवजी और हरजीवन कंकू के साथ खेत से वापस लौटे। रास्ते में कंकू बोली-

"अरे भैया हरजी, ऊ बात सही है?"

"क्या बोली काकी?"

"अपने दुमहलापर सारंग के बुनकर क बैठाव कै तुम चाय पियावेव है?"

"मुझे तो नहीं मालूम। लवजी जानता होगा।" हरजीवन ने बात टालने के लिए झूठ बोल दिया। लवजी गुस्से हुआ-

"क्यों बे? उस दिन हीरूभाई के साथ कौन आया था? वह हरिजन कार्यकर्ता...क्या नाम है उसका?"

"तुझे मालूम।"

"हाँ-हाँ मुझे मालूम। तेरी बात सही है माँ। हमने उसे चाय पिलायी थी।" लवजी इतने उत्साह से बोला जैसे माँ के पक्ष में वकालत कर रहा हो। लेकिन तुरन्त उसे याद आया कि उसने बंटाढार किया है। भले बंटाढार किया हो। पता तो चलता ही, आज नहीं तो कल।

"अरे, ऊ हांरूआ, नंगा, भंगियन क लैके हमरे घरे आवे लाग? अब की आवे देव तौ बतायी।"

"देखना माँ, उन्हें कुछ कहना मत। इस पूरे इलाके में वे ही एक अच्छे आदमी हैं। हालांकि हम सब तो अच्छे हैं ही।"

कंकू लवजी की अंतिम बात से भी खुश नहीं हुई।

"हमका का मालूम ? हमका तौ घेमरिया के महतारी बताइस ।"

"हाँ, उस दिन घेमर भाई आये थे ।"

"अब कबौ अस न किहेव ।" कंकू ने बात पूरी की । गाँव पास में आ गया था । लवजी से बोले बिना नहीं रहा जा सका–

"माँ, तू तो जानती है, बाबा तो बुनकर, चमार, भंगी सबके फूँक मारकर डोरा बाँध देते थे ।"

"वे तो भगत रहे ।"

"अब तो सब पिताजी को भी भगत ही कहते हैं ।"

"तो मन्दिर मां छोड़ आऊ उनका ।"

"अब तो मन्दिर में ही हरिजन लोग जाने लगे हैं । तूने बनारस का नाम सुना है ? काशी ...काशी हां, वहां जो विश्वनाथ मन्दिर है न ? उसमें पिछले महीने साठ हजार हरिजन गये थे । "

"का होय वाला है भला दुनिया कै ?"

"देख माँ, तू ही बता, हमारे घर, हमसे ऊँची जाति के माने जाने वाले, बनिया और ब्राह्मण नहीं खाते ? तो फिर यदि एक हरिजन ने चाय पी ली तो क्या हुआ ?"

कंकू ने उत्तर न दिया । गाँव आ गया था ।

"हम पशुओं से भी भेदभाव नहीं रखते तो क्या आदमी से रखें ? हरिजनों को भगवान ने छोटा और अछूत नहीं बनाया है । बल्कि स्वार्थी मनुष्यों ने बनाया है । भगवान ने यदि उन्हें तुच्छ बनाया होता तो आँख, कान, पाँव, हाथ इनमें से कुछ तो कम दिया होता उन्हें ? क्यों, बोलती क्यों नहीं ?"

पिथू भगत जभी-कभी भेदभाव दूर करने की बात करते थे । तब बात समझ में नहीं आती थी । लवजी जो भी कह रहा है, सब कुछ समझ में आ रहा है । हीरूभाई के बारे में उल्टा-सुल्टा बोलने के लिए कंकू पछता रही थी ।

25

रमणलाल ईजू को छोड़ने सोमपुरा आये थे । लवजी को अपने साथ अहमदाबाद लेते गये । कंकू के लिए यह अच्छा ही हुआ । लड़का अकेले गया होता तो मन बेचैन रहता । वैसे तो सारंग तक देवू भी छोड़ने जाता लेकिन यह तो अंत तक का साथ था । ईजू को लगा कि रमणलाल ने कंकू की चिन्ता को देखकर ही अहमदाबाद जाने का और लवजी को बालूभाई को सौंप आने का निर्णय लिया है । लवजी जब फीस भरने गया था तब तो देवू साथ में गया था । वहाँ उसने "मदर इन्डिया" नामक सिनेमा भी देखा था । लवजी को उस फिल्म के गीत पसन्द आये थे । एक एक पंक्ति तो उसे अभी भी कण्ठस्थ है–"जीवन है अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा ।"

लवजी उमंग में था । सेंट जेवियर्स कॉलेज की जगह उसे बहुत पसन्द आयी

थी । गाँवों जैसी शांति और शहरों जैसी सुविधा – वहाँ दोनों उपलब्ध थे । रहने और पढ़ने दोनों का भरपूर आनन्द उठाया जा सकता है । हरजीवन या माधव में से कोई साथ पढ़ने आया होता तब तो क्या पूछना । माना की बहुत इच्छा थी कि उसका नारण भी कॉलेज में पढ़े किन्तु उसके अंग्रेजी में कुछ मार्क्स कम थे । देवू ने सुझाव दिया कि उसे विद्यापीठ में भर्ती करवा दो । किन्तु माना को आशंका थी कि नारण विद्यापीठ में पढ़कर हीरूभाई जैसा बन जायेगा । उसने कहा – मैं इसलिए खर्च करूँ कि तू कंधे पर झोला लटकाकर गली-गली भटकता फिरे ? अरे इस गाँव में शिक्षक बन सके तो ठीक नहीं तो कहाँ अपने पास खेती की कमी है ? तुम सब मिलकर अच्छी मेहनत करो तो नरसंग पिथू के देवा से अधिक कमा सकते हो ।

"बी. ए. के बाद क्या करोगे ?" रास्ते में रमणलाल ने पूछा ।

"एम. ए. ।"

"इतने अच्छे मार्क्स हैं तो साइंस में क्यों नहीं जाते ?"

"मैं कवि होकर साइंस में जाऊँ ?"

रमणलाल हँस पड़े । स्वयं को कवि कहते हुए लवजी को लेशमात्र भी संकोच नहीं हुआ था ।

"तब तो तुम महाकवि बनोगे, ठीक है न ?" सुनकर लवजी को क्रोध आया था । फिर वह धैर्यपूर्वक बोला–

"क्या जरूरी है कि जो बड़े हों वे छोटों का मजाक उड़ायें ही ?"

"तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा के बारे में जानना क्या मजाक उड़ाना है ?" लवजी के कंधे पर प्यार से हाथ रखते हुए रमणलाल ने पूछा ।

"सच कहूँ ? मेरे मन में विचार तो कई प्रकार के जन्म लेते हैं, किन्तु मैं कुछ तय नहीं कर पाता हूँ । मुझे लगता है मेरे मन में अभी महत्त्वाकांक्षा का भाव ही जागृत नहीं हुआ है । जिसने कभी पर्वत ही न देखा हो वह शिखर के बारे में क्या जाने ?"

रमणलाल की आँखें चमकने लगीं । वे लवजी का मुँह देखने लगे । शिखर के बारे में क्या जाने ? क्या कह रहा है यह बालक ?

तब तक रमणलाल को और भी आश्चर्य में डालने के लिए लवजी ने दूसरा प्रश्न पूछा–"आप जब कॉलेज में भर्ती हुए थे, निश्चित ही आपकी भी कोई महत्त्वाकांक्षा रही होगी । यह भी निश्चित है कि आज वह नहीं बन पाये होंगे । आपने शायद कलेक्टर या वकील बनना चाहा हो और बने···"

लवजी ने अपना वाक्य जल्दी पूर्ण नहीं किया । रमणलाल ने उत्सुकता से उसकी ओर देखा, क्या कह रहा है यह लड़का ? उन्हें लोग विभिन्न नामों से जानते हैं – समाजसेवक, प्रगतिशील किसान, संनिष्ठ कांग्रेसी, जिले के युवक नेता··· किन्तु लवजी ने इसके अतिरिक्त ही कुछ कहा··· 'और आप बने व्यापारी ।"

"तुम्हारी बात गलत है, मैं ऐसा तो नहीं कह सकता। आदमी के आर्थिक या राजनैतिक उत्कर्ष के मूल में व्यापार ही है।"

"आपको जीप चलानी नहीं आती?" लवजी ने एक अनपेक्षित प्रश्न किया।

"सच कहूँ? मुझे डर लगता है।" रमणलाल ने मुस्कराते हुए कहा, जैसे अपना डर छुपा लेना चाहते हों।

लवजी चौंका। थोड़ी देर बाद वह बोला–

"आपने यह न कहा होता तो ठीक था। आपके प्रति मेरे मन में जो सम्मान-भाव था, कम हो गया। किन्तु चुनाव के समय तो आप अंधेरी रात में भी चल देते हैं। यहाँ तक कि चोरों-लुटेरों के अड्डों पर भी जाने से नहीं डरते।"

"वैसे तो मैं निडर आदमी हूँ। आदमी का मुझे बिल्कुल डर नहीं लगता, किन्तु मशीनों का क्या भरोसा! कौन जाने, कब क्या हो जाता है? हमेशा ऐसे लगता है जैसे बारूदखाने में बैठा होऊँ।"

"लगता है, आपने गाँधीजी को पढ़ा है?"

"तुम्हारे जितना तो नहीं...किन्तु..." खुश होते हुए रमणलाल ने कहा–"उनके विचारों से परिचित हूँ हीरूभाई की वजह से। हालांकि उनसे पूछोगे तो वे यही कहेंगे कि मुझ पर सबसे अधिक मेरे अपने ही विचारों का प्रभाव है, विचारों के साथ मेरा दूर तक का संबंध नहीं है। महागुजरात वाला आंदोलन छिड़ा तो उन्हें ऐसा लगता था कि जैसे मैं पार्टी छोड़ दूँगा। जब कि पूनमचन्द..."

"सचमुच वे ऐसा सोचने लगे थे?"

"पशाभाई ने बताया था।"

"तब तो निश्चित ही झूठी बात है।"

"पशाभाई हमेशा झूठ नहीं बोलते हैं।"

"उनसे आपके संबंध सुधर गये क्या?"

"मैंने बिगड़ने ही कब दिए थे? कुछ दिनों पहले की ही बात है, उनकी पुत्रवधू अपने बच्चों के साथ मेरे खेतों पर घूमने आयी थीं। वे लोग तो शाम को ही वापस जाने वाले थे किन्तु तुम्हारी बहन ने कुछ ऐसा जादू चलाया कि वे लोग दो दिनों तक टिके रहे। अतिथि के स्वागत में तुम्हारी बहन कभी पीछे नहीं हटती। सच पूछो तो मेरी सफलता का मुख्य कारण वे ही हैं।"

"कौन सी सफलता?" लवजी ने निर्विकार भाव में पूछा। रमणलाल निराश हो गये। चुप रहे।

"क्यों बोले नहीं कुछ? मैं यह जानना चाहता हूँ कि पिछले बारह वर्षों में आपने ऐसी कौन सी चीज प्राप्त कर ली है जिसे पाने के लिए लोग उत्सुक हो जायें? क्या आप मेरा प्रश्न नहीं समझे?"

"तुम्हारे प्रश्न का उत्तर तो बड़ा सरल है। क्या बताऊँ – क्या मिला मुझे? गृहस्थ जीवन – तुम्हारी बहन, बालजी और विपुल।"

थोड़ी देर बाद लवजी बोला–

"अक्सर तो आप घर से बाहर रहते हैं। जब घर में होते हैं तब भी बाहर के बनकर ही रहते हैं। क्या इन सबके लिए आपका भागदौड़ वाला यह जीवन ही जिम्मेदार नहीं है ?"

"हो सकता है। किन्तु मैं अपने अनुभव की बात बताऊँ ? जब मैं इन तीनों के साथ बैठा होता हूँ तो मुझे और कुछ भी याद नहीं रहता। तब मुझे न तो कोई निष्फलता बेचैन करती है और न ही आकांक्षा। जीवन के वे पल भरे-भरे होते हैं – परिपूर्ण। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है–"मैं इतना भाग्यशाली हूँ ? परिस्थितियाँ कहीं मुझसे ईर्ष्या न करने लगें ?"

"जितना मैं मानता था आप उससे अधिक समझदार और भावुक हैं। अब कभी भी आपको व्यापारी नहीं कहूँगा।"

रमणलाल लवजी की बात नहीं सुन सके। सड़क के किनारे एक औरत खड़ी थी। उसे थूहर के काँटों की परवाह नहीं थी।

"इन्हें बैठा लो सारंग जा रही हो तो।" रमणलाल ने ड्राइवर से कहा। वह एक ग्वालिन थी, तखत जैसी। रमणलाल को कुछ दिन पहले की घटना याद आई :

धूप बढ़ चुकी थी, तेज चलने से तखत को पसीना हुआ था। गले का पसीना पोंछना आंचल छाती से होकर नीचे खिसकता गया। हवा कटते रजके की बास ले आई। इतने करीब से रमणलाल ने कभी तखत को नहीं देखा था। हाँ, एक बार देखा था उसे। दूर से फिर भी नजदीक से। हीरूभाई पभामामा के घर पधारे हैं यह जानकर वे रात के अंधेरे में मिलने चले थे। हेती ने इनके हाथ में टार्च पकड़वाई थी। एक छोटा रास्ता तखत के आंगन से गुजरता था। पानी में पैर आ जाने से रमणलाल ने टार्च का बटन दबाया था। गलत हो गया था। नहाती तखत खड़ी हो गई थी। उसने साड़ी लेने हाथ बढ़ाया था, उसकी ऊँची पुष्ट काया ने एक वक्र मुद्रा धारण की थी। रमणलाल के पैर पीछे हट गये थे। वे ऐसे स्तब्ध हो गये थे कि माफी माँगना भी उन्हें सूझा नहीं था। लौटकर लम्बे रास्ते से पभा मुखिया के घर गये थे। बेचैनी हुई थी। समझ में नहीं आता कि अभी तक यौवन क्यों इसका पीछा नहीं छोड़ता ? सुकोमलता स्त्री के सौन्दर्य का लक्षण माना जाता है, जब कि यह स्त्री ऊँची और पुष्ट है। जो इस की क्षति नहीं, मानों पूँजी है...सौन्दर्य की एक निराली प्रतिमा है तखत...इसकी उपस्थिति माने केवडे से महकता हुआ वन्य वातावरण...

जब तखत जीप से उतरी थी और एहसान दिखाकर बिदा हुई थी तो न जाने रमणलाल को उस रात टार्च की रोशनी में देखी उसकी वक्र मुद्रा की स्मृति हो आई थी। इससे मुक्त होने के लिए उन्हें अपने मन से लड़ना पड़ा। उन्हें उस बात पर आश्चर्य है कि पिथू भगत के परिवार के सभी सदस्य इतने संतुष्ट क्यों

रहते हैं ? देवू में पढ़ाई की रुचि और क्षमता थी पर उसने आकांक्षा छोड़ दी। उसका तर्क हेती भी दोहराती है : आपने बी. ए. होकर जो किया है वह करने के लिए देवू को बी. ए. होने की जरूरत नहीं है।

लवजी देवू के त्याग को समझता है, अपने दायित्व को भी।

वे लोग साबरमती आ चुके थे। नदी में पानी भरा था। रमणलाल को लगा उपरवास में अच्छी बरसात हुई होगी। कल रात में सोमपुरा में भी बूदा-बाँदी हुई थी।

"यह साबरमती हरिजन आश्रम है।"

"मालूम है। लगता है आप कभी भीतर नहीं गये हैं।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"आपकी आवाज से। आपने इसके बारे में ऐसे बताया जैसे आपको इससे कुछ लेनादेना है ही नहीं।"

"सच है। और मैं दूसरों की तरह गाँधीजी का नाम भी नहीं भुनाता।"

"आप गाँधीजी पर इतना रहम किए हुए हैं यह अच्छा है।"

"अब मैं कहूँ कि तुम्हारा यह वाक्य बहुत अच्छा लगा ?"

"बारंबार कहने की क्या आवश्यकता है ?"

लवजी को अब रास्ते के बारे में कुछ भी समझ में नहीं आता था। जीप ठीक होस्टेल के पास जाकर रुक गयी। कुछ लड़के बाहर आये। रमणलाल ने कहा —

"देखो, यह तुम्हारे भावी मित्र हैं, तुम्हारे स्वागत के लिये आये हैं।"

"मेरे या जीप के ?"

लवजी ने उनकी ओर नहीं देखा। बिस्तर वगैरह नीचे उतारा। उसे ड्राइवर ने ले लिया। रमणलाल के हाथों में बक्स था। उसे लवजी ने ले लिया और पुस्तकों का थैला उन्हें पकड़ा दिया।

"अरे यह तो अभी से पुस्तकें ले आया है।"

पहली मंजिल से आयी आवाज सुनकर लवजी और रमणलाल की नजर मिल गयी।

"यदि इन्हें यह मालूम हो जाये कि ये पुस्तकें कोर्स बाहर की हैं तो इन्हें और भी आघात पहुँचे। हॉस्टेल में प्रथम सत्र में न पढ़ने में लोग गौरव समझते हैं।" रमणलाल ने लवजी के पीछे-पीछे चलते हुए कहा।

"आपके समय भी ऐसा ही था ?"

"कुछ परंपराएं कभी नहीं बदलतीं।"

"मुझ पर इनका कोई असर नहीं पड़ेगा।"

"मैं जानता हूँ।"

कमरा किनारे का था। रमणलाल को बहुत पसन्द आया।

"खिड़की के पास वाला पलंग हथिया लो। इससे वृक्षों के साथ वार्तालाप कर सकोगे।"

"आपको मालूम है ? इसी प्रकार के भावों वाली एक कविता है – वृक्षों के साथ बात करने का अवसर नहीं रहा। और न ही पुष्पों के साथ। उमाशंकर की कविता है। "शोध" शीर्षक है। उसमें एक बड़ी सुन्दर पंक्ति है – उस क्षण मैं बिल्कुल वृक्ष-रचना-मय था।

"ऐसा कुछ पढ़ो तो बताते रहना।"

"अहमदाबाद आओ तो मिलते रहना।"

"यह भी कोई कहने की बात है। चलो, सामान बाद में रखना।"

"कहाँ ?"

"मेरे साथ, खाना खाने।"

"खाने की व्यवस्था तो यहाँ भी होगी हो ?"

"वह तो हमेशा के लिए है ही। आज चलो बालूभाई का घर भी देख लो और घर के सभी सदस्यों से अच्छी तरह मिल भी लो।"

लवजी को याद आया। वर्षों पहले की बात है, एक बार रमणजी के साथ बालूभाई खेत पर आये थे तब उसने उन्हें चमनजी कहा था। देवू ने वीणाबहन को देखा है – हूबहू हेती की तरह। वैसी ही श्रद्धालु, न तो कोई घमंड न ईर्ष्या।

सब जीप में बैठ ही रहे थे कि एक लड़के की आवाज आयी –

"फिर आना।"

"चलो, तुम्हें भी आना हो तो" लवजी बोला।

"कहाँ ले चलोगे ?"

"तुम्हारे मायके।"

लवजी के उत्तर पर तालियाँ बज उठीं। जीप चल पड़ी। पीछे बातें हो रही थीं – गंवार लगता है किन्तु है पक्का। किसी नेता के घर का लगता है। जीप चुनाव में मार ली होगी।" लवजी बालूभाई के घर की कल्पना में खोया हुआ था। उसने कुछ नहीं सुना।

बालूभाई कांग्रेस हाउस गये हुए थे। वीणाबहन भी थोड़ी देर पहले नयी गाड़ी लेकर आम खरीदने गयी थी। बेबी कल्पना ने बताया।

"यह कौन है कल्पना ? तेरी छोटी मौसी जैसी दिखाई पड़ती हैं। ठीक है न ? हो सकता है मैं गलत होऊँ। नहीं, निश्चित ही मैंने इन्हें पहले भी देखा है।"

"आपने कहाँ देखा होगा ?" कल्पना ने ऐसा कहा जैसे उसकी सुन्दर और प्यारी मौसी को देखने का हक इस गाँव के आदमी को है ही नहीं।

"क्यों ? तुझे कोई आपत्ति है ? एक ढलती शाम को मैंने इन्हें अपने खेत में देखा था।"

"हाँ, मैं वही हूँ, जैमिनी। कलकत्ता में रहती थी। इसी वर्ष यहाँ आयी हूँ।"

"सुन्दर नाम है।" लवजी थोड़ा रुककर, किन्तु सब सुन सकें इस प्रकार बोला। जैमिनी के ऊपर इस प्रशंसा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सिर्फ बोली – "आभार।" रमणलाल ने लवजी का परिचय दिया। जैमिनी ने हाथ जोड़ दिये। लवजी ने भी धीरे से हाथ उठाया – "एक ऋषि का नाम है।"

"मैंने भी जेवियर्स में एडमिशन लिया है।" जैसे व्यर्थ की बात कर रही हो इस प्रकार जैमिनी बोली – "कभी मिलेंगे।" यानी उपकार करेगी, लवजी को लगा।

'यों तो हम आज भी बैठेंगे। यहाँ भोजन करने आये हैं।" लवजी ने कैसे इतनी जल्दबाजी कर दी ? फैशनेबल लड़की को कुछ बुरा लग जायेगा तो तकलीफ होगी। रमणलाल ने बात बदली।

"बेटा कल्पना, बालूभाई को फोन करना अच्छा लगेगा ?"

"ओह यस।"

इतनी छोटी लड़की फोन करेगी ? लवजी उसके पास जाकर खड़ा हो गया। फोन पर बात हो जाने के बाद उसे शाबाशी दी। ठीक उसी समय वीणाबहन आ पहुँची। बोली –

"हेती का छोटा भाई लगता है ?"

लवजी ने हाथ जोड़ दिये।

वीणाबहन ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया – "कितना इनोसन्ट लगता है ! निर्दोष, निष्पाप।"

पढ़ने में भी उतना ही तेजस्वी है – वेरी ब्रिलियन्ट, ए जेन्युइन टफ।"

"रीयली !" जैमिनी बोल पड़ी।

लवजी को अपने ही बारे में सच्चाई स्वीकार करने में संकोच हो रहा था। चंचल आँखों में चमकती नीलमणि...

उसने निश्चय किया कि आज पढ़ूँगा नहीं, कविता लिखूँगा। सभी कवि क्या अपनी भावी पत्नी के बारे में ही कविता लिखते हैं ? आज तो मैं इस अपरिचित लड़की की आँखों के बारे में ही कविता लिखूँगा। मन्दाक्रांता छन्द में। कालिदास की अपेक्षा छोटे छन्दों में इन आँखों के बारे में कविता लिखी ही नहीं जा सकती। वाह ! कैसी दयालु है, मुझे भूली नहीं है।

26

कल तक जहाँ गाँव के सभी विद्यार्थी पढ़ने आते थे और बैठकर गाँव की समस्याओं पर विचार करते थे आज वहीं पुस्तक पढ़ने के बहाने देवू बैठा ईजू की राह देख रहा था।

हवा चलते ही छज्जे के भीतर की उमस पूरे कमरे में फैल गयी। हवा चल रही थी किन्तु उमस कमरे से बाहर नहीं जा रही थी। ईजू को एकांत में देखने

की, मात्र देखते ही रहने की व्याकुलता निरंतर बढ़ती जा रही थी। अब तक क्या बातें कर रही होगी?

उसने आने में विलंब किया, और आते ही सबसे पहला काम लालटेन बुझाने का किया। छोटा सा दिया दूर होने के कारण जलता रहा। देवू कुछ बोले कि इसके पहले ही वह ऐसे बोल पड़ी जैसे उसकी बात आधी रह गयी हो—

"तुम भी कमाल के हो?"

'क्यों?"

"ई दुई साल मां एकौ बार गोकुलिया नाहीं आये।"

"नहीं आ सका।"

"आने के मन नाहीं हुआ था?"

"क्या ऐसा हो सकता है?

"तो फिर?"

"कुछ काम आ पड़ा था।"

"मिलतौ सकत रहेव।"

"तू वहाँ गलबाजी के साथ रहती है। मैं वहाँ आकर कहूँ कि ईजू से मिलने आया हूँ? मैं अभी सिर्फ हेनीबहन से ही ऐसी बात कर सकता हूँ बस।"

"आधे दिन तो हम वहीं बैठे रहत हैं। विपुलबा हमार माथैं नाहीं छोड़त। तुमका यहो नाहीं मालूम रहा?"

'कौन बताता? तूने भी दुबारा एक भी खत नहीं लिखा।" पीठ पर रखे हाथ को रेशमी चोली का स्पर्श बहुत मुलायम लग रहा था।

"ऊ खत लिखे के बाद अतनी पछतायी कि न पूछो।"

'उसमें पछताने जैसा क्या था?"

"लेव, इनकी सुनो, अस केहू चिट्ठी लिखत है?"

तेरा पत्र देखकर तो हमारे लवजी ने अपनी पत्नी के पास कविताएँ लिखकर भेजनी शुरू कर दी थीं।"

"हमका शांता ने कुछ नाहीं बताया।"

"तुझे वह कब मिल गयी?"

"यही दसेक दिन पहले, गोकुलिया आया रही, बरातमां। तुहार बहिन बलाय लायी, सुन्दर है।"

"तुझसे भी?"

"तुहार बहिन कहत रही कि दूनौ भाई कै घर मोनै अस लड़की मिली हैं। तुम नाहीं देखेव ऊका का?"

"मुझे देखा जाता होगा? यद्यपि मुझे इस पर्दा के रिवाज' में विश्वास नहीं है।"

"तौ हम काल बिना घूँघट निकाले पानी भरै जायी?"

"हिम्मत हो तो करो शुरूआत।"

"अपनी अम्मा से पूछ के बतायेंव ।"

"यह तेरा काम है ।"

"उनका का अच्छा लागत है का नाहीं ई हम जानित है ।"

"माँ अपनी नाराजगी तुरन्त व्यक्त नहीं करेंगी ।

"पर मन मां तो घुरत रहि हैं न ?"

"पिताजी के साथ बात करके मन हलका कर लेंगी, बस ।"

ईजू ने बताया कि रमणलाल देवू के पिताजी की प्रशंसा करते हैं और अपने पिता को ताने मारते हैं कि उन्हें भी उनके जैसा ही हो जाना चाहिए ।

"रमणलाल को अपने पिता से ऐसा कुछ नहीं कहना चाहिए । यह संस्कारी घर के लक्षण नहीं हैं ।"

"नाहीं, खराब केहू नाही बोलत । ई तो हमार सबके आदत है ।"

"यहाँ जरा ध्यान देना, माँ को बुरा न लगे ।"

"अपन तो अलग रहा जाये ?"

"अलग यानी ?" देवू उठ बैठ गया । अपनी उत्तेजित देह पर काबू पाने के लिए उसने एक लम्बी साँस ली ।

"काहे उठेव ?"

"पानी पीने के लिए ।" पानी पीकर उसने हाथ-पाँव भिगो लिया । उत्तेजना कम होती हुई लगी ।

"हमका देखो ? आज तो हम मेहमान हन न ?"

"ठीक है । ले यह पानी पीकर अलगौझे की बात हमेशा के लिए भूल जा ।"

"हम तो ई कहत रहिन कि लवजी भाई कै दुल्हिन आये तौ हमका बाहर न निकारे ? हमरे गलबवा कै दुल्हिन औते हल्ला करे लाग रहा ।"

"तू गलबवा गलबवा क्या करती है ? गलबाभाई नहीं कह सकती ?"

"बचपन से आदत है ।"

"अब तो तू बड़ी हो गयी है ?"

"तुमका का लागत है ?"

"अपनी छाती देख !"

"तुमका बोझ लागत है ?"

"मुझे तो तेरा पूरा वजन भी बोझ नहीं लगेगा ।"

"ऊँह, ई कस आदत है ?"

"तो मेरी छाती को तकिया बनाकर सो जा ।"

"तुम तो अच्छे हुकुम चलावे वाले हौ ।"

"तू भी हुक्म कर, मैं मना नहीं करूँगा ।"

"हमका शरम लागत है ।"

"मालूम है सब ।"

"मालूम होत तो का पूछे क रहा। बिल्कुल भोले हो।"

"तुझे गर्मी नहीं लगती ?"

"हम समझा कि तुम पंखा लगवाये होइ है।"

"बिजली आने भर की देरी है।"

"ऊ खिड़की बन्द कर देव न ?"

"क्यों अभी तो गर्मी लग रही थी ?"

"तो फिर दिया बुझाऊ। ई नयी साड़ी ·····"

"पसीने से भीग जाने की वजह से सुगंध निकल रही है। तेरे पसीने की है, रंग की नहीं।"

"ईजू ने उठकर दीया बुझा दिया। साड़ी निकालकर व्यवस्थित चौपर्त कर तकिये के नीचे रखी। पानी पिया। देवू को पिलाया, थोड़ा उसके ऊपर गिरा भी दिया।

देवू के शरीर भर में संवेदनतंतु धड़क रहे थे। उससे अब और बिलम्ब सहा नहीं जा रहा था। इससे मुक्त होने के लिए उसने यह कहते हुए बनियान निकाली - "तूने पानी डालकर पूरी बनियान भिगा दी, निकाल देनी पड़ेगी।" उसने अभी आधे ही वस्त्र उतारे थे कि ईजू चिल्ला उठी "नहीं, नहीं।"

पानी के छींटों का असर अब हुआ। मानसिक आघात ने शरीर को मसल दिया था।

देवू मूढ हो गया था। क्या मैंने जबरदस्ती की ? अब तक तो वह उत्तेजित कर रही थी फिर अचानक ·· इतनी जोर से ?

उनकी दशा ऐसी हो गयी थी जैसे दो बच्चे अचानक अंधेरे में अपनी राह भूल गये हों। ईजू को भी आश्चर्य हो रहा था कि वह चीख क्यों पड़ी ? किन्तु अब इतना भी साहस न था कि कोई स्पष्टीकरण करे। रात गुजरती जा रही थी। एक प्रहर···दो प्रहर··

करवट बदलते समय ईजू का हाथ देवू की पीठ पर पड़ा, देवू तब तक निद्रित हो चुका था।

हवा की शीतलता ने उसे जगा दिया। सुबह के धुंधले प्रकाश में उसने पत्नी के यौवन से भरपूर बदन को देखा तो उसकी चेतना अनुरक्त होकर लौट आयी। सारा गाँव जाग चुका था। इस ओर ध्यान जाते ही वह निरुपाय हो गया। ईजू को ओढ़ाकर वह उठ खड़ा हुआ।

जैसे दातून करते-करते ही सुबह हो चुकी हो वस्त्र पहनकर ईजू पुराने घर जाने लगी। देवू रात की घटना के बारे में सोच रहा था।

पानी से लबालब घड़ा रेगिस्तान में गिरकर टूट चुका था।

मूसलाधार बारिस में भीगने का समय आया तो बिजली गिर पड़ी।

"क्या यह ठंडी है या मैं ही उसे नहीं भाता ? या सचमुच मैं जबरदस्ती कर रहा था ? वह कितनी जोर से चीख पड़ी थी ? वह बातें तो संवेदनशीलता से

कर रही थी किन्तु व्यवहार जड़तापूर्वक किया। उसे इतना भी ध्यान नहीं रहा कि इतनी जोर से चीखा नहीं जाता। सुनने वालों ने क्या सोचा होगा? वह पुराने घर चली गयी तो वह भी चाबी वहीं रखकर खेत पर चल गया।

वह बड़ी देर तक सोचता रहा। उसके इन्कार के बाद अपना शरीर भी क्यों श्लथ हो गया था? कैसी अरुचि पैदा हो गयी थी? दाम्पत्यजीवन का प्रारंभ कैसा हुआ? उसके मन में मेरे प्रति जरा भी मोह नहीं है? उसने भी सुना तो होगा कि पाँच मन गेहूँ का बोरा पीठ पर लादकर भीतर वाले दर में डाल आने पर भी देवू की साँस नहीं फूलती।

देवू ने किसी से बात नहीं की। भैंसों को पानी पिलाकर दूसरी बार बैलों को छोड़ा। सफेद वाले ने मुँह भी नहीं लगाया। देवू चिढ़ गया। तब उसका ध्यान गया। आज हुआ क्या है उसे? घेमर से बात किये बिना मन हलका नहीं होगा।

दोपहर में उसने भोजन खेत पर नहीं मंगवाया। घर ही खाने गया। घेमर के घर देखा तो वह खाना खा रहा था।

"खाना खाकर नये घर पर आओ, बात करनी है।"

देवू ने घर जाकर जल्दी जल्दी खाना खाया। नये घर की चाबी ली और सीढ़ियाँ उतर गया। ईजू एक ओर शांत बैठी थी। वह सीधे चला गया।

घेमर आ पहुँचा। देवू ने गत रात के अनुभव की बात की। उसने बात बहुत ही संक्षेप में कही थी। घेमर की समझ में नहीं आया। जब समझा तो इतनी जोर से बोला कि आवाज खेतों तक पहुचे।

"ईमां का भलेमानुष, बिना किसी भय के "ना" क "हां" समझ लेय का। दुई "ना" के मतलब एक "हां" ई तो टीला खाई के काम।"

टीला-खाई। अजीब भाषा है। बात जब देवू की समझ में आयी तो वह हँस पड़ा।

"तुम तो भैया समझदार आदमी। हमरे जैसे लोगन के बीच माँ बैठो तो इन्द्र के अप्सरा क नचावें लागो। आजकाल तो छोट के लड़के उस्ताद बन जात हैं...और तुम...?"

उसके बाद घेमर हाथ से बाहर निकल गया। जातीय संबंधों के अज्ञान से उत्पन्न घटनाओं की एक सूची प्रस्तुत करनी प्रारंभ कर दी।

थोड़ी देर बाद जब घेमर चला गया तो देवू के मन में विचार आया—ईजू को कैसा लगा होगा? क्या उसे पश्चाताप नहीं हुआ होगा? आज उसके मन की क्या दशा होगी? उसने बाद में कुछ सोचा ही न हो तो दूसरी बात है। किन्तु क्या वह इतनी अबोध है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। उसकी समझ में यह बात आ गयी होगी कि इतनी जोर से नहीं चिल्लाया जाता। इस वर्ष अब कुंआरा उससे मिलूँ ही नहीं तो?

वह तो सोने का समय होते ही पानी की सुराही लेकर आ पहुँचेगी। मुझे

कुछ समय पहले पहुँचकर राह देखनी चाहिए। आज जब वह पुराने घर से निकलेगी तो क्या उसके पाँव कल की तरह ही उठेंगे ?

क्या होगा भला उसके मन में ?

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उसे कुछ अस्वाभाविक ही न लगा हो ? संभव है उसे जोर से चीखने में मजा ही आया हो।

चाबी देने घर नहीं जाऊँगा। यहाँ से सीधे खेत पर चला जाऊँगा। शाम को कह दूँगा कि चाबी कहीं खो गयी है। मैं खेत में रह जाऊँगा और वह पुराने घर में सो जाएगी।

नहीं, नहीं इतने बड़े विश्वासपूर्ण संबंध में अभिमान को रोड़ा नहीं बनाना चाहिए। आज उसे स्पष्ट पूछ लूँगा। तुझे कोई तकलीफ हो तो स्पर्श भी नहीं करूँगा।

वह चाबी रखने घर गया। माँ नहीं थी। खेत पर गयी थीं। हीरा और लीली ईजू से बातें कर रही थीं। देवू को देखकर वे चली गयीं।

देवू ने एकांत देखकर ईजू की ओर उसका पाकेट बढ़ा दिया।

"तुमका हमार पाकिट कहाँ से मिला ?" अरे ! ईजू बोल रही है।

"खाट के नीचे से।"

"हाँ, अब समझी। हम सोचत रहिन कि हमरी चोली में तो कुछ नाहीं गिरत, ई अतना बड़ा पाकिट कहाँ गिर गवा ? बादमां ध्यान आवा कि ऊ तो तुम खेल करत रहेव न तब गिर रहा।"

"खेल।"

"और का ! कृष्ण भगवान नाहीं गोपीक नहात देख के कपड़ा लैके कदंब पर चढ़ गये रहा। बस हो गयी छुट्टी। तू ऊहां हम इहां। मुरली भी चुप और गोपी के नहाबो बन्द।"

देवू के सिर पर से बोझ उतर गया।

वह कुछ भी बोले बिना ईजू का बक्स खोलकर साड़ियाँ देखने लगा। ईजू कह रही थी कितनी मूल्यवान हैं, किसने दी थीं ? यह साड़ी शादी के समय यहाँ से गयी थी।

"आज रात को तू वही पहनकर आना।"

"काहे ?"

"बस यूँ ही। तो मैं खेत में जाऊँ ?"

"काम है का।"

"नहीं, कोई नहीं।"

"तो बैठो न ?"

"कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?"

"तुम बाहर बैठो, हम यहाँ बैठब।"

"ऐसा कर. तू दो-चार घड़े पानी भरकर ले आ। मैं यहाँ सीढ़ियों पर बैठकर तुझे आते-जाते देखूँगा।"

ईजू थोड़ी देर पहले ही पानी भर लायी थी। कोई भी बरतन खाली नहीं था। और खाली हो भी तो क्या उसे अकेले कुएँ तक जाना चाहिए? देवू के मन में प्रश्न खड़ा हुआ। ईजू बक्स में ताला बन्द कर रही थी। देवू कोठरी के भीतर गया। और बक्से के ऊपर बैठ गया। फिर उसे देखता रहा।

"काल तुमका बुरा लाग रहा न? हमरी जबान से निकाल गवा, फिर बहुत पछतावा। अतनी पछतावा कि नींद नाहीं आयी। सब झूठ निकली। कहत रहीं कि जितना मना करब उतना वे जादा दुलार करि हैं। मुला तुम तो मुँह फेर लिहो।"

"वह मेरी भूल थी।" देवू ने स्मित के साथ कहा।

ईजू उसके पाँव के पास बैठ गयी। देवू देखता रहा। दो बर्ष पहले की अबोध कन्या की काया में नशशिख बसन्त जाग उठा था। गोरी चमड़ी में छुपी हुई स्वर्ण आभा गले और चोली के मध्य प्रदेश को प्रकाशित कर रही थी। नजर मिलते ही मुग्ध चेहरे की शोभा देवू के हृदय का उल्लास बन रही थी। और तुरन्त ही झुकती हुई गर्दन में लज्जा अधिक है या सौन्दर्य। कहा नहीं जा सकता था।

नजरों से वार्तालाप हो रहा था, जुबान की आवश्यकता न थी।

27

पिछवाड़ा बैठ गया था। रात्रि का अंतिम प्रहर था। बरसात तीन दिन से रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।

बरामदे में सो रही कंकू को कोई आवाज सुनाई पड़ी। आँख खुल गयी। कंकू दरवाजा खोलकर बाहर आ गयी। अरे काफी उजास हो आयी है। दिन निकलने की तैयारी है। देती के पिताजी तो माला लेकर बैठ भी गये होंगे। मन्दिर गये होंगे तो वापस भी आ रहे होंगे।

"अरे भैया घेमर – भैया काहे जाग्यो नाहीं?"

"अब हीं काहेक आवाज भवा रहा कंकू मा?"

काला की पत्नी ने बरामदे में आकर पूछा। कंकू ने दायीं ओर से बायीं ओर देखा।

"ई देखो तो सही, आज का होत है?"

"का भवा कंकू काकी?" घेमर बुलन्द आवाज के साथ आ गया। जो लोग जाग गये थे वे सब बाहर आ गये।

"ए कमाल है ई तो मेरा बेटा। पिछवारा तो हमार गिरेवाला रहा, गिरा

नरसंग काका के। वाह भाई वाह। भगवान भी कतना दयालु है। इनके तो नवा घर रहा, एक नाहीं दुई–दुई।"

नरसंग महादेवजी का दर्शन करके वापस आ गये थे। पिछले मोहल्ले में थे तभी धमाके की आवाज कान में आ पड़ी थी। चाल बढ़ायी। कंकू के चेहरे पर चिन्ता के भाव नहीं थे इससे उन्हें शांति मिली। निगाह मिलते ही कंकू हंस पड़ी।

"पिछवारा गिर गवा नरसंग काका।"

"तो ईमां दाँत काहे निकारत है?" चेहर ने बड़प्पन दिखाया।

"चलौ. जस भगवान कै इच्छा। बुढऊ कहिन रहा कि अलतने पिछवारे मां ईंट-चूना कराय दे। ओसारे के साथे होय गवा होत तो टीक रहा। मुला नये घर के बाद कुछ याद नाहीं आवा।"

देवू आया। गिरी हुई पिछवारे की दीवाल को देखकर उसकी भी वही प्रतिक्रिया हुई जो कंकू की थी।

"पतोहू कहत रहीं कि अम्मा चलौ बाँधो सामान, नये घर मां चलौ। अब काहे सबरी इहां पड़े हो?" कंकू ने कहा, पतोहू कै मान लिया होता तो..."

देवू ने इस बात की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया।

"बापू, क्या करना है? खंभे बनवाकर दीवार खड़ी कर दें। मोती कुम्हार के भट्ठे में ईंटें तो होंगी ही।"

"किन्तु लायेंगे कैसे? नाले में तो घुटने तक पानी भरा होगा। चलो घर सामान हटाय लेव।"

"चलौ।" घेमर भी अन्दर आ चुका था "दिन भी आज ठीक है।"

"भगवान क अच्छा लाग वही दिन ठीक है। अब ई खुले मां तौ न पड़ा रहा जाये।" नरसंग ने कहा, "ऊपर वाला जौन तय करे वही सही महूरत। आज से बनाखब-खाब सब वहीं राखो।"

"मैं जाकर पाँच-सात आदमियों को बुला लाऊँ।" देवू ने बाहर आते हुए कहा।

"ठीक है।" नरसंग ने कंकू की ओर देखा—

"तुम पहले घर मां जाय कै दिया-बत्ती करौ।"

देवू गाँव की ओर जा ही रहा था कि आँखों को मलते हुए उमा और दातून चबाते हुए चेला ने कहा कि हम लोग ही कहाँ कम हैं जो बाहर से आदमी बुलवा रहे हो। अभी देखते ही सारा सामान इधर से उधर करवा लेंगे। नरसंग ने देवू को वापस बुलवा लिया। और सचमुच देखते ही देखते सारा सामान नये घर पहुँचा दिया गया।

जिस घर में पूरी उम्र बीत गयी उसी घर को यों ही अचानक छोड़ना पड़ा। पुराने घर की अपेक्षा नये दोनों घरों में तीन गुना जगह अधिक थी। ओसारे के खंभों और खिड़की के बीच दोनों तरफ के ढालों के अतिरिक्त भी काफी कुछ

खुला हुआ था । फिर भी दरवाजे पर पाँव धरते ही कंकू को वर्षों का साथी मुक्त आँगन याद आ गया । सभी लड़के वहाँ खेलकूद कर बड़े हुए थे । लवजी जब चलने-फिरने लगा तो मिट्टी खाना सीख गया था । एक बार उसने हाथ से एक ढेला छीन लिया था तो वह कितनी देर तक रोता रहा था । अन्त में हारकर उसे एक ढेला देना ही पड़ा था । बड़ी देर तक उस मिट्टी को मुट्ठी में दबाये वह बैठा रहा था ।

नये घर को बड़े शौक से बनवाया था किन्तु कभी कल्पना भी नहीं की थी कि पुराना घर छोड़कर यहाँ इस तरह रहने आना पड़ेगा ।

"अस कीन जाय तौ ।" भैंस दुह रही कंकू के पास जाकर नरसंग ने कहा, "घी होय तो लापसी बनाय के मुहल्ले क खवाय दीन जाय ।"

"जरूर, जरूर । जौन कम पड़े तौन लावा जाये । तीन चार शेर तो घरे होये । भैया से पूछ लेव । का कहत हैं ।"

कोई भी निर्णय लेते समय नरसंग देवू को निश्चित ही भूल जाते थे जब कि कंकू को अचूक देवू की याद आती ।

देवू को लगा कि लापसी तो ठीक है किन्तु खिलायें तो सभी कुछ खिलायें । आज वह सब असभव है । दो-तीन दिन बाद रखेंगे । गृह-पूजन ही कर डालते हैं । लवजी को भी कागज लिखकर बुला लेते हैं । सिर्फ मुहल्ले भर को खिलाने से थोड़े ही काम चलेगा । गाँव में से भी चार-छः लोगों को आमंत्रित करना पड़ेगा । मोहन काका और जीवन तो सामान ढोने में भी थे ।

कंकू को देवू का विचार शत-प्रतिशत जँचा । हेती भी भतीजों को लेकर आ जायेगी । मामा भी खबर मिलते ही आ जायेंगे । हीरा बहू भी यहाँ हो तो अच्छा । उसके जैसी काम करने वाली भी कोई नहीं है ।

नरसंग ब्राह्मण से कहने गये कि सीधा ले जायें । गटा पुरोहित की मृत्यु के बाद हरिहर महाराज ने यह जिम्मेदारी स्वीकार कर ली थी । पहले वे सावन में ही कभीकभार आते थे, अब हमेशा आने लगे हैं । बड़ा भारी परिवार था किन्तु गाँव में अकेले रहते थे । देवू के अनुसार हरिहर महाराज की संस्कृत गटा पुरोहित की संस्कृत से अच्छी थी । यद्यपि वे अपने लगभग सभी काम गुजराती में ही करते थे । बिना पूछे मुहूर्त निकालकर वे नरसंग के पीछे ही पीछे आ पहुँचे । वे एक दो दिन के भीतर ही छाता खरीदना चाहते थे । रणछोड़ ने वादा किया था कि मैं अपना छाता भेंट दे दूँगा । किन्तु बार-बार माँगा तो नहीं जा सकता ।

घर की प्रसंशा करके, सीधा लेकर, दक्षिणा में लवजी का छाता लेकर वे विदा हुए । देवू ने वह छाता खोलकर दिया । फुहार पड़ने लगी थी । वह स्वयं बिना छाते के परती में पशु छोड़ने गया ।

दोपहर में फिर एक झोंका आया ।

मुंडेर पर रखा हुआ टिन टपक रहा था । नरसंग का ध्यान उधर गया ।

पिताजी क्या देख रहे हैं ? ऊपर देखा । खाना खाने के बाद देखेंगे । ऊपर चढ़-कर ही देखना पड़ेगा ।

टपकता हुआ छिद्र तो वह नहीं बन्द कर सका लेकिन मुंडेर पर चढ़ना व्यर्थ नहीं गया था । वहाँ से सारा गाँव दिखाई पड़ रहा था । तीन दिनों की लगातार वर्षा के बाद शाम के समय का उजाला गाँव के एक-एक घर की छत पर चमक रहा था । खपरैल वाली छतों पर नजर उलझ जाती थी और टिन वाली सफेद छतों पर से नजर फिसल जाती थी । गाँव के बीच माना के घर का टिन बिल्कुल कत्थई रंग की ओढ़नी जैसा दिखाई पड़ रहा था । बस्ती और मुहल्ले के बीच की गलियाँ हस्तरेखाओं जैसी दिखाई दे रही थीं । आदमी तो दिखाई ही नहीं पड़ते थे । गाँव था और उसके चारों ओर हरियाली थी । हरा-सजीव रंग, जैसे धरती आकाश की ओर सीना ताने खड़ी हो । सड़े हुए तने और खोह वाले वृक्ष, जो पतझर में दयनीय से दीखते थे आज ऐसे लग रहे थे जैसे अपने नीचे ऊगी हुई हरी-हरी घासों को उद्वेलित कर रहे हों । पिछले वर्षों से निरंतर कम होते जा रहे महुए के वृक्ष आसपास के संतोष और आनंद में कुछ घमंडी से दिखाई पड़ रहे थे । उनकी तनी हुई डालियों की पत्तियाँ हिल भी रही हों तो दिखाई नहीं देती थीं । आम के वृक्ष ऐसे दिखाई पड़ रहे थे जैसे लट्टू । किन्तु बबूल इतने सुख में भी दुखी और तुच्छ दिखाई पड़ रहे थे । घेमर के खेत के पास वाली जामुन नहीं दिखी थी । गाँव के चौक में खड़ा वृक्ष अपनी ओट में आधे गाँव को ढंके हुए था । यदि एक बित्ता और ऊँचे उठा जाय तो भगतबाड़ा दिखाई देने लगेगा । लवजी ने एक बार कहा था कि टिन के खंभे पर खड़े होकर मैंने तुमको चरसा हाँकते हुए देखा था । वह शायद खंभे पर खड़ा हो गया होगा ।

"भैया, छत पर हो ?"

"नहीं माँ, टिन पर । इस समय यहाँ से चारों ओर देखना बहुत अच्छा लगता है ।"

कंकू ने महसूस किया कि देवू पाँच वर्ष छोटा हो गया है, अपनी असली उम्र से । उसका रोम-रोम मुस्करा उठा । लड़के को काम पर जल्दी लगा दिया है । यह विचार आते ही वह गंभीर हो गयी और काम छोड़कर, हाथ में सुँघनी का डिब्बा लेकर ओसारे के खंभे के सहारे आ बैठी ।

बरगद की दायीं ओर स्थित महादेव के मंदिर की ध्वजा उड़ने लगी थी । माँ की आवाज सुनाई दी. "भैया लवजी क चिट्ठी न लिखवो ?"

देवू तुरंत नीचे आ गया ।

लवजी को लिखकर रखी हुई चिट्ठी दो दिन हुए, डाली नहीं गयी थी । इतने में घेमर की आवाज आयी–

"देवू भैया, ओ देवू भैया ।"

"ईका देखो तो, रास्ता से आवाज देत है ।" चाय पीते हुए देवू की ओर देखकर कंकू ने कहा ।

कंकू ने उठकर एक कप चाय घेमर को दी। उसने ना-ना करते हुए चाय ली और प्रसंशा करते-करते पी ली।

"चलौ देवू भाई, तैयार होय जाव, सारंग जाय क है।"

"कोई काम है क्या ?"

"तौ काम के बिना हम तुमका बलावे आइन है ? हमरे घर मां तुहार भौजी उपास करिन है। उनकी ताई नुक्टी लावे क है, बढ़िया से बढ़िया। बूढ़ा ने एक रुपया निकार के दिया है। उनका बिचारी क ई मालूम है कि हमरे पैसा नाहीं है। मुला हम उनका कैसे समझाई कि पढ़-लिख लीन फिर भी अपने लगे पैसा न रखी तो पढ़ाई कस काम कै ? चलो उठो, मेला जाय आयी साथे-साथे।"

"मैं अब मेले में नहीं जाता। और गाँव में भजन-सप्ताह चल रहा हो ऐसे में हम मेले में चले जायें ?"

"ऊहाँ कोई मिले तो कहा जाये, चलो सोमपुरा, भजन सप्ताह चालू है और तुम न आऊ तो चले ? झूठ कहित है कंकू माँ ?"

"ई का तमाशा है ?"

"तुमका ई तमाशा अच्चा न लागत होय तो देवू भाई क हमरे साथे भेजत काहे नाहीं ? तुमका शाति और हमका साथ।" घेमर उठ खड़ा हुआ।

देवू पहले तो इस प्रकार चलता रहा जैसे मजबूरी में चल रहा हो किन्तु फिर यह सोचकर कि संभवतः ईजू आये और मुलाकात हो जाये, उसकी गति में स्फूर्ति आ गयी।

दिन साफ था। मेले में काफी भीड़ थी। पभा मुखी के महाभोज से भी लगभग तीन गुना अधिक भीड़ थी। छोटे-छोटे बच्चों की किलकारी, उनकी जिद और कुछ न कुछ खरीदने के लिए बड़ों से माँग - उसका ध्यान खींच रही थी। उसने लेटर बोक्स में लवजी का पत्र डाला और मेले में खो गया।

ढेखाडिया से भजन मंडली नाचती-कूदती सामने से आ रही थी। छाते के एक-एक तार में बंधे हुए रंग-बिरंगे रूमाल उड़ रहे थे। एक साथ दो आवाजे आयीं। सब को राम राम करके घेमर ने गरबी गानी शुरू की। पहले तो वह गाता रहा फिर सुध-बुध खोकर नाचने लगा।

रणछोड़ ने उसे दूर से देखा और हिकारत भरे शब्दों में कहा-"यह घेमर जरा भी मर्यादा में रहना है ? तुच्छ लोगों के बीच जाकर नाचने लगा।" उसकी बात सुनने वालों में अनरी भी थी।

देवू भीड़ के धक्के से आगे खिसक गया। पहले दो प्रकार के हिंडोले देखने को मिलते थे : एक छोटा जो नीचे गोल-गोल घूमता था और दूसरा जो ऊपर-नीचे घूमता था। आज तो तीन-तीन बड़े हिंडोले। और एक साथ ही सत्तर वर्ण के लोग। सचमुच आज मेला था।

"मामा। ओ मामा।"

आवाज अपरिचित न थी । संभवत: वालजी था । पीछे मुड़कर देखा तो रंग-बिरंगे वस्त्रों सजी युवतियों का एक झुण्ड था । उसमें कोई बच्चा नहीं दिखाई दे रहा था ।

"मामा । देवू मामा ।"

आवाज उधर से ही आ रही थी ।

वे सभी युवतियाँ गोकुलिया की ही थीं । उनमें सबसे आगे जरा तिरछी खड़ी युवती ईजू थी । वालजी पुकारकर पीछे छिप जाता था ।

ध्यान से देखने पर सभी स्त्रियों की आँखों में जैसे संबंधों के परिचित पंखी हँसते हुए नजर आये ।

ईजू के चेहरे पर शर्म का साम्राज्य था ।

वालजी का हाथ पकड़ने के लिए देवू को बिल्कुल ईजू के नजदीक तक जाना पड़ा । वह परिचित काया पलभर में तो सुगंधित वृक्ष में परिवर्तित हो गयी । उसने वालजी को पकड़कर हँसाया, उछाला और पकड़ लिया ।

भानजे के लिए मिठाई ले आया ।

ईजू की ओर मुंह करके पूछा-"आप कुछ लेंगी ?"

ईजू ने हाथ फैलाकर छिपा लिया । बस । लेन-देन पूरा हो गया । अंत में उसने वालजी को पाँच रुपये पकड़ा दिये । सहेलियों से ईजू अलग न पड़ जाये यह सोचकर देवू ने उससे आँखों ही आँखों में विदा ली ।

घेमर हिंडोले तक तो भजन मंडली के साथ ही गया । फिर देवू ने उसे बुला लिया । रणछोड़ एक होटल में बैठा बैठा एक-एक के नोट गिन रहा था ।

हलवाई की दूकान से हीराभाभी के लिए देवू ने नुक्ती बंधवा ली, माँ और बापूजी के लिए बरफी ली । कतरी ली । फिर अच्छे अच्छे केले लिए ।

मेला खत्म हो इसके पूर्व ही वह घर की राह पर चल पड़ा ।

"मुझे तुम्हारा उपकार मानना चाहिए घेमर भाई, मेरा तो सचमुच का मेला हो गया ।"

"तो फिर हमरे साथ आऊ तो तुमका धक्का न पड़े ।"

"वालजी ने मुझे बुलाया । नहीं तो वह तो छिपी ही रहती ।"

"उसकी कोई सहेली बलावत । सब जानत हैं । आदमी मेला मां काहे आवत हैं । जब तक औरत घर मां न रहे तब तक मेला मंदिर अस लागत है-गलत कहित हैं ।"

"बिल्कुल सही । एक पल के लिए आँख मिली थी उसमें तो न जाने कितनी बात हो गयी थी । जैसे एकांत में मुलाकात हुई हो ।"

"घर गिर गवा है और सब लोग नये घर मां रहे गयें, बतायेव कि नाहीं ?"

"भूल गया । हेती को संदेश देना भी भूल गया । माँ पूछेगी तो क्या जवाब दूँगा ?"

"पूछेंगी ही नहीं। तुहरे मस पढ़ालिखा समझदार लड़का स्त्री के मुँह देखे मेला जात है भला ? तुम तो लवजी के चिठ्ठी डिब्बे मां डारे गयौ रहा। ठीक है न ?"

घेमर भले ही कितना भी मजाक करे, ईजू से मिलने का आनन्द तो था ही। रात्रि में कृष्णजन्म तक एक तरफ पुरुषों के कंठ से भजनकीर्तन और दूसरी ओर गाँव की कुँआरी लड़कियों के कंठों से गीत–गरबा सुनना इतना आनंददायक पहले उसे कभी नहां लगा था।

28

घर पर भजन–कीर्तन रखा गया था। यह पूर्वनिश्चित न था। वर्ष के प्रथम दिन लवजी देवू के साथ महादेव के मंदिर में गया था। उसने सोचा था कि भजन–मंडली के समस्त सदस्यों के अतिरिक्त भी कुछ लोग आयेंगे। सबसे मुलाकात होगी। नयी–नयी बातें होंगी। भजन–कीर्तन तो होगा ही, रास भी खेला जायेगा। मजा आयेगा। वह थोड़ी देर बैठा रहा फिर उसने देवू से पूछा–

"सब बहुत देर से आते हैं क्या ?"

"नहीं, बहुत कम लोग आते हैं। आजकल ऐसा ही चल रहा है। पिताजी ने जब से मंडली छोड़ी है, आने वालों की संख्या घट गई।"

लवजी को याद आया। गृह–पूजन के दिन रात को नरसंग ने खड़े होकर हाथ जोड़कर कहा था]– आदमी को उम्र के साथ साथ सबकुछ त्याग देना चाहिए। मंडली में विशिष्ट पद धारण करना, सिर पर रखे बोझ की तरह है। अब तो माला और राम बस। गाना-बजाना सब बंद। मन में रमे रहना है। भक्ति तो अकेले आदमी का खेल है। और उस दिन से उन्होंने भजन–मंडली से मुक्ति ले ली थी।

सबके बहुत आग्रह पर नरसंग ने इतना ही कहा था – अब तुम लोगों के बीच एक बड़ी उम्र का आदमी रहे यह अच्छी बात है ? तुम लोग हँस·बोल भी नहीं सकते। और हमारे घर से देवू तो है ही।

उस रात को लवजी ने महसूस किया था कि त्याग कितनी बड़ी बात है। [illegible] आज लग रहा था कि यदि पिताजी ने मंडली से मुक्ति न ले ली होती तो [illegible]

[illegible] सधता जा रहा था। वीरा ने कहा।

[illegible] आ पहुँचे – हम तुम्हारे घर गये थे। देवू

[illegible] भी चलने चलने को थे। चार जन जब उठ

[illegible] मेरे घर कीर्तन है। सभी को आना है।

[illegible] देवू, लवजी, माधव और नारण।

लवजी ने पूछा –

'नारण, तुम्हारे विद्यार्थियों की पाठ्य-पुस्तक में वजन और माप की मैट्रिक पद्धति प्रारंभ हुई कि नहीं ?"

"अभी तो पुरानी पद्धति ही चलती है। वैसे भी यह तो अभी ही प्रारंभ हुई है न ?"

"एक वर्ष से अधिक हुआ।" देवू ने कहा।

बाद में जो बातें हुईं उनमें, कांग्रेस की अध्यक्षा इन्दिरा गाँधी बहुत सुन्दर हैं, भारत के मेहमान बने दलाई लामा एक दिन मुसीबत बनेंगे, नम्बुद्रीपाद की साम्यवादी सरकार को राष्ट्रपति ने पदभ्रष्ट किया यह अच्छा ही हुआ और राजाजी ने अब बुढ़ापे में भी स्वतन्त्र पार्टी की रचना की, क्या आवश्यकता थी ? आदि बातें हुईं। लवजी ने कहा कि राजाजी बहुत बुद्धिमान हैं। देवू ने कहा कि बुद्धिमान आदमियों के सारे काम हमेशा योग्य ही नहीं होते। और देश में साम्यवाद आ जायेगा यह बात भी निर्मूल है। देखो न, केरल में क्या हुआ ? जो हुआ अच्छा हुआ – लवजी ने कहा। थोड़ी देर बाद उसने पूछा – अन्य प्रान्तों में भी यदि साम्यवादी सरकार की रचना हो जाये तो क्या राष्ट्रपति सब कहीं सरकार को सत्ताच्युत कर सकते हैं ? हाँ, यदि राजाजी राष्ट्रपति हों तो।

भाड़ में जायें सब, चलो अब चलें। – नारण बोला। माधव भी उठ खड़ा हुआ। घर में कीर्तन रखने वाली बात लवजी ने दुहरायी। नारण और माधव ने यह उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया। सभी भजनिकों को वे सूचित कर देंगे। देवू थोड़ी देर पुस्तकालय के पास खड़ा रहा। फिर खेत चला। लवजी घर चला गया।

कीर्तन में आनन्द नहीं आया। सबसे मिलने के अतिरिक्त लवजी ने एक बात और भी सोची थी। तरह-तरह के भजनों की धुन सुने। मन में बैठ जायें तो भविष्य में उन्हीं धुनों पर गीत लिखे जा सकें। किन्तु जो नये भजन सुनकर तो वह चौंक पड़ा – क्या होने वाला है भला ? "तन डोले, मेरा मन डोले, मेरे दिल का गया करार रे, अब कौन बजाये बाँसुरिया ?" इसी धुन पर अहमदाबाद के एक प्रसिद्ध भगत ने गीत लिखा था – आज वही गीत भजन-मंडली में गाया जा रहा था। लवजी उठ खड़ा हुआ था। पेशाब करने दरवाजे के बाहर गया और भजन पूरा होने तक वह बाहर ही खड़ा रहा।

कोई आता हुआ दिखाई पड़ा। पिताजी ही हैं, चाल पर से ही पता चल गया। नरसंग पास में आये तो उसने फिल्मी धुन पर गाये जा रहे भजन के लिए उनसे शिकायत की। "जो सबको अच्छा लगे, वही अच्छा" कहते हुए नरसंग ने अन्दर पाँव रखा। भजन पूरा हो गया था। नरसंग ने राम-राम किया। सभी ने आदर और उत्साह से उनका स्वागत किया।

"आज तो नरसंग काका गरबी गायेंगे" वीरा ने कहा।

"पहले तो ये तबला भी बजाते थे और गरबी भी गाते थे ।" जीवन ने कहा।

नरसंग को याद आया – बुढऊ कभी-कभी इस प्रकार की महफिल में "हरि बिना सुबह न होय रे, ऊधवजी," वाला भजन गाने के लिए कहते थे । वे स्वयं भी आज मंडली में एक आगंतुक थे । जैसे भजन सुनने ही आये हों । उन्होंने अपनी इच्छा व्यक्त की । मोहन ने महसूस किया कि नरसंग की आवाज में पिथू-भगत की आवाज भी मिल गई है । वही उत्साह, वही ताल ।

देवू भी सोचने लगा । जिसे सबसे अच्छा गाना-बजाना आता है वह भला क्यों दूसरा को सुनना चाहता है ? आनंद का साझेदार बनने के बजाय उसका साक्षी बनना क्यों अच्छा लगा ? या आनन्द का प्रकार बदल गया है ?

पुराने भजन सुनकर लवजी की ऊब दूर हो गयी । बढ़ती जा रही ठंड में गाँव की शांति घुल गयी थी ।

प्रसाद बाँटा गया । साखियाँ कही जाने लगीं । लवजी ने भी कबीरदास के दो दोहे कहे । प्रसाद खा लेने के बाद घेमर ने अर्थ पूछा । पहला दोहा तो देवू को भी आता था ।

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा पडित हुआ न कोय,
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।"

विद्वत्ता की अपेक्षा प्रेम अधिक श्रेयस्कर होता है । नरसंग ने भी देवू की मदद की – जो प्रेम में हो राजी, उनका क्या करे पंडित काजी ? फिर उन्होंने कृष्ण और विदुरजी के संबंध का उदाहरण दिया । दूसरा दोहा देवू के लिए भी अपरिचित था। लवजी ने पुनः कहा –

"कबिरा खड़ा बजार में, लिये लुकाठी हाथ,
जो घर फूँके आपना, चले हमारे साथ ।

"लुकाठी अर्थात सुलगती हुई लकड़ी, मशाल । कबीरदास ऐसा ही एक मशाल हाथ में लिए हुए बाजार में खड़े हैं और अपने साथ चलने की शर्त कहते हैं । है कोई माई का लाल जो अपना घर फूँक सके ? यदि कोई हो तो मेरे साथ चले । जलाने का साधन तो वे अपने साथ ही ले आये थे । संत थे न, फिर इतना उपकार भी न करें ?"

देवू सोचने लगा । लवजी कबीरदास की प्रसंशा कर रहा है या मजाक ? उसे ऐसा बोलना क्यों अच्छा लगता है ? माँ एक दिन कह रही थीं :

पिथूबाबा को कोई चीज पसंद न आयी हो तो वे उसकी ऊटपटांग प्रशंसा करने लगते थे । हम चूँ भी न कर सकें । पिताजी जानते हैं, लवजी को पिथूबाबा का उत्तराधिकार मिला है कि यह उसकी अपनी विशिष्टता है ।

नरसंग घर में आग लगा देने वाली बात अपनी भाषा में समझा रहे थे । घर को आग लगाने का अर्थ है माया को आग लगाना । कुछ भजनों में घर का मतलब देह होता है । वैसा ही यहाँ भी है । समझने की बात यह है कि कर्म तो

करना है, कर्म के प्रति मोह त्यागना है । कर्म आदमी को बन्धन में नहीं रखता, बन्धन में मोह–माया–ममता रखती है ।

लवजी के मन में प्रश्न उठा – पिताजी को ईशोपनिषद का ज्ञान कहाँ से मिला ? कहीं से सुना होगा । हाँ, पांडुरंग शास्त्री कभी-कभी सारंग में प्रवचन देने आते हैं । कितनी भी कठिन भाषा हो, पिताजी समझ लेते हैं ।

"पिताजी, आपने पढ़ाई की होती तो जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य से अधिक विद्वान होते । वे अभी भी अस्पृश्यता तथा ऊँचनीच का भेदभाव मानते हैं जबकि आप इस सबसे मुक्त हो चुके हैं ।"

नरसंग कुछ नहीं बोले । अभी भी वे हरिजनों से तो अलग ही रहते हैं । काशी के मन्दिर में हरिजनों को प्रवेश मिल गया होगा किन्तु सोमपुरा के मन्दिर में तो अभी भी हरिजन नहीं झाँक सकते । संभवतः कोई झाँकना चाहता भी नहीं । या किसी को अपने अधिकार की चिन्ता भी नहीं है ।

"क्यो भाई, अब पिताजी का मज़ाक उड़ाने लगे ?" देवू ने मंजीरे को एक ओर रखते हुए कहा ।

"मज़ाक कर करके तो इतना बड़ा हुआ है ।" चौखट के भीतर से कंकू ने कहा ।

"मुझे पिताजी के प्रति जितना सम्मान है उतना वेटीकन के पोप के प्रति भी नहीं है ।" देवू लवजी की आदत समझ गया था । पिता के प्रति सम्मान वाली बात तो गौण थी जबकि वेटीकन के पोप के प्रति नकारात्मक उद्गार प्रमुख था ।

"वेटीकन के बारे में क्या बोले ?" नारण ने जिज्ञासा दिखाई ।

"वेटीकन, इटली का एक प्रमुख नगर । जहाँ सिर्फ़ पोप की ही सत्ता है । आप कह सकते हैं कि मात्र एक हजार की जनसंख्या वाला वह शहर एक छोटा सा देश है ।" इसके बाद लवजी ने घेमर को समझाया कि पोप का क्या अर्थ होता है ?

विभिन्न धर्मों की, चमत्कारों की तथा मनुष्य के भाग्य के बारे में बातें होने लगीं । तीन महीने पहले ही पभा मुखिया का बड़ा लड़का खेत से वापस आ रहा था । रास्ते में बेहोश होकर गिर पड़ा । उसके बाद अहमदाबाद के दवाखाने में उसका देहांत हो गया । उसके बारे में बात होती रही । स्वस्थ था । मुश्किल से पचास वर्ष का रहा होगा । एकदम ठंडे स्वभाव का । दो बार पुकारने पर एक बार बोले इतना तो विनम्र । छोटे बच्चों को सम्मान से बुलाता था । पभा मुखिया कह–कहकर थक गये फिर भी मुखियागीरी नहीं स्वीकार की । जीप में जब उसकी लाश लेकर रमणलाल वापस आये तो कोई यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि वह मर गया है । शव–यात्रा में सारा गाँव रो रहा था ।

नरसंग ने बताया कि जिस व्यक्ति में कोई दोष नहीं होता और जो सभी को प्रिय होता है ऐसा व्यक्ति अधिक जीवित नहीं रहता । देवता लोग ऐसे बत्तीसों

लक्षण वाले आदमी को जल्दी ऊपर बुला लेते हैं। और यदि जीवित रह जाते हैं तो पूरी मानवजाति की ही परीक्षा हो जाती है। हम महात्मा गाँधी को सँभाल न सके। देवू ने सुकरात का उदाहरण दिया। लवजी ने उन वैज्ञानिकों की बात की जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में नवीन खोज की थी, उन्हें सच की खोज के बदले सजा भुगतनी पड़ी।

"तू यह खूब पढ़ता रहता है!" देवू खुश होता हुआ बोला।

"पढ़ने से क्या होता है?" सब की ओर देखते हुए लवजी ने कबीरदास का दोहा फिर से कहा – "पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, हुआ न हीरूभाई कोई।" उसने जम्हाई लेते हुए कहा – कॉलेज खुलने के पूर्व ही "प्रजाभारती" की एक मुलाकात लेनी है।

नरसंग के मन में एक बात घुमड़ रही थी। यहाँ बतायें कि नहीं? कभी-कभी ऐसा लगता है कि माला फिराते–फिराते मन के भीतर तक जीव चला जाता है और आँखें बन्द हो जाती हैं, फिर कुछ दिखायी देने लगता है, जो कहीं भी नहीं होता, किन्तु बाद में घटित होता है। इस बारे में उन्होंने किसी से कुछ बताया नहीं। यहाँ कहें तो मन हलका न हो जाये? किन्तु एक बार बता देने के बाद सब पूछने नहीं लगेंगे? संभव है यह सब संयोग हो।

अच्छा हुआ किसी से बात नहीं की। यह तो माया है। इतनी भक्ति अपूर्ण है। नहीं तो भगवान के तेज के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही क्यों दे?

29

"फिर क्या हुआ देवू भाई? सहकारी मंडली वाली बात कहाँ तक पहुँची? माधव छुट्टी मंजूर कराये बिना ही एक दिन के लिए गाँव में रह गया था। उसे दूसरे गाँव की नौकरी नापसंद थी। दस–पन्द्रह रुपये कम मिले किन्तु नौकरी यदि अपने गाँव में होती है तो खेती की ओर भी ध्यान दिया जा सकता है। मोहन का स्वास्थ्य आजकल ठीक नहीं रहता। देवू ने ही दो मास पूर्व माधव से कहा था – सहकारी मंडली प्रारंभ हो तो तुझे मंत्री बनाया जा सकता है – माधव मंत्री।

स्थानांतरण के लिए माधव हीरूभाई से भी मिल चुका था। नारण तो पहले से ही गाँव में नियुक्ति पा गया था। दोनों को गाँव में ही नौकरी मिले इससे तो शिक्षाविभाग को कोई आपत्ति न थी, किन्तु यदि सभी नये शिक्षक एक ही स्कूल में रख लिए जायें तो शिक्षा का पतन हो जाये। प्रत्येक स्कूल में एकाध अनुभवी शिक्षक तो चाहिए ही। और उसकी बदली गाँव के स्कूल में नहीं हो सकी थी।

किन्तु एक दिन शाम को देवू ने माधव से सहकारी मंडली के बारे में बात की थी। मंडली किसे कहते हैं, और उसमें क्या–क्या करना होता है इस बारे में माधव को कोई ज्ञान न था। किन्तु उसके मन में उस दिन आशा की एक किरण पैदा हुई थी – गाँव में ही व्यवस्था हो जायेगी।

आज उसने स्वयं अपनी ओर से पूछा। अभी मंडली का रजिस्ट्रेशन भी नहीं हुआ है यह जानकर उसे बहुत दुख हुआ। देवू ने बताया कि दस-दस रुपये वाले सत्तरह-अट्ठारह शेयर गाँव वालों ने खरीदे थे किन्तु सारी रकम और भरे हुए फार्म अभी तक रणछोड़ के पास ही पड़े हुए हैं। उसने स्वयं ही कहा था– रजिस्ट्रेशन कराना मैं जानता हूँ। मैं सब कर लूँगा। अब अहमदाबाद तो वापस जाना नहीं है, जितनी हो सके गाँव की ही सेवा करनी है।

"इससे अच्छा और क्या है ?" माना ने समर्थन किया था। जेठा आदि की तो इच्छा यही थी कि देवू ही सब कुछ संभाले किन्तु सबकी उपस्थिति में अपने ही भतीजे के खिलाफ कैसे बोले ? और अब तो सब कहने लगे हैं कि रणछोड़ लाइन पर आ गया है।

रणछोड़ से किसी ने नहीं पूछा। देवू ने सोचा था अपनी मर्जी से ही उसे बताने दे। सौंफ की फसल कटने लगी थी और रणछोड़ अपने व्यवसाय में लग गया था। मंडली के पंजीकरण का कार्य अधर में ही लटका रहा।

"रणछोड़ को बुला लाऊँ ?" माधव ने उत्साह से पूछा।

"क्या जरूरत है ? कह देगा कि अभी आ रहा हूँ। फिर हम लोग दिन भर उसका इंतजार करते बैठे-बैठे, और वह भूल जायेगा। इससे अच्छा है कि एक दिन तुम दोनों जाकर काम करके आ जाओ।"

"कहाँ जाना है ? विजापुर या महेमाना ?"

"रणछोड़ जानता है, सब कुछ।"

"अपने बाप का सिर जानता है।"

"इस तरह का काम कैसे किया जाता है, वह अच्छी तरह से जानता है।"

"इसलिए घर में पैसे रख रखे हैं।"

"सौ-दो सौ ? उसके कोई कमी नहीं।"

"जिसके कमी नहीं आती वही लालची होता है।"

"रणछोड़ लालची तो नहीं ही है।"

"किन्तु उड़ाऊ आदमी को गाँव का काम नहीं सौंपना चाहिए। आपको कर लेना चाहिए।"

"मैं गाँव के काम का एकाधिकार लेकर थोड़े ही जन्मा हूँ।"

"देवू भाई आप ऐसी बात करें यह अच्छा नहीं लगता। सेवा के क्षेत्र में भला एकाधिकार की कौन सी बात आ गयी ?"

"अपने देश में सेवा के क्षेत्र में भी एकाधिकार होता है, तुझे नहीं मालूम ?"

"इससे कौन इन्कार करता है ? किन्तु...अच्छा चलो रणछोड़ से सब वापस ले लेते हैं। रजिस्ट्रेशन मैं करवा लूँगा।"

"तू व्यर्थ में जल्दी कर रहा है। जो होना होगा, होगा। अधिकारी लोग

भी अपनी इच्छानुसार ही कार्य करेंगे । तू चिन्ता मत कर और कल से अपने काम पर जा । बिना छुट्टी लिए नौकरी पर अनुपस्थित रहना शोभा नहीं देता ।"

"सोमपुरा अब नहीं सुधरेगा । पहले तो..."

"क्या हमें पहले जैसा बन जाना चाहिए ? तुझे ऐसा लगता हो तो..."

"नहीं, किन्तु यदि सारा काम रणछोड़ के ऊपर छोड़ दोगे तो ऐसा ही होगा । और एक बार मामला हाथ से निकल गया तो गाँव वाले दुबारा पूछेंगे भी नहीं । मैं सच कहता हूँ देवू भाई, रणछोड़िया का बस चले तो वह अपने ही किसी आदमी को मंत्री भी बना दे । मुझे तो नहीं ही बनने दे, किसी भी हाल में नहीं बनने दे ।"

"तो तू कहाँ भूखा मरता है ? तेरे पास नौकरी तो है ही । बोल, है कि नाहीं ।"

"परंतु..."

"निजी स्वार्थों को केन्द्र में रखकर ग्राम-सेवा का विचार नहीं करना चाहिए ।"

माधव निराश हो गया । थोड़ी देर बाद वह चला गया । अब मंडली की स्थापना हो या न हो, मैं तो मंत्री नहीं ही बनूँगा ।

सुबह जल्दी उठकर नौकरी पर चले जाने का निर्णय लेकर वह लेट गया । किन्तु नींद नहीं आयी । दो-चार लोग पुस्तकालय के फर्श पर अवश्य बैठे होंगे । वह लघुशंका के बहाने उठा और पुस्तकालय तक जा पहुँचा । मन के किसी कोने में सहकारी मंडली का मंत्रीत्व अभी उसे प्रोत्साहित कर रहा था ।

नारण के अतिरिक्त भी तीन जने बैठे बीड़ी पी रहे थे ।

"अरे तू तो बीड़ी नहीं पीता था ।"

"उस मास्टर साले ने सिखा दिया ।"

"बीड़ी पीने के साथ ही साथ 'साला' कहना भी उसी ने सिखाया है क्या ?"

"तेरी कसम । मैं यदि शिक्षक नहीं बना होता तो इन दोनों कामों में से कुछ भी नहीं सीखा होता ।"

थोड़ी देर इधर-उधर की बात करने के बाद माधव ने पूछा—

"नारण, तुम्हारी सहकारी मंडली का काम कहाँ तक आगे बढ़ा ?"

"रणछोड़ की जेब तक ।"

शेष तीनों व्यक्ति हँसते हुए उठे और खेत की ओर चले गये । घेमर और वीरा आकर पास ही खड़े हो गये थे । सहकारी मंडली की संरचना का विरोध वीरा ने प्रारंभ में ही किया था ।

मंडली के रजिस्ट्रेशन का काम बीच में ही लटका हुआ है यह जानकर घेमर बहुत बड़बड़ाया । बोला—

"चलो उठो, देवू भाई से बात करें ।"

"उन्होंने मुझे धैर्य धारण करने के लिए कहा है ।" नारण ने उठते हुए कहा ।

नारण ने दूसरी बीड़ी सुलगायी । घेमर ने हाथ बढ़ाया । देनी पड़ी । एक लंबी फूँक मारते हुए, अपनी लाठी को जूते के साथ टकराते हुए उसने कहा–

"तो कौन जल्दी है ? मंडली न बने तो हम कहाँ भूखे मर जावा जाये ?"

"किन्तु कोई व्यक्ति पूरे गाँव का पैसा दबाकर बैठ जाये, यह कहीं चलता होगा ?" माधव ने धीरे से किन्तु दृढ़ आवाज में कहा ।

"यह तो अपने गाँव की रीति है ।" घेमर ने गंभीरतापूर्वक कहा । वीरा और नारण हँस पड़े ।

इतने में सामने मुहल्ले से रणछोड़ जैसा कोई युवक आता दिखाई पड़ा । वह लगभग दौड़ता हुआ आ रहा था । आज उसके कंधे पर हरे रंग की शाल न थी । कारण यह नहीं था कि शरद ऋतु खत्म हो गयी थी । बल्कि शाल छीन ली गयी थी ।

एक दिन वह सारंग से वापस आ रहा था तो रास्ते में नाथू की पत्नी अमथी से मुलाकात हो गयी थी । अमथी चंचल स्वभाव की थी और अपने वस्त्रों के प्रति हमेशा सचेत रहती थी । रास्ते में उन लोगों में बहुत सी बातें हुईं ।

"कबो घरे आवा करो तो, तुम तो रोज रात का खेत मां भी नाहीं जाते ।"

"टंडी में कौन जाये, मरने के लिए ।"

"तो चाय पीये तो आऊ ।"

अमथी का घर गाँव के किनारे पड़ता था । सास की मृत्यु के बाद वह अकेली रह गयी थी । नाथू अपने काम में काम रखता था । इधर–उधर के काम में उसका मन नहीं लगता था । गाँव में क्या चल रहा है, फलाँ वस्तु का क्या भाव है आदि चीजों से उसे कुछ लेनादेना नहीं था । यह सब अमथी का काम था । कभी–कभी वह सवेरे एकाध घंटे खेत पर से जल्दी आ जाता था और पत्नी के साथ सो जाता । बस । उसका फर्ज पूरा हो जाता ।

रात के भोजन के बाद जब सब लोग सो जाते तो रणछोड़ उधर घूमने निकलता था और अमथी के आँगन तक आ पहुँचता था । चिराग बुझ चुका होता तो अमथी फिर से जलाती और चूल्हे के पास दोनों बैठकर बड़ी देर तक बातें करते रहते । वर्षों पहले लाला के घर धमला की बैठक जितनी मशहूर हुई थी वैसी ही मशहूर अब रणछोड़–अमथी की बैठक हो गयी थी ।

आज अचानक खेत से तमाकू लेने नाथू वापस आ गया । अमथी और रणछोड़ बैठे बातों में मशगूल थे । पहले तो नाथू की इच्छा हुई कि रणछोड़ का गला घोंट दें । किन्तु अमथी से नजर मिलते ही उसका विचार बदल गया और उसके हाथ रणछोड़ के शाल को पकड़कर ही रह गये । रणछोड़ उठकर चुपचाप भागा । कहीं नाथू पीछे–पीछे तो नहीं आ रहा है ? अभी भी उसके मन में भय समाया हुआ था । पुस्तकालय के पास खड़े लोगों को देखकर वह भयभीत हो गया था, कहीं ये लोग उसे ही पकड़ने को तो नहीं खड़े हैं । किन्तु दूसरे ही क्षण उसका भय

दूर हो गया। उसकी गति कम हो गयी। अपने पाँवों पर खड़ा होता हुआ वह बोला: कौन है रे।

"हम ही हैं।" घेमर ने उत्तर दिया।

"ईधर कहाँ?" नारण ने पूछा।

"कहीं हिसाब चुकाने गये रहे होंगे।" माधव ने व्यंग्य से कहा।

रणछोड़ चुपचाप नारण के पास बैठ गया। उकड़ू होकर बीड़ी लाईटर निकाला। घेमर ने लाईटर को हाथ में लेकर उससे खेलते हुए कहा—अब कभी अहमदाबाद जाना तो मेरे लिए भी एक लेते आना। जो पैसा होगा दे दूँगा। रणछोड़ ने कहा कि यही लाईटर ले ले। घेमर को जल्दी न थी। पैसे का भी तो इन्तजाम करना था।

माधव ने धीरे से सहकारी मंडली वाली बात निकाली।

"साली फुरसतै नाहीं मिली।" रणछोड़ ने जैसे स्पष्टीकरण दिया हो।

"इस गाँव में यदि तुम्हें फुरसत नहीं मिलती तो फिर और किसी को क्या मिलेगी?"

रणछोड़ की समझ में माधव की टिप्पणी नहीं आयी। उसने शेयर की अमानत वापस कर देने की बात की।

"तुम्हें सारे गाँव ने पैसे की जिम्मेदारी दी है। माधव भला कैसे ले सकता है?" नारण की यह बात माधव को बुरी लगी। वह तिलमिला उठा।

"तो गाँव को क्या तेरा बाप इकट्ठा करेगा।" उसने कहा।

"अभी मेरा बाप भी जिन्दा है और तेरा भी।" नारण ने शांति से कहा। रणछोड़ के सिवाय सब हँस पड़े।

"बोल तू साथ में आयेगा? कल ही चलें।"

"कहाँ, मेहसाना?"

"मेहसाना या श्मशान, जहाँ चलना हो वहाँ।"

रणछोड़ ऐसा क्यों बोला यह बात किसी की समझ में नहीं आयी। मुड़-मुड़कर गली में क्यों देख रहा है, इसका कारण भी नहीं पता चला।

चौक की ओर से देवू आ रहा था। घेमर उसकी ओर घूम पड़ा।

"का हे देवूभाई? भगत का खाना दे आयेव?"

"खाना देकर वापस क्यों आता? अभी तो मुझे खुद खाना है।"

"अब ही? आधी रात बीत गयी।"

"कहाँ आधी रात हुई अभी? दस बजे होंगे।"

"किताब पढ़त रहेव?" घेमर ने पूछा और नारण–माधव हँस पड़े। देवू की पढ़ने की आदत छूट गयी थी।

"पंप की मशीन खोली थी। फिट करने में देर हो गयी थी।"

रणछोड़ उठ खड़ा हुआ। 'जरा रुकना' कहते हुए वह घर गया और शेयर–

अमानत की रकम लाकर देवू के हाथ में रख दी । देवू ने पैसा तो ले लिया किन्तु रजिस्ट्रेशन की जिम्मेदारी से उसे मुक्त नहीं किया । और चल पड़ा ।

"बहुत भूख लगी है क्या ?"

"भूख तो नहीं, किन्तु माँ चिन्ता कर रही होगी ।"

बात सही थी । कंकू ने दिया तो बुझा दिया था किन्तु सूघनी लिए बैठी देवू की ही राह देख रही थी । राह देखते और अपने भरे-पूरे परिवार का स्वप्न देखते हुए अतीत की दुनिया में खोई हुई थी ।

"काहे भैया देर किहो ? दिन निकरे वाला है ।"

"मैंने कहा तो था कि देर हो जायेगी ।"

"मुला अतनी देर ? कि ई मास्टरन के साथ पंचाइत करत रहे व ?" नारण और माधव पीछे पीछे आ पहुँचे थे ।

देवू ने दूध और खिचड़ी खाई ।

"चाय बनाई भैया माधव ?"

"ईजू भाभी होती तो हम चाय पीये बिना नहीं जाते । पर आप कहाँ अब चूल्हा जलाने का झंझट करेंगी ?"

"ईमा झंझट काहे कै ?"

"बनाओ - बनाओ माँ, पिताजी के लिए भी लेता जाऊंगा ।"

"तो अबहीं मेवान पर जायक है का ?"

"हाँ ।"

"मशीन ठीक होय गवा ?"

"पानी चालू करके ही घर को चला हूँ ।"

"देवूभाई का काम यानी ? अधबीच छोड़कर कभी उठे ही नहीं ।" नारण ने कहा ।

"सिर्फ पढ़ाई छोड़कर ।" माधव ने कहा ।

"मेहरबानी करके पढ़ाई की बात मत चलाया करो । देवू की आवाज में नाराजगी नहीं, वेदना थी । उसने जिस दिन सुना था कि पिताजी ने मन ही मन एक भजन लिखा है, उसने सोचा था कि वह स्वयं भी सरस्वती की उपासना करेगा । विश्व के श्रेष्ठ ग्रंथों का अध्ययन करेगा और लिखेगा । हाँ, अवश्य लिखेगा ।

क्या लिखना चाहता था वह ? आज तो उसे अपना स्वप्न भी ठीक से नहीं याद था । जैसे वह कोई दूसरा ही जीवन जिये जा रहा था ।

"देवूभाई, तुमने पढ़ा होता तो क्या बनते ?" नारण ने पूछा ।

"बड़ा वकील बनत ।" कंकू ने चाय छानते हुए कहा ।

"माँ, वकील का धंधा तो बेईमानी का होता है । जो झूठ को सच और सच को झूठ प्रमाणित कर सके वही बड़ा वकील होता है ।"

"अपने जिले में जितने भी वकील हैं, सब कांग्रेस के सक्रिय सदस्य हैं ।" माधव ने चाय पीते हुए कहा ।

"आज वकालत और राजनीति दोनों एक हो गये हैं। देश के दुर्भाग्य हैं और क्या!" देवू उठ खड़ा हुआ।

नारण और माधव भी अनिच्छा से उठ खड़े हुए।

माधव की इच्छा थी कि देवू के साथ-साथ जायें। किन्तु नारण ने उसका समर्थन नहीं किया।

देवू चला गया लेकिन वे दोनों खड़े बात करते रहे। बात का विषय था रणछोड़।

उस रात माधव को बड़ी देर तक नींद नहीं आयी। तरह-तरह के विचार आते रहे। गाँव की नौकरी। खेती में भी देखभाल की संभावना, पत्नी के साथ मौज मस्ती, दो जून का गरम-गरम भोजन और काम जितना संभव हो उतना।" "सेवा-भावी" युवकों के लिए सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि उन्हें अपने ही गाँव में काम मिल जाया करे।

अब तो एक मात्र देवू का ही आसरा था।

30

गाँव के पुस्तकालय के फर्श पर खड़े हीरूभाई गली की धूल में बैठे ग्राम-जनों को संबोधित कर रहे थे।

"सोमपुरा के जीवन में आज एक नया प्रकरण प्रारंभ हो रहा है। एक नये अध्याय की शुरूआत हो रही है। वह बात मात्र सोमपुरा के लिए ही नहीं, आस-पास के गाँवों के लिए भी गौरवपूर्ण है। जहाँ तक मुझे याद आ रहा है, आज तक प्रत्येक नये काम का प्रारंभ सोमपुरा से ही हुआ है।

सोमपुरा में ही सर्वप्रथम रात्रि – पहरे की व्यवस्था की गयी थी। गाँव के नौजवान बारी-बारी से टोलियों में जागते थे और पहरा देते थे। इससे चोरी की घटनाएँ लगभग खत्म हो गयी हैं।

दूसरा शुभ कार्य जो इसी गाँव से प्रारंभ हुआ था उसकी शुरूआत करने वाले थे पिथू भगत। इसके पहले रिवाज था कि मुखिया जो बात कह देता था वही अन्तिम होती थी। किसी में भी साहस नहीं होता था कि मुखिया के निर्णय का विरोध करे, भले ही वह निर्णय कितना ही गलत क्यों न हो। पिथू भगत ने यह साहस दिखाया था। चाहे किसी को भला लगे या बुरा वे सही बात डंके की चोट कहते थे।

तीसरी शुभ शुरूआत भी उन्हीं के घर से हुई थी। नरसंगजी ने भजन मंडली की स्थापना की थी।

चौथा कार्य भी इसी गाँव में, इसी घर से ही प्रारंभ हुआ था। जिसका परिणाम सबके समक्ष है। देवूभाई ने समाज-शिक्षण जैसा महत्त्वपूर्ण कार्य अपनी

छोटी सी उम्र में ही कर दिखाया है। इतने छोटे से गाँव में पुस्तकालय और छात्रालय का होना कोई मामूली बात नहीं है। इस बारे में मैं अधिक नहीं कहूँगा, आप लोग सब कुछ जानते हैं।

अब मैं आज की बात करूँगा। आज का कार्य इन महत्त्वपूर्ण कार्यों की पाँचवी सीढ़ी है। आप लोगों ने सहकारी मंडली की स्थापना की है और उसका उद्घाटन करने के लिए मुझे बुलाया है। जब मुझे इसका संदेश मिला तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। मैं और उद्घाटन करूं? उद्घाटन तो मंत्री लोग करते हैं, नेता करते हैं, मैं तो एक सेवक हूँ। सेवक होने का भी दावा नहीं कर सकता। खैर, मेरा मानना है कि प्रत्येक गाँव यदि इसी प्रकार स्वतत्र विकास करने लगे तो देश की प्रगति बड़ी जल्दी हो जाये। सहकारी प्रवृत्ति ऐसे कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह अनिवार्य वस्तुओं का विक्रय कर सकती है। खाद और अच्छे बीज ला सकती है और सदस्यों को लोन भी दे सकती है।"

हीरूभाई का भाषण चालू था। किन्तु श्रोताओं में कर्ज की बात सुनते ही गुपचुप प्रारंभ हो गई थी: कितना कर्ज मिल सकता है। कब? ब्याज देना पड़ेगा? छूट मिलेगी कि नहीं? आदि प्रश्न पूछे जाने लगे। हीरूभाई सहकारी मंडली के प्रति शुभकामनाएँ व्यक्त करके बैठ गये थे। रमणलाल भी बोले। माधव ने सबका आभार माना। उसके बाद रणछोड़ भी बोला। अंत में देवू और हीरूभाई ने राष्ट्र-गीत गाया।

सभा विसर्जित हो गयी। रणछोड़ ने देखा था सभा में अनरी और गोरी भी थीं। वह आकर पुस्तकालय के चौतरे पर बैठकर उनका इंतजार करने लगा।

सभा के बाद सब लोग देवू के घर गये। धमा वहाँ पहुँचा तो तीन खाटें भर चुकी थीं। हीरूभाई ने उसे आदर से बुलाकर अपने पास बैठा लिया।

"अब सहारे के बिना नाहीं बैठा जात, हीरूभाई। ससुर देखते-देखत मां बुढ़ापा आय गवा।" धमला ने सहारा लेकर बैठते हुए कहा।

"धमा काका अब अधिक न जीहैं।" घेमर ने हँसते हुए कहा।

"काल मरे क होय तौ आज मर जाई। मुला हमरे फूलजी क कुछ होस आवे तो..." धमा बोलते-बोलते अटक गया। थोड़ी देर के लिए वातावरण गंभीर हो गया था। रमणलाल और हीरूभाई ने पागलों के लिए बने गुजरात के सभी अस्पतालों की बात की। किन्तु फूलजी का मामला ही कुछ और था। उसके अच्छे होने की तो अब कोई उम्मीद ही न थी। धमा कहे तो फूलजी को हमेशा के लिए अस्पताल में छोड़ा जा सकता है। किन्तु नहीं, धमा इसके लिए तैयार न था। उसके अच्छे हो जाने की संभावना हो तो धमा फूलजी के साथ साल-दो साल भी अस्पातल में रहने के लिए तैयार था। लेकिन हमेशा के लिए उसे छोड़ दें? अभी तो वह मुश्किल से नौ वर्ष का है; उसे लावारिस छोड़ दें?

नरसंग ने दूसरी बात की।

"देख धमा, हम सब ऊके चिन्ता कर करके थक गये हन। लेकिन भगवान कसम हमका तौ कभौ फूलजी दुखी दिखाय नाहीं पड़ा। जैसे संत लोग मनमौजी रहत हैं वैसे वहू अपने आनंद मां मशगूल रहत है।"

"तुमहू कस मजाक करत हौ नरसंग काका ?" घेमर जोर से बोल पड़ा।

"तुमका मजाक लागत होये मुला हम जौन देखित है तौन कहत है। फूलजी के चिन्ता करो ठीक है। ऊका दुखी मानौ, यह ठीक है। पर हममां से केई लड़का के मन की बात जानत है ?" नरसंग शायद और भी बोलते किन्तु वालजी आकर उनके सीने से चिपककर बैठ गया था और वैसे ही सो गया था। कंकु चाय बना लायी। सब लोग पीते रहे और बातें करते रहे।

रमणलाल और हीरूभाई लेन-देन की बातें करने लगे थे। इस बात में किसी को शक न था कि सहकारी मंडली किसानों की अधिकांश समस्याओं का समाधान कर देगी।

"मगर बिना जरूरत के सब लेय लाग हैं तो ?"

-नरसंग का प्रश्न थोड़ी देर बाद औरों की समझ में आया। सही बात कहित है हीरूभाई, अगर मुँह मांगा कर्ज मिले लागे तो हम सब ही कर्जदार होय जावै।"

नरसंग ने अपने अनुभव की बात बताई : सारंग में दामोदर नामक बनिया था। अब तो उसने बंगले को छोड़कर सब बेच दिया है और बम्बई में कारखाना शुरू किया है, पहले इस विस्तार में उसका बड़ा नाम था। दो-तीन पीढ़ियों से इसके साथ लेन-देन था। पिथू भगत बड़े सावध थे, उन्हें धोखा देना मुश्किल था। वे चाहें तो घी के बर्तन में दाखिल होकर उसकी नली के चोंगे से बाहर निकल आयें। पर थे बड़े प्रमादी। किसी और का काम करने के लिए दस कोस दौड़कर पहुँच जाते। जबकि घर का काम जिम्मे आ जाने पर जम्हाई लेने लगते। नरसंग ने उनसे कहा कि इतने बरसों से हम पैदा करके दमा सेठ को देते रहते हैं फिर भी उसकी बही में हमारे नाम पर उधार बोलता रहता है। आपने कितना कर्जा किया था ?

नरसंग ने दमा सेठ की कोठी पर जाकर मुनीम से पूछा : अब कितना कर्जा बाकी है ? उस मुनीम ने कहा कि दूसरे मुनीम से पूछकर बताऊँगा। दोनों पक्के थे। टालते रहे। एक दिन तो नरसंग ने कह दिया : आज तो मैं अपना हिसाब समझे बिना उठूँगा नहीं, सब कुछ साफ-साफ बता दो।" तभी दमा सेठ आ पहुँचा। मुस्कराने लगा। बहाने बनाता रहा। "भगत को भेजना, तुझे हिसाब का क्या काम है ? कौन माँगता है तुझसे पैसे ? जो कुछ चाहिए, ले जाना। अच्छे ग्राहक पर हम विश्वास करते हैं, तभी उसे उधार देते रहते हैं।" उसने नरसंग को बोलने का मौका ही नहीं दिया। दमा सेठ ने ऐसा मान लिया कि नरसंग को उसने समझा [illegible] से महादेवजी का स्मरण करके निकले थे, कुछ देर

तक शांत बैठे रहे, फिर धीरे से कहा : देखिए सेठ, पहेलियाँ मत बुझाइए। आपकी चालाकी मैं कब से जान गया हूँ, मेरा हिसाब साफ कर दीजिए, मुझे आपकी एक-एक कौड़ी चुका देनी है, उसके बाद नये सिरे से यहाँ से कुछ खरीदना होगा तो खरीदूँगा, वरना जैसी मेरी मरजी। आप जैसे तो बीसौ बनिये हैं इस बाजार में।

दमा ने बुरा नहीं माना। वह महाजन था। गाली सुनकर भी सह लेता। दूधारू भैंस की लात बुरी नहीं मानी जाती। दमा ने मुनीम को घर भेजकर नरसंग के लिए चाय मंगाई। सौगंध देकर पिलाई। कहा : सर पगड़ी में और पगड़ी सर पर। आप लोगों से हम और हम से आप। किसी के बहकावे में आना नहीं चाहिए। एतबार तोड़ना ठीक नहीं। तेरे बुढऊ मेरे पुराने ग्राहक हैं। अब तू मुझे छोड़कर किसी दूसरे बनिये की कोठी पर बैठने लगेगा, उससे बाजार में मेरी बुराई होगी, यह तूने सोचा भी है ? फिर भी फैसला कर ही लिया हो तो भगत को लेकर आ जाना। वे कहेंगे तो हिसाब दिखाऊँगा, सब कुछ निपटा भी दूँगा, बस ?

फुरसत के दिन बुढऊ को साथ लेकर नरसंग सारंग चल पड़ा। रास्ते में पिताजी से कह दिया : बनिये की बातों में न आना।

"पिथूदादा तो दिल के राजा थे। वे सचमुच के राजा होते तो सबसे पहले उन्हीं ने अपना राज्य देश के हवाले कर दिया होता।" धमा ने प्रशंसा शुरू की। नरसंग ने उसे रोकते हुए कहा : "दे देने जैसा कुछ अपने पास जमा होने भी देते क्या ? धमा, बुढऊ तेरी तरह फिजूलखर्ची करने में पीछे मुड़कर देखते नहीं थे।"

हीरूभाई की ओर देखते हुए नरसंग ने अपने पिताजी की बेपरवाही की बात की। वे अपमान भी नहीं सहते थे, बड़े बेरिस्टर की भी गलती निकाल सकते थे, पर किसी ने नम्रता के साथ उन्हे "भगत" कहा कि बस, वे राजा विक्रम हो जाते। साँप कहे कि मैं तेरे पेट में आश्रय लेना चाहता हूँ तो वे तैयार हो जाते। तू गरम रेत से जलता है ? मुझसे देखा नहीं जाएगा, आ जा।

रास्ते में नरसंग बुढऊ को हेती की सौगंध दे रखी थी। बनिये ने भरसक कोशिश की पर पिथू भगत नहीं रीझे। "देख दमा, कान खोलकर सुन ले। आज से लेकर नरसंग तेरी कोठी की दहलीज नहीं चढ़ेगा। अपनी बही लेकर आ जाना मेरे खेत में, खिरनी की छाया में बैठकर हम दोनो हिसाब समझ लेंगे।

पलभर के लिए नरसंग बुढऊ की याद में खो गये थे, फिर आगे बोले : *क्यों लुट गये भाई ? पहचान वाले मिले इसलिए। व्यापारी और महाजन बदलते रहे इसी में हमारी भलाई है। "तू कल से अमीचंद की कोठी पर जाना नरसंग।"* बुढऊ ने दमा के सुनते ही कह दिया। "देखता हूँ, इस बाजार में कौन देता है नरसंग को।" बनिया ऐंठ के साथ बोला। बुढऊ का सर अब ठिकाने नहीं रहता, पर दमा के चाचा का लड़का मथुर सामने आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया था। बुढऊ ने शांत होकर कहा : चल मथुर, तुझे उधार चाहिए तो दिलाऊँ। मैंने आज तक किसी का पैसा डुबोया नहीं और नरसंग तो मुझसे पाँच गुना मजदूरी करता है।

उधार देने वाले को पैसा दूध से धोकर लौटाएगा। और भगवान ने चाहा तो दो साल पाँच-पच्चीस बचा पाएगा। बुढऊ की आशिश मानो या भगवान की मेहरबानी, जब से दमा से लेना-देना बन्द किया, घर की स्थिति में सुधार आया। अमीचन्द उधार देने को तैयार थे पर नरसंग ने ठीक नहीं समझा। जब तक दमा का हिसाब निपटा दिया न जाए, दूसरे बनिये से व्यवहार शुरू करना हमको शोभा नहीं देता। इस वर्ष नहीं तो दूसरे वर्ष दमा हिसाब करने को राजी हो जाएगा। इस समय गाँव के मुखिया थे करसन बुढऊ। उनसे कहलवाया, वही जवाब। जो पैदा करे, देता जाए जो चाहिए ले जाए।

यह सुनकर नरसंग ने तय किया कि अब तो दमा अदालत में नालिश करेगा तभी दूँगा। आखिर नाइलाज होकर उसने नालिश की। दीवान था नौजवान। हर वक्त खुश दिखाई देता। उसने नरसंग से पूछा। नरसंग ने शुरू से लेकर बात बता दी। पाँच आदमियों को इकट्ठा करके बाकी दे देने की तैयारी दिखाई। इसके बाद दीवान ने दमा के मुनीम को ऐसा डाँटा कि पूछो मत। मुनीम गिड़गिड़ाया। सेठजी को बम्बई से आ जाने दीजिए। दीवान ने केस एक ओर रख दिया और पंच की हाजिरी में निबटारा कर देने की सूचना दी।

दमा सेठ अब कस लेने का आखिरी दाँव लगा रहा था। सवा सौ रुपये की कीमत का बैल चालीस रुपये में ले लेना चाहता था। नरसंग ने मना कर दिया। दमा खड़ा होकर चला, इक्के में बैठने को। नरसंग ने कहा : खुशी से जाइए। बुढऊ ने दमा को दीवान के शब्दों की याद दिलाई। पंचों ने भी थोड़ा बहुत कहा। आखिर उसने बैल के सत्तर रुपये कबूल किये। इक्यावन नगद ले गया और बीस की किस्तें कीं। बहुत मुश्किल से नरसंग दमा सेठ के शिकंजे से छूटे। अमीचन्द सेठ का हिसाब साफ। बाद में तो अमीचन्द को पिथू भगत में देव नजर आने लगे थे। सूद-छूट कुछ लेते नहीं थे। नरसंग को संकोच होता। जहाँ तक बस चलता, उधार लेते ही नहीं थे। उन्होंने हीरूभाई से दुबारा कहा :

"अगर मुँहमांगा कर्ज मिलै लागे तो हम सब ही कर्जदार होय जावैं।"

'सहकारी बैंक इसी मंडली के माध्यम से मात्र खाद और बीज के लिए कर्ज देगी, मात्र खेती के विकास के लिए। आप बेकार में घबराते हैं बापू।" देवू ने कहा।

'तब तो ठीक है।"

"लेकिन मान लिया कि सरकार से पैसा खाद बीज के नाम लैके हम मेहरारू की ताईं हँसुली बनवाय देई तो के हमार हाथ पकड़े आये ?"—घेमर ने कहा।

"कोई नहीं। किन्तु सोने की हँसुली पहनने से खेत में फसल नहीं पैदा हो जायेगी।" हीरूभाई ने कहा। रमणलाल ने खेतों में रासायनिक खाद तथा अच्छे बीजों की उपयोगिता का महत्त्व समझाया।

"जो अपने आदमी फालतू बड़प्पन छोड़ देय तो हम तो मानित है कि बड़े अच्छे दिन आय जायें। शिक्षा बढ़ी है, सुविधा बढ़ी है। काहे रे माधव। बोलतेव काहे नाहीं कुछू ?"

"माधव बेचारा अपनी बदली कै बात करै आवा रहा। मुला तुहरी बात मां अतना मजा आवा कि ..... "

"क्यौ माधव, तुझे सहकारी मंडली का मंत्री बनना था न ?" देवू ने नारण की बात काट दी।

"मंत्री तो बनूँ, किन्तु धंधे में नुकसान होगा तो कहाँ से भरपाई करूँगा ?"

"मंत्री वफादारी और ईमानदारी से काम करे इतना ही पर्याप्त है। नफा-नुकसान अलग बात है।"

"मुझे तो इस नारण ने ही घबरा दिया था। कहता था नुकसान होने पर तनखाह तो जायेगी ही घर से भी जोड़ना पड़ेगा।" माधव पहली बार बोला।

"यह दूसरी बात है। किन्तु शिक्षक की नौकरी की अपेक्षा को-ओपरेटिव सोसायटी का सचिव-पद निश्चित ही जरा मुश्किल है। शिक्षक तो बैठा रहे तो लड़के बड़े होते रहते हैं, जबकि मंडली को चलाओ तो ही चलती है।"

"रमणलाल अपने अनुभव की बात कर रहे हैं।" – देवू बोला।

"हीरूभाई भी तो प्रारंभ में शिक्षक ही थे।" रमणलाल बोले।

"इन नये शिक्षकों से ही उनके अनुभवों को पूछिये न। क्यों भाई नारणदास और माधवलाल। पढ़ाना अच्छा लगता है ?" हीरूभाई ने कहा।

"कभी कभी अच्छा भी लगता है।" हरजीवन बोला।

"तुम भी शिक्षक रह चुके हो ?"

"नहीं, अब बनना है किन्तु दाँव नहीं लगता।"

"तब तो कुम्हारौ लड़कन पढ़े हैं। ईंट बेच कै खा भैया ईंट।" – घेमर खड़ा होता हुआ बोला।

"लो करो बात। घेमर भाई को दुनिया का इतना ही ज्ञान है। अब तो हरिजन भी स्कूल में पढ़ाते हैं।"

"तौ हम अपने लड़का क न पढ़ाउब।"

घेमर उठ खड़ा हुआ था। धमा को भी फूलजी की याद आ गयी थी, "अरे रुक घेमर हमका मुहल्ले तक छोड़त जा।"

घेमर और धमा बात करते हुए चले गये। गीमा के घर में लालटेन जलती देखकर धमा वहाँ जाने के लिए ललचाया। कसम खिलाकर घेमर को भी ले गया।

"सारे गाँव से हुक्का खत्म होय गवा। पर मुखिया के घर से तो करसन बुढऊ के साथे जाये।" धमा धीरे से बोला जिससे सिर्फ घेमर सुन सके। घेमर को नींद आ रही थी। उसे अब और किसी भी बात में रुचि नहीं थी। उसने जम्माई ली। माना को भी जम्माई आ गई।

"उठो अब मंत्री नारण बने या माधव। हमरी ताँई तो दूनो बराबर। हमरे रणछोड़ के बात करत हो व तो बताई कि ऊ बने तो परमुख बने मत्री नाहीं। केहू के गुलामी न करे।" करसन ने चिलम में फूँक मारते हुए कहा।

"अस करो करसन बाबा, तुम परमुख बनो और रणछोडिया क बनाय देव मंतरी। ठीक है न माना काका ?" घेमर माना के पीछे खड़ा खड़ा बोला।

लाला ने कहा कि माना अपनी भलाई सोचेगा कि दूसरे की ? लड़का मास्टरी करता ही है। फ़ुरसत के समय मंत्री का काम करेगा। लोभ का अंत नहीं होता।

घेमर घर पहुँचा तो फता अर्धनिन्द्रा में थे। टहर खोलने से आवाज हुई तो कुत्ते भौंकने लगे। फता ने पूछा—"कौन आय रे ?" घेमर कुछ नहीं बोला। कुत्ते को पुचकारकर चुप करा लिया।

"फता ने उठकर पानी पिया। उसने घेमर से विलंब से आने का कारण पूछा। घेमर ने मेहमानों के बारे में बताया। सो गया।

फता ने सोचा अब एक मंडली और बन गयी है तो अब घेमर रोज देर से ही आया करेगा। वह बड़बड़ाया—'नाम सुधार के, बाकी है सब धतिंग, सिर्फ धतिंग।"

31

"खेती—खराबा तो हो, पर पेड़ तो आखिर पेड़ होत हैं। नरसंग ने कहा। सुनकर थोड़े दिनों के लिए देवू ने आम, नीम और करंज का वृक्ष काटने का कार्य-क्रम रोक दिया था। पिताजी की इच्छा की अवगणना करके कोई कार्य करने में उसे आनन्द नहीं आता था। राह देखना चाहिए, गम खाना चाहिए। यदि अपनी बात सही है तो देर सबेर मानी ही जायेगी। वैसे पिताजी की एक बात तो सही है वृक्षों के बिना खेत भी बीरान लगते हैं और गर्मी के दिनों में, जब खेत खाली होते हैं तब तो वे काटने को दौड़ते हैं। यह बात नहीं है कि पिताजी किसी भौगोलिक कारण से वृक्षों को काटने से रोकते हैं। यह तो वृक्षों के प्रति उनकी ममता है। लेकिन एक ही बात बार-बार करूँगा तो उन्हें बुरा लगेगा। क्या करूँ ?

पिछली बरसात में नवों एकड़ खेती के चारों ओर वृक्ष लगवाने के लिए देवू को पूरे दो सौ दस रुपये खर्च करने पड़े थे। छोटे भगतबाड़े के चारों ओर उगे हुए वृक्ष एक समय शोभा देते थे किन्तु आज जब भगतबाड़ा विकसित हो चुका है तो वे ही देवू की आँखों में चुभते हैं। भविष्य में नयी जमीन और ली जायेगी। तालाब का कीचड़ खरीदकर डलवा लिया गया होता तो ठीक था। जमीन का रेतीलापन इससे कम होता और चिकनाहट बढ़ती।

नरसंग ने शंका व्यक्त की थी कि इतना कीचड़ लायेंगे कहाँ से ?

"हरी तलैया और गाँव का तालाब दोनों रख लें तो ?" देवू ने कहा था।

"नीलाम होये। हजार आदमी सामने पड़िहैं।"

"हमें कहाँ मुफ्त में या सस्ते में सौदा करना है। जितना उचित होगा, बोली लगायेंगे।"

"देखो, मेल बैठत है तो बुरा नाहीं न। पर अपने एक गाड़ी से काम न होय।"

"सारंग से टेक्टर बुलायेंगे ?"

नरसंग ने कहा, "मुझे आपत्ति नहीं है। विचार कर लो। बैल पाँच बार खाद ढो सकते हैं किन्तु कीचड़ एक बार भी नहीं ढो सकते। इतने में सड़क की ओर से कुछ परिचित आवाजें आयीं। नरसंग की निगाह उधर घूम गयी। "लेव, लश्कर आय पहुँचा।" नरसंग ने प्यार से कहा।

वालजी ने नया पाजामा पहन रखा था और विपुल के सिर पर झालर वाली टोपी थी। दोनों के हाथ खिलौनों से भरे थे। हेती और कंकू दोनों उन दोनों बच्चों के बारे में ही बात करती चली आ रही थीं। उनकी आवाजों में माँ-बेटी का स्नेह था किन्तु उम्र का भेद खत्म हो गया था। हेती कंकू की छोटी बहन नजर आ रही थी। यदि प्रत्येक वाक्य के अंत में 'माँ" कहने की हेती की आदत न होती तो सुनने वाला कभी नहीं जान सकता था कि उनके बीच यही संबंध है ?

"माँ, वो रहे मामा।" वालजी किलकारी मारते हुए बोला। देवू आवाज सुनकर स्फूर्ति से दौड़ता हुआ आ पहुँचा।

"देखो, मामा आया।" विपुल ने पीछे मुड़कर हेती को देखते हुए कहा। हेती और कंकू एक साथ खुश हुईं। गली के दोनों किनारे संवेदना के अनेक तंतु खिल उठे और माँ बेटी एक-एक कदम आगे बढ़ीं। हेती ने विपुल की भूल सुधार ली :

"ओ पगले, मामा आये। ऐसा कहा जाता है।"

"यूँ कह कि पागल मामा आये।"—विपुल अपनी बात पूरी करे इसके पहले ही देवू तथा सभी हँस पड़े। नरसंग भी हँस पड़े। वालजी बिल्कुल बाद में हँसा जैसे दादा को चिढ़ा रहा हो। हेती ने फटकारा—"ई देखो न ईका। चिढ़ावत है।।"

"इ तो ठीक है भाई, लड़का है न।"

"तुझे का बताऊ माँ, मूलजी दादा क तो अस चिढ़ावत है कि एक दिन गलबा भाई तमाचा मार दिहिन रहा।"

"मरे गलबा। ऊ के होय हमरे लड़का क तमाचा मारे वाला ? अपने होय तो मारे।" कंकू का क्रोध सीमा से बाहर हो गया था।

"लेव, इनकै शिक्षा देखै। हेती अपनी माँ के समझदारी गाँठ बाँध ले।" नरसंग थोड़ी नाराजी से बोले।

"तो अस फूल अस लड़का के मारा जात है ?" कंकू अभी भी अपनी बात पर अड़ी हुई थी। पति के प्रति आदर से आज नाती के प्रति प्रेम कुछ अधिक था।

"वालजी। तुझे तेरे गलबा चाचा ने मारा था ?" देवू ने पूछा।

"नाहीं, हम उनका मारा रहा। बहुत मारा रहा तो वे खाना खाय के खेत मां भाग गये रहा।"

"शाबाश, भांजे। यह लवजी मामा से भी अधिक होशियार निकलेगा।"

"लवजी मामा तो नहीं आये। झूठी।" वालजी ने हेती को देखकर कहा।

"भैया, तू तो कहत रहेव कि लवजी वही दिन आवे वाला रहा। आज तो दुई दिन होय गवा।" कंकू ने चिन्तापूर्वक कहा।

"वह तो मैने उसे पत्र लिखा था कि मंडली के उद्घाटन समारोह में उपस्थित रहे। किन्तु उसकी परीक्षा ही उसी दिन पूरी हुई। फिर तो दो दिन अपनी थकान उतारने के लिए चाहिए ही न?"

"सिनेमा देख के, और जो बचा हो खर्च करके ही घर वापस आयेगा।" कंकू ने भले ही यह बात कही हो किन्तु उसे मुख्य चिन्ता खर्च की नहीं बल्कि लड़का घर नहीं आया इस बात की थी।

"देख माँ, अब मुझे या तुझे लवजी की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। वह अब बड़ा हो चुका है। हम उसे पैसे ही कितने देते हैं जो व्यर्थ खर्च का आरोप लगायें? इस साल उसे नौ सौ रुपये तो वजीफे के मिले हैं। हम सबने कुछ मिलाकर भेजे हैं उसके पास सिर्फ पौने चार सौ रुपए। वह भी दीवाली के पहले। फिर बड़े दिन की छुट्टियों में वह तीन शाल नहीं ले आया था?"

"नाहीं, नाहीं पर ऊ अबहीं आवा नाहीं।"

"तौ इ बात करौ न, बकवास किहे बिना।" नरसंग बड़ी देर से कुछ कहने को सोच रहे थे।

"शांति की पढ़ाई कस चलते है?" हेती ने गंभीरता से पूछा। उसने सुना था कि मगन अमथा लड़की को सारंग के हाईस्कूल में भेजने के लिए कतई तैयार न थे।" रमणलाल ने समझाया था।

"अपनी जाति मां शांति जतना के पढ़ै है?" कंकू ने कहा।

"उस दिन मैं मगनजी से कहने वाला था, किन्तु माँ तुमने बीच में..."

"बीच मां रोड़ा अटकावे कै आदत। बहुत होशियार है न।" नरसंग ने मुस्काते हुए कहा।

"अब चुपचाप बोले बिना बैठ रहो न। काम एको नाहीं करे क और होशियारी सारी दुनिया कै। सामने वाला आदमी का मूरख है जौन अतनी बड़ी लड़की क टेंबा से सारंग पढ़ै भेजे। पचास साल कै होय गयौ तबौ वैसे के वैसे रहेव। कहत हैं हम कही वही सही। लड़का के दुलहिन क पढ़ावे क है। बड़े देखा है। पढ़ाय के दुकान खोले व है कि वकील बनावे क है?"

"आज कहूँ भूत लाग है जानो।"

"नहीं, हेतीबहन की हाजिरी में मेरी माँ अक्सर आधी पागल हो जाती हैं।" देवू बोला। नरसंग ने जोड़ा "और ईजू बहू की हाजिरी मां चतुर।"

कंकू को गुस्सा आया किन्तु हेती और देवू से नजर मिलते ही हँस पड़ी। सब हँस पड़े और इस बार भी वालजी सबके बाद हँसा। देवू की समझ में बात आ गयी–

"हम किस लिए हँसते हैं यह बात भानजे साहब को समझ में नहीं आती है इसलिए ये बाद में हँसकर अपना फर्ज अदा करते हैं हमारी हँसी पर तो बाद में नहीं हँसते। मैं झूठ कह रहा हूँ ? बापूजी ?" देवू ने सवाल किया।

"भाई अपनी माँ से पूछो। वे कहें वही सच है।"

"हम कहा न, जौन आदमी कै उल्टा बोले कै आदत होय उससे का बात करी—" कंकू उठकर गोबर बटोरने लगी। हेती ने उसके हाथ से काम ले लिया और खुद करने लगी। देवू ने दोनों भानजों को साथ लिया और अमराई की ओर उन्हें खिलाने चला गया।

इतने में हेती आ पहुँची। देवू ने पूछा।—"भानजा नियमित स्कूल जाता है बहन ?"

"जात तो है, पर स्कूल के कौन ठिकाना ? मास्टर पढ़ावत कहाँ है ?"

"नेताजी से बोलो कि गांव का स्कूल तो ठीक करवा दें।"

"उनका कहाँ फुरसत है ? जब से जीप मिली है तब से अतना घूमत हैं कि न पूछो बात। घर मां रहत हैं तबौ दिन भरे मां पाँच बार तो कांगरेस—कांगरेस करत हैं। चुनाव मां हारे के बाद तो वे और जोर से कांगरेस से चिपक गये हैं।"

"इसी को सच्चा सदस्य कहते हैं। वे भविष्य में यदि देश के नहीं तो काँग्रेस के तो बड़े नेता बनेंगे ही।"

"आदमी बाहर बड़ा बनत जात है बस घर मां छोट होत जात है।"

"लड़ाई-झगड़ा तो नहीं करते ?"

"झगड़ा करें तो अच्छा। उनका तो दुई घड़ी बात करे क समय नाहीं मिलत। आपन काम होय तो बोलत हैं नाहीं तो जैसे केहू है नाहीं घर मां। थोड़ा समय मिलत है तो खेत मां चले जात हैं या कोई किताब लेके बैठ जात हैं। भाड़ मां जाय उनके कांगरेस।"

"मैं भी कांग्रेस का सदस्य हूँ।"

"मुला तुम तौ घर कै काम देखत हौ। सबके साथे शांति से बात करत हौ। वे तो अपने बुढ़ऊ से भी दूर रहत हैं। भैया, ई कौन मोटाई आय ?"

"लेकिन रमणलाल भीतर से अच्छे आदमी हैं। एक हीरूभाई को छोड़कर सभी कांग्रेसियों से तो वे लाख दरजे अच्छे हैं। किसी का काम करने जैसा हो तो हाँ कहते हैं नहीं तो मना कर देते हैं। कोई गलत काम करवाना चाहता हो तो डाँट भी देते हैं। तरह-तरह के आदमियों से काम पड़ता है न। इसलिए वे कुछ चिड़चिड़े हो गये हैं। पहले तो उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। मिलेंगे तो पूछूँगा।"

"देखो, कुछ पूछेव न। ईमां पूछे वाली कौन बात है ?"

"तो तुम मन क्यों छोटा करती हो ?"

"वह तो बात निकली हम बोल गइन। तुम ई न मानो कि हम दूसरे के

सामने उनके बुराई करित है । ई तो..." हेती बोलते-बोलते रुक गयी थी । उसके चेहरे पर कोई शोक न था । विपुल कुछ तोड़फोड़ कर रहा था । हेती उसकी ओर बढ़ती हुई बोली "ई तो कबौ कुछ पूछो तबौ ठीक से जवाब नहीं देते । जैसे हमका मूरख समझत हैं ।"

"तुम्हें मूर्ख समझें इतने मूर्ख तो नहीं हैं वे । मुझसे तो एक दिन वे कह रहे थे कि तुम्हारी बहन अब तो अखबार भी पढ़ लेती हैं । मुझे सलाह भी देती हैं जिससे मुझसे कोई गलती न हो जाये ।"

"उनके गलती सुधारे वाले हम के होई ? सिर्फ हीरूभाई के आगे उनके बोलती बन्द रहती है ।"

"हीरूभाई न होते तो शायद ही रमणलाल राजनीति में पड़ते ।"

वालजी कपड़े उतारकर हौज में नहाने के लिए कूद पड़ा था । विपुल तुलसी के पौधों से पत्तियाँ तोड़-तोड़कर खा रहा था । देवू विपुल के पास पहुँचा तो उसने देवू से कहा—"मामा, ले खा ।"

देवू ने नीचे बैठकर विपुल के सामने मुँह खोल दिया । विपुल ने तुलसी की पत्ती देवू के मुँह में रखी तो देवू ने धीरे से उसकी ऊँगली मुँह में दबा ली । उसके बाद दोनों खेलते रहे ।

हेती ने वालजी को हौज से बाहर निकालकर एक तमाचा जड़ दिया था । वालजी जोर से रो पड़ा ।

"उसको बाहर निकालने के बाद मारने की क्या जरूरत थी ?" देवू ने दूर से पूछा ।

"अबहीं तो भाई साहब फिर नहावा चहत रहें ।" हेती ने गुस्से में कहा ।

कंकू आ पहुँची ।

"अरे मरी । भानजे का पीटत रहत है ?" कहते हुए कंकू ने वालजी को अपने पास खींच लिया । हेती के हाथ से कपड़े लेकर उसे पहनाने लगी ।

"एक बार आदत बिगड़ जाय तो कोई न होय तबौ नहाये ई । उपर चढ़कै कूदे अस हैं ई ।"

"बचावे वाला ऊपर बैठा है ।"

"तो का जानबूझ कै मनमानी करे दीन जाये ?"

"अब रहे देव न । तुम छोटके रहिव तो तुमहू खूब शैतान रहिव ।"

इसके बाद हेती के बचपन की बात चल निकली । देवू और हेती की शैतानी, आपसी झगड़े, रूठना-मनाना आदि की बातें चलती रहीं । बातचीत में नरसंग ने भी हिस्सा लिया था । सबकी उम्र इस समय एक हो गयी थी । शैशव की उम्र । विस्मय की उम्र । स्मरण की दुनिया से निकलकर सब पुनः अपनी-अपनी दुनिया में आ गये । एक साझे की खुशी से निकलकर वे विभिन्न मनोदशाओं में पहुँच गये

थे। एक बंधन, एक बाहोशी, कुछ पीछे छूट जाने का अफसोस, गुप्त वेदना...वैसे तो वे सब सुखी थे। उनमें से किसी का सुख कम न था। फिर भी उनके अंतःकरण में एक अधूरेपन ने घर कर रखा था। क्या यह सब समय की लीला है? देवू ने बहुत कोशिश की किन्तु इस प्रश्न का उत्तर न पा सका। चलो उठें। दोपहर हो गई।

वे सपनों की दुनिया से तब बाहर निकले जब टांबा का एक रबारी वहाँ आ पहुँचा। वह अपने पशुओं को पानी पिलाने लाया था।

कंकू और हेती घर की ओर चल पड़ीं।

हेती आज शाम को ही गोकुलिया चली जाना चाहती थी। किन्तु देवू को विश्वास था कि लवजी को आज रात को तो आ ही जाना चाहिए। परीक्षा के बाद अधिक से अधिक दो दिन तक वहाँ रुक सकता है। अधिक रुककर क्या करेगा?

किन्तु वह शाम को भी नहीं आया। थोड़ी देर तक उसकी पढ़ाई की, उसकी समझदारी की बातें होती रहीं। हेती के मन में एक ही चिन्ता थी। मगनजी ने अपनी लड़की को मैट्रिक भी नहीं करवाया। आजकल के जमाने में सात-आठ दर्जे की पढ़ाई का क्या मूल्य? अब मगनजी को समझाये भी कौन? और शांति भी क्या अब दुबारा पढ़ना पसन्द करेगी? कौन कह रहा था? शांति का कहना है कि मैं तो शादी के बाद सीधो अहमदाबाद चली जाऊंगी। सोमपुरा में क्या गड़ा है! यह तो कोई गाँव है? हम तो बनियों-ब्राह्मणों के बीच रहेंगे और नाटक सिनेमा देखेंगे।

यदि अभी से ऐसे लक्षण हैं तो बाद में नहीं नहीं यह सब उड़ाई हुई बातें हैं। मन में जन्मी शंका को हेती ने अंकुरित भी नहीं होने दिया। शांति गोरी है, सुन्दर है, चंचल भी है।

"माँ, अब तुहरे समधी का विवाह कै बात सूझत है कि नाहीं?"

"कोई बात तो करत रहा। कौन भला? हाँ रणछोड़िया की माँ पर्भी कहत रही।"

"रणछोड़िया क मगनजी व्यापार मां भागीदार बनाइन है।"

"भागीदार काहे क? इवाली मां। पर रणछोड़ कहाँ छोट बाप कै लड़का है कि सबसे सच बोले?"

'आपन भैया व्यापार करे तो?"

"भाड़ मां जाये व्यापार। का करैं क हैं अतना कमाय कै? भैया ने जबसे खेती सँभाला है अपने बाप से दुई गुना फसल पैदा करत हैं।"

"अब तौ अम्मा, खेती पढ़े-लिखे आदमी कै काम है। वे पढ़े रहें तो सारे गाँव क आगे लायें। नाहीं तो मूलजी बुढऊ के पास का रहा?"

"लम्बी-चौड़ी बातें।"

मूलजी और वाली से होती हुई बात गलबा और उसकी पत्नी तक हुँ पत्र

गयी। चेहर, जतन, हीरा आदि आकर बैठ गयी थीं। तखत का घर देखते ही देखते ऊँचा उठ गया, और बड़े लड़के के देहान्त के बाद पमा मुखिया का घर नष्ट हो गया आदि बातें होती रहीं। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता था? किसी ने कहा वक्त जो करे!

तभी घेमर के घर की दिशा से पुरुषों के हँसने की आवाज सुनाई दी। हीरा और चेहर का ध्यान गया।

जीवन ने नजदीक आकर चेहर को आने से मना कर के हीरा को पास बुलाया। सुखड़ी बनाने के लिए घी, गुड़ और आटा लेकर ये लोग आये थे। बाद में सभी को प्रसाद पहुँचाएँगे।

माना तथा दूसरे पंचों ने मिलकर मोती कुम्हार और मोहन जुलाहे का बबुल काटने के बहाने दंड किया था। पटवारी से मिलकर दंड के पैसे खा गये थे। पुराने पंचों को सुधारने के देवू के प्रयत्न विफल रहते हैं यह देखकर जीवन ने इन्हें पाठ पढ़ाने का बीड़ा उठाया था, कुछ ही दिनों में संकल्प सिद्ध कर दिया था। उन्हीं पंचों ने बाद में गाँव का भैंसा बेच डाला, बही में उसका पैसा जमा नहीं किया जबकि नये भैंसे का खर्च लिख दिया। यह जानते ही जीवन-घेमर की मंडली गाँव के हरेक टोले और गलियों में पहुँचकर कह आई कि पटवारी, मानाकाका, छना और लाला ने मिलकर भैंसा कसाई को बेच डाला है। जिस भैंसे के वंश के कारण गाँव सुखी हुआ उसे हम दो पुलियाँ चारा भी नहीं दे सकते थे? यह तो गाँव की नाक कटी और ऊपर से अधर्म हुआ। आज रात को भोजन करके सब लाइब्रेरी के चबूतरे के पास आ जाएँ। इस गाँव ने आज तक किसी पशु को कत्ल होने नहीं दिया। परन्तु उन पापी पंचों ने तो कोई कसर नहीं छोड़ा।

कुछ संकोच के साथ गाँव वाले एकत्रित हुए। घेमर ने कहा कि लवजी यहाँ होता तो भैंसे के शोक में कविता कहता।

पंच बिना बुलाये आ पहुँचे। माना ने ऊँची आवाज से पूछा : कौन कहता है कि भैंसा कसाई को बेच डाला? वे मुखिया होने के नाते गाली बोलने जा रहे थे पर देवू को देखकर अटक गये।

जीवन ने कहा कि कसाई को बेचा नहीं है तो भैंसे को हाज़िर करो।

छना ने खर्च का सवाल उठाया। घेमर ने बताया कि भैंसा बेचने से जो पैसा आप लोगों को मिला था, पंचायत की बही में जमा नहीं है।

"उस आय से तो ट्रक का किराया कम ही होगा"—हरजीवन ने हिम्मत दिखाई। माना ने उसे "टपला" कह दिया।

जीवन ने ग्रामजनों से कहा, देखिए बुजुर्ग लोग। हम क्या गलत कह रहे थे? भैंसा जिन्दा होता तो ये लोग ले न आते?

इसके बाद गाँव वालों ने बातें यों बढ़ाई कि ट्रक भेजकर पंचों को भैंसा वापस लाना पड़ा। रिश्वत की अपेक्षा किराया बढ़ गया।

घेमर ने भैंसे को पिंजरापोल में छोड़ आने की जिम्मेदारी संभाली। जीवन मुखड़ी की सामग्री ले आया। देवू मना करता रहा पर प्रेमवश होकर खेत के रास्ते से उसे लौटना पड़ा।

यह सुनकर मुहल्ले की स्त्रियाँ हंस पड़ीं, हँसती रहीं।

32

देवू ने सोचा था कि लवजी आये तो तीन दिन बाद उसे खूब डाँटेंगे। यह कोई तरीका है? उसे परीक्षा के बाद तुरन्त घर वापस आ जाना चाहिए था। "यदि उसे किसी से मोह नहीं है तो इतने लंबे-लंबे पत्र क्यों लिखता है? "बरसात वहाँ भी अच्छी होगी। तालाब में स्वच्छ पानी भर गया होगा। मुहल्ले की झुकी हुई थूनी पर बैठी हुई गौरैया का प्रतिबिम्ब पानी में दिखाई देने लगा हो तो मेरी ओर से भी देखना। आम बौराया? गर्मी प्रारंभ हो गयी हो तो खिरनी के पेड़ के नीचे. छाया में खाट डालकर लेटना शुरू कर देना और···"

देवू ने अन्तर्मन से बाहर की ओर प्रवाहित स्मरण को जबरदस्ती रोका। हेती बहन भी उससे मिलने के लिए एक दिन अधिक रुकी। माँ सिर धुन रहीं हैं। सिर्फ पिताजी को कोई चिन्ता नहीं है। न कुछ कहते हो नहीं या मचमुच वे भावना-शून्य हैं? लड़के की भी चिन्ता नहीं होती?

लवजी आया होता तो हेतू को लिवा लाया होता। जब तक कोई बुलाने न जाए तब तक आए ही नहीं, और मातापिता जब न भेजे तब तक बुलाने ही न जाएं। अजीब रिवाज है। वह तो ठीक है किन्तु लवजी क्यों नहीं आया?

शाम को कंकू का धैर्य टूट गया – ये पिता और भाई कैसे हैं? किसी का रोया भी नहीं फरकता। दूसरा कोई होता तो ढूँढने निकल जाय।

देवू चुपचाप बैठा था। आज रात तक यदि लवजी वापस नहीं आता तो कल सुबह ही अहमदाबाद जाऊंगा।

कंकू का बोलना जारी था–"मेरे लड़के को कुछ हो गया तो···"

"तो मालूम नहीं पड़ेगा?" नरसग बोल पड़े। देवू चौंका। मालूम पड़ेगा? क्या मतलब? यहाँ बैठे बैठे मालूम पड़ेगा? अपने आप? लोगों का कहना है कि पिथूबाबा को आप ही आप सब कुछ मालूम हो जाता था। सही बात तो राम जाने।

"अरे देवूभाई, एक संदेश बताना भूल गया था। साला समय ही नहीं मिलता काम के मारे। लवजी भाई मुझे अहमदाबाद स्टेशन पर मिले थे। उनके साथ कोई गोरा-सा आदमी था। उसे प्रजाभारती तक छोड़कर सीधे घर आयेंगे। अच्छा चलूँ। मुझे टींबा तक जाना है।" रणछोड़ रास्ते में खड़े-खड़े बोला। उसने बीड़ी सुलगायी और चल पड़ा।

"तुझे लवजी कब मिला था !"

"परसों ।"

"तो नालायक । आज कहने आया है ? मेरी माँ चिन्ता के मारे अधमरी हुई जा रही है ।"

"अरे रे रे ।" रणछोड़ हँस पड़ा । "अरे, पढ़े-लिखे लोगों की काहे की चिन्ता भला ? लवजी सुनेगा तो बुरा मान जायेगा ।"

कंकू का चेहरा खिल गया । जैसे एक दशक की उम्र का बोझ उसके ऊपर से उतर गया हो, उसके कंधे पर पड़ रही नीम की छाया भली लग रही थी ।

रणछोड़ जा रहा था तो देवू ने पूछा–

"कितना कमाया रे !"

"अभी हिसाब ही कहाँ किया है ?" वह जाते-जाते बोला । देवू का पुकार कर बुलाना उसे पसन्द नहीं था ।

"अरे, मगनजी का राम-राम कहिस रे भैया ।" नरसंग ने खड़े होते हुए कहा । रणछोड़ लापरवाही में चला जा रहा था ।

"अब तौ बालीबाई क कह देब क है कि ईजु क इहाँ भेज देय । लवजी आवे तो तुरन्त गोकुलिया भेजे क है । लिवा लाये । ईजु बहू के उम्र कै औरतें एक-एक लड़के कै माहतारी बन गयी है ।"

देवू को यह सब सुनने में शर्म आ रही थी । और वहाँ से उठकर चले जाने से माँ की भावना को चोट पहुँचती । उसने बात बदल दी ।

लवजी दूसरे दिन दोपहर को आया । वापस आते समय ईजु को लिवाते लाया था ।

देवू घर आया तो कंकू लवजी को डाँट रही थी । ईजु बैठी बैठी हँस रही थी । देवू को देखकर वह शरमा गयी । घूँघट निकालकर बैठी । नयी चूड़ियाँ खनकती रहीं । खनकती रहीं ।

देवू ने देखा कि माँ रसोई कर रही है और ईजु आराम से बैठी है । मदद करने में उसे सुख नहीं मिलता ? थकी हुई है क्या ? जीप में कैसी थकान ? कहीं ऐसा तो नहीं कि काम करने की वृत्ति ही नहीं इसमें ? या शरमा रही है ? अब भला कैसा संकोच ? ऐसे तो......

लवजी ने अपनी बात बतानी शुरू कर दी । प्रजाभारती में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-शिविर है । वह एक जर्मन युवक को वहाँ छोड़कर आया है । फ्रांस और जापान की युवक–युवतियाँ एकाध दिन में आ पहुँचेंगी । उन्हें छोड़ने के लिए बालूभाई स्वयं आयेंगे । मैं भी कुछ दिनों तक शिविर में रहना चाहता हूँ आप भी एकाध दिन रह आना । घर का कोई काम होगा तो मैं कर लूँगा । पिताजी मजे में हैं ? नियमित माला फिराते हैं ? सुबह जल्दी उठकर ठंडे पानी में नहाते हैं ? उनकी

तरह कोई और भी गाँव कें स्नान करता है ? इस बार मैं भी पूरी ठंडी भर ठंडे पानी से ही नहाता रहा। मात्र तीन ही दिन नहीं नहाया था। बाकी तो रोज कॉलेज से वापस आकर पहले नहाता था फिर भोजन करता था। ऐसा नियम है कि कसरत करने के बाद दो घंटे तक नहाना नहीं चाहिए। और ठंडे पानी से ही नहाना चाहिए। शरीर की प्रतिकारक शक्ति इससे बढ़ती है। आपने मुझे सही समय पर चेतावनी दी थी - अधिक समय तक की पढ़ाई आँखो को ही नहीं, शरीर को भी खराब कर देती है। जेमिनी को भी कसरत करना पसन्द है।

लवजी अचानक चुप हो गया। देवू को लगा जैमिनी कोई लड़का होगा, उसका रूम पार्टनर अथवा पड़ोसी। उसने लवजी की ओर देखा जिससे वह आगे बोले। जेमिनी का नाम जबान पर कैसे आ गया ? लवजी सचेत हो गया था। अहमदाबाद में तमाम लड़कियाँ उसकी तरह कसरत करती होंगी। बहुत तो स्नानागार में जाती होंगी और बहुत ऐसी होगी जो मात्र अण्डरवीयर और ब्रा पहनकर खूब ऊँचाई से पानी में कूदती होगी। मुझे जैमिनी से क्या लेनादेना ? मुलाकात होती है, होती रहेगी। यहाँ उसकी चर्चा चल निकलेगी तो बवंडर खड़ा हो जायेगा...

"लेकिन तुझे विदाई की बात कैसे सूझी ?" लवजी को चुप देखकर देवू ने पूछा।

"मै तो गोकुलिया बहन से ही मिलने गया था। किन्तु वहां भाभी को देखा तो यह बात दिमाग में आ गयी। मैने पूछा - कैसी हो भाभी ? यहाँ क्यों हो ? तो इन्होने क्या कहा बताऊँ ? तुम लिवाने ही नहीं आये हो।"

"झूठ न बोलो हाँ लवजीभाई। ऊ तो तुम्हारा बहिन कहिन रहा।" ईजू ने तुरन्त कहा। शर्म के मारे उसकी आवाज काँप रही थी। देवू को पत्नी की आवाज बहुत सुहानी लगी।

"मैं तो कभी झूठ नहीं बोलता। किन्तु तुम्हें बुरा लगे ऐसा बचाव मैं नहीं करूँगा।"

देवू कहने जा रहा था कि मैं जानता हूँ कि कौन कितना सच बोल रहा है। किन्तु उसे तुरन्त माँ की उपस्थिति का ख्याल आ गया। बुरा मानेगी। लड़का अभी से पत्नी के साथ खुल्लमखुल्ला बातें करता है। इस बारे में चेहरकाकी ने चेमर और हीराभाभी को कहने में कोई कसर नहीं छोड़ा है।

मुहल्ले की युवतियाँ ईजू से मिलने आयीं, उनकी महफिल जमी रही। वे लोग इतने धीमे से भिनभिना रही थीं कि किसी की स्वतंत्र आवाज नहीं सुनाई पड़ रही थी। देवू इधर लवजी से प्रजाभारती के बारे में पूछताछ कर रहा था। ऐसी जगह पर परदेशी कैसे रहेंगे ? उनके खानेपीने की क्या व्यवस्था है ? गरमी निरन्तर बढ़ती जा रही है।

"परदेशी ऐसी ही जगह रहने के लिए उत्सुक रहते हैं। नदी के दोनों किनारे थोड़े से घर नहीं हैं ? गड्ढे के किनारे कतारबद्ध दीवारें देखकर वह जर्मन युवक

बोल पड़ा था : वाह कितने बहादुर लोग हैं । मृत्यु के इतने नजदीक रहकर भी कितने शांत और सुखी हैं ।"

'इसमें काहे की बहादुरी ?"

"क्यों, चोरी, लूटफाट, मारधाड़ आदि करने के लिए अमुक बहादुरी की जरूरत तो होती है न ?"

"गाँधीजी तो इसे कायरता कहते हैं ?"

"उस अतिथि को नहीं मालूम था कि गाँधीजी ने क्या कहा है । गाँधीजी ने क्या किया है इस बारे में वह थोड़ा बहुत जानता होगा । उन लोगों को तो यहाँ के लोग अच्छे लगे । फोटो खींचते रहे । ऊँट पर सवारी की । और एक घर में जाकर जौ की रोटी और प्याज खाकर ही उठे । उनको दोनों हाथों से खाता देखकर वहाँ के लोगों के आश्चर्य की सीमा नहीं रही । मैं उन लोगों को भला क्या और कैसे समझाता ? एक आदमी को तो ऐसा संदेह है कि हीरूभाई इन गोराओं को बुलाकर यहाँ की जमीन हजम कर जाना चाहते हैं । उन लोगों को प्रजाभारती का उद्देश्य समझा सकने में मैं सफल नहीं हुआ । हीरूभाई ने भी कैसे आदमियों के साथ काम करने के लिए कमर कसी है ।

"सेवा धर्मो परम गहनो योगिनाम् अपि अगम्यः ।"

"अरे वाह । आप अभी तक संस्कृत नहीं भूले हैं । मुझे तो अभी भी लगता रहता है कि आपको आगे पढ़ना चाहिए था ।"

कंकू ने आकर देवू का बचाव किया ।

गाँव की युवतियाँ चली गयीं । जाते-जाते वे कहती गयी थीं कि अब तो हमको ईजू बहू से मिलने कितनी दूर आना पड़ता है ? पुराना घर अच्छा था ।

लवजी को भी यह बात सही लग रही थी । पुराना घर खुला-खुला था । यहाँ एक प्रकार की घुटन महसूस हो रही थी । इस घर का संसार एकांतमय था ।

"मैं कमाऊँगा तो वहीं नया घर बनवाऊँगा – पहले जैसा ही । और वहीं रहने जाऊँगा -- अकेले ।"

"मगन अमथा की लड़की को पसन्द आयेगा ?" कंकू ने खाना परोसते हुए कहा ।

"नहीं पसन्द आयेगा तो रहेगी अपने बाप के घर ।" लवजी ने स्वाभाविक ढंग से कहा । वह मगन अमथा की लड़की का अवमूल्यन नहीं बल्कि अपने पुराने मकान का योग्य मूल्यांकन कर रहा था । देवू ने महसूस किया कि लवजी को ऐसा नहीं कहना चाहिए था । ईजू ने कहा भी –

"शांति का स्वभाव अभी तुमने नहीं देखा होगा लवजी भाई । वह तो ऐसी है कि हम दोनों को बेच आये ।"

"इसके पहले मैं स्वयं उसे बेच आऊँगा ।" लवजी ने ऐसे ही कह दिया । देवू को बुरा लगा । --

"क्या, जो मन में आता है बोलता रहता है? ऐसे कोई लेखक बनता है?"

"मैंने कब कहा कि मैं लेखक बनूँगा?"

"पत्र तो ऐसे ही लिखता है।"

"अब खाय लियो, बात बादमां करेव।" कहते हुए कंकू ने लपसी में घी उड़ेल दिया।

"अरे इतना घी। कैसे खाया जायगा? सब डाल देना था न।"

"घी तो अच्छी चीज होत है। छोटकै रहेव तसे कतना खाय लियत रहेव?" कंकू ने कहा।

"मैं छोटा था तो कितना अच्छा लगता था। मेरा वश चले तो मैं फिर से छोटा हो जाऊँ।"

नरसंग ओसारे में जूते उतारकर चौखट तक आये। लवजी की नजर उनसे मिली। पिताजी से मिले अभी मुश्किल से दो महीने ही हुए होंगे किन्तु लगता था जैसे सालों साल गुजर चुके हैं। पलभर के लिए तो उसकी इच्छा हुई कि उठकर वह चरणस्पर्श कर ले। किन्तु सबको बड़ा विचित्र लगेगा इसलिए उसने हाथ जोड़ दिये। देव ने देखा तो मुस्करा पड़ा।

"क्यों? माता-पिता को प्रणाम नहीं किया जा सकता?"

"किया जा सकता है, मजाक भी किया जा सकता है।"

"नासमझी हो रही है हाँ देवभाई।"

"अच्छा?" देव ने खाने की ओर ध्यान दिया।

"तुमहूँ क खाय लेय क रहा न?" कंकू ने नरसंग की ओर देखे बिना ही कहा। नरसंग ने जैसे सुना ही न हो लवजी से पूछा –

"परीक्छा ठीक रही भैया?"

"देखा?" यह प्रश्न मुझसे सिर्फ पिताजी ने ही पूछा। मुझे विश्वास था कि पिताजी ही मुख्य मुद्दे की बात करेंगे। हमारे प्रिन्सीपल ने एक बार पूरे क्लास से पूछा था – दुनिया में सबसे अधिक समझदार आप किसे मानते हैं? किसी ने विनोबा का नाम लिया तो किसी ने कृष्णमेनन का। मेरा नम्बर आया तो मैंने कहा – मैं जितने लोगों को जानता हूँ उन सब में तो मुझे मेरे पिताजी ही अधिक समझदार लगते हैं। हालाँ कि मेरे पिताजी ऐसा नहीं मानते होंगे। किन्तु इस बात को मानने वाले भी एक बुजुर्ग हमारे गांव में हैं।"

"कौन करसन बाबा?" देव ने पूछा।

"नहीं, मैंने तो धमाकाका का नाम लिया था। किन्तु मजा तो बाद में आया। हमारे प्रिन्सीपल को बहुत बुरा लगा।"

"क्यों, उन्हें समझदार नहीं कहा इसलिए?"

"नहीं, उन्होंने समझा कि मैं उन पर व्यंग्य कर रहा हूँ और धमाकाका का नाम काल्पनिक है। मैंने उन्हें विनम्रता से समझा दिया कि आप सोमपुरा आकर

देख सकते हैं। आपका अच्छा स्वागत होगा। हाँ तो बापूजी, मेरी परीक्षा अच्छी तरह से बीत गयी। मैंने सुना है कि पूरा गाँव आपको भगत कहकर बुलाता है। बहुत अच्छा। मुझे लगता है कि देवूभाई भी बड़े होकर भगत ही बनेंगे।"

एक तरफ छिपकर बैठी ईजू हँस पड़ी।

नरसंग को देखकर कंकू ने कहा कि मैंने तो समझा था कि लड़का शहर में पढ़लिखकर होशियार बनेगा।

नरसंग ने खाना खाते हुए कहा कि उसने सबको हँसाया तो क्या बिना किसी होशियारी के ही ?

"बापूजी, मैं आपके लिए एक बहुत ही अच्छी चिलम लाया हूँ। मेरे झोले में रखी है। मैं अभी आकर निकालता हूँ।"

"पिताजी ने तो तंबाकू पीनी बन्द कर दी।"

"एँ ?" लवजी को आघात लगा। वह कितनी उमंग से चिलम खरीदकर लाया था। खाना खाने के बाद पिताजी चिलम पियेंगे और शांति से खेतों को देखेंगे। पंछी इस डाल से उस डाल पर फुदका करेंगे और गिलहरियाँ डालियों पर चढ़ेगीं उतरेगीं। पिताजी की चिलम कभी बुझेगी नहीं। न तो बीड़ी जैसी हल्की और हुक्के जैसी कर्कश। सुन्दर-सी चिलम। अब किस काम की ?

नरसंग खाकर बाहर आये। देवू की खाट पर बैठे फिर बोले--

"लाओ, तुम्हारी चिलम देखूँ तो।"

लवजी को आश्चर्य हुआ। उसने तो मान लिया था कि पिताजी अब चिलम की ओर देखेंगे भी नहीं। वे मेरी भावनाओं को समझते हैं। मैंने कुछ गलत नहीं कहा था। मैं क्यों गलत कहूँगा भला ? खुद ही देखेंगे कि मैंने खरीदी है उससे अच्छी चिलम शायद ही मिले। सस्ती और सुन्दर।

नरसंग ने चिलम भरी। लवजी चूल्हे से अंगारा ले आया था। कंकू ने देखा—नरसंग तल्लीन होकर चिलम पी रहे थे।

देवू दुखी था – पिताजी जैसे आदमी भी यदि त्यागे हुए व्यसन को पुनः अपनाते हैं तो दूसरों पर क्या असर पड़ेगा ?

कंकू ने चिलम आलमारी में रखते-रखते उलटकर देखी। नरसंग ने सोचा – रोज तो नहीं कभी–कभी पिऊँगा।

बात मुहल्ले भर में पहुँच गयी। लवजी भाई अपने पिताजी के लिए लकड़ी की चिलम लाये हैं। उसके ऊपर चाँदी की पर्त चढ़ी है। चुंगी बहुत सुन्दर है। शाम को चार-पाँच जने चिलम का दर्शन करने आ पहुँचे।

पिताजी ने तंबाकू पीना छोड़ दिया था। फिर भी चूँकि वह स्वयं चिलम लाया है इसलिए अपना नियम भंग करके भी उन्होंने चिलम पी। लवजी को इसमें अपने प्रति नरसंग का वात्सल्य दिखाई दे रहा था।

जीवन और घेमर चिलम पीने लगे थे। धमाकाका की बारी अभी नहीं आयी थी। उन्होंने कहा—"मेरा बेटा। जैसे इन्द्रासन मिल गया है।"

देवू को उलझन घेमर ने समझ ली थी।

उसने देवूभाई की ओर मुस्कराते हुए देखा। जीवन को कुहनी मारते हुए चिलम धमाकाका को पकड़ा दी। फिर बोला कि नरसंगकाका की विशेषताओं को जितना वह समझता है उतना तो देवूभाई भी नहीं समझते।

यह सुनकर धमाकाका ने उसका विरोध किया। जैसे कह रहे हों कि तुझसे अधिक तो नरसंग से मैं परिचित हूँ। इस बात पर जीवन ने पिछली गर्मियों की एक घटना सुनाई, जिसके विषय में धमाकाका नहीं जानते थे।

दोपहर का समय था। सिवान के सारे खेत सूने थे। भूखे पेट हाथ में माला लिए बैठे नरसंग काका एक काछिन औरत की चीख सुनकर उठ दौड़ पड़े थे। नौजवान को भी लजाए ऐसी हाँक लगाकर बाड़ कूदते एक पलक में आम के तने के पास पहुँच गये।

काछिन तीस साल की स्वस्थ युवती थी। प्याज और रोटी खाती थी और फटे-पुराने कपड़ों में भी सुहाती थी। सभी उसकी इज्जत करते थे। कोई बुरी नजर से देखे तो उसके लिए वह बाघिन हो जाती। उस दिन उसका पति आम बेचने सारंग गया था। काछिन अकेली है यह देखकर दो आदमी कहीं से आ पहुँचे। उन्होंने सोचा होगा कि उसका मुँह बंद करके उठाकर जीवन के खेत के एक पलिये में ले जाएँगे। पर काछिन बड़ी सावध थी। पीछे से उठता हाथ देखा कि चीख उठी। पचपन वर्ष के नरसंग तीर की भांति दौड़े। उन दुष्टों को लगा कि भगत उड़कर आ पहुँचे हैं। उन्हें देखते ही भाग गये।

बाद में घेमर ने नरसंग चाचा की शक्ति की गवाही देती घटनाएँ सुनाईं। फिर धर्म और अध्यात्म को लेकर परस्पर कसौटियाँ हुईं। लवजी ने रामकृष्ण परमहंस द्वारा बताया गया हाथी और महावत का दृष्टांत सुनाया। इसके उत्तर में धमाकाका ने कहा कि असल नारायण तो आतमराम हैं। पहली बार उन्होंने जीवन और घेमर को चुप कर दिया था।

33

"एक लड़की मोटर लैके आयी है।"

"ना हो।"

"ना काहे हो? जाव देख आऊ देवूभाई के घर के पास खड़ी है काले रंग के मोटर। नान भरके, सुन्दर। मोटर तो ससुरी बहुत देखा मुला अस नाहीं।"

"अरे मुला, लड़कीया मोटर चलावत रही? का बात करत हो भले आदमी?"

"तो का झूठ कहित है? तुहार कसम .."

"कस है ? बीसेक साल के है कि नाहीं ?"

"अरे नाहीं । पन्दरा सोला के होये । कपड़ा अस की सर खुला । हम तो ऊ के बोली पर खुश होय गइन । का आँख पाइस है ? का आवाज है । पदमिनी अस रही पदमिनी अस । हमका देख के फट से गाड़ी रोक दिहिस । ऐ महाशय । जरा भगत के घर का रास्ता बतायेंगे ? ऊ बोली होत तो हम ऊके साथे बैठ के भगत के घर तक जाइत । बाकी जबरदस्त लड़की है । सुन्दर तो अस जैसे परी ।"

जैमिनी आयी हुई थी । उसको देखने वाले ही नहीं, न देखने वाले भी इसी प्रकार की बात कर रहे थे । छोटे बच्चों को जैमिनी से अधिक उसकी कार से आकर्षण था । काले चमकते रंग की कार पर रेत के कुछ कण जम गये थे । लड़के उस पर ऊँगली से आड़ी तिरछी रेखाएँ खींचते थे । या बाराखड़ी लिखते थे ।

लवजी खेत से आया तो जैमिनी का ड्राइवर उसे छोड़कर वापस चला गया । लड़के अपने अपने घर चले गये । ईजू और जैमिनी इस तरह बात कर रही थीं जैसे अरसे से परिचित हों । लवजी पर जैमिनी की प्रथम छाप अच्छी नहीं पड़ी थी । उसका मानना था कि मेहमान को विनम्र होना चाहिए । दो वर्षों के परिचय के बाद भी, अनेकों मुलाकातों के बाद भी, तरह-तरह की चर्चा और वार्तालाप के बावजूद जैमिनी अकड़ी हुई-सी ही दिखाई देती थी । जब भी एकांत में उसकी याद आती लवजी कहता-शी इज एरोगेण्ट । घमंडी लड़की है । इस तरह का व्यवहार करके वह स्वयं को अभिजातवर्गीय प्रदर्शित करना चाहती है । किन्तु उसे क्या मालूम कि आभिजात्य परिश्रमसाध्य नहीं होता । वंशगत अभिमान, सौन्दर्य और बुद्धि का अभिमान मिलकर ही अभिजात्य को जन्म देते हैं । यदि उसका यही रवैया रहा तो उसे कोई भी पसन्द नहीं करेगा । और क्या ? मेरे लिए तो किसी को चाहने का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता । एकाध वर्ष बाद शांति के साथ शादी हो जायेगी ..

बात सच है, अतिथि बनकर आदमी विनम्र हो जाता है । जैमिनी विनम्र, उससे भी अधिक सुन्दर और प्रिय लग रही थी ।

"मोस्ट वेल कम । सो नाइस ओव यू धेट केम अनएक्सपेक्टेडली । आय एम वेरी हेप्पी टु वेलकम यू मिस ।"

"थेंक्स ए लॉट ।"

ईजू देखती रह गयी । लवजी ने कहा –

"भाभी इतनी अंग्रेजी तो पढ़नी ही चाहिए थी कि हमारी बात समझ सको । मैंने इनका स्वागत किया है और अचीते आगमन के लिए अपना हर्ष व्यक्त किया है । इन्होंने मेरा आभार माना ।"

"थेंक्यू तो मैंने भी समझा ।" ईजू ने कमर पर से हाथ हटाते हुए शिष्टता से कहा ।

"वेरी गुड ।" जैमिनी खिलखिला उठी । लवजी के आसपास मोगरे-की-सी सुगन्ध फैल गयी ।

"आप सीधे अहमदाबाद से आयी हैं ?"

"नो । मैं और बड़े भाई साहब दो विदेशी मेहमानों को लेकर प्रजाभारती आये थे । मैं तुम्हारा गाँव देखना चाहती थी । बड़े भाई साहब ने राय दी की गाँव को अच्छी तरह देखना हो तो दो-तीन दिन तक रुकना पड़ेगा । नहीं तो फोटोग्राफ्स लेकर ही काम चला लो । पहले तो मुझे बहुत संकोच हुआ । लेकिन फिर साहस कर लिया । बड़े भाई साहब कहते थे कि तुम्हारे घर के लोग बहुत सहृदय हैं ।"

"यह मेरी भाभी कैसी लगी ?"

"वन्डरफुल ।" जैमिनी ने ईजू की ओर देखा । बोली – "अद्भुत ।"

शर्म के मारे ईजू के चेहरे की कोमलता और बढ़ गयी । उसके चेहरे की आभा जैमिनी के चेहरे की अपेक्षा भिन्न थी । लवजी का ध्यान न था । वह बोला –

"अभी मेरी माँ आयेगी । वे भी बहुत प्रेमालु हैं । आप यहाँ से जब अपने घर जाने लगेंगी तो उनकी आँखों में आँसू आ जायेंगे । मैं एक-दो महीने में यहाँ आता हूँ । हर बार जाते समय माँ रो पड़ती हैं । वे बहुत ही संवेदनशील हैं । किन्तु वे अपनी ही तरह से बोलेंगी । तो आप कृपया उनके शब्दों में छिपी भावनाओं को समझने की कोशिश कीजिएगा । मात्र अर्थों को ही नहीं । थैंक्यू ।"

"अब कोई सूचना देनी हो तो मेहरबानी करके संक्षेप में दीजिए । मुझे विश्वास है, मैं समझ जाऊँगी" – जैमिनी मुस्करा पड़ी ।

"यह तो मैं यजमानों का दायित्व निभा रहा हूँ । नहीं तो आपके यहाँ आकर आपको दुःखी करने में मुझे जरा भी संकोच न होता ।"

"ऐसा करने में एकाध बार तो सफल होइए पहले ।"

"यह भी मैंने यूँ ही कह दिया । नहीं तो मैं तो ऐसा प्रयास भी नहीं करूँगा ।" लवजी कह रहा था ।

कंकू के आने के बाद वातावरण थोड़ी देर तक गंभीर रहा फिर सामान्य हो गया । जैमिनी ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया था । कंकू बड़ी देर तक जैमिनी से छोटी-छोटी बातें पूछती रही थी ।

कंकू ने खाना बनाया । इतने में दरवाजा खोलकर देवू अन्दर आया । ईजू ने घूँघट निकाला तो उस ओर जैमिनी का भी ध्यान गया । उसने देवू की ओर देखा । वह जब तक ओसारे तक नहीं आ गया तब तक जैमिनी उसे निरीक्षक की तरह देखती रही । देवू ने धोती-कुर्ता पहन रखा था । कुर्ते की बाँह कुहनी तक मुड़ी हुई थी । स्वस्थ हाथ, सफाचट चेहरा, सिर के ऊपर प्राकृतिक रूप से काले, घने, छोटे-छोटे बाल, दाहिने हाथ में सुनहले चेन वाली घड़ी, बाये हाथ की अनामिका में लाल नंग की अंगूठी – यही सब वह देख सकी । एक का दूसरी वस्तु से संबंध था । इसी संतुलन का नाम तो सौन्दर्य है । और आँखें ? नजर मिलते ही जैमिनी ने आदर से हाथ जोड़ दिये ।

"कौन ? वीणाबहन की बहन, है न ?"

लवजी चौंक पड़ा । भाई को कैसे मालूम ? हमारी मुलाकातों के बारे में भी यह जानते हैं ?

जैमिनी ने संकोच से प्रणाम किया । देवू ने वैसा ही सहज प्रत्युत्तर दिया ।

"आप देवूभाई !" जैमिनी की देह में अचानक एक सिरहन पैदा हुई । लवजी के लिए यह द्वितीय आश्चर्य था । किन्तु इस बार संकोच करने की कोई आवश्यकता न थी ।

"दादी ने बताया था, सत्तावन के चुनाव में आपने बालूभाई के प्रचार में काफी मदद की थी । विशेष बात तो यह थी कि इतनी कम उम्र में भी आपकी बातें लोगों को सोचने के लिए बाध्य कर देती थीं ।"

"वीणाबहन से मैं मात्र दो-तीन बार ही मिल सका हूँ । किन्तु मैं कह सकता हूं कि उनके जैसी संस्कारी स्त्रियाँ बहुत कम होती हैं । न कोई अभिमान और न छिछलापन और नहीं पैसे के प्रति व्यामोह । समझदार भी बहुत । उन्होंने अहमदाबाद वापस जाते समय कहा था । हम दोनों तो जानती ही हैं कि इस बार ये दोनों हारेंगे । एक ही बार हारने के बाद इनका शौक पूरा हो जायेगा । इनका हारना ही इनके लिए अच्छा है ।" थोड़ा रुककर देवू ने कहा – "आपकी आँखों और नाक को देखकर मुझे लगा कि शायद आप वीणाबहन की छोटी बहन होंगी ।" .

"हाँ, मैं जैमिनी हूँ ।"

"जैमिनी ? अरे हाँ, एक बार लवजी ने यह नाम लिया था । याद आया – जैमिनी को भी कसरत पसन्द है ।"

ईजू किवाड़ के पीछे बैठी-बैठी बच्चों की तरह हँस रही थी । लवजी की इच्छा हुई कि जाकर हथेली से उसका मुँह ढँककर भाभी की हँसी रोक दे । इतने में जैमिनी स्वगत बोली, लवजी की ओर देखकर–

"व्हाट नॉनसेन्स"

"आय एम सॉरी ।" देवू ने कहा ।

लवजी तो किंकर्तव्यविमूढ हो गया था । वह नहीं चाहता था कि जैमिनी इस बात को जाने कि घर आकर भी वह उसकी बात करता है । किन्तु अब क्या किया जा सकता है ? यह तो ऐसी अभिमानी है कि अभी उठकर सारंग की ओर चल खड़ी हो ।

"संभव है मुझसे ही भूल हो गयी हो । लवजी ने बात की थी तो मैंने समझा था कि जैमिनी नाम का कोई लड़का होगा जो कसरत करता है । होगा कोई मित्र उसका । किन्तु आपका सप्रणाम और सुग्रथित बदन देखकर ऐसा लगा कि आपकी ही बात रही होगी ।"

"हाँ, वह जानता है कि मैं बाथ में जाती हूँ ।"

"यदि यह सच है और बात ही बात में छोटे भाई ने बड़े भाई से कह दी हो तो इसमें बुरा मानने की क्या बात है ?" देवू ने मधुरता से कहा ।

"आय एम सॉरी। मुझे बुरा नहीं मानना चाहिए था।"

लवजी ने महसूस किया – जैमिनी ने मजबूरी से क्षमा माँगो है। उसके मन के ऊपर का बोझ हट गया है। भाई में यह सहज शक्ति है। किसी के भी मन का समाधान करवा सकते हैं। नासमझी दूर कर सकते हैं।

देवू ने खाना खाया और पिताजी के लिए लेकर खेत पर चला गया। जैमिनी के लिए कोई पुस्तक लेने के लिए लवजी आया तो उसने देखा कि वह तो ईजू और कंकू के साथ बातों में लीन है। वह जाकर झूले पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद वह पानी पीने के लिए उठा तो देखा कि जमीन पर लाल गूदड़ी बिछाकर, हाथों का तकिया बनाकर जैमिनी सो रही है। और माँ पास में बैठी पंखा कर रही हैं। हवा भी लगे और मक्खी भी न लगे। माँ कल दोपहर में तो एकाध घण्टे सोई भी थीं। आज ऐसे हवा ही करती रहेंगी?

"कस भोली है, बिचारी।" कंकू इस तरह बोली कि लवजी सुन सके।

"भोली नहीं, बहुत होशियार है।"

"लो करो बात। जे भोला होय ऊ होशियार नाहीं होत का?"

"शायद ही कोई होता है।"

"अस लड़की कहाँ सड़क पर पड़ी मिलत है?"

जैमिनी उठ बैठी। छुप-छुपकर माँ-बेटे की बात सुनना उसे उचित नहीं लगा। और जब उसने यह देखा कि कंकू माँ पंखा डाल रही हैं तब तो उसे अपराध-बोध-सा होने लगा।

शाम को खेत में जाने का समय हुआ। लवजी जब घर से निकला तो वह सोच रहा था कि जैमिनी भी साथ चलने की इच्छा व्यक्त करेगी। वह उसे अपने साथ ले जायेगा। गाँव, चौक, खेत, सींव सब कुछ दिखायेगा और जैमिनी मुग्ध होकर सब कुछ देखती रहेगी। जैमिनी ने वास्तव में लवजी की ओर देखा भी इसी आशा से कि वह चलने के लिए कहे। किन्तु अचानक लवजी सचेत हो गया था। लोग दोनों को एक साथ देखेंगे तो क्या कहेंगे? तरह-तरह के प्रश्न अपने आप से पूछेंगे और अपने आप उसके उत्तर भी ढूँढ निकालेंगे।

"भाभी, तुम जैमिनी के साथ खेत में आओगी न?"

ईजू ने हाँ कहा। लवजी खेत की ओर चल पड़ा।

जैसे कोई मूल्यवान वस्तु छोड़कर जाना पड़ रहा हो।

जैमिनी बड़ी देर बैठी नरसंग से बात करती रही। बल्कि नरसंग को सुनती रही। पूछा कुछ नहीं।

बाजरे के पौधे कमर जितने बड़े हो गये थे। खेत दूर था। अचानक बाजरे के खेत से एक खरगोश निकलकर भागा। जैमिनी उठकर खड़ी हो गयी। खरगोश

की तेज चाल के बारे में उसने सुना था। लवजी भी उसके पीछे-पीछे आ पहुँचा। उसने जैमिनी को बताया कि कुछ लोग कैसे खरगोश का शिकार करते हैं।

"इतने सुन्दर प्राणी को मारना नहीं चाहिए। मैंने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी कि गाँव के लोग भी मांसाहारी होते हैं।"

जैमिनी अमराई की ओर जाना चाहती थी। इतने में इंजन के चलने की आवाज आयी। जैमिनी उधर आकर्षित हो गयी। लवजी ने उसके साथ साथ चलते हुए इंजन के बारे में बताना आरंभ कर दिया।

ईजू फुरसत पा गयी थी। आकर जैमिनी के साथ खड़ी हो गयी। लवजी नरसंग के पास बैठ गया।

"ई लड़की तुहरे साथे पढ़त है?"

"कॉलेज एक है परन्तु क्लास अलग हैं।"

"पढ़े माँ ठीक है?"

"होशियार है।"

"अपन गाँव देखेक मन भवा अच्छा है।"

"मुझे भी आश्चर्य होता है। मैं जब अन्तिम बार अहमदाबाद में मिला था तो यहाँ आने की कोई बात नहीं हुई थी। किन्तु आज अचानक आ पहुँची। प्रजाभारती से..."

"कौनो बात नहीं। प्रेम होय तौ आवे। बुढऊ जीयत रहें तो अमीचन्द सेट साल भर माँ एकाध दफा आवत रहें।"

लवजी को याद आया। अमीचन्द शेठ को 'जस्टीस ऑव पीस" की पदवी प्राप्त हुई थी।

शाम के छः बजे थे। हवा की गरमी खत्म हो गयी थी। ढाल से प्रवाहित पानी बाजरे के अलावा भी पश्चिम की सारी धरती को सींच रहा था। गौरैया, मैना और सतमैयों के झुंड पानी पी रहे थे और उसी में नहा रहे थे। इतने में बाजरे के खेत के पास के गड्ढे की ओर दो कौवे आये। उनके आने ही गौरैया और मैना भाग खड़ी हुईं। फिर कौवे भी कूद-कूदकर उसी में नहाने लगे। अपनी चोंच डुबाते और उसी में हिलाते रहते। लवजी ने सोचा यह नालायक कौवे पानी को खराब करके आनन्द ले रहे हैं। इनका बस चले तो शेष पक्षियों को देश से निकाला दे दें।

"बापूजी, ये कौवे मुझे कभी अच्छे नहीं लगते। यह मनुष्य के भीतर छिपी *चालाकी की याद दिलाते हैं। मोर अच्छा होता है। प्रेम का सौन्दर्य* इसी एक पक्षी में समा गया है। उसके रूप, उसकी आवाज, उसके नृत्य सभी में प्रेम छलकता रहता है। मोर की उम्र कौवों की अपेक्षा कम होती है किन्तु मुझे मोर *ही अच्छे लगते हैं।"*

जैमिनी नहीं समझ सकी कि लवजी क्या कहना चाहता है। नरसंग ने महसूस

किया कि लड़का किसी भयानक उलझन में है और वह कोई ऐसी बात करना चाह रहा है जो उससे कही नहीं जा रही। इन दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति प्रीत हो तो ? तो हमें क्या ? सब कुछ करने-कराने वाला तो ऊपर वाला है।

"मैं गाँव में जन्मी होती तो अच्छा था।" जैमिनी जैसे स्वगत बोली।

"तो आज तुमको जो अच्छा लगता है नहीं लगता"—नरसंग ने कहा।

"ऐसा क्यों कहते हो पिताजी ? मुझे तो यह सब आज भी अच्छा लगता है।" लवजी ने कहा।

"ऊ तो शहर माँ पढ़ गयौ तब से।"

लवजी निरुत्तर हो गया। पिताजी की बात सच थी। क्या वे इन सभी अनुभवों से गुजरे होंगे ? लवजी कुछ पूछे इससे पहले नरसंग ने कहना शुरू किया। जब वे जवान थे, बैलगाड़ी लेकर किराया कमाने अहमदाबाद जाते थे। जाते समय हर्ष की सीमा न होती। कहावत है कि घर छोड़ा कि सारे दुःख बिसार दिये। इतना किराया मिलेगा, इसमें से यह खरीदेंगे, वह खरीदेंगे, सपने देखने लगते। मगर माल बेचने में एकाध दिन की देरी हुई कि घर याद आने लगता। माधुपुरा में गाड़ियाँ खोलते, ढाबे में खाने जाते। उस समय सिनेमा सारे गूंगे होते। कभी नाटक देखने भी जाते। रात देर हो ही जाती। उस समय उस ओर पूरा परकोटा था। दरवाजे से बाहर निकलते कि सिपाही पूछता "हुकम सदर।" हम कह देते "रैयत"। फिर जाने देते। सड़क पर लालटेन के दीये। गाड़ी तक पहुँचकर बैल की पीठ पर हाथ फेरते तभी चैन आता। सो जाते खुले में। व्यापारी और दलाल ऐसे थे कि 'बहन" कहके बुलाते और "बहू" कहके खड़ा कर देते। पाँच पैसे की कमाई की खुशी जरूर होती पर लौटने से पहले ही घर की याद आने लगती। इसीलिए कह रहा था कि—

नरसंग रुक गये यह जैमिनी को पसंद नहीं आया। इस तरह पुराने अहमदाबाद का वर्णन सुनते वह कभी थकेगी नहीं, कभी नहीं।

कंकू भैंसों के लिए सानी लेकर दोहने आई। ईजू ने सिर पर से टोकरी उतारने में मदद की। जैमिनी वहाँ गई। बटलोई पकड़ खड़ा रहना उसे अच्छा लगा। लवजी खेत में सिंचाई के काम में हाथ बढ़ाने गया। देवू ने कहा : मुझे वहाँ आकर बैठना होगा तो मजदूर अकेला काम करेगा ! और जरूरत पड़ी तो आपको बुलाते देर नहीं होगी।

लवजी समझ नहीं पाया : आज सभी उसे "तू" के बजाय "आप" क्यों कहने लगे हैं ?

34

पिलवाई रोड स्टेशन से महुडी तक पैदल जाने में जैमिनी की अपेक्षा लवजी को अधिक दूरी महसूस हुई। लवजी के मन में दहशत थी कि रास्ते में उसके साथ चल रही जैमिनी का कोई मजाक न उड़ाये। साड़ी में आज वह बहुत खुबसूरत लग रही थी। वह सोचता हुआ चला जा रहा था। मैं जैमिनी को महुडी के पर्यटन में ले जा रहा हूँ यह सुनकर देवूभाई कुछ नहीं बोले थे। न हाँ, न नहीं। क्यों ? माँ ने तो सोच लिया था कि कोई मनौती होगी इसीलिए जा रहा हूँ। मैंने उनकी इच्छा उकसाना उचित नहीं समझा था। उन्हें भी तो सोचना चाहिए। आना हो तो किसी वाहन की व्यवस्था करके आया नहीं जा सकता था ?

सामने से इक्का आ रहा था। उसमें बैठा जैन परिवार अहमदाबाद से आ रहा था। जैमिनी एक ओर खिसककर खड़ी हो गयी। वह अपने हाथों में साड़ी समेटे खड़ी थी जिससे आँचल थूहर के काँटों में न उलझ जाये।

"यात्रा कर आये सेठ ?"

"हाँ भाई, तुम लोग भी मानता मानने जा रहे हो ?"

"हाँ, और सुखड़ी मिलती हो तो सवा दो रुपये का प्रसाद भी चढ़ाना है।"

"अरे प्रसाद तो सवा रुपये का भी चढ़ाया जा सकता है। देवता तो श्रद्धा के भूखे होते हैं।"

"हम भी भूखे हैं, आशा है कि सवा दो रुपये की सुखड़ी खाकर अघा जायेंगे। वहाँ से प्रसाद घर तो लाया नहीं जाता न ?"

"इसीलिए तो हम पूरे परिवार के साथ गये थे।"

"तब तो आप लोग अहमदाबाद के होंगे।"

"हाँ, तुम ?"

"मैं यहाँ का हूँ, सारंग के पास सोमपुरा का। यह बहन अहमदाबाद की हैं।"

'संबंधी होंगी।"

"अभी तक तो नहीं हैं।"

बैल ने इक्के को अपने आप खींच न लिया होता तो इक्केवाला आगे बढ़ने का नाम नहीं लेता। सेठ-सेठानी की तरह उसे भी इस युगल की बातों में आनंद आ रहा था।

लवजी ने हाथ उठाकर विदा कहा। सेठानी खुश थी। बच्चे पीछे मुड़-मुड़कर देख रहे थे।

"ऐसे मरियल बैल से इतना अधिक बोझ कैसे खींचा जाता होगा ? इक्का भी कैसे लँगडाता हुआ चलता है। "खड़खड़ाती और लँगड़ाती हुई चलती लढ़िया।" राजेन्द्र शाह की वह कविता पढ़ी है ?"

जैमिनी ने कोई उत्तर न दिया। लवजी ने चलते-चलते उसकी ओर देखा।

बुरा लगा हो ऐसा तो नहीं लगता तो फिर गंभीरता का क्या कारण है ? साड़ी का आँचल उसने अभी तक हाथों में पकड़ रखा था । अभी भी वह पिछले क्षणों के ख्यालों में डूबी हुई थी । वैसे भी यह थोड़ी स्वाभिमानी और अल्पभाषी तो है ही । स्वाभिमान को चोट पहुँची हो तो भी बतायेगी नहीं । इसकी जगह और कोई होती तो चुपचाप चलती ? और कुछ नहीं तो चूड़िया तो खनकाती ही । इसने ईज्‌ः भाभी से क्यों इतनी सारी चूड़ियाँ माँग ली हैं ? खनकेगी तो इसे भी अच्छा लगेगा । हाथ पकड़कर हिलाऊँ ? गुस्से हो जाए तो ? हो सकता है गुस्से न भी हो । हमारे मध्य ऐसा संबंध हो कहाँ है कि गुस्से हो जाये ? यह तो क्रोधित हो तब भी भीतर सुलगती रहेगी और बाहर से मौन रहेगी । अब आगे बात कैसे करूँ ? सहयात्री हूँ अतः मेरा उत्तरदायित्व है कि इसे खुश रखूँ ।

"बुरा लगा जैमिनी ?"

"अँ । क्या पूछा ?"

"ओहो । कोई बात नहीं । कुछ सोच रही हो तो सोचो । मैंने सोचा कि शायद बुरा मान गयी हो ।"

"किस बात का ?"

"अपनी दृष्टि से तो मैंने आपको बुरा लगे ऐसा कुछ नहीं कहा । किन्तु मैं लड़कियों की मानसिक स्थिति के बारे में बिल्कुल अनुभवहीन और अज्ञान हूँ । इसीलिए मैंने सोचा कि शायद बुरा लगा हो । अभी मैंने कहा था न . क्या कहा था ? . हाँ यही कि अभी तक तो हम संबंधी नहीं है ।"

"इसमें झूठ क्या है ?" जैमिनी का चेहरा निर्विकार था । लवजी सामने देखता हुआ चलता रहा । उसका विश्वास था कि जैमिनी उसकी बात का विरोध करेगी । उस विरोध में ऐसा भाव होगा जो उसे अच्छा लगेगा । बात आगे बढ़ेगी । किन्तु यहाँ तो प्रति प्रश्न है - इसमें झूठ क्या है ? इसका अर्थ तो यही हुआ कि हम अब तक संबंधी नहीं हैं और यह स्वाभाविक ही है ! उससे तो संबंधों की संभावना भी व्यक्त नहीं होती । किन्तु किन्तु मैं किस प्रकार का संबंध चाहता हूँ ? मैं जैमिनी की कैसी स्वीकृति या अस्वीकृति चाहता हूँ ? मगन अमथा की पुत्री शांति के साथ मेरी सगाई हुई है, अब शादी भी तय है । जैमिनी से इस बारे में बात नहीं हुई है । हो सकता है भाभी से इसने पूछा हो या भाभी ने स्वयं इससे जिक्र किया हो । भाभियों को देवर की शादी में ज्यादा ही रुचि होती है । होने दो । बुरा क्या है ?

"वह मंदिर ?" जैमिनी ने दायी ओर दिखाई दे रहे मंदिर की ओर संकेत किया ।

"हाँ, वह मन्दिर अवश्य है किन्तु जहाँ हम मानता मानेंगे वह मन्दिर दूसरा है ।"

"हम कैसी मानता मानेंगे ?"

"हाँ, हम तो मुसाफिर हैं, यात्री नहीं । उस सेठ से वार्तालाप का प्रभाव है । मानता नहीं किन्तु हम सुखड़ी का प्रसाद तो चढ़ायेंगे ही । आप आस्तिक हैं ?"

"मालूम नहीं ।"

"लेकिन मुझे मालूम है। लड़कियाँ मेरा मतलब युवतियाँ नास्तिक नहीं हुआ करतीं। वे अधिकांश चीजें स्वीकार करके ही चलती हैं।"

"आपने पहले मुझसे इस तरह की बात कभी नहीं की।"

"बुरा लगा?"

"बुरा क्यों लगेगा। मैं तो वास्तविकता की बात कर रही हूँ।"

"किन्तु मैं आपके साथ अमुक प्रकार से बात करूँ ऐसा तो आप चाहती ही होंगी?"

"अमुक प्रकार का मतलब?" जैमिनी ने ठंडेपन से पूछा।

लवजी ने बात बदलने के लिए कहा—"अब हम मंदिर की पवित्र भूमि में प्रवेश कर रहे हैं। यहाँ हमारी कोई अन्य मनोकामना पूर्ण हो या न हो, भूख तो मिटेगी ही।" बोल जाने के बाद लवजी चिन्तित हो उठा। "मनोकामना" और "भूख" जैसे शब्दों का इस्तेमाल न किया होता तो नहीं चलता? यह तो ठीक है कि जैमिनी का ध्यान इन शब्दों के अन्य अर्थों की ओर नहीं गया। शायद वह थक गयी है। तन की थकान का असर मन पर भी पड़ता है। पिलवाई रोड़ से इस ओर यह बहुत कम बोली है। घर की याद आ गयी होगी क्या? इसे अकेलापन नहीं लगना चाहिए।

लवजी ने मंदिर की महिमा का वर्णन किया। फिर दोनों ने जाकर प्रसाद-समर्पणविधि सम्पन्न की।

"चलो चाय-कॉफी पिएं।" प्रसाद चढ़ाकर मंदिर से बाहर निकलते हुए लवजी ने कहा।

कुछ भी पीने की इच्छा न होने के बावजूद वह उठ खड़ी हुई। मात्र इसलिए कि लवजी का आग्रह था। वह होटल के भीतर लवजी के पास खड़ी हो गयी। होटल वाला कौतूहल से उन्हें देख रहा था। जैमिनी को ध्यान भी नहीं था कि वह किसी के इतने नजदीक खड़ी है। लवजी का भी ध्यान उस ओर न था। उसने पूछा—

"अच्छी क्या मिलेगी? चाय या कॉफी?"

"दोनों।"

"चाय और कॉफी दोनों पीकर स्वयं ही निर्णय लो कि अच्छा क्या है?" होटल में बैठे, साफ सुथरे, शिक्षित दिखाई देने वाले एक ग्राहक ने कहा। वह महुडी का ही निवासी था। लवजी ने तुरन्त उत्तर दिया—

"एक वस्तु जितनी अच्छी होगी उतनी ही अच्छी दूसरी वस्तु भी होगी।"

होटल वाला खुश हो गया। उस ग्राहक की समझ में कुछ नहीं आया। थोड़ी ही देर में वह उठकर चला गया।

जैमिनी के आगे चाय का कप सरकाते हुए लवजी ने कहा—

"आपने देवता से क्या प्रार्थना की? मेरा मतलब क्या माँगा?"

"आपने यह प्रश्न पूछने में देरी नहीं की ?"

"पूछने की इच्छा तो बड़ी देर से हो रही थी। किन्तु...आप क्या जवाब देंगी यही सोचता हुआ मैं चुप रहा।"

"बताओ, मैंने क्या माँगा होगा ?"

"आपने कुछ माँगा ही नहीं होगा" सुनकर जैमिनी खुश हो गयी। लवजी अंतरमुखी हो गया। जैमिनी को देवता से प्रेम माँगना चाहिए। शायद यह लड़की ऐसी किसी चीज की याचना नहीं करेगी। ऐसी ही बातें सोच-सोचकर वह निराश हो रहा था। इसीलिए उसने कह दिया था—"आपने कुछ माँगा ही नहीं होगा।" क्या जैमिनी इसका मतलब समझी होगी ?

"क्यों हँस रही हैं ? मेरा मतलब यह है कि इसी प्रकार हँसते हुए प्रश्न का उत्तर भी तो दिया जा सकता है।" लवजी के चेहरे पर अभी भी सुबह की चमक थी।

"देयर इज समथिंग जेन्युइन इन यू मिस्टर चौधरी। सचमुच आपकी मौलिकता श्रेष्ठ है। मैंने देवता से जो माँगा था वह आपने बिल्कुल सही तरीके से ढूँढ़ निकाला।" इस "सही" शब्द के इस्तेमाल की आदत जैमिनी ने अभी-अभी सीखी थी। किन्तु लवजी का ध्यान उस ओर न था। वह तो यह जानना चाहता था कि किन शब्दों में जैमिनी ने देवता से क्या माँगा है। उसे इस बात से संतोष नहीं था कि उसका अनुमान सच निकले।

"मुझे अपनी प्रसंशा नहीं सुननी है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपने भगवान से माँगा क्या है ? यदि आपत्ति न हो तो कहिए।"

"कह तो दिया।" मैंने कहा था—है भगवान। मुझे माँगा हुआ भविष्य नहीं चाहिए। जो इष्ट हो वही हो। मैं जैसी हूँ ठीक हूँ। और जो भी होना होगा उसके लिए तैयार हूँ। जैमिनी की आवाज में आत्मविश्वास की खनक थी।

"वाह। बहुत अच्छे। मुझे क्यों नहीं सुझाई दिया ऐसा कुछ ?"

"आपके जैसे प्रतिभाशाली लोगों को भी मुझसे ईर्ष्या होती है ?"

"मजाक मत उड़ाइए।"

"आपका मजाक उड़ाना आता तो फिर पूछना ही क्या था ?"

"इसीको वाक्पटुता कहते हैं।"

"अब मुख्य बात पर आइए। आपने क्या माँगा ?"

"मैं जो माँगना चाहता था, वही न माँग बैठूँ इस भय से मैंने कुछ दूसरा ही वरदान माँग लिया। मैंने कहा हे भगवान मेरा एकान्त बनाये रखना।"

"मतलब ?" जैमिनी चौंक पड़ी।

"मतलब तो कुछ नहीं परन्तु..."

"आपको समझ पाना मुश्किल है।"

"मुझे समझने की आप कोई आवश्यकता महसूस करती हैं ?"

"यह प्रश्न कोई भी, किसी से पूछ सकता है । इसका कोई खास अर्थ नहीं होता ।"

"तो फिर हम बातें बन्द करके कॉफी पीते हैं ।"

"आप नदी की ओर चलने की बात कर रहे थे ।"

"धूप कम होने का इन्तजार कर रहा था । आपकी इच्छा हो तो चलें । लवजी उठ खड़ा हुआ ।" होटल वाला अब तक उनकी बातों को बड़े ध्यान से सुन रहा था । उसने सोचा भी नहीं था कि ये लोग इतनी जल्दी उठ जायेंगे । "ऐसा कीजिए, दो पान दीजिए । वापस आकर हम कॉफी पिएँगे । एक घंटे में तो नदी तक जाकर वापस आया जा सकता है । है न ?"

"वहाँ बैठें नहीं तो जल्दी भी आया जा सकता है ।" होटल वाले ने कहा ।

पूर्व की ओर गाँव से बाहर निकलते ही एक ढलान आती थी । गहराई में उतरती हुई राह थी और उसके दोनो ओर सूखी नंगी धरती...

"यह मुझे नहीं पसन्द आता ।" लवजी ने सामने की ओर संकेत करते हुए कहा । "नदी किनारे की धरती को विधवा की तरह नहीं होना चाहिए । जैसे पाँवों के बीच में सिर को छिपाकर बड़े-बड़े ऊँट बैठे हों ।" लवजी की उपमा जैमिनी के समक्ष साकार न हो सकी । उसे तो अच्छा लग रहा था ।

"यहाँ नदी का मोड़ दो घड़ी के लिए आँखों को आकर्षित करता है किन्तु इससे वृक्षों के अभाव की तो पूर्ति नहीं हो सकती ।" लवजी ने थोड़ी देर तक जैमिनी के उत्तर की प्रतीक्षा की फिर अचानक खड़ा हो गया । वह परेशान दिखाई पड़ रहा था । फिर बोल पड़ा—"आपको तो मैं क्या कह सकता हूँ जैमिनी, आप मुझे विदूषक समझती हैं या इस स्थान का गाइड ? आपका मौन मेरे कौतूहल को, मेरे उत्साह को, *इस भूमि के प्रति मेरे पक्षपात* को ठंडी *जहरीली* फूँक मारकर नष्ट कर देता है । मुझे पहले मालूम होता तो मैं आपके साथ नहीं आता, या तो आपको लेकर यह नहीं आता । आप मुझे समझती क्या हैं ? उत्तर नहीं देंगी । आप तो ऐसा मत सोच लीजिएगा कि मैं यों ही बोलता रहूँगा । इस मुक्त एकांत, विशाल मैदान में यदि आप मेरी आवाज को कोई महत्त्व नहीं दे सकतीं तो हृदय के एकांत क्षणों में तो आपसे अपेक्षा ही क्या की जा सकती है ?"

जैमिनी ने गंभीरता से कहा – "चलिए ।" फिर उसके कंधों पर हाथ रखके उसे सामने की ओर मोड़ दिया । लवजी को उसका यह व्यवहार स्वाभाविक लगा । उसे अब प्रत्युत्तर की कोई अपेक्षा न थी ।

रास्ता निरंतर गहरा होता था । सामने से कोई आता हुआ दिखाई पड़ेगा, अब दिखाई पड़ेगा [illegible] बार दिखाई [illegible] नदी के बीच होना ही चाहिए । [illegible] भागों में विभाजित हो गया । लवजी ने जैमिनी की [illegible] असली राह पर चल पड़ा ।

"आपको ऐसा नहीं लगता कि हम डूबते हुए चल रहे हैं ? पानी की तरह ही यदि हवा की सतह होती तो हम लोग अब तक आकंठ डूब गये होते ? हैं न ?"

"सच है ।"

"बस, इसी तरह आप कुछ बोलती रहें, यह आवश्यक है। आज कुछ बेचैनी, एक ऐसी विहवलता का अनुभव कर रहा हूँ जैसी पहले कभी नहीं अनुभव की । मैं बोलकर उससे मुक्त होना चाहता हूँ ।"

"शायद मैं भी इसी कारण, कुछ भी नहीं बोल पा रही हूँ ।"

"मुझे लगा आप थक गयी हैं, ऊब गयी हैं ।"

"इसके विपरीत, मुझे तो ऐसा लगता है मैं बिना थके हुए इसी तरह बहुत दूर तक, बहुत दूर तक चल सकती हूँ ।"

हाँ, जैमिनी ने जो कहा उसमें कोई अर्थ है – बहुत अर्थ है । नहीं...नहीं... यह खिले हुए पारिजात पर हिमवर्षा नहीं कर सकती। यह गंभीर है, उदासीन नहीं। यह सोचती है, उपेक्षा नहीं करती । यह मुस्कराती है, मजाक नहीं करती ।

"है, देखो पानी है । मैंने सोचा था कम से कम इतना पानी तो होगा ही ।"

"मैंने तो बहुत कुछ सोचा था ।"

"जो है, वही काफी है । अभी तो हम दूर हैं । बाद में देखिएगा ।"

लवजी का आनंद अगले ही क्षण नष्ट हो गया। घाट की दायीं ओर भैंसे थीं । एक स्त्री कपड़ा धो रही थी । दूसरी स्त्री जांघों तक घाघरा चढ़ाये खड़ी थी। शायद पानी में घुसने की तैयारी में थी । या जो भी हो । लेकिन ये यहाँ क्या कर रहीं हैं। नदी के घाट पर गायें पानी पीने आयें तो तो ठीक किन्तु ये भैंसे चलता है । दुनिया है न ? सब चलता है । आसपास में शेर हों तो वे भी पानी पीने आयें । आने दो। लवजी को लगा कि यदि इस समय नदी के प्रवाहित जल में अपना प्रतिबिम्ब देखे तो उसे अपना नहीं, शेर का चेहरा दिखाई पड़ेगा ।

"वाह । एक वृक्ष तो है । थोड़ी देर बैठते हैं ।" नदी का प्रवाह वहाँ से पन्द्रह–बीस कदम पर रहा होगा । "वे भैंसे और स्त्रियाँ चली जायें तो हम चलेंगे ।"

"आप कह रहे थे कि ऊपर मंदिर में कोई मूर्ति है । चलना नहीं है ?"

"आप थक जायेंगी ।"

"आपका सहारा लेकर चढ़ जाऊँगी ।"

"आप नहीं जानती कि आप मुझे प्रेरित कर रही हैं या उत्तेजित ।"

"मैं नहीं जानती । आप भी नहीं जानते । चलिए ।"

जैमिनी आगे थीं लवजी पीछे । टेकरे की रचना विशाल शिखर के आकार की थी ।

"ऊँचाई के प्रति बहुत आकर्षण है, जैमिनी ?"

"आपके साथ आकर यह भी नहीं सीखूँगी ?"

"हम जितने ढलान के नीचे हैं उतना ही ऊपर चढ़ना पड़ेगा। तब कहीं मातृका-मूर्ति दिखाई देगी। वहाँ से लगेगा हम आकाश में खड़े हैं।"

जैमिनी रुक गयी।

"थक गयीं क्या ?"

"क्या मालूम। आप आगे चलिए।"

"मैं पीछे था, अच्छा था।"

"मैं फिसलकर गिरूँ तो पकड़ लेने के लिए ?"

"आपको बुरा न लगे तो मैं "हाँ" कहूँगा। ऐसी लालसा तो थी। नदी का सौंदर्य, मंदिर की पवित्रता और एक खंडहर की विस्मृति की वेदना यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें प्रेम की लालसा जाग्रत हो उठे तो अस्वाभाविक नहीं है।"

मंदिर के पास ढालान में एक वृद्ध पुरुष लेटा हुआ था। और कोई न था।

"आप जिसकी बात कर रहे थे, यही मूर्ति है न ?" जैमिनी ने दीवाल से सटाकर रखी मातृका की मूर्ति को स्पर्श करते हुए कहा।

"आप कला की पारखी हैं। है न सजीव, गतिशील और संवेदनशील शिल्प ! कोई कहे तो सात दिन तक पालथी मार कर इस मूर्ति के आगे बैठा रह सकता हूँ।" लवजी ने जैमिनी के कंधे पर हाथ रखा। वह चौंकी नहीं। फिर दोनों मंदिर के भीतर गये। लवजी ने विष्णु-श्लोक गाया। जैमिनी आँखें बन्द किये खड़ी रही। फिर दोनों मंदिर के पिछले हिस्से में आकर खड़े होकर नदी का घुमावदार प्रवाह देखने लगे। हवा धीमी थी। ऊँचाई भयोत्पादक थी। दोनों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ रखा था। जैसे एक के गिरने पर दूसरा सँभाल लेगा।

35

भीमा के आँगन में करसन बुढऊ की हाजरी में आज माना मुखिया पछतावा कर रहा था कि देव के आग्रह करने पर भी वह जीप में बैठा नहीं, एक अवसर खोया। आज साबरमती आश्रम में, रविशंकर महाराज के वरद्हस्तों से गुजरात राज्य का उद्घाटन था। हीरूभाई और रमणलाल के साथ देव भी जीप में गया था।

गाँव की गली में भाग गये फूलजी को खोजने घमा इस ओर आया था। पंचों के बीच बैठने की लालसा जाग उठी। पर करता क्या ? फूलजी को घर ले जायेगा, कल को रोटी और थोड़ा गुड़ देगा। धीरे धीरे खायेगा। थोड़ा सा खायेगा, फिर एक ओर रख देगा। फिर खायेगा। देर तक ऐसा करता रहेगा। आँगन छोड़कर हटेगा नहीं।

मगन अमथा सोमपुरा आये हुए थे। रणछोड़ और छना के बीच व्यापार का कुछ लेन-देन था। वहीं निपटाना था। वे छना के घर गये हुए थे और

करसन के घर पर लोग बैठे इन्तजार कर रहे थे। धमा फूलजी को छोड़कर आ पहुँचा, बैठा। जेठा का छोटा लड़का चाय ले आया। जेठा ने लड़के को छना के घर भेजा। वह दौड़ता हुआ गया और वापस आ गया। आ रहे हैं। तस्तरी ले-लेकर लोग पीने लगे। धमा चाय पी रहा था, और सब छना-मनसुख की बुराई कर रहे थे तब रणछोड़ और मगन अमथा आये।

मुखिया होकर क्या-क्या परेशानियाँ मोल लीं इस विषय में माना अपने अनुभव सुनाकर पछतावा करने लगा। जेठा ने कहा : "किसने कहा था बेटा बबूल पर चढ़ना?"

—सुनते ही सब खिलखिलाकर हँस पड़े। परन्तु मगनजी का चेहरा उतरा हुआ था। छना ने ताना मारा था। जिसका दामाद दूसरी लड़की को लेकर घूमता फिरता है वह आदमी अपना बड़प्पन दिखाकर छना को दबाने आया है? एक ही साँस में जितना सुनाया जा सकता था, सुना लेने के बाद ही छना मगनजी की बात सुनने के लिए रुका। कटौती के पैसे लेकर ही वह चुप हुआ। अब वह बड़ों की तरह सलाह दे रहा था—

अगर समझदार आदमी हो तो अर्मा से नरसंग भगत को सचेत कर दो। नहीं तो लवा इतना होशियार है कि जितनी बार घर आयेगा, एक न एक को इसी तरह लाता रहेगा। बोलने में पक्का है। जब वह माइक में बोलता है तो हजारों आदमी सुनते हैं। भगत को समझा दो कि लड़के को ज्यादा दुलार न करें। और मेरी मानो तो तुरन्त शादी कर दो। उसके बाद भी वह किसी को लेकर घूमे तो हम जैसे भी उसे डांट सकते हैं। और तो भैया मैं आपको ज्यादा क्या समझाऊँ?

ज्यादा रणछोड़ ने समझाया। कल रात को उसने लवजी और जैमिनी को साथ में आते हुए देखा था। कसम खाकर बोला। शहर में तो लड़के-लड़कियाँ ऐसे घूमते हैं। पेट रह जाय तो गिरवा देते हैं। इसलिए चिन्ता की तो कोई बात नहीं। किन्तु यदि यह लवजी से शादी करना चाहती हो तो? तो तुमको सगाई तोड़ देनी पड़ेगी। ऐसा करना हो तब तो कोई बात नहीं। नहीं तो आज ही कहने की बात कहते जाओ। अब भी शायद बात बिगड़ी नहीं होगी।

मगन अमथा भला संबंध तोड़े? तब तो दिन पश्चिम में निकलेगा। क्या इसीलिए टीका देकर सगाई की थी? रणछोड़ के घर तक आते-आते तो उनका पारा गर्म हो चुका था। वे बड़बड़ाने लगे थे—"पृथू भगत होंगे बड़े आदमी। पर देवू का अदला-बदली बियाबिया है क पड़ा रहा। उनके घरे टीका मां लड़की देय वाले तौ हम अकेले हन।"

"मुला भवा का?" धमा ने चिन्ता प्रकट की।

"पहले बैठ कै चाय पीवो, फिर बात बताऊ।"—जेठा ने कहा।

"बात मां तौ कौनो दम नाहीं न। ऊ तो लवजी के साथ ऊ लड़की आयी है ऊ.."

"बालूभाई के साली आय ऊ तौ, जमु! बालूभाई नाहीं खड़े रहं पिछले चुनाव मां?"

"जेठा काका सब जानत हैं । उनसे पूछ लेव । मगनजी, भगत से पूछे क जरूरत नाहीं न ।"

"अस कटाच्छ न बोल हाँ रणछोड़िया, नाहीं तौ हमसे खराब केहू नाहीं न ।"

"जेठा, तू सुधरा, पर तेरा स्वभाव नाहीं सुधरा भैया ।" करसन बुढऊ ने कहा ।

"तुम मरवौ तब सुधरे ।" जेठा ने शांति से कहा । धमा हँस पड़ा ।

माना ने कहा इस बारे में मगनजी को कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है । फालतू बवाल खड़ा हो जायेगा । समय आने पर करसन बाबा कह देंगे और नरसंग तो ऐसे हैं कि इशारे में ही समझ जायेंगे । जेठा और धमा ने भी माना का समर्थन किया किन्तु इससे मगन अमथा को संतोष न हुआ । वे तो आज और अभी सब कुछ स्पष्ट कर लेना चाहते थे । बात उड़ते हुए टींबा तक जाये और लोग मजाक उड़ायें यह उससे सहन नहीं होगा । उन्हें समझाना ही चाहिए । उन्हें ऐसा लगता हो कि उनके लड़के में कोई दोष ही नहीं है । और दोष न भी हो तो भी आदमी का विश्वास ही क्या ? अच्छे-अच्छे लोग भी फिसल जाते हैं ।"

थोड़ी देर सोच-विचार कर मगन अमथा ने आग्रह किया कि नरसंग को अभी बुलाकर पाँच पंचों के बीच बात कहनी चाहिए ।

पधी नहीं चाहती थी कि पंचायत उसके आंगन में हो किन्तु उसे बातों का मजा लेना था । नरसंग को बुलवाया गया । वे आये और मगनजी के पास खाट पर बैठ गये ।

– सब चुप थे । अंत में नरसंग को ही पूछना पड़ा –

"का बात है बुढऊ ?"

करसन बुढऊ ने खखारकर गला साफ किया । फिर थूक निगलकर बोलना शुरू किया –

"तुम तौ नरसंग पिथू बुढऊ की तरह हाथ मां माला लैके, घर-बार लड़का क सौंप के सब जवाबदारी से छूट गयो है । लेकिन भैया थोड़ा बहुत सोचै क चाही । समझ्यो ? आज हमका देखौ, जरूरत पड़े पर हम आजौ रणछोड़िया का दुई बात कहित है । आपन फरज आय । आपन लड़का पाप करे तो पाप अपने का लागै । हमका तौ का मालूम, पर मगनजी ने कहा कि तुहार लड़का कौनो लड़की भगाय लावा है ।"

"बाँदर सौ बरस के होय जाये मुला गुलाटी न भूले ।" – नरसंग ने धीरे से किन्तु दृढ़ता से कहकर करसन को चुप कर दिया ।

"हमरे बुढऊ क बाँदर कहत है, ई का देखो, बड़ा भगत बना है ।" पधी अन्दर से गुर्रायी ।

"भाभी, तुम चुप बैठो । आदमी के पंचायत मां तुमका का है ?" जेठा बोला ।

"और ई तो कहावत है । नरसंग दूसर का बोले है । करसन बाबा के पंचाइत करे के आदत कै बात करिन है ।"

"ई तो समझा । पर नान भरे लड़का मां अस ऐब देखा जात है ? जीका पीलिया भवा होय ऊका सब पीला देखात है । लवजी और जमु एक कॉलेज मां पढ़त हैं । हमारे दामाद कै दोस्त हैं बालूभाई । यह उनकी साली है । प्रजाभारती तक आयी रहा । मिलै चली आयी । काल दूनौ जने महुडी दरसन कर गये रहा ! लवजी तौ कहत रहा कि आज जीप जात है, जाय क होय तौ जाव । पर ऊ नाहीं गयी । ऊतौ टींबा देखे कै बात करत रही । ऊ लड़का के मन मां काहै ई जाने बिना हम ऊ कै बुराई करें तो अपने मन कै पाप आय ।"

"देखौ भाई नरसंग, हम तौ अस काम के बीच मां पडित नाहीं । तुहंर घर की तरफ के ऊँगली उठावे तो हम ऊँगली तोड़ डाली । ई तो खुद तुहार समधी बैठे की...... ।"

"समधी तो शहर मां रहे हैं । उनका तौ मालूम होय क चाही की उहाँ लड़का-लड़की साथ घूमत हैं ।"

"शहर मां घूमत हैं, इहाँ नाहीं । और अपने कै तो आपन रिवाज देख क है ।"

"रिवाज कै बात रिवाज कै दिन । तुम शादी करिहौ वह दिन हमार लड़का सज कै आये । और कौनो बात से डरै क जरूरत नाहीं है । चिन्ता मत करौ । और बिना भूल कै हमका शरमाऊ न ।' कहकर नरसंग उठ खड़े हुए । स्फूर्ति से चले । पुस्तकालय के चौतरे पर सात-आठ लड़के बैठे थे । हरजीवन आम के पत्तों से तोरण बना रहा था । लवजी बड़े दरवाजे से कूड़ा बुहार रहा था । जैमिनी हाथ में अखबार लेकर बाहर निकली । नरसंग से नजर मिलते ही दोनों हाथ जोड दिये । नरसंग ने धीरे से उत्तर दिया । मन शांत हो गया ।

"अरे, आओ, नरसंग काका ।" माधव ने कहा—

"आज गुजरात राज्य की स्थापना हुई है ।"

"ले, पिताजी को इतना भी नहीं मालूम क्या ?" लवजी ने कहा ।

"तो तुम सब का करत हो ?" नरसंग ने गली में ही खड़े-खड़े पूछा ।

"बस तोरण बाँध रहे हैं । लड़कों को गुड़ बाँट रहे हैं और यदि जैमिनी बहन गीत गायें तो सुनेंगे ।"

"जरा घर जाय कै आइत है ।"

"तो फिर आप आयें तभी कुछ शुरू करेंगे ।" माधव ने कहा ।

"क्यों ? मेरे पिताजी को अध्यक्ष बनाने है क्या ?"

"अध्यक्ष तो करसन बुढऊ क बनाऊ ।" कहते हुए, नरसंग चले गये ।

नारण ने सुझाव दिया—करसन बुढऊ को सभा का अध्यक्ष और अतिथिविशेष धमाकाका को बनाया जाये ।

"गाँव का आदमी ही गाँव में अतिथिविशेष !" लवजी हँस पड़ा । किन्तु तुरन्त ही उसे अपनी गलती समझ में आ गयी । यह गाँव सबका अपना भले ही बन सका हो किन्तु इसने घमाकाका को कभी नहीं अपनाया ।

सभी लोग आ चुके थे । सभा की तैयारी हो चुकी थी ।

"नारण, तुम आज के कार्यक्रम की भूमिका समझाना । माधव तुम आभार-विधि करना । और हरजीवन तुम..." नजर मिलते ही लवजी ने धीरे से वाक्य पूरा किया, "इसी तरह हँसते रहना ।"

"जैमिनी बहन गीत गायेंगी न ?" माधव ने पूछा ।

"मुझे गाना बहुत अच्छा तो नहीं आता ।"

"राष्ट्र-गीत तो आता है न ?" लवजी ने पूछा ।

कार्यक्रम प्रारंभ हो गया । जैमिनी ने गीत नहीं ही गाया । लड़कों को गुड़ बाँटा गया । फूलजी गुड़ लेकर चौक में खड़ा-खड़ा कूदता रहा ।

"वह लड़का स्टील रनिंग कर रहा है ? किसने सिखाया होगा उसे ?"-जैमिनी ने पूछा ।

'भगवान ने ।" लवजी ने धीरे से कहा । फिर भी घमा ने सुना । लवजी ने घमा को स्टील-रनिंग का अर्थ समझाया ।

फूलजी अब एक ही पाँव पर कूद रहा था, जल्दी जल्दी ।

"इन दिनों उसकी आदत पड़ गयी है । घंटे तक नहीं थकेगा ।"

करसन बुढऊ चले गये । प्रौढ़ों में सिर्फ घमाकाका बचे थे । वे रह-रहकर इंजन की तरह स्थिर एक ही जगह दौड़ रहे फुलजी को देख रहे थे ।

"जैमिनी, यह हमारे घमाकाका परिचय पाने योग्य व्यक्ति हैं । और सब तो ठीक किन्तु ये गाने बहुत अच्छा हैं । बहुत अच्छा मतलब, बिना सुने नहीं समझ सकती । इस किसान के गले में इतना अधिक दर्द है यह मेरे लिए भी आश्चर्य की बात है ।"

'घमाकाका, गाओ न वह गीत-संसार में सदा दुखःसुख...।" हरजीवन ने कहा ।

"तुम लोगों ने इनसे वह गीत नहीं सुना होगा । एक बार इन्होंने मेरे पिताजी को सुनाया था । याद आयी रे बचपन की यादें ।"

"वह, "बड़ों की भूल से " वाला ?"

घमाकाका ने जिस उत्सुकता से पूछा था उससे लवजी को कुछ उम्मीद नजर आयी थी । उसने आग्रह किया । अंत में जैमिनी भी बोली, "हाँ दादा, मुझे भी संगीत में बहुत रुचि है । और पुराने गीतों को सुनने का हमारे घर में सभी को शौक है । बहुत शौक । गाइए तो अच्छा है ।"

घमा ने खँखारकर गला साफ किया । पहली पंक्ति मन ही मन दुहरायी । दीवाल का सहारा लिया और गाने लगे-

याद आयीं रे बचपन की यादें...
जैसे जीवन के खुल गये वादे...बचपन की यादें ।
फूलों जैसे हँसते-खिलते
और पवन-से लहराते थे ।
पढ़ते थे, गाते थे
हरदम मस्ती में मदमाते थे
देते थे विद्या नकार रे ।...बचपन की यादें ।
कुछ भी देते बोल, नहीं चिन्ता थी
नहीं किसी का डर, न अहंता थी,
घावों की पीड़ा न थी
और नहीं था सोचविचार रे । बचपन की यादें ।

आगे याद नहीं आया। धमा की आवाज दर्द भरी थी। गीत पूरा हो गया। किन्तु कोई कुछ बोला नहीं। सब जड़वत् बैठे थे । किसी के हाथ-पाँव भी नहीं हिल रहे थे । मात्र फूलजी गली में पूर्ववत् वहीं खड़े दौड़ रहा था । बस...दौड़ रहा था।

धमा की बन्द आँखों से बहते हुए दो आँसू उसकी ठोड़ी तक आ पहुँचे। कोई कुछ न बोला । हिला भी नहीं ।

फूलजी खड़ा-खड़ा दौड़ रहा था ।

अंतरवास

1

नंगे बच्चे भी आकर सुभीते से बैठ गये थे। कुछेक के पास कपड़ों के अलावा ओढ़ने के लिए पिछौरी भी थी। जवानों-प्रौढ़ों के कंधों पर कुल मिलाकर पाँच शाल गिनी जा सकती थीं। परन्तु भवाई के नचवैये ने दूसरी ओर सबका ध्यान खींचा। प्रेक्षकों की अगली पंक्ति में बैठे एक नंगे बच्चे का ठंड के कारण ठिठुर गया मूतना देख, वह उछल पड़ा : "अबे, सभा में छछुंदर ले आया?"

मुँह के आगे ढाल लाकर उसने लजाने का नखरा किया। उस पर सब समझ गये। वह बच्चा बिलकुल गरीब घर का नहीं था पर शाम के वक्त उसने अपना जाँघिया धोया था, वह सूख नहीं पाया था। गीला जाँघिया पहनकर भला रेत में बैठा जा सकता है? और अब तो ठंड भी नहीं लग रही थी, सब सटकर बैठे थे। रजका नामक घास की क्यारी हो देख लें।

भवाई का खेल देखने में मज़ा आ रहा था। बड़ी फांद और सूंढ़ वाले दुःखभंजक गणेश की स्तुति हो, भूंगल और तबले की झड़ी हो या शंभू नायक की सलाम – सब कुछ मनोरंजक था इन प्रेक्षकों के लिए। गत वर्ष जो देखा था उसे दुबारा देखकर खुश होने की आदत थी उन्हें।

बुजुर्गों में से कौन-कौन भवाई देखते आया है उसका पता लगा लेने के बाद कुछ नौजवान भवाइयों के साथ ताल देने लग गये थे–"ता थेई ता थेई ता था, रे भल्ले भैया..."

नाचना बंद करके, उड़ी हुई धूल की परवाह किये बिना, उस जूठन नामक विदूषक नचवैये ने बिना ताल, केवल लय के साथ गाया :

> बल्ख बुखारे का बादशा शेख उसेन हमका नाम,
> उठ फकीरी ले चले, जूठन धराया नाम।

जूठन ने अपनी पीठ खुद थपककर "वाह वाह" की, प्रेक्षकों ने तालियाँ बजाईं। जूठन ने उन्हें सराहा।

दरी पर बैठे शंभू नायक खड़े हुए। चार वर्ष तक नौकरी का स्वाद चखकर वे फिर से यह भवाई मंडली लेकर आये थे। जूठन ने अपना भेस भूलकर शंभू नायक को बखाना। नायक ने हाथ जोड़कर प्रेक्षकों के प्रति सिर झुकाया। उस क्षण जूठन कुपित हो गया :

"अबे तुम हमको सलाम नहीं ठोकता और उनके सामने झुकता है तो हम तुमको जमीन पर से उतार देगा।"

जमीन पर से उतरकर जाना कहाँ ? जा, गाँव के बरगद पर जा, किसी की खाट पर बैठ जा, जा गाँव के भैंसे पर चढ़ जा।

शंभू नायक जूठन को बताते हैं कि बरगद, खाट, भैंसा ये सब जमीन पर हैं। जूठन यह सह नहीं पाता : "तुम बी जमीन पर और हम बी जमीन पर, यह कैसे हो सकता है ? साले, तुम भी जमीन पर और हम बी जमीन पर !"

जूठन ने सभी संप्रदायों के देव-देवताओं का नाम लेकर अपने विशिष्ट अवतार-कार्य का गौरव किया। उस रसप्रद लम्बे सम्बोधन के बाद अपने भले जन्म के क्षण का उल्लेख करने के साथ नाचने लगा। सारे वाद्य बज उठे। ता थेई ता था, रे भल्ले भैया, ता थेई ता थेई...

जूठन का खेल एक घण्टा चला। उसके बाद लाल बटाऊ-छेल बटाऊ का भेस शुरू हुआ।

तभी देवू आया।

शंभू नायक ने खड़े होकर स्वागत किया, जो अधिकांश प्रेक्षकों को पसंद आया। परंतु खुद देवू को यह नापसंद था। वह यहाँ सम्मान पाने नहीं आया था। मनोरंजन के लिए भी नहीं आया था।

देवू बेचैन था। माँ और ईजू के बीच बोलाचाली हो गयी थी। बिना किसी कारण के देवू ने कभी सोचा भी नहीं था कि माँ और ईजू इतनी झक पकड़ लेंगीं, दोनों अपनी बातों पर इस तरह अड़ जाएँगी। ईजू की बातों में कंकू ने घमंड देखा था। कंकू ने कहा था कि मूलजी पटेल का घर पहले कैसे चलता था यह बात तो सत्ताईस का पूरा समाज जानता है। ईजू ने जब से होश सँभाला, मायके को सम्पन्न ही पाया था। वह अपने भाई की बातें सहेलियों से बताती तो उसका सिर अभिमान से उन्नत रहता। यद्यपि उसकी माँ ने भी उसे बताया था कि जब से हेती का पाँव घर में पड़ा तभी से उनका भाग्य चमका है। किन्तु इस समय वह कुछ भी स्वीकार करने के लिए तैयार न थी। अपने मायके वालों का बचाव करते हुए वह सास से कुछ उलटी-सीधी बातें कर गयी थी –

"मालूम है, तुमने बहुत बचत की है, वह तो..." "बस अब चुप रहो" देवू चीखा था : "बहुत हो चुका।"

जैसे कोई नया घर भहरा पड़ा हो। या कोई भरा-पूरा वृक्ष टूटकर गिर पड़ा हो, खुद देवू को लगा कि उसकी आवाज बहुत बुलंद थी। वह धीरे से भी तो बोल सकता था। दोनों को समझा सकता था। उन्हें हँसा सकता था। लेकिन उसके बाद जैसे तीनों की जीभें चिपक गयी हों। घर में स्मशान की सी शांति फैली थी। यदि वह उठकर सिवान चला जायेगा तो इन दोनों के बीच की दूरी और बढ़ेगी। नवम्बर के अंतिम दिनों से वह घर में ही सोने लगा था। पिताजी ने कई बार कहा था – *"ठंठी में ठिठुरने से तो अच्छा है घर में ही सो रहा करो भैया।"* यह

तो उनके कहने की रीति थी। माँ एक दिन पिताजी से कह रही थी – भगवान ने सब कुछ दिया है। अब तो बस घर में एक छोटे से बच्चे की जरूरत है। देवू घर में सोने लगा था। कांति रोज शाम सारंग से अखबार ले आता था। आज ईजू ने पता नहीं अखबार कहाँ रखा था। किसी से कुछ भी पूछने की इच्छा नहीं हो रही थी।...माँ ने ही ईजू को सिर पर चढ़ा रखा था, परन्तु ऐसी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि वह इस प्रकार...गाँव के चौक से भवाई की आवाज आ रही थी। देवू की इच्छा हुई कि जाकर खेल बन्द करवा दे। लेकिन मैं कौन होता हूँ बन्द करवाने वाला ? बड़े, बूढ़े, जवान, बच्चे सब बैठे होंगे। ऐसी कौन सी आफत आ पड़ी है ? मैं घर में किस शोक में बैठा हूँ। जाऊँ।

"माँ जरा दरवाजा बन्द कर लेना। मैं आता हूँ।" देवू उत्तर सुनने के लिए खड़ा रहा। थोड़ी देर में कंकू उठी।

"बहू तो बिना कहे चली गयी। सुनैव ऊ कै बात ?"

"बचकानी बुद्धि और क्या !"

"हम सब समझित है। मुला कोई बाहर क आदमी सुनै तो यही सोचे न कि बहू के आगे सास कै कुछ नाहीं चलत।"

"मैंने यदि उसको डाँटा होता तो बात बढ़ जाती। फिर तुम्हीं मुझे फटकारती।"

"नाहीं नाहीं, बोला नाहीं जात भैया। जादा बोलै मां लाभ नाहीं न। एक आँख से हँसाऊ, दूसरी से रोवाऊ। तुम एक बार डौटेव कस चुप रहे गयी। जाव-जाव एकाध खेल देख आऊ। देखो, बहू गयी है, सबेरे तक न बठ रहेव।"

"मैं तो अभी आता हूँ।"

किन्तु देवू तुरंत वापस आ नहीं सका। देवू वहाँ पहुँचा तो लोगों ने उसका सत्कार किया। उसे देखकर घेमर भी पुस्तकालय के चौतरे पर आ पहुँचा। थोड़ी देर में नारण आ पहुँचा। रणछोड़ और कांति दोनों छैलछबीले का भेस देखने आ पहुँचे थे। जसमा ओडण की भूमिका के प्रारंभ होते ही हीरा ने लीली के साथ लड़के को भेज दिया।

भवाई हो रही थी। रणछोड़ अपने सपनों में खोया हुआ था। जसमा और सिद्धराज गीत गा रहे थे –

> "जसमा तू तो महलों की रानी
> ऐसी झोंपड़ी तुझे न सोहाय रे।"
> "महलों में तो रानी रहै
> ऐसी झोंपड़ी ही मुझको सोहाय रे।"

आसपास बैठे हुए लोग भवाई की प्रशंसा करते जाते थे। कभी-कभी इधर-उधर की बातें कर लेते थे। देवू चुपचाप खोया-खोया सा बैठा था। उसकी कोई अज्ञात व्यथा सिद्धराज और जसमा के बीच बराबर-बराबर विभाजित हो गयी थी। एक-एक क्षण गुजर रहा था और उनके मध्य दूरी बढ़ती आ रही थी। क्या राजा के

भीतर मात्र मोह था ? गहरी भावना नहीं थी ? तब तो जसमा की जिद भी ठीक ही थी । नारण सिद्धराज के प्रति अनुचित शब्दों का इस्तेमाल क्यों कर रहा है ? वह बहुत कामुक तो नहीं दिखायी पड़ रहा था ।

खेल खत्म हो गया था । जसमा चिता में खड़ी थी । देवू खड़ा हो गया। चिता जल रही थी । सब दुखी दिखायी दे रहे थे । शंभू नायक ने हाथ जोड़कर सबसे कहा – सती माँ की पूजा कीजिए, अपनी मनोकामना की पूर्ति का वरदान माँग लीजिए । बोलिए दाता लोग। बोलो मेरे बाप—बोलो ! पुरुषों के हाथ जेबों में पहुँचने लगे । देवू ने भी एक रुपया दिया । रणछोड़ ने सवा दो रुपये दिए । सती माँ गाँव भर को आशीर्वाद देकर मंदिर की ओर गली में खो गयीं ।

बच्चे और स्त्रियाँ अपने-अपने घर चली गयीं । प्रौढ़ लोग भी इधर—उधर होने लगे । वेमर भी बच्चे को छोड़कर वापस आ गया था । देवू के साथ पाँच—छः आदमी अभी भी पुस्तकालय की फर्श पर बैठे थे । शंभू नायक उन लोगों के पास आ पहुँचा – उसने पहले महंगाई की बात की फिर देवू से कहा कि गाँव भर के प्रत्येक घर से कुछ न कुछ दिलवा दें । देवू ने कहा – 'यह तो सब गाँव का रिवाज ही है नायक । तुम कल सुबह पाँच बुजुर्गों से पूछ लेना, यह उन्हें और तुम्हें दोनों के लिए शोभनीय बात है ।'' नारण ने समर्थन किया । बुजुर्गों के विषय में अपनी राय जाहिर किये बिना ही रणछोड़ खड़ा हुआ । सामने दिवार के पास पेशाब करके लौट आया, बोला :

"उन अभागों का क्या करना है ? मैं तो नहीं मानता कि उन सालों की जेब कट गयी होगी ।"

वेचर और वीरा सहकारी मंडली के सामान को खरीदने के लिए कलोल गये थे । ऐसी कौन सी चीज है जो सारंग में नहीं मिलती ? और उन्हें कलोल जाना पड़ा । वहाँ जाकर उन्होंने गाड़ी में जेब ही कटवायी न ? मंडली के तीन सौ रुपयों का नुकसान हुआ ?

"तेरे बुढऊ क्या कहते हैं ?" नारण ने पूछा । गत सितम्बर में मंडली की सामान्य सभा में माना, रणछोड़ आदि ने करसन बुढऊ को प्रमुख बनाने में महत्व-पूर्ण भूमिका निभाई थी । इस चीज को ध्यान में रखकर ही नारण ने आगे कहा– "हकीकत में प्रमुख को चाहिए कि इस नुकसान को अपने सिर पर ले । उनकी अनुमति से ही तो वे लोग गये होंगे न ?"

"प्रमुख की अनुमति और जेब के कट जाने वाली बात दोनों को एक मत करो ।" देवू ने कहा – "जाओ नायक, तुम्हारा काम तो कल अपने आप ही हो जायेगा ।" नायक आशीर्वाद देता हुआ चला गया । रणछोड़ फिर से मूल मुद्दे पर आया – "इस बात का कोई न कोई निर्णय हम आज ही ले लें । तुम कहो तो मैं उन दोनों के दो—दो झापड़ ठोककर पूरे गाँव के सामने ही कह दूँ – खा दो साले डेढ़—डेढ़ सो दोनों जन । वहाँ क्या झख मारने गये थे ?"

"इसके लिए सामान्य सभा बुलायी जानी चाहिए।" देवू ने कहा—सारे सदस्य मिलकर तय करेंगे। सभी को यदि लगेगा कि जेब सचमुच कट गयी तो छोड़ देंगे।"

"देवू भाई, यह निर्णय तो व्यवस्थापक समिति भी ले सकती है।"

"जरूर ले सकती है।"

"तुम क्या सोचते हो?"

"मैं यह सोच रहा हूँ कि बेचर और वीरा दोनों तीन सौ रुपये लायेंगे कहाँ से? उनके लिए यह बहुत बड़ी रकम है।" देवू खड़ा हो गया था।

"तो मेरे बाबा भी तिजोरी लेकर नहीं बैठे हैं कि खोल दें—और तुम ले जाओ तीन सौ रुपये।" रणछोड़ गुस्से में बोला।

"तू जरा धीरे से बोल। रात के दो बज रहे हैं।"

"तो यहाँ किसका डर लगा है?"

"डर मुझे है। लोग इकट्ठे हो जायेंगे और उनकी नींद खराब हो जायेगी।" देवू ने गली की ओर देखा।

"तुम तो कुछ बोलोगे नहीं बड़े नेताओं की तरह! जेब को कटे हुए एक महीना हो गया और फैसला अभी तक नहीं हुआ।"

"फैसला मुझे नहीं, समिति को करना है। मैं समिति के नौ सदस्यों में से एक हूँ।" वह घर की ओर चल पड़ा।

"मैं जानता हूँ, तुम सब मेरे बाबा पर डाल देना चाहते हो। लेकिन यदि ऐसा सोच रहे हो तो भूल कर रहे हो। करसन बुढऊ को आज तक कोई भी धोखा नहीं दे सका है। और न दे सकता है। वे प्रमुख बन गये हैं इसीसे यदि तुम्हारे पेट में दर्द हो रहा हो तो मैं कल ही उनका त्यागपत्र लिखकर दे दूँ।" कहते हुए रणछोड़ ने बीड़ी सुलगायी। माचिस के जलाये जाने की घटना देवू अनुभव कर रहा था। उसने यह भी देखा था कि माचिस की तीली जब तक जल नहीं गयी, रणछोड़ ने उसे छोड़ा नहीं।

"त्यागपत्र यदि तुझे ही लिखकर देना है तो आज ही लिखकर दे दे न।" नारण ने हँसते हुए कहा।

"इन फालतू बातों में समय नष्ट करने से अच्छा है कि चलो सो जायें।" देवू घर की ओर चल पड़ा। नारण और रणछोड़ का विवाद चल ही रहा था। सुनने वाले अंत तक खड़े रहे।

घर का दरवाजा खुलने का इन्तजार करते समय देवू को अचानक याद आया—आज धमा काका क्यों नहीं दिखाई दिये? रामलीला या भवाई देखते समय तो वे अवश्य होते हैं। क्या उनकी रुचि खत्म हो गयी है? भले वे खेत में चले गये हों किन्तु अब तक उनके कान में भवाई की आवाज गूँजती रही होगी, वे सो नहीं सके होंगे। अब खेती करना, भैंस की देखभाल करना, खाना, पकाना और फूलजी

का पालन–पोषण। यही कार्य हैं उनके। पहले तो जेणी भी उनकी मदद कर देती थी। किन्तु अब उसका आदमी भी घर पर ही रहता है।

ठंड बढ़ रही थी। देवू ने फिर से किवाड़ खटखटाया। "माँ!" कंकू उठकर आयी, "अतनी देर तक बैठ रहा जात है? दिन निकले क आवा।"

तीन बजे थे। देवू कुछ न बोला। नीचे जूते उतारकर ऊपर पहुँचा। उसकी खाट पर ईजू सोई थी। वह क्षणभर खड़ा रहा। खिड़कियों से भीतर जा रहे प्रकाश में मात्र एक आकार का ही आभास हो रहा था। ईजू ने रजाई या चादर के बजाय देवू की शाल को ओढ़ रखा था।

दूसरी खाट को गिराने बिछाने से इतनी रात आवाज होगी, वह बहुत दूर तक सुनाई देगी। वह धीरे से बैठ गया। ईजू को शाल से ठीक से ओढ़ाकर लेट गया। अनजाने में ही वह ईजू की ओर को करवट से लेट गया।

देवू को अभी भी याद था कि उसने शाम को किस तरह डाँटा था। डाँटना स्वाभाविक भी था। उसे पश्चात्ताप नहीं हुआ। ईजू के प्रति कुछ रोष भी था मन में। इस समय वह सो रही थी और उसका एक जीवंत स्पर्श प्राप्त हो रहा था। इस ईजू और दोपहर वाली ईजू के बीच कोई संबंध नहीं था। स्पर्श की उष्मा में दोपहर की घटना लुप्त होती जा रही थी। वह उत्तरदायित्वपूर्ण संबंध था। इस संबंध का उत्तरदायित्व ही शरीर पर था।

सोया भी जा सकता है...। देवू का बायां हाथ ईजू की पीठ की गर्मी को महसूसता हुआ जाकर उसकी चोली में खो गया था। ईजू ने निंद्रा में ही उसे सीने से चिपका लिया। उसके सूखे हुए केश देवू की ठुड्डी को छू रहे थे। सुगंध के नाम पर मात्र स्वच्छता थी। निंद्रा की विवशता और जागृति की निर्दोषता...... किन्तु स्पर्शजनित उष्मा दो अस्तित्वो को एक में विलीन कर देने के लिए तत्पर थी। नींद ही नींद में ईजू का हाथ उठकर देवू के हाथ पर आ चुका था। उसके बाद वस्त्रों का प्रतिबंध तोड़कर दो जीव एक हो खो गये। एक दूसरे में विलीन हो गये। वातावरण की सर्दी कमरे के बाहर ही रुक गई थी।

मुश्किल से दो घंटे ही वह सो पाया था। आँख खुली तो देखा छ बज चुके थे। ईजू निश्चल होकर सो रही थी। उसे पाँवों तक शाल से ओढ़ाकर देवू ने ईजू के बालों को अपने हाथों से व्यवस्थित किया। उसकी हथेली को लेकर अपने गालों से छुआया और वैसे ही बैठा रहा...

क्या यह सचमुच सो रही है? उसके चेहरे पर निंद्रा की संतुष्टि के अतिरिक्त किसी प्रिय वस्तु की उपलब्धि की भी तुष्टि है। या ये मेरे अपने मन की भावनाओं का प्रतिबिंब है? हाँ, यह भी एक अनुभव था। उसका आनंद अभी तक मौजूद है तो भविष्य में भी रहेगा ही।

चोली के उपर का बटन खुला हुआ था। देवू ने बन्द करना चाहा तो ईजू

के गालों की लालिमा बढ़ गयी। उसकी आँखें खुलीं, फिर मुँद गयीं। इससे पता चल गया कि वह सचमुच शरमा गयी है।

जाग रही है फिर भी सो जाना चाहती है। देवू खाट पर से उठ जाना चाहता था किन्तु रुक गया। अपनी गोद में पत्नी का सिर ले लिया। ईजू उसके सीने तक खिसक आयी और देवू की कमर में लिपटती हुई बोली—उस दिन कह रहे थे न कि सुबह जल्दी हो गयी। आज मेरी इच्छा हो रही है कि रात फिर से आ जाती। भले फिर चौबीस घंटे का दिन हो जाता।

"पगली। यह तो ठीक है कि ये जाड़े के दिन हैं। नहीं तो गर्मी में तो अब तक धूप निकल आती थी। चल उठ।"

"उठती हूँ। मुझे नींद आ रही है। मैं तो अभी सोऊँगी।" ईजू ने देवू की कमर को कसकर पकड़ लिया।

"सोने का यह तरीका बड़ा अच्छा है।"

"तुम्हें जाना हो तो जाओ न।"

"तुझे यों ही लिपटाये हुए उठा ले जाऊँ?"

"तो किसने कहा था कि उठाकर गोद में लिटा लो?"

"तू तो मूर्ख है।"

"कल शाम को हो गयी थी। इस समय तो समझदार लग रही हूँ।"

"देख उस मकान पर "

सुनते ही ईजू उठकर सीधी बैठ गयी। देवू ने वाक्य पूरा किया—'मोर बैठा है।"

वह हँस पड़ी। खड़ी हुई। आलस्य त्यागकर उसने बालों का जूड़ा बनाया। साड़ी ठीक की। फिर जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ उतर गयी। कंकू खंभे का सहारा लेकर दातून कर रही थी। चौंक पड़ी। ईजू के साथ नजर मिलते ही बोली "हम सोची कि कौन नाक-भरके लड़का अस कुदत-कूदत उतरा है?"

"तो हम कहाँ बड़ी हो गयी?"

अच्छा लगा। सास को बहू का यह वाक्य बहुत अच्छा लगा। इस वाक्य में कल शाम की भूल की स्वीकृति भी थी। और सबसे अधिक अच्छी लगने वाली बात जो थी वह यह कि बहू उमंग में थी। जहाँ चार बरतन होते हैं वहाँ टकराहट भी स्वाभाविक ही है। कंकू ने हाथ-मुँह आँचल से पोंछा और भैंस दुहने चली गयी। ईजू भी दातून करने लगी। आज वह बहुत खुश थी।

ईजू ने दातून करके चूल्हे पर चाय रख दी थी। कंकू ने आधा दूध दहीं के मटके में डाल दिया था और अब भगवान के दीपक के लिए रुई की बाती बना रही थी। देवू अभी भी खड़ा-खड़ा दातून चबा रहा था।

"पूरी दातून चबा डालोगे तो जीभ कैसे साफ करोगे?"—ईजू ने कहा। देवू से ईजू ने कंकू के समक्ष इतना खुलकर पहली बार बात की थी।

सचमुच आधी दातून चबा डाली थी उसने। देवू बोला—"पानी"

कंकू ने लोटा भरकर दे दिया। देवू ने घर से बाहर जाकर मुँह धोया। खखारा। पति की खखार सुनकर ईजू का सीना फूल गया। उसने लम्बी-सी साँस ली।

देवू लोटा रखने गया तो देखा कि माँ हाथ जोड़े भगवान की फोटो के आगे खड़ी हैं।

"आपने एक अच्छी शुरूआत की माँ।"

"भैया, तुहार बाप रोज टोकत रहें। वे तो फुरसत माँ हैं। दिन भर माला फिरावत हैं। हम लोग थोड़े दिन भर बैठे रहित है। अब तो बहू ने भी एक दिन चिराग जलाइन रहा...।"

"वह तो मनौती रही हो तो ही"

"ऊ तो ठीक। हमहूँ कुछ खोय जात रहा तौ भगवान क घी के दीया मानत रहिन। लेकिन तुहरे बाप कहत हैं कि माना करै माँ भगती नाहीं है। तो ठीक है। बिना माने करब। वैसो सबेरे-सबेरे भगवान के नाम लिहिसे दिन अच्छा बीतत है। देखौ न, काल बहू के बोलाचाली होय गयी।"

"इसमें तुम्हारो गलती कहाँ थी?"

"भाई गलती के देखत है? लोग तो यही समझिहैं कि सास-बहू लड़ै लागीं। हम तौ भगवान से यही बिनती करित हैं कि और चहै जौन दुःख दे देव पर घर मां मेल राखेव।"

देवू से आँख मिलते ही ईजू की आँखों से आँसू की दो बूंदें टपक पड़ीं।

2

इन्जनवाले कमरे से यूरिया खाद की बोरी निकाल कर देवू उसकी सिलाई तोड़ रहा था। नरसंग भगत पास में ही खड़े थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि जब गेहूँ के पौधे एक-एक बीते के हो गये हैं तो भला अब खाद डालने से क्या लाभ? देवू ने समझाया यूरिया खाद ऊपर से डालने पर भी घुलकर पानी के साथ पौधों की जड़ों में पहुँच जाती। देखना, फसल पके तो।

"पूरी बोरी काहे खोल डालेव?"

देवू ने पिता की ओर देखा। पहले तो वह समझा ही नहीं। समझ में आते ही वह हँस पड़ा। उनका अंदाज था कि उसमें से आधी खाद बच जायेगी। अड़तालीस किलो तो एक एकड़ के लिए भी काफी नहीं है। किन्तु इन्हें समझायें कैसे? वह कुछ नहीं बोला। नरसंग पास ही बैठ गये। टोकरी में रखी हुई यूरिया के चमकते हुए दानों ने भगत का मन मोह लिया था। उन्होंने दो-तीन बार खाद को हथेली में भर-भरकर उसके स्पर्श का सुख लिया। देवू टोकरी लेकर खड़ा हुआ तो नरसंग साथ-साथ चलते हुए बोले—

"लाऊ, हम छिटक देई।"

"मैं कर लूँगा। फिर मशीन के पास कौन बैठेगा?"

"मशीन मां अस कुछ नाहीं होत।"

नरसंग ने खेत के एक पाले में खाद छाँटकर ही दम लिया। देवू जानता था कि पिताजी क्यों बड़े उमंग से खेती का काम करते हैं? पूरी जिन्दगी इन्होंने जो काम किये हैं, शौख से ही किये हैं। कभी फताकाका की तरह हिम्मत नहीं हारे हैं। वे आज भी बेगार ही करते हैं। घेमर को फटकारते हुए देवू ने कहा भी—"तेरे बुढऊ तो मेरे बुढऊ की अपेक्षा बड़े ही हैं। अभी भी वे हल और चरसा हाँके यह ठीक है!"

घेमर ने विस्तार से समझाया कि वह भी पिता के प्रति अपने कर्तव्य को समझता है। उसने भी एक बार बरसात और जाड़े भर फता को काम में हाथ नहीं लगाने दिया था। किन्तु फुरसत में बैठे फता हमेशा घेमर के काम में मीनमेख निकालते रहते। खट्टी डकारें आती थीं। डॉक्टर माने के पास गये थे, डॉक्टर ने फता को दूध पीने की सलाह दी, दवाई नहीं दी। घर आकर सारा मुहल्ला सुन सके उतनी ऊँची आवाज में फता ने डॉक्टर माने की निंदा की। लकड़ी गढ़ना छोड़कर मनसुख मुतार ने दूर से फता की बात का समर्थन किया। दूध पीना तो छोटे बच्चे भी जानते हैं, डॉक्टर का काम तो दवाई देना है। खेत में पहुँचकर फता बड़बड़ाता रहा। मेरा बेटा डाक्टर, मुझे समझाने लगा – बिना हिलाए अन्न भी जल जाता है। उस डाक्टर मानिये से तो वे बूढ़े वैधराज अच्छे। यह तो ससुरी ऊँची दुकान फीके पकवान। ऐसी स्थिति में घेमर ने सोचा कि पिताजी फालतू रहेंगे तो यही करते रहेंगे और सचमुच बीमार हो जायेंगे। काम करेंगे तो थककर चुपचाप बैठे तो रहेंगे?

देवू को मानना पड़ा। अलग-अलग लोगों को अलग-अलग तरीकों से सुख मिलता है। पिताजी को माला फिराने में संतोष प्राप्त होता है। फताकाका को काम में खुशी मिलती है और करसन बुढऊ को शराब की बोतल में ही सुख दिखाई देता है। आश्चर्य की बात तो यह है कि दादा और पौत्र दोनों पीते हैं जबकि भीमा को व्यसन नहीं है। जेठा का कहना है कि भीमा ने कभी अपना कोठा दूषित नहीं किया। उसकी पत्नी विश्वासघाती है। सारा मुहल्ला जानता है कि पधी अपने ससुर के साथ सोती थी। अब बड़ी होशियार बनती घूमती है। रणछोड़ दो वर्ष से दलाली करता है, किस्मत सुधर गयी है। दलाली में जोखिम भी क्या है? इस साल तो रणछोड़ कोई अन्य व्यापार भी करना चाहता था? करेगा ही। किन्तु सहकारी मंडली के प्रमुख की जगह इस बार करसन बुढऊ को नहीं रखना चाहिए था। ऐसे माटी के लोंदे का क्या काम। बेचर वीरा की तीन सौ रुपये की समस्या अभी सुलझी नहीं है। वीरा कहता था कि करसन बाबा ने हमसे पचास रुपये की माँग की थी। इतने दे दें तो हम तीन सौ की जिम्मेदारी से बरी कर दिये जायेंगे। बेचर तो तैयार भी था। वीरा पूछने आ गया था। व्यवस्थापक समिति की बैठक बुलाई जानी चाहिए। बात खत्म हो। बेचर का काम यदि ऐसा

ही रहने वाला हो तो ऐसे व्यर्थ के मंत्री किस काम के ? प्रारंभ में ही भूल हुई। "प्रथम ग्रासे मक्षिका" वाली बात। पहले ही अच्छी तनखाह देकर समझदार मंत्री की नियुक्ति की गयी होती तो ऐसी अवदशा न होती। बेचर को तो कोई सलाह दी जाये तो वह तो सुनने के बजाय उल्टी हमारी भूल निकालने लगे। क्यों न निकाले ? हमने ही भूत के हाथ में मशाल थमा दी है। अब इसका कोई तो अंत लाना ही पड़ेगा। माधव को स्कूल की नौकरी में जो वेतन मिलता है उतना तो उसे मंत्री बनाकर दिया जा सकता है। एकाध वर्ष नुकसान जायेगा। फिर तो सब ठीक हो जायेगा न ? माधव हिसाब-किताब साफ रखेगा। अनावश्यक खर्च भी नहीं करेगा। पब्लिक के काम में कंजूस आदमी अच्छे होते हैं। खाद की अंतिम डलिया भरकर नरसंग दे गये। वे सोच रहे थे देवू खाद अधिक डाल रहा था। एक थेली खाद तीन बीघों में भी नहीं डाली जा सकती।

वे कुछ बोले नहीं। कहता हूँ तो मना नहीं करते और करते हैं मनमानी। खड़े रहे। फिर पनिहार को ठीक से पानी देने के लिए सूचना देने लगे।

उसने जवाब दिया कि क्यारियों में ठीक से पानी पहुँचा रहा हूँ दादा। मुझे कहाँ घर से पानी देना है जो जल्दबाजी करूँ ? पनिहार चौदह वर्ष का लड़का था। नाम था रामा। टींबा के किसी ठाकरडा का लड़का। खानापीना और सौ रुपिया दो जोड़ी कपड़े। बस यही थी उसकी मजदूरी। नरसंग को लड़का पसन्द आ गया था। ईमानदार, मेहनती और वाचाल।

"दादा, देवू भैया क कह देव कि हमरी ताई जूता लाय देय।"

"जूता ? अरे तू निरोनो करनी कि जूता पहनबी ?"

"सँभाल कै पहनब। दुई साल न चलाई तौ हमार नाम रामा नाहीं।"

"अरे, मुला तुझे जूता लावे क कहाँ बात भई रहा ?"

"दादा, तुम मना ने करौ तो देवू भैया तौ आजै लाय देय।"

"अरे पागल, पहले नाप देय क पड़त है। फिर मोची जूता बनाय कै देत है।"

"तब तो दादा तुम सारंग के चौक के खबैं नाहीं किहौ। उहाँ दूई दुकान हैं। दस-दस जूता लटके रहत हैं। अपने जाय कै खड़े रही तो झट से ऊ अपने पाँव मां फिट कर देय।"

यह सुनकर देवू खुश हो गया। "फिट कर देव" का शब्दप्रयोग उसे पसन्द आया। रामा ने गुजराती भी नहीं पढ़ी है। फिर अंग्रेजी शब्द का प्रयोग करता है।

"अरे तू फिट करना कहाँ से सीख आया ?"

रामा हँस पड़ा। क्यारी भर गयी थी। पानी बन्द कर दिया। पाँव से भीगी हुई मिट्ठी को छुड़ाते हुए उसने कहा—

"ई तुम मशीन के पुर्जा फिट करे के बात नाहीं करते व ?"

"बराबर, अब तो तुझे एक जोड़ा नहीं दो जोड़े जूते लाकर देना पड़ेगा।"

"नाहीं भाई साहब, एकै जोड़। बहू सस्ता वाला"

नरसंग कुएँ की ओर चले गये थे। उन्होंने देवू को भी बुलाया। नास्ता आ गया था।

"जा रे रामा तुझे बहुत भूख लगी हो तो खाकर आ। मैं क्यारी भरता हूँ।"

"बाद में। पहले तुम जाव।" रामा बाद में ही खाता था। उसका कारण था। एक तो बाद में जो बचता था सब खा जाता था। दूसरे बाद में खाने से दूर बैठना नही पड़ता था। यद्यपि भेदभाव देवू को पसंद न था और न नरसंग को ही।

ईजू हौज के पास खड़ी-खड़ी इधर ही देख रही थी। देवू खाली बालटी लेकर उधर गया तो ईजू ओट में चली गयी। ससुर की उपस्थित में वह कभी भी देवू से बात नहीं करती थी। उससे नजर मिलते ही देवू ने महसूस किया कि वह कुछ कहना चाहती है। तो आयेगी ही अभी क्यारी की ओर।

हाथ धोकर देवू भी नरसंग के पास खाने बैठा। यह क्या ? लोटे में दूध और मटकी में मट्ठा। मट्ठा रामा के लिए और दूध हमारे लिए ? आज निश्चित ही खाना इसी ने परोसा होगा। मा कभी भी ऐसी गलती नहीं कर सकती। देवू ने भात और मट्ठा ले लिया। पिताजी की ओर दूध सरका दिया। नरसंग की आधी-सफेद मूँछे फरक उठीं। उन्होंने देवू की ओर देखा और मटकी का सारा मट्ठा अपनी थाली में उंडेल लिया-"अस अमृत अस माठा छोड़ के अतनी टेम दूध के खाये ?" नरसंग ने सुड़कना शुरू कर दिया। देवू ने पीछे कोई आवाज सुनी। चूड़ियों की आवाज है यह जानकर उसने पीछे घूमकर देखा। घूंघट निकाले ईजू खड़ी थी। कुछ कहने के लिए खड़ी है तो बोलती क्यों नहीं ? बोलेगी ही। देवू खाने लगा।

कहीं हँसी न निकल जाये इस प्रयास में, ईजू ने बोलना चाहा किन्तु आवाज में हँसी की मात्रा आ ही गयी-

"दादा का आज शनिवार नहीं था ?"

नरसंग ने थाली नीचे रख दी। देवू हँस पड़ा। फिर तो नरसंग को भी हँसी आ गयी। तो यह दूध दूसरी बार की चाय के लिए था ? सबेरे चाय अच्छी नहीं बनी थी।

"कोई बात नहीं बापूजी, साल भर में बावन शनिवार होते हैं। यदि एक शनिवार उपवास नहीं ही रखोगे तो हनुमान जी नाराज नहीं हो जायेंगे। अब जब शुरू ही कर दिया है तो खा ही डालो।"

"अस अन्नदेवता के अपमान तो नाहीं कीन जाय सकत है। अब दुपहरे न खाब। काल सबेरे।" इतना कहकर नरसंग इतने स्वाभाविक रूप से खाने लगे जैसे कुछ हुआ ही न हो। खाकर उन्होंने संतोषपूर्वक डकार ली और बोले : हीरूभाई के अगुआ रविशंकर महराज एक बार कह रहे थे : खाना नहीं है यह मालूम होते ही भूख मिट जाती है।

देवू ने पूछा : "आपने मेरे विषय में क्या सोचा था ?" नरसंग की धारणा थी कि लड़के पढ़लिखकर बड़े साहब बनेंगे और माँ-बाप से दूर रहेंगे। परन्तु पूर्व-जन्म के पुण्य के प्रताप से तुम पढ़े भी और घर आबाद हुआ। सारी जमीन एक जगह कर दी। पहले करसन मुखिया की पैदावार देखकर लोग कहते : 'भाग्यशाली के घर भूतों की कमाई!' वैसा ही था। परन्तु अब सब कुछ सपाट हो गया। अकेले जेटा का कुछ ठीक चलता है। माना ने खेत में छोटी-सी मशीन रखवाते ही बैल बेच डाले। क्या ढोर के जी नहीं होते? जिन बैलों ने जीवन भर हमारा पेट पाला उन्हें अपना स्वार्थ पूरा होते ही बेच डालें ?–अब गाँव में कौन भलाई करता है, कौन रिश्वत लेता है यह सब नरसंग को मालूम था। पहले मुखिया–पटवारी किसानों से पैसे माँगते थे अब ग्रामसेवक और ऐसे जैसे कर्मचारी आने-जाने के किराये के बहाने खर्च करवाते हैं। देवू ने हँसते हुए कहा : "यहाँ खेत में बैठे–बैठे भी आप को बहुत कुछ मालूम है।"

"बातें तो हवा के साथ भी बह आती हैं। आप नहीं बताएँगे तो कोई और–"

देवू के भीतर रोशनी हुई। वह पिताजी के साथ गाँव की और दुनियादारी की बातें नहीं करता, यह ठीक नहीं। माँ को तो आदत है पूछने की, खुद भी जो कहना चाहेंगी, चूप नहीं रहेंगी। परन्तु पिताजी के साथ थोड़ी सी दूरी क्यों रह जाती है ? शायद मैंने उन्हे कुछ ज्यादा ही वैरागी मान लिया है। इनकी रुचि–अरुचि सतेज है, यह अच्छा है।

देवू उठ खड़ा हुआ। रामा बरहा में से आ रहा था। देवू ने देखा तो पूछा–"अरे दरार पड़ गई रे ?"

"नाहीं तौ, पानी जोरदार आवत है।"

"तो तू चालू पानी छोड़कर चला आ रहा है ?"

रामा हँस पड़ा।

"तुम भी देवू भैया अजीब हो। देखतेव नाहीं, ईजू भाभी क्यारी बराती हैं। वे बोलीं कि जा खाय आव कब तक अइसै बैठे रहबो ?"

"यह तो ठीक है, पर तुझे भूख भी लग गयी होगी। हम बातों में सब भूल गये थे। जा खा ले। आराम से आना।" देवू बरहे के पानी के प्रवाह से भी अधिक तेजी से चल पड़ा। उसके मन में ईजू के प्रति स्नेह पैदा हो गया था। सम्मान भरा स्नेह। सौंफ के खेत में इस समय पानी भरा होता तो जाकर पहले छेड़छाड़ करता। किन्तु इस गेहूँ की क्यारियों में तो सिर्फ इतना ही पानी था कि उसकी एड़ियाँ भीगतीं। लाल छींट वाली हरी ओढ़नी इस समय फसलों की हरियाली के साथ खिल रही थी। आदमी भी तो कहीं इसी तरह धरती से नहीं निकल आया है ?

"आज क्यारियाँ बराने की इच्छा हो रही है। बहुत अच्छी बात है।" उसकी इच्छा एकदम नजदीक खड़े होने की हो रही थी।

"क्यों ? हमने कभी क्यारी बराई ही नहीं क्या ?" भीगे हुए हाथों को दिखाने के प्रयास में उसकी चूड़ियाँ खनक उठीं ।

"तू अपनी ही बोली में बोला कर। शिक्षित आदमियों की तरह बोलती है तो लगता है कि मुझे चिढ़ा रही हो ।"

"तुम अपनें घमंड में ही रहते हो ।"

"तेरे सामने तो झुककर चलता हूँ ।"

"वह तो गरज होने पर ।" ईजू अवचेतन में ही नजदीक खिसक आयी थी। खेत की मेंड़ दूर रह गयी थी ।

"तू किस गरज की बात कर रही है ?"

"यह तो उसी समय बताऊँगी ।" उसने मुँह घुमा लिया ।

"संवेदनाओं के प्रति तू बिल्कुल साध्वी हो जाती है !"

"क्यों, मुझमें क्या कमी देखी जो तुम साध्वी कहते हो ?" नाली में पाँव रखते हुए वह पूरा का पूरा घूमकर सामने खड़ी हो गयी ।

"मैंने तो तेरी प्रशंसा की है ।"

"प्रशंसा करनी हो तो समझ में आये इस प्रकार करो और तुम्हारे माँ–बाप समझ सकें इस तरह करो । उस दिन कैसे चिल्ला पड़े थे। बस अब । जैसे मैं कोई छोटी बच्चो न होऊँ कि डर जाऊँगी ।"

"चुप तो हो गयी थी !" कहते हुए देवू का चेहरा खिल उठा था । उसने हाथ से पानी उछाल दिया ।

"वह तो तुम्हारी माँ का सम्मान रखने के लिए ।"

"अब हमेशा करना ।"

"इतना तुम अपनी माँ से भी कह देना ।"

"बड़े लोग हमें शिक्षा दे सकते हैं । हमें तो उनसे शिक्षा लेनी चाहिए।"

"यह सब मैं नहीं जानती ? चेहर काकी कह रही थीं कि तेरी सास तुझे घरफोड़ कहती थीं।"

"देखना, चेहर काकी की बात सच मत मान लेना । वे अपने स्वार्थ के लिए भी कभी सच नहीं बोलतीं ।" देवू गंभीर हो गया था ।

"उस समय जतन काकी भी वहाँ खड़ी थी ।"

"वे दोनों जब लड़ रही होती हैं तो कैसे खड़ी रहती हैं – क्या यह बात तू नहीं जानती ?"

"मैं तो कहाँ सबको जानती हूँ । पर कोई झूठ तो नहीं कहेगा ?"

"तू भवाई देखने किसके साथ गयी थी ? रतनभाभी के साथ ! उनके और चेहर काकी के खेत पास ही पास हैं यह तू नहीं जानती ?"

"मैंने तो उन्हें कुछ नहीं बताया था ।"

"लेकिन तू मेरी माँ से ऊँची आवाज में बात कर रही थी वह तो उन्होंने सुना ही होगा।"

"वह भी नहीं सुना था। कैसे सुनती? अब कहाँ वे अपने पड़ोस में रहती हैं? भूल गये? वह तो इन्होंने पूछा था कि क्या बात है, बोलती नहीं? मुँह लटका रखा है। मैंने यूँ ही बता दिया कि मेरी सास ने ····" देवू ने ईजू को आगे नहीं बोलने दिया। उसकी आँखों में क्रोध उफन आया उसने ईजू के हाथ से फावड़ा लेकर जल्दी-जल्दी काम करना प्रारम्भ कर दिया। काम खत्म होते ही फावड़ा दूर फेंक दिया। ईजू चौंक उठी थी। देवू ने बरते में हाथ धोकर पानी टपकते हाथों कहा था –

"देख, आज तक तो तू आती-जाती थी। मेरी माँ तुझे मेहमान की तरह रखती थीं। अब तुझे समझ लेना चाहिए कि जैसे मैं खेतों की देखभाल करता हूँ वैसे ही तुझे घर की देखभाल करनी है। इतने वर्षों के परिश्रम के बाद भी उन्हें साँस लेने का समय न मिले? ऐसा नहीं चलेगा। अब दोपहर का खाना भी तुझे ही बनाना चाहिए।"

"तुम तो बिल्कुल भोले हो। मैं खाना बनाने की बात करती हूँ तो तुम्हारी माँ नाक-भौं सिकोड़ने लगती हैं।"

"देख तू इस तरह बोल रही है यह ठीक नहीं है। तू खाना बनाने में उनकी मदद करे और उन्हें पसन्द न आये? कैसी बातें करती है?" वह ईजू की ओर पीठ करके ही बातें कर रहा था।

"बहू साक काटना, बहू जरा मिरचे का डब्बा लाना, बहू देखना कोठरी में बिल्ली न चली जाये, खुली है - ऐसे ही बोलती रहती हैं और मैं करती जाती हूँ। कुछ स्वयं करना चाहती हूँ तो··· ।"

"उनसे पूछकर करने के लिए कहता हूँ।"

"आज की ही बात बताऊँ? मैंने कहा लाओ, मक्खन मथकर घी निकालूँ। उन्होंने फट कह दिया - नहीं बहू। वह तो मैं करती हूँ। तुम पानी भर लाओ। जैसे कि मैं मक्खन चुराकर खा जाती।" देवू को यह बात भी अच्छी नहीं लगी। उसे मालूम था कि अन्य स्त्रियों की तरह माँ कभी खाने-पीने पर प्रतिबन्ध नहीं लगातीं। उनके मन में ऐसी भावना कभी पैदा भी नहीं हो सकती। इसमें भी उसे किसी ने चढ़ाया लगता है। उसने कहा -

"मेरी माँ खाने-पीने के मामले में किसी को कुछ कहें यह असंभव है। लवजी छोटा था तो वह जितना खाता था उससे अधिक बिगाड़ता था। ठंडी में जमे घी में जब उसकी उँगलियों के निशान दिखाई पड़ते तो वह पकड़ा जाता था। माँ हम सबको हँसा देती थीं। फिर गंभीर होकर कह देतीं बच्चा है। वह तो खायेगा भी और बिगाड़ेगा भी।"

"लड़के में और बहू में अन्तर तो होता ही है न।"

"तू यह सब मात्र बोलने के लिए बोल रही है। इसका कोई मतलब नहीं है। दिल बड़ा रखो।"

"हमारा दिल छोटा है। हमने कहाँ कुछ खाया-पिया है ? हमारे मायके में तो···" ईजू नाराज हो गयी।

"देख, समझदार बहू ससुराल में आने के बाद मायके को भी दिल में ही छिपा लेती है। सारा भेद ही भूल जाती है। तुझसे यह सब न हो सके तो कम से कम इतना तो करना ही कि मेरी माँ का दिल न टूटे।"

"इसका ध्यान तो उनकी दूसरी बहू रखेगी।"

"तू बात को कहाँ से कहाँ खींच ले जाती है ?" ईजू की ओर उसने वेदना-भरी दृष्टि से देखा।

"सच कहती हूँ। सबेरे मुखिया के मुहल्ले से एक औरत आयी थी संदेश देने। कंकू बहन, तुम्हारी शांति बहू ने सोने की चूड़ियाँ मँगवायी हैं। पाँच दिन में बनवाकर भेज दो।"

"माँ ने क्या कहा ?"

"पहले तो हँसती रहीं। फिर उस औरत ने जब दुबारा कहा तो बोली। मेरे देवू से कहना।" पति का नाम लेते ही ईजू मुस्करा उठी। देवू से नजर मिलते ही उसकी निगाहें नीचे झुक गयीं। जैसे शर्म के भार से ढह पड़ेगी। देवू के चेहरे का भाव भी बदल गया।

"ठीक है अब जाओ। बरतन लेकर घर जाओ और सास और माँ के बीच का भेद भूल जाओ।"

'रोज सबेरे तुम्हारी सलाह लेने आऊँगी और वैसा ही करूँगी जैसा कहोगे। परन्तु शांति बहू के लिए सोने की चूड़ियाँ लेने जाना तो साथ में ही······।"

"यह तो माँ-बाप तय करेंगे।"

"और वे तुम पर छोड़ दें तो ?"

"तो मैं पहले लवजी से पूछूँगा।"

"लवजी भाई तो यही कहेंगे कि पहले भाभी के लिए चूड़ियाँ बनवा दो ! मेरी बात तो बाद में। मुझे तो अभी तय करना है कि शांति या जैमिनी।" खिल-खिलाकर हँस पड़ी ! उसके सफेद दाँत चमक उठे।

"देखना किसी से कहना नहीं।" अचानक आज्ञा प्रार्थना में बदल गयी थी।

"सारा गाँव कहता है।" ईजू कुएँ की ओर चल पड़ी। बिल्कुल नजदीक आ पहुँचे रामा ने पूछा, सारा गाँव क्या कहता है भाभी ?"

"गांव भर कहता है कि रामाभाई क्याकि बराने मां एक नम्बर है।"

3

मुरब्बी देवू भाई,

अहमदाबाद से अपने छोटे भाई लवजी का प्रणाम स्वीकार करें । आपने अपने पत्र में चूड़ियों वाली जो बात की है मेरा मनना है कि वह हँसने के लिए लिखी गयी थी, फिर भी फ़ुरसत में होने की वजह से आपको पत्र लिखने बैठ गया हूँ । आपने लिखा है कि आपके पत्र के बारे में माँ और पिताजी नहीं जानते । ठीक वैसे ही, मैं भी मात्र आपको लिख रहा हूँ । आपके हिस्से में जो भाभी का अधिकार है वह तो उन्हें मिलेगा ही ।

जहाँ तक मेरा अनुमान है, ईजूभाभी के पास भी सोने की चूड़ियाँ नहीं हैं। सोने की हँसुली है, सोने की चैन है, सोने का कड़ा है, तथा सोने की मढ़ी हुई हाथी-दाँत की चूड़ियाँ हैं, किन्तु सोने की चूडियाँ तो नहीं ही हैं । आपको संभवतः आश्चर्य हो रहा होगा कि देवर को अपनी भाभी के जेवरों के बारे में इतनी हकीकत कैसे मालूम हो सकती है ! लक्ष्मण को सीता के जेवरों के बारे में कुछ नहीं मालूम था । सीता की खोज में राम–लक्ष्मण चले जा रहे थे । सीता द्वारा तोड़-तोड़ कर फेंके हुए जेवर रास्ते में पड़े थे । एक जेवर के बारे में राम दुविधा में थे कि वह सीता का है या नहीं ? उन्होंने लक्ष्मण से पूछा था – "प्रिय लक्ष्मण, तुम पहचानते हो इसे ! क्या यह सीता का ही है –" लक्ष्मण ने क्या उत्तर दिया था आप जानते हैं ? उन्होंने कहा, "पूज्य बड़े भाई । मैं इस विषय में सर्वथा अनजान हूँ । मै प्रतिदिन सुबह उठकर सीताभाभी का चरण-स्पर्श कर प्रणाम करता था । अतः उनके नूपुर मात्र देख लेता था । कभी नेत्रों को ऊपर उठाया नहीं कि उनके हाथ या कान के आभूषणों को देख पाता । मैं कैसे बता सकता हूँ ! बहुत अच्छा श्लोक है । पढ़िये –

नाहं जानामि केयूरं, नाहं जानामि कुण्डलम् ।
नूपुरं चैव जानामि, नित्य पादाभिवंदनात् ।।

मैं लक्ष्मण नहीं हूँ अतः भाभी के समस्त आभूषणों से परिचित हूँ । इस समय मेरे मन में यह विचार भी उठ रहे हैं कि इन आभूषणों को धारण कर शांति कैसी दिखाई देगी। मैंने पिछले तीन वर्षों से उसे नहीं देखा है। कल्पना में अवश्य देखा है, उसे देखना कहा जा सकता है ? इस विषय में एक द्विविधा भी है । यह सुखद हुआ कि आपने गत वर्ष मेरी इच्छाओं का समर्थन किया और विवाहोत्सव स्थगित रखा । यह ग्रीष्म ऋतु भी निकल जाये तो अच्छा है । दूसरा कोई मुझ पर हँसे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है । किन्तु यदि मैं स्वयं को ही हास्यास्पद महसूस करने लगूँ तो ? बी. ए. के पूर्व विवाह नहीं ही किया जाना चाहिए ।

मैं इस सचाई से परिचित हूँ कि गत वर्ष वहाँ जैमिनी के आने के पश्चात् मेरे और जैमिनी के संबंधों के बारे में कैसी–कैसी अफ़वाहें उड़ी थीं ! रणछोड़ ने

हरजीवन से कहा था कि उसने मुझे और जैमिनी को हाथ में हाथ डालकर लॉ-गार्डन में घूमते हुए देखा था। यह तो ऐसा आक्षेप है जिसे सहन किया जा सकता है। मैं इस घटना के प्रचार पर आपत्ति नहीं उठाता। किन्तु मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि एक युवक यदि किसी युवती का हाथ पकड़कर चले तो इस घटना में असह्य क्या है? एक स्पर्श मात्र को स्पर्श से अधिक अर्थ देकर प्रचार करने की क्या आवश्यकता है? मैं अपने समाज, उसकी रूढ़िवादी मान्यताओं से परिचित हूँ और इस हकीकत से भी परिचित हूँ कि तुच्छ लोग ही दूसरों की पवित्रता को शक की नजरों से देखते हैं।

मैं आपको देर-सबेर यह बताना चाहता था कि हमारे संबंध अहेतुक हैं। हमने विभिन्न विषयों पर चर्चा की है। प्रेम और काम पर भी खुलकर बातें की हैं। किन्तु विवाह जैसा प्रश्न अब तक कभी पैदा ही नहीं हुआ है। जैमिनी जानती है कि मेरी सगाई हो चुकी है। और सगाई न हुई होती तो भी मुझको लेकर वह इस दिशा में सोचती हो, ऐसा मैं नहीं मानता। मेरा मन चंचल है किन्तु मेरे विचार तो मेरे वश में हैं ही। विचार इच्छा को वश में कर सकते हैं, उसे किसी अन्य दिशा में गति दे सकते हैं। मैंने अपनी इच्छाओं को समझने का प्रयत्न किया है। मुझे अपनी इच्छाओं का दमन नहीं करना पड़ेगा। दमित इच्छाओं की विकृति से जनित संकट को सह सकूँगा। पढ़ना, समझना, एक साथ घूमना अच्छा लगता है। यौन समस्याओं की नासमझी से भी मुक्त हो चुका हूँ। यह दावा नहीं है, धारणा है। मैं यह सब आपको लिख रहा हूँ, इससे अर्थ मत निकाल लीजिएगा कि मैं स्वस्थ हूँ।

सोने की चूड़ियों के मजाक में मैं विषयान्तरित हो गया था। जो हुआ वह ठीक ही हुआ। यहाँ मैं उल्लेख कर भी दूँ कि नहीं, शांति के लिए चूड़ियाँ बनवाने की आवश्यकता नहीं है, तो आप इसे मेरे मन का तुच्छ विचार मान लेंगे। मैंने ऊपर जिन बातों का उल्लेख किया उन्हें आपको जानना ही था।

अब मुख्य विषय पर आऊँ। चूड़ियों वाला विचार अपने घर में किसी के मस्तिष्क में जन्मा है या टींबा से माग आयी है? अपने घर में ऐसा कोई नहीं सोचेगा। माँ या पिताजी ने तो अपनी जाति में किसी भी युवती को सोने की चूड़ियाँ पहने नहीं देखा होगा। हमारे माता-पिता के मन में कभी अपनी पुत्रवधुओं को इस प्रकार सजाने की इच्छा नहीं हो सकती।

आप भी इसे अनावश्यक खर्च मान लीजिए। मैं जानता हूँ कि आप उपयोगितावादी हैं। शांति के लिए चूड़ियाँ बनवाने की बात आप नहीं सोच सकते।

भाभी? संभव है। उनकी ऐसी इच्छा हो, कई कारण हैं इस संभावना के। एक तो वे अपने मायके से पर्याप्त आभूषण लायी हैं। ससुराल में उसकी तुलना में प्राप्त आभूषण कम हैं। उन्हें इस बात का ज्ञान होगा ही कि रमणलाल ने हेती

बहन के लिए चूड़ियाँ बनवायी हैं। भाभी के मन में भी इच्छा जाग्रत हो सकती है। किन्तु वे प्रत्यक्षतः अपनी माँग नहीं रख सकतीं। हो सकता है उन्होंने सोचा हो कि देवरानी के लिए माँग करने से उनकी माँग पूर्ण हो जायेगी। ऐसा ही होना चाहिए। आप जाँच कर लीजिएगा। यदि मेरी धारणा सच हो तो मुझे अभिनंदन दीजिएगा।

अब एक दूसरी बात। वैसे है यह पहली बात। टींबावालों ने यदि ऐसी इच्छा व्यक्त की हो तो उन्हें स्पष्ट कर दीजिएगा कि यह हमारे सामर्थ्य की सीमा है। लवजी कमायेगा तो जैसा होगा, करेगा। खेतों से हो रही आमदनी से लवजी के लिए खर्च नहीं किया जायेगा। पढ़लिखकर वह नौकरी करेगा। उतना ही उसका होगा। सोमपुरा के लिए वह अतिथि मात्र होगा – दो दिन का।

मैं जमीन में हिस्सा नहीं चाहूँगा। दोनों नये घर भी आपके ही हैं। मुझे जरूरत महसूस होगी तो पुराने घर के स्थान पर एक कुटी बनवा लूँगा। कुटी से मेरा मतलब घासफूस की झोंपडी से नहीं, एक छोटे से मकान से है। मुझे बंगलों में ऊब महसूस होती है ऐसा नहीं कहूँगा पर मैं वहाँ ज्यादा बैठ नहीं सकता। वैसे यह मेरी वर्तमान स्थिति है। संभव है कल मेरी मानसिक स्थिति, मेरा दृष्टिकोण परिवर्तित हो जाये। बालूभाई कह रहे थे कि वे बचपन में साम्यवादी बनने का स्वप्न देखते थे। अब तो वे अंतिम साँस तक कांग्रेसी रहेंगे। कांग्रेस में सभी वाद समाविष्ट हो जाते हैं। आपने भी दीवाली में कांग्रेस के लिए कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। सक्रिय सदस्य बने या नहीं? आप चाहें तो अपने इलाके के नेता भी बन सकते हैं। यद्यपि मैं इसका विरोध करता हूँ। नेता मतलब क्या होता है भला? एक आदमी के मानसिक संकल्प का अनुसरण यदि उसकी संवेदनाएँ भी न करती हों तो एक आदमी का अनुसरण हजारों जीते जागते आदमी कैसे कर सकते हैं? नेतागिरि स्वयं में विकास-प्रतिरोधी विचारधारा है। आप सोचते होंगे कि राजनीति का विद्यार्थी होकर भी मैं ऐसा लिख रहा हूँ। यही तो मेरी तकलीफ है। जो पढ़ता हूँ उसे समझने की कोशिश करने लगता हूँ। जो समझ लेता हूँ उसके विरोध में सोचने लगता हूँ।

यह कितना अच्छा है कि मैं अभी जैमिनी से संबंधों को नहीं समझ पाया हूँ। यदि मुझे विश्वास हो जाता कि मैं उसे चाहने लगा हूँ तो तुरन्त मुझे उसमें तमाम दोष दिखाई देने लगते। और यदि मुझे यह विश्वास हो जाता कि मैं उसे नहीं चाहता तो...खैर जाने दीजिए, इस प्रकार "जो" और "तो" की भाषा में बात करने का कोई अर्थ नहीं है।

शांति ने अन्ततः पढ़ाई छोड़ ही दी न? आपको मालूम है, हेतीबहन अब बहुत सुन्दर अक्षरों में पत्र लिखती हैं? उन्हें शायद मेरी और शांति की भी उतनी चिन्ता नहीं रहती जितनी जैमिनी की है? उन्होंने स्पष्ट तो कुछ नहीं लिखा है किन्तु उनकी बातों का यही अर्थ निकाला जा सकता है। संभव है बालूभाई और

रमणलाल के बीच ऐसी कोई बात हुई हो। या वीणाबहन और हेतीबहन ने कुछ सोचा हो। जैमिनी दीवाली में दो दिनों के लिए गोकुलिया गयी थी। मुझे बाद में पता चला।

पत्र लम्बा हो गया, है न ? अच्छा लग रहा है इस समय। देखूँ, आपको कैसा लगता है। आप लिखेंगे तो मैं भी लिखूँगा। स्वस्थ हूँ। शाम को नियमित घूमने जाता हुँ। अकेले। मैं अकेले फिल्म भी देख सकता हूँ। "अनुराधा" अकेले ही देखी थी। फिर तो सोचते हुए चलता रहा। रात के एक बजे होस्टल में पहुँचा। सबेरे देर से उठा था। समस्या थी कि पीरियड छोड़ूँ या कसरत ? बताइये मैंने क्या किया होगा। अगर आप सच निकले तो आपके लिए एक गर्म टोपी लाऊँगा। आप नहीं पहनेंगे तो मैं पहनूँगा। महागुजरात के आन्दोलन ने और कुछ तो नहीं किया। हाँ टोपी की इज्जत अवश्य कम कर दी। देखते हैं। अगले चुनाव में जनता परिषद क्या करती है।

इधर हीरूभाई क्या कर रहे हैं ? रमणलाल का प्रभाव इन दिनों गुजरात कांग्रेस प्रदेश समिति पर बढ़ता जा रहा है। पिछले दो महीनों से तो दिखाई नहीं पड़े। मोटे होते जा रहे हैं। होंगे ही। अब तो आप पूरे गृहस्थ हो गये हैं। कोई नवीनता ? सभी को याद और प्रणाम।

—लवजी।

देवू ने पत्र पढ़ा। लवजी की आदत तो इससे विपरीत थी। पत्र संक्षेप में लिखना और बात अधूरी करना। उसका पत्र पढ़ने के बाद कभी नहीं लगा कि बात पूर्ण हुई। लवजी, जैसे सबकुछ अधखुली आँखों से ही देखता है। और शायद इसी कारण पूर्णता दिखाई देती है।

इस पत्र में उसे एक सीधी बात का सीधा-सा उतर लिखना था। स्पष्ट कह देना चाहिए कि चूड़ियाँ मत बनवाना।

देवू को सारंग जाना था। पशाभाई ने कहलवाया था कि इस ओर के युवक प्रतिनिधि एकत्र होने वाले हैं, निश्चित आना। देवू ने पत्र को आलमारी में रख दिया।

"लवजी का लिखिस है भैया ?" कंकू ने पूछा।

"आनन्द में है।" धीरे से आलमारी बंद करते हुए उसने कहा।

"अतने बड़े कागज मां यही लिखा ?"

"मेरे लिए एक टोपी लाने वाला है।"

"टोपी ! का काम है ? खुद काहे नाहीं आये ?"

"परीक्षा आ गयी है। बाद में आयेगा।"

"चिट्ठी सुनायेव नाहीं और चल दिहौ। सारंग जाय क है ?"

"कल संदेश नहीं आया था, पशाभाई का ? जा आऊँ। तुम्हें कागज पढ़ना हो तो इससे कहना, सुना देगी। किन्तु उसमें जो भी लिखा है तुम समझोगी नहीं।"

"हमका काहे समझ मां आये भैया, हम तो जानवर होई न।"

"तुम भी माँ, जो मन में आता है, बोल डालती हो। फिर स्वयं बोलती हो और स्वयं बुरा मान जाती हो।" देवू की आवाज में नाराजगी थी।

"जाव अच्छा, तुम से न पूछब।" आँखों से आँसू पोछते हुए कंकू ने कहा।

देवू का उठा हुआ पाँव रुक गया। जो भी कहता हूँ वही माँ को बुरा लग जाता है। कैसे इनके मन का समाधन करूँ? लवजी का पत्र सुनकर ये क्या करेंगी? उसमें से क्या समझेंगी ये? यद्यपि···यद्यपि यह सच है भी कि दूर रह रहे लड़के को देखने की, उससे खूब खूब बातें करने की माँ की इच्छा हो। कहते हैं कि सबसे छोटे बच्चे से माँ को बहुत प्यार होता है। भले ही कुछ भी न समझ में आये, यदि लवजी का पत्र सुनने मात्र से ही इन्हें संतोष होता है तो मैं क्यों न सुना दूँ? सारंग तो थोड़ी देर बाद चला जाऊँगा। देवू जूता निकालकर घर में गया और आलमारी से पत्र निकाला-

"लो माँ, सुनो, पढ़ता हूँ।"

"तुम तो पढ़ लिहौ। जाव अब। ऊ का तौ अब बहू पढ़े अबै। तुम न पढ़के सुनाऊबो तो का कोई पढ़े वाला नाहीं है? जाव, देर होत है।"

कंकू के स्वर में अब वेदना न थी फिर भी देवू उदास कदमों से ही गया।

वहाँ पहुँचने पर पता चला कि पूनमचन्द के कहने से सभी को एकत्र किया गया है। पूनमचन्द स्वयं आये हुए है। वहाँ कुल पन्द्रह लोग एकत्र हुए थे। जब सब को विश्वास हो गया कि अब पशाभाई नहीं मानेंगे – बोलेंगे ही, तब सब उत्सुक होकर बैठ गये। पशाभाई ने पहले मुनीम से टोपी मँगवाकर पहनी फिर प्रवचन देना प्रारंभ किया–

"मैं तो भाई सिब्बी का चाकर हूँ। पूनमचन्द ने कहा कि मुझे तुम्हारे कार्य-कर्ताओं से मिलना है, अरे भाई जरूर मिलो। जो पाँच-दस आ सकेंगे, बुला लूँगा। किन्तु देखो पूनमचन्द, उनका प्रेम, पन्द्रह लोग आये हुए हैं। ऐसा न मान लेना कि पशाभाई खतम हो गये। जिन्दा हूँ, और जहाँ तक लोगों का प्रेम है, जिन्दा रहूँगा, उनके दिल में। मुझे राज्य में सत्ता की कोई आकांक्षा नहीं है। गुजरात राज्य बना। लेकिन सत्ताधीश बन बैठे मेरे बेटे काठियावाडी। मैं तुमसे पूछता हूँ कि महेसाना जिले का आदमी मुख्यमंत्री क्यों नहीं बन सकता? क्या इस जिले के लड़के शहीद नहीं हुए हैं? इस जिले से कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस से त्यागपत्र नहीं दिया? दूसरे जिलों के लोग मत्री बन सकते हैं तो क्या इस जिले के लोग अंधे-बहरे हैं? क्या हमको भाषण देना नहीं आता?"

देवू हँस पड़ा। पशाभाई का धारा-प्रवाह प्रवचन भंग हुआ। इतने में पेथाभाई आ पहुँचे। चुनाव में जीतने के बाद यह उनका प्रथम आगमन था। जिस दिन गुजरात राज्य की स्थापना हुई थी उस दिन उन्होंने सारंग में विशाल सभा की योजबा बनाई थी। इसकी सूचना जब उन्होंने पशाभाई को दी तो पशा-

भाई ने टके-सा जवाब दे दिया था – आज के मुख्य वक्ता आप हैं यह जानकर वहाँ आदमी तो दूर चिड़िया भी नहीं फरकेगी । और मुझे भी, आपकी सभा में भाषण देकर कांग्रेस या जनता-परिषद का वैमनस्य मोल लेने की क्या आवश्यकता? पेथाभाई समझ गये थे कि भावी चुनावों में समर्थन की अपेक्षा रखना मूर्खता होगी ।

"आओ, आओ पेथाभाई, भाइयों आप लोग पहचानते हैं न इन्हें ? यह अपने–"

"विधायक साहब ।"

"हमें तो इनकी याद है किन्तु शायद यही भूल गये हों कि वे विधायक हैं ।" देवू के शब्द पूनमचन्द को पसन्द आये । वे खुद तो खुश हुए ही देवू को खुश करने के लिए उसकी बात का समर्थन भी करने लगे ।

पशाभाई ने खखारा । रुके हुए भाषण को पुनः प्रारंभ करने के लिए इधर-उधर देखा फिर सिर खुजलाते हुए पूछा, "मैं क्या कह रहा था ?"

"कुछ नहीं ।"–देवू बोला । सबने पुनः ठहाका लगाया ।

"हाँ और क्या ! मुझे बोलने की जरूरत भी क्या है ? मैं जानता हूँ कि नरसंग का यह लड़का बहुत तूफानी है । अपने बहनोई की भी चोटी काट लाये ऐसा है । पूनमचन्द, पहचानते हो इसे ?"

"क्यों नहीं पहचानता ? देवराज न ?"

"देवू । हम सबसे पहले सेवादल के शिविर में मिले थे । आप कांग्रेस के संविधान के विषय में बताने आये थे । दूसरी बार हम नदी के किनारे मिले थे । कुछ अतिथियों के साथ खरबूजा खाने की योजना थी । इसके अतिरिक्त भी शायद मिले हों । लेकिन मुझे याद नहीं है ।"

"कई बार मिले हैं । और इन दूसरे कार्यकर्ता मित्रों से भी मुलाकात हुई है । बहुत समय से इच्छा हो रही थी कि फुरसत में सबसे एक साथ मिल सकूं । पशाभाई द्वारा वह इच्छा पूर्ण हुई । सभी कार्यकर्ता मित्रों से विशेषतः तो मैं ··"

"हम कार्यकर्ता नहीं हैं ।" देवू का बीच में इस प्रकार बोलना किसी को भी अच्छा न लगा । पूनमचन्द ने हँसकर टाल दिया । आगे बोले–

"सभी मित्रों से तो मैं विशेषतः इसलिए मिलना चाहता था कि सब का परिचय प्राप्त करूँ और मैं भी अपने काम का लेखाजोखा दूँ ।"

लेखा-जोखा तो किये हुए कामों का दिया जाता है न ? देवू के मन में प्रश्न पैदा हुआ । फिर भी वह चुप रहा । वे कहे जा रहे थे–

"अंततः हमारा महागुजरात वाला स्वप्न साकार हुआ । किन्तु सत्ता पर सवार लोगों का अभिमान तो देखिए । नये राज्य का नाम उन्होंने महागुजरात नहीं बल्कि गुजरात रखा है । ठीक है । हमारा गया क्या ? हमें जो मिल चुका है वह हमसे कोई कभी छीन नहीं सकता । बाल गंगाधर तिलक ने एक बार कहा था–"स्वराज हा माझा जन्मसिद्ध हक आहे । आणि, तो घेतल्या शिवाय मी झोपणार नाहीं । स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है । इसे प्राप्त किये बिना मुझे चैन नहीं ।"

देवू सोच रहा था – इसे मराठी कहाँ से आयी। और यहाँ दो वाक्यों को बोलने की भी क्या जरूरत थी ? तिलक के मुँह से जब ये शब्द निकले होंगे तो बाण की तरह बेधते हुए सुदूर तक चले गये होंगे। वह घटना कितनी भव्य रही होगी ? महागुजरात का आंदोलन ही भ्रामक था। उसका वास्तविक नाम तो भाषागत राज्य-संरचना की आवश्यकता था। किन्तु सब गुजरात का गाना गाने लगे। जैसे उनके कहने से ही गुजरात महान न बन जाने वाला हो ! उमाशंकर ने भी कैसा गीत लिखा है। 'मैं गुर्जर भारतवासी।' भारत के साथ गुर्जर शब्द से क्या सूचित होता है ? ऐसे स्पष्टीकरण की जरूरत भी क्या है ?

पूनमचन्द बोल रहे थे–

अब हमें परिश्रम करना होगा और अपने नेताओं से परिश्रम करवाना होगा। नहीं तो हम पीछे रह जायेंगे। फिर कभी आगे नहीं आ सकेंगे। मैं मात्र अपनी नहीं पूरे गुजरात की बात कर रहा हूँ ? भारत के समस्त राज्यों से गुजरात को श्रेष्ठ रहना चाहिए। जिस गुजरात ने भारत को गाँधी और सरदार जैसे नेता दिये हों–"

"पशाभाई और पूनमचन्द जैसे नेता दिया हों।" देवू ने शरारतपूर्ण ढंग से कहा। उसे पूनमचन्द के वक्तव्य में स्पष्ट विरोधाभास दिखने लगा था। और सांसारिक उत्तरदायित्व से मुक्त होकर वह काफी दिनों बाद स्वच्छन्द वातावरण में बैठा था। उसका चेहरा खिला हुआ था।

"इस तूफानी को मैंने कहाँ बुला लिया ?" पशाभाई ने बहुत धीरे से कहा था किन्तु सब लोगों ने उनकी बात को सुन लिया।

"ही इज अ प्रोमिसिंग यंग मेन – एक आशास्पद युवक है।" सभी की धारणाओं के विपरीत पूनमचन्द ने कहा। देवू ने सोचा – यह आदमी मुझे खुश करना चाहता है। क्यों ? इससे इसे क्या लाभ ? प्रयोजन था। बाद में समझ में आया।

भोजन के बाद पशाभाई ने सबसे पूछा – "पूनमचन्द जैसे कर्मठ कार्यकर्ता कांग्रेस से बाहर रहें यह मुझे पसन्द नहीं है। आपको पसन्द है ?"

"बिल्कुल नहीं। किन्तु पशाभाई, दूसरी, पार्टियों में भी तो ऐसे अच्छे आदमियों को होना चाहिए। लोकतन्त्र में विरोध पक्ष–"

"ऐसी आदर्शवादी बातें मुझे नहीं आतीं। मुझे तो जिले की, विशेषकर अपनी तहसील की चिन्ता है। तुम कहते हो तो–"

"हम प्रस्ताव रखेंगे।" एक आवाज आयी।

"कैसा प्रस्ताव ?" देवू ने पूछा।

"पूनमचन्द के वापस आने का प्रस्ताव।"

"विधान सभा से ?" देवू ने उत्साह के साथ पूछा।

"कांग्रेस में वापस आयें।" पशाभाई ने मदद की।

"ऐसी प्रार्थना हमें पूनमचन्द से नहीं कांग्रेस से करनी चाहिए। जिन लोगों

ने पार्टी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाया हो उन्हें पहले पार्टी माफ करेगी फिर प्रवेश करने देगी ।"

पूनमचन्द विचलित नहीं हुए । गंभीरता से बोले–

"तुम पार्टी को महत्त्व देते हो कि आदर्श को ?"

"आप क्यों बोलते हैं बीच में ? बिना आदर्श के कोई पार्टी होती है ? कांग्रेस के पास आदर्शों की कमी है क्या ?" देवू की दृढता से लोगों को आश्चर्य हो रहा था । पूनमचन्द और विनम्र हो गये–

"मैं कहाँ इन्कार करता हूँ इससे ? किन्तु महागुजरात की स्वप्न-सिद्धि में मैंने खतरा उठाया था यह आप जैसे युवकों को भी अच्छा नहीं लगता ?"

"खतरा उठाया था कि फायदा उठाया था ?" धीमे किन्तु तीखे स्वर में देवू बोला ।

"कैसा फायदा ?"

"सत्ता हथियाने का ।"

"सत्ता तो सेवा की दासी है भाई देवराज । तुम राजनीति में अभी बच्चे हो । हम जैसों को तो बहुत सोचना पड़ता है ।" विरोध के लिए पूनमचन्द की आवाज ऊँची हो गयी थी ।

"अब कांग्रेस में आने के लिए भी बहुत सोचा होगा ।–" देवू का व्यंग्य सिर्फ पूनमचन्द को ही सुनाई दिया । उन्होंने तय किया कि वक्त आने दो । उसे भी बतायेंगे ।

देवू सबकुछ समझ गया था ।

वह घर की ओर चल पड़ा ।

कंकू खेत में गयी थीं । ईजू चना दल रही थी । देवू ने पानी पिया फिर जैसे ही वह खेत पर जाने के लिए चला, ईजू बोल पड़ी–

"लवजी का पत्र सुनते-सुनते तुम्हारी माँ रोने लगी थीं ।"

"उसमें रोने वाली कौन-सी बात थी ?"

"लिखा नहीं था ? घर-जमीन छोड़ देने वाली बात ? तुम्हारी माँ ने सोचा कि लड़का साधु हो जायेगा ।"

"साधुओं के लिए लवजी के मन में जरा भी सम्मान नहीं है ।" देवू चल पड़ा । चलते-चलते उसने कहा – "माँ को यूँ ही रोना आ जाता है । लवजी की याद आयी नहीं कि उनकी आँख भीगी नहीं ।"

"लवजी भाई माँ की बहुत चिन्ता रखते थे ?"

"हैरान करता था ।"

"देवू चल गया । ईजू को लगा जैसे कोई बात करनी रह गयी है । क्या ? याद नहीं ।

उसे लवजी के प्रति कंकू के प्रेम पर आश्चर्य हो रहा था । और लवजी ?

यह भी कितना हँसमुख । मुझे तो भाभी मानता है कि बड़ी बहन, समझ में ही नहीं आता ।

अपने दिल में छोटे भाई के प्रति इतना प्यार है उसे आज पता चला था । उसने पेट पर हाथ फिराया और अनाज छरने लगी ।

गौरैया पानी में खेल रही थीं । उसके पेट में भी ऐसा ही एक खेल शुरू हो गया था । दस सेर अनाज लेकर बैठी थी. यह पहली बार हुआ कि उसमें से थोड़ा छरने को बाकी था और वह थकान महसूस करने लगी ।

आज उसे पहली बार लवजी की चिन्ता सता रही थी । शांति से शादि के बाद भी यदि उसके मन में जमिनी बसी रही तो ? और शांति से सगाई तोड़ दी जाये तो उस बेचारी को योग्य वर कहाँ मिलेगा ?

जैमिनी तो अपने लिए ढूँढ लेगी. . .रमणलाल भी यही कहते हैं ।

लेकिन यह पेट में क्या हो रहा है ?

4

रमणलाल की जीप नीचे गलियारे को पार करके सपाट चकरोट पर रफ्ता-रफ्ता चली जा रही थी । रमणलाल की रोकटोक के बावजूद ड्राइवर जीप तेज गति से चलाता था । जल्दी करने की जरूरत क्या है ? डेढ़ घण्टे में पहुँच जाएँगे अहमदाबाद ।

दूसरे ही क्षण रमणलाल को लगा कि इस सोच के मूल में भय है, दुर्घटना का बाजरे के कट जाने के बाद खेतों में कहीं-कहीं खड़ी मूँग, अरहर और सेम की फसलें अकेली-सी लग रही थीं । तितर-बितर और थकी सी ।

सन् छप्पन-सत्तावन में भी जिला-कांग्रेस की भी लगभग यही दशा हुई थी । अब तो समय बदल गया है । पूनमचन्द भी वापस आ गये हैं । करें भी क्या कांग्रेस से बाहर रहकर ? 1960 के मार्च में विसनगर में जो महागुजरात जनता परिषद का विसर्जन-प्रस्ताव पारित हुआ उसमें पूनमचन्द की प्रमुख भूमिका थी । यद्यपि इन्दुलाल याज्ञिक से उनके संबंध बड़े अच्छे थे किन्तु नूतन महागुजरात जनता परिषद में शामिल होने का खतरा उन्होंने नहीं उठाया । पशाभाई जैसों का उपयोग करके कांग्रेस में घुस आये । अब क्षेत्र में कांग्रेस का प्रभाव बढ़ेगा । अहमदाबाद में भी बढ़ता किन्तु अट्ठावन के बारह अगस्त की आग अभी शांत नहीं हुई है । एक बार स्मारक की स्थापना कर देने के बाद उसे हटा लेना — भला यह कहाँ की समझदारी है ? फिर तो तूफान, आग, लूट जो हो कम है । जो भी हो, जनता परिषद ने लोगों में इतना साहस तो पैदा ही किया कि वे अपने लिए मर सकें ।

ये नेता लोग ? अब यही लोग दूसरी पार्टियों को गालियाँ देते हैं । समाजवादी समाजरचना के प्रस्ताव के बाद भी कांग्रेस का कायाकल्प नहीं हुआ । हीरूभाई

उस दिन कह रहे थे – विरोधी पार्टियों के अभाव में ही कांग्रेस सशक्त दिखाई देती है। बेचारे पूनमचन्द जैसे महत्त्वाकांक्षी लोगों को वापस आना पड़ता है।

ऊँटों की टोली ने रास्ता रोक रखा था। ड्राइवर ने जीप रोक ली। उसे दहशत थी कि कोई ऊँट लात मार के जीप का काँच तोड़ डालेगा। रमणलाल ने हाथ बढ़ाकर हार्न बजाया। ऊँटों की टोली सजग हुई। उनका रखवाला रबारी पास वाले खेत से बाजरे की बालियाँ तोड़कर मसलकर खा रहा था।

अचानक रमणलाल को हीरूभाई दिखाई दिये। ऊँटों की भीड़ को पीछे छोड़ जीप की गति बढ़ाकर वे उनके पास पहुँच गये "आइए साहब आइए।"

हीरूभाई जीप में बैठ गये। जीप चल पड़ी।

"किधर जाना है ?"

"पशाभाई ने बुलवाया है। प्रजाभारती के लिए नये इंजन की बात करनी है। बोरिंग का खर्चा व्यर्थ गया।"

रमणलाल ने सोचा कि मैंने इन्हें मना किया था कि नदी के किनारे ट्यूबवेल सफल नहीं हुआ करते।

"मैंने कहा तो था।"

"मुझे मालूम है जो कहा था तुमने। पर सांकलचन्द को विश्वास था। उनका कहा सफल क्यों नहीं होगा ?"

"वह तो अच्छा था कि वे मजूर मंडली में सब करवाने वाले थे। प्रजाभारती को खर्च करना पड़ता तो...।"

"तो कर्ज होता।"

"पचहत्तर हजार का वचन मिला था, उसका क्या हुआ ?"

'कौन देता है ? हर महीने चिट्ठी लिखता हूँ।"

"चुनाव नजदीक आ रहा है, पैसे मिलेंगे।"

"मुझे तो ऐसी संस्था चलाना अच्छा नहीं लगता। हमेशा पराधीन रहना पड़ता है।"

"ऐसा हो तो अगले माह सेठ अमीचन्द से मिलें, बम्बई जाकर। मदद मिलेगी।"

"उन्होंने सारंग के कॉलेज के लिए बहुत दिया है। पिछली गर्मियों में कह रहे थे कि गाँव से कॉलेज के लिए कुछ चन्दा एकत्र कर दो।"

"उनकी बात भूलने जैसी तो नहीं है।"

"तुम कैसे भूलोगे ? कॉलेज के ट्रस्टीमंडल में ले लिए गये हो न ?"

'मैं ऐसा सोचता था कि सारंग में कॉलेज होना ही चाहिए। आपको कॉलेज के नाम से चिढ़ है।"

"कॉलेज के बिना यहाँ कौन सा काम रुका पड़ा था ? कॉलेज में पढ़कर सब कामचोर बनेंगे। जूता-मोजा पहनकर जुल्फें बढ़ाये घूमेंगे। फिर हमारे पास आयेंगे, कहेंगे, लाओ नौकरी।"

रमणलाल का मानना था कि यदि कॉलेज रहेगी ही नहीं तो भविष्य में सत्ता-संचालन योग्य आदमी कहाँ से मिलेंगे। वे लोग पशाभाई के यहाँ पहुँच चुके थे। पशाभाई कुछ उखड़े-उखड़े से लग रहे थे। उन्होंने बताया कि इंजन कलोल तक आ गया है। एकाध दिन में ट्रेन से भेज दिया जायेगा। वे रमणलाल की ओर मुड़े—

"क्यों भाई रमण, सुना है तुम पार्लियामेंट जाने की सोच रहे हो?"

रमणलाल ने हीरूभाई की ओर देखा। हीरूभाई की समझ में कुछ नहीं आया। वे मुस्कराये। रमणलाल सोचने लगे। मैंने एक बार पशाभाई को दिल्ली का मोह दिखाकर विधान सभा में अपने लिए सीट सुरक्षित कर लेने का खेल खेला है। संभव है पूनमचन्द भी वैसा ही खेल खेलना चाहता हो। लेकिन सारंग की सीट के लिए ये किसे खड़ा करना चाहते हैं? पेथाभाई तो खोटे सिक्के साबित हो चुके हैं। देखते हैं...।

"आपकी शुभ कामना होगी तो पार्लियामेंट में भी जाया जा सकता है।" रमणलाल ने तुरन्त जवाब दिया।

हीरूभाई ने अपनी बात की—

"ऐसा न करें कि इंजन को रमण के ट्रक में मँगा लें? ट्रेन का क्या भरोसा। पानी का इंतजाम हो जाता तो गेहूं बो सकते थे। मुझे ऐसा लगता है कि खेती की आमदनी से ही प्रजाभारती का काम चलाना पड़ेगा।'

"आपके जैसे दाता लोग मदद कर सकते हैं।"

"दाता कहने वाले लोग ही यदि पीछ पीछे तस्कर कहने लगें तो मुझे दान भी सोच-समझकर ही देना पड़ेगा।" पशाभाई ने रमणलाल की ओर ऐसी निगाहों से देखा कि उनका आशय स्पष्ट हो गया। हीरूभाई मौन बैठे रहे।

'मैंने आपको कभी भी तस्कर नहीं कहा है। किसी के सामने कहा हो तो उसका नाम बताइए।"

"इस तरह सब का नाम बताता रहूँ तब तो कोई बात भी नहीं करेगा।"

"तो मत बताओ।" रमणलाल उठ खड़े हुए। उनकी इच्छा हो रही थी कि कह दें कि मैं तुम्हें तस्कर भले ही न कहूँ किन्तु तुम क्या हो यह मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। और इतनी हिम्मत भी है कि जरूरत पड़ने पर सब कह भी दूँगा। लेकिन अच्छा हुआ कि वे कुछ बोले नहीं, नहीं तो हीरूभाई का काम बिगड़ जाता।

रमणलाल आकर जीप में बैठ गये। तभी एक प्रौढ किसान पान की दुकान से दौड़ता हुआ आ पहुँचा। वह अपने भतीजे की नौकरी के लिए सिफारिश चाहता था। भतीजा इण्टर तक पढ़ा है। अब न तो पढ़ता है, न घर का काम करता है। नौकरी के सिवा कुछ करना नहीं चाहता। रमणलाल ने जेब से डायरी निकालकर उसका नाम लिख लिया। प्रौढ ने कहा कि हमारे कहने पर भी वह आपसे मिलने नहीं आएगा। "कोई हर्ज नहीं, मैं उससे मिल लूँगा।" अपने उत्तर से प्रसन्न रमणलाल ड्राइवर से बोले, "देर हो गयी, चलो।"

वे सोच रहे थे – कितने लाचार हैं हीरूभाई। हीरूभाई की लाचारी को पशा-भाई समझ गये हैं। उपयोग करेंगे। समर्थन माँगेंगे और प्रजाभारती के लिए हीरूभाई को अनेकों समझौते करने पड़ेंगे। प्रजाभारती ! नदी के किनारे बसी पिछड़ी जातियों के युवकों को यदि सही मार्ग पर लगाया जाय तो पूरे इलाके में शांति और समन्वय की स्थापना हो। लोग संस्कारी हो जाये। लेकिन सब यही समझते हैं कि प्रजाभारती तो हीरूभाई की ही है। करेंगे जो करना होगा। आरंभ में सब कितने जोर से चिल्लाते थे ? जिले की हर तहसील में इस प्रकार की संस्थाएँ होनी चाहिए। पैसे के अभाव में कोई काम नहीं रुकेगा। वादे भी किये गये थे। किन्तु अब किसी के कान पर जूँ नहीं रेंगती। देखता हूँ। बालूभाई से बात करता हूँ। अहमदाबाद से कुछ किया जा सकता हो तो अच्छा है। नहीं कुछ होगा तो अगले महीने बम्बई चला जाऊँगा। बाद में तो चुनाव नजदीक आ जायेंगे।

खाना खाने के बाद रमणलाल ने बालूभाई से कहा -

"चुनाव के पूर्व हमें एक काम करना है।"

"यहाँ तो चुनाव कब से आ गये हैं। स्वाभाविक है। पाँचेक माह पूर्व तो यहाँ दौड़-धूप शुरू हो जाती है। और तुम क्या नहीं जानते ? जनता परिषद वाले आधे-आधे कांग्रेस और स्वतंत्र पार्टी में विभाजित हो ही जाने वाले थे। नागरिक पार्टी तो खत्म भी हो गयी।"

"वह तो कॉर्पोरेशन में सत्ता हासिल करने के लिए नाटक था असंतुष्ट कॉंग्रे-सियों का।"

"कुछ अवसरवादी भी थे।" बालूभाई ने तटस्थ होकर कहा। वे किसी पर आरोप नहीं करना चाहते थे।

"अवसरवादियों तथा महत्त्वाकांक्षियों की कोई भी पार्टी नहीं होती।"

"सच कहूँ रमण ?" बालूभाई रमण की ओर खिसकते हुए बोले, 'मैं पहले तुझे महत्त्वाकांक्षी ही मानता था। किन्तु धीरे-धीरे तूने अपने संतुलित व्यवहार से विश्वास दिला दिया कि तू अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं से अधिक महत्त्व पार्टी को देता है।"

"यह भी एक तरीका नहीं हो सकता अपनी महत्त्वाकांक्षा पूर्ण करने का ?"– रमणलाल ने पूछा।

"यह तो तेरी स्पष्टवादिता है। नहीं तो अपने नेताओं को तो अपनी गंदी नीयत भी छिपानी नहीं आती। अभी छः महीने की देर है और लोगों ने टिकट के लिए प्रयास शुरू कर दिये।" जिन लोगों को मोरारजी देसाई सख्त और तानाशाह से लगते हैं उन लोगों ने भी उनकी चरणरज लेनी शुरू की है। हमारे जैसे कम ही लोग हैं जो ठाकोर भाई से संपर्क बना रहे हैं।"

"मैं ऐसा मानता हूँ कि मोरारजी को चाहिए कि वे गुजरात का काम ठाकोर भाई को सौंप दें।"

"जीवराज मेहता इसके ठीक विपरीत सोचते हैं ।"

"कोई नहीं चाहता कि उनका शासन खत्म हो जाये । किन्तु मैं तो दृढ़ता-पूर्वक यही मानता हूँ कि गुजरात के स्वतन्त्र राज्य बन जाने के बाद कुछ प्रगतिशील व्यक्तित्वों को राजनीति में आना चाहिए ।"

"देखना भाई, काग्रेस भवन में बैठकर कहीं ऐसी बात मत करने लग जाना। नहीं तो"......

"नहीं, मोरारजीभाई स्वयं इतने हीन नहीं हैं । मैंने कई बार उनका विरोध किया है । इसलिए उन्हें मेरी निष्ठा के बारे में शक नहीं है ।"

बालूभाई ने उठकर नौकर को बुलाया । ड्राइवर को तैयार करने के लिए कहा। रसोइया कॉफी ले आया । वीणा बहन भी कॉफी पीने के लिए पास में आ बैठीं। कोई अंग्रेजी का उपन्यास पढ़ रहीं थीं । रमणलाल ने देखा, शीर्षक की ओर ध्यान भी नहीं गया ।

"चलते हैं ?" बालूभाई ने पूछा । रमणलाल खड़े हो चुके थे ।

"कांग्रेस-भवन जाना है ?" वीणाबहन ने पूछा । "रमणभाई, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं । शाम को रुकोगे कि जाओगे ?"

"रुकने वाला तो हूँ किन्तु शाम को यहाँ आने में बहुत देर हो जायेगी । कोई विशेष बात थी ? जल्दी नहीं है, अभी बैठें ।"

रमणलाल से पहले ही बालूभाई बैठ गये ।

"तुझे लवजी की बात करनी है न ? बोल, इसमें मेरी भी रुचि है ।"

रमणलाल गंभीरता से बैठे रहे । बैठे थे तब न्यायाधीश जैसे दिखाई पड़ते थे । मुँह नीचा करके सुनने के लिए तैयार हुए तो अपराधी जैसे ।

"आपको याद होगा कि जब आप अपने साले को कॉलेज छोड़ने आये थे तो मेरे घर पर मेरी बहन जैमिनी थी । यहाँ से प्रारम्भ हुआ परिचय ....."

"प्रेम में बदल गया ।" बालूभाई ने एकदम सामान्य तरीके से कहा । वीणा बहन के चेहरे की गंभीरता के आगे वे बच्चे से दिखाई दे रहे थे ।

"जानता हूं ।" रमणलाल इतना ही बोल सके । और इन्हीं दो शब्दों में जैसे उनकी बात पूरी हो गयी हो ।

"जैमिनी उस ओर एक-दो बार गयी है इसलिए आपको थोड़ा-बहुत समाचार तो मिला ही होगा, किन्तु मुझे तो आपसे कुछ दूसरी बात करनी है ।"

रमणलाल ने देखा – वीणाबहन के गले में ताजगीपूर्ण चमक थी, उस चमक पर सोने की पतली-सी चैन इतनी आकर्षक लग रही थी कि स्पर्श करने की इच्छा हो । कितनी सुन्दर लग रही हैं आज वीणाबहन !

"यहाँ, जैमिनी की शादी की चर्चा चल रही है ?"

"अभी से कैसी शादी ?" बालूभाई बोल पड़े । किसी को नहीं लगा कि उनका बोलना जरूरी था ।

"मुझे ऐसा लगता है कि आपसे मुझे एकान्त में बात करनी चाहिए थी। इन्हें तो यह पूरी बात ही हास्यास्पद लगती है।" वीणाबहन और भी गंभीर हो गयी थीं।

"लेकिन तुझे कहना क्या है? जल्दी कह दे ना? सब जानते हैं कि जैमिनी और लवजी एक साथ घूमते-फिरते हैं। घण्टों चर्चा करते रहते हैं। अब वे दोनों बड़े हो गये हैं। करेंगे जो इच्छा होगी। चाहे प्रेम करें, शादी करें, भाग जायें या अलग हो जायें – जैसी उनकी इच्छा।" बालूभाई उठकर इस प्रकार बोले जैसे भाषण दे रहे हों।

"उनकी क्या इच्छा है यह भी खबर तो होनी चाहिए न!" वीणाबहन ने रमणलाल की ओर देखा।

"पूछ लेना। जैमिनी अपनी बड़ी बहन को नहीं बतायेगी तो किसे बतायेगी?" बालूभाई ने उत्तर दिया।

"गत सप्ताह आयी थी। रो रही थी। रो रही थी किन्तु बताती कुछ न थी। मैंने पूछा तो कहा कि मैं रो रही हूं इस बारे में भी मुझे कुछ मालूम नहीं है। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या बात है। किन्तु कोई बात है जरूर। अन्त में जाते समय कहती गयी – बड़ी बहन, मैं रो रही थी। मुझे मालूम नहीं कि लवजी मुझे प्यार करता है या नहीं।"

रमणलाल ने लम्बी सांस ली और आह भरकर सोफे का सहारा लिया। वीणा-बहन आगे बोलीं – "मैंने तो उसे इतना ही कहा कि पगली, अपने लिए तो इतना ही महत्त्वपूर्ण होता है कि हम किसी को चाहते हैं या नहीं।"

"इसका उसने क्या जवाब दिया?" बालूभाई वीणाबहन के पास खड़े थे।

"कोई जवाब देकर जाये तो जैमिनी कैसी? जाओ, तुम्हें देर होगी।"

रमणलाल भी बालूभाई के पीछे पीछे ही चल पड़े। वीणाबहन भी सीढ़ियों तक आयीं।

"तुम्हारी बात बड़ी जल्दी पूरी हो गयी।" बालूभाई अभी भी सामान्य थे।

"बात पूरी हुई है, चर्चा तो बाकी ही है।" वीणाबहन को भी सामान्य बनना पड़ा।

"उसकी चिन्ता मत करना, हम कर लेंगे। स्त्रियाँ बातें करें और पुरुष चर्चा। यह श्रम-विभाजन युग-युग से चला आ रहा है। झूठ कह रहा हूँ रमण?"

रमणलाल कुछ बोले बिना ही जीप तक आ पहुँचे।

अकेली खड़ी वीणाबहन को विचार आया – इन लोगों से जैमिनी के बारे में बात करने की आवश्यकता थी? इन दो महीनों में तो शायद जैमिनी स्वयं किसी निर्णय पर पहुँच चुकी होगी। हो सकता है लवजी के साथ भी बातें हुई हों।

उन्हें नयी स्थिति के बारे में ज्ञान न था – आज जमिनी और लवजी के मध्य कितनी दूरी थी।

5

जैमिनी साहित्य की विद्यार्थिनी थी। साहित्य के अध्यापक की शिकायत थी कि विद्यार्थियों को अच्छा गद्य भी लिखने नहीं आता। जैमिनी ने, उन्हें प्रभावशाली उत्तर देने के लिए कुछ पृष्ठ लिखे थे। सोमपुरा, महुड़ी प्रजाभारती तथा गोकुलिया के बीच उसने जो प्राकृतिक दृश्य देखा था वह बरसात में कैसा लगता होगा ? दृश्यों के वर्णन से ही साहब प्रसन्न हो गये थे। बहुत ही सुन्दर वर्णन है ! अक्षर भी सुन्दर हैं और इन अक्षरों को लिखने वाले हाथ भी। यदि उन्हें संकोच न हुआ होता तो जैमिनी की प्रसंशा में भी पाँच-दस वाक्य बोले होते।

जैमिनी उस दिन साड़ी पहनकर गयी थी। वह सिर नीचा किए इस प्रकार बैठी थी जैसे आँचल में छिपे हुए हाथों को देखना चाह रही हो। किन्तु वह मन ही मन सोच रही थी कि यदि उन प्रदेशों में उसने स्वयं वर्षाऋतु बितायी होती तो कितना अच्छा लिख सकती थी। काश ! वह वहाँ एक बार भी भीग सकती तो कितना मौलिक लेख होता।

घर जाने से पहले वह लवजी को अपना नोट देती गयी। एकाध दिन में पढ़ डालना और बताना कि कैसा लगा। हो सके तो लिखकर रखना जिससे बातें न करनी पड़ें।

बातें न करनी पड़ें ? क्या मतलब ? लवजी बड़ी देर तक सोचता रहा — क्या यह मुझसे बात करने से बचती है ? या मैं ही जो उससे कुछ दूर-दूर रहता हूँ इसका कोई अर्थ लगा बैठी है यह। मुझे तो उससे बात करना अच्छा लगता है। यह तो उसीने कहा था कि चालू फिल्म में उसे बात करना अच्छा नहीं लगता। लवजी ने मजाक में कहा था — देखना अब गीत आयेगा। और बात सही निकली थी। जैमिनी को शायद यह बात पसन्द नहीं आयी थी। फिल्म का चुनाव उसी ने किया था। उसकी एक सहेली भी साथ में आने वाली थी। किन्तु अंतिम क्षणों में वह दूसरी फिल्म देखने चली गयी थी। जैमिनी हमेशा यही चाहती थी कि ऐसे समय में उनके दरम्यान कोई न कोई मौजूद रहे। उसे इन दिनों स्वयं से डर लगने लगा था कि कहीं पूछ न बैठे - लवजी, तुम मेरी समझ में क्यों नहीं आते ? लवजी इस प्रश्न से तो अनजान था किन्तु यह अवश्य जानता था कि जैमिनी किसी सोच में डूबी रहती है। हो सकता है उसे किसी ने डाँटा — फटकारा हो। कोई नया परिचय हुआ हो और उसे एक साधारण मैत्री का अंत कर देना हो किन्तु संकोच-वश कुछ कह न पाती हो। जो भी हो - दूर रहना ही ठीक होगा। अकारण बातें करने से क्या लाभ ? उसने नोट पढ़ने के लिए दिया है तो पढ़ जाऊँगा — पूरा नोट। कुछ अतिरिक्त लिखा होगा तो बात समझ में आ जायेगी।

जैमिनी ने अपने नोट में कुछ जगहों पर कालिदास का उल्लेख किया था। उस लेख की मौलिकता देखने के लिए वह "मेघदूत" और "ऋतुसंहार" ले आया।

" ंहार" का दूसरा सर्ग खोला और अट्ठाइस के अट्ठाइस श्लोक एक श्वास में पढ़ गया। गुजराती अनुवाद भी पढ़ा। फिर कुछ पंक्तियाँ लिखीं—

1. प्रेमियों की प्रिय ऋतु।

2. सगर्भा नारी के स्तनों जैसे भरे-भरे बादल।

3. तीक्ष्ण जलधाराओं से प्रवासियों के मन को व्यथित कर देने वाले बादल।

4. फैले हुए पंखों से सुशोभित, आलिंगन तथा चुंबन के लिए व्याकुल, मिलने की कल्पना से उत्सुक हो नाच रहे मोर।

5. सुन्दर हिरणियों के द्वारा काटकर खाई गयीं कोमल तृणांकुरों से भरी हुई अरण्यभूमि।

6. पथिकों के विरह से व्याकुल पत्नियों के मन को मोह लेने वाले, मन्थर गति से चलने वाले इद्रधनुषी बादल..

लवजी रुक गया। अट्ठाइसवें श्लोक में इतना विरह? देखूँ तो इसका प्रभाव जैमिनी के नोट में भी है कि नहीं?

नहीं, इस लेख में जिस बादल, धरती और वृक्षों की बात है वह कालिदास से भिन्न है। इसके नीलोत्पल, कदंब, नवकेसर, केतकी, चंदन-लेपित अंगवाली नारियाँ यह सब भिन्न हैं। अच्छा है कुमारिका ने ऋतुसंहार का अनुकरण नहीं किया है। उसे कुमारिका नहीं कहा जा सकता? लगती तो अच्छी है.

तो यह जैमिनी की भाषा में रचे गए कल्पना-चित्र हैं? उसीके हैं? देखूँ तो मेघदूत पढ़कर

पहले ही श्लोक में विरह की बात। किन्तु दूसरे ही श्लोक में यक्ष को कामुक कहा गया है। कितनी अच्छी पंक्ति है। मेघ-दर्शन से सुखी व्यक्ति का मन बदल जाता है। सच होगा। फिर मिलन की उत्कंठा? गर्भाधान के सुखद क्षणों के लिए पंक्तिबद्ध बलाकाएँ, हे नयनाभिराम मेघ। दसवें श्लोक में पुनः विप्रयोग।

कितना सुन्दर श्लोक है—मेघ, खेत की फसलें तेरे अधीन हैं, इस सचाई से अवगत किन्तु भ्रमरों के कटाक्ष से अज्ञात ग्रामवधुएँ स्नेहार्द्र नयनों से तुझे देखती रहेंगी।

मुझे आज तक क्यों नहीं पता चला कि मेघदूत मेरे लिए ही लिखा गया है। सिर्फ मेरे लिए ही, जैमिनी के लिए भी नहीं।

इस खण्डकाव्य ने तो मुझे यहाँ से उठाकर मेरे वतन में बैठा दिया है, मैं उड़ता-सा महसूस कर रहा हूँ। जब मैं छोटा था तब उड़ने की कल्पना किया करता था। आज मैं एक क्षण यहाँ होता हूँ तो दूसरे क्षण वहाँ। यदि मैं टेबल पर कुहनी टेके न बैठा होता तो मुझे पता ही नहीं चलता कि मैं होस्टल के एक कक्ष में कैद मेघ हूँ। यहाँ से उत्तर दिशा में ही जाता हूँ। ये अखबार वाले भी जितना लिखते हैं उतना ही समझते भी हैं। नदी में जरा-सा पानी देखते हैं कि हेडलाइन दे देंगे उपरवास में तीव्र वर्षा। मेरे वतन के विस्तार को ये लोग एक

पारिभाषिक संज्ञा के नाम से जानते हैं। उन्हें लिखना चाहिए कि सोमपुरा, सारंग, गोकुलिया इत्यादि गाँवों में मूसलाधार वर्षा हुई है और पानी में रेती का जो ताजा ताजा रंग लहरा रहा है वह वहीं से बहता हुआ आया है।

जैमिनी ! तुझे वर्षा-वर्णन करने की क्या आवश्यकता थी पगली। तू तो दुश्मन की तरह मेरे पीछे पड़ी हुई है। मैं यहाँ शांति से पढ़ने के लिए आया था, ग्रंथकीट बनने आया था, यहाँ से पंडित बनकर जाने वाला था किन्तु लगता है कि तू मुझे कहीं का भी नहीं छोड़ेगी। यह तूने जो भी लिखा है उसे पढ़कर तेरे प्रति प्रेम नहीं उभर आयेगा तो और क्या होगा ? तू तो ऐसा मानती होगी कि यह तो बौडम-अनाड़ी है। इससे और प्रेम से क्या संबंध। किन्तु तुझे क्या मालूम कि मैं तो, चिराग में झुलस रहे पतंगे से भी बढ़कर हूँ। कालिदास ने ऋतुसंहार में जिन नील हिरणियों की बातें की हैं उन्हें हरी-हरी घास चरते हुए मैंने देखा है। हाँ, तूने नहीं देखा होगा। तू क्या देखेगी भला ? और अब तो वे सारे हिरण बचे भी कहाँ हैं। नीलगायें भी तो नहीं रह गयी हैं। समय भूखा है, उन सुन्दर प्राणियों को वही खा गया।

सच कह रहा हूँ जैमिनी। अब मैं बहुत पछता रहा हूँ। लगातार चार-चार वर्षाऋतु मैंने अपने वतन से दूर बितायी हैं। आज से पाँच वर्ष पूर्व यदि मुझसे किसी ने पूछा होता कि जुताई के दिन तू पढ़ने जाता है ? तब मैं उससे कहता मूर्ख, इस जन्म की तो बात ही छोड़, मैं अगले जन्मों में भी जुताई के दिन खेतों पर ही गुजारूँगा। मूँजरे बैल के घुँघरू बज रहे होंगे, उन्हें सुनूँगा और खेतों में जुताई की वजह से ऊपर आये कूड़े पर घूम रही बीरबहूटियों को झुककर देखूँगा, फिर देवू भाई से पूछूँगा, जानते हो भैया, इन्हें संस्कृत में इंद्रगोप कहते हैं। यदि तुम इतना भी नहीं जानते तो मैट्रिक तक संस्कृत में इतने अधिक मार्क्स कैसे ले आये ? मुफ्त में ? हाँ मैं यह नहीं कहता कि नदी पर झुके हुए श्याम मेघों को देखकर कालिदास ने इन्द्रनीलमणि की मोतियों की माला की जो बात की है उसे भी तुम जानते ही होगे। सच तो यह है कि गंभीर नदी के शांत-शीतल जल में प्रतिबिम्ब बनकर प्रवेश करने वाली बात भी मैंने आज ही जानी है। आज मैं अचानक कपूर की काया धारण करके केतकी के वनों में घूमने लगा हूँ। अब मुझे कोई बंधन आधीन नहीं कर सकता। वर्षा की एक फुहार से ही जिसका हृदय भीग न जाये वह युवक भी भला कोई युवक है ? मैं इक्कीस वर्ष का हो गया। छोटा तो नहीं रहा ? आज मैं दर्पण में देखे बिना भी यह कह सकता हूँ कि मैं मैं हूँ। जैसा हूँ वैसा ही उड़ भी सकता हूँ। है किसी में शक्ति जो मुझसे जरा भी जोड़ घटाव कर सके ?

चलो, जैमिनी को पत्र लिखूँ। क्या संबोधन करूँ ? प्रिय लिखूँ ? क्या आवश्यकता है ? उसके नाम में ही प्रियता का भाव नहीं समाविष्ट है ? ठीक है।

जैमिनी,

तुम्हारी रचना पढ़ गया। कितनी बार पढ़ा याद नहीं। नहीं, बताऊँगा

नहीं। किन्तु मैं उसे निबंध या लेख कहने के बदले रचना कह रहा हूँ क्योंकि इसमें काल्पनिक तत्त्व हैं। यह कल्पना तुम्हारी ही है या किसी अन्य की, इस जिज्ञासा से प्रेरित होकर मैं "ऋतुसंहार" और "मेघदूत" पढ़ गया। यह सच है कि तुम कालिदास की शिष्या हो किन्तु तुमने कालिदास के शब्दों का अनुकरण नहीं किया है। कवि की कल्पना में तुम्हारे ही अंतःकरण का भाव उभरा है। किन्तु इस भाव और कल्पना को जोड़ने वाली एक शृंखला का अभाव है। अनुभव की शृंखला का। सच कहता हूं, यदि तुम, नदी के किनारे किसी सीधे चढ़ान वाले टीले पर खड़ी-खड़ी भीगी होतीं, एक बार ही सही आषाढ़ की आक्रामक धाराएं, तुम्हारे वस्त्रों के आरपार उतरी होतीं, तो बात ही अलग थी। उसे पढ़कर मैं अवाक् हो जाता। अपने मौन में मैं तुम्हारे अनुभवों का सुख ले रहा होता। यदि पत्र में कोई अतिशयोक्ति हो रही तो···उसे छोड़कर पढ़ा जा सकता है।

तुम्हें ऐसा नहीं लिखना चाहिए था कि कितनी भी बरसात हो किन्तु यह क्षीणधार साबरमती छलकेगी नहीं। क्योंकि इसमें इस हकीकत का आभास हो जाता है कि तुमने यह सब यहीं, अहमदाबाद में बैठकर लिखा है, मेरे खेत में नहीं, जहाँ तुम सात वर्ष पहले आयी थीं...

दो वर्ष पूर्व ..नहीं, अभी तो डेढ़ ही वर्ष हुआ है, मैं कुछ भी नहीं भूला हूं – हम महुड़ी की नदी के किनारे एक साथ खड़े थे। गाँव और नदी को जोड़ता हुआ ढलान गहरे, चौड़े नाले में परिवर्तित होकर नदी में मिलने ही वाला था कि एक दूसरी पतली नाली इधर-उधर घूमती हुई आकर उसमें मिल गयी थी। तुम्हें कल्पना-शक्ति से उन सबमें प्रवाह जोड़ देना था। हवा के बदले पानी। शायद पानी की कल्पना तुमने की भी है किन्तु तुमने मात्र पृथ्वी पर बरसे हुए जल को ही एकत्र किया है और उसी को नदी तक ले गयी हो। नदी जब दूर-दूर से उछलती-छलकती आ रही हो तो ये नालियाँ नदी में मिल जाती हैं या नदी स्वयं उन नालियों को अपनी भुजाओं की तरह उछालती है, यह कह पाना कठिन होता है। अहमदाबाद में बैठे-बैठे हम साबरमती की बाढ़ की कल्पना करेंगे तो क्या समझ में आयेगा कि जहाँ किनारे इतने समतल और ऊंचे नहीं हैं वहाँ नदी का संयम निरंतर टूटता जाता है। यहाँ तो पुल पर खड़े होकर भी आराम से नदी की बाढ़ को निहारा जा सकता है। किन्तु वहाँ, हम-तुम तो क्या, नदी से दूर अरसे से शांति से खड़े वृक्ष भी बाढ़ के प्रकोप में आ जाते हैं। उसके किनारे उसके अंचल में हिरण खेलने-कूदने बड़े होते हैं, इसीलिए भले ही यह वत्सल साबरमती कही जाती हो, उसके वत्सल मातृत्व को मैं सौ बार नमन करता हूं, किन्तु इसके आषाढ़ी उन्माद के बारे में भी मैंने बहुत कुछ सुना है। एक बार मैंने स्वप्न देखा था कि दोनों किनारे छलक रही साबरमती में एक चाँदनी रात को मैं नहाने गया था। फिर उसमें से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। पलाश की एक

छोटी-सी डाल पकड़कर मैं तैरता हुआ अहमदाबाद तक आ पहुँचा था। गाँधी पुल के नीचे लटक रही रस्सी को पकड़कर जब मैं ऊपर आया तो तुमने मुझे शरीर पोछने के लिए टुवाल दिया था। उसमें से आ रही केवड़े की सुगंध अभी तक मेरी नाक में बसी है।

यहाँ बैठे-बैठे मैं आज अपने सम्पूर्ण इलाके को देख रहा हूँ। 'मेघदूत' पढ़ने के बाद तो मैंने आकाश की आँखों से धरती को देखना सीख लिया है। टींबा से प्रजाभारती तक का सम्पूर्ण प्रदेश मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा है। रिमझिम-रिमझिम बरस रहा है। शाम का समय है। सोमपुरा, सारंग, गोकुलिया, बदरी सब कहीं का हाल एक जैसा है। वृद्ध माताएँ और नववधुएँ गीले ईंधन से चूल्हा सुलगा रही हैं। रिमझिम बरसात का सामना करते हुए धुएँ की लकीर मुझे तो बादल जैसे दिखाई देती है। हम कालिदास नहीं हो सकते।

मुझे यहाँ जंगल के मोर याद आते हैं। यहाँ जंगल तो नहीं है किन्तु जंगल सी निर्जन वीरानगी अवश्य है। आषाढ़ आया नहीं कि हमारे जंगल मोर की टहुँक से गूँजते रहते हैं। पहले सोचा करता था कि मेघ गरजते हैं तो उन्हें चिढ़ाने के लिए मोर टहुँकने लगते हैं। किन्तु मोर का बोलना स्वैच्छिक होता है। पास में ढेल है या नहीं वे इसकी भी परवाह नहीं करते। वे भाई साहब खेत की किसी मेड़ पर बैठे होते और दस वर्ष का लब्जी जब उन्हें पकड़ने दौड़ता तो एकदम अंतिम क्षण में वे उड़ जाते और वह भी टहुँकते हुए। मुझे आज भी याद है कि मेरे खेतों की ओर जब पहली बार ट्रक जैसा बड़ा वाहन आया था तो सभी मोर लगभग दस मिनट टहुँकते रहे थे। मोर को अपनी इच्छानुसार शांति चाहिए। नाचता हुआ मोर तुमने देखा है? चित्र में देखा होगा। तब तुम नहीं समझ सकतीं। किसी भी पक्षी या प्राणी का प्रेम इतना मोहक नहीं होता। नाचता हुआ मोर अपने प्रेम के उत्कट क्षण का अनुभव कर रहा होता है। उसकी वह कारुणिक तड़प...

यही मोर, नृत्य करके जो वर्षा के आगमन का स्वागत करता है, अतिवृष्टि में उसका शिकार हो जाता है। कई दिनों की निरंतर बरसात के कारण, झाड़ियों में छिपा हुआ मोर भीग जाता है और सीलन तथा भय से वजनदार हो गये पिच्छकलाप को उठा पाने में भी असमर्थ हो जाता है। और ऐसे समय वह किसी बिल्ली का शिकार हो जाता है। उसके पंखों को पकड़ने के लिए दौड़ रहा वह दस वर्ष का लड़का पंखों का ढेर देखकर चीत्कार कर उठता है। मुट्ठियाँ कसकर वहाँ से भाग खड़ा होता है। उसने कई मौतें देखी हैं। मरी हुई चुहिया की पूंछ पकड़कर वह फेंक आया है। बड़े-बड़े प्राणियों को मरते हुए देखा है। किन्तु कभी भी ऐसी कंपकंपी नहीं आयी। नहीं मुझसे यह नहीं सहा जायेगा। मोर मानवप्रेम का स्वयंभु प्रतीक है। एक लोकगीत नहीं है? जंगल का मोर...। मेघाणी ने खोजा है। कुएँ के पास नाच रहा मोर नायिका को पसन्द आ जाता है।

नायक ईर्ष्या से प्रेरित होकर उसको मार देता है... नहीं.. नहीं. मैं और नहीं लिख सकूँगा। कभी वह गीत ही सुनाऊँगा। अपने इस सात वर्षों के परिचय में जितना मैं तुम्हें जान गया हूँ, तुम मुझे नहीं जान सकी हो। दोष मेरा भी है। मैं ही मौन रहा हूँ। गाने से तो भला कौन रोक सकता था? जैसा आता हो, वैसा गाया जा सकता है। इसके लिए किसी विशेष स्थिति का होना अनिवार्य तो नहीं ही है।

यहाँ कितना अकेला हूँ मैं। तुम्हें बुरा तो नहीं लगता? तुम हो फिर भी मैं स्वयं को अकेला कह रहा हूँ। किन्तु सच तो यह है कि यह बात लिख चुकने के बाद ही मुझे याद आ रहा है कि तुम हो। शायद मैं अकेला हूँ, इसीलिए तुम हो, जुदाई है...।

तो चलो, एक बार रिमझिम बरसात में थोड़ी देर साथ चलें। सड़क न हो, पगडंडी भी न हो। नीचे और आसपास गहरे नीले रंग का मैदान हो और ऊपर श्याम मेघ का साम्राज्य। बिजली को चमकना हो तो चमके। नही तो हम अपनी आँखों की ज्योति में कदम रखते जायेंगे... बस चलते जायेंगे। तुम पूछेगी कहाँ? मैं उसका उत्तर नहीं दूँगा। अनंत वृष्टि हमें निःशब्द कर देगी। हमारा मौन हमीं से लिपटा होगा। इसी घनघोर वृष्टि में हम एक दूसरे के अस्तित्व में विलीन हो जायेंगे।

बस प्रिय।

पत्र लिखना, मैं शब्दहीन हो गया हूँ।

जैमिनी ने पत्र में लिखा –

"मुझे तुमसे मिलना तो है किन्तु धैर्य–हीन एकान्त में नहीं, आनंद से भरे मेले में। मैं ग्राम–कन्या बनकर शांति को बुलाने जाऊँगी। आँगन में खड़ी होकर, उसे तैयार होने के लिए कहूँगी –

"चलो सखी जाएँ वहाँ, जहाँ बसे व्रजराज
दधि बेचन और हरिमिलन, एक पंथ दो काज।"

जैमिनी ने इस पत्र की एक प्रति शांति के पते पर भेज दी।

6

रमणलाल को कोई आपत्ति न थी। चाहे लोकसभा हो या विधानसभा। जैसा पार्टी चाहे। पार्टी का हित पहले, मेरा बाद में। मेरे खड़े होने से यदि लोक सभा की सीट जीतने में आसानी हो तो मैं आनाकानी नहीं करूँगा। यद्यपि यह सही है कि यहाँ विधानसभा में जीत होती है तो मंत्री नहीं तो उपमंत्री तो अवश्य बना जा सकता है।

सत्तावन के चुनाव में पद्माभाई का झुकाव जनता परिषद की ओर था।

आज वे पुनः कांग्रेस के पलड़े में आ गये हैं। उनका पलड़ा भी भारी है। ऐसे लोगों की उपेक्षा करने की शक्ति जब तक कांग्रेस में नहीं आयेगी, समाजवादी समाज-रचना नहीं हो सकती।

विचारों का यह ज्वार शांत हो इसके पूर्व ही पशाभाई से मिलने की इच्छा हो आयी। देखने हैं पशाभाई इस बार क्या रवैया अख्तियार करते हैं।

पशाभाई बगिया में गये हुए थे। रमणलाल को आश्चर्य हुआ। पशाभाई अकेले न थे। तीन व्यक्ति और थे। पशाभाई उनसे किसी जमीन के विक्रय की बात कर रहे थे।

"आप बैठिये, मैं बाद में मिलूँगा। आप इस समय कुछ अधिक जरूरी काम में लगे हैं, संभवतः।" रमणलाल खड़े हो चुके थे। पशाभाई ने उन्हें साग्रह बैठा लिया। "देख भाई रमण। इस बाबत में तो तेरी सलाह की भी आवश्यकता पड़ेगी।"

रमणलाल थोड़ी ही देर में समझ गये थे कि इस मामले में पशाभाई का स्वार्थ है। फिर जमीन की कीमत भी ऐसी ही होगी कि उन्हे भारी न पड़े। किन्तु यह जमीन तो महाजन की है। कम कीमत कहकर मैं क्यों पाप करूँ? बेहतर है कि गोल-गोल जवाब दूँ।

पशाभाई भी कहां कच्चे खिलाड़ी थे। बोले-

"अरे भले आदमी। गोल-गोल क्यों कह रहे हो? झट से कह दो। पाँच हजार, दस हजार, बारह हजार। जो इस जमीन को खरीदेगा वह यह पैसा महाजन को देगा न? समझ लेगा कि हजार रुपये दान दे दिये।"

"दान का हिसाब अलग रखना चाहिए। कीमत तो योग्य ही लगनी चाहिए।"

"योग्य कीमत तय करने के लिये हमें तेरे जैसा काबिल आदमी दूसरा नहीं मिलेगा।"

"किन्तु पशाभाई --"

"अरे, ऐसे सकुचाता क्यों है?"

"जमीन कौन खरीद रहा है यह जाने बिना .."

"अरे पगले। तुझे ऐसी पंचायत में पड़ने की क्या जरूरत? काला चोर खरीदेगा जमीन को। पहले मूल्य तय करके विज्ञापन देंगे। कोई अधिक देने वाला मिलेगा तो देखेंगे।"

"किन्तु पशाभाई खरीदने वाले हैं यह जानने के बाद कौन..."

"वे दिन बीत गये रमण। अब तो कोई भी सम्मान नहीं करता। दूसरे किसी की बात क्यों करें? यह हमारा पेशा ही बिगड़ उठे तो मेरे सामने आ पड़े।"

"उसे तो आपने ही सहारा दे देकर मजबूत बनाया है।"

"मैं तो कब उसे सहारा देने गया था? यह तो तुझे ऐसा लगता है। तू हार गया था इसलिए।"

"इस बार मुझे हराना है कि..."

"तुझे हराने से मुझे क्या लाभ ? किन्तु जिले वाले बिना सोचेसमझे किसी को भी, कहीं से भी खड़ा कर दें तो पशाभाई क्या करें ?"

"उसे हरायें ।"

"कैसे हरायें ? ज्यादा से ज्यादा मदद नहीं करेंगे ।"

"मदद न करने का मतलब ही यही होता है ।"

"तू बोलने में कहाँ पीछे पड़ता है ?" पशाभाई ने पहलू बदलते हुए कहा । उन्हें मसा की तकलीफ थी ।

"स्पष्ट तो कर ही लेना चाहिए । आप तनमन और धन से सहारा देते हो तो ही मैं खड़ा रहूँगा ।"

"अब तो तू स्वयं जीत सके इतना शक्तिशाली है ।"

"ऐसा हो तो भी मुझे प्रयोग करके खतरा नहीं मोल लेना है । पशाभाई मेरे लिए आगे आने को तैयार हों तभी मैं .."

"नहीं . नहीं .. तब तो तू बिना कुछ निर्णय लिए ही मेरे पास आया है क्यों ? यदि मैं कहूँ कि मुझे चुनाव में खड़ा ही नहीं रहना है तो ?" मुस्कराने से पशाभाई का चेहरा सुन्दर नहीं दिखाई देने लगा था । फिर भी रमणलाल ने भी मुस्कराकर ही उत्तर दिया–

"आप ऐसा करेंगे ही नहीं ।"

रमणलाल और पशाभाई ने एक दूसरे की मुस्कराहट को समझ लिया था । साथ ही साथ भी समझ गये थे कि आगे बात दूसरों की उपस्थिति में नहीं की जानी चाहिए ।

और फिर महाजन की जमीन पशाभाई के लड़के के नाम कर दी गयी ।

पशाभाई ने रमणलाल को लोकसभा में चुनाव लड़ने की सलाह दी थी । विधान सभा के लिए तो उनका भतीजा तैयार था । पूनमचन्द को वह बहुत आशास्पद दिखाई देता था । उन्होंने ही पशाभाई से कहा था कि विधान सभा में किसी अन्य को नहीं बल्कि अपने अंबालाल को ही भेजना चाहिए । अंबालाल की विजय निश्चित थी । पशाभाई ने भी घोषणा कर दी थी कि अंबालाल को यदि कांग्रेस टिकट देती है तो वे पचास हजार रुपये का सहयोग कर देंगे । पेथाभाई ने प्रचार शुरू कर दिया था कि अंबालाल नहीं तो दूसरा कोई नहीं । मेरा शौक पूरा हो गया पर किसी दूसरी जाति के उम्मीदवार को यहाँ विधायक होने नहीं दूँगा ।

रमणलाल ने एक दूसरा हिसाब लगाकर देख लिया था । प्रदेश समिति को समझाकर खुद सारंग की बैठक पर विधान सभा का चुनाव लड़ें तो अंबालाल को पराजित करने के लिए दो अन्य प्रत्याशी खड़े रखने पड़े, एक पटेल जाति का, दूसरा पिछड़ी हुई जातियों से । उन्हें खर्च देना पड़े । इसके बावजूद अंत में वे अंबालाल के समर्थन में चुनाव क्षेत्र से हट सकते हैं । पशाभाई के लिए उन्हें खरीद लेना एक खेल है । इससे तो बेहतर है कि संसद का चुनाव लड़ूँ ।

चुनाव समिति में मेहसाना की बैठकों को लेकर बहस शुरू हुई। सारंग का क्रम अंतिम था। हीरूभाई ने मौन रक्खा, रमणलाल ने समर्थन किया। अंबालाल का नाम तय हुआ। बाहर प्रतीक्षा करते पशाभाई को संकेत करने खुद रमणलाल गये थे। उनके लौटने से पहले संसद की बैठक की बात शुरू हो चुकी थी। बम्बई के एक धनाढय व्यापारी ने कांग्रेस की सेवा करने की तैयारी बल्कि तत्परता दिखाई थी। उनके नाम पर सानुकूल बहस चल रही थी। बात तीव्र वेग से आगे बढ़ रही थी, परन्तु हीरूभाई यकायक बौखला उठे, इससे ब्रेक लगा। "आप निमन्त्रित हैं।" कहके उन्हें शान्त करने का प्रयत्न किया गया पर उनकी बात टाले नहीं टली। बाहर के आदमी को ऊपर से थोप देने में प्रजातन्त्र के किस सिद्धान्त का समर्थन होता है ? हाँ, बड़ा लोकसेवक हो तो प्रस्ताव समझ में आ सकता है। पर यह श्रीमंत व्यक्ति तो स्वतन्त्र पक्ष को ही शोभा दे सकता है। आप लोग याद रखना – अगर वह कांग्रेस का प्रत्याशी बन पाएगा तो स्वतन्त्र पक्ष अपना प्रत्याशी खड़ा नहीं रखेगा।

इसके बाद सब रमणलाल की उपस्थिति में उनका विरोध करते लजाये थे। हाई की संमति के लिए इनका नाम भेजना तय हुआ। रमणलाल का चुनाव अभियान यथा-समय शुरु हो गया था। घेमर की राय के अनुसार उसीने रमणजी के प्रचार का शुभारंभ किया था। पुस्तकालय के सामने वाले मकान के पिछवाड़े की दीवार पर काला रंग पोतकर श्यामपट तैयार किया गया था। उसके नीचे धूल में चॉक का एक टुकड़ा पड़ा था। घेमर पेशाब करने के लिए कोई कोना खोज रहा था वहाँ उस टुकड़े की ओर उसकी नजर गई। हाथ में लिया, उछाला, हथेली में पकड़ा तब तक इसके उपयोग के विषय में घेमर को कुछ सूझा नहीं था। परन्तु सामने पुस्तकालय के चबूतरे पर बैठ, अखबार पकड़, चुनाव की बात करते रणछोड़ और नारण की ओर देखते ही घेमर को लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई: 'वाट फार रमणजी।' नारण ने शिक्षक की हैसियत से वर्तनी के विषय में मार्गदर्शन देना चाहा। घेमर को अपने लेखन में कोई गलती नज़र नहीं आ रही रही थी। उसका तर्क था: हम जैसा बोलते हैं, वैसा लिखा है। रणछोड़ ने एक गाली सुनाकर कहा: "लिख घेमरवा हम जौन कहीं, लिख।"

यह काम आप जैसों का है – कहते हुए घेमर रणछोड़ के सामने बैठ गया। अखबार माँगा था। "पढ़के देइत है" रणछोड़ ने असाधारण विलंब किया था। घेमर ने दोनों पृष्ठ उसके हाथ से खींच लिये थे और रणछोड़ की तरह पैर फैला बैठकर पढ़ना शुरू किया था। संयुक्ताक्षरों का उच्चारण उससे गलत हो जाने पर रणछोड़ ठहाका लगाकर हँस पड़ा था। "बड़े पण्डित हो तुम तो"–कहता हुआ घेमर वहाँ से सहकारी मंडली की दुकान पर गया। उसने मंत्री से निवेदन किया कि पाँच शेर कोलतार मंगवा दें तो दीवारों पर रमणजी का नाम लिखवा दें। मंत्री का कहना था कि हमारे गाँव की दीवारों पर चूना ज्यादा खुलेगा। और यह सस्ता भी पड़ेगा।

घेमर को सस्ते-महंगे की परवाह नहीं थी। रमणलाल जब यहाँ आयें तो देख सकें कि हमने इनका प्रचार ठीक से किया है। घेमर ने दो रुपये जेब से निकाले और कहा : कल ही हरेक दीवार पर "वाट फार रमणजी" लिखवा दीजिए। मंत्री ने दो रुपये लेकर घेमर की ओर देखा। "कुछ बचै तो बीड़ी दे देव।"

"हम बीडियों का व्यापार नहीं करते, व्यसन है वह तो।"

घेमर का प्रश्न था कि क्या आप लोग बीड़ी नहीं पीते? एक-दो आदमी पीते हों तो व्यसन कहा जा सकता है। जब सारा गाँव पी रहा हो तो व्यसन कैसा? आप लोग खुशी से मंगवाइए बीड़ियाँ। कोई विरोध करे तो बताना – मैंने कहा था।

"तुहरे कहने से न चले, प्रस्ताव पारित करे क परे।"

"अरे कोने मां बैठक पेशाब करत हौ तो का ऊ के प्रस्ताव पारित करत हो?"

मंत्री ने घेमर के मजाकिया स्वभाव की सराहना की और पूछा : आज खेत में नहीं गये? घर पर क्यों है? घेमर ने बताया कि खेत में काम नहीं था, मूड भी नहीं था। "मूड नहीं था।" मन्त्री ने आश्चर्य से कहा : अरे तुम अंग्रेजी बोले लाग? वाह घेमरभाई।

तभी रणछोड़ और नारण आ पहुँचे। रणछोड़ ने आते ही तौले को आदेश दिया : 'जाव दूध ले आऊ चाय बनाऊ, बैठो घेमर पीयत जाब।"

"एक बात बताऊ रणछोड़भाई? तुम हमसे छोट हैं फिर भी हम सम्मान से बुलाइत है जब कि तुम हमका तुकार--"

"अब ध्यान रखब।"

"तब तो ठीक है, नाहीं तो लिहाज नाहीं रहे।"

नारण ने बीच बचाव किया। रणछोड़ भंडार में गया। एक दो चीजे पैर से इधर-उधर करके हाथ में गुड का चक्का लेकर कुर्सी में बैठा। नारण, घेमर और मंत्री तीनों ने बारी-बारी से उसकी ओर देखा। गुड़ का चक्का जल्द छोटा होता जा रहा था। सभी सोचते रहे कि हममें से कोई उसे जरूर टोकेगा। लेकिन कोई बोला नहीं। रणछोड़ हाथ झाडता हुआ उठा। कोने में पानी की मटकी टेढी पड़ी थी। आवश्यक पानी उसमें था। पीकर रणछोड़ बैठा, बीड़ी जलाई। खड़ा हुआ। तौले के नाम गाली देकर बोला : "ससुरे बाझौ के बच्चे पैदा भये मुला तोला नाहीं आवा।"

"दूध के बिना चाय तैयार करके आये।"

"तब तो पी लीन हम चाय। ढोर के मूत अस ले आए। अबे, यहाँ हमने सारी सुविधाएँ खड़ो कीन रहा, उसका का भवा?"

"स्टव खराब होय गवा है" मन्त्री ने स्पष्टता की।

"खराब काहे नाहीं होगा? सभी बैठे-बैठे छेड़-छाड़ करत रहा तो का होगा? जादा दाईमां सौरी खराब होत है।"–घेमर ने कहा। किसी ने उसका समर्थन नहीं किया। उसे लगा कि वह उन सब के बीच अकेला है। उसे अब यहाँ बैठे रहना

रुचा नहीं। मगर चाय आने वाली थी यह तय था। इस बीच उठ चले जाने में समझदारी न थी।

घेमर ने चुनाव की बात छेड़ी। उसकी बात को महत्त्व दिये बिना ही रणछोड़ बोला—

"हमहूँ क एक बार विधान सभा के चुनाव मां खड़ा होय क है।"

"हारे की तई।" सहकारी मंडली के मंत्री ने पैर हिलाते हुए पूछा।

"हारी तबौ का नुकसान ? अच्छे-अच्छे नाहीं हार जाते ? ससुरी डिपोजिट चली जाय तबौ का ?" रणछोड़ हँसते हुए बोला।

"तो फिर यही बार खड़े रहो। नाहीं तो डिपोजिट बढ़ जाय तो तुमका नुकसान होये।" घमर की बात पर मंत्री और नारण हँस पड़े। रणछोड़ पहले से भी अधिक गंभीर हो गया। बोला—

"जिन्दा रहब तो देखाय देव। विधान सभा मां जायक एक बार न दहाड़ी तो हमार नाम रणछोड़ नाहीं।"

"सब लोग विधान सभा मां दहाड़े जात हैं का ?" घेमर ने गंभीरता से पूछा। इसका असर रणछोड़ पर भी पड़ा। वहां हँस पड़ा।

चाय पीते-पीते घेमर ने पूछा—

"आजकाल धमाकाका नाहीं देखाते ?"

किसी को कुछ भी बोलता न देखकर नारण ने कहा—

"सबेरे लड़का क लेकर जात हैं तो शाम क अंधेरे भये के बाद वापस आवत हैं। आगे—आगे भैंस, बगल मां फूलजी और सिर पर इंधन।"

"पिछले जनम के पाप आय।" रणछोड़ बोला।

"ई जनम मां यहीं से तुम पुन्य करत हो न ?" घेमर उठ खड़ा हुआ।

"काहे हम कीके रास्ता मां टाँग अड़ावा ?" रणछोड़ ने जरा ऊँची आवाज़ में कहा और कुर्ते की जेब में हाथ डालकर हिलाने लगा।

"मन मां झाँक के देखो।" घेमर ने घूमकर देखे बिना ही कहा। उसके जाने के बाद सब उसकी निंदा करने लगे। रणछोड़ ने कहा—

"एक दिन हमका दूसरे के घरे देख लिहिस रहा तबसे बहुत रूआब झाड़त है। नाहीं तो पहले सीमा मां बात करता रहा।"

"तुम ठीक से चलौ हाँ रणछोड़ भाई। किसी दिन—"

"ससुरी आदत खराब पड़ गयी है। पर अतना बता दूँ कि हम कोइ पर जबरदस्ती नाहीं करित है। मन देखित है तबै...।"

फिर गाँव भर की बातें होने लगीं। बात छना तक पहुँच गयी थी। इस उम्र में भी उसके क्या-क्या शौक हैं। नारण ने बताया कि वह गाँव का मुखिया बनने का ख्वाब देख रहा है। रणछोड़ ने मजाक किया—

"तेरा बाप मुखिया बन सकता है तो छना काहे न बने ?"

"मानाकाका और छना क तुम एक पलड़ा मां रखत हौ ?" मंत्री ने कहा।

चौराहे से लाला गली में जा रहा था। मंत्री की नजर उस पर पड़ गयी। उसीकी बात प्रारंभ हो गयी। गोकुलिया से तखत के घर से उसके लड़के का संबंध आया था। पूरी तैयारी हो चुकी थी। किन्तु करसन बुढऊ ने लाला को धमकाकर बात बन्द करवायी। जेठा ने भी समर्थन किया। लाला को बात टाल देनी पड़ी। रणछोड़ ने कहा–

"जानत हो ? लालाकाका काहे तखत के घर से संबंध बनावा चाहत रहे ? ऊके मोट–मोट जाँघ देख लिहिन रहा यही से।"

"अब तो ऊ बुढाय गई होये रणछोड़ भाई।" मंत्री ने बताया कि उसने एक बार तखत को सारंग के बाजार में देखा था।

"तुम देखेक होबो ऊ कोई और होयग। ऊ तो साली..." थूक निगलते हुए रणछोड़ ने आगे कहा–"मुश्किल से चालिस साल के भई होयँ। तू अबहीं ऊका जानता नहीं। लहँगा के एक नाड़ा के बदले मां ऊ खभा के सजूभा कै सारी कमाई उठाय लायी रहा। तब से तौ बड़ाक घर बनवाय क बैठी है। अब सब ही कहत है कि ऊ सुधर गयी है। सुधरे न तो जाये कहाँ ? ससुरी नंगी नाचे तो का ? और नचावे तौ का ?" तखत की नग्न काया की कल्पना करते हुए रणछोड़ ने फिरसे थूक निगला। फिर बीड़ी सुलगाते हुए बोला–"ससुर का जमाना आय गवा है।"

एक लड़का पैसे और थैली लेकर गुड़ खरीदने आया। तौले ने कह दिया : कल आना, आज दुकान बंद करने का वक्त हो गया।

लड़का हटा नहीं, मंत्री ने सलाह दी दे दे, वरना उसकी मां आयेगी तो गालियाँ देकर जायेगी।

तौला भंडार में गया, रणछोड़ नारण को लेकर खेत की ओर चला। मंत्री ने एक महीना पुराना रोजनामचा निकाला। इस काम से वह ऊब जाता। खरीदी के काम के लिए वह कहीं भी पहुँच जाता। मंडली के खर्च पर खाने-पीने का शौक पूरा हो जाता। यात्रा खर्च बही में लिखते समय आठ–बारह अन्नी रुपया ज्यादा लिख देता परन्तु यह पक्का हिसाब लिखना चलो, चुनाव आ रहा है। यह अच्छा है। यह हिसाब–किताब एक और रखा जा सकेगा। कह देंगे – प्रचार के काम में लगा रहा, समय मिला ही नहीं। वह रणछोड़ जो पैसे उधार ले गया है, कब लौटायेगा ?

उसकी इच्छा हुई : देवूभाई को बताये रखना ठीक होगा। वह भगतबाड़ा गया। देवू ने मेहसाना के जगुदण से रोप मंगवाये थे। वह गड्ढे खोदकर रोप लगा रहा था, नरसंग भगत बाल्टी से पानी ला रहे थे। मंत्री रणछोड़ के विरुद्ध फरियाद करना भूल गया और युकेलिप्टस की ऊँचाई के विषय में सुनकर इतना प्रसन्न हुआ कि भगत से बाल्टी लेकर पानी लेने गया।

7

16 फरवरी, 1962 को तीसरा सामान्य चुनाव प्रारंभ हुआ। पिछले सप्ताह टींबा में सत्ताइस गाँवों की सभा जमा हुई थी। प्रत्येक गाँव से दो-दो, तीन-तीन लोग आये थे। सोमपुरा से करसन बुढऊ और माना निकले तो करसन को विश्वास था कि भगतवास से नरसंग भी साथ चलेंगे। इसलिए उन्होंने धमा को भी साथ ले लिया, जिससे तीन-तिकट, महा-विकट न हो। किन्तु नरसंग ने तो हाथ से माला ही नहीं छोड़ी। उन्होंने कहा देवू होता तो आता। किन्तु वह तो कल ही सारंग चला गया था। जाओ, तुम लोग जो उचित समझो, मगनजी से कहना। मेरा स्वभाव थोड़ा गर्म है। कुछ बोल दूँगा। यह कोई संबंधी हैं ? और कोई हो तो आगे आकर रमणजी को सहारा दे। ये तो नाराज होकर बैठे हैं। घुमाने के लिए निर्दलीय उम्मीदवार की जीप रखी है। ये हमारे संबंधी हैं।

माना और करसन बुढऊ ने तय किया था कि वे मगनजी को मना लेंगे। देवू जानता था कि लवजी और जैमिनी वाली बात से मगनजी भड़क उठे हैं। और कोई गारंटी चाहते हैं। मैं या पिताजी जाकर विनती करेंगे तो उन्हें विश्वास नाहीं होगा। कुछ मान भी चाहते ही होंगे। सब जैसा निर्णय करेंगे, लवजी को लिख दूँगा। क्या वह नहीं समझेगा ?

देवू ने ही नरसंग से कह रखा था कि पंचायत के समय हम में से कोई टींबा नहीं जायेगा। नरसंग की तो वैसे भी इच्छा न थी। दो वर्ष पहले मगनजी ने करसन बुढऊ के घर पर बैठकर लवजी की बदनामी की थी यह बात उन्हें अखर गयी थी। उनका विश्वास खत्म हो गया था। उन्होने करसन बुढऊ के साथ जाने के लिए मना कर दिया। भगवान की कसम खा ली।

"अरे भाई। तुम साथे आओगे ई सोच कै हम धमला क साथे लाइन रहा कि तीनतिकट-महाविकट न होय। अब तुम मना करत हौ तो तीन कै तीनै रहब।" बुढऊ ने कहा।

"तो तुम दूनो जने जाव। हम ई हैं बैठित है।" कहते हुए धमा ऐसे बैठ गया जैसे उठना ही न हो।

"तू भी मूरख निकला धमला, और कोई होय तो नरसंग क खड़ा करै।"

"ई तो इनके पल्ला मां बैठ गवा।" माना ने धमले के लिए बड़े सम्मान से सम्बोधन किया। वह साथ में नहीं आयेगा, यह बात माना को बहुत अच्छी लगी थी।

माना और करसन बुढऊ दोनों ने खड़े-खड़े पानी पिया और चले गये।

थोड़ी देर बाद धमा ने कहा –

"तो बैठो भगत, हम जरा टींबा जाय आई। उन दूनौ के तो विश्वास नाहीं। उधर वालों की भी पूछ पकड़े रहैं।"

नरसंग चुपचाप माला फिराते रहे। धमा ने फटे हुए जूते में पाँव डाला

और टींबा की राह पकड़ी । नरसंग तरह-तरह के ऊधेड़बुन में उलझे माला फिराते रहे ।

दूसरी ओर सभा एकत्र हो चुकी थी । पशाभाई अभी पहुँचे नहीं थे । राह देखी जा रही थी । कई लोगों के आग्रह के बाद करसन बुढऊ उठे और कमर में अँगोछा कसते हुए उन्होंने बोलना प्रारंभ किया । उनके वक्तव्य का सार यह था -

देखो भाइयो, तुम लोगों ने मुझे आग्रह करके खड़ा किया है तो मेरी बातों को ध्यान से सुनना । मेरी बात सही हो तो मान लेना और गलत हो तो पकड़-कर मुझे बैठा देना । मैं तुम लोगों से एक ही प्रश्न पूछता हूँ – अपने इस सत्ताइस संघ में कौन सबसे अधिक होशियार निकला ? पहला नंबर कौन आया ? नरसंग पिथू भगत का लड़का लवजी । मैंने अपनी जिन्दगी में बहुत लड़के देखे हैं किन्तु उसके जैसा होशियार कहीं नहीं देखा । अब मै तुम लोगों से दूसरा सवाल पूछता हूँ । रमणजी ने लवजी के साथ मगनजी की लड़की शांता की सगाई करने की बात चलायी । सगाई हुई । कल को शादी होगी । अब बताओ मगनजी की इज्जत बढ़ी कि घटी ? फिर ऐसे सवालाख रुपये वाले संबंधियों का प्रचार किया जाता है कि उन तारे वालों का ? देखो मेरे भैया । यदि वे लोग जीतेंगे तो दिन में तारे दिखा देंगे ।

एक दूसरी बात । मुझसे भूल हो गयी थी । लवजी की ही बात है । उसके साथ एक लड़की हमारा गाँव देखने आयी थी बेचारी । शहर में तो साथ में पढ़ते हों तो साथ में घूमते हैं । यहाँ भी साथ में आ गयी । मगनजी मेरे घर आये हुए थे । हम दोनों ने कुछ समझे-बूझे बिना ही उल्टी-सीधी बात उड़ा दी । लड़के के बाप को बुरी लग गयी । अरे उपकार मानो लवजी का कि उसने सगाई तोड़ नहीं दी । ऐसे को तो दो चोटियों वाली पाँच-पाँच मिलती हैं । किन्तु पिथू भगत के घर वालों का संस्कार देखो, वह एक से आगे नहीं बढ़ा । और वह कुछ चोरी-छिपे नहीं करता । इसलिए मेरी सलाह है कि चलते बैल को पैना मत मारो । और हमको तो उसे अभी विदेश भेजना है पढ़ने के लिए । अब मगनजी के मन में कोई पाप हो तो खड़े होकर बोलें और न हो तो कल से रमणजी का काम करना शुरू कर दें । नहीं तो तुम जानो और तुम्हारा गाँव जाने । मेरा गाँव गोकुलिया और बदरी तीनों गांवों की ओर से मैं कहे दता हूँ कि फिर हम इस गाँव से कोई संबंध नहीं रखेंगे । करसन बुढऊ के अंतिम वाक्य में स्पष्ट धमकी थी – पूरे टींबा को अकेले कर देने की धमकी । और भले कुछ न कर पाये किन्तु इस बुड्ढे में इतना दम तो है कि मरने से पहले ऐसा जरूर कर देगा । सबको विश्वास था । अब कुछ कहा जा सके ऐसा न था । अच्छा हुआ कि पशाभाई की जीप आ पहुँची । वातावरण बदल गया -

मगन अमथा स्वयं आसन ले आये । पशाभाई बैठ गये फिर इत्मीनान से बोले -

"भाइयो राम-राम। जल्दी में हूँ इसलिए ज्यादा व्यवस्थित बात नहीं कर सकूँगा। अब सब अपने ही इलाके के हैं, समझदार हैं। हमारे लिए तो कांग्रेस ही अच्छी है। जनता परिषद वाले आये थे, क्या किया उन्होंने? ठीक है, अभी उनके पास पैसे हैं जिसके बल पर वे कूद रहे हैं। हम क्यों न उनसे लाभ उठायें? हाँ, किंतु मौके पर सँभाल लेना है। दो बैलों की जोड़ी। अपना हितैषी तो बैल है। चाँद और तारे तो मुसलमानों की चीजें हैं, क्या समझे?"

पशाभाई ने आसपास देखा। सब बड़े मनोयोग से सुन रहे थे। वे आगे बोले –

"रमणलाल को राजनीति की शिक्षा मैंने दी है। पिछली बार मुझसे थोड़ी गलती हो गयी। अपने ही अनुयायी का पक्ष न ले सका। नहीं तो रमणलाल मंत्री बन गया होता। अब फिर से मैं वही भूल नहीं दुहराऊँगा। पूनमचन्द को भी उधर से वापस खींच लाया हूं। इस बार रमण दिल्ली जायेगा। वहाँ वह तुरन्त मंत्री तो नहीं बन सकेगा किन्तु वहाँ का सदस्य होना ही काफी है। वहाँ आदमी चाहे तो पानी की तरह पैसा बहा सकता है। रमण समझदार है। हम सबका काम निकलवायेगा। क्या समझे?"

पशाभाई ने एक लम्बी-सी साँस ली। फिर पैर लंबाते हुए सबकी ओर देखा। उनके मन में एक विचार आया – इन सबको साथ लेकर, एक बार देवी के दर्शन को जाना चाहिए।

पशाभाई की बात पूरी हो चुकी थी। करसन बुढऊ सोच रहे थे कि पशाभाई के आने के पहले ही सारी बातें हो चुकी थीं। उन्होंने आकर कौन सी नयी बात की? उन्होंने विनम्रतापूर्वक कहा भी –

"आप जैसे माननीय लोगों की बात भला हम कैसे टाल सकते हैं? पर सच कही पशाभाई तो आप आयो ऊके पहले ही हम सब ही तय कर लिये रहे। अच्छा भवा आप जैसे बड़े आदमी आये। हमरे निश्चय पर मुहर लाग गयी। झूठ कहित है भाइयो?"

सभी ने उनका समर्थन किया।

पशाभाई ने सबकी अनुमति ली।

खाना खाने के बाद करसन बुढऊ ने पगड़ी सिर पर रखी। माना और धमा उनके पास पहुंचे। बुढऊ को इधर-उधर भटकते देख उनसे कारण पूछा।

"अबहीं रणछोड़िया देखाय पड़ा रहा, कहाँ गवा?"

"होये कहूँ। ऊ कहाँ अपने साथे आवे वाला है। चलो।" माना ने कहा।

"धमा जरा मगनजी का बलाव तौ, थोड़ी बात कह दई।"

मगन अमथा किसी हिसाब-किताब के चक्कर में पड़े थे। काफी देर बाद आये।

"बहुत रास्ता देखाइस भले आदमी। सारंग के दरबारौ मां हमैं अतनी देर

इन्तजार नाहीं करेक पड़त । चलौ अच्छा, अब छुट्टी देव । हम तौ तुम से यही कहै आइन रहा कि एकाध दिन मां नरसंग से मिल आयौ ।"

"हम उधरे से निकरित है तो वे बोलते नहीं । उनके घरे लड़की दैके हम कौनो पाप कीन ?" मगन ने कहा ।

करसन ने समझाया कि इसमें बुरा मानने जैसी कोई बात नहीं है । नरसंग दिल के काफी अच्छे इन्सान हैं । उनके मन में मैल नहीं है । अंत में वे बोले –

"चलो बस अब चलीं मगनजी । हमका कहा समझ्यो ?"

"मिल आउब । हमहीं छोट बन जाब ।"

"असली बड़प्पन तो झुके मां है ।" धमा ने कहा । उसकी बात किसी को भी पसन्द नहीं आयी । धमा के मुँह से सही, अच्छी और व्यवस्थित बात निकले यह उनसे सहन नहीं होता था । धमा भी बहुत सोच-विचार कर नहीं बोला करता था । ऐसे ही बोल बैठता था । वह जानता था कि इन लोगों के आगे उसके शब्दों की क्या कीमत है । नरसंग भगत हो तो अच्छी बात सुनकर खुश हो जाये । समर्थन भी करें ।

करसन बुढऊ बार-बार रणछोड़ के बारे में पूछ रहे थे । माना को लगा कि ये रणछोड़ की अतिरिक्त चिन्ता कर रहे हैं । निश्चित ही कोई कारण होना चाहिए । धमा सबसे आगे-आगे चल रहा था ।

भगतबाड़ा आ गया था । पगडंडी की ओर पीठ करके, इंजन वाली कोठरी के पास अलान में, ईंटों का चूल्हा बनाकर, नरसंग लकड़ी सुलगा रहे थे । चाय बन रही थी ।

कंकू भैंस दुह रही थी । ईजू लड़की को गोद में लिये, सूख रहे कपड़े को उलट रही थी ।

धमा सीधे गली में मुड़ गया । बुढऊ और माना चकरोट में ही खड़े रहे । नरसंग का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उन्होंने खखारा । धमा एक लोटा पानी लेकर खेत से बाहर झाड़ियों की ओट में चला गया था । अंत में उन्हें बोलना ही पड़ा –

"देखे नाहीं आवा अभी ?"

नरसंग उठ खड़े हुए –

"आओ मुखिया, आओ बुढऊ । चाय बनत है । पीके जाव ।"

"चाय तो टीक है ⋯ ⋯चल माना । कुछ बात तो कर लीन जाय नाहीं तौ धमला पता नाहीं का बके ?"

"इस खेत में बैठकर धमा ने कभी झूट नाहीं बोला है । ई बारे में तो कहौ तो मन्दिर का जल उटाय लेवे । एक दिन कहत रहा – एक जगह तो सच बोलेक चही । पुन्य होत है । नरसग ने कहा ।

धमा वापस आ चुका था । अभी तक बात की शुरूआत भी नहीं हुई थी ।

वे दोनों सोच रहे थे कि नरसंग कुछ पूछें तो बतायें । धमा को तो न ऐसी कोई अपेक्षा थी और न ही आदत । उसने बताना प्रारम्भ कर दिया ।

आज तो कहना पड़ेगा भगत । करसन बुढऊ ने क्या रंग जमाया । जिन्दगी में इन्होंने जो-जो घोटाले किये हैं वह तो आप मुझसे ज्यादा जानते होंगे और आपसे ज्यादा ये माना भाई जानते होंगे । लेकिन मुझे तो आज ये धर्मराज के अवतार जैसे दिखाई दे रहे थे । मैं तो सोच रहा था यह बुड्ढा जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जायेगी, वैसे-वैसे बिगड़ता जायेगा । हाथ से सत्ता चले जाने के बाद आदमी किसी की भी भलाई नहीं चाहता । लेकिन बुड्ढे ने आज अपनी काबलियत दिखा दी । आज तो सोमपुरा के नाम का डंका बज गया । सभी ने एक साथ बुढऊ की बात मान ली । इन्होंने जब लवजी को विलायत भेजने की बात की तो मेरी तो इच्छा हुई कि खड़े होकर कह दूं कि हाँ, पैसे कम पड़ेंगे तो मैं अपनी जमीन बेच दूँगा। लेकिन यदि मैं ऐसा कहता तो तुम्हें अच्छा नहीं लगता । देवू आज गाँव में सबसे अधिक कमाता है । और आपकी भी बचत है ही .... "

बात दूसरी राह पर जाते देख कंकू ने धमा को रोका । आगे की बात करसन बुढऊ की जुबान से सुनने को मिली । अंत में उन्होंने बताया भी कि सब यहीं से तय करके गये थे ।

नरसंग करसन की भूमिका से प्रसन्न थे । वे सोच रहे थे कि ऐसे योग्य व्यक्ति के भीतर यदि धर्म के प्रति श्रद्धा का अभाव न होता तो आज यह आदमी कहाँ से कहाँ पहुँच गया होता । लेकिन भगवान भी अजीब है । एक हाथ से देता है तो दूसरे हाथ से ले लेता है ।

"बुढऊ, एक बात पूछूँ ?" नरसंग थोड़ी देर के लिए रुके । फिर बोले – "तुम्हें भगवान ने इतनी बुद्धि दी है, किन्तु क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि कोई चीज नहीं दी है ?"

"लागत है, भाई लागत है । बहुत बार लागत है । ओर केहूसे तो नाहीं पर तुमसे कहित है । भगवान बहुत कुछ दिहिन पर समय से मौत नाहीं दिहिन ?" कहते हुए करसन बुढऊ उठ खड़े हुए । जब वे उठ रहे थे, नरसंग की नजर उनकी आँखों के कोने की ओर गयी । वे कोने आज गीले होकर चमक रहे थे । नहीं, नहीं ये आँसू नहीं हो सकते । नरसंग ने अपने मन को बहुत समझाया किन्तु जो सच था. सच ही रहा । उसमें परिवर्तन नहीं हुआ ।

नहीं, निश्चित ही बुढऊ के दिल को कोई ठेस लगी है । क्या बात होगी ? पश्चात्ताप नहीं । तो फिर कोई अपेक्षा पूर्ण नहीं हुई होगी । भगवान जाने ।

देवू अब दो-दो, तीन-तीन दिनों के अंतर में आता था । पिछले तीन दिनों से तो वह आया ही नहीं था । कंकू बहुत परेशान थी । किन्तु क्या करती ? देवू, हाथ में लिए हुए काम को पूर्ण किये बिना छोड़ता नहीं और फिर यह तो सगे बहनोई के लिए की गयीदौड़ – धूपथी ।

चुनाव खत्म होने के दूसरे दिन वह जीप से उतरकर सीधे खाट पर सो गया। किसी से कुछ बोला भी नहीं।

"रमणलाल जीत जायेंगे बापा।"

"अच्छा ही होगा तुम लोगों की मेहनत फलेगी।"

"इस बार खर्च भी बहुत किया है उन्होंने। इनके विरोध में जो निर्दलीय प्रतिद्वन्द्वी था वह तो ऐसा लगता था जैसे पैसों के ढेर पर ही बैठा हो।"

"काहे तुहार गला बैठ गवा है?"

"रात-दिन बोलना पड़ता था। रात में जागना भी पड़ता था। हवा-पानी बदलता रहता था। सर्दी जुकाम बहुत हो गया है। लगता है, बुखार आ जायेगा।"

"तौ सोय जाव, काल बात करेव।"

देवू सो नहीं सका। बैल घुंघरू बजा रहे थे। फिर वे नाँद से और आपस में सींग लड़ाने लगे। देवू को उठना ही पड़ा। उठकर उनकी पीठ पर हाथ फिराया। नाथ व्यवस्थित किया। फिर पिताजी से पूछा – चारा नहीं दिया?

चारा देना बाकी था। नरसंग अलाव के पास से उठे। देवू ने चारा काटने के लिए हाथ लगाया ही था, नरसंग ने उसे सो जाने के लिए कहा।

"हलवाहा यहाँ नहीं सोता? मैंने उसे कह दिया था कि तीन दिन यहीं आकर सो जाये।"

"ऊ हमसे पूछि तौ रहा, मना कर दीन। का काम रहा ऊके? अब काहे खड़े हो? सोय जाव।"

दो रात से देवू लगातार जाग रहा था। फिर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। गणना चलती रहती थी। सारंग की सीट में छ-सात हजार बढ़ेंगे। बराबर हो जायेगा। वहाँ दो हजार बढ़ेंगे, वहाँ कम भी हो सकते हैं। वहाँ नीचे की बैठक का हमारा प्रत्याशी कमजोर है और वह स्वतन्त्र पक्ष के प्रत्याशी का वतन है। जो भी हो रमणलाल पन्द्रह-बीस हजार वोटों से जीतेंगे। हीरूभाई का अनुमान पैंतीस हजार का था। पशाभाई एक लाख की उम्मीद लिए बैठे हैं। रमणलाल कुछ नहीं कहते। किन्तु जीतने की आशा शत-प्रतिशत है। आराम से सो जाने की सलाह देते हैं। इसका अर्थ तो यही होता है।

रमणलाल पचास हजार वोटों से जीते। सारंग से उन्हें अच्छे वोट मिले थे। इस विभाग से कांग्रेस ने सिर्फ दो बैठक गँवाई थीं।

पशाभाई यश के भूखे थे। सभा आयोजित की गयी। रमणलाल ने पशाभाई की व्यवस्थाशक्ति का दिल खोलकर बखान किया। हीरूभाई नहीं आ सके थे। समय मिलते ही प्रजाभारती के कार्यों में लग गये। जिले में कांग्रेस सजीवन हो पाने का उन्हें संतोष था।

8

करसन बुढऊ ने रणछोड़ से पित्त की दवा लाने के लिए कहा था । उन्होंने सोचा था कि दूसरा भले ही कोई उनकी बात न माने किन्तु रणछोड़ तो वही करेगा, जो वे कहेंगे । रणछोड़ सारंग गया हुआ था, देर से वापस आया । इसलिए रात को खेत पर नहीं गया । दूसरे दिन जब बुढऊ घर आये तो वह नहीं था । बुढऊ ने उसे जेठा के लड़के से ढूंढ लाने के लिए कहा । जब वह आया तब उन्होंने कहा –

"दवाई लायो भैया ?"

'भूल गइन ।"

"अरे, तुझे जात-जात तो कहा रहा ।"

"डाक्टर बिना तपास किए दवाई नाहीं देत ।"

"तू कहे तौ होते कि पित्त क दवाई दे देव । हमसे माना कहन रहा कि······"

"तौ माना से मंगवाय लियो ।"

"तुम कौने काम औबो ?"

"तुहार टिकठी उठावे । एकौ दिन चढ़ाये बिना नाहीं रहा जात ? फिर पित्त न होय तौ और का होय ?" रणछोड़ चिल्ला-चिल्लाकर बोल रहा था ।

"इ दुई-तीन महीना से एक बूंद पिया हो तो तुहार कसम ।"

"झूठ कसम स्वाय कहाँ नाहीं आवत तुहैं ?"

"अरे पर, तुझसे हम काहे छिपाई ? एक शराबी दूसरे शराबी से..."

"हमका शराबी कहत हौ ?" रणछोड़ ने घर की ओर मुँह करके पधी से शिकायत की, "अम्मा । देखो बाबा हमका शराबी कहत हैं ?"

"अरे भया, तुमका, पैदा भये पर छठी माँ शराब पियाइन रहा । तौ कहैं न ? तु भैया बोले बिना आपन काम कर । इनका पड़ा रहै दे । ये तो ठण्डी मां कहत हैं कि वाय भवा है और गर्मी मां पित्त । अरे ढोंग करत है ।" पधी ने कठोरता से बुढऊ की ओर देखा ।

करसन बुढऊ बिना कुछ बोले ही उठ पड़े । जाते-जाते रणछोड़ ने उन्हें सुनाया–

"पिछले महीना मां हमार मँगावा बोतल आधा खाली कर दिहिन रहा और अब कहत हैं कि दुई-तीन महीना से पिया नाहीं । अरे अब मरै के बेर तो सही बोलो ।"

बुढऊ ने होठों तक आयी हुई गाली को रोका । फिर छना के खेत की ओर चल पड़े । छना इंधन फाड़ रहा था । बुढऊ को देखकर चौंक पड़ा । बुढऊ अपने काम से आये होंगे यह सोचकर उसका कलेजा जल गया । फिर तो उसने उन्हें इस भाव से बैठाया कि देखने वालों को ऐसा लगे कि वह अभी बुढऊ की पूजा करने लगेगा ।

बात सुनते ही छना से उमंग से कहा – "अरे एक क्या दो बोतल मँगवा दूँ बुड्ढे । ढेखाडिया से रोज पचीस बोतल मँगाया जा सकता है।"

"अब हीं कुछ होय तो..."

छना ने बताया कि कल शाम तक शराब थी उसके पास । किन्तु कल रात को माना का लड़का नारण और बुढऊ का रणछोड़, दोनों आये थे और पीकर चले गये । सरकार के भय से वह अधिक रखता भी नहीं है।

"अरे, पर नारण तौ नाहीं पियत रहा ।"

"कबौ-कबौ शौख करत है।"

"पर ऊ मास्टर होय के...।" बुढऊ की जुबान रुक गयी। और कुछ बोले बिना ही वे उठ खड़े हुए । इस समय उन्हें शराब की सख्त आवश्यकता थी । उन्हें पुनः रणछोड़ की याद आ गयी थी । उस दिन उन्होंने उसे टींबा में मगन अमथा की देहली पर देखा था । वह मगन अमथा के घर ऐसे गया था जैसे अपने घर जा रहा हो । करसन बुढऊ ने सोचा था या तो उनकी आँखों को धोखा हुआ है या तो फिर रणछोड़ ही बहक गया है । वह अब बंधन में नहीं रहा । एक लड़के का बाप होकर भी उसमें से बचकानी हरकत नहीं गयी है । ऐसे भी कोई व्यापार होता है? अगर इसकी नीयत मगन अमथा की लड़की पर खराब हो गयी है तो इसकी मौत आयी समझो । मगन को पता चलेगा तो इतना अच्छा व्यावसायिक संबंध टूट जायेगा और लवजी तो शादी के लिए ही मना कर देगा।...

आखिर क्या करें तो रणछोड़ सुधरे? उसके सुधरने का कोई इलाज? किसी अच्छे आदमी से उसकी टक्कर हो और मार खाये तो उसकी अक्ल ठिकाने आये । देवू और वह दोनों लड़े तो? लेकिन नहीं यह तो हरामी है, कुछ उल्टा-सीधा कर बैठे तो? नहीं सुधरता है तो भाड़ में जाये ।

वह सुधरे या नहीं किन्तु उनका अनुमान आज झूठ पड़ रहा था । वे व्यथित थे । उनका मानना था कि दुनिया युक्ति और शक्ति से ही चलती है । न्यायनीति की बात करने वाले लोग कायर हैं । किन्तु आज इतने वर्षों बाद उन्हें युक्ति और शक्ति के बीच एक कड़ी गुम होती सी प्रतीत हो रही थी । पिथू भगत कहते थे - साँच को कभी आँच नहीं आती । तब मैं नहीं मानता था । अपनी आगाही पर मैं जब नहीं मरा तो मुझे उन पर क्रोध आया था । सभी ज्योतिषि झूठे निकले थे । क्योंकि मैं धर्म के नाम पर धतिंग कर रहा था । मुझे मरना तो नहीं था । मरना होता तो भगवान स्वयं बुलाने आते ।

नरसंग से कहूँ, शायद कोई मार्ग बतायें ।

करसन बुढऊ रात बड़ी देर तक बेचैन रहे । काफी देर के बाद छना शराब की बोतल रख गया था । गटा पुरोहित एक दिन कह रहा था कि आदमी यदि मन ही मन घुटता रहे तो भी शरीर खराब हो जाता है । करसन मुखिया की देह

कैसी चट्टान जैसी रहती है ? वे तुरन्त निर्णय ले लेते हैं। मन में दुविधा नहीं है उनके। किन्तु अब सारी जिन्दगी बीतने आयी तो...

छना के जाने के बाद बोतल उठाकर उन्होंने सारी शराब घटाघट पी ली। थोड़ी देर तक उन्होंने अपने भीतर एक झनझनाहट महसूस की फिर उनका शरीर आग की तरह तपने लगा। वे उठे और बरगद के पेड़ के नीचे लेट गये। ग्रीष्मऋतु थी। दूसरे दिन चिलचिलाती धूप और पधी की गालियों से उनकी निद्रा टूटी। करवट बदलकर वे पुन सो गये। उन्हे ऐसा लगा जसे उनकी खाट के पास ही पधी पेशाब कर रही है। उन्होंने अर्ध निद्रावस्था मे ही करवट बदली और .

"हत् तेरी माँ की... राड " गालियों की बौछार के साथ वे उठ बठे। आँखों को मलकर देखा खेत मे कोई न था। पधी के चोंचले से उनका मन भारी हो गया था। जैसे अस्त होता हुआ सूरज अचानक दौड़कर पुनः फलक पर आ जाये, उनके यौवन ने उबाल लिया। लेकिन नहीं, नही... वे खाट के दोनो पाटो को जोर से पकड़कर चिपक गये।

पधी बिना किसी का नाम लिए गाली बकती हुई खेत के किनारे की ओर सरक गयी।

बुढऊ उठकर पानी की कुंडी के पास चले गये। कपड़ा उतारकर वे नहाने लगे। आधा नहा चुके तो उन्हे पेशाब लगी। उनकी इच्छा हुई कि जाकर वहीं पेशाब करें जहाँ पधी ने किया था। फिर से मन बहक उठा। लेकिन नही... उनका मन खंडित होकर छटपटा रहा था।

वे बड़ी देर तक नहाते रहे। आँखों में तरावट आयी। सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगा। पधी सामने से इंधन लेकर आ रही थी।

'बहू, जरा मशीन वाले कमरा से हमारा कपड़ा लाय दे।"

'तुहार हाथ-पाँव टूट गये हैं का ?"

अपमान का घूँट पीकर वे सिर नीचे करके मशीन वाली कोठरी में गये। पीछे से शेरनी की तरह आ रही पधी ने जैसे उनकी कमर में चंगुल मारा हो। उसने उनका भीगा हुआ वस्त्र खींच लिया और बुढऊ को नीचे पटककर उनके ऊपर चढ़ बैठी। एक बार पूर्णतया काबू पाने के बाद वह धीरे से उठी और कोठरी का दरवाजा लगाते हुए बाहर चली गयी।

सपना था यह ?

तो खेत में कोई है क्यों नहीं ? दोपहर हो चुकी है फिर भी क्यों कोई नास्ता लेकर नहीं आया ? नही, नहीं यह स्वप्न नहीं था। देखो न वह भीगा हुआ कपड़ा मेरा ही है, कि भीमा नहाकर कहीं बाहर गया है ?

समझ में नहीं आ रहा था। भूख तेजी से लगी थी। अंतड़ियाँ ऐसे जल रहीं थीं जैसे उनमें चाँदी पड़ गयी हो।

मन को आखिर यह हो क्या गया है ? क्यों हर कहीं मन पीछे हटने लगता

है ? इसका उपाय ? जेठा के साथ रहने चला जाऊँ ? लाला क्या करने लगा है आजकल ? मैंने व्यर्थ में ही मना कर दिया था। तखत के यहाँ संबंध बना लिया होता तो क्या बुरा ? इस प्रकार परिवार की झूठी प्रतिष्ठा कब तक बचाई जा सकती है ?

इस घटना के बाद करसन बुढऊ में एक नई वृत्ति जागी, घर भर की बुराई करने की वृत्ति। भीमा, पघी, रणछोड़ या बच्चे कोई अच्छा नहीं था। लाला ठीक नहीं था, उसकी बहू ठीक न थी। जेठा तो जन्म से ही मूर्ख था। लगभग ऐसी ही बातें बुढऊ करते रहते। वे जब रणछोड़ के कुलक्षणों की बात करते तो सामने वाला थककर उठ जाता, वे नहीं।

करसन बुढऊ को लग रहा था कि वे जिन्दगी भर लूटे गये हैं... सब ने उन्हें लूटा ही है।

नरसंग के कहने से जेठा उन्हें अपने घर लिवा ले गया। जेठा के साथ रहने के बाद करसन बुढऊ चौबीसों घंटे खेत पर ही रहने लगे।

रणछोड़ को इससे अपमान महसूस हुआ था। बुढऊ के घर से चले जाने का अर्थ यह था कि हम उन्हें सँभाल नहीं सके। बुढऊ ने चारों ओर बदनाम कर दिया है। इस बात से उसका पारा चढ़ गया था। उसकी इच्छा हो रही थी की इसी क्षण खेत में जाकर उनकी खाट उलटकर आ जाये। उसने तय किया कि अब वह उनका मुँह नहीं देखेगा।

मई का महीना था। लवजी बी. ए. की परीक्षा देकर गाँव में आया हुआ था। "इस बार जमुबहेन का साथे नाहीं लाये ?" तीसरे ही दिन शाम को रणछोड़ ने पूछा। सब पुस्तकालय के चौतरे पर बैठे गप्प मार रहे थे। लवजी को यों तो मजाक पसन्द था। किन्तु रणछोड़ का शराबी लहजा उसे शूल की तरह चुभ गया। उसने बैठे ही बैठे, किन्तु दृढ आवाज में कहा—

"तुझे मालूम है कि अगर मैं एक झापट मार दूँ तो तू लुढ़कते हुए नीचे गिरेगा जाकर ?"

रणछोड़ सन्न रह गया। लवजी ऐसा बोल सकता है ?

वह हिम्मत हार बैठा था। थोड़ी देर खिसककर पीछे बैठ गया। थोड़ी देर बाद वह बड़बड़ाया—ससुरा छोट-बड़ा क कौनो भेद नाहीं रहा। कतना पावर चढ़ा है ? ईमा का बिगड़ गवा भला ? अच्छे आदमी हैं इनके तो मजाक भी न करो।

"तू मेरे आगे से भागता है कि नहीं ?" लवजी का क्रोध किसी की समझ में नहीं आया।

"काहे, लाइब्रेरी तेरे बाप की है ?" रणछोड़ ने धीमी आवाज में कहा।

"हाँ, मेरे बाप की है। तू खड़ा हो जा।"

"नाहीं तो का करबो ?" रणछोड़ ने आँखें दिखाईं।

"यहाँ से उठाकर तेरे मुहल्ले में फेंककर आऊँगा।" लवजी उठ खड़ा हुआ।

रणछोड़ भी उठ खड़ा हुआ । अपनी पुरानी आदत से लाचार होकर वह गाली दे बैठा ।

"अरे हरजी, नारण, तुम लोग इस शराबी को मेरी आँखों से दूर करते हो ?"

"हरजी और नारण जैसे का हम इहां आगे लटकाय राखीत है ।" कहकर रणछोड़ हँस पड़ा । सब को विश्वास हो गया कि वह पीकर आया है ।

"अपना मुँह तो देख नालायक, दुर्गंध आती है ।"

"अरे, ई मुँह तो हम तेरी शांती का सुँघाय आइन है ।"

बस, इतना काफी था । हरजी और नारण लवजी को पकड़कर नहीं रख सके । रणछोड़ लवजी का धक्का बर्दाश्त न कर सका । उल्टे मुँह वह नीचे गिरा था । दुबारा भी लवजी ने उठाकर पटका । हरजी जब उसे पकड़ने गया तो लवजी के एक ही धक्के से नारण के ऊपर आ गिरा । वे दोनों अभी उठ ही रहे थे कि घेमर दौड़ता हुआ आया और लवजी की कमर में हाथ डालकर रोक लिया । रणछोड़ मौका देखकर गली की ओर चला गया ।

देखते ही देखते लोग एकत्र हो गये थे । झगड़े का कारण किसी की समझ में नहीं आ रहा था । नारण से शांति को मुँह सुँघाने वाली बात सुनकर घेमर ने अपनी तरफ से भी जोड़ते हुए कहा – रणछोड़ मुझ से भी एक दिन कह रहा था, लवजी तो अहमदाबाद से दो चोटी वाली को लाने वाला है । मगन अमथा की लड़की तो मैं अपने घर लाऊँगा । एक है, दूसरी भी ।

घेमर के सफेद झूठ को सभी ने बड़े आवेश से स्वीकार किया और सब लोग रणछोड़ के नाम पर थू थू करने लगे । सब लोग चले गये फिर भी रणछोड़ के पक्ष में बोलने वाला कोई अब तक नहीं आया था ।

दो दिनों तक लवजी की बहादुरी की प्रसंशा होती रही । तीसरे दिन से उसकी आलोचना शुरू हुई । इतने पढ़ेलिखे लड़के को भला गाँव के बीच इस तरह उत्पात मचाना चाहिए ? लवजी को तो हम कितना समझदार मानते थे ? कुत्ते तो भौंकते ही रहते हैं कोई उनके आगे जाता है ?

लवजी को माँ का भय था । किन्तु जैसे ही देवू ने अपनी नाराजगी व्यक्त की, कंकू ने लवजी का ही पक्ष लिया–

क्यों पढ़लिखकर आदमी कायर हो जाता है क्या ? वह सूअर का बच्चा गाली दे जाये उसकी यह औकात ? वह तो गाँव में कोई कहने वाला नहीं है नहीं तो उसके जैसे तो रोज मार खायें ।

"लेकिन माँ, वह तो पीठ में छुरा भोंके ऐसा है ।"

"हाथ तो लगावे हमारे लड़का क, उके गला न काट डारी ।"

"माँ, तुम भी ऐसा बोलती हो ?" देवू ने दुखी आवाज में कहा ।

"अरे बड़े भैया, यह तो कहने का तरीका है । नहीं तो क्या मैं नहीं जानता कि माँ के पाँव के नीचे एक चींटी भी आ जाये तो दुखी हो जाती हैं । मैंने

अपने अनुभव से सीखा है कि नंगापन और नालायकी की एक मात्र दवा भय ही है। अब देखना, रणछोड़ चूँ भी नहीं करेगा।" लवजी ने देवू को निश्चिंत करने के लिए, तटस्थ भाव से कहा।

"उसकी मौसियाल वाले हरामी हैं। तुझे मालूम नहीं है कि जेठाकाका को वे लोग रात में आकर मार गये थे।"

"उसके बाद तो बहुत बयार आयी और गयी माँ।" लवजी और भी निश्चिंत हो गया।

"वह तो तुहार बाप उनका बचाय दिहिस। और केहू के हाथ माँ आवे होते तो गाँव के चौराहे माँ लाय के उनका जिन्दा जलाय देते। अब तो केहू पुलिस से भी कहाँ डरात है।" कंकू को सन् 1938 का सत्याग्रह याद आ गया था। हाथ पर बने खंजर के निशान की ओर उसका ध्यान चला गया।

लवजी अपनी ही धुन में था। उसे याद आया: वह हेज़ भाभी की नव-जात बच्ची रूपा के लिए झबले लाया था, निकाले। देखने के लिए चेहर, जतन तथा अपने दोनों बच्चों के साथ हीरा भी हाजिर थी। घेमर ने कहा: जहाँ भी जाव माया पीछे के पीछे। कहते हुए उसने दूसरी बीड़ी जलाई। रूपा के लिए लवजी जो अंगुले लाया था उन्हें देखकर देवू ने खाट पर रक्खा, दरवाजे के बीच खड़े लवजी से कहा: "नारण तेरा मित्र लगता है, सुधार दे।"

"सुधरेगा अपने स्वार्थ में।"

उसके बाद लवजी के साथ देवू और घेमर ऊपर की मंजिल के कमरे में जा बैठे। "खराब" लोगों के विषय में बात चली। घेमर समझ नहीं पाता था: सारा मुलक जिसे कमीना और हरामी मानता हो उसे भी नरसंग चाचा दुतकार के अपने पास से हटा क्यों नहीं देते। कभी अकुलाकर उसके विषय में राय तो दे देते हैं पर बाद में बात करते हैं सद्भाव से। सभी को नरसंगचाचा एक सरीखे मानेंगे तो उससे कमीने लोगों को ही फायदा होगा। उससे बेहतर है कि वे दुष्टों को शाप देकर खत्म कर देते।

लवजी बोला नहीं। देवू ने कहा "जिसके दिल में बैराग जगता है वह अच्छी वस्तुओं से ही तटस्थ होता है? बुरी चीजों से नहीं?"

"नहीं भैया, पिताजी को ऐसा सतही वैराग्य पसंद नहीं। यह तो पलायन हुआ। मुझे लगता है कि कई वर्षों से वे उलझन का अनुभव कर रहे हैं। अभी मुझे सावन की संध्या याद आ रही है। पिताजी ने एकादशी का उपवास किया था। वृक्षों की घटा में डाल डाल के सहारे पवन विश्राम ले रहा था। पत्तों का गहरा हरा रंग पवन को आश्रय देने पर मगरूर था। एक पूरे वर्ष तक इन्द्रधनु की रचना की जा सके उतने सारे रंग संध्या ने हमारे सिवान के मंडप पर उड़ेल दिये थे। "वाह।" देवू ने घेमर की ओर देखा—"समझ में आया कुछ?"

"सुनने में मजा आया। बोलते जाइए लवजी भैया। समझ में नहीं आएगा इससे मैं गबराऊँगा नहीं, आगे चलाइए।" घेमर ने कहा।

"हाँ, तो ऐसी भरपूर संध्या पिताजी की आँखों में प्रतिबिम्बित हो रही थी कि फताचाचा आ पहुँचे। आसमान के उस वैभव से उन्हें कोई सरोकार न था। खेत में पैर रखते ही वे गुब्बार निकालने लगे। उन्हें पहले शान्त होने दिया, उसके बाद पिताजी ने "कथामृत" से दृष्टांत सुनाया।

लवजी को योगी महाराज ने पीठ पर धब्बा लगाते हुए "वचनामृत" दिया था, लवजी "कथामृत" खरीद लाया था। ये दो पुस्तकें एक ताक में व्यवस्थित रखी हुई थीं। घेमर ने सोचा हम तो अपने घरों के ताक में ऐसी पुस्तकें नहीं, पुराने जूते या मैले कपड़े रखते हैं, जब कि यहाँ सब कुछ कितना साफ सुथरा है। वह एक बार एक रुपया देकर गीताजी की पुस्तक खरीद लाया था, उस पर घी गिरा था, पता नहीं कब चूहे गीताजी को खींचकर ले गये।

लवजी "वचनामृत" तथा "कथामृत" लेकर पूछने लगा : "भैया, जानते हैं, माँ उनके विषय में क्या मानती हैं ?"

"हाँ, वे कहती हैं कि इन पुस्तकों में सत है, उस सत के प्रताप से यह घर सुखी हुआ।"

घेमर ने दोनों पुस्तकें हाथ में लीं। देवू ने रात्रिशाला में जो पढ़ाया था, घेमर भूला नहीं है। लवजी ने प्रसंग का निर्देश किया। घेमर फर्राटे से पढ़ने लगा। प्रसंग था दो मित्रों को लेकर। एक गया वेश्या के घर, दूसरा खड़ा रहा हरिकथा सुनने। वेश्या के घर पहुँचे मित्र का मन हरिकथा में गया, हरि कथा सुनने वाला पछतावा करने लगा : मैं कैसा मूर्ख हूँ कि यहाँ आकर खड़ा रहा। जब कि मेरा मित्र वहाँ मजा लूट रहा है। ये दोनों मरे तो कथा सुनने वाले को यमदूत ले गये, जो वेश्या के घर गया था उसे विष्णुदूत वैकुंठ में ले गये। भगवान मन देखता है। कौन क्या करता है, कौन कहाँ पड़ा है यह नहीं। भाववाही जनार्दनः।

इस प्रसंग को लेकर तीनों अपने-अपने ढंग से सोचने लगे। घेमर सबसे पहले उलझा : "आप जानते हैं देवू भैया ? यह वैकुंठ कहाँ है ?"

"नहीं।"

"मुझे मालूम है घेमरभैया, यह वैकुंठ हमारे खेत में है।" लवजी ने गंभीरता से कहा।

"तब तो मैं जरूर वैकुंठ पा लूँगा, मुझे वेश्या के घर जाना नहीं पड़ेगा।" कहते हुए घेमर हँस पड़ा। वह बहुत खुश था, मानो उसने भगवान की भूल खोज निकाली हो।

9

अगस्त का अंतिम सप्ताह था। सहकारी मंडली के साथ ही "श्री सोमपुरा दूध उत्पादक सहकारी मंडली लिमिटेड" की भी वार्षिक सामान्य सभा बुलायी गयी थी। दूध मंडली तो दूसरे वर्ष भी मन्थर गति से चल रही थी। मात्र चालीस प्रतिशत किसान ही दूध बेचते थे। किन्तु मंडली के अध्यक्ष कान्ति काना का उत्साह भंग नहीं हुआ था। दूधसागर डेरी महेसाना के अध्यक्ष श्री पटेल, संसद सदस्य रमणलाल और नंगे पाँव वाले हीरुभाई की प्रेरणा से उन्होंने सोमपुरा में सभी से दस-दस रुपये एकत्र करना प्रारंभ किया था। ऐसी हवा फैली हुई थी कि उनकी सारंग की दूकान ठीक से नहीं चल रही है। इसलिए सोमपुरा के किसान उन्हें शेर-लवाजम तथा सदस्यता फीस के कुल मिलाकर ग्यारह रुपये देने में डरते थे।

कांति को पता नहीं क्यों ऐसा विश्वास था कि व्यापार में आगे आने के लिए राजनीति में भाग लेना बेहद जरूरी है। उसने देवू, रमणलाल, हीरुभाई तथा डेरी के अध्यक्ष से व्यक्तिगत परिचय गाढ़ा बना लिया था। देवू ने भी कांति का उत्साह देखकर दूध मंडली का सारा कार्यभार उसे सौंप दिया था। उसका सबसे पहला अध्यक्ष वही बना था। सहकारी मंडली का मंत्री ही दूध मंडली का भी हिसाब-किताब देखता था। कांति को यह बात पसन्द न थी। उसने देवू से कहा था कि यदि अच्छा मंत्री बनाओ तभी मैं अध्यक्ष बनूँगा। सन् 1963 के जून से माधव को, स्कूल की नौकरी छुड़वाकर, सहकारी तथा दूध मंडली इस प्रकार दोनों का मंत्री बना दिया था। प्रतिमाह उसे एक सौ साठ रुपये वेतन भी दिया जाता था। उसने भी दो शर्तें रखी थीं – देवू भाई सहकारी मंडली के अध्यक्ष बनें और पुराना हिसाब चुकता हो जाये। देवू ने अध्यक्ष बनना तो स्वीकार कर लिया था। किन्तु पुराना हिसाब कैसे चुकता किया जाये? यह बात समझ में नहीं आ रही थी। छः हजार का घोटाला था।

आज दोनों मंडलियों की सभा एक साथ रखी गयी थी। कांति भाषण दे रहा था। "बहनों और भाइयो।" सब हँस पड़े। क्योंकि सभा में कोई बहन न थी। माधव ने खोज करके बताया। कांति ने अपना बचाव किया : "है भाई है। देखो, देवूभाई की बच्ची है।" थेमर का लड़का अभी रूपा को कमर में बिठाकर ले आया था।

रणछोड़ ने जोर से जम्हाई ली। वह मंदिर की दीवार का टेका लिए बैठा था। पीछे से आवाज आयी–"सबको जम्हाई खिलायी।" कहने वाला व्यक्ति बुजुर्ग था फिर भी रणछोड़ ने उसे आँख दिखाई। फिर पाँव फैलाकर आँख बन्द करके बैठ गया। देवू ने कांति को रोका और खड़े होकर कहा–

"अरे भाई, अपने दूध मंडली के सदस्य और सहकारी मंडली की व्यवस्थापक समिति के सदस्य श्री रणछोड़भाई की तबीयत अच्छी नहीं लगती। बीराभाई और जीवनभाई, तुम दोनों इन्हें कंधों से पकड़कर इनके घर तक छोड़ आओ।"

रणछोड़ हँसकर सीधे बैठ गया। देवू ने उसे अगली पंक्ति में बैठाया।

सभा बर्खास्त हो गयी।

धीरे-धीरे लोग चले गये। मात्र दसेक जन बचे। वीरा ने सुना था कि मेहसाना में डेरी के लिए एक विशाल बिल्डिंग बन रही है। रणछोड़ ने कहा कि हमारे दूध से डेरी बहुत मुनाफा करती है।

"मुनाफे से ऐसी बिल्डिंग बनती होगी? यह तो गत वर्ष चीन के हमले की वजह से केन्द्र सरकार ने संरक्षण खर्च बढ़ा दिया है। इसलिए सैनिकों को दूध का पाउडर उपलब्ध हो सके इस उद्देश्य से डेरियों के लिए लोन और ग्रांट दिया है।" देवू ने कहा।

फिर तो सब राजनीति की बात करने लगे।

देवू ने घर की राह पकड़ी। रणछोड़ और माधव भारत के भावी प्रधान मंत्री की बात करते रहे। नारण कुछ बोल नहीं रहा है यह देखकर माधव ने विषय बदला—

"मास्टर साहब, आज चुप क्यों हैं?"

"ई बेचारा औरत के बिना मुरझान जात है। हमार साथ छोड़ दिहिस तबौ ससुरी आने क मना करत है। ऐसी क तो टांग बाँध के खींच लावे। मुला नारणभाई ईमानदार होय गये हैं। नारण माने या न माने पर हम क पूरा विश्वास है कि ऊ साली पीयर मां केहू से फँस गयी। नाहीं तो अतनी भरी जवानी ऊ क खुजली न होत?" रणछोड़ बोलता हुआ आया और पुस्तकालय के चौतरे पर, थूककर बैठ गया।

"तुझे ऐसे भूँके क आदत पड़ गयी है। अब जो कभौ तू ऊ के बारे मां अस बोलिस तौ हम तेरे साथे कबौ न बोलब।"

"हम तो जौन सुनित है, तौन बोलित है।"

"तू का अपने बाप कै सिर सुनत है?" नारण ने अपने हाथ के इशारे से भी अपनी ऊब व्यक्त की।

"तब तू ही बता तुहार औरत काहे नाहीं आवत? अतना बुलौवा भेजा गवा तबौ काहे बहाना करत है?"

"सोने क जंजीर और लोकेट मागत है।"

रणछोड़ ठहाका मारकर हँस पड़ा।

नारण ने बताया कि सोने का भाव आजकल इतना अधिक है कि जंजीर और लोकेट बनवाना संभव नहीं। रणछोड़ का कहना था कि यदि नारण तैयार हो तो पाँच आदमी एक साथ चलें और उसे जबरदस्ती टैक्टर में डालकर उठा लायें। किन्तु नारण कुछ और चाहता था। उसका सोचना था कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। अंत में रणछोड़ ने कहा—

"चल रे मधवा, ई का औरत न चाही। बाँट के खाव लेय देव गाँव के लड़कन क।"

रणछोड़ से अधिक नारण ने पिता माना को बहू को वापस लाने की चिन्ता थी। लेकिन वे जानते थे कि सामने वालों पर धाकधमकी का असर हो ऐसा नहीं है। जब तक आमना-सामना नहीं होगा बात नहीं बनेगी। और बहू जब स्वयं सनक में आकर वहाँ जा बैठी हो तब किसी का क्या चल सकता है!

माना ने दो-तीन बार करसन बुढऊ से भी बात की थी। उसके पास एक ही जवाब था : जैसी इच्छा हो, करो।

बुढऊ ने पंचायत करना बन्द कर दिया है। जब इस बात का जेठा को विश्वास हो गया तो वह अपने पिता को सम्मान की दृष्टि से देखने लगा। जेठा ने तुलसी की माला ला दी थी। बुढऊ रामनाम लेने का प्रयत्न करने पर गिनती करने लग जाते एक दो, तीन...

तीसरे दिन माला खाट के पहिये के नीचे आ गई। तीन मनके टूट गये। एक सौ पाँच बचे। फिर से गिनकर देखा, "राम राम", एक दो तीन"...कभी नींद टूट जाती। रामनाम जपने माला हाथ में लेते–'एक दो तीन...'

एक दिन बेचैनी बढ़ गई। गाँव में डाक्टर माने आये हुए थे। उनसे बात की। डाक्टर ने उन्हें अस्पताल बुलाया, ताकि पूरी जाँच हो सके। जब जेठा को यह मालूम हुआ, वह डाक्टर पर कुपित हुआ : "मेरे बाप को खड़े-खड़े जाँच लेते तो क्या उन्हें काँटे चुभते ? मैं अपने बाप को अहमदाबाद के वाडीलाल अस्पताल तक ले जाने का हौसला रखता हूँ।" रणछोड़ ने मजाक में कह दिया : "वाडीलाल से सिविल अस्पताल बड़ा है।" जेठा की गाली सुनकर वह हँसता हुआ चला गया था।

एकादशी के मेले के दिन नरसंग स्वामिनारायण मंदिर जा रहे थे। उन्हें रोककर करसन बुढऊ ने जी घबराने वाली बात की। "कुछ नहीं बुढऊ, मन का वहम, आपकी देह तो फौलाद जैसी है।" नरसंग का यह आश्वासन उपयोगी नहीं हो पाया था। बुढऊ बहू से दो रुपये माँगकर अस्पताल हो आये थे। और तो कोई रोग नहीं है, हो सकता है रक्तचाप हो, जब बढ़ जाए तो बुलाना, विजिट पर आ जाऊँगा।"

कुछ दिन तक बुढऊ बड़बड़ाते रहे : यह डाक्टर माने, फरिश्ता नजर आता था। पर वह भी लोभी हो गया। जब से मोटर लाया है, बस विजिट की बात किया करता है।

डाक्टर की निंदा करने से रक्तचाप वाली बात मन से हटती नहीं थी। जो भी हो, अब शराब को छूना नहीं है। . जेठा की ओर से भय न होता तो ढेखा-ड़िया की शराब ने बुढऊ का रक्तचाप धो डाला होता। शराब मन से हटती नहीं थी। कभी तो वह भट्ठी में तैयार होती और बूंद बूंद उनकी चोटी पर टपकती। उसकी बास घेर लेती ..आखिरी बार माना नारण की पत्नी का सवाल लेकर आया तो करसन बुढऊ ने वही बात दोहराई : "चाहे छिनाली करना, पर शराब मत पीना..."

माना सहमत नहीं हुआ । आप शराब छोड़ते तो यह बीमारी खड़ी न होती। अब आप माला एक ओर रख दें और कोई उपाय बतायें ।

उन्होंने धीरे से कहा, जैसे माला को स्पर्श करते ही अचानक कुछ याद आ गया हो –"नरसंग के देवू की सलाह ले ।"

"ऊ काल के छोकरा का हम बाप बनाई ?" माना खड़ा हो गया ।

नारण ने अपनी माँ को बताया था कि हरजी दीपावली की छुट्टियों में घूमने के बहाने बदरो गया था । उसने बताया था कि वदीने चाय का कप देते समय हरजी से कहा था –"देवूभाई का लके हमका लिवावे आवें तो हम मना न करब ।"

माना यह बात सुनकर हैरान हो उठा था । इतने में बुढऊ ने भी वही बात की । चलते-चलते वह बड़बड़ाया – "ई देवला मां का देखिन है ई सबही ? ऊ लवा है जौन बड़ा बैरिस्टर बना घूमत है । गर्मी मां एक महीना गाँव मां का रहा कि सब का धूल चटाय गवा । एक दिन हमहूँ का उल्टा-सुल्टा बोल गवा । गाँव के बीच मां रणछोड़ का उठाय क पटक दिहिस । रणछोड़वा के बदले हमरे नारणवा क हाथ लगाय होत तौ ऊकै खैर नाहीं रहा ।

रणछोड़ के कहने से माना ने छना से अपने समधी का सिवान जला दिया और धमकी भरा पत्र भेजा । वहाँ से पंच सोमपुरा आये । माना ने दंड भरने के लिए स्पष्ट मना कर दिया । बाजरे के दो सौ पूले जल गये थे । उसकी भी नुकसानी भरने के लिए माना ने मना कर दिया । छना ने सामनेवालों का पक्ष लिया । माना ने माँ-बाप की कसम खाई कि धमकी-पत्र में उसका हाथ नहीं है । छना ने महादेव की कसम खाने की बात की । माना उसे गाली देकर खड़ा हो गया । छना क्रोधित हो उठा । उसने पंचों की साक्षी में माना के विरुद्ध आवेदन कर दिया । माना का पक्ष कमजोर हो गया । उसकी मुखियागीरी चली गयी । दूसरे ही महीने दो सौ रुपये खर्च करके छना ने सोमपुरा की मुखियागीरी हासिल कर ली । सारे गाँव ने उसे मन ही मन गाली दी । एक मात्र करसन बुढऊ हँसे। खूब हँसे ।

माना को लगा कि लड़के की पत्नी से अब हाथ धोना पड़ेगा । सम्मान रखना हो तो एक वर्ष में दूसरी औरत ले आनी पड़ेगी । भले ही दो-चार हजार खर्च करना पड़े । जमीन भी बेचनी पड़े तो बेचेंगे । किन्तु नारण को खुश कर देंगे । बेचारा किना सूखा-सूखा सा गाँव में घूमता है । कहता है कि दूसरे गाँव में बदली करवा लेंगे । लोग ताने कसते हैं ।

रणछोड़ ने माना से कहा कि दूसरी औरत के मामले में बहुत जल्दीबाजी करने की आवश्यकता नहीं है । गत वर्ष मगन अमथा की पत्नी मर गयी इसलिए शादी का कामकाज रुक गया । इस वर्ष संभवत: लवजी स्वयं मना कर देगा । अहमदाबाद वाली से उसका सटर-पटर चल रहा है । हो सकता है उसने कोर्ट में दर्ज भी करवा दिया हो । समय आने पर ही स्पष्ट करेगा । मगन अमथा की

लड़की के लिए दूसरा लड़का ढूँढना ही पड़ेगा। वह मेरी बात नहीं टालेगा। आज व्यापार में मेरे ही भरोसे तो उसका चलता है। मैं कह दूँगा कि नारण जैसा पढ़ा-लिखा, इतनी अच्छी नौकरी वाला दामाद नहीं मिलेगा। वह जल्दी मानेगा तो नहीं परन्तु अंत में शान बनाये रखने के लिए सोमपुरा में ही लड़की ब्याहेगा। गली में आते-जाते जब नरसंग और कंकू शांता को देखेंगे तो कलेजा झुलस जायेगा।

माना को कुछ भरोसा हुआ। नारण ने सुना तो कहा – मजाक की हद होती है। मैंने इनका क्या बिगाड़ा है जो मेरे पीछे पड़े हैं? उसने तो मासूमियत से ससुराल में संदेश भी भिजवा दिया कि शादी वाली बात को सच न मानना। किन्तु उधर से अनपेक्षित उत्तर आया – तुम्हें पकड़ किसने रखा है जो शादी नहीं कर लेते?

नारण सोचता – मेरे अगर दूसरा भाई होता तो माँ-बाप से अलग रहने चला जाता।

एक दिन उसने देवू से सारी बात की। देवू ने उसकी बात सहानुभूतिपूर्वक सुनी। और उसे समझाते हुए कहा –

"तू चिन्ता मत कर। स्वस्थता में सारा काम कर और धैर्य रख। सब ठीक हो जायेगा।"

"मुझे तो कोई आशा नहीं है।"

"मैं ईजू से कहूँगा। वह उससे मिलकर उसे समझायेगी। किन्तु तेरे ससुराल वालों ने उसे रोक रखा तो फिर तकलीफ होगी।"

"बात इतनी उलझ गयी है कि इस जन्म में तो..."

देवू ने देखा। नारण के रोने में कसर न थी।

इन दिनों उसे लगने लगा था कि उसके सारे दाँव उल्टे पड़ने लगे हैं। वह सब कुछ खो चुका है और अब जीतने की कोई संभावना नहीं है। क्योंकि बाजी हमेशा के लिए आगे से हट चुकी है।

उसने शराब छोड़ दी थी। किन्तु शराब छोड़ देने से उसे जो शांति मिलनी चाहिए थी वह नहीं मिली थी। उसके बदले मिला था एकान्त। शिक्षण-कार्य में उसे कभी रुचि नहीं रही। खेत में लोभवश लगा रहता है। आजकल मन उसमें भी नहीं लगता।

देवू से विदा होकर वह खेत की ओर चला गया। उसने सोचा कि साधु बन जाये। सुबह जल्दी उठकर नरसंग बाबा का आशीर्वाद लेकर परदेश चल दे।

ऐसा सोचकर वह रो पड़ा। उसे पता नहीं चला कब रात हो गयी और सारा संसार नींद के आगोश में समा गया।

सुबह वह बड़ी देर से जागा। जाग तो गया किन्तु खाट से उठ नहीं सका। उसे विश्वास हो गया कि इस माया से जल्दी मुक्ति नहीं मिल सकती।

10

चौराहे वाला बरगद गिर पड़ा था। उसका तना लगभग दो आदमियों की ऊँचाई जितना था। चौड़ा तो इतना कि उसके खोखले में पाँच आदमी छिपकर बैठ जायें। बन्दरों की तो गिनती ही क्या। उनके द्वारा एकत्र कचरा तने के भीतर निरन्तर बढ़ता गया। और निरन्तर कमजोर होता जा रहा तना अपनी मोटी-मोटी डालियों का भार न सह सका। परिणामतः आज वह मरा पड़ा था।

उस बरगद में बरोह नहीं थी। पिथू भगत अक्सर कहा करते थे – इस गाँव के बरगदों में बरोह नहीं है।

यह कैसा संयोग था। दूसरे ही दिन जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु हो गयी। बरगद के गिर जाने से चौराहे की छाया चली गयी थी। नेहरू की मृत्यु से जो छाया चली गयी थी वह उससे मिलतीजुलती थी। उनकी गंभीर बीमारी का समाचार तो रेडियो वाले तीन घण्टे पहले से प्रसारित किये जा रहे थे। लवजी रेडियो के पास ही बैठा रहा था। समाचार सुनते ही वह खेत की ओर चला गया। देवू को बताते समय उसका गला भर आया था। लवजी बहुत ही भावुक है। देवू ने पिता को बताया।

लवजी दुखी था। जो जमाना उसने देखा न था वह उसकी आँखों के आगे साकार हो रहा था। गत फरवरी में राजेन्द्र बाबू की मृत्यु से उसे इतना सदमा नहीं पहुँचा था। राजेन्द्रबाबू भी मूल्यों को महत्त्व तो देते थे किन्तु वे थे मध्यम दर्जे के नेता। नेहरू में सर्जनात्मक शक्ति थी। उनकी सभी पुस्तकें उसने पढ़ी थीं। राजेन्द्रबाबू उसे बाँध नहीं सके थे। किन्तु इन दोनों की मृत्यु में जैसे क्रूर समय की पूर्वयोजना रही हो। मात्र सवा साल में यह दूसरी दुखद घटना थी। आज 27 मई थी।

वैसे तो वह नेहरू का आलोचक था, उनकी अर्थ-नीति का, विदेश–नीति का भी कभी। उसका मानना भी यही था कि नेहरू को सत्ता पर से हट जाना चाहिए। कोई भी नेता जिन्दगी भर राज्य करे यह लोकशाही के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। किन्तु यह 27 मई ? इससे बुरा दिन उसकी जिन्दगी में पहले कभी नहीं आया। उसने सोचा जैमिनी को पत्र लिखूँ। वही समझ सकती है मेरी संवेदनाओं को। वह मुझे नेहरू का विरोधी नहीं मानती थी। मेरे तर्क को वह समझती है। वह समझती है कि मैं कुछ व्यर्थ में नहीं बोलता। पहले बात तो की थी। घर आते समय फोन भी किया था – "इस वर्ष शायद मेरी शादी हो जाये। मुझे ऐसा लगता है कि मुझे जाना ही पड़ेगा। तुम्हें नहीं बुलाऊँगा।" वह समाज को जोरदार ठोकर मार देना चाहता था··· ·· देवू भाई शायद मुझे मदद भी करते। पिताजी मेरे कदम को बर्दास्त कर लेते, किन्तु माँ ? वह भी साल दो साल में अपना दुख भूल जाती। किन्तु ऐसा क्यों ? उनकी बात सच थी। मुझे यदि यह संबन्ध तोड़ना था तो बहुत पहले तोड़ देना चाहिए था। और मैं कितना मूर्ख हूँ कि वर्षों पहले

शांति को एक पत्र भी लिख बैठा हूँ। वह भी कविता के साथ। स्वयं को समझने में काफी विलम्ब हुआ······

इस बात पर बहुत देर से विश्वास हुआ कि जैमिनी के साथ कायमी संबन्ध संभव है। शांति की जिन्दगी खटाई में पड़ जाती। जैमिनी का तो मामला देर-सबेर व्यवस्थित हो जाता। उसके साथ शादी कर ली होती तो कोई अड़चन नहीं थी। उसके परिवार वाले स्वीकार कर लेते। वीणा बहन ने तो एक बार कहा भी था—मैं जानती हूँ, तुम लोग शादी नहीं कर सकोगे। किन्तु कर सकते तो मुझे खुशी ही होती। बालूभाई ने कहा था—मुझे तो यश प्राप्त होता कि मैंने अन्तर्जातीय विवाह करवाया।

असंभव न था। असंभव होता तो? साहस था।

संभवतः वह अपने ही अन्तर्मन को नहीं समझ सका था। प्रेम के खिलाफ उसने जो भी पढ़ा था वह व्यक्तिगत जीवन में रोड़ा बना। प्रेम असंभव है क्योंकि किसी व्यक्ति को पूर्णतया समझ पाना असंभव है। संबंधित व्यक्ति भी अपने व्यक्तित्व को उजागर करने के बजाय उसे छिपाता रहता है। किन्तु जिस दिन उसने जैमिनी के साथ बैठकर बात की कि हम शादी नहीं करेंगे उस दिन उसने महसूस किया कि उसने सर्वस्व खो दिया है। जैमिनी रो पड़ी थी। उसने भी उस दिन खाना नहीं खाया था। रात को बड़ी देर तक अपने रूम पार्टनर को वह कहता रहा था—मुझे बहुत सर्दी लग रही है। आँखों से बहता हुआ पानी रुकने का नाम ही नहीं लेता।

इलाज के लिए उसी ने मना कर दिया था।

दो व्यक्ति एक दूसरे के लिए जरूरी हैं। क्या यह प्रमाणित किया जा सकता है? नहीं तो क्या दोनों को अलग होकर ही जीना चाहिए?

एक उपाय था। वह विवाह करे ही नहीं। स्वयं मगन अमथा के घर जाये और शांति को सुनाते हुए कहकर आ जाये कि मैं तुम्हारी लड़की को सुखी नहीं रख सकूँगा। मैं भले ही उससे अधिक पढ़ा-लिखा हूँ किन्तु योग्यता मुझमें उसके बराबर भी नहीं है। मैं जानता हूँ कि वह एक पाँव पर तप कर रही एकनिष्ठ पार्वती जैसी है। मेरी वजह से वह दुखी हो, मुझे पसन्द नहीं है।

क्या उसके लिए कोई अच्छा लड़का नहीं ढूँढा जा सकता? मैं इस काम में मदद नहीं कर सकता? यह प्रस्ताव रखूँ? नहीं···नहीं, शांति सुनेगी तो दुखी होगी। ऐसी पागलपन की बात मैं नहीं कर सकता। इतना ही कहूँगा कि मेरे भरोसे मत रहना। गृहस्थ व्यक्तियों वाला एक भी गुण मुझमें नहीं है। मेरा जन्म दुखी होने के लिए ही हुआ है। भटकता रहूँगा। मेरे किसी भी मित्र से पूछ लो। जैमिनी भी मित्र ही है। वह कहेगी—लवजी के दिमाग का कोई ठिकाना नहीं है। हम कुछ पूछेंगे तो वह चुप रहेगा और अपनी इच्छा होती है तो धूल और राख पर भी कविताएँ लिखने बैठ जाता है। कभी-कभी तो त्यौहार के प्रसंग में भी

दु:खी हो जाता है। पिथू भगत के सभी गुण उनके पुत्र नरसंग भगत में आ गये किन्तु नरसंग भगत के गुण लवजी में नहीं आ सके।

हाँ पिताजी की कर्मठता और चीवट सहिष्णुता और निस्पृहता देवू भाई में है। मै सनकी आदमी हूं। रमणलाल मुझे अमेरिका भेजने की बात करते हैं। मैं मना नहीं करता। मैं तो कहीं भी जा सकता हूँ। मैं जड़ से ही उखाड़ लिए गये पौधे जैसा हूँ। मुझे कहाँ रोपा जायेगा, कहाँ खिलूँगा मै स्वयं नहीं जानता। मुझे मुक्त रखो तो अच्छा है। शांति को मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

लवजी ने बहुत ही अस्थिर मनोदशा में पत्र लिखा। पत्र काफी लम्बा हो गया। उसमें एकाध बार शांति के प्रति मोह भी पैदा हुआ। पत्र काफी लम्बा था फिर भी उसे लग रहा था कि बात पूरी नहीं हुई है।

अंत में उसने देवू को लिखा –

"बड़े भैया,

अपनी शादी की तैयारियों के बारे में मैंने सुना है। मै कुछ कह सकूँ इसके लिए विलम्ब हो चुका है। किन्तु सामने वालों को एक अवसर अवश्य ही दिया जाना चाहिए। मेरे मन में रह-रहकर एक शका उत्पन्न हो रही है कि मैं शांति को सुखी नहीं रख सकूँगा। उसके जैसी कोमल कन्या के पास बठकर उसे पढ़ाना और उसके गुणों को ग्रहण करना मुझे पसन्द तो आयेगा किन्तु मेरी दशा शतरंज के खिलाड़ी जैसी हो गयी है। खेल में मन लग जाये तो घर द्वार भी भूल जाँये। जैमिनी का निर्माण भो सांसारिक होने के लिए नहीं हुआ है। मैं जानता हूँ कि जैमिनी के साथ मेरा विवाह संभव नही है। किन्तु सबन्ध भी नहीं टूटेगा। इस बारे में हम दोनो ने चर्चा करके प्रकटत: अलग रहने का निर्णय तो ले लिया है किन्तु तुरन्त हमें ज्ञात हो गया है कि हमारा संबन्ध बहुत गहरा है। हम दु:खी हो गये। पहले वह, फिर मैं भी।

अब एक ही उपाय है। मैं शादी न करूँ। पढ़ूं, घूमूँ, लिखूँ और हो सके तो नौकरी करूँ।

यह पत्र आपको सीधे खेत में ही मिले ऐसी व्यवस्था कर रहा हूँ। वह इसलिए कि माँ को पता चलेगा तो वह मेरा पत्र सुने बिना नहीं रहेंगी। शायद ईजु भाभी बता भी दें। पता नहीं क्यों मेरे मन में यह आशंका घर कर गयी है कि भाभी चाहती हैं कि मैं जैमिनी के साथ शादो कर लूँ। यह संभव नहीं है। हमने अलग रहने का निर्णय ले लिया है।

अतः आप सीधे खेत से हो मगनजी से मिलकर आ जाना। उन्हें मेरी अस्थिरता के बारे में बताना। फिर जो उचित लगे करना।

इस शर्त पर लवजो की पहली बार वन्दना।

कालू बुनकर खेत पर ही देवू को पत्र दे गया था। उसी दिन पिताजी का बताये बिना ही देवू मगन अमथा से मिलने गया था। सारी बात सुनकर मगनजी ने

अफसोस के साथ लम्बी सांस ली। जैसे अपने मन से बात कर रहे हों, बोले : देवूजी, उसे कहते हैं नसीब। मैंने पैसे कमाये पर सुख नहीं पाया। आधी उम्र में विधुर हुआ और अब आई बेटी की समस्या। माँ के मरने से शांति बेचारी मानो पाँच साल बड़ी हो गई। वह जब बच्ची थी तो उसकी माँ परी की तसवीर दिखा-कर पूछती। है न तुझ-सी। मैंने मान लिया था कि लवजी से सगाई हुई है तो इन्द्रराजा की परी का सुख पाएगी, पर देखा ? कैसी दुर्दशा आई है।" इतना कहते हुए वे सतर्क हो गये। शान्ति ने कुछ सुन लिया तो नहीं होगा ?

"क्या मेरी बेटी में कोई ऐब है ? किसी ने कभी उसकी ओर ऊँगली उठाई है ? साफ साफ कह दें देवजी। – मगन अमथा ने अपने दुमंजिले मकान की ओर देखा, आंखों से चिनगारियाँ उड़ीं। अगर इस भोलीभाली बेटी के भाग्य में सुख नहीं है तो भले ही भस्म हो जाए सारी संपत्ति। लड़का कर लेगा अपना गुजारा।

एक खड़ी खाट को लेकर मगनजी डयोढी के एक पलिया के नीचे ले गये। देवू समझ गया। जेठ को देख शान्ति को दहलीज से बाहर आने में भी संकोच हो रहा होगा।

डयोढी के पास पहले नीम का एक पेड़ था। मगनजी ने दीवार चुनवाने के लिए उस बड़े नीम को कटवा डाला था। मैं यदि शांति के विषय में जरा भी नकारात्मक बोलूँ तो पता नहीं यह आदमी क्या कर बैठेगा...

देवू को प्रतीति हो गई : माँ और पिताजी की सलाह लिये बिना यहाँ आ पहुँचने में गलती हो गई है। पिताजी पहले लवजी से बात करना पसंद करते। मगनजी को जो चोट पहुँची है–

"आप मेरी बात समझे नहीं मगनजी, लवजी को शांति में कोई ऐब नजर नहीं आता। उसका भय दूसरे प्रकार का है। आप हिसाब जानते हैं, वह कल्पना में जीता है। जिन बातों को सुन आपका सिर दुखने लगे, उनसे वह आनन्द लूटता है। वह उल्टी खोपड़ी का आदमी है। सुविधाओं की दृष्टि से वह आपकी बेटी को सुखी नहीं कर पायेगा। वह इतना ही चाहता है कि बाद में आपको पछतावा न हो। शांति के लिए कहीं कोई अच्छा घर मिल जाए तो उसकी संमति है। वह लेखक होगा, घर की जिम्मेदारी ठीक से संभाल नहीं पाएगा, उसमें मुझे भी शक नहीं।"

मगनजी के मुख की तंग रेखाएँ शिथिल हुई। आशा जगी। बोले : मैं अपनी बेटी को दो पैसे की मदद–

'यह बात भी न करें। वह बुरा मान जाएगा। आप मुझे इतना ही बताइए : शांति कठिनाइयाँ झेल पाएगी ? अकेली ऊब तो नहीं जाएगी ?"

"अकेली क्यों रहेगी। ब्याह के बाद ? दूसरे गौने के साथ ही बहू अपना घर संभाल लेगी।"

देवू को भरोसा हो गया। मगनजी मेरी बात नहीं समझ पाएँगे। दूसरी ओर

मगनजी को इस बात का संतोष था कि रणछोड़ ने शांति को लेकर जो उटपटांग बात चलाई थी उसका लवजी पर कोई असर नहीं। कुछ समय पहले ही मगनजी ने व्यापार को लेकर रणछोड़ से जो सम्बन्ध था यह भी काट डाला है।

चिन्ता दूर होते ही मगनजी की जीभ खुल गई। भोजन के समय दामाद को विदेश भेजकर पढ़ाई का खर्च देने की तैयारी दिखाई। तो शाति मौन न रह पाई। "आप भी क्या, जो मन में आता है, बोल देते हैं? वे तो पढ़ने में बड़े होशियार हैं। वे आपके पैसे क्यों लेंगे भला? इनको तो पढ़ाई के लिए स्कालरशीप मिल सकती है।" वह परोसकर पनसाल के पास खड़ी थी। उसने एक हाथ से भगवान के ताक का किवाड़ पकड़ा था। कहाँ गया वह सारा संकोच? शायद वह समझ गई थी, देवू भैया क्यों आये हैं।

रसोई स्वादिष्ट थी। देवू ने प्रशसा की। लवजी का पत्र थाली के पास छोड़ दिया : कहा "हो सके तो लवजी को जवाब में दो अक्षर लिख देना।"

पानी का प्याला रखकर अपनी मूल जगल पहुँचकर शांति बोली : "इस ताक में विष्णु भगवान की एक तसवीर है। एक बार वे सो रहे तो भृगु ऋषि ने इन्हें लात लगाई थी। वे जाग गये पर कुपित नहीं हुए, क्षमा माँगकर कहने लगे : आपके पैर को तो चोट नहीं लगी।"

देवू समझ गया तात्पर्य। वह लवजी को संभाल लेगी, चिन्ता का कोई कारण नहीं। बाप-बेटी को निश्चित करके वह भगताबाडे में लौटा आया था।

दूसरे ही दिन उसने लवजी को पत्र लिखा—टींबा जाकर मैं सब कुछ देख आया हूँ। इतनी कम उम्र में भी शांति तुझसे अधिक समझदार है। तुम्हारा संबंध अटूट है। शांति ने तुम्हें स्वीकार कर लिया है। तुम सम्बन्ध तोड़ भी दो तब भी उसके लिए कोई फर्क नहीं पड़ता। तुमने शायद उसे ठीक से देखा नहीं होगा। हेतीबहन तथा तुम्हारी भाभी ने कई बार देखा है। अब वह भरी पूरी युवती लगती है। माँ की मृत्यु से घर की सारी जिम्मेदारी उसने स्वीकार कर ली है। मगनजी ने बहुत चिन्ता व्यक्त की किन्तु शांति शांत थी। मुझे लगता है तुम्हारे तोड़ने से यह सम्बन्ध नहीं टूटेगा। फालतू और बोलकर इसे नष्ट मत करना। जब तुम्हारे प्रति उसके इतने अटूट भाव हैं तो तुम क्यों अस्थिर हो?

एक छिपी हुई बात। यह सम्बन्ध यदि तुम तोड़ भी दो तो सम्भवत: पिताजी सहन कर लेंगे। किन्तु माँ? तुमने माँ को अभी समझा ही नहीं। वह तो अन्न-जल त्याग देगी। तुम्हारी–शाति की सगाई हुई, वे गहना दे आयीं, आशीर्वाद दे आयीं। उनके लिए सास-बहू का संबंध पति-पत्नी के सम्बन्ध से कम पवित्र नहीं है।

शांति जो भी दो-चार शब्द बोली है उसे सुनकर ऐसा लगा है कि हेतीबहन ने बहुत अच्छा रिश्ता पसन्द किया है।

अपना परिवार बाह्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आया है फिर भी यह भुलाया नहीं जा सकता कि माँ, हेतीबहन और तुम्हारी भाभी के लिए जाति बाहर का

समाज अभी परलोक के स्वप्न की तरह ही है। जाति ऊँची हो किन्तु अपनी न हो तो! पिताजी को यह "अपनापन" भले न बाँध सके किन्तु शांति और जैमिनी दो में से तुम्हारी शादी किससे हो? यदि यह प्रश्न उनसे पूछा जाये तो उनका क्या उत्तर होगा यह तो तुम जानते ही होगे।

आज जब बात चली है तो मैं अपना भी अभिप्राय दे रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम्हारे और जैमिनी के सम्बन्ध में विलास-भावना नहीं है। तुम्हारे बीच एक किस्म की समझदारी विकसित हुई है। इसमें शरमाने की बात नहीं है। जहाँ तक मैं समझता हूं हीरुभाई के मन में भी जैमिनी के लिए सद्भावना ही है। समाज की चिन्ता रखने वाले व्यक्ति उन्हें पसन्द आते हैं।

कालू बुनकर बहुत खुश था। तुमने उसके साथ बैठकर चाय पी और नास्ता किया इस बारे में बताते समय उसके हर्ष की सीमा न थी। तुम विदेशी अतिथियों के साथ आने वाले हो? वही कह रहा था। कब आ रहे हो?

विदेशी मेहमानों को बालूभाई की जीप में लेकर जैमिनी प्रजाभारती गई थी। वहाँ से उन्हें सोमपुरा ले आई। उन्हें देखकर कालू बुनकर बुलाने आया। लवजी की अगुआनी में सभी ने हरिजन मुहल्ला देखा। तीन घर बन्द थे। वे लोग अब अहमदाबाद में मजदूरी करते हैं। जो यहाँ रहते हैं खेत-मजदूरी करते हैं, कपड़ा बुनते हैं। पिथू भगत के समय में ही मरे ढोर का मांस खाना बन्द हो गया था। गाँव के कूँए पर नल अलग-अलग हैं परन्तु मूल पाइप एक है। सवर्ण लोगों के मन से अस्पृश्यता हटी नहीं है, फिर भी काम करते वक्त किसी को इसका ख्याल नहीं रहता। गांधीजी यहाँ नहीं आये थे परन्तु बहुत पहले सहजानन्द स्वामी आये थे।—ये सारी बातें सुनना विदेशी मेहमानों को अच्छा लगा।

कालू के घर में दो पिछौरियां पड़ी थीं। लवजी ने जैमिनी से पैसे उधार लेकर दोनों पिछौरियाँ खरीदीं और मेहमानों को भेंट कीं।

कालू ने चाय बनाई थी। सभी ने पी। गोरे मेहमानों को देखने के लिए गाँव के बच्चे आये थे, वे लवजी को यहाँ चाय पीता देख भागे—"लवजी भैया ने कालिये के घर की चाय पी"—जहाँ जहाँ समाचार पहुँचा, हाहाकार मच गया। जवग को मजाक सूझा, "जो गोरा लोग चाय पीय तो लवजी भाई कहे न पीये! वहू गोरे हैं।" घमर बोला, 'जमु बहन साथे रहीं कि नाहीं? जो वे पीयें तो लवजी भाई मना कर सकत हैं? ई तो हमका केहू सिखाने वाला नाहीं मिला नाहीं तो ..." हीरा ने बात खत्म करते हुए कहा—"तुम सबही होटल माँ बैठ के साथे चाय नाहीं पीते? फालतू बड़ाई छोड़ो न।"

शादी का प्रसंग था: कंकू माँ कुछ नहीं बोलीं। लवजी भला कोई बुरा काम करता होगा? शाम को ईजू ने कहा—"कालू के घर कै चाय पीये क रहा तो के रोके रहा मुला वियाह तो होय जाने देते। ई तो अपनी बिरादरी के आदमी

समझदार हैं नाहीं तो गड़बड़ कर डारे । लवजी भैया पढ़िन मुला समझते कुछ नाहीं ।"

लवजी ने भाभी को स्पष्टीकरण-सा देते हुए कहा —

"देखो भाभी, आप जानती हैं कि अपने घर पर भी मैं मात्र सुबह में चाय पीता हूँ । मित्रो के यहाँ भी नहीं पीता पर अगर आज मैं कालू के घर चाय न पीता तो मेहमान और जमिनी दोनों समझते कि मैं अस्पृश्यता मैं विश्वास करता हूँ । बोलो था कोई रास्ता और रमणलाल तो वर्षों से हरिजनवास में पानी पीते आये हैं । क्यों भूलती हो ?"

ईजू ने हँसकर कहा कि भैया तो वोट लेने के लिए ऐसा करते हैं ।

लवजी ने कहा कि नहीं बिल्कुल ऐसी बात नहीं है । वे व्यावसायिक राजनीतिज्ञ नहीं हैं । इतने में नया जूता चरम-चरम करते हुए घेमर आ पहुँचा—"कंकू माँ, तुहरे दमाद ने हम सब का बदनाम कर दिया ! मालूम है, मघवा का कहत रहा ? गाँव के बुढ़वे लवजी भाई के जात बाहर करे क सोचते रहें । अब जायेव बारात मां अकेले ।"

बस । हद हो गयी । पंचायतियों के ऊपर आफत आ गयी । एक-एक का नाम लेकर वे फटकारने लगीं । उन्हें मालूम था कि सब सारंग के होटलों में जाकर चाय का प्याला चाटकर आते हैं । बड़े धर्मात्मा बनते हैं तो गाड़ी-मोटर में क्यों बैठते हैं ? आदमी अपने मुकर्मों से अच्छा बनता है तिकड़म से नहीं ।

घेमर ने जाने-अनजाने बात की दिशा बदल दी थी । लवजी को आनंद हुआ । कहीं डाँटने लग जायें यह सोचकर अब तक चुपचाप बैठी थीं और अब अपना पक्ष ले रही हैं । अब वह कालू को बारात में बुला ले तब भी खतरा न था ।

शादी में मगन अमथा ने कोई खास उत्सव नहीं मनाया । पत्नी का अभाव उन्हें खल रहा था ! उनके मन में सम्मान था, उदारता थी किन्तु उमग नहीं ।

वह हँसती-मुस्काती ससुराल जायेगी, अपनी सहेलियों के कंधो पर सिर रखकर बारी बारी से रोयेगी ऐसे अनेकों स्वप्नों में खोई शांति मगनजी के पास जाकर उन्हीं के सीने पर सिर रखकर रो पड़ी । उसका क्रंदन देखकर लवजी की भी पलकें भीग गयीं । वह मित्रो से दूर खिसक गया ।

गाँव वापस आने के बाद शिष्टाचार के समय भी लवजी चुप था । लोग अजीब-अजीब अटकलें लगा रहे थे । रणछोड़ ने तो कहा भी — जमिनी हाथ में नहीं आयी, यह उसी का दुःख है । और क्या ? हरजीवन भी इस दलील का विरोध नहीं कर सका ।

लवजी की आँखों के समक्ष बार-बार चौखट के भीतर का सूनापन उभर आता था । माँ बिना का खाली घर छोड़कर ससुराल जा रही कन्या की मनोदशा उसे व्यथित कर रही थी ।

प्रथम रात्रि में शांति का गमगीन चेहरा देखने की उससे हिम्मत न हुई ।

आश्वासन देने से उसे पुनः सब कुछ याद आ जाये और उसका दुःख बढ़े उससे तो बेहतर है कि उससे मिला ही न जाये ।

वैसे भी उसका मानना था कि प्रथम रात्रि की मुलाकात में व्यक्ति को शरीर तक नहीं जाना चाहिए । और शांति तो अभी दुःखों की देहली पार करके आयी है । उसके साथ भला भोग किया जा सकता है ? यह तो पाशवी वृत्ति होगी । हालाँकि पशु भोग नहीं करते, ऋतुवत्सल हो जाते हैं...

लवजी को याद आया – मियाना उठा तब मगनजी ने हाथ जोड़ दिये थे ।

उसमें आभार के साथ ही साथ प्रार्थना भी थी ।

लवजी भाई रात्रि में शांति से नहीं मिलते यह जानते ही ईजूभाभी ने अस्पष्ट प्रश्न भी किया था ।

क्या विवाह मात्र इसीलिए होता है ? प्रति प्रश्न करके वह छटक गया था। बिना किसी उल्लेखनीय घटना के सब कुछ पूरा हो गया था । गाँव के लोग कहने लगे थे कि नरसंग भगत की माला का प्रताप है सब । भगवान ने लाज रखी नहीं तो ऐसा लड़का उस दो चोटी वाली को छोड़कर गँवार लड़की से शादी करता ? कभी नहीं । फिर पिथू भगत का भी तो पुन्य है ।

दिन में पत्नी से बात करना यहाँ वर्जित था फिर भी जब माँ खेत में गयी होती तो भाभी की हाजिरी में लवजी शांति से बात कर लेता । एक बार उसने आग्रह किया कि मायके जाने से पहले एक दिन भोजन अपने हाथ से बनाये । अंत में चाय मिली थी । वह घूँघट उतारकर एकदम सीधी हो सामने आकर खड़ी हो गयी थी ।

ईजू ने यह दृश्य देखा तो खुशी से बोल पड़ी–"लवजी भाई, देख लो, मेरी देवरानी में कोई कमी हो तो कहो ।"

"मैंने कब कहा कि ...।"

"आज बुलौवा आयेगा और शांति कल चली जायेगी ।"

"फिर नहीं आयेगी ?"

"ऐसे भी पूछा जाता है ? पढ़े-लिखे आदमी भला क्यों कठोर दिल के हो जाते हैं ?"

"दिल कठोर होगा तो देर-सबेर इन्हें पता चलेगा ही । किन्तु तुम जो कहना चाहती हो वह कहने की जरूरत नहीं । दो आदमी एकदूसरे के परिचय में आयें, एकदूसरे के लिए भावना पैदा हो उनमें, तब नजदीक बैठते हैं । बाकी तो जो किया जाता है उसे ..." लवजी बाहर निकल गया । "व्यभिचार" शब्द उसने होठों में ही दबा रखा ।

लेकिन वह जानता था कि उसके तर्क में कितनी सच्चाई थी । लग्नवेदी की अग्नि को साक्षी मानकर जो कहा था क्या वह परिचय पर्याप्त नहीं था ?

लवजी जानता था । शादी की बात, जो सोचकर, उसने स्वीकार कर ली थी,

वह एक प्रकार की कायरता ही थी। ऊपर से समझदार होने का प्रदर्शन। शांति को जरूर बुरा लगा होगा। यहाँ की याद आते ही निःश्वास भरती होगी...या तो क्रोधित हो जाती होगी। जैसा उसका स्वभाव। उस दिन कितनी निर्भीक लग रही थी। बिल्कुल दयनीय बनकर जीवित रहे ऐसी तो नहीं ही है वह। अच्छा ही है। यदि मैं उसे स्वीकार नहीं सकूँगा तो वह अपनी व्यवस्था कर लेगी...मेरी नौकरी यदि दिल्ली में लग जाये तो संभव है वह स्वयं वहाँ आने के लिए मना कर दे। यद्यपि अभी एकाध वर्ष तो ऐसा संभव भी नहीं है। जब तक उसकी भाभी आकर घर में नहीं रहने लगेगी, वह मेरे साथ नहीं आ सकेगी। अच्छा है।

वह अकेला था। बिल्कुल अकेला।

लवजी प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण हुआ था। जैमिनी ने तार किया था। डाकिये को सहायक होकर कान्ति सारंग से तार ले आये थे। वे तार की अंग्रेजी पढ़ पाये थे परन्तु "जैमिनी" के स्थान पर "जयमणि" पढ़ा था – किसी जयमणि भाई ने यह शुभ समाचार भेजा है। तार पढ़कर लवजी अशब्द हो गया था।

गोकुलिया से हेती और वाली आई थीं। इनसे बातें करने मुहल्ले की औरतें जमा हुई थीं। दूसरी ओर पुरुष वर्ग था।

"पूछो ये घेमर भाई बैठे हैं। ये ही हमसे कहत रहे कि बदरी से शवा सुखा कै लड़की ग्यारा हजार मां गै रही।"

"अरे बाप रे! ग्यारा हजार? कतरी डलिया भर जाये?" जतन ने कहा।

"भाड़ मां जाय अस बाप। दमाद का भिखारी बनाय कै भेजे के का मतलब भवा?" वाली ने नाम सूँघते हुए कहा।

बात दो वर्गों में विभाजित हो गयी। इधर नारण की पत्नी की बात हो रही थी और उधर मगन अमथा के बड़प्पन की–

"शोक तो रहा मुला समर्धा देय मा पीछे नाहीं पड़े।"

"बारा तोला तौ सोना।" हीरा ने कहा।

ईजू का मानना था कि कम से कम चौदह तोला सोना रहा होगा।

काला की पत्नी ने कहा कि स्टील के बहुत सारे बर्तन भी तो थे। फिर लवजी भाई को घड़ी भी दी थी।

घेमर ने लवजी से कहा–"अरे हमका आपन अंगूठी तो दिखाऊ, हमार ससुर तो नाहीं दिहिस मुला पैसा मिलै तो बनवाय लेई।"

"ससुरवा पाँच मन कै लड़की यो दिहिस है।" घेमर की जतन काकी ने लाड़ करने का मौका मिलते ही कहा।

चेहर ने कहा कि पाँच मन की तो यहाँ आने के बाद हुई है।

"तुझे घर कै खावा है?" हीरा भड़क उठी।

"लड़े का होय तो अपने घरे जाय के लड़ो।" घेमर बोला। चेहर ने तुरंत सुधारते हुए कहा "हमार बहू तो शुभ मोरत मां आयी है। ऊ न होत तो मौ

बीघा मिलत !" घेमर का मानना था कि जमीन चकबंदी के कारण मिली है। परन्तु चेहर ने तुरंत कहा कि काम हीराबहू ही करती है। दो औरतों जितना बोझ उस पर पड़ता है।

पिछले दिनों हेती सपरिवार दिल्ली हो आयी थी। घेमर ने पूछा मूलजी बुढऊ को क्यों नहीं ले गये थे ? वाली ने गर्व से उत्तर दिया कि वे तो चारों धाम की यात्रा कर आये हैं। घेमर ने कहा कि कोई साथ मिले तो वह अपने पिताजी को भी यात्रा पर भेजना चाहता है। चेहर ने पूछा कि कभी माला फिरायी है उन्होंने ? फिर कहा कि वे तो दिन भर किसी न किसी की निंदा करते रहते हैं। घेमर ने कहा कि माँ तुम्हारा काम खाये बिना चल सकता है परन्तु निंदा किये बिना नहीं।

"देखो ई लड़का क ? देवूभाई या लवजी भाई कभी अस कहत हैं अपने महतारी-बाप क ?"

"कहै लायक होय तो कहै न ?"

"लेव चेहरमां सुँघनी सूँघो सब छोड़ कै।" चेहर का ध्यान दूसरी ओर बँटाया फिर तो चर्चा होने लगी कि मारंग में किसकी दूकान पर अच्छी छींकनी मिली है। उसके बाद बालूभाई और वीणाबहन की बात चलने लगी। लवजी उठकर चला गया। घेमर को याद आया--

"आज तो शनिवार नाहीं रहा ? मंदिर मां केह नाहीं आवा। पहले नरसंग-काका आवत रहें तो सम्मान बना रहत। मोहन काका भी कबौ नाहीं चूकत रहे। धमाकाका सब छोड़ दिहिन। भक्ति से का मिले ? देखो भगवान हमार का भला किहिन है ? लवजी भाई, कुछ करौ फूलजी कै। अब तो धमाकाका ऊ का खंभा से बाँध के सामने बैठ के रोवत हैं।"

"उसका कोई इलाज नहीं है घेमर भाई, मैंने हर कहीं पूछ लिया है। कोई फर्क नहीं पड़ेगा। शरीर बढ़ता जायगा, मस्तिष्क ज्यों का त्यों रहेगा। धमाकाका जब चाहेंगे तब फूलजी को छोड़ आऊँगा। क्या अब भी वह पहले की तरह खड़ा-खड़ा दौड़ता रहता है ?"

घेमर ने बताया कि अब नई आदत सीख ली है : पानी भरने गयी औरतों के सिर पर टापा मारता है। किसी से डरता ही नहीं है।

झेणी बहू का नाम प्रसंगवश चर्चा में आ गया तो लवजी ने पूछा कि अब भी उसके और धमाकाका के बीच वैसा ही चलता है ? घेमर ने बताया कि नहीं, अब वैसी आशिकी नहीं रही। घेमर ने नारण से पूछा-"तुहार कस चलत है नारण भाई ? कहाँ तक आयी गाड़ी ?"

"अबहीं गड़हा मां है।" नारण ने मजाक में कहा।

"लवजीभाई, आप जब तक छुट्टी पर हो नारण भाई के ठीक कर देव। एक राज-हठ और स्त्री-हठ। बुजुर्ग झूठ नाहीं कहत रहें..." घेमर ने कहा।

"नारण ने मुझसे कभी दिल खोल कर बात ही नहीं की।"

घेमर ने कहा कि कोई माने या नहीं, माँ-बाप के शाप को बच्चों को भुगतना पड़ता है। मानाकाका जिंदगी भर उल्टा सीधा करते रहे उसका फल नारणभाई को भुगतना पड़ रहा है। दरअसल माना ने शंकर भगवान की कसम खाकर कहा था कि मैं मर जाऊँगा पर बहू को लिवाने नहीं जाऊँगा।

"शंकर में विश्वास नहीं करेंगे और कसम खायेंगे।" लवजी बड़ी देर के बाद उत्साह से बोला। "उन्होंने कसम खाई हो तो उन्हीं को लेये भेजते हैं। देखते हैं कैसे नाहीं जाते।"

घेमर ने कहा कि वे तो अपनी सारी जमीन बेचकर भी नारण के लिए दूसरी औरत लाने की बात कर रहे थे। पर यह तो नारण भाई पढ़े-लिखे आदमी हैं इसलिए समझ गये। और कोई होता तो तैयार हो जाता। झगड़े में कभी-कभी वह ऐसे वाक्य बोलती है कि कामदेव भी खड़ा-खड़ा गिर पड़े।

"वाक्य हमें याद है घेमर भाई, लवजी भाई से कहो!" माधव ने कहा। घेमर ने हाथ उठाकर रोका-

"अस खराब वाक्य याद करके का करदो?" नारण आह भरते हुए बोला।

"बिल्कुल गलत तो नाहीं है हाँ मास्टर।" घेमर तुरंत चल पड़ा-सब सुखी रहो।

लवजी अकेला दरवाजे के पास खड़ा रहा। वह वाक्य उसे भी याद है- "सारी रात उपर से..." ऐसा ही कुछ था। ऐसी फरियाद करने वाले का पश्चात्ताप और न करने वाले का दुःख - दो में से बड़ा क्या है?

जैमिनी और शांति। एक पल के लिए उसने आँखें बन्द कर लीं। जैमिनी का चेहरा धीरे-धीरे लुप्त हो गया और शांति की रोष भरी आँखें दिखाई देने लगीं। आँसू उस विदाई में भी थे...इस रोष में भी...

जैमिनी के साथ एक स्पष्ट संबंध है। जैसे नदी के दो किनारों के संबंध होते हैं...ठीक वैसे ही। नदी में जल बहे या नहीं किन्तु दो किनारों के बीच का अन्तर घटता नहीं। जब कि शांति...शांति तो प्रवाह है। वह स्वयं उस प्रवाह का किनारा है। अंतःस्रोत बनकर वह गहराई से स्पर्श करेगी। उसके पास तो अंतर है ही नहीं।

विदाई के समय शांति ने कितने अधिकारपूर्वक उसे देखा था। जैसे याद दिलाना चाहती हो कि सात बार गौने आने पर भी तुम मेरे पास नहीं आओगे तब भी मैं किसी से शिकायत नहीं करूँगी। तुम्हारी मित्रता भले ही जैमिनी के साथ रहे। मुझे क्या?

माँ, हेती बहन, ईजू भाभी सब उसकी माँ की मृत्यु का उल्लेख किया करती थीं। समधिन ने अच्छे दिन भी नहीं देखे और भगवान को प्यारी हो गयी। यह बातें सुनकर शांति के मन पर क्या गुजरता होगा इसका क्या किसी को ख्याल नहीं आता होगा?

संयम की बात तो ठीक है किन्तु रात में एक बार भी न मिलकर उसने निश्चित ही भूल की है। उसके पलंग के पास कुर्सी रखकर मैं दो घड़ी बात तो कर ही सकता था। इतना भी विवेक नहीं था।

या फिर मैं जैमिनी की जुदाई की पीड़ा का अनुभव कर रहा हूँ। क्या यह इतना जटिल विषय है कि आसानी से पता ही न चलने पाये ?

लवजी को चैन न था। ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते हैं उसके मन में एक कसक पैदा होती जाती है कि मैंने शांति की उपेक्षा करके उसके प्रति अपराध किया है। उसने मौन से मुझे दागा है। मेरे इस व्यवहार की वजह से उसकी सहेलियों के बीच उसकी इज्जत तो टके भर की हो गयी न ! बचपन में दुलार से पली शांति की जिन्दगी में एक के बाद एक तूफान आता जा रहा है। वह छत पर किस लिए आती थी ? मेरे लिए ही न ? मैं इतना भी न छिपा सका कि मैं उससे दूर हूँ ? मूर्ख। स्वयं पर इतना भी काबू नहीं रख सका ?

अब कब मुलाकात होगी ? अगली गर्मी में ? क्या मालूम ? नौकरी कहाँ लगती है, कब लगती है इसी पर सारी बातों का आधार है। जैमिनी ने तार किया किन्तु स्वयं नहीं आयी। अब क्यों आयेगी।

शांति को पत्र लिखूं ? क्षमा माँगू ! लेकिन पत्र किसी अन्य के हाथ में आ जाये तो ! लवजी की व्याकुलता बढ़ती जा रही थी, बढ़ती जा रही थी ..

× × ×

टींबा में पुस्तकालय का उद्घाटन था। पशाभाई, रमणलाल, हीरूभाई... आमंत्रण-पत्रिका में सभी का नाम छपा था। देवू खेत में खाद डाल रहा था। उसने लवजी से कहा – फुरसत हो तो चले जाओ। मगनजी के घर भी चले जाना थोड़ी देर के लिए।

लवजी तुरन्त चल पड़ा। किसी के साथ के लिए भी नहीं रुका। अच्छे परिणाम के लिए सभी ने प्रशंसा की। पशाभाई ने अपने भाषण में उल्लेख भी किया। फिर प्रासंगिक प्रवचन प्रारंभ हुए। लवजी ऊब गया था। हीरूभाई की अनुमति लेकर वह ससुराल की ओर चल पड़ा। मगनजी ने सोचा शायद दामाद भोजन किये बिना ही वापस घर जा रहे हैं। हीरूभाई ने उन्हें रोका – चिन्ता की बात नहीं है। अभी वापस आते हैं। शायद तुम्हारे घर ही गये हैं।

दरवाजा उढ़का कर शांति खाना बना रही थी। अंतिम रोटी तवे पर थी। वह भी पुस्तकालय की ओर जाना चाहती थी। विश्वास तो नहीं था कि वे आयेंगे फिर भी मन हो रहा था।

"कोई है नहीं क्या ? लवजी ने साँकल खटखटाई। शांति लवजी की ही याद में खोयी थी। इसलिए लवजी की आवाज पहचान न सकी। उसने रसोई से ही जवाब दिया–"लायब्रेरी में जाव, बाबा उद्घाटन में गये हैं।"

दरवाजा धक्के से खुल गया था। "मुझे उनसे काम नहीं है" कहते हुए

लवजी अन्दर चला गया । शादी के समय रखे हुए अग्निकुंड की जगह याद आयी । सारी याददास्त ताजा हो आयी । 'कहाँ हो तुम ?" कहकर वह दालान के खंभे के पास खड़ा रहा । आटे वाले हाथ के साथ ही शांति बाहर आ गयी । वह अपनी साड़ी भी ठीक करना भूल गयी थी । एक बार उसने ऐसी ही आवाज सपने में भी सुनी थी ।

नजर मिली । झुक गयी । लेकिन लवजी उसे निःसंकोच देखे जा रहा था । इतने अधिकार से उसने कभी जमिनी को नहीं देखा था । चूल्हे की गर्मी की वजह से शांति का गोरा मुँह कुछ गुलाबी सा हो गया था । उसने नये फैशन की चोली पहन रखी थी । गले के नीचे का काफी हिस्सा खुला हुआ था । उस अंग पर पसीने की बूंदें मोती जैसे चमक रही थी । गोरी त्वचा और भी मोहक लग रही थी । लवजी के मन में, शांति की गोरी त्वचा को स्पर्श कर लेने की ऐसी प्यास जागृत हुई कि दूर खड़े रहना मुश्किल हो रहा था ।

"यह तो मालूम ही नहीं ।" पता नहीं इन शब्दों का अर्थ समझकर या लज्जावश शांति ने अपने सिर को आँचल से ढक लिया । फिर जैसे स्वयं से बात करती हो, धीमे से बोली —

'आप ।...आप.. । यहाँ !"

"पुस्तकालय के उद्घाटन में आया था । तुमसे मिलने की भी इच्छा थी । इससे सोचा कि भाषण होने दो, मैं गजीखुशी का समाचार ले आऊँ । बैठूं ? यहाँ बैठूं या छत पर ? तुम्हें इन, आटे सने हाथों को धोना है ? मैं ऐसे मिलने आऊँ और बातें करूं तो तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा ?"

"अब क्यों बुरा लगेगा ? ऐसा करो । तुम मेड़े पर बैठो । मैं चाय, कॉफी या नींबू का शरबत बना लाऊँ ?'

"मात्र पानी लाना । कुछ बनाने के बदले उतनी देर तक मेरे पास बैठो और बातें करो ।" कहते हुए वह जीना चढ़ गया । सब साफ सुथरा था । जैसे मेहमानों की तैयारी में साफ किया गया हो ।

लवजी झरोखे से गली की ओर देख रहा था । क्यों कोई चिड़िया भी नहीं फरक रही है ?

हाँ, सब भाषण सुनने गये होंगे । बेचारे । सभी वक्ता गाँव के उद्धार की बातें करेंगे । कोई पुस्तक की बात नहीं करेगा ।

क्यों देर हुई ?

जीना झनका । हाथमुँह धोकर, हेती बहन द्वारा भेंट मिली साड़ी को पहनकर, शांति, जैसे दूसरे के घर के जीने पर चढ़ रही हो, सकोच से पाँव धरते हुए, अपने हृदय और स्वर्ग के बीच की दूरी कम करती-सी आ रही थी । उसने इस क्षण की कल्पना तो की थी... किन्तु इतनी जल्दी और यहाँ !

शरम में इतना वजन होता है ? पानी देने का बहाना न होता तो क्या वह जीना चढ़कर ऊपर आ सकती थी ?

लवजी ने पानी लेकर, खाट पर बैठते हुए, पास की कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा – "बैठो।"

शांति ने कुर्सी को देख भर लिया। फिर थोड़ा और नजदीक सरक कर दीवाल के सहारे ही खड़ी रही। कुर्सी तो बिलकुल खाट के पास थी। इतनी नजदीक कैसे जाये ?

लवजी बिना कुछ विचार किये, अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के आवेश से खड़ा हुआ और शांति के नजदीक गया। उसके मस्तक पर हाथ रखा। फिर उसी हाथ को उसके कंधे पर रखते हुए उसके पास सरक गया। होंठ, नाक, पलक, ठोडी, कान सब कुछ स्पर्श किया। फिर छोड़ा सा जुककर शांति के गालों पर अपने होंठ रख दिये। आलिंगन की इच्छा तीव्र हो रही थी फिर भी उसने स्वयं को संतुलित किया। खुली खिड़की से अन्दर झाँक रहे आकाश की इतनी मर्यादा तो रखनी ही चाहिए। वह पुनः खाट पर बैठ गया।

"संक्षेप में कहूँ तो मैं माफी मांगने आया था। यदि मुझसे कोई भूल हुई हो तो..." वह पुनः उठ खड़ा हुआ।

"कैसी भूल ?"

"यों तो कोई नहीं। किन्तु लोग बातें करते हों और तुम्हें उनकी बातें चुभ गयी हों तो "

शांति की वाणी खो गयी। आँखों से अश्रु टपकने लगे।

"मैं तुम्हें रुलाने नहीं आया था। चलता हूँ। मुझे लगता है कि मैंने क्यों माफी माँगी है यह बात तुम समझ गयी होगी।" पाँव बढ़ाने के पहले उसका हाथ पुनः एक बार शांति के चेहरे की ओर आकृष्ट हुआ। जैसे दीवार का सहारा व्यर्थ हो गया हो, लवजी के हाथों का सहारा मिलते शांति का चेहरा लवजी के कंधों की ओर झुक गया। आश्वासन के लिए बढ़ा हुआ हाथ, कंपित होते कंधे पर आ ठहरा और एक बार फिर आलिंगन की प्रचंड अभिलाषा अंतःकरण में उछली। लेकिन लवजी ने कदम बढ़ा दिए। अब वह जीने के नजदीक था और शांति पीछे। पहली सीढ़ी पर पांव रखकर उसने कहा –

"मेरा सिद्धान्त है कि व्यक्ति को स्वयं सीखना चाहिए, स्वयं सुधरना चाहिए। अब मैं सचेत रहूँगा। मेरे द्वारा तुम्हारा अपमान नहीं होगा। थोड़ा सा मोह रखना और पत्र लिखना। तो मैं चलता हूँ। वहाँ भाषण भी पूर्ण होने के करीब होगा। तुम्हें नहीं आना ?"

"साथ में ही आऊँ ?" कहते हुए शांति हँस पड़ी। जैसे मोती बिखेर गयी।

"मेरा काम ऐसा ही होता है। यहाँ तुमसे मिलने की सफलता में, भूल गया। तुम मेरे साथ इस प्रकार सजधजकर पुस्तकालय तक आओगी तो पूरी सत्ताइस में

बात उड़ेगो । जूठ कहता हूँ क्या ? मुझे मालूम तो सब पड़ता है । किन्तु कभी-कभी कुछ मालूम होने के पहले ही कदम उठा लेता हूँ । मुझमें यही अवगुण है। तुम्हें निभाना पड़ेगा ।"

शांति उसके पीछे-पीछे खिंची चली आ रही थी । उसने पीछे मुड़कर देखा। सोचा था खंभे के पास खड़ी होगी लेकिन वह तो यह है । बिलकुल पास । वह कितनी खुश थी आज। होटों पर कुछ कहने का अधैर्य भी था । आँखों में भी...।

"तो चलूं ! तुम कुछ कहने जा रही थी ?"

"तुम पहला नम्बर आये, पिताजी ने मुहल्ले में पेंडा बाँटा था ।"

"सच ? तुम्हें किसने बताया ?"

"जैमिनी बहन ने लिखा था । वे अच्छी बातें मुझसे कभी नहीं छिपाती ।"

सुनकर लवजी अवाक् रह गया । एक गाँव की गँवार लड़की गाँव के लोगों की बातों पर ध्यान दिये बिना जैमिनी को ही अपनी सहेली मानती है । किन्तु शांति के पास तो पूरा इतिहास था । दो-एक वर्ष पहले की बात है, जैमिनी ने उसे मेला देखने के लिए बुलाया था । शांति ने बिना किसी भूल के, मधुर आवाज में सुनाया --

"चलो सखी जायें वहाँ, जहाँ बसे व्रजराज ।
दधि बेचन और हरिमिलन, एक पंथ दो काज ।

बात पूरी करके, दरवाजे की ओट में खड़ी होकर वह पति को प्यासी आँखों से देखने लगी ।

लवजी इतिहास-पुराण में खो गया था, बोला --

"यदि श्रीकृष्ण यहाँ जन्मे ही न होते तो गोपियों में स्वार्थहीन प्रीति की भावना कौन जगाता ?"

"ठहरो जरा ।" शांति घर के भीतर दौड़ गयी । जैमिनी का पत्र उठा लाई । उसने पत्र की पिछली पंक्तियों पर ऊँगली रखकर लवजी से पढ़ने के लिए कहा । ऊँगलियाँ पुनः आँचल में जा छिपीं । लवजी पहले उन ऊँगलियों को देखता रहा फिर पढ़ना शुरू किया --

आज तो कन्हाई ने ऐसा अन्तर कर दिया ।
राधिका का हार हरि ने रुक्मिणी को दे दिया ।

लवजी जोर-जोर से पढ़ रहा था । शांति तन्मय होकर सुन रही थी । धन्यता, लज्जा, जैमिनी के द्वारा किया उपकार -- इन सबके मिल जाने से एक अपूर्व भाव का तेज शांति की आँखों की कोरों में चमक रहा था ।

क्या ये मोती जिन्दगी भर संबंध निभा पायेंगे ?

11

कंकू से किसी ने कहा था कि पाकिस्तान वाले अहमदाबाद पर बड़े–बड़े बम डालेंगे और सभी हिन्दुओं को खत्म कर देंगे। फिर अहमदाबाद का सुलतान पहले के जैसे ही पूरे गुजरात पर राज्य करेगा। नरसंग ने कंकू की बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया था किन्तु एक सूत्र तो उन्हे भी याद था। वह था – हँसके लिया है पाकिस्तान लड़के लेंगे हिन्दुस्तान। पहले तो महात्मा गाँधी और नेहरू की शर्म लगती थी। अब वे लोग बवाल कर भी सकते हैं। कुछ ऐसा ही सोचकर कंकू ने देवू को अहमदाबाद भेजकर लवजी को घर बुला लाने का आग्रह किया तो नरसंग ने विरोध नहीं किया।

"भैया संभाल के जायो और उका समझाय के लायौ।" कंकू ने देवू को छाता देते हुए कहा।

"कह देना कि माँ मरे वाली है नाहीं तो -" नरसंग ने हँसने के लिए कहा था किन्तु कंकू को बुरा लगा। देवू तो रूपा को चबेना लाने के लिए समझाकर चलता बना किन्तु कंकू ने ईजू को संबोधित करके, नरसंग को सुनाने के लिए बड़-बड़ाना प्रारंभ कर दिया।

नरसंग चुप थे। कंकू कह रही थी–"है कौनो फिकर, खटिया पर जामे बैठे हैं, अतना बड़ा जुद्ध चलत है, लड़कन को चिन्ता तो नाहीं है, बैठे-बैठे,खिखियात हैं।"

'जीके लड़का लड़ाई के मैदान मां होये उके का ?"

"तो तुम हू भेज देव आपन लड़का।"

"जरूरत पड़ तो हम खुद जाबा।"

उसी समय मोहन और जीवन आ पहुँचे। वे देवू से कोई आवेदन-पत्र लिखवाने आये थे। उनके आने से कंकू शांत हो गयी : दूसरी बातें चल निकलीं।

देवू अहमदाबाद गया है यह जानकर जीवन निराश हो गया। वह आवेदन लिखवाने के लिए दो पैसे का कागज भी लेता आया था। मोहन का माधव भी आवेदन तो लिख सकता था किन्तु देवू जैसा हाथ तो किसी का नहीं था। मोहन भी इस बात को मानता था।

देवू ने एक वर्ष तक सहकारी मंडली का कारोबार चलाया, सबकुछ व्यवस्थित करके अध्यक्षता छोड़ दी। अब रणछोड़ अध्यक्ष बन बैठा है। उसने उधार देने की प्रथा शुरू करवायी है। जीवन रणछोड़ की बुराइयाँ गिनाने लगा। नरसंग ने बात-चीत का विषय बदल दिया। गत वर्ष तक गेहू का सुधारा हुआ नया बीज एन. पी. 710 तथा एन.पी 118 देवू ले आया था। घेमर ने भी वह बीज बोया था। उद्धार हो गया। अब घेमर कहता है कि गाँव में खेत-पैदाइश में पहला नंबर देवू भैया का, दूसरा मेरा। रासायनिक खाद से फायदा होता है या नुकसान – इस विषय पर भी बहसें हुई। अंत में गोबर की खाद की महिमा हुई। इसमें पौषक तत्त्वों के अलावा जमीन को मुलायम रखने की क्षमता है।

गाँव की गलियों से बरसात की नमी सूख गई थी। कुत्तों ने यहाँ वहाँ गंदगी करना शुरू कर दिया था। दूध मंडली के चबूतरे पर चार-पाँच आदमी निखालिस दूध की चाय पीने बैठे थे। गाँव के चौकवाले बरगद के गिर जाने से जो खाली जगह उभर आई थी, उसे देख नरसंग का जी चाहता था—यह जगह भर जाए तो अच्छा। लवजी भी कहा करता है कि गाँव का चौक सूना लगना नहीं चाहिए।

लवजी को सरकारी नौकरी मिल रही थी फिर भी उसने कॉलेज में प्राध्यापक होना पसन्द किया था। नरसंग को यह बात अच्छी लगी। नरसंग कहते थे कि विद्या की उपासना करने से सत का मार्ग सुझाई देता है।

देवू को भी लवजी का निर्णय अच्छा लगा था। ईजू ने रात में यों ही पूछ लिया—उन्होंने तुम्हारी सलाह ली होगी?

"मैं नहीं चाहता कि लवजी हर बात में मेरी सलाह ले।"

ईजू रमणलाल की आदत जानती थी। गलबा उन की सलाह के बिना कोई भी काम करता तो उन्हें पसन्द नहीं आता था। जब कि यहाँ? किसी बात की परवाह नहीं है।

पशुओं को खूँटे से बाँधकर, बैलों को चारा देकर, नरसंग कोठरी के चौतरे पर बैठी रूपा के पास गये।

"बाबा हमाल पापा?"

"अहमदाबाद गये हैं। शाम क आयेंगे। काका क लेंके।"

"काका तो पागल हैं।"

"तो समझदार के है?"

"बाबा।" नरसंग को इस उत्तर में आश्चर्य न हुआ। रूपा सभी को बारी-बारी से पागल-समझदार कहा करती थी। सबको खुशी होती। रूपा क्या कहती है इसका कोई महत्त्व न था। कुछ कहती है यही खुशी की बात है।

"बाबा, लेडियो देव न।"

दो दिन पहले ही देवू सारंग से ट्रांजिस्टर लेकर आया था। वह खर्च करने के लिए मजबूर हो गया था। दुकान वाला देवू का साथी सहपाठी था, रेडियो रिपेरिंग का काम करता था। अब एक एजेन्सी भी ले आया था। पाकिस्तान के साथ युद्ध ने उसे जब बहुत परेशान कर दिया तो देवू उससे रेडियो ले आया। उस रेडियो में सबसे अधिक रस रूपा को मिला था। समाचार आ रहा हो या गीत वह रेडियो को हमेशा गोद में ही रखती थी। रेडियो कहाँ से बन्द होता है, कहाँ से स्टेशन बदला जाता है इस बारे में उसे कोई ज्ञान न था। उसका मानना था कि रेडियो उसकी गोद में है इसीलिए बजता है।

नरसंग ने कोठरी की ओर देखा। रेडियो तो रात में देवू घर पर लाया था। यहाँ रखा जाता है? कोई लेकर चलता बने तो?

इच्छा हुई इस समय रेडियो यहाँ होता तो चालू करता। समाचार आ रहा

होता तो सुनता । देवू नीचे का बटन घुमाता था तो आवाज आने लगती थी और ऊपर का तार खींचता था तो आवाज साफ हो जाती थी ।

रेडियो यहाँ नहीं है यह मानने के लिए रूपा तैयार न थी ।

ईजू आ पहुँची । उसने रूपा को उठा लिया । नरसंग कोठरी से खाट निकाल लाये और बैठकर माला जपने लगे । ईजू खेत से चारा लेने जा रही थी । रूपा भी साथ में जाने के लिए रोने लगी । तो नरसंग ने उसे गोद में उठा लिया और दूर ले जाने लगे । जाते-जाते कहते गये कि मूँग में फली ठीक से नहीं लगी है । काट कर पशुओं को खिला दो ।

ईजू विचार में पड़ गयी । देवू कह रहा था कि इस वर्ष मूँग अच्छी होगी । पौधे तो अच्छे खासे थे ही । जाकर देखा तो कहीं-कहीं फली थी । जो कहना होगा कहेंगे, बाबा ने सही बताया है । ईजू ने गिनगिनकर मूँग काटना शुरू किया । थोड़ी ही देर में दोनों दुधारू भैंसों को खिलाने भर को चारा हो गया । बैलों के लिए तो शाम को काटेंगे ।

नरसंग ने रूपा के लिए छोटे-छोटे सूखे हुए शरीफे एकत्र कर दिये थे । रूपा की जेब भर गयी थी । वह खुश थी और दादा के पास बैठकर खेल रही थी । अब उसे किसी और में रुचि न थी ।

"का करत हौ नरसंग बाबा !" चकरोट से रामा की आवाज आयी । वह दो वर्ष से भीमा के घर रहने लगा था । खाना--पीना और चारसौ रुपये । रणछोड़ उसे बुला ले गया था । खाना तो भला इस घर जैसा क्या मिलता कहीं ? किन्तु रणछोड़ उसे अक्सर खर्चपानी के लिए पैसे देता रहता । बोतल लाने में भी कभी-कभार चार-आठ आने बच जाते थे । एकाध प्याला ऊपर से । नरसंग ने सोचा था कि रामा भीमा के घर एक वर्ष भी नहीं रह सकता । हरवाहे को कौन घी-दूध देता है ? वह तो इसी घर में संभव है । और उस पर से ? कंकू और पधी के हाथों में जमीन-आसमान का फर्क है । एक बार नरसंग ने भीमा से कहा भी था-रामा काम का अच्छा है । काम के लिए कहना नहीं पड़ता । भीमा ने तुरन्त हाथ हिलाते हुए कहा था - नहीं-नहीं भगत, तुम्हारे यहाँ वह करता रहा होगा काम । मेरे तो सिर पर आ पड़ा है । वापस बुला लेना, बुलाना हो तो ।

नरसंग जानते थे । देवू अब रामा को नहीं रखेगा । उसने सावन से ही घेमर से कह रखा है । ढेसाड़िया में कोई अच्छा लड़का मिले तो देखना । गत वर्ष घेमर ने स्वयं भी एक हलवाहा रखा था ।

"कौन, रामा ?" माला ने जब एक चक्कर पूरा कर लिया तभी नरसंग ने रामा की ओर देखा ।

'देवू भैया नाहीं है बाबा ?"

"बाहर गये हैं ।"

"हरवाह राखे क है कि नाहीं ?"

"राखे बिना कहाँ चले ?"

"एक है । हमरे बुआ के लड़का । अहमदाबाद मां रहत रहा ।"

"अमदाबाद वाले से मजूरी न होये ।"

"ऊ तो करे काम अस है ।"

"तो कहेव कि देवू से मिलै ।"

"पान सौ रुपया माँगत है । खानापीना, दुई जोड़ी कपड़ा और जूता ।"

'ऊ सब देवू जाने ।"

"भला तुमसे पूछे बिना वे कहाँ कुछ करत हैं ?"

"ईमां भला पूछे क कौन बात है ? अच्छे घर कै लड़का होय और अच्छी मजूरी करे बस ।'

"लेव, छ सौ देय क होय तो हम आय जाई दशहरा से ।"

नरसंग की इच्छा तो हुई कि कह दें कि तुझे नहीं रखना है । किन्तु उन्होंने दूसरे तरीके से बात की –

'तू तौ भीमा के घर है वही ठीक है ।'

"भीमाकाका बहुत तंग करत हैं ।"

"काम करो तो केहू न बोले ।"

"कौनो काम वें बिगाडत हैं तो हमरे माथे डार देत हैं । पर्वा काकी तो दुई दिन कै बासी खाना देत हैं ।"

"भैया ऊ तो जा के अस आदत । अपने क पोसा होय तौ रहे ।"

"कहेव तो देवूभाई क । तुहरे घरे पचीस कम मिले तबौ रहे क तयार हूँ ।"

"ठीक है ।" उन्होंने मुँह खेत की ओर घुमा लिया । रामा थोड़ी देर बाद चला गया ।

नरसंग का पूरा दिन व्याकुलता में बीता था । दोपहर के बाद खाना खाने घर पर गये तो खाट पर निढाल होकर पड़ गये । कंकू ने पुनः लड़ाई की बात छेड़ दी । लड़के कब वापस आयेंगे यह बात दो बार पूछा । नरसंग के उत्तर से उन्हें सन्तोष न हुआ । लड़ने वालों को कुछ गालियाँ दीं । शाम को ईजू ने जब चाय बनाया तब भी कंकू के मन में वही बात घुमड़ रही थी ।

"अब चुप रहौ ।" सो रही रूपा के मुँह से मक्खी उड़ाते हुए नरसंग ने कहा ।

"अरे लेकिन ये सब जानबूझकर काहे मरत है भला ? इनके हाथे मां का आये ? और कहत जात है कि अब तो ऊपर से जहाज उड़ावत हैं और नीचे बम डालत हैं ।"

"ई हमला करे वाले चाहत का हैं ? पूरा देश दै दीन गवा तबौ का लेय आये हैं ।"

"पहले ये पूरे देश पर राज नाहीं करत रहें ?"

"अब इन के हाथ मां राज आवे तो एकौ हिन्दू का जिन्दा न छोड़े ।"

"जे धरम बदलै वही जीये ।"

"धरम बदले से अच्छा मर जाय ।"

"अब शहर मां तो सब एकै होय गवा है । होटल मां, लोज मां, टाकीज मां या मोटर मां सब एकै । तुम से तो बैठा न जाय । देवू कहत रहा कि ऊँची जात वाले गरीबन के बहुत हैरान किहिन है । कहूँ कहूँ तो उन पर बेचारे पर नजर नाहीं पड़त । बोलो देवँ मां भी छूत । हद हो गयी । ई के नाम कलजुग । ई कलजुग को सतजुग बनाने कि तई महात्मा गाँधी सुधार लाये ..." नरसग ने कहा ।

"बुढऊन क तो सच धरम गवा । लोग न सुधरि हैं तो देख लिहो ऐसे लड़ाई होये और धरती रसातल मां चली जाये ।"

"अब तो अस है कि जे केहू क मारै खुद मर जाये । बुढऊ कह रहें कि जापान पर बम डार क डारै वाला खुदै पछतात रहा ।"

"तो फिर दुबारा काहे शुरू किहिन ?"

"ई तो दूसर. आपन भारत और पाकिस्तान ।"

शाम को लवजी और देवू वापस आ गये । एक मत पर सब संमत थे कि एक बार पाकिस्तान को कुचल डालना चाहिए । लवजी ने कहा कि पाकिस्तान जबसे अलग हुआ तबसे अंग्रेज उन्हें बराबर मदद करते रहते हैं । अमेरिका उन्हें हथियार भेजता है । ये दोनों समझ जाये तो पाकिस्तान शांत हो जाये । उसने सभी को काश्मीर-समस्या के बारे में बताया । कंकू बोल पड़ी – "दे देय उनका कश्मीर, चाटे लेके ।" देवू ने कहा कि आज यदि उन्हें कश्मीर दे देंगे तो कल केरल मांगेगे । लवजी ने विस्तार से बताया कि कश्मीर के मामले में भारत और पाकिस्तान की क्या माँग है ।

इतने में रणछोड़ आ पहुँचा । लवजी ने उसे ससम्मान बुलाया तो वह धन्य हो गया ।

देवू ने सबको बताया कि लवजी किसी भी शर्त पर आने के लिए तैयार न था । उसे कोई भय नहीं था । और भय हो तब भी उसे वहाँ से हटना नहीं चाहिए । जामनगर की ओर लोगों ने व्यर्थ में भगदड़ मचा रखी है । समझदार आदमी को अंत तक रुके रहना चाहिए । यह उसकी जिम्मेदारी है । पाकिस्तान रेडियो बिलकुल झूठ बोलता है । उसने खबर दी है कि नेहरू पुल टूट गया है । अहमदाबाद में कुछ लोगो ने उसे सच भी मान लिया होगा । ऐसे युद्धो के समय शिक्षित लोगों का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है । यदि प्रोफेसर लोग ही अहमदाबाद खाली करने लग जायेंगे तो कौन रहेगा यहाँ ?

लवजी दूसरे ही दिन अहमदाबाद के लिए रवाना हो गया । कंकू के आँसुओं का प्रभाव तो पड़ा किन्तु उसका विचार नहीं बदला । हर हफ्ते मुलाकात लेते रहने का वादा करके वह चला गया । कंकू दोपहर तक रोती रही । जसे ही कोई पूछता बभ– लजी ई गये ? कब आये कब गये ? – आँसू बहने लगते ।

12

पूरे सत्ताइस के गोल में बदरी का नाम चर्चित हो उठा था। हीरूभाई ने अपनी लड़की की शादी तय की थी और नयी परम्परा की शुरूआत की थी। काफी समय तक बाल–विवाह का जुबानी विरोध करते रहने के बाद उन्होंने सोचा कि सुधार का आरम्भ घर से ही होना चाहिए। लड़की जब अट्ठारह वर्ष की हो गयी तभी मुहूर्त देखा। निमन्त्रण-पत्रिका लिखी। बारात सुबह आयेगी और शाम को चली जायेगी। दोपहर में एक जून खायेगी। दो जून खिलाने की व्यवस्था नहीं है।

लड़का भी घर या सम्पत्ति देखकर नहीं, योग्यता और शिक्षा देखकर पसन्द किया था। वे लोग कृतज्ञ हो गये थे हीरूभाई की बात को खुशी से स्वीकार कर लिया था। परिवार वालों ने भी विवेक प्रदर्शित किया था। ऐसे साधु के घर अड़चनें नहीं उत्पन्न होतीं। वह जो तय करता है, वही मान लिया जाता है। हीरूभाई तो भगवान के आदमी हैं। जिन्दगी भर दूसरों का कार्य करते रहे हैं। लड़की की शादी का खर्च भी रासंग बुढऊ देने वाले हैं। गहने बेचारी सोनी बहन के। हीरूभाई ने कब बचत की थी ? धन्य है। ऐसा समधी मिलता हो तो घर से खर्च करके लड़की की शादी करनी चाहिए।

वर पक्ष के सम्बधियों ने खुशी–खुशी एक दिन की बारात वाली परम्परा को स्वीकार कर लिया था। किसी ने चूँ तक नहीं किया। नेग और दहेज की विधि सादे तरीके से बीत गयी थी। टीके में जो रकम आयी थी, सब लड़की को सौंप दी गयी थी। पुरानी, रबर की चप्पल पहनने वाले हीरूभाई, एक दमडी भी खर्च करने के पहले सत्रह बार सोचने वाले हीरूभाई, बड़े से बड़े मेहमान को भी जो घर में उनके लिए पका हो वही खिलाकर टाल देने वाले हीरूभाई की जो तस्वीर इलाके में थी, आज अचानक उसमें परिवर्तन आ गया था। किफायत और कंजूसी करने वाले यह नंगे पाँव वाला आदमी एक ही दिन में राजा भोज के बराबर सम्माननीय मान लिया गया था। जो लोग उन्हें बिना कलेजे का आदमी मानते थे, वे भी लड़की बिदा करते समय हीरूभाई को रोते देख, चकित थे। मन्दिर में जा सकने के लिए जो आदमी कभी समय नहीं निकाल पाया था, आज देव तुल्य हो गया था। सत्ताइस के गोल की पूरी बिरादरी आज समवेत होकर उनकी प्रसंशा कर रही थी।

सोमपुरा से देवू, लवजी, माधव, नारण और रणछोड़ आये थे। नारण के ससुर का घर हीरूभाई के पीछे वाले मुहल्ले में था। शादी के बाद सब मिलने गये। वदी ने सबको चाय पिलायी थी। वदी दो दिन पहले ही सोमपुरा से आयी थी। पिछले वर्ष समाधान हो गया था। माधव और नारण आकर ले गये थे। किन्तु नारण का मन नहीं माना था। रात के झगड़े चालू ही थे। वदी ससुराल में आकर भी झुकने के लिए तैयार न थी। सास में इतनी हिम्मत न थी कि उसे कुछ कहती। नारण ने सोच लिया था कि यदि उसे नहीं पड़ी है तो मैं भी बात

नहीं करूँगा । लोकलाज की वजह से वह लिवा लाया है । माँ बीमार रहने लगी । बात-बात में मर जाने की धमकी देने लगीं । पिता भी ऊटपटांग जवाब देने लगे थे । जो हुआ अच्छा हुआ । लेकिन उसके मन में ऐसा है तो······देखते हैं । एक वर्ष इसी तरह फिर बीत गया । वदी को घर से अधिक खेत से प्यार था । दिन भर मजूरी करके शाम को वापस आती और जो कुछ मिलता खाकर सो जाती । न तो किसी के यहाँ आती-जाती और न ही किसी की बात पर ध्यान देती । किन्तु लवजी ने सारी बाजी उलट दी थी ।

एक दिन शांति ने वदी और नारण को चाय के लिए बुलाया था । न मालूम उसने वदी से क्या कहा । नारण के कानों तक बात भी नहीं पहुँची । लवजी ने बातों ही बातों में दोनों को हँसता-बोलता कर दिया । किन्तु बदरी में अभी किसी को नहीं मालूम था । वदी जब भी पीहर को आती, वैसी की वैसी ही दिखाई देती थी । पतली कमर और सूखी हुई आँखें । जब भी आती मुहल्ले के नाके पर बैठ जाती । वही एक जगह थी दिल का गुबार निकालने के लिए किन्तु इस बार दो दिन बीत गये थे । वह नाके पर नहीं आयी थी ।

हीरूभाई के घर की नयी परंपरा की बात चल ही रही थी कि इतने में एक महेली ने बताया कि नारण अपने माथियों के साथ आया था और वदी के हाथ की चाय पीकर गया ।

इतने में वदी वहाँ आ पहुँची । उसके आने से अतिरिक्त जगह की जरूरत नहीं पड़ी । सब सिकुड़ गयीं और वदी उन्हीं में समा गयी । और फिर एकाकार हो बातों में लग गयीं । पहले तो वह सारी बात छिपाती रही । जब सहेलियों ने बहुत कोंचा तो उसने बताया–

इस बार भी कितने ही दिन व्यर्थ में चले गये । पर इतने में उनके दोस्त लवजीभाई का स्वागत समारोह आया । उन्हें कोई इनाम मिला था । हमारे इन्होंने ही सम्मान की व्यवस्था की थी । दूसरे ही दिन लवजी को चाय पिलाने के लिए बुलाया । वैसे तो मेरी सास भले ही पड़ी-पड़ी खाँसती रहे पर इनकी आदत कि हमेशा उन्हीं से चाय बनाने के लिए कहते थे । किन्तु लवजीभाई मेरी सास को रोककर बोले – काकी, मुझे तो वदी भाभी के हाथ की चाय पीनी है । बूढ़ा रोज घबराती थीं कि मैं बनाऊँगी तो वे चाय नहीं पीयेंगे । मैं किवाड़ के पीछे बैठी थी । लवजीभाई उनसे बड़े नहीं होंगे फिर भी मैं उनके आगे घूँघट निकालती हूँ । बूढ़ा ने मुझसे कहा – बहू शक्कर की चाय बनाना । मुझे आश्चर्य हुआ । वे क्यों बिना बोले चुपचाप बैठे रह गये ? नहीं तो मैं तो पास में जाकर खड़ी भी हो जाऊँ तो वे चलते बनते थे । मैं डरते-डरते गयी और भगवान का नाम लेकर चाय बना लायी । बहुत उबाला भी नहीं था । भगवान जाने कैसी चाय बनी थी । चूल्हे के साथ ही मेरा कलेजा भी जल रहा था । मैंने तो दिल मजबूत किया और कप में चाय

डालकर ले गयी । बूढ़ा ने कहा – उन्हीं को देना बहू, मुझसे क्यों काम लेती हो ! लवजीभाई के साथ ही उन्होंने भी मेरे हाथ से चाय ली । पढ़े-लिखे लोग भी कैसा मजाक करते हैं । लवजीभाई तो चाय पीते जायें, प्रशंसा करते जायें, बस प्रसंशा ही करते जायें । ऐसी चाय तो दिल्ली में भी नहीं पी मैंने । वे भी मन ही मन खुश होकर चाय पी रहे थे । मैंने किवाड़ की दरार से देखा था । चाय पीने के बाद इधरउधर की बातों के दौरान ही लवजीभाई ने बूढ़ा से पूछा– 'काकी, मजे में तो हो ?' बूढ़ा तो हाँ या ना बोले बिना रोने लगीं । फिर तो रोती जायें और बताती जायें । दुनिया हमें क्या कहती है ? इसे कुछ नहीं मालूम ? लेकिन इसे जरा भी चिन्ता है ? इतनी सुन्दर, घर की शोभा बढ़ाने वाली बहू है लेकिन इसकी कसम जो पाँच सालों में एक बार भी इसने उस बेचारी से बात भी की हो तो । कोई कहता है तो दोष ढूँढ़ने लगता है । बहू को चाय बनानी भी नहीं आती । ऐसी ही उल्टी-सीधी बात ! बूढ़ा का विलाप चल ही रहा था कि लवजीभाई ने घुड़का – माला । तूने मुझसे झूठ बोला ! ठहर बताता हूँ तुझे । अरे बाप रे । मैं तो घबरा गयी । मुझे तो पता भी नहीं चला कि लवजीभाई मजाक में कह रहे हैं । क्या उन्हें भी नहीं पता चला होगा ? फिर तो जैसे वे डर गये हों भागे । दालान से घर के भीतर । दालान में आम का छिलका पड़ा था । उनका पाँव जैसे ही उस पर पड़ा वे फिसल गये । मैं चौखट के उस ओर खड़ी थी । भगवान ने पता नहीं कैसे मुझे सुझाया कि मैंने उन्हें गिरते हुए रोक लिया । नहीं तो पता नहीं क्या हो जाता । मैंने उन्हें जोर से बाहों में कस लिया था लेकिन तुरन्त मैं ऐसी घबराई कि शरम के मारे उन्हें छोड़कर जोर से भागी ही थी कि मैं भी गिरी । मेरे तो होश हवाश ही उड़ गये थे । जैसे सिर पर बिजली गिर गयी हो । लेकिन दालान में बैठे हुए लवजीभाई जोर से हँस रहे थे । इतना शिक्षित आदमी भी ऐसा हँसता है कहीं ? जैसे बहुत मजा आ गया हो, वे हँसते ही रहे । अंग्रेजी में बोलते जाये और हँसते जाये । फिर तो बूढ़ा पड़ोस के घर में चली गयीं । वे इनका हाथ पकड़कर घर में खींच लाये । मैं क्या करती । सिर तक ओढ़कर बैठी रही । राम जाने कि दोनों अंग्रेजी में क्या बक रहे थे । फिर लवजी बोले भाभी हमें अपना मुँह तो दिखाओ । देखकर मैं इस मूर्ख को अपना अभिप्राय दूँ । मेरे तो प्राण उड़ गये । इच्छा हो रही थी कि कहीं छिप जाऊँ । लेकिन मैना की बातें याद आ गयीं । साहस करके मैंने तो साड़ी का पल्ला सिर से नीचे खींच लिया । इतनी शर्म आ रही थी कि उनकी ओर देखने की हिम्मत न हुई ।

"अरे, अस मुँह देखे वाले. लवजीभाई भी रहे ?"

"सुनना बीच मां बोले बिना ।" मैना जीवी पर नाराज हुई ।

फिर तो लवजीभाई मुझसे पूछते जाते थे और उन्हें समझाते जाते थे । वे तो चुप थे । लवजीभाई तो खड़े होकर कहने लगे – देख मूर्ख । बड़े-बड़े परदेशी

विद्वानों ने भी आकर अपने देश की आदिवासी कन्याओं से शादी की है और तू उल्टी बात लेकर बैठा है। यह तो राजकुमारी जैसी है। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि लवजीभाई ऐसा क्यों कह रहे थे। फिर तो उन्होंने मुझे घबरा ही दिया। उनसे कहने लगे–देख भाई। यह तेरी पत्नी है, कायदे से पत्नी। ठीक है न? ऐसा करो। एक महीने तक इसके साथ रहकर देख लो। साथ में रहने से पाप तो नहीं लगेगा न? जब तक यह है तब तक तो तुम्हारी धर्मपत्नी है। देखते हैं, भाग्य आजमाकर और यदि तुम भाग्य पर विश्वास नहीं करते हो तो बड़ी भाभी को एक मौका दो। यदि मेल नहीं बैठे तो मुझे बताना। तुम्हारे तलाक की व्यवस्था मैं करवा दूँगा। तलाक नाम सुनकर तो मैं घबरा गयी। लेकिन तब तक मन में एक विश्वास जमता जा रहा था। लवजीभाई ने कहा कि भाभी कोई लोकगीत गाओ। मैंने भी घबराते-घबराते कह दिया यह तो मेरे गाने के दिन हैं कि रोने के! वे बोले वाह! वाह! पता नहीं उन्होंने मेरे जवाब में ऐसा क्या देखा कि मेरी प्रशंसा करने लगे। मेरी प्रशंसा करते हुए वे उठे और घड़े के पास गये। हाथ भिगोकर ले आये और उनके सिर पर भीगा हुआ हाथ रखते हुए बोले तेरा माथा धोते हुए जा रहा हूँ। जिससे कि रात में लक्ष्मी टीका लगाने आये तो तुझे माथा धोने भी न जाना पड़े। सुनकर तो मुझे बड़ा जोर से हँसी आयी। पर मैंने मुँह दबा लिया। जाते समय भी वे उनसे कुछ कहते गये। वह रात तो यों ही बीत गयी। मैंने फिर आस छोड़ दी थी। किन्तु दूसरे दिन वे चिन्ता में दिखायी पड़े। चाल ही बदली हुई थी। अभिमान का नामोनिशान न था। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ कहना चाह रहे हों पर कह न पा रहे हों। जो भी हो। फिर एक दिन लवजीभाई ने उन्हें अपने घर बात करने के लिए बुलवाया। लवजीभाई की पत्नी शांति स्वभाव की बहुत अच्छी है। खाना खाने के बाद अटारी पर बैठे। फिर तो दवूभाई की पत्नी इंजू भी आ गयीं। हमारे ये भी थोड़ा बहुत बोले होंगे। मुझे लगा कि आज की रात वे नहीं आयेंगे। आये तो आधी रात के बाद। जम्हाई खाते हुए। मैं तो जाग ही रही थी। वे टूटी हुई अदवान वाली खाट को गिरा रहे थे तो मैंने कहा मैं नीचे सो जाऊँगी, इस बिछी हुई खाट पर तुम सो जाओ। मैं उठकर जा ही रही थी कि उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर मुझे रोक लिया। मुझे भी अपने पास बैठाया। थोड़ी देर तो वे बोले ही नहीं। जो भी था वह उनके पकड़े हुए हाथ में था। मेरा तो दिल धड़क रहा था। पसीना आ गया। उन्होंने जब मेरे कंधे पर हाथ रखा तो मुझे लगा कि मैं होश में भी रहूँगी या नहीं। फिर वे लेट गये और मैं भी, हाथ खिंचने से झुक गयी। खाट की पाटी और उनके बीच में बहुत कम जगह थी। हमारे कंधे टकराये तो मुझे जैसे करंट लग गया हो। फिर उनके कंधे से मेरी छाती जा टकरायी। जैसे बरसात और बिजली.. बरसात और बिजली। फिर तो उनका हाथ। क्या बताऊँ। मैं मर जाऊँ, मुझसे कहा भी नहीं जाता...मेरी सारी देह

तो उनसे सटी हुई थी फिर भी जैसे मैं दूर होऊँ उन्होंने मुझे अपने ऊपर खींच लिया। मेरी पीठ पर हाथ फिराते हुए उन्होंने कहा – लवजी की बात तो सही है परन्तु तूने बहुत इन्तजार किया। मुझे लोगों ने बताया कि तू सारी जिन्दगी अकेली बिता देने के लिए तैयार है। लेकिन इस जिन्दगी में दूसरा घर नहीं करेगी और कल तो तूने मुझे गिरने से बचा लिया। फिर तो उन्होंने मुझे ऐसे दबाया.. ऐसे दबाया कि, सच कहती हूं मैना, तेरी कसम मैं तो भूल ही गयी कि उनसे अलग भी मेरा अपना कुछ है कि नहीं।...मैं मर जाऊँ ..भला यह भी बताया जाता होगा ? ाँ ! वह पल याद आता है तो मेरी तो आँखें आज भी बन्द हो जाती हैं।

13

हीरूभाई आये तो रमणलाल, दिल्ली में घटित अपनी दुर्घटना के बारे में बता रहे थे कि वे कैसे बाल बाल बच गये। हेती और ईजू के साथ बैठे विपुल और रूपा भी सुन रहे थे। वालजी खेत पर गया हुआ था। वह परीक्षा में प्रथम स्थान नहीं पाता इस बात को लेकर रमणलाल को असंतोष है। वालजी कोई चीज मँगवाता है तो रमणलाल कह देते हैं: पहले तू अपनी श्रेणी में पहला स्थान हासिल करके दिखा, फिर जो भी माँगेगा, ला दूँगा। पिता का यह उत्तर वालजी को किसी कार्य के लिए प्रेरित नहीं करता। हेती का तर्क है मेरा बेटा कभी फैल तो नहीं हुआ न ? क्या उसमें बुद्धि नहीं है ? वालजी में बुद्धि कम होती तो रमणलाल ने इसके विषय में सोचना बंद कर दिया होता। पर वह हरेक विषय को लेकर प्रश्न करता। विशेष करके परिवार की आर्थिक स्थिति को लेकर वालजी के प्रश्नों का उत्तर रमणलाल टालते। इसलिए वह ऐसी गोष्ठियों में अनुपस्थित रहने लगा है। कोई चीज मंगवाता है तो रमणलाल कह देते हैं पहले तू अपनी श्रेणी में पहला स्थान हासिल कर, बाद में जो भी मांगेगा, ला दूंगा। यह उत्तर वालजी को किसी भी कार्य के लिए प्रेरित नहीं करता।

हीरूभाई आकर, पैर झाड़ते हुए, झूले पर बैठ गये। ईजू ने उन्हें पानी लाकर दिया। हीरूभाई ने रूपा को गोद में उठा लिया और उसके साथ खेलने लगे। उनके आने से, बात बन्द हो गयी थी। रमणलाल हीरूभाई को व्यर्थ में दुर्घटना वाली बात बताना आवश्यक नहीं समझते थे।

हीरूभाई ने सबको चुप देखकर, दिल्ली के बारे में पूछताछ शुरू कर दी। सरकार ने भारतीय रुपये का 36.12 प्रतिशत अवमूल्यन कर दिया था। हीरूभाई ने इस बारे में जानना चाहा तो रमणलाल ने बताया कि कुछ देशों के दबाव में आकर सरकार को ऐसा करना पड़ा है। और कोई मार्ग न था। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में टिका रहना हो तो ऐसा करना पड़ेगा। अंतर्राष्ट्रिय बाजार की बात सुनते ही हीरूभाई चिढ़ जाते थे। उनका मानना था कि प्रारंभ ही गलत हुआ है। आजादी

प्राप्त किए आज बीस वर्ष होने को आये किन्तु हम स्वावलंबी नहीं बन पाये हैं। देश की आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना ही हमें नहीं आता। कांग्रेस के अंधे नेता हमेशा मनमानी करते रहते हैं। रमणलाल ने लाल बहादुर शास्त्री की शासन-प्रणाली की बात चलायी। और यह भी बताया कि उनकी मृत्यु को दिल्ली में कुछ लोग प्राकृतिक नहीं मानते। जाँच होनी चाहिए। हालाँकि अब क्या फायदा।

मोरारजी के होते हुए भी इंदिरा गांधी क्यों प्रधान मंत्री बनी इसका मूल कारण जानते हुए भी हीरूभाई ने रमणलाल से पूछा। रमणलाल ने संसद सदस्यों की रुचि-अभिरुचि, गुटबंदी, विदेशी ताकतों का प्रभाव और प्रलोभन आदि की बात की। उन्हें तो सभी ने मोरारजी का आदमी मानकर छोड़ दिया था। हालाँकि उन्होंने स्वयं जाकर मोरारजी देसाई से बताया था कि क्या परिणाम आने वाला है। मोरारजी को यह बात अच्छी नहीं लगी थी। उन्होंने पूछा था तुम तो मुझे वोट दोगे न ? न देना हो तो पहले ही बता दो। एक दूसरा वोट तलाश करूँ। रमणलाल उन्हें दिल की बात नहीं बता सके कि एक और वोट पा जाओगे तब भी कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। आज उन्होंने हीरूभाई को बताया – मेरी तो इच्छा थी कि मैं किसी को वोट न दूँ। आखिर मोरारजी भाई, बंबई छोड़कर दिल्ली गये ही क्यों ? कहते हैं कि मुझे नेतागीरी में स्पर्धा पसन्द नहीं है। एक दशक दिल्ली में रहने के बाद अपना सारा सिद्धान्त भूल गये। उनका प्रभाव वहाँ अच्छा नहीं है। और वे इस सच्चाई से वाकिफ थे कि नेहरूजी के अंतिम दिनों में सारे निर्णय इंदिरा गाँधी स्वयं लेती थीं। कुछ लोगों का तो स्पष्ट कहना भी यही है कि नेहरूजी की इच्छा ही ऐसी थी कि मेरी मृत्यु के पश्चात्......"

"यह तो दुःखद घटना है।" हीरूभाई बेचैन हो उठे। "नेहरू तो कहते थे कि जनतंत्र में कोई वारिस नहीं होता। मैं अपने अनुगामी का नाम नहीं निश्चित कर सकता।"

"हालाँकि उन्होंने बम्बई में जब लालबहादुर शास्त्री के कंधों पर हाथ रखा तो उसी दिन से मैं तो समझ गया था कि वे अपना काम उन्हें सँभालने के लिए कह रहे हैं।"

"तो शास्त्री जीवित क्यों नहीं रहे ?" हीरूभाई के प्रश्न से रमणलाल को आश्चर्य हुआ। ऐसा पूछा जाता है भला ? और वह हीरूभाई जैसा स्वस्थ मानसिकता वाला सेवक पूछे ? मुझे नहीं बताना चाहिए था कि शास्त्रीजी की मृत्यु के बारे में अटकलें लगायी जा रही हैं।"

"तुम अगर दिल्ली में आठ-दस महीने रहो तो नास्तिक हो जाओ।"

"तुम्हें उसके अतिरिक्त भी कोई लाभ हुआ क्या ?"

"तुम तो जानते हो हीरूभाई कि मैं तो स्वाभाविक रूप से प्राप्त सभी लाभ उठा लेने में विश्वास करता हूँ। किन्तु दिल्ली जाने के बाद मुझे नफरत सी हो गयी। जहाँ छीना-झपटी और लूट-खसोट चल रही हो वहाँ तो अच्छा खासा

डाकू भी वैरागी हो सकता है।" रमणलाल के मौन ने स्पष्ट कर दिया कि चार वर्ष के दिल्ली-जीवन में उन्होंने तटस्थता के अतिरिक्त और कुछ नहीं प्राप्त किया है। थोड़ी देर के मौन के बाद उन्होंने कहा कि सड़सठ के चुनाव में कांग्रेस सत्ता पर नहीं आ सकेगी।

"तो कौन आयेगा ? विकल्प ही कहाँ है ?"

"दूसरी किसी पार्टी के साथ संयुक्त मोर्चा बनाना पड़ेगा।"

"किसके, साम्यवादियों के साथ ?"

"निर्दलीय की अपेक्षा मैं साम्यवादियों को अधिक पसन्द करता हूँ।"

"समाजवादी नहीं हो सकते ?"

"वे कांग्रेस से नहीं जुड़ेंगे। कांग्रेस के सबसे प्रबल विरोधी यही लोग हैं। लोहिया ने जबसे नेहरू और कांग्रेस का लिहाज तोड़ा है वे कांग्रेस के सबसे बड़े विरोधी माने जाते हैं।"

"ठीक है सब। समाजवादियों ने अपना नाम बदलने के सिवा किया ही क्या है ? जयप्रकाश वैरागी हो गये हैं और अशोक मेहता कांग्रेस के आगे झुक गए तबसे कोई आशा नहीं है।"

"तुमने देखा हीरूभाई, हम दोनों आज शाम को कांग्रेस का विकल्प ढूँढने बैठ गये हैं। हम तो अपेक्षाकृत अधिक वफादार कांग्रेसी हैं। जो लोग मात्र अपने स्वार्थ के लिए कांग्रेस से जुड़े हुए हैं वे तो उसकी स्मशान-यात्रा में जाने की तैयारी कर रहे होंगे।"

"मुझे लगता है कि यदि गांधीजी के जीवित रहते ही कांग्रेस के टुकड़े हो गये होते तो अपनी स्थिति आज इंग्लैंड के जनतंत्र जैसी होती।"

"इंग्लैंड के ? कैसी बात करते हो ? यहाँ जनतंत्र है ही कहाँ ? जब तक प्रजा अपने हितों को ध्यान में रखकर अपना प्रतिनिधि न चुने तब तक किसी अन्य देश के जनतंत्र का उदाहरण नहीं दिया जा सकता।"

"मेरा विचार कुछ भिन्न है। प्रजा पर्याप्त जागृत नहीं है किन्तु उसमें इतने अवगुण भी नहीं हैं कि जनतंत्र की राह में बाधा बने। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि मनुष्य जन्म से ही लोकतंत्र का अधिकारी होता है।"

"स्वतंत्र जन्मे मनुष्य को बेड़ियों में देखकर रूसो व्याकुल हो गया था, वैसे ही तुम भी ..."

"मुझे रूसो के पलड़े में नहीं बैठना है। कुछ समझ में नहीं आता कि देश का क्या होगा ?"

"चिन्ता करने से जो लाभ होता होगा, होगा।"

"बात को यूँ ही उड़ा देने की यह आदत तुम्हें दिल्ली में पड़ गयी है ?"

"नयी आदत नहीं है। संभवतः आपके प्रति मेरे सम्मान में अन्तर आया है। सच बताऊँ ? तुम देश की व्यवस्था के बारे में फरियाद करते हो तब मुझे प्रजा-

भारती की व्यवस्था की याद आती है। निष्ठा और शक्ति दोनों के होने के बावजूद उसे तुम अभी भी अपने पाँवों पर खड़ा नहीं कर पाते हो। ऐसी ही समस्या देश की भी है। हमारी सारी समस्याएँ इसी प्रकार की हैं कि जिनका एक किनारा सुलझाएँ तो दूसरा उलझ जाता है।

हीरूभाई विचारों में उलझ गये। प्रजाभारती के बारे में रमणलाल जो भी कह रहे थे शत-प्रतिशत सच था। यहाँ अभी सब कुछ बाह्य सहायता पर ही निर्भर था। देश में भी यही हुआ है। विदेशी कर्ज इतना अधिक बढ़ गया है कि कब उतरेगा, कहा नहीं जा सकता। कौन कह रहा था कि चीन ने बिना किसी से कर्ज लिए, अपनी समस्याएँ हल कर ली हैं। उसने चार वर्ष पूर्व ही भारत पर विजय पाकर विश्व को दिखा दिया कि गाँधी और माओ में कितना अन्तर है। शायद विचार-पक्ष का दोष उतना नहीं जितना कि नेतागीरी का ..

"लो यह नास्ता करो, क्या सोचने लग गये ?"

"हमारे जैसे लोगों के सोचने से होगा भी क्या ?"

"मुझे तो अब तुम्हारे जैसे विचार भी नहीं आते। सूचनाओं से ही हमेशा घिरा रहता हूँ। दिल्ली में अकेला होता हूँ तो अखबार पढ़ता हूँ और लोगों के साथ होता हूँ तो परनिन्दा में लगा होता हूँ। सत्य के बस यही दो चेहरे मेरे लिए हकीकत बनकर रह गये हैं। अगले चुनाव में, मैं टिकट नहीं माँगूगा।

"पार्टी दबाव डाले तब भी ?"

"पार्टी किसी पर, किन मामलों में दबाव डालती है, मैं जानता हूँ।"

"फिर भी, मैं नहीं मानता कि, तुम राजनीति से स्वयं को अलग रख सकोगे।"

"मैं स्वयं यह बात नहीं मानता।" लोकसभा में जाने के बाद बड़ी उम्मीदें बाँधी थीं। प्रारंभ के दो साल तक मैं बहुत सक्रिय रहा। यही प्रयास करता रहा कि लोकसभा में अच्छा प्रभाव रहे। लेकिन उसके बाद तो वह फजीहत शुरू हुई कि क्या बताएं। नेहरू की मृत्यु हुई। शास्त्री का थोड़ा ठीक-ठीक चला और पाकिस्तान-विजय से उनका प्रभाव थोड़ा ठीक पड़ा ही था कि चौबीस जनवरी से पार्टी का एक नया चेहरा सामने आया। मुझे लगने लगा है जैसे कांग्रेस में दो-तीन पार्टियाँ घुलमिल गयी हैं। एक दिन जल्दी ही आयेगा कि बाहर के तत्त्वों की अपेक्षा अंदर के लोग ही पार्टी को कमजोर बना देंगे। तुम्हें शायद आश्चर्य होगा, लेकिन यह सच है कि यदि इन्दिराजी का बस चले मोरारजी आदि को कांग्रेस से निकाल फेंकें।

"फिलहाल तो कामराज का प्रभाव अच्छा है न ? लोग उन्हें वामपंथी और मोरारजी को दक्षिणपंथी क्यों मानते हैं ?"

"है भी यही सचाई।" रमणलाल इतने विश्वास से बोले जैसे हीरूभाई को नया ज्ञान दे रहे हों।

हीरूभाई के आगे नास्ता ज्यों का त्यों पड़ा हुआ था। हेता ने उन्हें इसके

लिए ताना भी दिया कि तुम लोग मिलने पर राजनीति के बजाय अपने सुख-दुख की बातें किया करो तो।

"उसकी जिम्मेदारी तुम्हारे सिर पर।" कहते हुए रमणलाल ने चाय ले ली।

सास को आती देख हेती ने सिर ढँक लिया। उन्होंने आते ही हीरूभाई की प्रशंसा शुरू कर दी।

"वह दिन तो माँ तुम " हेती ने कुछ कहना चाहा परन्तु संकोच के कारण चुप हो गयी।

"ऊ तो सब देखादेखी। हम कहाँ नाहीं जानित की हीरूभाई बड़ा अच्छा किहिन। ई हमारा गलबा, भाई से थोड़ा छोट पर अक्किल माँ बहुत छोट। न कुछ समझे बूझे, पूछे–ताछे और जाय के हुँशियारी कर आवत है। लड़का के सगाई किहिन, फिर तोड़ आवा। बुढऊ तो मर जाय क कहत रहे। ऊ तो बहुत समझावा तब माने।"

"न समझाये होतीं तो माँ?" ईजू ने हँसते हुए पूछा।

"तो दुई दिन बाद समझ मां आवत।" हेती ने कहा।

"ई देखो न हीरूभाई, ई सब बुढऊ पर हँसत हैं। ई तो अच्छा है कि अब सारंग के बजार मां जहर नाहीं मिलत। नाहीं तो बुढऊ ले आवतें।"

"लै तो आवें। मुला खुद न पीहैं ई हम जानित है।" रमणलाल ने भी मजाक किया।

अब हीरूभाई का भी कौतूहल जागा। पूछा "बात क्या है? बताओ तो सही।"

गलबा के एक पुत्र है। विपुल से भी छोटा। टींबा वाले रामजी बुढऊ को लगा कि ऐसा घर दुबारा नहीं मिलेगा। अपनी लड़की की बात गलबा के लड़के से पक्की कर दूँ। बात जैसे भूलजी के पास पहुँची उन्होंने मान ली और गलबा को बोले कि देख, हम तेरे साथ रहते हैं इसीलिए तेरे घर को सम्मान मिलता है। तू भाई के साथ रहता तो कोई तेरा भाव भी नहीं पूछता। उस समय तो गलबा को भी यह बात अच्छी लगी। किन्तु सोच-विचार करने पर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उन लोगों ने अपनी इज्जत बढ़ाने के लिए अपनी लड़की को मेरे घर में दिया है। मेरे घर क्या नहीं है। अब तो कुंए पर इज्जन लगा है, ट्रेक्टर है, और थोड़े बहुत पैसे भी हैं। ठीक है, यदि उन्होने हाथ बढ़ाया है तो, अपमान नहीं किया जाता। गाँव भर में गुड़ बँटवाया, बड़े भाई की सलाह भी नहीं ली। बुढऊ ने जो कहा – वही अच्छा मान लिया – भाई से पूछने की जरूरत नहीं है, मना कर देंगे। वे तो हीरूभाई की तरह बाल-विवाह का विरोध करते हैं। लेकिन हमको भी कहाँ शादी की जल्दी पड़ी है। भले ये लोग बड़े होकर स्वयं शादी करेंगे। लेकिन शादी की बात तो पक्की कर लें। अपना लड़का बड़ा हो जाये तो पता नहीं अच्छे घर की लड़की मिले कि नहीं। तुम अपना काम देखो। भाई कुछ बोले तो कह देना, मैं कुछ नहीं जानता, तुम्हें जो कहना हो बुढऊ से कहो। मुझे कुछ कहने आयेंगे तो समझा दूँगा। लेकिन भैया तो हीरूभाई की तरह किसी से अपनी ओर से कुछ नहीं कहते।

हुआ भी ऐसा ही था। हेती ने जब बात की तो रमणलाल ने कान नहीं दिया। कन्या अच्छी नहीं है, मिट्टी खा-खाकर पीली पड़ गयी है, यह जानकर भी रमणलाल ने गलबा को कोई राय नहीं दी। संबंध तोड़ने के लिए कहना कितना बड़ा अर्थ रखता है, वे जानते थे। हाँ, गलबा पूछने आया होता तो उचित समझते, कहते।

हीरूभाई ने लड़की की काफी उम्र हो जाने के बाद शादी करके काफी नाम कमाया है, यह जानकर गलबा सोच में पड़ गया। तखत ने भी एक दिन, जब वे दोनों खेत की ओर जा रहे थे, हीरूभाई की रास्ते भर प्रशंसा की। गलबा को विश्वास था कि तखत किसी और को चाहे जितना बहका दे किन्तु उसे कभी गलत सलाह नहीं देगी। जब वह सुधार की प्रशंसा करती है तो हम क्यों न बाल-विवाह का विरोध करें? समधी को कहलवा दिया। इस साल शादी की बात टाल दें। लड़के बड़े हो जायेंगे तब देखेंगे। समधी को बुरा लग गया। उन्होंने कहलवा भेजा – तुम्हें सत्तरह बार गरज हो तो बारात ले आना। नहीं तो भाड़ में जाओ। जो मन में हो साफ-साफ कह देना। गलबा ने कहलवा दिया – तुम्हें जो अच्छा लगे, करो। मैं थूका हुआ नहीं चाटता। लेकिन इस वर्ष तो शादी नहीं ही करेंगे।

बात यहीं पूरी नहीं हो गयी थी। गलबा ने उस गुड़िया जितनी लड़की के लिए भी कुछ जेवर बनवाकर भेजा था। लगभग ढाई हजार रुपये खर्च हुए थे। सामने वालों ने लड़की की दूसरी सगाई कर दी थी फिर भी अभी गहने वापस नहीं आये थे।

रमणलाल ने कहा कि मगनलाल से कहकर जेवर तो वापस ले लेंगे।

"लेकिन उन्हें थोड़ी-सी दलाली दोगे तो काम जल्दी हो जायेगा।" मगन अमथा के बारे में हीरूभाई का ऐसा ही ख्याल था। उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहा कि वह आदमी लवजी का समु है और दबाव में आकर रमणलाल का काम उसे करना पड़ेगा।

वाली बूढ़ा को अचानक ध्यान में आया कि गलबा का समधी सचमुच तो मगन अमथा के बल पर ही अकड़ रहा था। नहीं तो उसकी क्या हिम्मत? कहने वालों ने कहा नहीं है कि खूंटे के जोर पर ही बछड़ा कूदता है। गलबा आ गया। वे बोलीं –

"अरे! भनने मां गलबा की ही कमी रही। काहे भैया खेते मां काम नाहीं रहा?"

गलबा बूढ़ा की ऐसी बातों का अभ्यस्त हो गया था। इसलिए अब अच्छी बातें भी उसे बुरी ही लगती थीं। वह, जो मन में आता वही करता। कभी कभी तो जो मन में आता वह भी नहीं करता। मूलजी ने खेती आदि के बारे में तो सलाह देना भी बन्द कर दिया था। क्योंकि गलबा अब उनकी सलाह को नहीं उन्हें भी उड़ा देता था। और हर बात के बाद एक ही बात कहता – तुम लोग पुराने जमाने के आदमी, आज की सुधरी हुई खेती के बारे में क्या जानो? मूलजी

बुढऊ को यों तो विलायती खाद, दवा, नये औजारों आदि के बारे में थोड़ा बहुत समझ में आता था किन्तु काम के समय गलबा का बैठा रहना वे नहीं समझ पाते। सुधरी हुई आधुनिक खेती में मेड़ पर बैठा रहना कहाँ आता है। खुद खेती करने में लाभ होता है कि नुकसान? गलबा बड़े भाई की बराबरी करता है। ऐसा कहीं चलता होगा? भाग्यशाली का तो भूत भी चाकर होता है। और फिर हेती बहू भी तो कितना देखरेख रखती है। वालजी भी स्कूल से सीधे खेत पर चला जाता है। लड़का इतना बड़ा हो गया है फिर भी हेती उसके सिर पर हाथ फिराती ही रहती है। इसको अच्छे घर की लड़की कहते हैं। और गलबा की पत्नी? वह तो गलबा से भी अधिक गयीबीती।

"खेतों में हरवाह तो है, फिर गर्मी मां काम का होत है?"

"काहे नाहीं होत? बाजरा नाहीं बोये हो? दाल नाही है? आम नाहीं न?"

"तौ का बादर भगाते हम जायी? हरवाह तो है? कहा नाहीं?"

"भैया सौ हरवाहे पर भी खेत सून रहत है। चलौ ठीक है, आयो है तो बैठो थोड़ी देर। हीरूभाई रोज रोज कहाँ मिलत हैं।" माँ से इजाजत पाकर भी गलबा को कोई खुशी नहीं हुई। वह अपने ढंग से सामने बैठा। जेब में बीड़ी टटोलने लगा। पहली बीड़ी टूटी हुई थी, जो दूसरी हाथ लगी, उसमें तम्बाकू की पत्ती कम होने के कारण टूटी नहीं थी, टेढ़ी हो गई थी। विपुल से दियासलाई मंगवाकर गलबा ने बीड़ी जलाई। बड़े भैया तथा हीरूभाई को बताने लायक अपने पास बहुत कुछ हो, उस हिसाब से खंखारकर उसने शुरूआत की।

सोमपुरा वाले अडियोल से आया ब्याह का न्योता एक बार स्वीकार कर लेने के बाद वापस कर आये थे। पाँच आदमी जीप लेकर गये थे, रात के अंधेरे में समधी के हाथों उस लग्नपत्रिका को वापस सौंपकर, दूसरों को पता चले इससे पहले ही वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गये थे। उस इलाके में अडियोल वालों से कौन नहीं डरता? बात-बात में "साला" कहने की भूल आदत उन्हीं लोगों की। उपकार के बदले में अपकार करने के लिए भी वे नामचीन थे। माँ को छोड़ कुत्ती को खोजना पसंद करें ऐसे लोगों की नाक काटना बच्चों का खेल नहीं था।

परन्तु ऐसा करने का कारण? हीरूभाई पूछने लगे। गलबा के कहने के अनुसार कारण खुद हीरूभाई ही थे। उन्होंने सुधार दाखिल किया। बारात सुबह आए शाम को लौट जाए। हीरूभाई ठहरे भगवान के आदमी, उनका काम सवा लाख का। कोई विरोध नहीं करेगा, परन्तु अडियोल वाले तो हरामी थे। उन्हें अपना फायदा ही देखना था। सोमपुरा वालों ने इसीलिए बारात में एक ही जून भोजन वाली बात नहीं मानी। देवू इस मामले में तटस्थ रहा। रणछोड़ ने अगुवानी की। छना का भतीजा जबरा जीप से उतरकर ब्याह के नौते की पत्रिका लौटा आया था। जानते हैं न जबरा को? 'सींग से पकड़ो तो खाँडा और पूँछ से पकड़ो तो बाँडा। गलबा को यह सारी घटना तखत ने बताई थी पर वह हीरूभाई के सामने उसका नाम नहीं ले पाया।

14

'ईजू इस बार गोकुलिया में आयी तो चार दिन के बाद वापस जाने की तैयारी करने के बाद भी नहीं गयी। सोचा अब आज कौन जाये, कल जायेंगे। और गलबा के घर चली गयी। रमणलाल ने सोचा था कि पहले ईजू और भानजी को सोमपुरा में छोड़ देंगे, बाद में सारंग के ओफिस चले जायेंगे। कोई बात नहीं, कल सही? उन्होंने बात चलायी–

"ईजू इस बार काफी रुकी।"

"अब हीं लवजी की पत्नी है न हुवां। काम करे बेचारी। तुहरे ईजुबहन सोचत हैं कि देवरानी अहमदाबाद रह आयी तो का भवा? जतने दिन घरे रहे काहे न गोबर–पानी करें।"

"ईजू ऐसा कभी नहीं सोच सकती।"

"तुहार बहिन है यही से?"

"मैं ईजू को पहचानता नहीं? हमारे पूरे घर में सबसे अच्छा संस्कार उसी को मिला है। उस पर तुम्हारा प्रभाव है।"

"आपने अलग रहे आवा तब ऊ गलबा भाई के पास रहत रही न?" हेती ने रमणलाल के विश्वास को, हकीकत बताकर, उड़ा दिया। उसे अपनी प्रशंसा में जरा भी रुचि नहीं थी। प्रशंसा से भला क्या लाभ? दो घड़ी आराम से बैठकर बातें करें तो मन को अच्छा लगे। इन दिनों तो जैसे वे बदल ही गये हैं। कुछ पूछती हूँ तभी बोलते हैं। खेतों पर भी नहीं आते है। कभी–कभी पूछते हैं–क्या बोया है? पहले तो सब वही तय करते थे कि क्या बोना है! वालजी के साथ तो आँख मिलाकर बात भी नहीं करते। एक साल से ऊपर हो गया बाप–बेटे एक साथ खाना खाने भी नहीं बैठे होंगे। वालजी के परीक्षा–फल के बारे में मुझसे ही पूछा था। बोले थे - लड़का पढ़ने में खराब निकला। देखते हैं विपुल कैसा निकलता है!

हेती सोचती --पति की यह चिन्ता व्यर्थ है। अच्छा तो यह होता कि कोई अन्य बात करें। इन्हें ईजू को समझाना चाहिए। वह शांति से ईर्ष्या करे यह तो अच्छी बात नहीं है। मेरी माँ से जुबान लड़ाती है। फिर इज्जत नहीं रह जायेगी दुनिया में। फजीहत होगी ऊपर से। हेती ने मन मजबूत करके कहा–

"जरा अपनी बहिन से कहेव। खाल मां रहैं, हमरी मां से जबान न लड़ाये।"

रमणलाल की भौंहें तन गयीं। वे हेती को देखते ही रह गये। हेती सिर नीचे किए काम करती रही।

'क्या मतलब? तुम्हारी माँ और ईजू लड़ती रहती हैं? किसने बताया?"

"लड़ती तो नाहीं। पर अबसो आयीं हैं तब से हमरी महतारी के बुराई करत हैं और काल जाब, काल जाब करा करत हैं। हम समझा कि..."

"कोई बात हो तो मैं सोमपुरा देख आऊँ ?"

"हमरी माँ का डाँटे ?"

"नहीं...तुम भी कैसी बात करती हो ? लेकिन जाऊँ तो पता चले। देवूजी तो सब जानते होंगे, खुद ही बात करेंगे।"

"वह तो कुछ नाहीं कहि हैं।"

"देवू तो..."

"कुछ नाहीं। लवजी साफ-साफ बात करत है मुला देवू तो चुपचाप देखा करत है। अपने आप सब ठीक होय जाये।"

"लेकिन इतना तो ठीक है कि ईजू का पक्ष नहीं लेते।"

"अरे जीकर पक्ष लेय क चही, ऊ के नो नाहीं लेते।"

"मैं कहूँगा।"

"का कहबो ?"

"कहूँगा कि समय नहीं मिलता नहीं तो साल में दो दिन आकर सोमपुरा में रहा करूँ। अभी तो कभी जाता भी हूँ तो एकाध घंटे में वापस आ जाता हूँ। किन्तु मुझे लगता है कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। नहीं तो देवू मुझे बताता। तुम व्यर्थ में..."

"गलती होय गयी। अब चिन्ता न करब। कहबो न करब तुमसे। इहाँ आवत का करे क हौ ? दिल्ली मां रहत हौ, वहीं रहा करौ तो ?" कहते-कहते हेती हँस पड़ी। रमणलाल ने अनुमान लगा लिया कि हेती के दिल में तो वह जो कह रही है उससे अलग ही बात है। ऐसा ही है। कैसी भी उलझन और नैराश्य की स्थिति क्यों न हो, उसकी याद आश्वासन देती है। कहीं भी रहूँ, किन्तु उसे क्या पसन्द है क्या नहीं इसका बराबर ध्यान रहता है।

"तुम कहो तो मैं ईजू को डाँटूँ ?"

"डाँटे क होय तो हम नाहीं डाँट सकित ?" लेकिन ऊ तो सोचा कि जो ईजू अब ही न समझे तो और किसकी बात करी। हमरी महतारी जसी औरत कहा है कोई ?"

"वैसे तो मेरी माँ भी..."

"ठीक है। तुमका सारंग जाय क देर होत है। वालजी कहत रहा कि दुई पेन्ट सिलाना है। अरे कौन कपड़ा होत है . नायलोन कि .."

"नायलोन की पैन्ट नहीं बनती !"

"हाँ, ऊ तो पातर होत है। ऊ...टेरेलीन।"

"दो पैन्ट के कपड़े में डेढ दो सौ लगेंगे।"

"ऊ तो लागे। अहमदाबाद से मंगाये व केहू जात होय तो।"

"मेरे साथ चले। मैं शनिवार को जाने के लिए सोच रहा हूँ।"

"तुमहीं कहो।"

"मेरी समझ में नहीं आता वह मुझसे नाराज क्यों है ?"

"थोड़ी देर साथे रहे तो...तुम ऊ से परीक्षा की बात मत पूछेव । ऊका बुरा लागत है ।"

"बुरा लागत हो तो कहो कि ठीक से परिश्रम करे और पहला नंबर लाये । वह तो अभी दसवें से आगे आया ही नहीं । मैं हमेशा पहला आता था ।"

"वालजी से हम एक बार कहा रहा । ऊ कहत रहा कि हमें का नाहीं आवत ? पर पापा हमेशा अपमान करत हैं । इस परीक्षा में तो उसने जानबूझकर दुई दुई प्रश्न किहिस रहा ।"

"नहीं । लेकिन उसने ऐसा क्यों किया ? यह तो..."

रमणलाल का मुँह देखकर हेती चिन्तित हो उठी । इन्हें क्या हो गया ? वह कुछ बोलें इसके पहले ही रमणलाल बोल उठे –

"जो मुझे अच्छा लगे ठीक उससे उल्टा करना...यह तो कैसी मानसिकता है ? तूने उसे सिर पर चढ़ा रखा है ।"

"भले चढ़ाय रखे हन । हमार लड़का है । हम दूध पियाय के बड़ा कीन है ।"

"इसी से तो वह खराब हुआ है ।"

"पर ऊ कबौ तुमसे झगड़ा किहिस । हैरान करत है तो हमका । तुम घूमो न दुनिया कै नेता बनकर ।"

"यद्यपि यह मेरी भी भूल है । जितना समय देना चाहिए मैंने कभी बच्चों को दिया ही नहीं । बस, अगले चुनाव में..." वे कहने जा रहे थे कि खड़ा ही नहीं होऊँगा । किन्तु यह सोचकर कि कहीं झूठ न पड़ जाऊँ, बोले– "विधान सभा में ही जाऊँगा । रोज घर तो आ सकूँगा ।" उनके मन में फिर दुविधा पैदा हुई – मंत्री बना दिया गया तो ? तो परिवार के लिए कितना समय दे पाऊँगा ? देखा जायेगा ।

रमणलाल गैरेज से कार निकाल ही रहे थे कि वालजी आता हुआ दिखाई दिया । इच्छा हुई कि कहें - "क्यों बेटे, अभी से खेत पर जाकर आ गये ?" लेकिन होठों के खुलने के पहले ही हाथ की चाबी घूम गयी थी । कार के इन्जन की आवाज में बोलने की इच्छा ही नहीं हुई । कार बाहर खड़ी करके जब वे बैग लेने गये. तो ड्रायवर आ पहुँचा ।

हेती खड़ी-खड़ी निरंतर छोटी होती जा रही कार को देख रही थी ।

"माँ, भूख लगी है ।" वालजी बोला ।

"खिचड़ी बनाई है । दूध और खिचड़ो खा लो ।"

"चलो दो ।"

वालजी ने खाते पूछा : माँ, सारंग तक जाने के लिए भी पापा ड्राइवर को क्यों बुलाते हैं ? मैं ड्राइवर नहीं रखूँगा, खुद चलाऊँगा ।

हेती ने परीक्षा में पहला स्थान पाने के विषय में बात छेड़ी । वालजी का

तर्क था कि उसकी कक्षा में चालीस विद्यार्थी हैं। सभी के माँ-बाप चाहेंगे कि उनका बेटा पहला स्थान पाए, अब तुम ही बताओ माँ पहला स्थान चालीस विद्यार्थियों को मिलेगा या किसी एक को ?

वालजी की बात हेती को छू गई, वह प्रसन्न हुई।

तभी ईजू आई। आते ही उसने फरियाद की : "भैया मुझे लिए बिना ही गये ?"

उसके पीछे चलती आती रूपा रो रही थी। वालजी ने उसे उठा लिया। लाख कोशिश करने पर भी वह शान्त नहीं हुई। ईजू ने गुस्सा किया। कोई असर नहीं पड़ा। उसे पापा के घर जाना है। हेती ने रूपा को दुलारा। ई दोहरी मानसिकता में बात करती रही। कुछ देर बाद गलबा की पत्नी आई। वह सगर्भा थी। यदि उसके लड़के की शादी इस वर्ष हो जाती तो इस हालात में उसे बारात में जाना पड़ता। पहले और दूसरे बच्चे के बीच चौदह मास का अंतर था परन्तु दूसरे और आने वाले बच्चे के बीच उतना अंतर भी नहीं रह पाएगा। गलबा ने उसे वादा किया है कि अब एक दो बच्चे हो जाएँ उसके बाद आपरेशन। इस बात को ले ननद का हँसी-मजाक गलबा की पत्नी को अच्छा नहीं लगा। तिस पर वरवा के घर से ईजू ने न्यौते की बात उठाई–

"तुहै वरवा के घर मे न्यौता मिला ?"

"कौन वरवा ?"

"लेव करौ बात। तखत के आदमी वरवा। ऊके लड़का के आज बरात जात है।"

"तब तौ गलबा भैया मरब्बी बन के जहैं।" ईजू के जुबान से निकल पड़ा। परन्तु उसे तुरन्त पश्चात्ताप हुआ। छोटी भाभी समझ जायेगी तो घोटाला हो जायेगा। परन्तु वे बच्चे को दूध पिलाने में व्यस्त थीं। जैसे कुछ सुना ही न हो, बोली–

"देखो तो, ईका भवानी खाँय, काल तक तो खाना नाहीं मिलत रहा और कंकोतरी छपावत है। काल तक यही तखत घी बेच के घर चलावत रही।"

"ऊतो बहुत पहले बद कर दिहिस।"

"पर दूसर काम नहीं बंद किहिस। केहू आजो दुई पाँच रुपया देब क कहै तो ऊ रांड टांग फैलाय कं –।"

"का जौन मनमां आवत है, बोला करत हौ ?" ईजू ने नाराजगी जाहिर की।

"का हम झूठ कहिन है ?' गलबा की पत्नी ने हेती से पूछा किन्तु समर्थन माँगा ईजू से ही। हेती ने भी कहा कि तखत अब पहले जैसे नहीं रही।

"अरे मुला भभका तौ देखो, केहू बराते मां न जाय तो पता चले।"

"काहे का बिगाड़िस है ऊ तुहार ?"

"हमार का बिगाड़ै ऊ रंडी। खड़ी-खड़ी फार न डारब। शरमातौ नाहीं बुजरी। अबकी ठंडी मां जोराकाका के खेते मां ढेखाड़िया के ड्राइवर क लिहे सोवत रही।"

"तुमसे के कहत है ई सब ?" हेती ने गुस्से में पूछा।

"और के कहे, ईजू के भैया के सिवाय ?"

हेती सोच में पड़ गयी। क्या गलबा भाई का मन अभी भी उसी में लगा रहता है ? एक बार इस देवरानी ने कितनी बेइज्जती की है। यह तो वालजी के पिताजी को वजह से कोई कुछ बोलता नहीं नहीं तो बवाल हो जाये। परन्तु तखत . सुना था कि सजूभा के यहाँ से सब उठा लाने के बाद उसने सारे धंधे बन्द कर दिये हैं। फिर यह क्या सुन रही हूँ मैं ?

इधर ईजू और छोटी भाभी का विवाद चालू ही था। ईजू कह रही थी कि भाभी इतना जलती क्यों हो ? गाँव के भंगी के लड़के की शादी में भी खुश होना चाहिए। इतने में बुढ़ा चाय बना लायीं और वार्तालाप का विषय बदल गया क्योंकि गलबा की पत्नी के चाय पीते समय थोड़ा गर्म चाय बच्चे के पाँव पर गिर गयी थी और वह उन बच्चे को पुनः सुलाने लगी थी।

वालजी अपने तीन मित्रों के साथ आ पहुँचा।

"माँ, हम छज्जा पर बैठकर पत्ता खेलित हैं।"

हेती ने अनुमति दे दी। इतने में ईजू जाने के पास जाकर बोली - 'अरे भैया हमका खेलाय ल्यो।'

"इन के देखौ शरम नाहीं आवत। मेहरारू के अवतार पाय कै पत्ता खेलि हैं। ई तो जुआ है।"

रूपा जाने पर चढ़ना चाह रही थी। एक लड़का आया और उसे उठाकर ले गया। उसके हाथ में घड़ी देखकर देवरानी पुन बोल पड़ी-

"देखो वाला क अम्मा, सब घड़ी पहिने लागें। घरे भले कूकुर लोटत होय मुला मेंड़ मा अलपट्ट निकरि हैं और हाथे मां घड़ी जरूर बांधि हैं।"

ईजू ने बताया कि उसे कोई बुला रहा है।

रूपा नीचे उतर रही थी तो वालजी उसे छोड़ गया। ईजू सब्जी काटने लगी। हेती आटा गूथने लगी। रूपा चाकू छीन लेना चाहती थी किन्तु उसे दे नहीं रही थी। ईजू बड़बड़ाती रही। सबने चढ़ा मारा है। घर पर हो तो माँ, खेत में हो तो दादा। पिता भी कंधे पर बैठाकर मेंड़ मेंड़ पर घूमा रहे। लवजीभाई आते हैं तो पाँव पर लेट जाती है ताकि झुलाये! फिर बिगड़ न जाये तो और क्या ? क्या ये लड़के नहीं थे ? जहाँ बैठाओ बैठे रहें। इन दोनों को देखो - एक गुड़ खाता रहा, दूसरा सोता रहा।

"तुम उनसे न झगड़ेव। नाराज होय हैं तो आउब बंद कर देहैं।"

"तौ अच्छा रहे।"

हेती ने कहा कि भाभी के बारे में ऐसा नहीं कहते। क्यों नहीं कहते ? उनके घर तो मैं एक ही दिन रही हूँ और कहने लगी कि कब वापस जाओगी ? जैसे मैं भारी बोझ होऊँ - ईजू बड़बड़ा जा रही थी। ईजू के इतने दिनों तक रुकने के कारण को हेती नहीं समझ सकी है। उसने पूछा कहीं सास से लड़कर

तो नहीं आयी है ? ईजू ने बताया नाराज होकर तो नहीं पर कहकर आयी हूँ कि इस बार देर तक रहूँगी । उसने बताया कि सास ने भी कहा कि खूब देर तक रहना । अभी तो शांति बहू घर पर है ।

"और कुछ कहिन रहा ?"

"ई कहिन का कम है ?"

"ई बात तुमका बुरी लाग ?"

"हमरी जगह तुम होव तो तुमका खराब न लागे ?"

हेती ने कहा कि उसे किसी की बात, यहाँ तक अपनी सास की बात भी बुरी नहीं लगती । ईजू ने सास पर आरोप लगाया कि वे शांति के साथ पक्षपात करती हैं ।

हेती ने समझाया कि तुम्हें तो ऐसी सास और ससुर मिले हैं कि तीर्थ से भी अधिक पुण्य उनके सान्निध्य में मिले । उसने पिथू भगत के बारे भी ईजू को बताया । उसने कहा कि यदि माँ को पता चलेगा कि तुम नाराज होकर आयी हो तो उन्हें बहुत दुःख होगा ।

"बात तो सही है मुला दस दिन रहे क कह आइन है ।"

"पर हम देखित है कि तुहार मन इहाँ नाहीं लागत । तबौ तुम इहाँ हो।"

रूपा ने पुनः चाकू ले लिया था । ईजू ने उसे डाँटते हुए पूछा–"कहाँ जाय क है रे तुझे ।"

"पप्पा के घले ।"

हेती ने महसूस किया कि बात सही तरीके से पूर्ण हो गयी है । इतने में तखत आती हुई दिखाई दी । वह डाकोर गयी थी । वहाँ से तुलसीमाला और शक्करिया का परसाद लायी थी । उसने ईजू के पास बैठते हुए रूपा को परसाद दिया ।

"तौ तखत भाभी तुम यात्रा करे लागी ?" ईजू का बस चलता तो रूपा के हाथ से परसाद लेकर फेंक देती ।

"हमका तो बहिन अस घर मिला है कि पुन्न करौ तबौ पाप लागे । तुहार तो अच्छा है कि नरसंग भगत के घर मिला है । घर मां तीरथ और खेतेवमां तीरथ । यात्रा न करौ तो चलै । पर हमरे अस तौ चार धाम यात्रा कर लेय तबौ भाग मां होय तो आत्मा का शांति मिलै ।"

हेती रूपा को पानी देकर तखत के पास आ बैठी । तखत धन्य हो गयी । ईजू सोचने लगी "नरसंग दादा की तरह ही हेती भी किसी से घृणा नहीं करती । क्यों ? कमाल है पिथू भगत के वंश का ।

15

वीणाबहन की सिफारिश से लवजी को एलिसब्रिज एरिया में दो रूम रसोई वाला मकान मात्र दो सौ रुपये प्रति माह के भाड़े से प्राप्त हो गया था। उसके बरामदे में खड़े होकर एक ओर वृक्षों को देखा जा सकता था और दूसरी ओर मनुष्यों तथा वाहनों का आवागमन देखा जा सकता था। जब वह घर पर नहीं होता, शांति इसी बरामदे में बैठकर घण्टों बिता देती। इन्तजार किया करती।

शुरू में कुछ दिनों तो लवजी कॉलेज से सीधे घर आ जाता, फिर कहीं जाना होता तो जाता। सड़क पर साथ चलते समय शांति को संकोच होता। लवजी उसे कहता कि यहाँ तुम्हारे मायके का कोई देखने नहीं आयेगा, और इस प्रकार बिना सिर ढके चलने वाली तुम, मगन अमथा की लड़की होगी, कोई नहीं मानेगा। तुम पहले मेरे साथ घूमकर सब देख लो, जिससे कहीं जाना हो तो अकेली जा सको। पास-पड़ोस वालों से भी परिचय बढ़ा लो। अधिक पढ़ी-लिखी औरतें तुमसे अधिक समझदार होंगी, यह सोचने की जरूरत नहीं है। यहाँ सबको सम्मान से बुलाना चाहिए। कोई घर पर आये तो चाय पिलानी चाहिए। पति की बहुत प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। लोगों को ईर्ष्या होने लगती है। जेठानी तथा सास की प्रशंसा करनी चाहिए। मायके की अपेक्षा ससुराल में जमीन-जायदाद कम है, ऐसा सोचने में संकोच नहीं करना चाहिए। किन्तु एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि देवू भाई जैसे जेठ और नरसंग बाबा जैसे ससुर भाग्यशालियों को ही मिलते हैं। मैं भी यों तो अच्छा हूँ क्योंकि प्रेमी तथा वफादार पति हूँ। किन्तु कभी-कभी कुछ सोच रहा होता हूँ तो तुम्हें लगे यह आदमी मुझसे नाराज तो नहीं होगा? एक बात निश्चित मान लो कि मैं तुम्हें दुखी नहीं होने दूँगा। मैं अपने रहते तो दुखी नहीं ही होने दूँगा। जैमिनी और मेरे बीच के संबंध को प्रेम भी कहा जा सकता है। तुम यदि प्रेम के बारे में न समझ सको तो चिन्ता नहीं करना। मुझे भी कुछ खास समझ में नहीं आता। तुम ही बताओ, शादी के बाद मैं किसी बहाने तुमसे मिलने नहीं आ पहुँचा था? उस दिन तुम्हारी पीठ पर मैंने हाथ रखा और माथे पर भीगे हुए होंठ रखे तो इसे भी प्रेम कहा जा सकता है। ऐसा कुछ न भी हो तो भी शादी के बाद दाम्पत्यभाव तो उत्पन्न हो ही जाता है। समाज ने इसे युगों के अनुभव के बाद अपनाया है। उसे धर्म भी कहते हैं। प्रेम के लिए आदमी मुक्त है। किन्तु दाम्पत्यभावना के लिए बाध्य है। शादी-मंडप में क्या कहा गया था, यह तुम्हें तो समझ में आया नहीं होगा किन्तु मैंने तो सब कुछ समझा था, और याद भी है। इसलिए मेरे बारे में फिक्र करने की आवश्यकता नहीं है। मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा। भले ही तुम जानकर दुखी हो जाओ। हालाँकि तुम जानती हो कि मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ जो किसी को दुखी

करे । बहुत सारी बातें तो बिना प्रयत्न के ही तुम्हारी समझ में आ जायेंगी । कालिदास का नाम सुना है तुमने ? तुम और जैमिनी दोनों उनके अनुसार समान हो । तुम लोगों में चेहरे पहचान लेने की योग्यता बहुत होती है ।

"मुझ में जैमिनीबहन से अधिक नहीं है ? कभी-कभी तुम झूठ-झूठ में मेरी बड़ाई करते तो कितना अच्छा ।–"

और वह खिलखिला उठी ।

उसके सुबद्ध एवं कचन वर्ण वदन की सारी चमक दंत-पंक्ति के माध्यम से व्यक्त होने लगी ।

'इस समय तो तुम जैमिनी से ज्यादा सुन्दर लग रही हो..." कहते हुए वह उदास हो गया । उसकी वाणी डूब गयी ।

शांति उसे देखती रही । जैसे आँखों से ही कुछ पूछ रही हो... ।

"सब कहने के लिए मैं मजबूर हूँ । जैमिनी बहुत समझदार है । उसने मुझसे कभी कुछ माँगा नहीं है । मैं जानता हूँ कि किसी और के साथ उसकी शादी, मात्र समझौता होगी । किन्तु उसने जिस साहस से मुझे तुम्हारी ओर मोड़ा है, वह अद्वितीय है । उसने मुझे रोकना चाहा होता तो यह उसके लिए मुश्किल न था । कुछ समझ में आ रहा है ?"

"नहीं ।" कहकर शांति हँस पड़ी । किन्तु इस बार पहले की तरह चमक नहीं थी । मात्र समझदारी की प्रतिच्छाया थी । सम्मान-भाव था । बोली : "उनमां तुहरे लिए भावना है, ठीक है, पर हमरें लिए भी है, ऊ के का ?" सुनते ही लवजी चौंक पड़ा ।

वर्षा ऋतु आयी और शांति को मायके की याद आ गयी । गत बरसात में वह मायके में ही थी ।

लवजी ने कहा कि मुझे भी घर, गाँव, चौराहा, खेत, सीम, सब की याद आती है । किन्तु अभी जायेंगे तो लोग मूर्ख कहेंगे । वर्षा कम हो और छुट्टी मिले तो जायेंगे । पूछने वाले को कारण तो बता सकेंगे । ठीक है ? और यदि तुम्हें बहुत याद सताती हो, और रोना आ रहा हो तो पत्र लिख दो । लो यह रही बॉलपेन, इससे लिखने से, अक्षर भीग भी जायें तो भी मिटेंगे नहीं । पुराने समय में स्त्रियाँ पत्र लिखती थीं तब अक्षर पर उनके आँसू पड़ते और पत्र भाववाहक बन जाता । मालूम है, भाववाहक का अर्थ ?

उत्तर के बदले आँसू ।

"तुम ईमानदार हो । मुझे ऐसी ही पत्नी चाहिए थी । चलो । अंग्रेजी साप्ताहिक में अपना फोटो छपवाएँ – सुखी युगल । तुम्हें कोई बी. ए. पढ़ी से कम नहीं समझेगा । अपनी जाति की स्त्रियों में एक प्रकार का आत्मविश्वास होता है । रूप तो होता ही है । वीणाबहन एक दिन कह रही थीं – "इस शहर के लोग जैमिनी की अपेक्षा शांति को अधिक सुन्दर मानेंगे ।" मैंने क्या कहा मालूम है ?

एक सुन्दर महिला के द्वारा दिया गया यह प्रमाणपत्र मैं स्मृति-पटल पर अंकित रखूँगा। "स्मृति-पटल" का अर्थ मालूम है ?

"सर्टीफिकेट छाप रखने का पर्दा।" शांति ने मोटी आवाज में कहा। लवजी ने उसे उठा लिया।

"जरा शरमाओ।"

"मुझे ही कहोगी, किन्तु तुम अपने सौन्दर्य को दोष नहीं दोगी।"

इसी प्रकार की मीठी-मीठी बातों में शांति के दिन गुजर रहे थे।

अहमदाबाद से सारंग के लिए सीधी, एक्सप्रेस बस मिल गयी थी। एक कत्थई रंग के सूटकेस में दोनों के कपड़े इकट्ठे रख लिए गये थे। शांति को इससे भी संकोच हो रहा था। बस में जब वह साथ बैठी तो दोनों के बीच जगह छोड़कर बैठी।

लवजी ने पूछा—"बस में सिर्फ हम दोनों ही हों तो ?"

"तो मैं तुम्हारी गोद में सिर रखकर सो जाऊँ।" शांति ने लवजी के पास खिसकते हुए कहा। लवजी खुश हो गया।

शांति ने लवजी की जेब से पेन निकाली और लिखा—"एस एल.सी." शायद चौधरी उसने पूरा लिखा होता किन्तु बस ऊबड़ खाबड़ सड़क पर चलने लगी। और वह अक्षर खराब करके लिखना नहीं चाहती थी।

बस-स्टेण्ड पर उतरकर जब वे दोनों गाँव की ओर चले तो फुहारें पड़ने लगी थीं। लवजी जब तक छाते को खोले तब तक तो वे आधे भीग चुके थे। दोनों एक आम के नीचे खड़े हो गये। शांति के बायें हाथ में सूटकेस था जिसे उसने बीच में कर रखा था। लवजी ने उसे मदद करने के बहाने सूटकेस को अपने हाथ में ले लिया। फिर उसे अपने और नजदीक आने के लिए सलाह देने लगा।

"तुम्हारी सब सलाह मैं मान लूँ तो तुम तो मुझे चिपककर खड़े रहने के लिए कहने लगोगे।"

"तुम्हारी बात शत प्रतिशत सच है। चलो अब बरसात नहीं रुकेगी, चलें।"

"छाते को तुम ही पकड़ो। मुझे तो भीग जाने से भी कुछ नहीं होगा।"

"नहीं, मैंने शादी के मंडप में वचन दिया है कि मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"

"बहानेबाजी में तो तुम्हारी बराबरी कोई नहीं कर सकता।" कहते हुए शांति लवजी के छाते के नीचे आ गयी। वह भीगती हुई तो अभी भी चल रही थी।

बरसात तेज हो गयी थी।

लवजी ने छाते को बन्द कर दिया।

"अब हम बचने की कोशिश करेंगे तो देर हो जायेगी। चलो, जरा तेजी से चलो।"

"लाओ पेटी ले लूँ।"

"इतना छोटा सूटकेस मैं नहीं उठा सकता क्या ?"

"तुमसे तो..." कहकर वह हँस पड़ी। बरसात की धाराओं में उसकी मुख-मुद्रा और प्रभावशाली एवं आकर्षक हो गयी थी। पाँव के नीचे पानी भरा था। काली घटा छायी हुई थी।

बिजली के चमकते ही बदन से चिपके, भीगे वस्त्रों का आवरण शांति के अंगों को वाचाल बना रहा था।

"क्यों पाँवों में काँटे गड़ गये ?" आगे-आगे चल रही शांति ने पूछा।

"नहीं। तुम इस सूटकेस और छाते को पकड़ लोगी क्या ?"

निरंतर गहरे होते जा रहे अंधेरे में, लवजी की आँखों का जनून देख पाना शांति के लिए संभव न था। उसने सहज भाव से दोनों वस्तुओं को ले लिया और चलने के लिए कदम बढ़ा दिए। इतने में तो लवजी ने उसे उठा लिया।

"अरेरे... यह कैसा पागलपन .."

"हाँ, पागलपन है।...तुम इस तरह अकड़ी रहने के बदले अपना सिर मेरे कन्धे पर दो ' मुझे तो तुम फूल जैसी हल्की लग रही हो। अब देखना मेरी चाल।"

"मुझे और जमिनी, दोनों को उठाकर चलना हो तब तो तुम्हारी चाल दुगनी हो जाये, नहीं ?"

लवजी ने कोई उत्तर देने के बदले उसे ऐसे भींचा कि शांति से कुछ बोला न जा सका।

वे जिस तंग रास्ते से चल रहे थे, लगभग खत्म होने को आया था। वर्षा मद्धिम पड़ चुकी थी। बाड़ पार करके अब खेतों की मेड़ पर से चलना था।

लवजी ने उसे नीचे उतार दिया।

"थैंक्यू सर।" कहकर वह बिल्कुल सटकर खड़ी हो गयी।

बरसात बन्द हो चुकी थी। क्षण भर पूर्व तक का फैला हुआ अंधकार बादलों के संग अनजाने प्रदेश में आ चुका था। थोड़ी ही देर में सूर्यास्त का प्रकाश रंग-बिरंगी शैया की तरह वातावरण में फैल गया।

"ऐसी संध्या दुर्लभ है शांति। इसमें आवेग नहीं है। दाम्पत्य की गंभीरता है। आज मैं तुम्हें इस तरह उठाकर जो चला, तो धन्य हो गया। दो शरीर के एक हो जाने की आतुरता भी सच है और तुम्हें इस प्रकार उठाकर कुछ दूर चलते रहने से अनुभवित उष्मा भी । किन्तु क्या आतुरता की अपेक्षा उष्मा अधिक मूल्यवान, अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होती ?"

"मैं यह सब नहीं जानती।" कहते हुए वह लवजी से भी आगे निकलकर जल्दी-जल्दी चलने लगी। घर पहुँचने के पूर्व ही उसकी साड़ी को सुखा देने का दायित्व जैसे हवाओं ने ले लिया हो।

कंकू लोगों से इतने उमंग से बात करती जैसे बेटा-बहू विदेश से वापस आये हों।

शांति इस बीच मायके भी जाकर वापस आ गयी थी। सोमपुरा के चौराहे पर गरबा-रास जमा हुआ था। शांति ईजू को भी गाने में खींचकर ले गयी थी। ईजू और शांति को गरबा खेलते देखकर लवजी खुश था।

अभी वह उठने की बात सोच ही रहा था कि आगे-आगे घेमर और पीछे-पीछे जीवन आते हुए दिखाई दिये।

जीवन ने अपने भीतर एक नयी कला विकसित की थी। इस कला में उसकी बराबरी करने वाला कोई नहीं था। जिन्हें अपनी ताकत और जवानी का बहुत गरूर होता ऐसे लोगों को देखते ही देखते वह अपने वश में कर लेता था। वह ऐसे आदमी की कलाई को अपने अंगूठे और तर्जनी से पकड़कर इतनी जोर से दबाता था कि सामने वाला अपना सारा गरूर भूल जाता था। उसके पास एक और कला थी। वह भी सामने वाले आदमी की हथेली को अपने हाथ में लेकर जोर से दबाने की कला। ऐसा करने पर सामने वाला आदमी खिलौने के सिपाही की तरह उठक-बैठक करने लगता। जीवन की वाह वाह होने लगती।

इसी वाह-वाह के नशे में आज वह धोखा खा गया था। माधव और रणछोड़ के चढ़ावे में उसने डींग हाँक दी कि लवजी की कलाई को उंगली और अंगूठे से दबाकर उसे खड़ा कर देगा। और अगर वह ऐसा नहीं कर पायेगा तो सवा पाँच रुपये की सुखड़ी का परसाद चढ़ायेगा।

घेमर ने जब सुना तो उसे खूब डाँट पिलायी। लेकिन शर्त रखी जा चुकी थी। उसने घेमर को मना लिया। बात जानकर लगभग पच्चीसों आदमी आ पहुँचे।

"ई मूरख ने शरत लगाया है कि आपके कलाई दबाय कै आप क खड़ा कर देये।" घेमर ने प्रार्थना के स्वर में कहा।

लवजी सुनते ही खड़ा हो गया। बोला – "आप जैसे बड़े मित्रों के कहने से मैं एक बार तो क्या पाँच बार खड़ा हो सकता हूँ।"

"नाहीं, अस नाहीं।" घेमर ने शर्त समझायी। लवजी ने नजर उठाकर जीवन की ओर देखा। उसका मुँह पीला पड़ गया था।

"ठीक है, शरमाने की कोई जरूरत नहीं है। इससे यदि आपकी शक्ति का अंदाज निकलता हो तो मुझे सहयोग करने में कोई आपत्ति नहीं है।" कहते हुए लवजी ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। इतने गोरे और मुलायम हाथ पर तो बिच्छू भी डंक मारने से हिचकिचाये। जीवन भी हिचकिचा उठा। घेमर ने फटकारा : "अस का हिजड़ा अस करत है ! लगाव जोर।"

जीवन अगले ही पल भूल गया कि उसके सामने लवजी बैठा है। उसने अपनी सारी ताकत आजमा डाली। किन्तु कोई फर्क नहीं पड़ा। जीवन का मुँह लाल लाल हो गया था। भौंहें खिंच गयी थीं। कंधे फौलाद के पाबड़े की तरह मुड़ गये थे। उसे देखते ही घेमर चिन्ता से बोल पड़ा–

"अरे, तोर अँखियाँ न बाहर निकल आवे। औकात से जादा ताकत न लागाइस।"

इसके बाद फिर से जीवन ने एक श्वास लेकर ताकत लगाई ।

आसपास बैठे लोग बोल पड़े – अभी तो लवजीभाई का रोवां भी नहीं फड़का है । मुँह पर शांति है । "बस भाई जीवन, शर्त हार जा । तेरा अंगूठा भी उतर जायेगा ।" लवजी बोल पड़ा । – "और शायद मेरी कलाई की हड्डी भी टूट जाये ।"

ये शब्द सुनते ही जीवन ने हाथ हटा लिया । अपनी हार मान ली । लवजी ने आज उसकी ऐसी कद्र की थी जैसे जिन्दगी में किसी ने न की हो । रणछोड़, माधव और जबरा जैसे सौ आदमियों मे जीतने की अपेक्षा एक लवजी से हार जाना अच्छा है । आदमी का बड़प्पन तो देखो । क्या कहते हैं । 'शायद मेरी कलाई की हड्डी भी टूट जाये ।"

सुखड़ी के लिए जीवन ने सवा पाँच रुपये के बदले ग्यारह दिये थे । उस दिन सभी को अष्टमी का उपवास था । स्वामिनारायण मंदिर के लिए परसों जो जगह खरीदी गयी थी आज सभी वहीं सुखड़ी खाने आने वाले थे ।

मंदिर की बात निकलते ही घेमर ने लवजी को बताया कि उसने जीवन को मंदिर बनवाने से रोका था । उसे कहा था – गाँव में महादेव का मंदिर तो था ही । वहाँ बैठकर क्या भक्ति नहीं की जा सकती थी ? अब अगर आप स्वामिनारायण की जय बोलते है तो क्या महादेवजी मना करेंगे ? क्या वे कहते कि तुम लोग गड़बड़ मत करो, मुझे पार्वतीजी के साथ नींद लेने दो ! लेकिन यह अक्ल का दुश्मन, बोला कि नहीं, मुझे तो मंदिर बनवाना ही है । फिर तो जब संकल्प ही कर लिया तो क्या बात वापस ली जाती है ?

लवजी ने तुरन्त दो हजार पांच सौ इक्यावन रुपये अपने पिताजी की ओर से मंदिर के सहयोग खाते में लिखा दिये । सभी ने तालियाँ बजायीं । घेमर ने कहा– अब मना करे वालेव लिखइ हैं । टेंबा के मगनजी से कहा जाये, "लिखाऊ सबसे जादा ।"

लवजी ने स्वामिनारायण मंदिर के लिए चंदा लिखाया है यह सुनते ही धमा-काका खिसकते-खिसकते नजदीक आये और ऐसी जगह बैठकर जहाँ से सबको दिखाई दें, बोले–"लिखो भाई तब तो हमरौ एक सौ एक ।"

नये मंदिर के निर्माण का विरोध करने वाले धमाकाका इतने बदल गये । किसी ने कहा कि वे तो राजा आदमी हैं ।

"सही बात है ।" लोगों ने समर्थन दिया । जीवन को एक मनोरंजक घटना याद आ गयी जिसमें धमाकाका ने एक राजा की भूमिका निभाई थी ।

सोमपुरा से बारात गयी थी । द्वाराचार होने के बाद से कन्या पक्ष की युवतियों ने बारातियों का नाम ले-लेकर नंगी नंगी गालियाँ गाना शुरू कर दिया था । मंगलफेरे का समय हो गया था कि हालात वही के वही थे । कुछेक बाराती इतने उत्तेजित हो गये थे कि मारामारी कर डालें । घेमर और जीवन ने उन्हें शान्त किया । बोले, "दुई घड़ी रुक जाव, कौनो जुगत करित है ।"

"थोड़े बहुत तिकड़म के बाद वे धमाकाका के पास गये । उन्होंने शरण स्वीकार कर ली। उन्हें तुरन्त पुराने नाटकों के राजाओं के कई संवाद याद आ गये। "मुझे शीघ्र तैयार किया जाये ।" उनका आदेश सुनाई दिया । उनकी कमर और कंधों पर कुछ चमकीले वस्त्रों को बाँधकर उन्हें राजसी ठाठबाट में लाया गया । वे खड़े हुए और उनके साथ ही एक दरबार लग गया। आज राजाजी का अगणितवाँ स्वयंवर था । कोई मोहिनी राजकन्या उनका अपहरण न कर जाये इसलिए घेमर और जीवन उनके अंगरक्षक बने हुए थ ।

राजाजी ने तो एक-एक राजकुमारी को देखना और उनमें कोई न कोई अवगुण ढूंढकर उन्हें नापसंद करना शुरू कर दिया । उनके बुलंद फैसले को सुनने के लिए मंडप में गाने वाली कन्या-पक्ष की युवतियाँ चुप हो गयी थीं । उनकी पसन्द की एक भी राजकुमारी ला पाने में असमर्थ घेमर और जीवन को उन्होंने डाँटकर "डिसमिस" कर दिया । इतना ही नहीं, कठोर मे कठोर सजा भी सुना दी – मैंने जिन राजकुमारियों को नापसन्द किया है उन सभी को तुम दोनों साँड बराबर बाँटकर शादी कर लो । और हाँ, उन्हें कम से कम एक जून का भोजन तो देना ही।

नापंसद की हुई राजकुमारियाँ कौन हैं, यह समझने किसी को देर न लगी । अश्लील गीत गाने वाली वे युवतियाँ अब क्रोधित भी हों तो क्या हो ? धमाभाई ने जबरदस्त फटका मारा था ।

आज इतने वर्षों के बाद भी जीवन धमाकाका को शाबाशी दिये बिना नहीं रह सका । उन्होंने एक सौ एक रुपया लिखाया था इसके बदले में उसने उनकी सारी जमीन एक बार ट्रेक्टर से मुफ्त में जोत देने के लिए कहा । धमाकाका ने खुश होकर उसे एक बीड़ी पीला दी ।

जीवन के लिए ट्रेक्टर बड़ा शुभ निकला था । सारंग का एक किसान बड़े उमंग मे ट्रेक्टर लाया था । किन्तु बाद में दो भाइयों के बीच झगड़ा होने की वजह से उसे बेच देना चाहा था । उन्होंने जीवन से बात की तो जीवन ने कहा कि यदि क़िस्त की सुविधा हो तो वह स्वयं खरीद सकता है । उसके कोई सगा भाई न था अतः झगड़े की कोई संभावना भी न थी । पटेल ने जब हाँ कह दिया तो जीवन घेमर और देवूभाई को बुला लाया । दोनों ने एक-एक बार ट्रेक्टर का चक्कर लगाकर देखा । सौदा पक्का हो गया । ट्रेक्टर खरीदना शुभ हुआ । पटेल ने अंतिम क़िस्त लेने से इन्कार करते हुए कहा – इससे स्वामिनारायण मंदिर के लिए चन्दा प्रारंभ करो ।

जीवन ने समझा कि उसे सारंग के मन्दिर में इतनी रकम दान देनी है । दे आऊँगा । रामनवमी तक । पटेल ने उसका जवाब सुनने के बाद उसे सही बात समझायी । तुझे सोमपुरा में मन्दिर बनवाना है ।

किन्तु यह तो नेताओं का काम है । और वह तो हमेशा नेताओं का मखौल उड़ाता रहा है । उसकी बात सुनेगा कौन ? वह तो सोचसमझकर कदम आगे बढ़ा रहा था ।

आज लवजीभाई ने इतनी बड़ी रकम लिखायी और वह भी नरसंग बाबा के नाम। अब देर नहीं है। मन्दिर बना ही समझो। ठेठ अहमदाबाद से संत लोग आयेंगे। और तरह-तरह के बाजे बजाबजाकर गायेंगे—

"ठुमक ठुमक करके कान्हा प्यारे, मेरे घर आओ रे!

मेरी, करने पूरी चाह, मुझे हँसकर बुलाओ रे!"

"अरे मंजीरा लाव। काहे सब ही तब से बैठ हौ?" मोहन ने कहा। वीरा खड़ा हो गया। घेमर ने बीड़ी बुझा दी।

यहाँ भी गरबी प्रारम्भ हो गयी। बाहर रास चालू ही था। कृष्ण-जन्म में अभी समय था।

16

"गोकुलिया पगलाय गवा है का जौन गोकुलाष्टमी के दिन मठा खाय?" मेहसाना से आये हुए सहकारी विभाग अधिकारी के साथ मण्डली की व्यवस्थापक समिति के सभी सदस्यों ने आज स्वादिष्ट पकवान खाया था। घेमर उसी के बारे में अपना अभिप्राय दे रहा था।

लवजी दो दिन पूर्व ही अहमदाबाद गया था। दस नवम्बर को उसका कॉलेज खुलने वाला था, घेमर को मालूम नहीं था। खाना खाने के बाद उसने सोचा, चलो लवजीभाई से मिलें। बाहर से ही पूछा—भैया हैं कि गाँव मा गये हैं?" "कौन घेमरभाई? घेमर देवू के बारे में पूछ रहा है ऐसा सोचकर कंकू ने कहा—"ऊ तो खेत मां गये हैं। आऊ बैठवे होव तो।" कंकू ने दरवाजा खोल दिया। किन्तु वह तो आज सिर्फ लवजी से ही मिलना चाहता था। कंकू से बात करने से क्या लाभ? ये लोग सहकारी मण्डली का इतना खर्च करें, यह ठीक है? क्या इन्हें कोई टोकने वाला ही नहीं है? देवूभाई से कहो तो हँस देते हैं बस। और रणछोड़ उनसे डरता भी नहीं। लवजीभाई कुछ कहते हैं तो सिर नीचे करके सुन लेता है। साहेब आये थे तो भले न उन्हें सोलहो पकवान बनाकर खिलाओ। परन्तु समिति के सभी सदस्य क्यों खायें? कहूँगा लवजीभाई से। माँगूँ न ही स्पष्टीकरण। वे खेत में हैं तो खेत पर जाने से मैं थक जाऊँगा? आदमी अपनी इच्छा से तो पहाड़ पर चढ़ जाता है।

घेमर ने भगतबाड़े में जाकर देखा तो मशीन वाली कोठरी में एक खाट पर बैठे—लालटेन के उजाले में देवू अखबार पढ़ रहा था। नरसंग अलाव में खपची डालकर ताप रहे थे। घेमर को विश्वास हो गया कि लवजीभाई नहीं हैं। फिर भी पूछे बिना मन नहीं माना। कोई खास काम होगा नहीं तो घेमर इतने समय नहीं आता। भगत ने धीरे से पूछा। और कहा कि देवू के पास से पता लेकर सवेरे अहमदाबाद चला जा।

घेमर किसलिए लवजी से मिलना चाहता था, कारण जानकर भगत हँस पड़े। देवू भी बाहर आ गया। सबने खाया ? वह मानने को तैयार न था। घर का खाना छोड़कर कोई वहाँ क्यों खायेगा भला ? फिर क्या था ? घेमर को सारी कहानी विस्तार से बताने का मौका मिल गया। उसने नखशिख वर्णन किया। लड्डू, दाल, सब्जी, भात और पापड़। ऊपर से पान और चार-चार अंगुल की सिगरेट। बोलो देवू भाई, आप ही बताओ। "गोकुलिया पगलाय गवा है का, जौन गोकुलाष्ठमी के दिन मठा खाय ?"

फिर तो हलवाहा भी आकर बैठ गया और उसके बाद ही आसपास के खेतों से तीन रखवाले भी आ पहुँचे। हलवाहा खंचिया भरकर पूले की खाची ले आया और लाकर भगत के पीछे उडेल दिया।

"इहां हमरे पीछे डारे क रहा। का नाम तुहार ? शका कि मका ?" घेमर ने पूछा।

"शंका। तुहरे पीछे डार देई तो तुम तो सब खपची एक साथे अलाव मा डार दियौ।"

"देख लेव देवूभाई। तुहरे खेतौ मां हमार अब कौन इज्जत है ? अरे शंका, अब तो ठीक है नाहीं तो पहले हम नरसंग बाबा के पास बैठे होई तौ चाय पिये बिना नाहीं जात रहिन। भले न रात क आठ बजे होय। दूध तो रखा रहत रहा। और शनिवार क तो चाय तयार रहत रही। एक दिन भूल गये रहा तो ऊ गमवा क दौड़ाय दिहिन घरे। ऊ दूध ले आवा। गुड और चाय तो इहाँ कबौ नाही कम पड़ा। का समझिस ?"

"घेमरभाई कै इच्छा चाय पिये क है।" एक रखवाला किसान बोला।

"अब सोवे क समय है कि चाय पिये क !" दूसरे रखवाले ने कहा।

"जायेगा भैया अकेले दूध लेय घरे ? हाथ मां डण्डा और बत्ती लै के चला जा। घेमर बहुत दिन बाद आये हैं। कह दिहौ, घरे दूध न होय तो पड़ोस से लाय देय।"

शंका हवा की तरह उड़ चला।

घेमर बोलने लगा। कुछ भी कहो देवूभाई, मैं तो अभी भी नरसंग बाबा को उतना ही प्यारा हूँ। मैं कभी-कभी सोचने लगता हूँ कि मै इस दुनिया में सबसे प्यारा किसे हूँ तो मुझे फट से एक ही जवाब मिलता है नरसंग बाबा को। पिथूदादा का आशीर्वाद और नरसंगबाबा का सहारा। मेरा तो भाग्य ही खुल गया। नहीं तो क्या चकबन्दी होती ? और क्या नौ बीघा जमीन मेरे हाथ में आती ? बोलो ! मेरे पिताजी अपनी जवानी में तीन-तीन दिन की महेरी खाया करते थे। और आज मैं ? दूध और रोटी खाकर आ रहा हूँ। एक दिन मैंने अपनी माँ से कहा कि देवूभाई के घर पर रोज दोपहर में दाल के साथ साग भी बनती है। हम रोज साग ही खायें यह ठीक तो नहीं है परन्तु कभी-कभार दाल-साग दोनों बनाओ। कमाते हैं

तो खायें क्यों नहीं ? मैं गलत कहता हूँ नरसंगबाबा ? बोलो ? लेकिन मेरी माँ की आदत ! दो बैंगन डालकर कढ़ी बना देती हैं बस। रोटी बनाती हैं तवे के बराबर। वह तो ठीक है मेरे भाई कि थोड़ा-सा घी-गुड़ लगाकर खा लेते हैं। नहीं तो जब से डेरी में दूध देना शुरू किया है तबसे अच्छा मट्ठा खाने को मिला हो तो जिसकी कहो उसकी कसम खा लूँ नरसंगबाबा।"

- घेमर अपने सिर का साफा ठीक करने के लिए चुप हो गया।

भगत ने अलाव में खपची डालते हुए कहा – "हमरे ठीक है कि एक भैंस कै दूध डेरी मां जात है और एक कै घरे। जौने दिन माठा मथत हैं गाँवभर एकट्ठा होय जात है और बिना सबही लिहे हटत नाहीं।"

"एक दूसरी बात भी है पिताजी। पूरे गाँव में कोई भी एक दिन के काम के तीन रुपये नहीं देता था तब हमने देना शुरू कर दिया था। मेरी तो इच्छा है कि आठ आना और बढ़ाना चाहिए।" देवू ने कहा।

"तुम बढ़ाओगे तो देना पड़े पूरे गाँव क। इससे अच्छा है अलग इनाम दे दिहौ भाईसाहब। गाँव क कितना नुकसान होये ?"

'क्या ये हरिजन अपने गाँव में नहीं हैं ? अरे घी गिरा तो खिचड़ी में।"

"फिर तुम उनका हरिजन कहत हौ तो वे सिर पर चढ़िहैं न।" दो रखवालों ने भी घेमर की बात का समर्थन किया। शका दूध लेकर आ चुका था। देवू ने पतीली ढूँढ निकाली। उसे हौज के पानी से धोया। घेमर को लगा कि मेरा काम देवूभाई ने कर डाला। दो शब्द बोलकर मन मना लिया। नरसंग ने अलाव पर दो पत्थर और कुछ टूटी हुई ईंटें रखकर चूल्हा तैयार किया। घेमर ने हाथ बढ़ाया।

'तुम रहै देव, पतीली गिर जाये तो ......"

"कुंभार से कहौ कि एक अस चूल्हा बनावे जौने क जस चहै वस घुमाय सकै। उमा एक सलिया अस होय कि ऊपर पतीली रखौ तबो न गिरै।" ऐसे चूल्हे की कल्पना भी घेमर के लिए संभव न थी।

"ई से अच्छा प्रायमस का खराब ?" एक रखवाला बोला।

"खेते मां मट्टी क तेल रखब ठीक नाहीं होत। है न ?" भगत ने घेमर की हाँ में हाँ मिलाया और तैयार हो चुके चूल्हे के नीचे से राख निकालकर खपची लाने के लिए शंका से कहा।

स्टोव की बात चलते ही घेमर को पुनः सहकारी मंडली की याद आ गयी। जब भी जाओ वहाँ चाय तो तैयार होती ही है। किसके बाप की दिवाली ? खर्च में डाल देंगे। जब से रणछोड़ अध्यक्ष बना है तब से सबका स्वागत अच्छी तरह से होता है। बोल सकने में योग्य लोगों को रणछोड़ पहले से ही ढूँढ निकालता है। फिर क्या ? चला रखता है मनमानी। देखना दो ही साल में दिवाला न पिट जाये तो।

"टेंबा की सहकारी मंडली क का भवा पता है नरसंगबाबा ?" उत्तर की राह देखे बिना ही घेमर ने आगे कहना शुरू कर दिया। उसने हिसाब-किताब में किस प्रकार घोटाला होता है, इससे लेकर प्रमुख-मंत्री आदि के व्यसनों और विलासिता के कारण खड़े हुए तमाशे के बारे में बताना शुरू किया। घेमर का कहना था कि टींबा के प्रमुख-मंत्री और सोमपुरा के प्रमुख-मंत्री में कोई फर्क नहीं।

देवू घेमर से सहमत नहीं था। उसका कहना था कि मंत्री यदि माधव के बदले कोई और होता तो वह रणछोड़ से टक्कर नहीं ले सकता था। परिणामस्वरूप मंडली अब तक गर्त में चली गयी होती। यदि मंत्री सब कुछ व्यवस्थित चला रहा हो तो प्रमुख की जिम्मेदारी सिर्फ सही करने की रह जाती है।

माधव के बारे में घेमर की राय बदल चुकी थी। "ई तो देवूभाई, भरोसे की भैंस पड़वा पैदा करे वाली बात भई।"

"और माधव कतनौ अच्छा करे जाय पर रणछोड़िया क तो खुश करहिन क पड़े न।" एक रखवाले ने कहा। दूसरे ने समर्थन किया। उसे तो उस बात से भी आपत्ति थी कि रणछोड़ को प्रमुख के पद पर चालू रखा गया था। उसकी बात में सच्चाई का आभास मिलते ही भगत बोले, "जीकर अगुआ अंधा ऊकर कुटुंब कुवा मां।"

अब देवू को रणछोड़ का बचाव करना पड़ा। उसमें एक-दो कुलक्षण हैं इस बात से इन्कार नहीं है परन्तु वह लोभी नहीं है। मडली के पैसे से वह अपना घर नहीं भरता। कहीं बाहर जाता है तो साथ वालों को अपने पास से चाय पिलाता है। माधव तो वेतन वाला आदमी है फिर भी उसका खर्च रणछोड़ ही देता है। और इसीलिए वह टिका हुआ है। फिर उसने पिछली सामान्य सभा में कहा भी था कि उधार दिये गये माल के पैसे का भुगतान उसके सिर की जिम्मेदारी है। यदि कर्जदार पैसे नहीं देंगे तो वह अपनी जमीन बेचकर कर्ज चुकायेगा। फिर चिन्ता किस बात की है ?

"तो ऊ साहेब के साथे जौन दस-बारह जने पकवान खाईन है का वहू रणछोड़ के जेब के खर्चा से ?" घेमर अब सीधे-सीधे विवाद पर उतर आया था।

"मैं जहाँ तक सोचता हूँ, ऐसा ही होगा। वह खर्च जब हिसाब में लिखने की बात उठेगी तो माधव धीरे से पूछेगा, प्रमुखसाहब, बोलो इस खर्चे का क्या करें ? मंडली के खाते में लिखेंगे तो ओडीटर पूछेगा। इससे अच्छा है कि हम दोनों आधा-आधा इस बोझ को बाँटकर उठा लेते हैं। उसकी बात सुनते ही रणछोड़ बोलेगा : "तुम इस खर्च को अभी उबलक रखो, मैं तुम्हें दे दूँगा। और कोई पूछे तो कह देना कि यह पार्टी प्रमुख की ओर से थी।"

"तो साफ-साफ ई कहौन कि ई खर्च रणछोड़ का उठावे क चही। हम काल पचीस आदमी से कहे देइत है।"

"तुम्हें कहना हो तो कह देना पर यह बवाल करने की कोई जरूरत नहीं है।

मैं महीने दो महीने में एक बार माधव से पूछता हूँ । वह मुझसे सारी बात बता देता है । चिन्ता की कोई जरूरत नहीं है । ऐसी कोई बात होगी तो मैं ही पूरे गाँव को इकट्ठा करके कहूँगा ।" —देवू ने कहा और चाय डालना शुरू किया ।

घेमर ने चाय पीकर बात का विषय बदला । मुझे तो शर्म आती है । कोई पूछता है कि सोमपुरा में मुखिया कौन है तो कहना पड़ता है – छना, और कौन ? अब क्या करें ? जो मुखिया होगा उसीका नाम बताना पड़ेगा न ? एक जमाना था जब इस गाँव के मुखिया करसन बुढऊ थे । चलो कुछ दिन उनके लड़के भी थे तो कोई बात नहीं । मन मना लेते हैं कि चलो चिराग तले अँधेरा होता ही है । पर यह छना ? इससे और मुखियागीरी से क्या संबंध ? कहाँ करसन मुखिया और कहाँ यह छना मुखिया ?

"कहाँ राजा भोज और कहाँ मंगू तेली ?" एक रखवाला बोला ।

"अरे मंगू नहीं गंगू ।" घेमर को इसमें रुचि न थी । उसे तो उस रखवाले का बीच में बोलना ही बुरा लगा था । अब तो ऊ छनिया के भतीजवा जबरा कहत है कि अब हम मुखिया बनब । अडियोल मां लगन वापस कर आये हैं तब से ऊ नालायक कै धरती पर पावें नाहीं पड़त ।"

"इमा कौन बहादुरी है ?"

"अस देखो तो कायरपन और अस देखो तो बहादुरी ।" भगत बोले -- "अडियोल वालेन क थोड़ा पहले पता चल जात तो जे गवा रहा केहू साबित न लौटत । उनके जीप कै एक-एक पुर्जा अलग कर देते । ऊ गाँव वालेन क जबरा बेचारा कैसे चीन्हें ? और सब गये तो गये पर ऊ पढ़ा-लिखा मनई कांतिओ गवा ?"

"ऊ जीप मां से नीचे कहाँ उतर रहा ?"

"पर दुसरे के लड़का गेहूँ कै घुन बन गवा होत तो ?"

"नरसंगबाबा, अपने गाँव में ऐ एकौ आदमी अस बताऊ जे दुसरे लड़का कै चिन्ता करत होय ?" घेमर ने दोनों रखवालों और हलवाहे को भी बीड़ी दी । ऐसी उदारता अब उसके लिए स्वाभाविक हो गयी थी । देवू ने थोड़ी शांत आवाज में पूछा :

"क्यों, कोई तकलीफ में है क्या ?"

"तुहार बात नाहीं करित पर, नहीं नरसंग बाबा तुम ही कहौ हम झूठ कहित है ? सब बड़े बनेक तैयार बैठ हैं पर कूहू क काम पड़ा होय तो सात बार बुलावे जाव तबौ सामने न आव । अरे ई तो माना भी अब सीधा होय गवा है, जब से लड़के कै घर टूटे लाग तब से । एक दिन हमार बुढऊ कहत रहें – माना तो पीठ [illegible] है नरसंगबाबा ? ई तो मन रणछोड़ भीमा का

[illegible] साहस कहाँ से आ गया है ? देवू सोचने लगा । पहले [illegible] की सुधरी हुई आर्थिक स्थिति की वजह से है । फिर लगा,

नहीं, पीछे तो सब कह सकते हैं। निंदा करने का साहस तो सबमें होता है। किन्तु घेमर तो भरी सभा में उठकर सबकुछ कह सकता है। उसके इस साहस का परिचय तबसे ही मिलने लगा था जबसे समाजशिक्षक के वर्ग प्रारंभ हुए। घेमर यह सब देखादेखी या ईर्ष्यावश नहीं बल्कि अपने अन्दर की संवेदना से कहता है। उसे थोड़ा बहुत तो मालूम ही है कि सहकारी मंडली किस हेतु से प्रारंभ की गयी थी ? गाँव के मुखिया की प्रतिष्टा किसे कहते हैं ?"

घेमर उठ खड़ा हुआ।

कल मेरे बुढऊ कह रहे थे कि करसन बुढऊ मुखिया थे तब किसी से रिश्वत लेते थे तो दूसरी ओर किसी गरीब का घर भी बिखरने से रोकते थे। गोकुलिया के पभा मुखिया तो भगवान के आदमी थे। परंतु अपने करसनबाबा जैसे होशियार मुखिया इस चैहद्दी में कोई नहीं हुआ। पर देखो तो बेचारे की आज क्या दशा है ? रास्ते में चलते-चलते रक्तचाप बढ़ जाता है तो बैठ जाते हैं। यह तो ठीक है कि वे अभी जेठाकाका के साथ हैं। रणछोड़ के साथ होते तो अब तक कभी के ऊपर सिधार चुके होते। अब बेचारे को आँख से भी कम दिखाई देता है। दिन में तो पहचान लेते हैं पर रात में तो आवाज से किसी को पहचानें तो पहचानें। नरसंगबाबा, ऐसी बात हो सकती है कि पिछले जन्म में कोई पाप किया हो आज वे उसीका फल भोग रहे हों ?

नरसंगबाबा बोले - पिछले जन्म में तो भगवान जाने पर इस जन्म में भी उन्होंने कम पाप नहीं किया है। भला अभी कितने वर्ष हुए हैं ? हुए होंगे तीस साल। अरेरे। उस दिन तो करसन मुखिया के क्या वैभव थे। क्या वैभव थ ! ज्योतिषियों ने कह दिया कि फलाँ दिन, अमुक बजकर अमुक मिनट पर तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। पहले से ही जानते थे सब कुछ। इक्सठ वर्ष के होने के पहले ही सब कुछ भोग लेना चाहते थे। कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा। परन्तु मेरे बुढऊ ने शंभू नायक से एक दिन पहले ही कह दिया था। करसन नहीं मरेंगे। इतने सारे संबंधियों के बीच बाजे-गाजे के साथ हँसते-बोलते मरना भला किसके भाग्य में लिखा होता है ? वे नहीं मरे तो नहीं ही मरे। और तुमसे तो मैं सच बोलता हूँ। उन्हें मरना था भी नहीं। और राजीखुशी से मरना कोई खेल है क्या ? मरने जैसा दुख नहीं और सोने जैसा सुख नहीं।

"तब अस कहान कि वे जस बोये हैं, वस काटत हैं ?"

"हम तो भगवान से सदा कहित है कि बुढ़ापे मां केहूक दुःख न देय। जवानी मां दुःख सह के आदमी मजबूत बन जात है। परन्तु बुढ़ापे मां ? करसन बुढऊ जेठा के साथे हैं तो चाकरी तो होने करी पर हमार जिव जरत है। बेचारे बरस के बैठत दिन नालिये मां मिल गये तो कहत रहे – हमरे साथे क सब ही मर गया, अकेले हम हीं पीछे रह गइन। सबके पाप धोवे कि तई। ई सही है कि हम पाप कीन होये। पर सबसे जादा भोगा। तुहार कसम जो झूठ कहत होई तो।"

करसन बुढऊ के लिए थोड़ी-थोड़ी सहानुभूति दिखाकर सबने अपनी-अपनी राह पकड़ी ।

देवू ने सोचा कि यदि बुढऊ सचमुच रक्तचाप से परेशान हों तो उन्हें अहमदाबाद ले जाकर जाँच करवाये । खर्च अधिक लगेगा तो जेठाकाका को थोड़ी सी सहायता करेंगे । हालाँकि वे लें ऐसे तो नहीं हैं । परन्तु बुढऊ को दवा कराने के लिए अहमदाबाद ले जाने की बात उन्हें कभी नहीं सूझेगी ।

उसने खाट को छप्पर के नीचे खींच लिया । कुएँ की ओर से पानी में कुछ गिरने की आवाज आयी थी । पिताजी कुछ कहते थे कि अजगर जैसा एक साँप मेढ़क खाने के लिए रात में कभी कभी आता है ।

देवू ने उस ओर जाकर कुँडी में देखा । पानी में साँप के बदले तारे दिखाई दिये । पानी थोड़ा सा लहरा रहा था अतः ऐसे लग रहा था जैसे तारे शांति से नहा रहे हों ।

साँप या तो नहीं था अथवा तो साँप और पानी का रंग एक था । और तारे ही अकेले अलग रंग के थे ।

अंधकार का निवास पानी में है और प्रकाश का तारों में । पिताजी से बताऊ ? ये कब तक इस तरह खाट पर बैठे—बैठे माला जपेंगे ? इस समय ऐसे स्थिर जैसे जड़ ।

प्रत्येक मनके के साथ बोले जा रहे "राम" शब्द को सुनने के लिए देवू एकाग्रचित हो गया । उसे आश्चर्य हुआ पिताजी द्वारा बोला गया शब्द "राम" दो मनकों के बीच से प्रकट होकर हवा में मिल जाता है । हवा के अंधकार में जो प्रकाश है वह राम का है । खेतों के तथा दूर के वृक्ष ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे रात वापस घर को जा रही हो । यह आम्रावलि, वे नीम की पंक्तियाँ, मोहन काका के खेत पर खड़े अपराजित अडूसे, किन्हीं भी परिस्थितियों में सीना ताने खड़े बबूल वृक्ष, ये नीलगिरि के पौधे । मैं लवजी को लिखूँगा -- तुझे कविता लिखनी हो तो कभी खेतों में आकर रात को ठहर । कार्तिक महीने की ढलती रात में सीम का अंधकार सगी माँ के हाथ में झूलते पालने-सा लगता है ..

17

लवजी की भविष्यवाणी सच निकली थी । पशाभाई स्वतंत्र पार्टी में जुड़ गये थे । इसके भी दो कारण थे । जिले के पटेल नेताओं ने एक वर्ष पहले ही क्षत्रियों से अच्छे संबंध बना लिये थे । और उन नेताओं में पटेल जाति के नेता के रूप में उपस्थित थे पशाभाई । राजनीति के अध्येता लवजी के पास तो विस्तृत जानकारियाँ थीं । पशाभाई इन्हीं लोगों के साथ रहेंगे क्योंकि वे लोग स्वतंत्र पार्टी के ही नेतृत्व में गुजरात में बहुमत प्राप्त कर लेना चाहते हैं । दूसरा कारण उसे देख

की राजनीति में दिखाई दे रहा था। राजाओं और व्यापारियों ने स्वतंत्र पार्टी को ही अपनी पार्टी मान लिया था। समृद्ध किसान भी उन्हीं के साथ जुड़ जाने में अपना हित देख रहे थे। राजाजी का ही नहीं अन्य बहुत से राजनीतिज्ञों का भय था – संगठित हो जाओ नहीं तो साम्यवाद का भोग बन जाओगे। इस देश में साम्यवाद की आशा तो लवजी को नहीं थी। इस पार्टी का नाम सुनते ही लोगों की नाक चढ़ जाती है। जहाँ गरीब से गरीब लोग भी साम्यवाद से डरते हों वहाँ समानता का स्वप्न भी देखना मूर्खता है। उसने तो एक बार युनिवर्सिटी के राजनीति के प्राध्यापक से कहा भी था कि साम्यवाद का सबसे तीव्र विरोध मेरे गाँव के हरिजन करेंगे।

पशाभाई जानते थे कि कांग्रेस ने सत्तावन में बारह में से ग्यारह सीटें कैसे खोई थीं। और बासठ में ग्यारह सीटें कैसे पायी थीं। यदि उनकी गणना सही हो तो इस चतुर्थ चुनाव में मेहसाना जिले में कांग्रेस का स्थान स्वतंत्र पार्टी ले लेगी और तब तो वित्त विभाग वे स्वयं ले लेंगे। उनके सीधे प्रभाव वाली सारंग, कड़ी और विसनगर की बैठकें गत बार 1956, 822 और 164 जैसे हल्के बहुमत से जीती गयी थीं। और वह भी कोई कांग्रेस की शक्ति से नहीं मिली थीं। सब मालूम है। इस बार देखते हैं क्या होता है।

"पशाभाई अंतत: सुधरे तो।" देवू ने रमणलाल से कहा।

"स्पष्ट रूप से स्वतंत्र पार्टी में चले गये इसलिये?"; हाथ के कागज को समेटते हुए रमणलाल ने पूछा। "हाँ, पहले तो उनके खाने के और दिखाने के दाँत और थे न! इस बार उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि मैं जीवन भर ऐसा ही सोचता रहा हूँ। मेरे विचारों के लिए कांग्रेस अनुकूल न थी।"

"यह तो सब जानते हैं।"

"परंतु उन्होंने तो कितनी अदा और शहादत के जोश में कहा – मैं आजादी के आन्दोलन का एक पुराना सैनिक हूँ। स्वतंत्रता के लिए मैं लड़ा हूँ और स्वतंत्रता के लिए जिन्दा हूँ। अपनी मृत्यु के पश्चात् मैं अपने वारिसदारों को लोकशाही की स्वतंत्रता देकर जाना चाहता हूँ, साम्यवाद की गुलामी नहीं।"

"यह वाक्य यदि उनका हो तो अच्छी बात है।" रमणलाल ने दूसरा कागज निकाला।

"उनका हो भी सकता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से उन्हें ऐसा सूझ जाता है। अथवा कहना चाहिए कि उनकी जुबान से ऐसा निकल आता है। आप क्या सोचते हैं इस स्वतंत्र पार्टी के बारे में?"

"इसके पूर्व तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो। बासठ से सड़सठ के बीच लोगों में जागृति कितने प्रतिशत बढ़ी होगी?"

"जागृति के बारे में तो कहना मुश्किल है, हाँ असंतोष जरूर बढ़ा है।"

"असंतोष का लाभ विरोध पार्टी को मिलेगा। जागृति बढ़ी होती तो लोग समझते कि कौन-सी पार्टी उनकी है।"

"जागृति बढ़ने से लोग विरोधी पार्टी को गठित नहीं करेंगे ? लवजी तो इसी असंतोष को ही जागृति की पूर्वशर्त मानता है । वह एक पार्टीप्रथा का सिद्धान्त समझा रहा था । आपको कुछ मालूम है ?"

"यह तो रजनी कोठारी और मोरिस जोन्स की मान्यता है । इन लोगों का कहना है कि इस देश की लोकशाही ने 'एक पार्टी प्रभाव प्रथा' का विकास किया है । इस प्रथा के अनुसार जनतंत्रित राजनीति की (१) शासन, (२) विरोध और (३) सत्ता-परिवर्तन - तीनों प्रमुख प्रक्रियाएँ एक ही पार्टी में विद्यमान होती हैं । कांग्रेस के आंतरिक विरोधी ही विरोधियों की भूमिका निभाते हैं और एक ही पार्टी के नेतृत्व में सत्ता परिवर्तन करवाते हैं ।"

"किन्तु शासन का क्या होगा ? मजबूत विरोधी पार्टी हो तो संचालन को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी आयेगी । कांग्रेस ने सुधार तो किये हैं । इसके कुछ प्रभाव मेरे गाँव में भी दिखाई देते हैं । किन्तु संचालन यदि स्वच्छ और कार्यदक्ष होता तो शहरों में इतना असंतोष नहीं होता, जितना है ।"

"इस चुनाव में विपक्ष को यदि अच्छा समर्थन मिलता है तो मुझे अच्छा लगेगा । इससे कांग्रेस को भी लाभ होगा । शीर्ष पर पालथी मारकर बैठे नेताओं को भी समझ में बात आयेगी कि सत्ता में नये रक्त को भी शामिल किया जाना चाहिए ।"

"नया रक्त यानी आपकी उम्र के कांग्रेसी नहीं ?"

"मुझसे पहले दशक के भी लोग अभी पड़े हैं ।"

"विधान सभा में यदि आप जीतेंगे तो आपको अवसर हाथ लगेगा ।" देवू ने कहा ।

"क्यों, मैं जीतूँगा इस बारे में तुम्हें शक है ?" रमणलाल गंभीरतापूर्वक मुस्कराये ।

"पशाभाई स्वयं ही स्वतंत्र पार्टी के टिकट पर खड़े होंगे तो..."

"तो बहुत अच्छा । वे पार्टी में रहकर मेरा जितना नुकसान कर सकते हैं उतना सामने होकर नहीं ।"

"अच्छा यह बताइए कि यदि अगले चुनाव में आप जीत जायेंगे तो कौन-से मंत्री बनेंगे ? कृषिमंत्री या..."

"अरे पहले चुनाव में जीतने तो दो ।" रमणलाल ने चश्मा उतारकर अपने कुर्ते से पोंछा । आज वे खुश थे । बयालिस की उम्र में भी चश्मे का नंबर अभी बदला नहीं था । डाक्टर ने कहा था कि दो-तीन वर्षों में वह नंबर भी खत्म हो जायेगा । देवू कुर्ते के कपड़े की ओर आकर्षित हुआ ।

"क्या कहते हैं इसे ?"

"रॉ सिल्क ।"

[illegible] में प्रतिभाशाली लगते हैं ।"

"तुम्हें जब कुछ और नहीं सूझता तो मेरा मजाक उड़ाते हो।"

"आपको यदि ऐसा लगता है तो ऐसा ही समझिए परन्तु इतने महंगे कपड़े पहनने के लिए हीरूभाई आपको मना नहीं करते।"

"आग्रह तो खादी के वस्त्रों का ही है न? बहुत से कांग्रेसी तो घर में भी मलमल की धोती पहनते हैं। उनका वनयाइन लगभग "

"यह तो ठीक है कि लोग उनके कुर्ते नहीं उतार लेते। छप्पन-सत्तावन में लोगों ने टोपियाँ उतरवायीं। फिर उसके बाद यह प्रक्रिया अवरुद्ध हो गयी।"

"कांग्रेस के सदस्य होकर तुम यह शुभेच्छा कर रहे हो!"

"मैं तो एक किसान हूँ। जब तक कांग्रेस के कार्यक्रम में विश्वास है तब तक उसका सक्रिय सदस्य हूँ। कल उठकर..." देव रुक गया। उसे कांग्रेस का कोई विकल्प नहीं दिखाई दे रहा था। रमणलाल के विपक्ष में जाने की तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। हीरूभाई और रमणलाल की पार्टी के जो तीन-चार कार्यकर्ता जिले में उभरकर ऊपर आये हैं उनके हाथ में नेतृत्व सौंपकर इस इलाके के लोग निश्चिन्त हो सकते हैं। पशाभाई आदि स्वतन्त्र पार्टी में चले गये, अच्छा ही हुआ। यही मानो न कि बला टली। किन्तु पटेलों और क्षत्रियों के संगठित हो जाने वाली बात जम नहीं रही है। इस चतुर्थ सामान्य चुनाव में भी वही का वही समीकरण? राजाजी ने क्या इसीलिए स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की है कि सांप्रदायिकता के आधार पर जनतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की जा सकेगी? तो फिर भाईकाका और माहिडा के पास और कौनसी शक्तियाँ हैं?

देव देर तक स्वतन्त्र पार्टी के खिलाफ सोचता रहा। उसे यकायक याद आया—कांग्रेस की अपेक्षा स्वतन्त्र पार्टी गांधीजी के विचारों के अधिक करीब है। संभवतः प्रोफेसर रंगा ने भी यही दावा किया है। क्या इसमें कोई तथ्य है? या राजाजी गांधीजी के समकालीन थे मात्र यही एक आधार है? उसने रमणलाल से पूछा—

"ये लोग ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त और सत्ता के विकेन्द्रीकरण की बात करते हैं। किन्तु मुझे नहीं मालूम कि इस देश का कोई करोड़पति अपनी ही सम्पत्ति का ट्रस्टी बना हो। कांग्रेस ने भी तो जितना संभव हो सकता है विकेन्द्रीकरण की बात को स्वीकारा ही है। पंचायत राज्य इस बात का प्रथम प्रमाण है। किन्तु ये लोग तो पंचायत राज्य को भी बुरा ही कहेंगे। ऊपर से विकेन्द्रीकरण की भी बात करेंगे। इसे परमिट राज्य कहकर राज्य को गालियाँ देंगे! किन्तु परमिट निकलवाये बिना समाज को उन्नति-मार्ग पर ले जाने वाले उद्योग नहीं बनाये जा सकते। मुक्त व्यापार और मुक्त कृषि का अर्थ हमें जो लगाना हो वह लगायेंगे, उन्हें तो इसके द्वारा शोषण करने का अपना अधिकार सुरक्षित रखना है।"

"किन्तु लवजी तो कह रहा था कि विश्व के किसी भी देश में जनतन्त्र और

समाजवाद का सह-अस्तित्व नजर नहीं आया आज तक। इस देश को भी यदि प्रगति करना हो तो दो में से एक का चयन कर लेना चाहिए।"

"यह तो एक प्रयोग है।"

"तो फिर अमेरिका किसलिए अपने सामने ही पाकिस्तान को समर्थन देता रहता है? ऐसे पाकिस्तान को जहाँ लोकतन्त्र का हमेशा गर्भपात हुआ करता है..."

"उसे तो चीन का भी समर्थन कहाँ नहीं मिला हुआ है! यह तो सब अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का दाव-पेंच है। तुम्हें यह सब सोमपुरा में बैठे-बैठे नहीं समझ में आयेगा।"

"देहली में बैठे मंत्रियों को भी यदि यह सब समझ में आ रहा हो तो ठीक है। आप को तो यह सब समझने की अब जरूरत रही नहीं।" अपने स्वाभिमान की रक्षा करते-करते देवू आक्रमक बन गया था।

"चुनाव होने तक ऐसा कुछ मत बोलना।"

"हम नहीं बोलेंगे तो भाषण करने वालों को कहाँ से लाओगे?" देवू ने गंभीरता का त्याग किया।

"अहमदाबाद से।"

"बालूभाई आयेंगे? क्या यह बात सच है कि एक ही साल में बालूभाई ने खाद की एजेन्सी में तीन लाख रुपये कमाये हैं?"

"बालूभाई के लिए ऐसी कमाई करना कहाँ कोई नयी बात है। मात्र चुनाव में ही उनकी तकदीर साथ नहीं देती।"

"स्वयं को कांग्रेस से कुछ लेना-देना नहीं है कहीं ऐसा सोचकर वे स्वतन्त्र पार्टी में तो नहीं चले जायेंगे?"

"नहीं। हम अंतिम बार मिले थे तो वे साम्यवाद को मदद करने के लिए सोच रहे थे।"

"अरे! अचानक ऐसा क्यों?"

"तुम्हें मालूम नहीं है! वीणाबहन की मौसी पक्की मार्क्सवादी हैं। उनके साथ चर्चा भी हुई थी।"

"जैमिनी कलकत्ता गई है। लवजी कह रह था। शायद अपनी मौसी के घर ही गयी हो।"

"जैमिनी तो साम्यवादी नहीं बन सकती। हाँ, वीणाबहन शायद बन जायें। किन्तु जैमिनी! जिसने अहमदाबाद के महंगे होटलों में लवजी को वक्त नष्ट करने की आदत डाली। जो आदमी एक अच्छा कार्यकर्ता बन सकता था उसे तर्कों पर जीने वाला प्रोफेसर बना डाला इस लड़की ने।" रमणलाल ने चश्मा उतारा। उनकी आँखों में चिन्ता थी।

थोड़ी देर के बाद देवू ने गंभीरता से पूछा—

"वे दोनों शादी के लिए तैयार हो जाते तो?"

"तो कौन रोकने वाला था उन्हें ?"

"आपको याद होगा बासठ के चुनाव के समय लवजी और जैमिनी की बातें सुनकर मगनजी ने कैसा रुख अपनाया था ?"

"उन्होंने रुख न बदला होता तो जो परिणाम आया उस पर क्या कोई फर्क पड़ा होता ?"

"यह आप जानें। किन्तु मुझे बराबर याद है और जीवन भर याद रहेगा कि करसन बुढऊ जो भी समाधान कर देंगे मैंने उसके लिए पहले ही मूक संमति दिखा दी। शायद वह मेरा पहला पाप था। लवजी की व्यक्तिगत समस्या का सार्वजनिक उपयोग मैंने होने दिया।"

"मेरा जहाँ तक मानना है उन्होंने कोई सौदेबाजी नहीं की थी।"

"की भी होती तो ?"

"तो क्या ? लवजी को हमारे निर्णय से बंधकर रह जाना चाहिए ऐसा किसने कहा ?"

"मैं तो यही मानता हूं कि लवजी की शादी पर समाज की अपेक्षा हमारी राजनीति का असर अधिक ही पड़ा है।"

"संभव है। किन्तु सच पूछो तो मेरे और बालूभाई के संबंधों की वजह से ही लवजी और जैमिनी एकदूसरे के नजदीक आये। नजदीक आये किन्तु उनका मन नहीं मिला।"

"हम उनके मन की बात कैसे कर सकते हैं ?"

"तुम तो ऐसी बात करते हो जैसे उनके मन की सारी बातें जानते हो।" रमणलाल हँस पड़े। देव की गंभीरता में कमी न आयी।

"लवजी ने अधिक तो कुछ नहीं बताया है किन्तु मैं जानता हूँ कि उसने स्वयं को शांति के साथ स्थापित करने में बहुत संयम से काम लिया है। विवाह के पहले से ही उसकी चंचलता अलोप हो गयी थी।"

"तुम्हारी बहन ने मुझसे इस बारे में कुछ बातें की थीं। मैंने वीणाबहन से भी पूछा था। किन्तु तब तो जैमिनी आगे पढ़ने के लिए विदेश जाने की बात कर रही थी। और फिर तो दोनों के सम्बन्धों में दरार पैदा हो चुकी थी – सभी कहने लगे थे।"

"मेरा मानना है कि जैमिनी अब शादी नहीं करेगी।" देव् की आवाज में ग्लानि थी।

"लवजी का क्या मानना है ?"

"मैंने पूछा नहीं है। और मैं पूछ भी नहीं सकता।"

"तुम्हारे और उसके बीच तो महज तीन ही वर्ष का अन्तर है।"

"वय भेद इसके अधिक हो तो भी बात की जा सकती है। किन्तु यदि मैं जैमिनी के बारे में बात करूँगा तो लवजी सोचेगा कि मैं किसी शुबहा की वजह से

पूछ रहा हूँ। जब भी वह घर पर आता है उसका पूर्ण प्रयास होता है कि हमलोग उसके और शांति के विवाह को सफल मान लें।"

"लवजी ने अपनी योग्यता का प्रमाण नहीं दिया।"

"आपको ज्ञात है ? वह कविताएँ लिखता है।"

"कविता से क्या फर्क पड़ता है ?"

"माओ-त्से-तुंग से पूछो जाकर।"

"कहा जाता है कि माओ तो कब का मर चुका है।"

"अमेरिका का प्रचार होगा।"

"रूस का भी हो सकता है।"

"ठीक है, यह सब तो ऐसा ही चलता है। "देवू उठना चाहता ही था कि रणछोड़ और माधव आ पहुँचे। देवू ने सोचा कि इन लोगों ने मुझे देखकर कुछ उलझन महसूस की है। ऐसे कौन से काम से आये होंगे भला ये लोग कि मुझे छिपाना पड़े ?

"कल शाम को आप बड़ी जल्दी घर चले गये देवूभैया ?" माधव ने पूछा।

"नहीं तो, क्यों ?"

"हम मिलना चाहते थे।"

"मिलने का प्रयास नहीं किया होगा तुम लोगों ने। कहा होता तो मैं स्वयं आ जाता।"

"देखा माधव ! देवूभाई हमें कैसे बनाते हैं !" रणछोड़ ने चापलूसी से कहा।

"क्या आप लोग सहकारी मण्डली के किसी काम से आये हैं ?" रमणलाल ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा।

"काम तो था, किन्तु पहले हम इस बारे में देवूभाई से बात कर लेना चाहते थे।"

"अब बिना किसी तिकड़म के स्पष्ट बात करो न।" देवू को माधव के व्यवहार की कृत्रिमता अखरने लगी थी।

रणछोड़ ने, खंखारते हुए, सिर नीचे झुकाकर बोलना प्रारम्भ किया। "गरीब सदस्यों को जो रकम उधार देने की वजह से बैंक में बचत के आवश्यक रुपये हम नियमित नहीं जमा कर सके। खाद एवं दवाओं के लिए सारंग के सहकारी बैंक से कैश-क्रेडिट मिलती थी। वह बन्द हो गयी है। अब आप ही बताइए आदमी यदि तकलीफ में हो तो उसे उधार तो देना ही पड़ता है। यदि उधार दें तो कहाँ से बैंक में जमा करायें ? अब तो फसल कटेगी तभी किसानों के हाथ छूटेंगे। हम तब तक क्या करें ?"

रमणलाल ने बीच में ही पूछा -

"आपकी मण्डली का शेर-अमानत कितना है ?"

"पैंसठ हजार।"

'वह तो आपके पास है या नहीं ?"

"उसीसे तो मकान बनवाया और.. और..." रणछोड़ ने हीला-हवाला प्रारम्भ कर दिया था। रमणलाल भी समझ गये थे कि देवू की उपस्थिति खल रही है। अब माधव ने मदद करनी चाही –

"आप डेढ़-दो महिने के लिए केश-क्रेडिट चालू कर दीजिए फिर हम लोग सब ठीक कर लेंगे ?"

'ठीक कर लोगे, अर्थात् ?" "ठोक" शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए देवू बोला। माधव को अब आगे सुझाई दे रहा था। इस बीच रणछोड़ में नया साहस आ चुका था।

"आप तो जानते हैं साहब.."

"साहब नहीं।" रमणलाल ने प्रेम से कहा।

"साहब तो आप पूरे इलाके के हैं। जो बात सच है उसे झूठ कैसे बनाया जा सकता है ? बात यह है कि......आप तो जानते ही हैं कि यदि हम पशाभाई के पास जायें तो वे पलभर में यह काम करवा सकते हैं। यह चुनाव के दिन हैं। हमारे जैसे बकरे उन्हें जल्दी कहाँ से मिलेंगे ? किन्तु हम उनके पास क्यों जायें ? अपने ही आदमी के पास नहीं जायेंगे कि खुलकर बात भी कर सकते हो, काम भी हो जाये और दो बात सुननी भी पड़े तो भी मन को मलाल न हो। हमारी गलती हो तो कान पकड़ ले। आप ही पूछ लीजिए यह देवभाई बैठे हैं। लवजीभाई ने एक बार पूरे गाँव के बीच ही मुझे उठाकर पटक दिया था। किन्तु मजाल है कि मैंने बाद में चूँ भी किया हो ? जहाँ गलती हो वहाँ जरूरत से ज्यादा ऐंठना नहीं चाहिए। मेरी जगह कोई और हो तो जिन्दगीभर के लिए वैमनस्य कर ले। लेकिन यहाँ तो स्पष्ट बात। मण्डली का भी जो था, मैंने स्पष्ट बता दिया।"

रमणलाल ने बैंक में फोन मिलाया। मैनेजर उपस्थित न था। अतः फोन रख दिया।

"लेकिन काम तो सब सीनियर क्लर्क ही करता है। आप कह देंगे तो हो जायेगा। उसी साले ने तो बन्द करवाया है।"

"नहीं-नहीं, ऐसे निर्णय जिला सहकारी बैंक लिया करता है। वहाँ भी बात करनी पड़ेगी। मैंने नोट कर लिया है। दस-पन्द्रह दिन तकलीफ उठा लो।" रमण-लाल ने डायरी में लिख लिया। उनके व्यवहार से ऐसा लग रहा था जैसे कह रहे हों कि अब तुम लोग जा सकते हो।

"देवूजी, तुम बैठो, मैं छोड़ आऊँगा। ईश्वरभाई भी ग्यारह बजे आने वाले थे। साढ़े ग्यारह हो चुके हैं।"

"बारह तक तो आ ही जायेंगे। वे एक घण्टे से अधिक देर कभी नहीं करते।"

दोनों सहकारी कार्यकर्ता इस प्रकार वहाँ से उठे जैसे हँसते-हँसते अपना कर्तव्य निभा रहे हों। माधव के पीछे दरवाजे से बाहर निकलने के पूर्व रणछोड़ ने बीड़ी सुलगाई और पहली फूँक का सारा धुँआ अन्दर ही छोड़कर बाहर निकला।

18

देवू ने चुनाव के दिन ढेखाडिया का कार्यभार घमाकाका को सौंपा था। घमाकाका अपने साथ जबरा को भी ले गये थे। जबरा वहाँ के घर-घर का भेदी था। उसे तीन दिन पहले ही पता चल गया था ढेखाडियो का मुखिया दोनों ओर लुढ़क रहा है। ऊपर से पिछली रात को गाँव के दसेक अग्रगण्य लोगों को स्वतन्त्र पार्टी वाले कुछ पैसे भी बाँट कर गये थे। रात के तीन बजे जब कांग्रेस की जीप आयी थी तब किसी ने जुबान तक नहीं खोली, किन्तु अब सबेरे कह रहे हैं कि हम सबको एक-एक दिन की मजूरी के पैसे दो तो मतदान करने जायेंगे वरना काम पर जायें। भला वोट देने से हमें क्या मिलने वाला है?

घमाकाका ने तुरन्त जबरा को, सारंग के कांग्रेस ऑफिस में भेजा ताकि जो भी वहां जवाबदार आदमी हो उसे बुला लाये। अभी मतदान में देर थी।

जबरा थोड़ी देर तो जल्दी-जल्दी चलता रहा किन्तु गाँव के बाहर आते ही सरपट लगाया। राह में ही उसे देवू और घेमर मिल गये।

"जान परत है कि ढेखाडिया पूरा गाँव हाथ से चला गवा है।"

आगे कुछ भी पूछे बिना, चाय पी रहे ड्रायवर को बुलाकर देवू बैठ गया। "चलो घेमरभाई, जबरा तू आगे बैठ जा।"

इस बीच घमाकाका ने इतनी जानकारी हासिल कर ली थी: इन लोगों ने गत रात में पैसे तो लिए हैं किन्तु किसी किस्म की सौगन्ध नहीं खायी है। वे लोग जल्दबाजी में चाबी भूल गये हैं, भले ही ताला बन्द करके गये हों।

देवू ने देखते-देखते ही घेमर और जबरा की मदद से पुराने मुखिया के घर पचीस आदमियों को एकत्र किया और अपने पास बचे हुए हजार रुपयों को उनके सामने रखते हुए हाथ जोड़कर कहा – रमणजी ने अपना कुछ बिगाड़ा हो तो बताइए।

पैसे के प्रभाव तथा देवू की बात से लोग प्रसन्न हो गये।

"तौ खाय लेव माता कै कसम और खड़े होय जावं। दुपहर तक पेटी माँ कागज डाल कै सब अपने-अपने काम धंधा मां जाव। अपने क बैठे रहब अच्छा लागत है भला?"

"सोमपुरा और देखाडिया तौ भाई-भाई हैं। जाति अलग भये से का होत है?" घेमर ने कहा।

"तौ खाव माता कै कसम, मुखिया काहे चुप हो?"

"हम कांगरेस का वोट न देई तो माता हमका खाय।" मुखिया बोले, तो सब उनके साथ बोल पड़े।

देवू और घेमर को लेकर कार जैसे आयी थी, धूल उड़ाती हुई चली गयी। घमाकाका और जबरा ढेखाड़िया स्कूल की ओर चल पड़े, जहाँ मतदान केन्द्र बनाया गया था।

"पोलिंग-अफसर नाहीं आये अबहीं ?" धमाकाका ने पूछा ।

"आप किसके एजेन्ट हैं ?" शिक्षक जैसे दिख रहे एक आदमी ने प्रश्न से ही उत्तर दिया । वह यहाँ का प्रमुख आदमी है यह सूचित करने के लिए ही उसने ऐसा किया था ।

'अपनी बिरादरी के ।"

"बिरादरी के प्रतिनिधियों को अभी बाहर ही रहना है । थोड़ी देर है अभी ।"

धमा ने जेब से अपना परिचय-पत्र निकालकर दिया । उसे लेकर अपनी जेब में रख लिया । धमाकाका ने वापस मांगा –

"सँभाल के रखे क है ई तो, हमरी तईं इ मानपत्र अस है । ईया खुद रमणजी सही किहिन है ।"

परिचय-पत्र वापस देते समय अन्य कागज भी बाहर आ गया । अचानक याद आ गया । अरे, यह तो वही कागज है जिसे पूनमचन्दभाई ने दिया था । गाँव के मुखिया को पहुँचाना है ।

"एक काम करोगे काका ?"

"एक का हजार ."

"यह कागज जरा मुखिया को पहुँचा दोगे ? वैसे है यह उनका व्यक्तिगत ही ।"

"हमका फुरसत कहाँ है दूसरे क कागज पढ़े के ? जबरा, तू इहाँ बैठ, हम दे आयी । नाहीं तू भी चल । मुखिया ईधर हो तो हेरे क पड़े ।"

रास्ते में धमाकाका का संयम डगमगा गया ।

"अरे जबरा, कागज मां कुछ काम कै होये । तू कतना पढ़े हय ?"

"अच्छर साफ होये तो पढ़ लेब ।"

"बाकी हम पढ़ लेब । ले पढ़ ।" जबरा को कवर दे दिया । कवर फाड़ते समय पत्र का कोना भी फट गया । अंदर लिखा था – तुम्हारा हित पशाभाई में है । नीचे पूनमचन्द का दस्तखत था ।

"हित" का अर्थ दोनों समझते थे । यह पत्र इसके गन्तव्य तक पहुँचाना है या नहीं यह तय करने में उन्हें वक्त नहीं लगा ।

"फाड़ डारी धमाकाका ?"

"तुमका फाड़ब बहुत अच्छा लागत है, हम जानित हैं ।"

"तो फेंक देई ?"

'नाहीं, अब हम जेब मां रख लेइत हैं । सँभाल के रखा साँप भी काम मां आवत है ।"

प्रश्न था कि यदि वह साहब थोड़ी देर में मुखिया से पूछेगा कि पत्र मिला कि नहीं तो ?

तो क्या ? तू अभी जा और मुखिया से कह दे कि पूनमचन्द की चिट्ठी

धमाकाका के पास है। उसमें लिखा है कि तुम्हारा भला कौन कर सकता है यह सोचकर ही वोट देना। धर्मराज युधिष्ठर यदि युद्ध में ऐसा बोल सकते हैं तो..''

"फिर ई धमला माली काहे नाहीं ?" जबरा उम्मेद को भूलकर मजाक कर बैठा। धमाकाका ने हाथ उठाया। जबरा जानता था कि वे चाहे जितनी जोर से मारें, चोट नहीं लगेगी। वह आगे चला गया और धमाकाका वापस मुड़े।

जबरा बिना कुछ कहे हुए ही वापस गया था। कहने से मुखिया के मन में वहम पैदा हो जायेगा। उसका ऐसा मानना था कि पूनमचन्द भी पशाभाई की तरह इस बार स्वतंत्र पार्टी में चले गये होंगे। उसकी बात सुनकर धमाकाका उसके अज्ञान पर हँसते रहे। पूनमचन्द कांग्रेस में है, कांग्रेस में। अंदर रहकर ही वे उठा-पटक रहे हैं। देवूभाई कह रहे थे, रमणलाल हार जायें तो पूनमचन्द मंत्री बन जायेंगे समझे ?

सब ठीक ठीक पार हो गया। अन्य केन्द्रों पर मारपीट हुई, गाली-गलौज हुई, आमने-सामने जीपें टकरायी गयीं। सभाओं में उपद्रव हुए, अवैध खर्च के उलाहने दिए गये। भविष्य में देख लेने की प्रतिज्ञाएँ की गयीं, अगले चुनाव में जीतने के दावे किए गये। पशाभाई और रमणलाल दोनों मौन रहे। मतपेटियाँ जो बोलेंगी, वही सच होगा।

देर रात को, देवू को सांग में छोड़कर गाँव आने के बाद लवजी ने माता-पिता की उपस्थिति में ईजूभाभी से कहा : इस बार रमणलाल हार भी जायें तो आश्चर्य नहीं।

'पशाभाई बहुत खर्च किहिन है, नाहीं :'' नरसंग ने जैसे लवजी का समर्थन किया हो, इस स्वाभाविकता से पूछा।

"खर्च तो आपन कहाँ कम भवा है ?'' देवू ने कंकू से कह रखा था कि बैंक की सारी बचत यदि खर्च हो जायेगी तो थोड़ा बहुत तुमसे लेना पड़ेगा। नरसंग इस बारे में नहीं जानते थे। ईजू को थोड़ी बहुत जानकारी थी।

"आपन खर्च भला कौन ?" नरसंग के प्रश्न का जवाब ईजू ने दिया।

"हमार भैया तो सब वापस कर दे हैं।" ईजू ने शांति की ओर देखकर, दूसरे को उत्तर दिया।

यह सब क्या है ? खर्चा, उधार का -- क्यों, इन लोगों ने मुझसे कोई बात ही नहीं की ! देवू इतना समझदार होकर भी ऐसा कर सकता है ? उसने बताया होता तो क्या मैं मना कर देता ? या बस, अब हमारी कोई गिनती ही नहीं रही। नरसंग ने जूते पहने।

"कहाँ चलेव ?" कंकू ने पूछा।

[illegible] बैठे रहे, फिर काहे चल

नरसंग को अब याद आया कि ब्यालू करना तो बाकी है।

फिर तो देवू रणछोड़, घेमर, नारण, धमाकाका बहुत सारे लोग एकत्र हो गये। दो-दो बार चाय पी गयी। बीड़ी के टुकड़ों से दालान भर गया।

लवजी के सिवाय सबका यही मानना था कि रमणलाल जीतेंगे। सब वक्ता बन गये थे, श्रोता थे तो एक मात्र नरसंग भगत। दोनों मतों को वे सहजता से सुन रहे थे। साथ ही साथ माला भी फिराते जा रहे थे।

कोई उसकी बात मानने के लिए तैयार ही नहीं है यह देखकर लवजी ने पूछ-ताछ प्रारंभ कर दी। सारंग में तुम्हें कितने मत मिलेंगे?

"साठ प्रतिशत।" घेमर ने कहा।

"यह तो अधिक है, हाँ पचास-पचपन तो निश्चित ही।" देवू ने सुधार किया।

"तो लिखकर रख लो कि तुम लोगों को पचीश प्रतिशत से एक वोट अधिक नहीं मिलेगा।" लवजी ने दृढ़ता से कहा। उसकी बात की सच्चाई पर विश्वास हो रहा था। अब रणछोड़ कंधे हिलाते हुआ बोला—

"लवजीभाई को अहमदाबाद में बैठे-बैठे ही सब पता चल जाता है। कहना पड़े।"

"जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।" नारण ने उसे कवि कहा यह बात लवजी को इस वक्त अच्छी न लगी।

"मैं चाहता हूँ कि रमणलाल जीतें। वे हारेंगे तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा, आघात तो लगेगा ही। किन्तु मेरे पास सूचनाएँ भी हैं और गणना भी है। सारंग के प्रोफेसरों से बात होने के बाद मुझे यहाँ की स्थिति की स्पष्ट जानकारी मिल गयी थी।"

"उन प्रोफेसरों की तो बात ही मत करो।" रणछोड़ उत्तेजित हो गया था।

"क्यों उन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?" लवजी ने पूछा।

"उस दिन हमारी विशाल सभा थी तब वे सब एक ओर, दूर खड़े खड़े हँस रहे थे साले, कहते थे कि देखो यह सारंग की सभा है। सबके सब साफेवाले।"

"तो इसमें गलत क्या है?" देवू ने कहा—"तुम्हें तो मालूम है कि आस-पास के गाँवों से कितने ट्रक आये थे।"

"लेकिन जो होना था, हुआ।"

"तो क्या उसका प्रभाव अच्छा पड़ा?" लवजी ने पूछा।

"जो प्रभाव पड़ना होगा, पड़ेगा। परन्तु हम जीतेंगे यह बात तय है।"

खिचड़ी-दूध खाकर नरसंग खेत की ओर चल पड़े—"थक गयो है, घरे रहेव। खेत मां न आवो तो चले।"

"आऊँगा, आ सका तो।" देवू ने कहकर न आने की अनुमति ले ली।

धमाकाका ने ढेखाडिया की बात बतायी तो सब हँस पड़े। उन्होंने पूनमचन्द की चिट्ठी देवू के सुपुर्द कर दी। उठते-उठते बोले—

"गाँव-गाँव मां बिजली आयी पर तुम कुछ नाहीं किहेव ।"

"खंभे तो आ गये हैं ।"

"पड़ हैं चौराहा पर, हम का नाहीं देखा ? पर ऊ गाड़े जायें तब बिजली क तार बांधा जाये ? परसौं बेचारी जेणीबहू क ठोकर लाग और ऊ गुलाटी खा ग।"

"उसको खड़ी करने तो आप दौड़ गये होंगे ?"–रणछोड़ से बोले बिना नहीं रहा गया ।

"अरे भैया, तुम लोग पढ़े-लिखे आदमी होय के बुढ़े आदमी पर काहे हँसत हो । जेणीबहू बेचारी के तो दाँते गिर गये हैं ।" कंकू ने छींकनी की डिबिया बन्द करते हुए छत के ऊपर से कहा । शांति और हेतू भी ऊपर जाकर बातों में लग गयी थीं ।

"जो मिठाई ज्यादा खायेगा, उसके दांत तो गिर ही जायेंगे, है न धमाकाका ?"

"तू उसको मिठाई खिलाता है ?" नारण ने माधव को जवाब दिया ।

"तुम सब आपन–आपन देखो न भाई । अब तो ऊके बच्चे सब काम देखे लाग हैं। बड़ावाला थोड़ा शैतान है। फट से फूलजी क डंडा मार देत है । नाहीं तो हम तो जिन्दगी भर ऊ के खेत संभारे क तयार रहिन ।" धमाकाका की गंभीरता का किसी पर प्रभाव नहीं पड़ा इतने में जेणीबहू के पति की बात चल निकली । मिल की नौकरी ने उसके शरीर को सुखा डाला था । तबीयत के खराब होने के बाद भी यदि वह घर वापस आ गया होता तो यह दशा न होती ।

"पर उसे हुआ था क्या ?"

"टी बी. हो गयी थी ।" घेमर ने बताया-"फिर भी दिनभर में पचास बीड़ी फूंक डालता था ।"

'टी.बी. का इलाज तो अब हो जाता है ।" लवजी ने कहा ।

"उसने तो अपने अंतिम दिनों में दवा शुरू की थी ।"

"नहीं देवूभाई, दवाई तो वह पहले से ही खाता था। परन्तु उसे टी.बी. नहीं, कैंसर था ।" रणछोड़ ने कहा ।

"यह कैंसर भी नया निकला है ।" घेमर ने कैंसर पर अपना क्रोध व्यक्त किया ।

'रोग पुरान, नाम नवा ।" कंकू ने कहा ।

"नहीं–नहीं कंकू माँ, आप ही बताइए, आपने किसी को कैंसर से मरते सुना है ? और फिर किसानों को भी भला कोई रोग होता है ?" घेमर ने कहा ।

"यह मिलवाले रहते कहाँ है, मालूम है ? मैं तो, अहमदाबाद में रुकना होता है तो, किसी लोज में पैसे देकर रूक जाता हूँ किन्तु किसी मिलवाले की झोंपड़ी में नहीं । वहाँ से तो अच्छा है खुले में सो जाओ ।" रणछोड़ अभी आगे भी बोलता, यदि नारण ने रोक न दिया होता–

"कुछ नहीं, मिल में काम करने वाले भी सब भैंसे जैसे होते हैं । खाने-पीने

का कोई ठिकाना न हो और पैसा मिलते ही ठर्रा चढ़ाने लगो तो यही होगा न ?"

"अच्छी शराब नुकसान नहीं करती।" रणछोड़ बोल तो गया परन्तु कहकर पछताने लगा।

"वह तो बाद में पता चलेगा।" नारण ने कहा। रणछोड़ को मालूम था की उसकी आदत के बारे में सब जानते हैं फिर भी उसने अपना बचाव किया—

"अपने करसन बाबा की ही बात ले न। कितनी उम्र होगी उनकी ? जब तक रोज पीते रहे, हट्टे कट्टे रहे। जब से सुधरे हैं, खेत में दो कदम चलने से ही हाँफ जाते हैं।"

"तुम्हारी दलील और उनकी तबीयत में कोई संबंध नहीं है।" लवजी को इस चर्चा में कोई रुचि न थी। फिर भी बोला—

"आपको उनकी दवा करवानी चाहिए।"

"अब वे जीकर करेंगे भी क्या ?" रणछोड़ ने ठंडे कलेजे से कहा।

"यह तुम तय करोगे ?" देवू ने क्रोध से कहा।

"वे मेरे साथ होते तो मैं दवा करवाता।"

"तुम्हारे साथ न रहने से तुम्हारे संबंध खत्म हो गये ?" देवू ने उग्रता से कहा।

"लेकिन पिछले दिनों तो आप कह रहे थे कि कोई जाँच करवायी है। उन्हें कोई रोग नहीं है डाक्टर माने कह रहे थे।" लवजी ने कहा।

"करसन बाबा को डाक्टर माने पर कोई विश्वास ही नहीं है।"

"और पटेल या त्रिवेदी पर ?"

"वे सभी डाक्टर करसन बाबा को छोटे लगते हैं।"

"तो अहमदाबाद लाना चाहिए। रणछोड़, तुम ले आओ कभी।"

"जेठाकाका मना करते हैं। और उनकी बात भी सही है। सारंग का डाक्टर कहता हो कि मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा, तो हम अहमदाबाद ले जायें। खर्चे से कौन डरता है ? किन्तु मन में कोई वहम हो तो उसकी क्या दवा ?"

"कल मैं मिलूँगा।" लवजी जम्हाई लेता हुआ उठा।

रमणलाल तीन हजार वोटों से हार गये थे। देवू ने पूनमचन्द वाली चिट्ठी उस दिन उन्हें दी। रमणलाल हीरूभाई के साथ मोरारजीभाई तथा ठाकोरभाई से मिले। विशाल बहुमत से विजयी बने पूनमचन्द के समक्ष अनुशासन-भंग के कदम तो नहीं उठाये जा सके किन्तु...उन्हें मन्त्री बनने से रोक लिया गया।

लवजी और शांति आये थे। शांति की ही इच्छा हुई थी—मुझे सासजी की बहुत याद आती है। दो-तीन दिन तक सोमपुरा में रहेंगे। उनके हाथ का बना खाना खाने की इच्छा है। सच कहती हूँ—आपकी माँ के हाथ से बनी कढ़ी, बाजरे की गर्म-गर्म रोटियाँ और वह भी घी से चुपड़ी हुई, बस। वे घी चुपड़ना शुरू करती हैं और मेरे मुँह में पानी आने लगता है। आपको हँसी आती है,

पर मैं सच कहती हूँ कि इन महंगे महंगे होटलों की महंगी रसोई से मेरा मन कभी नहीं भरता।

शनि-रवि के साथ ही लवजी ने एक दिन की छुट्टी ली थी। कंकू माँ का आँगन गाँव के लिए गुरुत्वाकर्षण का बिन्दु बना गया था।

रमणलाल के हारने का दुःख सभी को था। किन्तु उन्हें धोखा देने वाला पूनमचन्द मंत्री नहीं बन सका, यह जानकर लोगों का गम कम हो जाता था। और इसमें भी लवजी और शांति ने आकर गाँव में जैसे किसी उत्सव के वातावरण का सृजन कर दिया था।

19

लवजी लगभग पाँच बजे खेत पर पहुँचा। दोपहर की असह्य गरमी से अकड़े हुए पेड़-पौधों का जैसे संयम टूट गया हो और पवन के फौवारे फूट पड़े हों। डेढ़-दो घण्टे पूर्व की गर्मी कहाँ गयी? खिरनी के वृक्ष के छाये में, खाट पर लेटने से लवजी को ऐसे लगा जैसे उसका बचपन वापस आ गया हो और वह पालने में झूल रहा हो। हाँ जैमिनी, यह सुख तुम्हारे शहरों में कहाँ है? वह चकरोट में फैले शून्य में देख रहा था।

माँ, ईजूभाभी, शांति, रूपा – सभी आ रहे थे। जो डलिया हमेशा ईजू के सिर पर होती थी, आज शांति के सिर पर थी। डलिया को उसने हाथ का सहारा नहीं दिया है। वह उसके प्रति सचेत भी नहीं है। बचपन की आदत धारण कर वह स्वयं अपने बचपन में पहुँच गयी है। बाड़ में घुसने के लिए बने संकरे रास्ते के पास रूपा उसकी गोद से उतर गयी, तब भी उसने डलिया को नहीं पकड़ा। रंगीन सूतों से गुँथी हुई बाँस की वह नयी डलिया मोर के पंख की तरह लग रही थी। लवजी ने महसूस किया – शांति की असल जगह तो यह है।

उसने स्वयं ने यदि देवू से दो कक्षा पहले ही अपनी पढ़ाई बन्द कर दी होती तो आज वह भी अपने जीवन के सभी सपनों को इन्हीं खेतों में देख रहा होता। ऐसी स्थिति में शांति के लिए दहशत और समानता से जीने की समस्या न होती। यद्यपि यह वहाँ भी हिल मिल गयी है। कई बार मैं अपने मोह को उस पर आरोपित कर देता हूँ। असंतोष उसे नहीं, मुझे है। कस्तूरीमृग तो मैं हूँ। जैमिनी के साथ 'नैकट्य' बढ़ा और इस अनसुलझे, स्थाई सोच में वाग्दत्ता के विश्राम को अपूर्ण मान बैठा।

शांति ने सहज संकोच किन्तु अथाह स्नेह से इस ओर देखा...

[illegible] की छाया दूर खिसक गयी थी। सूर्यकिरणें लगातार उसका पीछा कर [illegible] पेड़ पर खड़े आम्रवृक्ष पर बैठे मोर को भी [illegible] में गेहूँ के पौधे, हफ्तेभर पहले बोई

हुई किन्तु उग आये बाजरे को विभिन्न रंगों में रंगकर सुनहली बना देने में सूर्य किरणें सफल नहीं हुई थीं। लवजी देख रहा है प्रकृति में फैला सौंदर्य रुक-रुककर अपनी अमानत विकसित करने में लगा है। वह सफल भी हो रहा है। सुखी अंगों, सस्मित चेहरे और स्फूर्तिमय पैरों वाली शांति की उपस्थिति भी इस प्राकृतिक सौन्दर्य का ही एक हिस्सा है। लेकिन यहीं पर, सबसे पहली बार देखी हुई जैमिनी की याद आती है

हाँ, आज से बारह-तेरह वर्ष पूर्व वह बालूभाई के साथ कुछ पलों के लिए यहाँ आयी थी। तब कहाँ मालूम था कि वह दुबारा मिल सकेगी? तब कहाँ मालूम था कि "मिलने" का क्या अर्थ होता है? किन्तु वह मिली। कई बार मिली। लिंग-भेद भूलकर वह मित्रों की तरह मिलती रही। यदि वह स्वयं भी उसी की तरह साहित्य का विद्यार्थी होता तो? तो शायद तमाम तार्किक विचारधाराओं के नीरस बोझ को ढोने के बदले पितृदादा और पिताजी की परंपरा को सहजता से पचा सकता था। मुझमें तो इतनी योग्यता थी भी कि मैं बिनोबा का मनचाहा कार्यकर्ता बन सकूँ। साम्यहोगी अर्थात् अहिंसक साम्यवादी। जैसे जैमिनी ने मेरे इस कर्तव्य को भी कबूल कर लिया हो। विश्वसाहित्य का अध्ययन और कला को वैचारिक स्तर से जोड़ने का उसका प्रयत्न। कभी-कभी तो उसका यह प्रयास उसके व्यक्तित्व से भी अधिक प्रभावशाली लगता है। ऐसी स्त्री से मानसिक सम्बन्ध स्थापित हो जाने के पश्चात् किसी अन्य स्त्री के साथ स्थापित वैवाहिक जीवन क्या कभी सफल हो सकता है? किन्तु शांति तो सचमुच अद्भुत है। उससे दूर होने का उसने कोई कारण ही कब दिया? क्या उसके स्वभाव में स्त्रीगत ईर्ष्याभाव है ही नहीं? एक दिन वीणाबहन हम सबकी उपस्थिति में कह रही थीं — "शांति विलक्षण है।"

मुझे लगता है, शांति को खेती और पौधों के उदाहरण से ही समझा जा सकता है। सभी पौधे एकसमान ढंग से खिले हों, किन्तु एक पौधा एक बीता ऊँचा हो। अपने ऊपर किये गये उपकार के बदले में उपकार करने वाली आर्य सन्नारियों को बहुतों ने देखा होगा। शांति का अर्थ होता है — भारत की गोप संस्कृति का बचा हुआ सत्व। मुझसे सम्बन्धित अफवाहें बढ़-चढ़कर टींबा में उसके घर तक पहुँचती थीं। इतने में उसकी माँ की मृत्यु हो गयी। सगाई टूटने की दहशत भरी मानसिकता में ही वह अनाथ हो गयी। उसके वर्तन में, उसके मन में कैसी असहायता जागृत हुई होगी? ठीक ऐसे ही समय जैमिनी ने उसे पत्र लिखा। अपना हिस्सा माँगते हुए भी उसने शांति के हक को स्वीकार किया। और तीसरे ही पत्र में तो जैमिनी ने, जो अभिनन्दन मुझे देना चाहिए था, शांति को भेज दिया। इसका अर्थ तो यह हुआ कि जैमिनी में भी स्त्री-सहज ईर्ष्या नहीं है। मुझे कभी वीणाबहन से पूछना है। या तो आपकी बहन विलक्षण है या तो आपका मनोविश्लेषण गलत है। मुझे स्पष्टीकरण चाहिए। दो स्त्रियाँ, एक पुरुष को एकसाथ, उत्कृष्टता से चाहती हैं। ऐसे अमुक उदाहरण देखने को मिलते हैं। इसका क्या? दो पुरुष

एक स्त्री को भले एक ही साथ न चाह सके हों, एकसाथ जीने के प्रयोग में असफल हुए हों, स्त्रियाँ असफल नहीं होतीं। अतः यह प्रश्न पुरुष की योग्यता की अपेक्षा स्त्री की प्रकृति का अधिक होना चाहिए। आप जानती हों तो बताएँ— संवेदनाओं के आदान-प्रदान में स्त्री और पुरुष में आधारभूत अन्तर नहीं है?

लवजी के मन में एक अन्य प्रश्न उठा—शांति और जैमिनी के मध्य ईर्ष्या या शंकापूर्ण सम्बन्ध न होने के बावजूद मैं क्यों दोनों की तुलना करता रहता हूँ? शांति में जो तत्व संवेदनाओं के स्वरूप में विद्यमान हैं, उन्हीं तत्वों को जैमिनी बौद्धिक स्तर पर अनुभव करती है। उसकी उपस्थिति में एक बौद्धिक संतोष जागृत होता है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि उसकी उपस्थिति में कुछ चीजों को भाषा मिल जाती है। शांति कभी अभिव्यक्ति की अपेक्षा नहीं खड़ी करती।

जैमिनी जब से कलकत्ता गयी है और वहाँ सक्रियता के लिए संघषरत है तब से उसका अभाव अधिक से अधिक खल रहा है। शांति में एक भी अवगुण होता तो मैं कोई बहाना निकालकर कलकत्ता चला जाता, और वहाँ जैमिनी से मिलता। किन्तु यहाँ बछड़े को पानी पिला रही, अस्त हो रहे सूर्य को समान आदर से देख रही, शांति मेरे प्रति भी उतनी ही भली है। उसके विरुद्ध निर्णय लेने के लिए भी उसी से पूछने की इच्छा होती है। इस जीवन में अब उसकी आकांक्षा को दण्ड में नहीं बदला जा सकता। और फिर आलतू-फालतू को निबाहने की बात होती तो बात और थी। यह तो विरल है—विलक्षण है। जिस नदी को गतिमय तीव्र प्रवाह प्राप्त हो चुका हो उसे पहाड़ी झरनों के छन्दों की अवगणना नहीं कर देनी चाहिए।

रमणलाल उस दिन कह रहे थे—जैमिनी के साथ उसके प्रणयसम्बन्ध ने लवजी को जीवन की गति में पीछे छोड़ दिया है। उसने अपनी प्रतिभा का कोई प्रमाण नहीं दिया। रमणलाल को तुरन्त परिणाम चाहिए। मेरे लेखन-अध्ययन के बारे में, मेरे वैचारिक मनोमंथन के बारे में जानने में उन्हे रुचि नहीं है? सच है, मात्र मेरे बारे में जानने में किसे रुचि हो सकती है?

देवूभाई के साथ जीवन और जगत के बारे में बात होती है। बात की भूमिका में ही उनके चिन्तन का अन्त सा आ जाता है। क्यों हुआ ऐसा? पहले तो वे मुझसे आगे थे। क्या जो कर्ममार्गी होता है उसे ज्ञान का साथ त्याग देना पड़ता है? शायद यह मेरा भ्रम है। सारे दिन के परिश्रम के पश्चात् देवूभाई इतने थक जाते होंगे कि उन्हें बौद्धिक चर्चा में कोई रुचि नहीं रह जाती होगी। कुछ बातें तो वे बिना चर्चा के भी समझ जाते होंगे...तो फिर ये लोग मुझे सम्मान क्यों देते हैं?

ये सब मेरी भूमिका से जीवन को समझ सकते हैं। उस दिन मैंने हीरुभाई से कहा था—"आपका क्षितिज दूरवर्ती है, फिर भी आप उसे खींचकर नजदीक रखते हैं।" हीरुभाई ने पहली बार शब्दों से खिलवाड़ करते हुए कहा था:

"मैं तो पास या दूर के क्षितिज की ओर देखता ही नहीं, मात्र क्षितिज को ओर देखता हूँ। उसमें थोड़ा-सा कम हो और उसके नीचे थोड़ा सा रस हो बस, मेरा काम चल जाता है। मेरा तो परलोक भी इसी लोक में आ जाता है लवजी, समझे!"

हीरूभाई को असंतोष नहीं है, असंतोष के लिए उनके पास समय भी नहीं है। रमणलाल के पास आकांक्षाएँ हैं, किन्तु जिन्दगी से उन्हें भी कोई शिकायत नहीं है। पिताजी को अपने राम का पता मिल गया। देवूभाई कभी महसूस भी नहीं करने देते कि उन्होंने मेरे लिए कोई त्याग किया है। इन सबकी तुलना में तो मैंने मात्र सुख का भोग किया है। फिर अक्सर मन अशान्त क्यों हो जाता है? ऐसा क्यों लगता रहता है कि संवाद गलनबिन्दु तक नहीं पहुँच पाता और ऐक्य की पिपासा के पश्चात् भी द्वैत का अनुभव होता रहता है? शांति के साने पर सर रखकर सब कुछ भूल जाने का जब भी प्रयास किया है, उसके रोम रोम ने साथ दिया है। जैसे उसके हृदय की धड़कनें मेरे अस्तित्व के लिए ही प्राणवायु का संचय करती हों। ऐसे ही कुछ पलों में सम्पूर्ण जीवन सिमटकर समा सकता तो कितना अच्छा होता। किन्तु पुनः समय बनकर रह जाता है। जैसे कि अपने पास कोई समस्या ही न हो, मात्र समय के तानो-बानों को देखते रहने के सिवा। क्या यह मनःस्थिति जैमिनी से वियोग के कारण है? या जिन्होंने प्रेम का अनुभव ही न किया हो वे सब अकेलेपन की शिकायत करते होंगे? मैं भी कितना विचित्र हूँ। सबकुछ पा लेने के बाद, प्राप्ति पूर्व की स्थिति के लिए तरस रहा हूँ।

बहुत फर्क नहीं पड़ा होता शायद। यदि जैमिनी के साथ विवाह हुआ होता तो जो आज मन ही मन घुमड़ रहा है, उसमें कहा जा सकता था। गूढ़ता में भी उसे रहस्यदार बनाया जा सकता था। सपाटी पर अकेले तैरते रहने से अच्छा रहस्य में एक साथ डूब जाना होता है।

जैमिनी! तुम कितनी दूर हो! एकदम कामरूप देश के किनारे जा बैठी। क्या इसलिए कि जितनी सुन्दर तुम हो, उससे भी अधिक की मैं कल्पना कर सकूँ? नहीं, अब मुझे तुमसे कल्पना में ही मिलना है। अपने इस गोपित और दुर्निवार एकांत का तुम्हें मैं संकेत भी नहीं मिलने दूंगा।

लवजी उठ खड़ा हुआ। फिर वह बरहे के पास की गीली और दलदली जमीन पर चलने लगा – नग्न पाँव। कभी-कभी दूब की डठल एड़ियों में चुभकर अपनी उपस्थिति का संकेत कर रही थीं, कभी कोई कंकड़ अपने मीठेपन से चुभ रहे थे। थोड़ी दूर चलने के बाद अकेलेपन की रेखा अल्पतर होती हुई शून्य में खो गयी। लगा यह तरंगें थीं। पुनः उद्भवित होंगीं और ऐसे ही शांत हो जायेंगी। जैमिनी को लिखूँगा तो उसे मेरे बारे में चिन्ता होगी। वह सोच लेगी कि मैं और शांति एकसाथ व्यवस्थित नहीं हो पाये हैं। चिन्ता से सहानुभूति जन्म लेगी। इसका अर्थ यह होगा कि मेरे लिए उसने और शांति ने मिलकर जो समझ विकसित की थी वह मेरे काम नहीं आयी। पानी की लहरों की तरह घटता-बढ़ता मेरा यह

ऐकाकीपन यदि एक बार घोषित हो जायेगा तो जैमिनी और शांति दोनों के औदार्य और त्याग का अपमान होगा। मैं मौन रहूँगा। वे दोनों एकदूसरे को पत्र लिखती हैं, यह ठीक है।

सब लोगों ने रूपा के आग्रह पर गेहूँ के होले भूने थे। शांति ऐसे शरमाती हुई आयी जैसे अभी दूसरी ही बार ससुराल में आयी हो। लवजी ने अपनी अँजुरी फैला दी।

अस्त होते हुए सूर्य ने शांति के चेहरे पर फैली प्रसन्नता की लालिमा को देख लिया होगा तो कल सुबह जल्दी उगना नहीं भूलेगा। क्षणभर के लिए तो शांति सचमुच भूल गयी कि खेत में बुजुर्ग मौजूद हों तो पति के पास इस तरह नहीं खड़ा रहा जाता। होला तो उसने दे दिया था। फिर पैर क्यों नहीं उठते थे।

शांति एक कदम चलने के बाद वापस घूमकर देखती है। उसे जैमिनी के पत्र से कुछ वाक्य पढ़कर लवजी को सुनाना था।

जैमिनी की याद के दरम्यान यह बालूभाई कहाँ से टपक पड़े? वे दृढ़तापूर्वक मानते हैं कि जैमिनी हठीली है। मनचाहा नहीं हुआ है इसलिए अब वह स्वयं को दुःख देती रहेगी। उसे अन्तःकरण से विश्वास था कि लवजी समस्त बंधनों को तोड़कर उससे शादी करने आ जायेगा। जैमिनी बाहर से उदार अवश्य बन गयी किन्तु अपने भीतर से लवजी के प्यार को नहीं निकाल सकी थी। उसने कुछ लोगों की उपस्थिति में एक बार बालूभाई से कहा भी था – लवजी के बिना या तो मैं पागल हो जाऊँगी या खूनी। अन्ततः साम्यवादी बन गयी। कहते-कहते बालूभाई हँस पड़ते हैं। वीणाबहन नाराज हो जाती हैं – बोलते समय होश रहता है?

बालूभाई ने बात को दूसरा मोड़ दे दिया था – खूनी अर्थात् मूल्यों की हत्या करने वाली स्त्री। तुम ही बताओ जो साम्यवादी होता है क्या वह दया-धर्म में विश्वास करता है? वीणाबहन ने कहा – "मैं साम्यवादी हूँ। आपको मैंने कोई तकलीफ दी?" कल्पना आ पहुँची। वह अब बड़ी हो गयी है। उसकी उपस्थिति में माँ-बाप को झगड़ना नहीं चाहिए।

लवजी वहाँ से खड़ा हो गया और कल्पना अपने कमरे में चली गयी। बालूभाई ने तुरन्त जोर से पूछा – "अरे जैमिनी को भूल गया कि नहीं?"

"नहीं। क्यों भूलूँ?" उसे जो तुरंत सूझा, उसने कह दिया।

"कल मान लो जैमिनी शादी करे और उसका पति तुम लोगों के अतीत के बारे में जान जाये तो?"

जो सच्चाई है यदि वह वही जान जायेगा तो उसके मन में हमारे प्रति सम्मान जागृत हो जायेगा। और यदि वह झूठ जानता या मानता है तो, जैसा उसका भाग्य।"

"तुम्हारी पत्नी यह सब समझती है?"

"बाद में वीणाबहन से पूछ लेना।"

"अभी बता देती हूँ। शांति हममें से सबसे ज्यादा समझदार है। जैमिनी

तो क्या, संसार की सभी स्त्रियों को उसके समक्ष हार स्वीकार करनी पड़े इतनी तो वह स्थिर है, समझदार है। उसकी आँखों में तुम्हारे जैसी, कांकरिया तालाब की नहीं मानसरोवर की गहराई है। निर्मल गहराई। आप मेरी बात तो समझ रहे हैं न ?" वीणाबहन के इन शब्दों के साथ सभी को हँसी आ गयी।

वह वहाँ से चल पड़ा था - अहमदाबाद की सड़कों पर अकेला। पीछे से दौड़ते आ रहे और आगे भागते जा रहे वाहनों का शोर तथा सामने से आ रहे वाहनों की बत्तियाँ आँखों के प्रकाश को पलभर के लिए रूँधकर तथा उसके भीतर व्याप्त अकेलेपन को अभेद्य छोड़कर आगे के अंधकार में कदम बढ़ाते जाने के लिए लवजी को मजबूर कर रहे थे। यह भला कैसा प्रकाश है कि जिसके कारण कुछ दिखाई ही न दे! वे आवाजें, प्रकाश तथा अंधकार सब कुछ यहाँ अप्रस्तुत-से बनकर रह गये हैं।

सूर्यास्त हो गया। संध्या भी उसे विदाई देने चली गयी। लवजी ने पूर्व दिशा में मुड़कर देखा, जैमिनी के देश की ओर। कहीं वह कुंठित तो नहीं हो जायेगा? बालूभाई की इस दिन की बात यदि सच हुई तो जैमिनी का त्याग उसके आंतरिक लोभ का ही क्षणिक प्रत्याघात था।

नहीं, जैमिनी साधारण युवती नहीं है। बालूभाई क्या जाने प्रेम क्या होता है? जैसा बालूभाई का सोचना है, हमारे सम्बंधों में वैसे ज्वार-भाटे की गुंजाइश नहीं है। बिलकुल सहज है हमारा सम्बन्ध। यहीं, इन्हीं खेतों के मेड़ों तथा पेड़-पौधों, बेलों की गवाही में शुरू हुआ। नदी भले दूर हो, उसका प्रवाह भले क्षीण हो किन्तु सोमपुरा है एक छोटा-मोटा गोकुल ही। यहाँ जो लोग मिलते हैं उनके मन भटकते नहीं। जोड़-घटाव नहीं करते। शांति के हृदय ने भी ऐसा ही संतुलन बना रखा है। उसने मुझे और जैमिनी दोनों को अपना बना लिया है। उम्र में छोटी होने के बावजूद हम दोनों को अपने हृदय में आश्रय देकर शांति हम सबसे बड़ी बन गयी है।

जैमिनी ने अपने एक पत्र में लिखा था - प्रिय शांति, तुम दोनों को एकाध महीने में मेरे विवाह में आना पड़ता। एक विद्वान तथा हृष्टपुष्ट सज्जन मुझ पर खुश थे। परिचय बढ़ा तथा मैंने उन्हें अपने और लवजी के सम्बन्ध की बात बता दी। फिर मजाक में कह दिया कि यदि कभी मैं बेचैन होऊँ तो उससे मिलने के लिए भी दौड़ जाती हूँ, कभी वह लम्बी यात्रा में आये, थका मांदा दिखे तो मैं आपकी उपस्थिति में ही उससे लिपट जाऊँगी। आपको इससे कोई आपत्ति तो नहीं है? उस समय तो उन्होंने हँस दिया। किन्तु बाद में कामों में व्यस्त रहने लगे। कुछ दिनों बाद अखबार में दूसरा विज्ञापन दे दिया।

मुझे लगता है कि यदि मैं शादी करूँगी तो किसी अमेरिकन से ही करूँगी। हाँ, अमेरिकन समाज को मैं थोड़ा बहुत समझ गयी हूँ! रहन-सहन में वे लोग पति-पत्नी

को कुछ छूट भी देते हैं। यहाँ के लोग कहते हैं, जेमिनी, तुम्हारी विचारधारा भले ही मार्क्सवादी हो किन्तु तुम्हारी मानसिकता है पूँजीवादी ही। विदेश जाने का संयोग हो तो तुम अमेरिका ही जाना······

यहाँ साम्यवादी कार्यकर्ताओं में ऐक छोटा, सौम्य-सा भावुक युवक है। मुझसे तीन वर्ष छोटा होना चाहिए। वह कभी-कभी मेरी ओर दयनीय चेहरे से देखता रहता है। मौन से कुछ माँगता-सा लगता है। वह मेरे बारे में कविता नहीं लिखता हो तो आश्चर्य।

"तुम अब एक बच्चे को जन्म दो शांति, मुझे शांति प्राप्त हो ···।"

कैसा विचित्र लिख डालती है जेमिनी! शांति को कैसा लगता होगा? किन्तु न तो कोई आलोचना न कोई प्रतिवाद। क्या शांति इस बारे में कभी चिंतित ही नहीं होती? या फिर वह अपने साथ ही, अपने आस-पास की परिस्थिति को भी इसी प्रकार संभालकर रखती है? शांति ने एक बार बरगद और पीपल वाली बात बतायी थी। बरगद के चौक में उगकर बरगद के साथ ही जड फैलाकर, जमीन के रसकस चूसकर बड़ा हुआ पीपल-वृक्ष तूफान के वक्त भी नहीं गिरा। क्योंकि बरगद खड़ा रहा। यदि पीपल चाहे कि अकेले में ही खड़ा रहूँ, भले ही बरगद गिर जाये, तो क्या होगा मालूम है न?

जेमिनी ने एक बार ऐसा भी लिखा था शांति के लिए–"तुम कृषक कन्या अर्थात् ग्वालन न? कि और कुछ? बहुत अभिमान मत करना। रास-पंचाध्यायी पढ़ी है? गोपियों का अभिमान देखकर कृष्ण अदृश्य हो गये थे। कृष्ण का अर्थ होता है खींचने वाला। खींचने की शक्ति किसमें होती है? प्रेम में। तो समझ गयी न? कृष्ण सभी गोपियों को चाहते थे, किन्तु उन्हें चाहना सिखाया राधा ने ही था। लवजी भले कृष्ण न हो किन्तु मैं राधा हूं, यह निश्चित मानना। मैंने ही उसे चाहना सिखाया है। मैंने सिखाया है तभी तो वह तुम्हे चाहता है। समझ गयी?

देवूभाई अलाव के पास से पुकारते हैं–"चाय बन रही है, आओ।"

लवजी को अब ध्यान आता है कि आकाश से सभी रंग अपना-अपना घर खोजने के लिए संध्या के प्रकाश के पीछे-पीछे चले गये हैं। आकाश की विशालता का सम्मान करके पक्षी भी अपने-अपने घोंसलों में जा बैठे हैं। तारों का आगमन होने लगा है। थोड़ी ही देर में चन्द्रमा आ जायेगा। और धरती और नक्षत्रलोक के मध्य अपना स्थान ढूँढने लगेगा।

लवजी अलाव के पास जा पहुँचा।

"दुन्तीन बार बुलावा तब भैया सुनिन?" – कंकू माँ ने कप में चाय ढालते हुए कहा।

'कबौ-कबौ अस होत है। मन इधर-उधर घूमे निकल जात है। तीन तो का पांच आवाज नाहीं सुनाय देत।" नरसंग ने कहा–"भैया क तो खबरे न

होये कि तुम सब अबहीं खेत से घरे नाहीं गयो। रोज देर करे की आदत है। चलो अब उठो। केहू मेहमान आवा होय तो ऊ वेचारा दूसरे के घरे बैठ होये।"

लवजी ने चाय का प्याला ले लिया और पिताजी की खाट पर बैठकर चाय पीने लगा। वह सोच रहा था – पिताजी यह सब कैसे जान जाते होंगे ? यहाँ खेतों में बैठे-बैठे यह सब संभव है !

घर वापस आते समय लवजी ने देवू से कहा –

"देखते ही देखते कितने वर्ष बीत गये भाई। लगता है अभी कल की ही तो बात है कि हम लोग यहाँ-वहाँ हर कहीं एक साथ खेलते थे, लड़ते थे और हँसते थे। फिर अचानक एक दिन आप काम में लग गये और मैं शरारत करते करते बड़ा हो गया। स्वप्न में भी नहीं सोचा कि अपनी राहें इस तरह अलग हो जायेंगी। कभी-कभी इच्छा होती है कि शहर छोड़कर घर वापस आ जाऊं। यहाँ आपके साथ काम करने लगूँ।

"हम सब तो तुम्हें सुखी मानते हैं।"

"यह आपकी शुभकामनाएँ हैं। किन्तु सोच-सोचकर थकने से अच्छा है परिश्रम करके थकूं। पहले मेरी ऐसी अभिलाषा थी कि एक बुद्धिजीवी की तरह समाज से सम्बन्धित रहूं। किन्तु आज ? बुद्धि के सहयोग से जीवन और संसार का कोई अंतिम अर्थ खोजा जा सकता है या नहीं इस बारे में मुझे शंका होने लगी है ; यदि इस शंका से मुक्ति ही न मिलने वाली हो तो स्वजनों से दूर रहने से लाभ क्या है ?"

"एक दिन पिताजी तुम्हारी प्रशंसा कर रहे थे। उनका कहना था कि रामजी तो आस-पास के रंगों से रंगे हैं और इस क्रिया में वे माया को ही आत्मा मान बैठे हैं। किन्तु लवजी की नजर प्रकाश की ओर है। वह अंदर से स्वस्थ है।"

"अब तक तो नहीं है ऐसा, हो जाये तो ठीक।"

देवू सोच में पड़ गया। वे थोड़ी दूर चुपचाप चलते रहे। अचानक देवू ने लवजी के कन्धे पर हाथ रखकर उसे चलने से रोक लिया। इसके पूर्व लवजी ने भी देख लिया था कि बाड़ में सर्प जा रहा है।

"रोकने की आवश्यकता नहीं थी भाई। प्रकृति की भी अपनी एक लय होती है। अपनी गति यदि नैसर्गिक हो तो उसमें व्यवधान नहीं पैदा होता। हम यदि अविश्वास या शंका से चौंक उठते हैं तभी अपना पाँव सर्प पर पड़ता है और प्रकृति की अपनी लयात्मकता भंग होती है। इसलिए रुको मत, चलते रहो। अंधकार अपने खिलाफ नहीं होता। शहर के वाहन आँखों को चौन्धिया देते हैं। यह अंधकार आँख की शक्ति विकसित करने में मदद करता है। मुझे यहाँ भय नहीं लगता।"

घर पहुँचते-पहुँचते वे विज्ञान की बातें करने लगे। सृष्टि के तमाम तत्त्वों में संतुलन बना रहना चाहिए। उसके भंग होने ही कैसा-कैसा खतरा खड़ा हो सकता

है, लवजी ने बताया । देव ने कहा कि ये तो ऐसी बातें हैं जिन्हें आज के कृषकों को भी जानना चाहिए । कहते रहना और पढ़ने योग्य भेजते रहना ।

20

करसनबाबा को वाडीलाल हॉस्पिटल में भर्ती करवा कर रणछोड़ लवजी को समाचार देने गया । लवजी अभी कॉलेज से वापस नहीं आया था । शांति ने चाय पिलायी । फिर कहा—"वे कॉलेज से आते ही वहाँ आ जायेंगे ।" "आप जाइए" ऐसा कहने की जरूरत नहीं पड़ी । रणछोड़ जल्दी उठा न होता तो शांति ऐसा भी कह देती । रणछोड़ ने एक बार उसके बारे में अनुचित बातें की थीं यह बात उसे पता चल गयी थी । इसके पहले वह उसे सम्मान से बुलाती थी । किन्तु अब दिन बदल गये थे । अब शांति किसी की ऋणी न थी ।

रणछोड़ ने सोचा था कि बैठूं । जैमिनी की बातें करूं । समय भी बीत जायेगा और मनोरंजन भी हो जायेगा । किन्तु इसने तो सीधा रास्ता बता दिया । होता है भाई । यहाँ अपनी दाल नहीं गलेगी ।

"तो साहब आयें तो . "

"खाना खाकर आ जायेंगे ।" शांति स्पष्ट गुजराती बोल रही थी । रणछोड़ को यह बड़ा ही अस्वाभाविक लगा ।

"वैसे तो उनका कोई खास काम नहीं था । किन्तु बुढऊ वाडीलाल में रहने के लिए ही मना करते हैं । मेरी तो इच्छा होती है कि दूधेश्वर में जीवित जलाकर चला जाऊँ । पर क्या करूँ ? जो भी हो आखिर बुढऊ कितना हैरान करेंगे ?"

"इसमें हैरान करने की क्या बात है । सेवा तो करनी ही पड़े ।"

"तो भेजना उन्हें । जल्दी । अभी तो जनरल वॉर्ड में शैया मिली है ।"

शांति ने कहा कि मैं भी उनके साथ आऊँगी । चार बजे साथ में ही हम आयेंगे । इसके पहले वे अपना लेख लिख लेंगे । मैं घर का सारा काम कर लूँगी । थोड़ा आराम करके, चाय पीकर निकलेंगे ।

यह सब रणछोड़ को इतना खला कि उसने तय किया कि इस घर में अब कभी नहीं आऊँगा ।

करसनबाबा जिन्दगी में पहली बार ही नीचे बिछाये हुए बिछौने पर सोये थे । इतने सारे ऐरे-गैरों के लिए पलंग और एक मेरे लिए ही नीचे ? वे गुजरात की सरकार पर क्रोध व्यक्त करने लगे । यह कोई रीति है ? आदमी देखकर सुविधा देनी चाहिए कि सभी को एक ही लाठी से हाँकना चाहिए ?

रणछोड़ जब वापस आया तो उन्होंने सरकार के खिलाफ कहना शुरू कर दिया । रणछोड़ ने उन्हें सरकार और म्युनिसिपल कार्पोरेशन का फर्क बताया । सब

एक ही है । उनकी शिकायत में कोई फर्क न पड़ा । उन्होंने लवजी के बारे में पूछा । तो रणछोड़ बोला-

"वे तो मिले नहीं । पर उनकी पत्नी ने कहा है कि चार बजे आयेंगे।"

"ठीक है, तो उनका आवे देव । और तो सब ठीक है, एक खटिया मिली होत तौ ठीक रहा ।"

"अब दो घड़ी ऐसे ही बैठ रहो । मैं आता हूँ ।"

"एकदम गायब न होय जाइस । सिनेमा देखे न चले जाइस ।"

आस-पास वाले हँस पड़े । इससे रणछोड़ के अभिमान को चोट पहुँची ।

"तुमको स्पेशल रूम में दाखिल होना है ? रोज का पचास रुपया खर्चा आयेगा ।"

"खरच तो ठीक है, पर लवजीभाई क आवे देव । जाव तुम घूमो ।"

रणछोड़ के जाने के बाद करसन बाबा ने पास पड़ोस के मरीजों को अपना परिचय देना शुरू किया। यह आदमी आलतू-फालतू नहीं है इसका विश्वास दिलाने के बाद वहाँ लेटे रहने में उन्हें हीनता नहीं महसूस हो रही थी । जब तक लवजी और शांति आये, होस्पिटल के प्रति उनकी अरुचि लगभग खत्म हो चुकी थी ।

लवजी डाक्टर से भी अच्छा लगा। शांति ने सिर तक ओढ़कर उन्हें सम्मान दिया । और बात करने का भी कितना सौम्य तरीका ! कहते ही नर्स भी केस लेकर आ पहुँची ।

"और कुछ नहीं, पेट में कुछ गड़बड़ है बस ।"

बुढऊ ने कमीज खिसकाकर पेट दिखाया। अफरा हुआ था। उन्होंने समझा था सूजन है ।

इतने में डाक्टर आ पहुँचे । लवजी ने अपना परिचय दिया -

"एल. एन. चौधरी, लेक्चरर इन पालीटिकल साइन्स ।"

परिचय निकल आया । डाक्टर भी मूल उत्तर गुजरात के ही थे ।

रणछोड़ आया । लवजी ने हाथ मिलाया ।

"बाहर राह देख रहे थे !"

"नहीं, बुढऊ ने कहा कि जा सिनेमा देखकर आ, तो देख आया। एक बजे पहुँचा था। समाचार की रील खत्म हुई होगी जब मैंने टिकट लिया था।"

लवजी ने यह नहीं पूछा कि कौन सी फिल्म देखी। इस आदमी के शौक पर उसे हँसी आ रही थी। बुढऊ को यहाँ अकेला छोड़कर पौत्र सिनेमा देखने गया था।

"यहाँ जितनी बार आये, फिल्म देखने का नियम है ।"

"इस बार अधिक देख सकोगे ।" शांति ने कहा ।

"देर से देर मुझे कल सुबह तौ चला ही जाना है ।"

"रात मां बस मिलत होय तो आज ही चला जा । लवजीभाई दिन मां एक बार अइहैं तो बहुत है ।" बुढऊ ने कहा ।

"हम तो दो बार आ सकते हैं ।"

"आज जा सकूँ तो बहुत अच्छा । पर देर हो जायेगी । रात में सारंग से साथ न मिलने पर सोमपुरा अकेले जाने में डर लगेगा ।" रणछोड़ ने शीघ्रता से सोचा और तय किया कि कल सबेरे जायेंगे । उसने आसपास के लोगों पर स्पष्ट कर दिया था कि वह व्यापारी है । टोपी ठीक करके उसने शांति की ओर देखा । घर कुछ कहलवाना है ? पूछा । राजीखुशी का समाचार । शांति ने संक्षिप्त जवाब दिया । लवजी को अच्छा लगा ।

"कल जेठाकाका को भेजूं ?"

"नाहीं । आवे क होय तो डाह्या आय जाय ।"

–बुढऊ को जेठा का मझिला लड़का बहुत अच्छा लगता था । बात तो सब मानते थे किन्तु मझिला पढ़ने में भी अच्छा था । इस वर्ष मैट्रिक में था । उसे आगे पढ़ाने के लिए उन्होंने लवजी से सिफारिश की ।

डाक्टर राउण्ड पूरा करके वापस आया । एक मरीज को छुट्टी दी । करसन बाबा को पलंग मिल गया । उन्होंने समझा कि यह सब लवजी का प्रभाव है । बैठते समय उन्होंने पेट पर हाथ रखकर बताया – "ई इहाँ दुखत है, इहाँ ।"

"दुखता है या जलन होती है ?"

"जौन कहो तौन ।"

"एक ही जगह पर जलन है या सब कहीं ?"

"अस तो सब कहूँ पर इहाँ हमेशा । थोड़ा बहुत होत है भैया । पर नींद मा भी नाहीं भुलात । ई दुई दिन हम कस बितावा ई जीवे जानत है हमार । तुहार कसम भैया ।"

लवजी ने बिना कुछ बोले हाथ बढ़ाकर उन्हें उठकर बैठने में मदद की ।

"छोड़ देव भैया, अस तौ कहीं नाहीं चल पाइत ?"

"बुखार आता है ?"

"नाहीं, बुखार नाहीं आवत । मलेरिया तो हमें कबौ नाही भवा ।"

"मलेरिया के सारे मच्छर तुमको काटते ही खुद मर जाते हैं । इसीलिए तो मेरा पूरा घर साफ रहता है ।" रणछोड़ ने इस बार शांति को भी हँसाया ।

"लवजीभाई, ईका कुछ कहत हौ ? कुछ बाकी रहा तो गाँव के मुखिया बन गवा है ।"

"सहकारी मंडली के प्रमुख तो थे ही । फिर..."

"सरकार ने नियुक्त किया तो कैसे मना करता ?"

'पाँच सौ रुपया रिश्वत दे आये हैं । हम नाहीं जानित ?"

"रिश्वत तो किसने नहीं दिया ?"

"तुम सबसे ज्यादा दिहौ ।" बुढऊ खाट पर लेटते हुए बोले । बुढऊ ने स्वस्थ आदमी की तरह करवट बदली । पेट पर हाथ फिरा ते हुए लवजी की ओर देखा–

सूजन उतर रहा है हाँ भाई । ठीक है तुम सब ही जाव । खाना बनाने मां देर होय जाये । जब भैया जाव । शांति बेटा जाव । सुखी रहो । दुई दिन रह ब इहाँ ।"

"छुट्टी मिलने पर दो दिन हमारे यहाँ रहना, फिर जाना बाबा ।" शांति ने चलने की तैयारी-सी की ।

'अरे बेटा, वैसे शहर मा जगह के तंगी, फिर हम तुहरे कोठरी आय के रही ?"

रणछोड़ ने कहा–

"कोठरी में नहीं ये तो बंगले में रहते हैं ।" लवजी की ओर देखकर उसने पुनः कहा–"इनको तो यही मालूम है कि मिल में नौकरी करने वाले झोपड़ी में रहते हैं वैसे ही .."

'हमका सब मालूम है । हम कोठरी कहा तो का ऊ झोपड़ी होय गयी ? कितना भाड़ा भरत हो भैया ?'

"दो सौ रुपये ।"

साल भर के ?"

"लो करो बात । फिर कहते हैं कि इन्हें सब मालूम है । महीने के दो सौ रुपये । बिजली का बिल अलग से ।" इस बार रणछोड़ ने बुढ़ऊ को हरा दिया था ।

"तब तो तनख्वाह बहुत होगी ?"

"ठीक है । काम चलत है ।"

"दुई सौ तो बंगला के भाड़ा मा जात है । ठीक है ।

"गौ रिक्शा के ।" शान्ति बोली ।

अन्य खर्च रणछोड़ ने गिना दिये । वह संख्या भी सौ से ऊपर पहुँच गयी।

"अस है तो । जाव बेटा जाव देर होये तुमका ।"

लवजी और शांति के चले जाने के बाद बुढ़ऊ जम्हाई लेने लगे । रणछोड़ टेबल पर बैठकर देखने लगा कि कौन-सा मरीज दवाखाने में ही मरेगा । करसनबाबा तो नहीं ही मरेंगे, इसका उसे विश्वास था । इसलिए जिस खाट पर उसे ध्यान देना था उधर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया । वह उठकर चला गया, किन्तु उन दोनों के बीच कोई वार्तालाप नहीं हुआ ।

तीसरे दिन छुट्टी मिल गयी । बुढ़ऊ खुश थे । डाक्टर ने पंद्रह दिन बाद एक्सरे के लिए बुलाया था । बुढ़ऊ सोच रहे थे अभी पेट ठीक हो गया है । बस अब सब ठीक हो जाये तो दुबारा आने की क्या जरूरत ।

तीन दिन तक रहने का खर्च नहींवत था । रणछोड़ ने बुढ़ऊ की कोई आय नहीं लिखायी थी । वैसे बात भी सही थी । करसन बुढ़ऊ की अपनी आय तो अब कुछ थी नहीं । लवजी को ग्रामजीवन के बारे में विचार आया । करसनबाबा के जाहोजलाली के दिन याद आये ।

"मैं यह बिल भर आऊं ।"

"लो ये बीस रुपये। कम पड़े तो भरेंव।"

बिल मात्र पौने छः रुपये का ही है यह जानकर और रणछोड़ ने उनकी आय ही कुछ नहीं लिखायी है यह देखते ही गालियाँ देने लगे। तीन-तीन लड़कों की आय उन्हीं की आय है न? वे खुद नहीं होते तो लड़के कहाँ से आते? "ई की महतारी का..."

लवजी के मनाने से वे मान गये। अंततः शान्त हो गये। बोले—ई तो दवा भी न करे और ईज्जातो न करे। ई से तो अच्छा है सत्यानाश रहे। करसन मुखिया के आवक नाहीं? जौने आदमी के नाम के डंका पूरे सत्ताइस गाँव मां बाजत होय उ आदमी का अस कुकुर अस रगड़ डारें? तीन भाई मिल के घर के बरतन बेंचे सिर्फ बरतन तबौ ई मँहगाई के जमाना मां..." लवजी ने हाथ के इशारे से चुप रहने के लिए कहा। वह बिल भरने के लिए गया तो, बाहर से गोलियाँ भी लेता आया। वहाँ से फोन करके एक प्राइवेट डाक्टर से समय ले लिया। वॉर्डबोय को बिना माँगे ही पैसा दिया।

खर्च कम हुआ यह बात बुढ़ऊ को पसंद आयी। प्रश्न तो मात्र सम्मान का था। रिक्शे में बैठने के बाद भी वे अपने पारिवारिक स्तर की बात करते रहे। किन्तु रिक्शे की आवाज में कोई उन्हें सुन नहीं रहा है, इसका ख्याल आते ही वे चुप हो गये।

शांति ने दो दिन तक उनकी खूब सेवा की। लवजी ने कहा था—सम्भवतः केन्सर है। तब से शांति के मन में बुढ़ऊ के प्रति अधिक सम्मान पैदा हो गया था। लवजी का पूरा एक दिन खराब हुआ था। किन्तु करसनबाबा के साथ कुछ पल यादगार बन गये थे।

डॉक्टर ने एक्स रे के लिए सुबह आठ बजे बुलाया था।

चाय भी पीनी नहीं थी। चाय सिर्फ आज के दिन नहीं पीनी थी या सदा के लिये? सिर्फ आज का दिन "ओहो, इसमें क्या? कभी-कभी तो सूरज सिर पर आ जाए तभी खेत में चाय आती है। करसनबाबा ने कहा कि आदमी भाव का भूखा है, खाने-पीने का नहीं।

आटोरिक्षा में बैठकर दोनों डॉक्टर के यहाँ पहुँचे कि तुरन्त करसनबाबा बोले-"लिख रखना भैया यह सारा खर्च, एक पैसा भी तुम क्यों दोगे? देंगे देनेवाले।" लवजी ने उन्हें सोफा पर बिठाया। इनकी पीठ के पीछे खिड़की थी। कुछ देर हुई कि वे छोटे बच्चे की तरह बोल पड़े—"हरी हरी घास। यहाँ शहर में!!"

लवजी अब समझा। एक इक्का हरी घास ढो रहा था। आगे-पीछे साइकिल, रिक्षा और कार का आना-जाना। बैल अपनी दिशा में निश्चित भाव से बढ़ रहा था। शहर का उसे तनिक भी डर न था। हरी घास लेकर जा रहा इक्का! वाह! धन्य है प्रभु की लीला!

करसनबाबा गरदन तक सिर बाहर निकालकर देख रहे थे: यह बैल तो अभी

बछड़ा ही है। ठीक से सधा है। भड़कता नहीं। अभी एक दिन जेठा बैलगाड़ी लेकर सारंग गया था। सामने से खटारा आया, बड़ा बैल भड़का और खींचकर ले गया। ऐसा है।

लवजी सोच में पड़ गया। शहर के मुख्य मार्ग पर इस तरह हरी घास लिये जाता इक्का देखकर मुझे क्यों कभी अचरज नहीं होता ? पित्तल के चमकते घड़े और हंडे में शहर की सीमा के पार से दूध ले आती ग्वालन को देख मैं विस्मित क्यों नहीं होता ?

कुछ देर बाद करसनबाबा ने पूछा : हमारा रिक्षा पुल के पास आया तब भेड़-बकरियाँ जैसा कुछ जा रहा था। वे सब कहा ?

"कत्लगाह।" अभी सुबह में ? धत् तेरे की। – करसनबाबा ने गाली के साथ कहा कि दुनिया में दयाधरम बचे ही नहीं ?

कुछ देर बाद उन्होंने लवजी से पूछा : डाक्टर तुम्हें जानते हैं ? लवजी ने कहा–नहीं, मैं डाक्टर को जानता हूँ। यह बुढऊ को रुचा नहीं। उनके मन लवजी बहुत बड़ा आदमी है। और इसीके माध्यम से अपनी बड़ाई की भी रक्षा होने वाली थी।

वे फिर से खिड़की के बाहर देखने लगे। बोले : "मानो न मानो पर कुछ ही बरसों में बहुत कुछ बदल गया।" लवजी इन्हें जवाब दे उससे पहले भीतर जाने की बारी आई। बुढऊ ने डॉक्टर की एक-एक सूचना बिना विरोध के मान ली। बिना यह पूछे कि यह क्या है ? डॉक्टर का दिया हुआ एक प्याला प्रवाही पी गये। जो भी हो, देखा जायेगा।

फिर तो खाना खाना था। रिक्शेवाले को पता समझाकर लवजी कॉलेज के पास, चार रास्ते पर उतर गया। करसनबाबा अकेले असहाय महसूस कर रहे थे।

शाम को जेठा और नरसंग आये थे। लवजी जब रिपोर्ट लेकर आया तो धुआँधार बातें चल रही थीं। जैसे तीनों हमउम्र हों। शांति ने बाहर आकर पूछा – कोई रोग तो नहीं है ? कोई नहीं। सबने चैन महसूस किया। करसनबाबा कुछ गंभीर हो गये। थोड़ी देर बाद बोले –

"पंदरह दिन के बाद वाडीलाल मां आयके फिर एक्स रे निकरावे क है।"

लवजी मुस्कराता हुआ अंदर गया। जेठा ने बुढऊ को हाथोहाथ ले लिया। पंद्रह दिन बाद फिर से एक्स रे के लिए बुलाया हो क्यों ? इतने बड़े डॉक्टर के पास जाँच करवा लिया यह क्या कम है !

पाँचों एक्स रे का कवर नरसंग के पास पड़ा था। वे उसे उठाकर देखने लगे।

"लाऊ देखी भगत।" करसन ने जैसे जेठा की कोई बात सुनी ही न हो। वे फोटो देखने लगे।

"हमका तो ईमां रोग ही रोग देखात है।"

लवजी ने सभी एक्स रे बराबर करके रख दिये। शांति भी आकर उसे देखने लगी।

'रख दो, इसमें तो सभी डाक्टरों की भी समझ में नहीं आता ।"

फिर दवाखाना, डाक्टर, खर्चे आदि की बात चल निकली । बुढऊ को कोई रोग नहीं है, इससे सब प्रसन्न थे । एक मात्र करसनबाबा के मन में ही उलझन थी । रोग नहीं है तो ऐसा होता ही क्यों है ? यह तो शर्म की बात है । उनका मन खुशी और अफसोस दोनों के तारों से उलझा हुआ था ।

दूसरे दिन करसनबाबा और जेठा चले गये । नरसंग दो दिनों के लिए रुक गये । गाँव भर की बातें होती रहीं । सभी कुओं का पानी नीचे उतर गया था । पाँच जनों को तो अपने कुओं में बोरिंग करवाना पड़ा था । यह बात लवजी बहुत दिनों तक नहीं भुला पाया था । नरसंग रोज सुबह स्नान के बाद कालूपुर मंदिर तक चलते जाते थे । इस मंदिर को सहजानंद स्वामी ने अपनी उपस्थिति में स्वयं बनवाया था । उसकी महिमा-गाथा शांति को सुनाकर उन्होंने श्रीजी महाराज के जीवनप्रसंगों का वर्णन किया ।

ससुरजी के जाने के बाद शांति ने लवजी से पूछा –

"आपके पिताजी अधिक पढ़े-लिखे तो नहीं हैं । यह सब जानते कैसे हैं ?"

"कथावार्ता सुनकर । पहले पांडुरंग शास्त्री प्रति वर्ष सारंग आते थे । पिताजी वहां अचूक जाते थे । डोंगरे महाराज की कथाओं को भी उन्होंने जगह-जगह जाकर सुना है । तुमने सोमपुरा का भजन-सप्ताह तो देखा है । रामायण, महाभारत, भागवत अनेकों पुराणों की धर्मकथाएँ उन्हें कंठस्थ हैं । जैसे मेरा विषय राजनीति है वैसे ही पिताजी का विषय धर्म है । मैं तो हजारों वस्तुओं में सिर खपाता रहता हूँ, पिताजी धर्म के रहस्य में एकाग्र हो गये हैं । पिताजी अतीत हैं, मैं वर्तमान । भविष्य तुम्हारे हाथ में है ।"

21

1967 के नवम्बर में एक अध्यापक मित्र के साथ लवजी सोमपुरा आकर दो दिन तक रुका था । रात में एक उत्सव रखा था । नरसंग उसके प्रमुख थे । तब जो भजनमंडली का ढाँचा था उसका अब अवशेष भी नहीं बचा था । नये लोगों को फिल्मी तर्ज पर गाये गये भजन क्यों पसन्द आते हैं, कोई नहीं जानता । किन्तु अब लवजी को इन पर क्रोध नहीं आता । बचपन में सुने हुए भजनों को याद करके उन्हें सुनने की इच्छा व्यक्त की । किन्तु किसी को याद हो तब न ? क्यों हो रहा है यह ? क्या यह सारंग के सिनेमाहॉल का असर है ? इतना बड़ा असर ? संभव तो नहीं है । तो फिर इस परिवर्तन का कारण क्या है ?

प्रोफेसर मित्र ने कहा – आपके पिथूबावा और पिता नरसंग में जो साम्य दिखाई देता है वह साम्य देवूभाई और आपके पिताजी में नहीं है । दरअसल अपनी ग्रामसंस्कृति नरसंग भगत की पीढ़ी से एक अपूर्व मोड़ लेती है । इतना ही नहीं,

अब वह दो धाराओं में विभाजित भी हो गयी है। एक के अग्रदूत हैं देवूभाई और दूसरे के आप। देवूभाई ग्रामीण लोकमानस के माध्यम से आज के भारत और विश्व का विश्लेषण करते हैं। हमारी ग्रामीण दृष्टि पहला बार इतनी दूर तक पहूँची है। दूसरी ओर आप हैं जो आधुनिक मनुष्य की दृष्टि से अपने ग्राम-जीवन की ओर देखते हैं। मेरी बात सच लगती है कि नहीं ?"

"अधिकांश सच है। यद्यपि मैंने स्वयं कभी इस दृष्टि से विभाजन करके विचार नहीं किया है। परन्तु संभव है, मैं यहाँ से निरन्तर दूर होता चला जाऊँ। मोड़ के बादवाली दो धाराओं की आपकी बात बहुत महत्त्वपूर्ण है। मैं इस बात पर ठीक से गौर करूंगा।"

बैलगाड़ी के बदले ट्रक चलने लगे, हलके बदले खेतों में ट्रेक्टर पहुँच गये। पुर का स्थान इन्जन तथा बिजली से चलनेवाली मोटरों ने लिया। धोती के स्थान पर पैन्ट और पाजामे पहने जाने लगे। पगड़ी-साफे का स्थान ले लिया टोपी और हैट ने। लवजी को यह सब तो समझ में आता है किन्तु प्राचीन लयछन्द ही भुला दिये जायें यह बात समझ में नहीं आयी।

नहीं सम्भवतः यह मेरी व्यक्तिगत ममता है। अपनी यादों के साथ जुड़े सोमपुरा को मैं ज्यों का त्यों बना रखना चाहता हूँ। यह मेरा मोह है। जिसे सुख मिलता हो, लेने दो। भले ही भजन फिल्मी तर्जों में गाये जायें। मंदिर में बैठकर लोग गजल भी गायें तो क्या फर्क पड़ जायेगा ? जिसको जो करना हो करे।

घेमरभाई अब जब भी मिलते हैं, राजनीति की बात अवश्य करते हैं। अब वे वक्तव्य देते हैं कि पश्चिम बंगाल में विरोधी पार्टी को सरकार बनाने की अनुमति देकर अतुल घोष ने भूल की है। दो प्राध्यापकों के बीच वे अब बहुत आत्मविश्वास के साथ कहते हैं कि बिहार, बंगाल, पंजाब, आदि सभी जगहों में इतर कांग्रेसी सरकारों का पतन हो जायेगा। किसने उन्हें राजनीति में इतना सराबोर कर दिया है ? देवूभाई की संगत ने ? जनतंत्र ने ? या उनकी सुधरी हुई आर्थिक स्थिति ने ? भजनमंडली में उन्हें अब पहले जैसी रुचि नहीं रही। उन्हें तो अब रुचि है—खेती में, नये-नये प्रयोग करने में, पाँच आदमियों बीच बैठकर राजनैतिक वार्तालाप करने में। उन्हें यह भी मालूम है कि इस वर्ष बिहार के एक तृतीयांश में अकाल पड़ा है। गाँव से सहयोग राशि एकत्र करने का उत्तरदायित्व उन्होंने अपने ऊपर लिया था। वे जानते हैं कि क्या सरकार के बस की बात नहीं है और क्या उनके लिए आसान है। वे अपनी पत्नी का उल्लेख "वाइफ" कहकर करते हे और मंत्री को "मिनिस्टर" कहते हैं। गाँव के कुओं पर लगे नलों को लोग "वॉटर वर्क्स" कहते हैं और वे "वारिगृह"। सेना को मिलटरी और बिजली को "इलेक्ट्रिक" कहते हैं। मनपसंद आदमी को वे "जेन्टलमैन" तथा गाड़ी को ट्रेन कहते हैं।

गत माह ट्रक-दुर्घटना में छना की मृत्यु हो गयी थी। पुलिसकेस हो जाने से लाश दो दिन तक नहीं मिलती। देवूभाई मेहसाना गये थे। रणछोड़ कुछ

करने के लिए तैयार न था। तब घेमरभाई ने ही आकर सारी समस्याएँ हल की थीं।

माँ कह रही थीं कि जिस दिन छना मरा, गाँव में हाहाकार फैल गया था। ऐसी असहज और भयानक मौत इस गाँव में किसी की नहीं हुई। छना समधी के घर से लौट रहा था। आतिथ्य कुछ ज्यादा ही भोगा था। इसलिए घर आने की जल्दी थी। दूर से आते ट्रक की आवाज सुनाई दी। जबरा को उम्मीद नहीं थी कि ट्रक उन्हें बिठाने रुकेगा। परन्तु छना हाथ उठाये लीक के पास खड़ा रहा। जबरा एक ओर खड़ा बीड़ी जलाने लगा।

ट्रक के नजदीक आते ही छना ने हाँक लगाई। जबरा समझा कि जोर से चिल्लाकर चाचा ने बाजी बिगाड़ दी। उसी क्षण उसकी आँखें धोखा दे गईं : ट्रक की गति कुछ मंद हुई और छना अपनी ओर वाला पहलू पकड़कर ट्रक पर चढ़ने गया? कब पटरी पकड़ी, कब छना की छाती उससे टकराई और कब उसकी चीख सुनाई दी – कुछ पता नहीं चला। ट्रक थोड़े ही जबरा की पुकार सुनकर खड़ी रहती? वह चाचा को लीक से उठाकर बिठाने का प्रयत्न करता है तो क्या देखता है? छाती और पेट के लोंदे निकल आये हैं। खुली आँखें और बाहर निकल आये दाँतों वाला मुँह देखकर जबरा जैसा जबरा भी डर गया था। मन मजबूत करके उसने अपना साफा उतारा, खोलकर मुर्दे को ढँक दिया। जबरा ने दौड़कर समधी के घर सूचना दी। इस बीच दो पुलिस स्वेच्छा से चले आये थे। वे मुर्दे के साथ गाड़ी में गाँव आये। पता चलते ही रणछोड़ खेत में चला गया था। थानेदार जीप में डालकर मुर्दा सारंग ले गया। देवू के पहुँचने से पहले ही घेमर ने हीरूभाई और रमणलाल के नाम अपने पक्ष में माहौल खड़ा कर लिया था। सारा का सारा मुर्दा वापस पा लिया था और उसी दिन शाम को अग्नि-संस्कार करवा दिया था।

लवजी छना, दुर्घटना और नियति को लेकर सोचता रहा। छना से भी बदतर लोग सुखचैन की जिन्दगी बसर करते हैं, उसका क्या? रमणलाल कार में बाइं ओर बैठते हैं ताकि दुर्घटना होने पर भी ज्यादा चोट न पहुँचे। मगर जो दाहिनी ओर बैठा हो उसका क्या?

अहमदाबाद आने के बाद लवजी की इच्छा हो रही थी कि प्रति दूसरे दिन सोमपुरा जाऊँ। सारंग से सीधे खेत पर पहुँच जाऊँ और सीड प्लांट में कार्यरत मजदूरों के साथ बातें करूँ। एक एकड़ जमीन में बीस आदमी ऐसे काम कर रहे हों जैसे प्रयोगशाला में... कितना अच्छा दृश्य होगा। शाम को नारीजाति के पौधे की अधखुली कली की पंखुड़ियों को तोड़कर उसका स्त्रीकेसर निकाल करके पतले कागज से लाल-लाल थैली बाँध देते हैं। दूसरे दिन सुबह अमेरिकन नर-कपास की अधखिली कलियों का पुंकेसर उन पुष्पों की डालियों पर लगा दिया जाता है। एक पुष्प फल की चार-पाँच कलियों के काम आता है... कलियाँ, पुष्प और फल सर्जन-प्रक्रिया का सर्वोत्तम उदाहरण। यहाँ कुछ भी गुप्त नहीं है। मनुष्य में जो गोपनीय

होकर सुन्दर दिखाई देता है वही यहाँ उखड़कर सुशोभित होता है। कितनी सावधानी से वे मजदूर काम कर रहे थे। स्त्रीकेसर के अंकुर पर नख भी न लग जाये कहीं।

अगले रविवार को पुनः गाँव जाना है। शांति को भी साथ ले जाऊँगा। उसके स्वभाव की यह विशेषता समझ में नहीं आती। अक्सर कहती रही है कि इस बार तो गाँव में जाकर रहना है, पंद्रह-बीस दिन तक। किन्तु सप्ताह बाद कहता हूँ कि चलना है कल अहमदाबाद? तो तुरन्त तैयार हो जाती है। कोई दलील भी नहीं करती। यह कोई एकाध बार का नहीं, हमेशा का अनुभव है। हर बार लगभग ऐसा ही होता है। यहाँ अधिक पसन्द नहीं यह बताया नहीं है और वहाँ जाने के बाद एकांत और शांति कम हो जाती है। मैं कहता हूँ कि तुम पढ़ने की आदत बनाओ। समय बीत जायेगा। परन्तु वह पढ़ती है मात्र अखबार। वह भी पाँचवा पृष्ठ जहाँ अहमदाबाद के अतिरिक्त समाचार होता है। कभी-कभी कहती भी है कि मारंग में यह हुआ, विजापुर में वह हुआ। मैंने तो विसनगर देखा भी नहीं है। आप यह समाचार क्यों नहीं पढ़ते? रोज क्यों मात्र कलकत्ते की ही बात करते रहते हैं? कोई आया नहीं कि बंगाल और कलकत्ते की बातें शुरू।

क्या इसके मन में जैमिनी है? उस दिन यह ऐसा क्यों कह रही थी कि जैमिनीबहन को पत्र लिखो – एक बार तो अहमदाबाद आ जायें।

जैमिनी कलकत्ता छोड़ देना चाहती थी। जैमिनी ने लिखा था – 23 नवम्बर को एक दुर्घटना घटी। उसमें वह बच गयी, उसका सौभाग्य था। उसने लिखा था कि विचारों की प्रेरणा से वह जिस राजनैतिक संगठन का समर्थन करने गयी थी उसकी सफलता का उत्तरदायित्व असामाजिक तत्वों ने ले रखा था। यद्यपि यह कोई नयी बात नहीं। कांग्रेस भी गुंडो का ही पोषण करती है। विरोधियों ने भी इसी हथियार को उपयुक्त मानकर अपनाया था। ये लोग कहीं भी, कैसा भी व्यवहार कर सकते हैं। न तो इनकी कोई जाति है और न ही कोई पार्टी।

अपने बादके पत्र में जैमिनी ने लिखा था कि अहमदाबाद के किसी कॉलेज में नौकरी मिले तो करनी है। गुजराती में तो कहां जगह होगी? लवजी ने बालू-भाई से कहा। वे एक कॉलेज में ट्रस्टी थे। जानते थे कि मैनेजिंग ट्रस्टी खूब घोटाला करता है। कहूँगा तो डरके मारे कर देगा काम।

पन्द्रह जून 1963 को जैमिनी गुजराती की व्याख्याता बनकर शाम को लवजी के यहाँ भोजन करने आयी। लवजी ने दोपहर में, आमंत्रित करते समय ही कह दिया था कि मैं अकेला हूँ, तुम्हें आकर भोजन बनाना है। थोड़ा जल्दी आ जाना। किन्तु जैमिनी बहुत देर से आयी। लवजी ऊबा हुआ था। होटल में चला जाऊँ और इतने में वह आ जाये तो? जायेंगे बाद में। होटल भी कहाँ जल्दी बन्द हो जाते हैं?

नव बजे के लगभग जैमिनी आयी। लवजी लाइट बन्द करके बरामदे में बैठा था।

"सोरी दोस्त, मैं तो भूल ही गयी थी।"

"झूठी कहीं की।" लवजी ने लाइट जलाकर उसकी पीठ पर हल्का-सा थप्पड़ मारते हुए कहा। जैसे वह बदला ले रही हो, उसने अपने दोनों हाथों से उसके गालों को खींचते हुए कहा–

"साला, तू अभी भी इतना सुन्दर क्यों दिखता है ?" जैमिनी ने लाइट बन्द कर दी।

"मैं तुझे पहले भी इतना सुन्दर लगता था ?"

"और नहीं तो ? लाइक ए ग्रीक सोल्जर।" उसके कान पकड़कर खींचा किन्तु लवजी का मुँह नीचे नहीं झुका होंठ जुटे नहीं। वह बोला–

"बैठ अब चुपचाप चापलूसी किये बिना।"

"दो पल तुझे प्यार तो करने दे।"

"ऐसे कान खींचकर प्यार करने की रीति क्या कलकत्ता से सीखकर आयी है ?"

"हाँ कलकत्ता में एक लड़के के साथ थोड़ा-सा प्यार किया था।"

"लड़का मतलब ?"

"थोड़ा छोटा था बेचारा।"

"तेरे सामने बेचारा कौन नहीं है ? अच्छा, अब बोल, क्या करना है ? तू खाकर आयी है कि होटल में चलना है ?"

"तेरे साथ जो भी संभव हो सब करना है।"

"तू कहना क्या चाहती है ?"

"जो तुझे समझ में आये वह।"

"मुझे तो यही समझ में आ रहा है कि हम इसी पल यहाँ से कहीं भाग चलें। कहीं खुले में चलकर बैठें।"

"मैं तो आज तुझे पेट भरकर प्रेम करने आयी थी।"

"एक गरीब आदमी का तू क्यों मजाक उड़ाती है जैमिनी ? मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है ?"

"पूरा जीवन।"

"किसी भी एक आदमी में इतनी शक्ति नहीं होती कि वह दूसरे का जीवन बिगाड़ सके। हमने पूरा पूरा सोचकर निर्णय लिया था।"

"तूने निर्णय लिया था। मैंने स्वीकार कर लिया था। क्योंकि उस समय मेरी सम्पूर्ण आवश्यकताएँ जागृत नहीं हुई थीं। प्रेम का किताबी ज्ञान ही मेरे पास था। और तेरे पास थी मौरसी मर्यादाएँ।"

"वे तो आज भी होंगी।"

"क्यों तू आज भी परिपक्व नहीं हुआ ?"

"परिपक्व होना यानी बिगड़ना ?"

"इसमें बिगड़ने वाली कौन-सी बात है ?" जैमिनी ने लवजी के कंधों का सहारा ले रखा था। लवजी का हाथ उसके गले को छूता हुआ कंधे पर स्थिर था। एक हल्का-सा चुम्बन लेकर वह खड़ा हो गया। जैमिनी भी उठ खड़ी हुई और लवजी के पहले ही बाहर निकल गयी।

दोनों चलने लगे।

"तू क्या मानती है कि क्या मैं तेरे लिए बेचैन नहीं रहता ? किन्तु तू ही बता इससे क्या होता है ? इसके बाद में क्या होगा ?"

"मै तुझे हैरान नहीं करूँगी। यह तो सोचा कि चल, तेरी भी नब्ज देखूं ! तू कितने पानी में है !"

"नब्ज देखना तू जान गयी है। है न ?"

"हाँ कहूंगी तो तू दुखी होगा।"

"दुख होना तो नहीं चाहिए, पर मेरे मन में अभी यह बात है कि शादी करके तू सुखी हो जाय।"

"तू हुआ ?"

"सुखी होने की बात तो मैं नहीं जानता। किन्तु आनंद के कुछ क्षणों को जरूर मैंने प्राप्त किया है और सामाजिक जीवन में कुछ स्थिर हुआ हूं।"

"स्थिर। हंह। तेरे जैसा आदमी कॉलेज में सिर्फ "पंडितजी" बनकर पड़ा रहे ?"

"ऐसी ही कामना मेरे मन तेरे प्रति भी थी। बोल तूने क्या किया ?"

"मूर्खता।"

"चलो, फिर हम दोनों एकदूसरे के आश्वासन के लिए उद्धरण बनकर रहेंगे।"

होटल जैमिनी के लिए परिचित था। किन्तु वह दरवाजे के पास थोड़ी देर खड़ी रही, देखती रही कि जो परिवर्तन हुआ है उससे होटल की जगह सकरी हुई है या चौड़ी ? अपनी धारणाओं से भिन्न परिवर्तन उसे पसन्द नहीं आते।

"क्यों आज यह खाली-खाली है ?"

"हम आने वाले थे, इसीलिए।" लवजी ने खुले में, कोने वाला टेबल पसंद किया, और आगे बढ़ा। जैमिनी ने उसका अनुसरण किया।

पानी के बाद मेनू आया। लवजी ने उसे खोलकर जैमिनी के आगे रख दिया।

"मैंने खाया तो नहीं है, मगर भूख भी नहीं है।"

"मेरा भी यही हाल है।"

"कसरत करते हो ?"

"हाँ, क्यों ?"

"तो तुझे खाना ही चाहिए।"

"मैं खाने के लिए करसत नहीं करता। जितनी कसरत देवूभाई काम करते-करते कर डालते हैं, उतनी तो मैं नहीं करता हूँ।"

"फरगेट इट ।"

"मतलब ।"

'मतलब कि गाँव, परिवार आदि···आदि ।"

"परिवार को भूल जाऊँ ?"

"हाँ । इसके बिना तू कुछ नहीं कर सकता । मैं तो कब की भूल गयी हूँ सब ।"

"सब भूल जाने से तूने क्या पाया ?"

"वह तू नहीं समझ सकता । पागलपन का आनंद पागल ही जान सकता है ।"

"तू जाने, मुझे इससे कोई ईर्ष्या नहीं है ।"

"तुझे जवाब देने के बजाय, समझने का प्रयास करना चाहिए ।"

"यह तो मैं भी तुझे कह सकता हूँ ।"

"तेरी यह आदत असह्य थी इसीलिए तो मैंने तुझे···"

"वाक्य पूर्ण कर दे । मुझे बिल्कुल अफसोस नहीं होगा ।"

"सच बताना, तुझे कभी भी अफसोस नहीं हुआ ?"

"सभी बातें चर्चा के लिए नहीं होतीं जैमिनी ।" कहकर लवजी मेनू पढ़ने के बहाने चुप हो गया । खाने-पीने की चीजों का नाम पढ़ने से इस समय उनके रूप, रंग या स्वाद की याद नहीं आ रही थी । भूख थी किन्तु कोई एक निश्चित वस्तु के लिए नहीं थी ।

जितना समय इस तरह बिताया जा सकता था, बिताकर, जैमिनी निरंतर देखती ही जा रही है, उसका अहसास होते ही उसने मेनू उसकी ओर बढ़ा दिया ।

"हम कब तक इसे ऐसे ही घुमाते रहेंगे ?"

वेइटर दुबारा आकर खड़ा हो गया था ।

"कुछ भी ले आओ । एनी थिंग ।"

जैमिनी को कुछ नया दिख गया था ।

"मैं कुल्फी लूँगी ।"

"मैं भी ।" लवजी ने पसंद करने के झंझटों से बचने के लिए जैमिनी का अनुसरण किया ।

वेइटर के जाने के बाद नजर मिलाते हुए, मुस्कराते हुए जैमिनी बोली—

"तुझे इस तरह अनुसरण करने के बजाय, नेतृत्व लेना चाहिए ।"

"सब एक ही है । यदि एक ही जगह पहुँचना हो तो कौन आगे और कौन पीछे ? और एक स्वार्थ की बात बताऊँ ? आगे बढ़कर अकेला पड़ जाने में आनन्द नहीं है । अंधानुकरण बहुत अच्छा होता है । प्राध्यापकों का एक वर्ग मेरे चारों ओर रहता है । शब्दों में साँस लेता हुआ एक और ठंडा वर्ग । जिसमें आज तू भी शामिल हो गयी है । तू जब तक कलकत्ता में थी और नैराश्य से पूर्ण पत्र नहीं लिखती थी तब मुझे ऐसा लगता था कि जैमिनी तो कुछ कर रही है ।

अच्छा-बुरा जो भी हो, कुछ तो कर ही रही है। मैंने मान लिया था कि व्यक्तिगत जीवन के प्रति असंतोष तुझे सृजक बना देगा, किन्तु तू तो आते ही ऐसे लिपट गई जैसे कोई दूसरी जैमिनी···"

"दूसरी यानी ? तू मुझे गाली दे रहा है ?"

"नहीं। ऐसा कहकर मैं स्वयं को तेरे समक्ष खोल देना चाहता हूँ। मैं अक्सर कल्पनाओं में खो जाता था कि जैमिनी उछलती-कूदती हुई आये और मुझ से लिपट जाये। मुझे उठा ले और···"

"तेरे जैसे हट्टे-कट्टे को···।"

"पूरी बात को भोंडा मत बना। ओखाहरण की नायिका की तरह···।"

"तब तो तुझे आज खुश होना चाहिए। पर तू तो मेरा स्वागत करने के बदले जबरदस्ती बाहर खींच लाया। मैं आयी ही न होती तो ?"

"तो अच्छा होता ? एक असंभावना असंभावना ही बनी रहती। मैंने जीने की जो आदत बना ली थी, उसी पर जीता चला जाता। परन्तु तूने तो संतोष और समाधान की सभी पर्तों को खींचकर आज मेरी समस्त वासनाओं में उथल-पुथल मचा दिया है...ऐसी उथल-पुथल कि कहीं मैं तेरी हत्या न कर दूँ।"

जैमिनी खड़खड़ाकर इतनी जोर से हँस पड़ी कि तीसरे-चौथे टेबल पर बैठे युगल खाना पीना बन्द करके जैमिनी और लवजी को देखने लगे। वे लोग थोड़ी देर तक उन्हें देखते रहे। जैमिनी फिर हँस पड़ी। और स्वयं भी उन्हें घूर-घूरकर देखने लगी।

"तू तो कमाल करती है। यह भी कोई तरीका है ?"

"क्यों मैंने क्या किया ? इन लोगों से हँसी भी बर्दाश्त नहीं होती ? लड़कियाँ होटलों में नंगी होकर नाचें तो इन्हें पसंद आता है और ..."

"यह तो इनकी इच्छा।"

"ऐसी इच्छा करने का इन्हें कोई हक नहीं।"

"इच्छाएँ मनोविज्ञान और अधिकार राजनीति के शब्द हैं।" लवजी ने कुल्फी की डिश को उंगली से गोल-गोल घुमाना प्रारम्भ किया था।

"ये, शुरू कर, नहीं तो अपनी कुल्फी खाकर तेरी डिश पर टूट पड़ूँगी।"

लवजी ने जैमिनी को किसी दूसरी ही दृष्टि से देखा। यह अभिनय कर रही है कि सचमुच यही करना चाह रही है ? उसकी प्रश्नात्मक दृष्टि क्रमशः दूसरी ही चीज पढ़ने लगी। आँखें, गाल, होंठ, गला, छाती ··हर कहीं चुनौती भरी उत्तेजना थी। उसके मन में थोड़ी देर पूर्व के भावुकतापूर्ण संबन्ध के स्थान पर स्पर्धा-भाव जागृत हुआ। ऐसा स्पर्धा-भाव तो सिर्फ स्पर्धी को कुचलकर ही खत्म हो सकता है। और यदि उस भाव का समाधान न ढूंढा जाय तो वह बेचैनी का हिस्सा बन जाता है।

मैं इसे यहाँ क्यों ले आया ?

उसने कल्पना में अंधकार देखा और अंधकार में स्वयं को बचाने के लिए तड़पती जैमिनी को भी। नहीं।

उसने पिघलती जा रही गुल्फी में चम्मच डाली।

जैमिनी ने साथ दिया।

"ले मैं तुझे खिलाती हूँ। खिलाऊँ ?"

"आभार।" उसने यंत्रवत्, धीमे-धीमे खाना प्रारम्भ किया। आँखों में शीतलता आयी।

"कहीं बहुत गहरे सोच में उतर गये थे ?"

"सोच में नहीं, तुझमें।"

"झूठा कहीं का। तूने इतने वर्षों तक मेरी परवाह ही कब की है ?"

"परवाह तो क्या करूं ? हां, प्रयत्न करके भी तुझे भुला नहीं सका हूँ।"

"तो फिर क्यों तूने एक भी पत्र नहीं लिखा ?"

"तू शांति को लिखती थी। वह तुझे लिखती थी। मुझे तेरा पत्र मिलने ही मैंने उत्तर नहीं दिया ?"

"तूने मात्र उत्तर ही दिया और कुछ नहीं !"

"और क्या लिखूँ ? पागलपन की बातें करने की उम्र बीत गयी है।"

"कितनी उम्र हुई तेरी ? अठाइस तो पूरी नहीं हुई होगी। जो लोग पचास की उम्र में प्रेम करते हैं उन्हें शर्म आती है ?"

"जिसने एक बार प्रेम किया हो वह दुबारा तो मात्र प्रवंचना ही कर सकता है।"

"तू ज्यों का त्यों सनातनी ही रह गया।"

"कोशिश भी यही करूंगा।"

जैमिनी को घर छोड़कर वह चलते हुए घर गया। अधिक थक जाने से नींद जल्दी आ जायेगी। किन्तु आज यह सत्य भी असत्य बन गया था......।

शांति प्रसूति के लिए गाँव गयी थी।

जैमिनी सूखे किनारों को एक बार छलककर भिगो देने आयी थी किन्तु स्पर्श के मध्य उसने संकल्प को प्रस्थापित कर दिया था। एकान्त में और दमघोटूँ होने से क्या संभव है, उसका अनुमान उसने लगा लिया था। और उसने उससे मुक्त होने का मार्ग ढूँढ निकाला।

इसमें अब लेश मात्र संदेह नहीं कि जैमिनी मिलने के लिए उत्सुक है। वह अब मन और तन का भेद नहीं रखेगी। बातों से ही तन तृप्त हो जायेगा ऐसा नहीं मानेगी।

वह स्वयं मानता है ?

जैमिनी राग के लिए आवेग जागृत करती है। किन्तु शांति की अप्रत्यक्ष उपस्थिति का अहसास क्यों होता रहता है ? क्यों ?

क्या शांति के साथ उसका संबन्ध बेहतर है ?

हाँ, उसने हमेशा समर्पित साथ दिया है। जैमिनी का पत्र पाकर शांति खुश होती है। ईर्ष्या के बदले आनंद मिलता है उसे। जैसे उसे कुछ खो जाने का भय ही न हो।

बहुत कम लोगों को ऐसी पत्नी मिलती है। आपके कार्यों में विघ्न न डाले, घर सँभाले, आपको सँभाले और आपके एकान्त का कवच बन कर जीए।

जैमिनी उस कवच को भेद डाले यह उचित नहीं है। यदि वह शांति का विकल्प बनना चाहती हो तो, उसे मुझको खोना पड़ेगा, ऐसे "मुझको" खोना पड़ेगा जिसे वह चाहती है...

22

मृतक शिशु को जन्म देने के बाद शांति की तबीयत खराब हो गयी थी। अहमदाबाद आने के दो महीने बाद तक दवा चालू रही। कोई रोग न था, मात्र उदासी के सिवा। लवजी को भय था, कहीं यह चिड़चिड़ी न हो जाय। किन्तु वह तो जैसे मौन के सिवा कुछ जानती ही न थी। हो सकता है, कभी उसने रोया भी हो किन्तु कभी पता नहीं चलने दिया। जैमिनी के आने पर वह तुरन्त बदल सी जाती। प्रसन्न दिखने का प्रयत्न करती। साथ में बाहर जाने के लिए कहा जाता तो टाल जाने का प्रयास करती, यद्यपि जड़तापूर्वक नहीं। जैमिनी और लवजी के कुछ पूछने पर हमेशा हकारात्मक जवाब देती जिससे अधिक प्रश्नों से बच जाये।

एक दिन हीरूभाई आये। सारंग के कॉलेज की बात चल निकली। मात्र संख्या ही बढ़ती जा रही है बस.. लवजी ने एक ही वाक्य में अपना मंतव्य बता दिया। हीरूभाई ने बताया कि वहाँ के कॉलेज वाले चाहते हैं कि लवजी वहाँ चला जाये, प्रिंसिपल के स्थान पर। वर्तमान प्रिंसिपल को वहाँ ट्रस्टी-मंडल निकाल देना चाहता था। सारंग के कॉलेज में काम करना लवजी को, शांति को भी, अच्छा तो लगता, किन्तु एक आदमी को निकलवाकर वह नौकरी प्राप्त करे, उसे पसंद न था। हाँ, यदि राजनीतिशास्त्र विभाग वहाँ शुरू हो जाये तो वह प्राध्यापक की हैसियत से अवश्य जा सकता है।

भोजन के बाद लवजी और हीरूभाई के बीच बड़ी देर तक राजनीति पर, प्रजाभारती पर बातें होती रहीं। हीरूभाई उठ खड़े हुए, कॉंग्रेस-हाउस जाना था।

"बस में जायेंगे या रिक्शे में ?"

"बस का समय नहीं हुआ होगा तो पैदल।"

"कॉंग्रेस-हाउस तक ?"

"क्यों ? ज्यादा देर लगेगी ?"

"मुझ जैसों को आधा घंटा लगे।"

"तो मुझे पाँच मिनट कम लगेंगे।" कहकर वे चल पड़े।

लवजी सोचने लगा, हीरूभाई रमणलाल से भी बड़े हैं। शरीर में अधिक शक्तिशाली भी नहीं दिखाई देते। किन्तु यह चलते कैसे हैं? जैसे हवा में उड़ न रहे हों!

लवजी को एक कल्पना आयी – सामने से जैमिनी कार लेकर आ रही हो, थोड़ी दूर आगे आ जाये फिर हीरूभाई को पहचाने। कार वापस ले जाये और उन्हें काँग्रेस-हाउस तक छोड़कर जाये...किन्तु वह मुझे लेने आ रही हो तो क्या उसकी दृष्टि भी हीरूभाई पर पड़ेगी। यहाँ आती है तो पूरे घर पर वर्चस्व जमाकर बैठ जाती है। शांति उसकी उपस्थिति से अभ्यस्त होती जा रही है। एक मात्र मैं ही उसके आने-जाने को स्वाभाविक नहीं पाता। शायद मुझे अभी भी उसमें रुचि है, लोभ है और मैं अपनी मर्यादाएँ जानता हूँ इसीलिए प्रयास करती हूँ। वह उतनी सतर्क नहीं है। शायद मैं उसके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी भी नहीं। वह जितनी मुक्त होकर मुझसे बात करती है, उतनी ही मुक्ति से औरों से भी बात करती होगी। कलकत्ता में उसका अच्छा खासा निर्माण हुआ है। स्वतंत्र रहकर कैसे जिया जाता है, वह अच्छी तरह जान गयी है। उसमें बस एक ही बात की कमी है। तीसरे व्यक्ति की भावनाओं का उसे ख्याल नहीं रहता–

उस दिन शांति सब्जी कतर रही थी और मैं पढ़ रहा था। वह आकर मुझसे चिपककर बैठ गयी। उसके कंधों का यह प्रथम स्पर्श न था किन्तु, शांति की हाजिरी में तो......पुस्तक रखने के बहाने मैं खड़ा हुआ और फिर बैठ गया। उसके बाद उसे अपनी गलती का आभास हुआ होगा, किन्तु चेहरे पर यह भाव दिख जाये तो जैमिनी काहे की?

कभी-कभी मुझसे बात करते-करते वह शांति से बात करने लगती है–

"मैं पुरुष होती, तो भाभी तुमसे शादी कर लेती मैं।"

"कपड़ा पहनती हो तो बिल्कुल पुरुष ही लगती हो।" शांति को भी अच्छा जवाब सूझा था। अधिकतर वह मौन रहती है। शायद उसके पास कहने के लिए बहुत कुछ एकत्र हो गया है। और इसीलिए वह कुछ कह नहीं पा रही। कभी नहीं कह पायेगी कुछ क्या? वह कुछ बोले तो ठीक नहीं तो घुट-घुटकर मर जायेगी। एक तो वह जैमिनी को सम्मान से संबोधित करती है। यह उसकी भूल है। उसके आने पर यदि वह मुँह फुलाकर बैठ जाये, या अच्छी तरह से बात भी न करे तो जैमिनी समझ जाये। आना कम कर दे। किन्तु यह बड़प्पन त्यागेगी नहीं और मन ही मन दुखी होती रहेगी। मैं जानता हूँ, जब वह मुझसे कतराने लगती है, निश्चित ही उसके मन में कुछ होता है।

संभव है यह मेरा वहम हो। वह जैमिनी को ऐसी उदारता से स्वीकारती हो जिसे मैं अस्वाभाविक मानता होऊँ और उसे स्वाभाविक लगता हो। जो भी हो किन्तु उसके साथ चर्चा करके यह बातें नहीं समझी जा सकतीं।

लवजी काफी समय तक मूल बात नहीं समझ पाया। शांति की उदासी, मृतक

शिशु को जन्म देने के कारण है, अन्य किसी कारण से नहीं। जैमिनी यहाँ आती है और उन्मुक्त बैठती है, यह उसे अच्छा लगता है। जैमिनी की उपस्थिति में वह सचमुच खुश होती है। उसकी खुशी मात्र दिखावा नहीं। हाँ, याद है एक बार शांति अपनी नौनिहाल की बात कर रही थी। मामा की दो पत्नियाँ थीं। एक से कोई औलाद नहीं थी। बच्चे बड़े होने तक सौतेली माँ को ही जनेता मानते रहे। बड़े होने के बाद जब उन्हें सच्चाई का पता चला तब भी वे खुश नहीं हुए थे। यह बात बताकर शांति ने लवजी को बहुत कुछ संकेत कर दिया था। किन्तु लवजी को शांति की यह उदारता समझ में नहीं आती थी।

गाँधीजी पर एक लेख लिखने में व्यस्त होने की वजह से इन दिनों वह गाँव नहीं जा सका था। "पूर्णाहुति" का द्वितीय भाग नहीं मिल रहा था। उसने शांति से पूछा। पुस्तक लाकर शांति सोफे पर उसके पास ही बैठ गयी। लवजी को बड़ा विचित्र लगा। शांति इस तरह शायद ही कभी बैठती है। कोई बात करनी हो तब भी वह दूर ही बैठती है और वह भी नीचे, दीवाल का सहारा लेकर। आज ऐसा क्यों? अच्छी बात है। किन्तु वह क्या सोच रहा था··· ? शांति बोली--

"इस वर्ष कपास के प्लाट में बहुत पैसे मिले होंगे।"

"पचीस हजार का शुद्ध मुनाफा था।" संकर-4 कपास का बीज तैयार किया गया था उसी की बात थी।

"तो हमें कितने मिले?"

"क्यों? सब अपने ही हैं न?"

"वह तो ठीक है। किन्तु आप अक्सर कहते हैं कि अपने खाते में ···· "

"आवश्यकता पड़ने पर मँगायेंगे।"

"इस नौकरी की अपेक्षा तो खेती अच्छी।"

"तुम्हारी बात सच है किन्तु तुम्हें अब खेतों में काम करना अच्छा लगेगा?"

"तो घर जाकर बैठी रहती हूँ? आप भी··· ··।"

लवजी को हीरूभाई के साथ हुई बात याद आ गयी। सारंग में नौकरी हो तो गाँव में रहा जा सकता है। शांति को तो मजा आ जाये। कितने वर्षों से पुराने घर की जमीन नींव के साथ पड़ी है। खेती से मिले पैसे से वहाँ एक छोटा सा मकान······

"इन दिनों जैमिनीबहन नहीं दिखाई पड़ी।" जैमिनी के उल्लेख से लवजी की तल्लीनता भंग हो गयी।

"बम्बई गयी है।"

'तब तो उसी में।"

लवजी ने शांति की ओर देखा। इस स्मित का क्या अर्थ होता है? ठीक है, आज बात निकली ही है तो स्पष्टता कर लेता हूँ।

"जैमिनी आती है। यहाँ बार बार आती है और मुझसे बहुत मुक्त होकर

मिलती है। यदि तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता है तो एक बार तुम उसे साफ-साफ कह क्यों नहीं देती कि यह घर मेरा है, मेरा।"

"यह घर मेरा तो है, किन्तु आपका भी तो है?"

"सीधी बात करो न।"

"मैं कुछ उल्टा बोल गयी क्या?"

"मुख्य बात यह है कि जैमिनी तुम्हें अच्छी नहीं लगती। किन्तु तुम उसके साथ ऐसा व्यवहार करती हो जैसे वह तुम्हारी सहेली हो।"

"सहेली तो है ही। मुझे सचमुच ही वह प्रिय लगती है। उसकी जगह कोई हलकट आती होती तो मुझे दुश्मन जैसी लगती। किन्तु जैमिनी ने तो हमेशा मेरा भला ही चाहा है। आपसे अधिक नहीं किन्तु आपके जितनी तो मुझे वह पसन्द है ही। और मैं जानती हूँ कि मैं भी उसे पसंद हूँ। जाओ यदि ताकत हो तो ले आओ उसे और देखो कि हम कितने संप से रहती हैं।"

"तुम कैसी बात कर रही हो?"

"भगवान की कसम यदि मैं झूठ बोलती होऊँ तो। आप खुश होकर शादी करो।"

"तुम मुझे समझती क्या हो? और जैमिनी भी ऐसी नहीं है। ऐसा होता तो हमें शादी से रोक भी कौन सकता था।"

"यदि पहले से हमारी सगाई नहीं हुई होती तो?"

"तो बात ही अलग होती।"

"साफ-साफ बताई न। आपने शादी की होती या नहीं।"

"कुछ कहा नहीं जा सकता। जो हुआ वही सच है। क्या हुआ होता यह तो भगवान जाने। यह सच है कि जब हम पढ़ते थे तब घण्टों तक साथ में बैठे बातें करते रहते थे और काम न होता तब भी दो-तीन दिन में एक बार मिले बिना काम नहीं चलता था। किन्तु यह तो बचपन की बातें हैं। अस्वीकार नहीं किया जा सकता। एक दूसरे के प्रति भावनाएँ तो थीं ही। फिर भी शादी के बारे में क्या हुआ होता, कुछ कहा नहीं जा सकता। अपनी शादी तय हुई, मेरे घर आने के पहले ही हमने इस पर बातें की थीं। उस समय सबकुछ अस्पष्ट था। किन्तु तुम इतना तो जानती ही हो कि शिक्षित व्यक्तियों के बीच ऐसी मित्रता तो होती ही है।"

"होती है, मैंने कब मना किया? और दूसरों की तरह आप लोगों के बीच ऊट-पटाँग सम्बन्ध भी नहीं है, मैं जानती हूँ। आप समझते होंगे कि छोटी-छोटी बातें शांति क्या जाने? यह सच है कि मुझे आपकी तरह बोलना नहीं आता किन्तु यह बात तो समझ में आती ही है कि आपके मन मिले हैं। मैं इतना तो समझ ही सकती हूँ कि इसे प्रेम कहते हैं। आपकी वेदना मैं समझती हूँ। और आज बात चल पड़ी है तो बता कि आप दोनों को दुखी देखकर मैं एकांत में रो पड़ती

हूँ । जब आप ही पराये नहीं हैं तो आपका दुख क्यों पराया होगा ?'' आँसुओं को साफ करते हुए वह आगे बोली – "उस दिन हम साड़ियाँ खरीदने गई थीं तब एक साड़ी उन्होंने मुझे भेंट में दी थी ।"

"तूने मुझे बताया क्यों नहीं ?"

"आप नहीं जानते थे ?"

"बिना कहे कैसे जानूँगा ?"

"मैंने सोचा कि शायद आपने ही उसे कहा होगा एक साड़ी मुझे भेंट देने के लिए ।"

"देखो इसका नाम वहम ।"

"परन्तु दूसरा कोई वहम नहीं है ही ।"

"दूसरा ?"

"नहीं ?"

लवजी ने हाथ बढ़ाया । शांति हटी नहीं । खिंचकर उसकी गोद में आ गयी । प्रकाश की साक्षी में यह उनका पहला आलिंगन था ।

"अरे, जरा शरमाओ भी ।"

खुली हुई खिड़की पर नजर पड़ते ही लवजी के हाथों की पकड़ ढीली हो गयी । अन्य कुछ नहीं सूझा तो उसने चाय बनाने के लिए कहा ।

"अब सो जाओ न, चाय सवेरे पियेंगे ।"

उसने शांति की ओर देखा । प्रार्थना का यह गौरवपूर्ण तरीका था । लाइट बन्द करके, बेडरूम की ओर जाते समय उसने शांति को उठा लिया ।

उस रात लवजी ने बन्द आँखों में एक ही शरीर में शांति और जैमिनी दोनों को अनुभव किया ।

उसके बाद जैमिनी के साथ उसका व्यवहार अधिक सहज बनता गया । रुचि कम नहीं हुई थी परन्तु लोभ कम हो गया था । एक लम्बे अरसे से व्याकुल वृत्ति का एक कामचलाऊ समाधान प्राप्त हो गया था ।

जैमिनी को अध्यापन रास आ गया था । उसके वर्ग में संख्या अच्छी रहती थी । अध्यापक-मंडल की सभाओं में वह संचालकों के खिलाफ वक्तव्य देकर प्रिय बन गयी थी । लवजी सदा चुप रहता ।

1968 मार्च में अध्यापक-मंडल ने परीक्षा-बहिष्कार आंदोलन छेड़ दिया था । 1966 के पहले एवं बाद के अध्यापकों के लिए अलग-अलग वेतनमान लागू करके युनिवर्सिटी के सिण्डीकेट ने अध्यापकों की भावनाओं की उपेक्षा की थी । लवजी चाहता था कि वार्तालाप से ही समस्या हल कर ली जाये । किन्तु जैमिनी ने उसे मौन रहने को बाध्य कर दिया । परीक्षाएँ प्रारंभ हुई । अध्यापकों ने निरीक्षण का बहिष्कार किया । परीक्षक की नियुक्ति के कागजात एकत्र करके कुलपति श्री के पास पहुँचा दिये गये । कुलपति परीक्षा जारी रखने में सफल हो गये । और कठोर

कदम उठाने की धमकी दी। अखबारों ने भी अध्यापकों के विरुद्ध खूब लिखा। अब लवजी को लगा कि संतुलन ठीक नहीं है। वह तीनों अखबारों के संपादकों के पास गया। उनसे चर्चाएँ कीं। विवरण देकर संघर्ष के मुद्दे समझाये। उसने स्वयं भी दो चर्चा-पत्र लिखे। अध्यापक-मंडल के कार्यालय में जाना प्रारंभ किया। एक ओर संघर्ष के लिए संगठन तैयार हो रहा था। दूसरी ओर वार्तालाप चल रहा था। मंडल के मंत्रियों का मानना था कि चौधरी तर्कबद्ध दलील प्रस्तुत कर सकता है और उत्तेजित हुए बिना विरोधी को उसकी भूल का अहसास करके विश्वास में ले सकता है।

एक रात बारह बजे वह मंत्रियों के साथ वापस आया तो जैमिनी चार अध्यापकों के साथ मंडल के कार्यालय में बैठी थी। उसे देखकर लवजी को आश्चर्य हुआ।

"बहुत देर कर दी।" जैमिनी ने उसे देखते ही पूछा। लवजी को उसका यह प्रश्न पसंद नहीं आया। मैंने कब कहा था कि इन्तजार करे? और फिर कितने अधिकार से पूछ रही है!

"कल तो दो बजे घर गया था। आपको देर होगी। जाइए। मैं तो अभी बैठूँगा।"

"अब, इतने समय अकेली जाऊँ?"

लवजी ने छहो अध्यापकों की ओर देखकर थोड़ी देर के मौन के बाद कहा--

"कोई साहब उस ओर जा रहे हों तो छोड़ देंगे।"

"आपको अब यहाँ रुकने की क्या आवश्यकता है?" लवजी के लिए सम्मान सूचक सम्बोधन करते समय जैमिनी को काफी तकलीफ महसूस हो रही थी।

"रुकने की आवश्यकता तो है किन्तु कोई आने के लिए तैयार नहीं होगा तो मैं आऊँगा।"

"देखा! कितना दंभी है यह आदमी! हमारी मित्रता वर्षों पुरानी है, क्या यह आप लोग नहीं जानते?"

"जानते तो हैं किन्तु इस तरह सबके बीच कहा जाता है?" कहने वाले के साथ सब हँस पड़े।

"आप लोग कब तक कठमुल्ले बने रहेंगे? संसार कितना प्रगति कर चुका है।"

"यह सब हम भी पढ़ा चुके हैं।" कोई इस तरह कटाक्ष करे जैमिनी को पसंद न था। लवजी के साथ उसकी मित्रता है इस घटना को लोग सरलता से क्यों नहीं स्वीकार कर लेते? क्या सिर्फ इसलिए कि वह स्त्री है?

डेढ़ बजे मुक्ति मिली। वे दोनों पैदल चले जा रहे थे। रिक्शे आते, गति धीमी होती, निराश होकर चले जाते। उन दोनों को जैसे इसका ज्ञान ही न हो।

"क्या घर तक पैदल ही चलना है?" लवजी ने पूछा।

"औरों की उपस्थिति में कैसे बात करनी चाहिए यह तुझे नहीं आता?" जैमिनी जैसे अभी भी एक घण्टे पहले की उधेड़बुन में थी।

"मुझे भी तुझे यही कहना है।" लवजी कुछ ढीला हुआ।

"तो वहाँ अपने सम्बन्धों की चर्चा करने की क्या जरूरत थी?"

"चर्चा तो तूने शुरू की थी। मित्रता का ऐसा विज्ञापन किया जाता है? किसी आदमी की वेदना पर ऐसे चोट नहीं करनी चाहिए।"

"वेदना। हुँह। तुझे भला कैसी वेदना है? प्रतिष्ठाभूखा जड़ आदमी वेदना की बात करता है।"

"ठीक है, तू जो कहे सब सच है।"

"तो फिर? तू मेरा मित्र है यदि यह कहते हुए मुझे संकोच नहीं होता तो तुझे क्या है? तुझे क्या खो जाने का भय है?"

"खो जाने का भय तो नहीं है किन्तु जो खो चुका हूँ उसकी याद ताजा हो जाती है।"

थोड़ी देर के लिए फिर मौन। क्रोसिंग के पास पुल के नीचे जैमिनी रुक गयी। लवजी का हाथ पकड़कर वह बोली-

"तुझे मुझसे क्या चाहिए? जो चाहिए, जब चाहिए तब ले लेना। सब तेरा ही तो है।"

"यह जानता हूँ और ईर्षा का तो यह दुःख है।" जैमिनी की हथेली को होठों से छुआकर वह चलने लगा। "तू जिस चीज की छूट देती है यदि मैं उसे स्वीकार कर लूँ तो मेरा एक भव्य स्वप्न अरराकर चकनाचूर हो जाये। और मैं निराधार बन जाऊँ। विरह की जो दो-तीन कविताएँ लिख पाया हूँ वे मेरे लिए तो व्यर्थ हो जायें और फिर शांति से मैं नजर भी न मिला सकूँ।"

"अच्छा है तुझे तो शांति है।"

लवजी ने महसूस किया कि जैमिनी ने "शांति" शब्द पर श्लेष किया है। अच्छा है, वह सहज तो हुई।

अचानक उसके घर के आ जाने से राह बहुत छोटी सी लगी। नौकर ने दरवाजा खोला तब तक लवजी वहाँ खड़ा रहा। जैमिनी को नहीं मालूम था कि वह वहाँ खड़ा है। इसलिए वह हाथ ऊँचा किये बिना अंदर चली गयी। लवजी को लगा, वह हमेशा के लिए अदृश्य हो गयी है।

वह चल पड़ा। थकान-सी महसूस हुई। थकान से बचने के लिए वह जल्दी-जल्दी चलने लगा। देवूभाई का पत्र याद आया – कुएँ में पानी नीचे उतर गया है। बोरिंग करवाना है।

फिर पानी उतर गया? अहमदाबाद की तरह वहाँ भी साबरमती सूख गयी?

भगतवाड़ा वाले कुँए में पानी नीचे उतर गया था तब बोरिंग करवाया था। शांति कबसे कह रही थी—चलो, चलते हैं।

आंदोलन वापस ले लिए जाने के दूसरे ही दिन दोनों गये। खिड़की-दरवाजों को बराबर बंद कर लिया। मचानों पर देखा कबूतर तो नहीं बैठे हैं? जैमिनी ने एक

बार बताया था । वह जल्दी में मकान बंद करके चली गयी थी । पाँचेक दिनों के बाद आयी तब नाबदान के पास एक कबूतर ऐसे मरा पड़ा था जैसे सो रहा हो...

खेमर की दोनों हथेलियाँ छिल गई थीं । लीली झड़बेरी खाने बाड़ के पास थी, उसका भानजा कुएँ में गिर गया, आवाज सुनते ही रस्सा पकड़ते खेमर त्वरा से कुएँ में उतरा, पीपल की डाली से भानजे को उठा लिया, वह बच गया । खेमर छिली हथेलियाँ फैलाए नरसंग चाचा के पास आया । उन्होंने पत्ते पीसकर लगाए । खेमर ने बताया : बदरी में एक युवती तीन साल की बेटी को छाती से चिपकाये कुएँ में कूद पड़ी, बयाने में ब्याही जाती बेटी को बचाने ।

पवन में जरा भी शीतलता न थी । गति थी । एक सूखा हुआ पत्ता उड़ता हुआ आया और बाड में अटक गया । जब जोर से आँधी आती है तो उसके पंखों पर सवार होकर बहुत सारे सूखे पत्ते नदी तक चले जाते हैं । नदी के दो किनारों के बीच आँधी पराजित हो जाती है । प्रवाह भले ही कम हो किन्तु प्रवाह से हमेशा बवंडर हारा करते हैं । लवजी ने अचानक पूछा –

"पिताजी, आपके इस तरह माला फिराते रहने से दुनिया को कोई लाभ होता है ?" लवजी को स्वयं भी ध्यान नहीं रहा और ऐसा दहशत भरा प्रश्न पूछ बैठा । उत्तर देने में देर हुई ।

"अस तो फायदा केहू का, कुछ नाहीं है । दुई घड़ी मन राम मां रमा रहत है । कबौ बंध आँख के अंदर के उजाला मां कुछ नवा देखात है । जैसे भगवान के रूप होय । वहो के आनंद बहुत दिन तक चलता है । माला तो बाहर के कब्जा है । तबौ कबौ दुसरे के दुख मां भी माला फिराये क पड़त है ।"

लवजी ने कहा कि मुझे यह जानना है कि माला फिराने को तप कहा जा सकता है या नहीं ? इससे पूरे समाज को लाभ होता है या नहीं ?

"दुसरे के लाभ होत है या नहीं ई तो तुरंत न मालुम पड़े पर सब ठीक होय तो अपने अंदर के चक्कर चले लागत है ।" "अंदर का चक्र ?"

"जानते नाहीं ? तुम तो बहुत पढ़-लिखे हो ।"

उसके बाद तो संतों की बात से होते हुए कबीरदास की बानी पर नरसंग भगत पहुँच गये । लवजी पूछ बैठा – आप कबीरदास को कैसे जानते हैं ?"

"काहे, वे परदेशी रहे का ?"

वाह ! पिताजी के प्रश्न में जवाब भी मिल जाना था । फिर से प्रोफेसर मिश्र की बात याद आयी, *भारत के संत कवियों* के बारे में गहराई से जानना हो तो प्राचीन ग्रंथ-भंडार ही पर्याप्त नहीं हैं । आपको जन-संस्कृति में उनके जीवंत पते ढूँढ निकालने होंगे । ऐसा ही एक विश्वसनीय पता है सोमपुरा का भगतबाड़ा ।

लवजी ने प्रोफेसर मिश्र की चर्चा का संक्षेप में वर्णन किया । नरसंग अपने ही बारे में ऐसे सुन रहे थे जैसे लवजी किसी अन्य के बारे बता रहा हो ।

23

पुराने घर की जमीन पर मकान बनवाने की बात तो देवू के मस्तिष्क में भी आयी थी एक बार । कभी जब वहाँ जाना होता था तो वहाँ कुत्तों और आदमियों के द्वारा फैलायी गंदगी देखकर उबकायी आती थी । जब तक यह जगह ढँक नहीं जायेगी तब तक कुत्ते भूलेंगे नहीं और कुत्तों के द्वारा की गयी गंदकी में वृद्धि करना कोई आदमी भी छोड़ेगा नहीं । कोई भला क्यों कचरा फेंकने दूर जायेगा ? माँ भी जितनी बार वहाँ जाती हैं, जी जलाती हैं...

किन्तु लवजी ने जब घर के निर्माण की बात की तो कंकू ने विरोध किया । कितनी मँहगाई है ? अगले साल बनवाना ।

"अगले साल भी मंहगाई रहेगी. यह तो जानती ही होगी माँ ?" देवू ने लवजी का पक्ष लिया ।

लेकिन नये मकान की जरूरत ही क्या है ? कंकू ने कहा कि दो-दो नये घर तो हैं । लोग तो झोपड़ियों में भी गुजारा कर लेते हैं । यहाँ दोनो भाइयों का गुजारा हो सकता है फिर व्यर्थ का खर्च करने से लाभ क्या है ?

दरअसल कंकू के विरोध की असली वजह दूसरी थी । उनके मन में एक दहशत पैदा हो गयी थी । वहाँ भी घर बन जाये और फिर दोनो भाई अलगौझा करने की बात करने लगें तो । वह डरती थी कि एकाध साल साथ रहने के बाद ईजू और शांति लड़ने लग जायेंगी । देवू और लवजी को अलग रहने की बात तो सूझेगी भी नहीं ।

शिक्षा पूरी होने के बाद, कंकू भी यही चाहती थीं कि लवजी अहमदाबाद की जगह सारंग में नौकरी करे । नरसंग ने बताया था कि लवजी ने जो पढ़ा था उस विषय की सुविधा सारंग के कालिज में है ही नहीं । यह बात कंकू की समझ में नहीं आयी थी । दो बेटे, दो बहुएँ--सब आँखों के आगे रहें और लोग इस सुखी-संपन्न घराने को देखते रहें, बस । किन्तु छुट्टियों में शांति घर आती और ईजू को उसके अवगुण दिखाई देने लगते । यह देखकर कंकू सोचती कि ठीक है, दोनों जनी अलग-अलग हैं तो । अहमदाबाद भी कहाँ दूर है ?

किन्तु अब, जब लवजी ने सारंग में नौकरी करने का निर्णय किया है तो दोनों बहुओं को तो संभालना ही पड़ेगा । सिर पर बैठाकर घुमाऊँगी । एक को इस काम के लिए कहूँगी दूसरी को उस काम के लिए । दोनों साथ रहेंगी तो लड़ेंगी ही न ।

लवजी इसलिए चुप था कि माँ को समझा सके ऐसे उसके पास कारण न थे । अंततः वह बोला --

"माँ, आप अंतिम बार वहाँ कब गयीं थीं ?"

"भवा होये पंदरह दिन ।'

"अपने घर की ओर देखा था ?"

"अरे भैया । का बताई तुमका । अतना गंधात रहा कि सिर फट जाय । उहां रहे वाले कैसे सहत हैं उ गंध । तबौ सब ऊमा बढ़ोतरी करत रहत हैं । उनकी टाँग टूट गई है का ? जौन थोड़ी देर चले नाहीं पाती ? लड़कन क हगाय के उहैं फैंकत है ।"

"आपको ऐसा नहीं लगता कि उस गंदगी को दूर करने के लिए भी हमें वहाँ मकान बनवाना चाहिए ?"

"नींव डाली गयी रहा तबौ ई सोचा रहा कि अब सब ठीक रहे ।"

"लेकिन चारों ओर से दीवाल खड़ी कर दें तो ?"

"शुरू करेंगे तो पूरा बनवायेंगे ।" देव ने कहा ।

"तो करौ भैया । देखभाल तुमका करे क है । हमरे लगे तो कहाँ पैसा है कि निकाल कै दे देई ? जौन आवत है ऊ सब तुम बैंक मां रख आवत हौ ।"

"सच बताना माँ, तुम्हारे पास सच में कुछ नहीं है ?" देव पूछते हुए हँस पड़ा । माँ भी हँस पड़ी ।

लवजी की योजना थी कि एक पुस्तक की रॉयल्टी मिलेगी उसको और फंड के पैसे – दोनों मिलाकर मकान बनवा लूँगा ।

वे लोग थोड़ी देर तक बैठकर मकान की, उसके पीछे खर्चे की तथा डिजाइन की चर्चा करते रहे । लवजी को एक विचार बार-बार आता रहता था – देवभाई मुझमें अब पहले जितनी रुचि क्यों नहीं लेते ? मैंने सारंग में नौकरी ली है क्या यह उन्हें पसंद नहीं है ? शांति कह रही थी कि इन लोगों को तो ऐसा ही लगता है कि हम लोग यहाँ जमीन-जायदाद में हिस्सा लेने के लिए ही वापस आये हैं । यहाँ आने का मूल कारण क्या है यह शायद कोई नहीं जानता । शांति समझ गयी थी कि यदि जैमिनी कलकत्ता से अहमदाबाद न आ गयी होती तो शायद यहाँ आने का विचार भी उन्होंने न किया होता । उसका मिलना-जुलना बढ़ गया था । उसका कब क्या परिणाम आता कहा नहीं जा सकता था । अब ठीक है । धीरे धीरे सब व्यवस्थित हो जायेगा । अहमदाबाद में रहकर ही लेखन-पठन किया जा सकता है ऐसी बात तो है नहीं । आचार्य का कहना है कि आपके जैसा आदमी यदि संस्था की जिम्मेदारी ले ले तो मैं तो मात्र अध्यापक के पद पर काम करने के लिए भी तैयार हूँ । शायद उनकी विनम्रता के पीछे कोई गणित कार्य कर रहा हो । जो भी हो, मुझे किसी पद का लोभ नहीं है । सारा समय अध्यापन में देने में ही मजा है । जरूरत पड़ेगी तो सुझाव दे दिया करूँगा । कॉलेज में विद्याभ्यास का वातावरण सर्जित हो बस । मंडल के मंत्री अध्यापकों को होटलबाज तथा बीड़ी के पियक्कड़ कहकर परिचय देते हैं । मैं चाहता हूँ कि सारंग उन्हें विद्वान कहे । कॉलेज दोपहर का किया जा सका यह एक शुभ-शुरूआत है ।

"लवजी चाचा, तुमका बलावत हैं ।" घेमर का लड़का दरवाजे के बाहर से ही बोला । उसको देखकर लवजी को लगा कि वह दौड़ते हुए आया है ।

"कौन बुला रहा है !"

"सब ही ।"

थोड़ी देर पहले कुछ जोर-जोर से आवाजें सुनाई दी थीं । बोला-चाली हुई होगी । लेकिन उसने कल्पना भी नहीं की थी कि उस झगड़े के लिए वह जिम्मेदार ठहराया जायेगा ।

एक ट्रेक्टर ईंटें फता के आंगन में पड़ी थीं । सबेरे जब दुबारा ट्रेक्टर आया तो जतन ने बाहर आकर कहा था – भैया वहीं खाली कर दो । यहां तो आने-जाने का रास्ता बन्द हो जायेगा ।

ट्रेक्टर खाली हो गया तब तक तो चेहर ने कोई आपत्ति नहीं उठायी । किन्तु जैसे लीली ने बताया कि ट्रेक्टर को जतन काकी ने खाली करवाया है कि चेहर का दिमाग बिगड़ गया । उसने और जोर से बोलना शुरू कर दिया था । हीरा बहू तो किसी के झमेले में पड़ती नहीं है किन्तु आज लीली तो हाजिर थी ही फिर चेहर को किसका डर ?

जतन इस अनपेक्षित हमले में घबरा गयी । उसने बहुत बचाव किया किन्तु चेहर की आवाज में कोई अन्तर नहीं आया । कभी हुंकार कभी कटाक्ष चालू रहा–

"इ देखो न इ, जैसे आपन बंगला बनवाने क है अस "अडर" करत हैं ।"

यह वाक्य सुनने का सौभाग्य लवजी को भी मिला । चेहर काकी "अडर" शब्द का इस्तेमाल कर रही हैं यह जानकर उसे खुशी और मज़ाक सूझा । ऐसे कुछ और शब्द सुनने को मिलते तो उसे अच्छा लगता । किन्तु इस झगड़े की जड़ में वह स्वयं है यह जानकर उसे अपनी जिम्मेदारी निबाहनी पड़ी–

"अभी सभी ईंटें हटा लेता हूं ।" कहते हुए उसने दोनों हाथों में एक-एक ईंट उठा भी ली ।

"अरेरे भैया, तुहार हाथ छिल जाये । रहे देव ।" चेहर की आवाज बदल गयी ।

"भले छिल जायें हाथ । एकाध ईंट तुम्हारे पाँव में लग जायेगी और तुम गिर जाओगी तो हाथ-पाँव तोड़ लोगी । मुझे यह, मकान का काम छोड़कर तुम्हें दवाखाने ले जाना पड़ेगा । नीचे देखकर चलने की तो तुम्हारी आदत ही नहीं है ।"

लवजी की आवाज़ सुनकर हीरा बाहर आ गयी । बोली–

"नाहीं है आदत तो बनायेंगी । आप इहां दुई ट्रेक्टर ईंट खाली करौवे होव तो कराऊ ।"

"तौ का हम मना करित है ? पर ऊ तो ऊ…।"

'अरे शरमाव थोड़ा शरमाव । बूढ़ भई । और केहू क नाहीं अपनी देवरानी क गारी देत हौ…।"

चेहर चुपचाप घर के अंदर चली गयी । दूध मंडली में बैठे घेमर को झगड़े का समाचार काफी समय पहले ही मिल गया था । उसने हँसकर टाल दिया ।

कहा था—"मेरी माँ को बहुत दिन से लड़ने को नहीं मिला है। लड़ लेने दो फिर जाऊँगा।" दुबारा संदेश लेकर अपना ही लड़का आया तो उठना पड़ा। रास्ते में मन खट्टा हो गया। घर इतना सुखी हो गया किन्तु मेरी माँ को अपनी इज्जत बढ़ाना नहीं आया।

राजगीर और मजदूर आ गये थे। लवजी ने सूचना दी थी—"चेहर माँ के आंगन की ईंटें पहले उपयोग में ले लो।"

दीवारों की चुनाई शुरू हो गयी है। चाय की केटली लेकर रूपा शांति के आगे-आगे आती है। लवजी को याद है—वह घर बन रहा था तो यह काम वह खुद करता था। जो यहाँ से वहाँ जाता था, अब वहाँ से यहाँ आ रहा है। तब सभी को एक उत्साह था। आज सिर्फ रूपा को ही रुचि है—जो हो रहा है उसमें।

देवूभाई रात को खेत से आते हैं तो देखते हुए आते हैं। बातें करते हैं। जो सामान चाहिए, खरीद देते हैं। ईजू भाभी को इधर आते हुए नहीं देखा। पिताजी मुहूर्त के दिन दो घण्टे तक यहाँ बैठे रहे थे। माँ तो घर बैठे ही सब पूछा करती हैं और राय देती रहती हैं।

कंकू ने किसी से बताया नहीं था कि उसने मनौती मान रखी है। घर पूरे-पूरा बन जाये और सब कुछ हेमखेम पूरा हो जाये तब मनौती पूरी करके देखने जाऊँगी। इतने ऊँचे तो पाये बने दिखाई देते हैं और उस पर भी दो मंजले। पाइट से यदि कोई गिर जाये तो हड्डी भी सलामत न बचे। ऊपर से एक ईंट भी छुट जाये और नीचे किसी के ऊपर गिरे तो सिर फूट जाये। इससे तो भगवान बचाये।

"आपकी माँ ने कहा है कि बस्ती में किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करना।" शांति के शब्द लवजी चुपचाप सुन लेता है।

खाली केटली को उठाकर रूपा चल निकलती है।

"वहाँ से पचास बीड़ियाँ दे जाना।"

"ये लोग यहाँ बीड़ी पीने आते हैं या काम करने?"

"दोपहर को खाना देते समय पूछ लेना इन्हीं से।"

शांति हँस पड़ती है। चली जाती है।

काम चल रहा है।

आते-जाते इस ओर झाँक लेने की घेमर की आदत पड़ गयी है। बात करने के लिए बहुत विषय हैं। सीमेंट, लोहा, बालू, कांक्रीट ईंट, पत्थर, पानी और ट्यूबवेल का खर्च आदि।

कल राधूजी चौक पर नाराज हो गये थे। वे डब्बा भरकर पानी ला रहे थे। पाँव सीधे नहीं पड़ते थे। बाबा ने टोक दिया—पीकर आये लगात है। राधू ने आव देखा न ताव, बहुत कुछ सुना दिया। और विश्वास दिला दिया कि वह सचमुच पीकर आये हैं। बस फिर तो सरापा पड़ गया। न चूँ न चाँ।

"सही बात है राधूजी !" घेमर ने बीड़ी पी रहे राधूजी को हँसकर देखा। राधूजी नीचे देखकर काम करने लगे। बीड़ी जलती-जलती बिल्कुल धागे तक पहुँच चुकी थी फिर भी अब तक उनके होंठों में ही दबी थी। राधूजी ढेखाडिया के हैं और कटाई-बुवाई के अवसर पर घेमर के खेतों में आते रहते हैं। इसलिए सम्मान करते हैं।

लवजी को पढ़ता देखकर घेमर चुपचाप खेत पर चला जाता है।

दिन में दस से पंद्रह लोग मिलने आते हैं। जो पहली बार आता है, लवजी विस्तार से बताता है। फिर भी मकान बन चुकने के बाद कैसा दिखाई देगा, कोई नहीं समझ पाता। करसनबाबा तो नहीं ही समझे।

लाठी के सहारे वे धीरे-धीरे आये और आँगन में बैठ गये। सुबह थी। पड़ोस के घर की दीवालों की छाया थी। "हाश" करके बैठ गये और जैसे डकार ले रहे हों, भगवान का नाम लिया। लवजी मजदूरों को चाय पिला रहा था। राधूजी बोले- "मुखिया आये हैं, ज्यादा हो तो उनको देना।"

"कौन रणछोड़ ?" लवजी ने पीछे मुड़कर देखा। करसनबाबा को देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। सुना था कि तबीयत खराब होने की वजह से वे मुश्किल से खेत से घर को आते हैं। आज, यहाँ तक ?

"अरे आइए, आइए करसनबाबा। तबीयत कैसी है ?" लगभग दौड़ता हुआ लवजी बोला।

करसनबाबा एक पाँव फैलाकर दूसरे को हाथ की मदद से फैलाने की कोशिश कर रहे थे। ऐसा करने में उन्हें तकलीफ हो रही थी, जो उनके चेहरे से स्पष्ट दिखाई दे रहा था। लवजी को संदेह हुआ - बुढऊ बहरे तो नहीं हो गये ? तबीयत के बारे में पूछा।

'बुढ़ापा और का भैया ?"

लवजी ने घेमर के लड़के को बुलाकर कहा-"घर पर जाकर अपनी चाची से कहना कि एक कप अच्छी चाय बनाकर दे जायें।"

"ईजू चाची से ?"

"नहीं, छोटी चाची से।"

"ई छोट की चाची कौन ?" लड़का चिन्ता में पड़ गया। "वह अहमदाबाद में रहती है वही ?"

"हाँ, कहना कि करसनबाबा आये हैं।"

"करसनबाबा कौन ?"

बुढऊ ने ऊपर देखा। यह लड़का क्या पूछ रहा है ? मुझे नहीं पहचानता ? इस गाँव में मैं अपरिचित हो गया ? क्या यही दिन देखने के लिए मैं अब तक जीवित हूँ ?

"नाहीं भैया, चाय-वाय रहे देव। हम तो दुई घड़ी बैठे आइन है। जेठ

कहिस की लवजीभाई बँगला बनवात हैं। मन कहिस चलौ देख आई। तुमसे मिले। हम कौनो चाय कै भूखे हन ?"

"नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। वैसे तो उस केटली में भी दो कप चाय होगी पर ठंडी हो गयी है। आपके लिए इलायची और मसाले की चाय मँगवानी है।"

"मसाला तो निकर गवा हमार भैया।"

घेमर का लड़का अभी भी खड़ा-खड़ा बातें सुन रहा था। लवजी ने खड़े होकर उसके हाथ में केटली पकड़ाकर भेजा।

लवजी बुढऊ की बातें सुनता जा रहा था और उदास होता जा रहा था। क्या इस गाँव में इस बुड्ढे के दिल की बात समझने वाला कोई है ही नहीं जो इन्हें मेरे पास आना पड़ा ? हाँ, ये अपनी बात करने ही आये हैं या मेरे बारे में ? मैंने सारंग में नौकरी स्वीकार की है इस बारे में तो उन्होंने अभी एक भी बात नहीं कही। इस आदमी के पास कहने के लिए कितना कुछ है ? और सब बता देने की भूख भी कितनी है ?

चाय पीकर, हाथ-मुँह पोंछकर, दोनों हथेलियों को रगड़ते हुए वे बोले—

"अबही हम केहू के दया पर न जीयब हो भैया। हम चाही तो अकेले रही। हमरे पास..." किसी के आने का आभास पाकर बुढऊ चुप हो गयें।

दूसरी ओर राजगीर ने किसी मजदूर को गाली दी। लवजी उठकर उधर गया। पूछा।

"ई देखो न साहेब। मेरा बेटा ठीक से झुकतौ नाहीं ? इहां मजूरी करे आवत है कि विजिट मारे ?"

लवजी हँसता हुआ वापस आ गया। बुढऊ के पास बैठकर बोला—

'क्या कह रहे थे, करसनबाबा आप ?"

"कुछ नाहीं। ई बँगला कब तक तयार हो जाये ?"

"बँगला काहेका ? यह तो छोटा-सा घर है।"

"ई गाँव मां तो ई का बँगला ही कहा जाये। रंग-वंग होय जाये तो फिर आऊब एक दिन। लेव बैठो। भगत का करत हैं ? बहुत दिन भवा मिले नाहीं।"

"खेतों की रखवाली करते हैं और माला फिराते हैं।"

"कौनो लंबी यात्रा कर आये हैं ?"

"हाँ गये थे। साथ मिल गया था। आप क्यों नहीं गये ?"

"हमका तो पता बाद मां चला। फिर ऊपर से बाई और पित्त कै सिकायत। बीच मां कहूँ मर जायी तो न घर के होई न तीरथ के।"

"यह भी ठीक है।"

"बैठो भैया, और सँभार के काम करो।"

करसनबाबा को जाते देखकर मुहल्ले के किनारे बैठा कुत्ता चौंका। लवजी

को चिन्ता हुई – यह काटेगा तो मुसीबत करेगा । अभी घेमर के लड़के ने उन्हें पह-चाना नहीं । अब यह कुत्ता इनको देखकर भौंके तो भी बुढऊ को बुरा लगेगा । शायद उनके हाथ की लाठी देखकर वह चुप हो गया । वे क्या कह रहे थे ? "मेरे पास..." शायद कुछ कह रहे थे । होगी थोड़ी बहुत छिपी हुई मिल्कियत । गोकुलिया के मुखिया पभा मरे थे तो अच्छी-खासी संपत्ति छोड़ गये थे । किन्तु वह उनकी सच्ची कमाई थी । करसनबाबा की - जो भी होगी – ऐसी ही होगी । किन्तु अब तक छिपा रखने की क्या जरूरत है ? शायद वे ऐसा सोचते होंगे कि जेठा भी सेवा न करे तो वह संपत्ति इनके शेष जीवन का सहारा बनेगी ।

चाय में देर हो तो कोई बात नहीं परन्तु बीड़ी तो समयसर चाहिए ही । राधूजी पाँच बीड़ी बचती है कि माँगने लगते हैं । वे बोले–

'हायट तो देखो मकान के ?" उन्होंने "हाइट" शब्द कहाँ से सीखा होगा ? रणछोड़ मुखिया कहत रहे कि यह मे डबल हायट वाला मकान बनवायेंगे ?

"उनकी का कैपेसीटी ?" राजगीर काम करते-करते जवाब देता है । उसकी बात सुनकर लवजी आगे पढ़ना भूल जाता है । लोगों की भाषा कब बदल गयी ?

अच्छा लगता है । कोई काम नहीं होता तभी लवजी पढ़ने बैठता है । और तभी ऐसी कोई बात सुनाई देती है । शायद मजदूर सोचते होंगे कि अब लवजी-भाई पढ़ने में लगे हैं । हम कुछ भी बोलेंगे, सुनेंगे नहीं ।

अन्दर प्लास्टर हो रहा था । बाहर सागंग से आये मजदूर गड्ढा खोद रहे थे । पाखाना बन रहा है यह सुनते ही मुहल्ले के लोगों को गंध आने लगी थी । इसके पहले की गंदगी के अभ्यस्त हो गये थे किन्तु ग्वारकुएँ की बात सुनकर घबरा गये थे ।

दोपहर तक बात उड़ती हुई धमाकाका के कान तक पहुँची । वे मुँह चढ़ाकर आ पहुँचे–

"अरे भाई लवजी, ई तू का करत है ?"

लवजी को यह लहजा अच्छा नहीं लगा । परन्तु धमाकाका हैं न ! उसने समझाया कि पाखाना तथा स्नानगृह के लिए यह शोष-कुआँ बन रहा है ।

या तो धमाकाका की समझ में बात नहीं आयी और या तो वे पहले से ही निर्णय करके आये थे इसलिए उन्होंने कुछ सुना ही नहीं ।

"हमसे अस नाहीं हो सकत भाई ।"

"क्यों नहीं हो सकता ?"

"हम लोग स्वामिनारायण मां विश्वास करे वाले और हम सब तुहरे बाप क भगत कहित है । अपने क तो सब साफ सफाई रखे क चाहिए ।"

"बाथरूम और पाखाना बन जाने से सब साफ रह सकता है । आप तो जानते हैं कि इस गाँव में बरसात के दिनो में लोटा लेकर निकलने पर बैठने की जगह नहीं मिलती ।"

'अरे भाई, तुझे तकलीफ पड़त होय तो तू हमरे खेत माँ आयौ। परन्तु ई अधरम मत कर।"

"अच्छा, अब इधर बैठो और कोई दूसरी बात करो।"

"तो तू हमारा कहा न मान वो ?" धमाकाका गहरे आघात से बोल रहे थे।

"मैंने कब आपको सलाह देने के लिए बुलाया था जो मुझे आपकी बात माननी ही पड़े ?"

"अरे पर तू "-धमाकाका की आवाज उलझ गयी।

'मैंने कहा तो कि दूसरी बात करो।"

"नाही-नाहीं, तू हमका फालतू समझत है ?"

"यहाँ आने भरको तो फालतू हो ही। है न ? अच्छा किया आये तो। अब यह काम पूरा हो जावे तो फुरसत में आकर एक बार सब कुछ देख जाना।"

'देखा है हम बहुत। अरे तेरा बाप भी हमारा कहा सुनत है और तू बड़ा पढ़-लिख कै सुधर गवा है कि हमार मज़ाक उड़ावत है ? नाहीं-नाहीं हम केहू के बुरा करे आइन रहा ? नाहीं नाहीं..." धमाकाका बड़बड़ाते हुए चले गये। लवजी खड़ा-खड़ा निरंतर गहरे होते जा रहे गड्ढे को देखता रहा। वह अब पछता रहा था। धमाकाका के साथ मुझे ऐसी बात नहीं करनी चाहिए थी। सम्भवतः उन्हें अपमान लगा हो और घर जाकर वे अंदर से दरवाजा बन्द करके रोयेंगे।

24

लवजी ने अहमदाबाद की नौकरी क्यों छोड़ दी इस बारे में सोमपुरा में दो अटकलें लगायी जा रही थीं। रणछोड़, माधव, नारण आदि लोगों का मानना था कि लवजी अहमदाबाद की नौकरी से निकाल दिया गया है। दूसरे लोग थे जो मानते थे कि लवजी सारंग के कॉलेज में प्रिन्सिपल बनने आया था, किन्तु मेल न बैठने की वजह से वहाँ अध्यापक की नौकरी कर ली। क्या करें ? घर तो बैठा नहीं जा सकता ! घर से भली बाजार।

देवू दुखी था। लवजी की प्रतिष्ठा का बचाव उसे करना पड़ा था। वह जानता है कि गाँव में रहकर लवजी की कीमत घटेगी। यहाँ रहकर कोई आदमी बड़ा नहीं बन सकता। इन दिनों पता नहीं उसे क्या हो गया है कि मेरे साथ बात ही नहीं करता। पिताजी से कुछ न कुछ पूछता रहता है और सुनता रहता है। घर आने के बाद गाँव में ही नहीं जाता। देर रात तक पढ़ता रहता है। ईजू कहती थी कि वह अलग रहने के लिए कहता है। पर माँ नहीं मानती। माँ-बाप तो छोटे लड़के के साथ रहना ही पसंद करते हैं न ?

क्या ईजू यही चाहती है कि बूढ़ा अलग चली जायें तो अच्छा !

इस वर्ष बरसात देर से हुई है। उमस अभी भी नहीं खत्म हुई है।

भोजन करके सब बैठे हैं । कंकू ने थँभले के पास बैठकर छींकनी की डब्बी खोल रखी है । रूपा अभी-अभी सोई है । पास में बैठी सगर्भा ईजू आँचल से हवा कर रही है । शांति अंदर चौखट के पास बैठी सुपारी कतर रही है । नरसंग ने पाँव खाट पर रख लिया है । और बनियान की जेब से माला को बाहर निकाल लिया है । पास की खाट पर उलटे लेटे देवू के हाथ में अखबार है । लवजी छज्जे पर पता नहीं क्या कर रहा है ।

अचानक छज्जे पर रेड़ियो के चालू होने की आवाज सुनाई देती है । समाचार आ रहे हैं । दूसरे ही पल लवजी ट्रांजिस्टर हाथ में लेकर जीना उतरता हुआ आता है ।

सुनो ।

कंकू छींकनी की डब्बी बन्द कर देती है । नरसंग माला फिराना बन्द कर देते हैं । देवू और लवजी खाट पर एकदूसरे के सामने बैठ जाते हैं । बीच में रेडियो समाचार देता जा रहा है ।

चालू रेड़ियो में नरसंग पूछते हैं–

"मोरारजी तो कौनो अच्छे पद पर रहे न ?"

"उप-प्रधान मंत्री ।"

"तो उनके पास से इन्दिरा वित्तमंतरालय काहे ले लिहिन ?"

"कुछ दिन पहले ही इन्दिराजी ने देख लेने की धमकी दी थी ।"

"तो अपने गाँव की तरह दिल्ली माँ भी झक-झक होत है ? ठीक है । आदमी तो हर कहीं एक होत है ।" भगत की जिज्ञासा संतुष्ट हो गयी । उन्होंने माला फिराना शुरू कर दिया ।

इन्दिराजी के इस कदम ने लवजी और देवू के बीच का तनाव दूर कर दिया । वे दोनों उत्साह से बातें करने लगे ।

"मैं तो सोच रहा था कि चवान पर वार होगा ।"

"चवान का गुट बड़ा है न !"

"एक अन्य भी कारण होगा । मोरारजी दक्षिणपंथी माने जाते हैं । अपने लड़के का बचाव करके वे बदनाम भी हुए हैं । उनको निकालने से कोई आँसू नहीं बहायेगा, इन्दिराजी जानती होगी । इससे अब सिण्डीकेट पर धाक भी जमा सकेंगी ।"

"यह कदम उन्होंने निजलिंगप्पा से पूछे बिना ही उठाया होगा ?"

"और क्या ? पार्टी के बुजुर्गों से पूछकर कुछ करना उन्होंने कभी पसन्द नहीं किया । मौका मिलते ही शिकायत भी शुरू कर देती हैं कि ये लोग प्रगति के मार्ग में बाधक हैं ।"

"यदि ऐसा ही हो तो "

"हकीकत क्या है यह कुछ दिनों में बाहर आयेगा ।"

तीसरे दिन दूध मंडली के ऑफिस पर एक छोटी-मोटी सभा जुट गयी। बैंकों के राष्ट्रीयकरण की बात सुनकर सोमपुरा के पंचायती घबरा उठे थे। रणछोड़, माधव, नारण आदि ऐसा मानते थे कि राष्ट्रीयकरण अर्थात् साम्यवाद। सरकार अब सब कुछ ले लेगी। किसी के पास एक बीघा जमीन भी नहीं रहने देगी। इन लोगों ने जिस जिसको घबरा दिया था सब लवजी के पास आये। लवजी ने कहा कि राष्ट्रीयकरण और जनतन्त्र का समन्वय किया जा सकता है। इसके पूर्व हो चुके बीमे के राष्ट्रीयकरण का उदाहरण देकर उसने समझाया कि कौन कौन से उद्योग सरकार के हस्तक हैं।

देव ने कहा कि राष्ट्रीयकरण अच्छी चीज है तो भी अपने यहाँ तो सत्ता हस्तांतरण का हथियार की तरह ही उपयोग होता है।

लवजी ने कहा कि एक बार वामपंथी नीति अपनाने के बाद अधिक से अधिक वामपंथी बनना पड़ सकता है। ऐसे उदाहरण मौजूद हैं।

रणछोड़ ने पूछा कि इससे अपना भी कुछ भला होगा या नहीं ?

लवजी ने कहा कि "तुम्हारे जैसों का भला तो होगा ही। जैसे कि सहकारी मंडलियों का काम उसके सभी सदस्यों का लाभ देखना होता है किन्तु उसके लाभ को तुम्हारे जैसे ईन–मीन और तीन ही चट कर जाते हैं ?"

रणछोड़, माधव और नारण के सिवाय सभी हँस पड़े।

"तुम लोग अभी हँस रहे हो लेकिन अंततः तो इन्हीं नीचों को समर्थन दोगे।" लवजी क्रोध से बोला।

"ऐसी गालियाँ मत दो हाँ लवजीभाई। नहीं तो मुझे भी बोलना आता है।" माधव उठ खड़ा हुआ।

"बैठ-बैठ मूर्ख। उस दिन उसके घाघरे में छिप गया था जाकर और आज बड़ी बहादुरी दिखा रहा है ?" जीवन ने उसे डाँटा।

रणछोड़ हँस पड़ा। यह देखकर सबका संकोच दूर हो गया और एकदूसरे को कोंच कोंच कर खुश होने लगे। देव की गंभीरता भी कम हो गयी।

रणछोड़ का शागिर्द बनने के बाद माधव भी स्त्रियों से छेड़छाड़ करने लगा था। एक बार अपने खेत में जीवन ने माधव को एक लड़की के साथ पकड़ा था। आज उसने उसी घटना की ओर संकेत किया था।

रणछोड़ को हँसता देखकर माधव की रही–सही शक्ति भी बिखर गयी। वह धीमी और डरी हुई आवाज में, जैसे स्वयं को आश्वासन दे रहा हो, बोला–

"कौन कैसा है, इसकी मुझे भी खबर है।"

"तो कह दे, सुना जाय, अबहीं तो सब फुरसत मां है।" घेमर ने कहा।

माधव उठकर चलने लगा। नारण ने हाथ पकड़कर बैठा लिया –

"दो पल का मजाक है यह तो। इससे बुरा मानते हैं कहीं !"

देवू ने कहा कि सार्वजनिक संस्थाओं में काम करने वालों को स्त्री और पैसा इन दो मामलों में स्पष्ट रहना चाहिए।

"अपने भाईजान तो दुई मां से एकै मां स्पष्ट रहैं यही बहुत है।" – घेमर ने इस बार सभी को हँसाया।

लवजी देख रहा था कि रणछोड़ अपने विरुद्ध हँसने वालों का भी साथ दे रहा था। जैसे इन लोगों से अलग न हो।

उसे याद आया कि उसने एक बार एक परिसंवाद में कहा था कि गाँवों का संचालन तब सुधरेगा जब नयी पीढ़ी के हाथ में सत्ता आयेगी। इस हिसाब से तो सोमपुरा की व्यवस्था आदर्श होनी चाहिए। शायद उपरोक्त विधान के समय लवजी की नजर में देवू रहा होगा। किन्तु देवूभाई तो अब प्रगतिशील किसान हैं। सुधार की उनकी आकांक्षा खेतों में ही सतुष्ट हो जाती होगी। फिर जिले के कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में हीरूभाई और रमणलाल के साथ इधर-उधर भी जाना होता है। फिर गाँव में क्यों किसी से बुरे बनें?

या फिर यह पिताजी की ही विरासत है? स्वयं अच्छे हैं इससे सतुष्ट होकर गाँव से अलग रहना चाहिए। सज्जनों की इस निष्क्रियता के लिए क्या कहा जाये? परन्तु यों तो वह स्वयं भी चार महीने से गाव में ही रहता है। एक छोटा-सा मकान बनवाने के अतिरिक्त उसने क्या किया? रात होते ही वह क्यों छज्जे पर जाकर बन्द हो जाता है? पुस्तकालय की चौपाल, दूध मण्डली या सहकारी आफिस में बैठने की इच्छा क्यों नहीं होती? जैसे लोक संपर्क अप्रिय हो गया हो।

घेमरभाई कह रहे थे कि सहकारी मण्डली का अभी आडिट भी नहीं हुआ। हिसाब ही अभी तैयार नहीं है। रणछोड़ ने संकर–4 के बीज मे बाइस हजार की कमाई की थी। उसमें से उसने पुराना कर्ज न देकर नया कर्ज लेकर एक पुराना ट्रेक्टर खरीद लिया था। माधव कुछ दिनों तक तो लोगों से कहता फिरा कि इस बार उसे एक पैसा नहीं दूँगा किन्तु बाद में वही शिकायत करने लगा – बाकी पूँजी से सात हजार ले गया है। कहता है कि लोन मिलेगी तब दूँगा। परन्तु पुराने ट्रेक्टर पर कहीं लोन मिलने वाली है?

सब दिल्ली की बात में मशगूल थे कि अचानक लवजी ने कहा –

"माधवभाई, आपकी मण्डली की व्यवस्थापक समिति की एक बैठक बुलाओ। मुझे उसमें उपस्थित रहकर कुछ समझना है।"

"कहते हो तो यहाँ से उठकर सीधे चलें।" रणछोड़ ने लापरवाही से कहा।

"जरा फ़ुरसत से।"

लवजी ने देवू से दो-तीन बार पूछा था। किन्तु देवू को न तो भाई को निराश करना था और नहीं सहकारी मण्डली के संचालन में सक्रियता दिखानी थी।

"मैं असफल हुआ हूँ। तुमसे यह लोग डरते हैं, प्रयास करके देखो।" और वे दूधमंडली के चौतरे पर बैठे मोटे जड़ फूलजी को देखने लगे

सामान्य सभा के दिन हीरूभाई को बुलायें तो ? उनकी उपस्थिति में शांति-पूर्वक और समझा-बुझाकर सब कुछ बदला जा सकता है। एक बार नये सदस्यों का चुनाव हो जाने दो फिर तो मैं उनकी मदद करूँगा ही।

25 अगस्त को सभा तय की गयी। इसके पहले लवजी ने दो-तीन बार प्रयत्न किया किन्तु हिसाब के वही खाते नहीं देखने को मिले। घेमरभाई ने एक बार बताया भी कि ऑडिट चल रहा है किन्तु लवजी को कोई नहीं दिखायी पड़ा। साढ़े दस बजे वह सारंग के लिए निकल जाता था और शाम को छ साढ़े छ बजे वापस आता था। प्रमुख और मंत्री अपना-अपना काम उसकी अनुपस्थिति में ही कर लेते थे।

लवजी को अच्छा लगता। ये लोग मुझसे डरते हैं यह अच्छा है। इन्हें सुधारा जा सकेगा।

पन्द्रह अगस्त को इन्दिरा गाँधी ने लोकसभा के सदस्यों से, अपनी आत्मा की आवाज के मुताबिक मतदान करने के लिए कहा। परिणामस्वरूप बीस तारीख के चुनाव में वी. वी. गिरि राष्ट्रपति बन गये। देवू ने काफी खलबलाहट महसूस की। लवजी ने नहीं। उसे तो गाँव की समस्याओं की ही चिन्ता थी। जो लोग वहाँ थे उनसे उसने कहा – तुम लोग जानते नहीं हो, इन्दिराजी बहुत बुद्धिमान हैं। सुभीते में उनके समान कोई नहीं है। मैं जानता था कि उनका उम्मीदवार अवश्य जीतेगा। देवू और अन्य लोगों को बतलाना छोड़कर वह छज्जे पर चला गया था। किन्तु तुरन्त उसे अपनी भूल का अहसास हुआ था। मुझे यदि इन लोगों में परिवर्तन करवाना हो तो इनके बीच में अधिक से अधिक रहना चाहिए। मात्र गाँव में रहने से क्या ? लोगों से संपर्क भी होना चाहिए। 25 की सभा असरदार बन सके इसलिए उसने सोचा – स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों की भी मदद मिलेगी। उन्हें हीरूभाई में रुचि भी थी।

सभा के प्रारम्भ में रणछोड़ ने हीरूभाई को सूत की लच्छी पहनाई और इस वर्ष से लवजी ने सारंग के कॉलेज में नौकरी स्वीकार की है इसे गाँव का अहोभाग्य बताया। शिक्षित आदमी गाँव में रहने लगें तो बहुत कम समय में ही नंदनवन देखने को मिलेगा। स्वयं बहुत कम पढ़ा है किन्तु फिर भी अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार काम करता है। और धीरे-धीरे गाड़ी खींचता रहता है।

उसने अन्य लोगों पर अच्छा प्रभाव डाला किन्तु लवजी अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न नहीं हुआ। नयी व्यवस्थापक समिति के लिए नाम सूचित करने का समय आया तब एक विद्यार्थी ने पूछा – जिसने ऋण न भरा हो वह समिति का सदस्य बन सकता है ? लवजी ने तुरन्त मौका हथिया लिया और मंत्री को बैठाकर उसने कहा – नाम प्रस्तावित करो। जिसने ऋण का भुगतान नहीं किया होगा उसका नाम मंत्री

बतायेगा । इस नियम के पालन से तीन ही नहीं नव के नवों सदस्य नये चुनने पड़ेंगे । देवू का नाम प्रस्तावित किया गया । उसने मना कर दिया । लवजी के आग्रह के बावजूद मना कर दिया । पन्द्रह नाम प्रस्तावित हुए । लवजी ने एक-एक से पूछकर नव को अंतिम सूचि में लिखा । चुनाव की जरूरत नहीं पड़ी । पुराने लोग अपने अनुभव का लाभ दे सकें इसलिए उनकी एक सलाहकार समिति रची गयी । हीरूभाई ने संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली वक्तव्य दिया । सब का मानना था कि पुराने सदस्य इस परिवर्तन को प्रसन्नता से स्वीकार कर लेंगे । और नये सदस्य घेमर, जीवन आदि नयी व्यवस्था सँभाल लेंगे । फिर उन्हें लवजीभाई का समर्थन तो है ही । किन्तु चौबीस घण्टों में ही सब कुछ बदल गया । माधव ने एक मार्ग ढूँढ निकाला था – यदि अधिकांश सदस्य स्वेच्छा से त्यागपत्र दे दें तो नये सिरे से चुनाव करना पड़ेगा । त्यागपत्र लेने में जबरा ने रणछोड़ की मदद की । मात्र घेमर और जीवन ही दृढ़ रहे ।

लवजी ने कॉलेज में बैठे-बैठे दोपहर में यह बात सुनी । देखता हूँ ये लोग किस तरह फिर से सामान्य सभा बुलाते हैं । उसने लड़ लेने को सोचा । घर आते ही वह मुहल्ले में गया । जीवन घेमर के घर पर ही बैठा था । सब नये घर के छज्जे पर गये । देखते ही देखते दस आदमी आ पहुँचे ।

"लेकिन उन लोगों ने त्यागपत्र दिया ही क्यों ?" लवजी ने पूछा ।

"धाक धमकी के कारण ।"

"किसी ने उन्हें धमकी नहीं दी ।"

"उस चण्डाल चौकड़ी से सब डरते हैं ।" जीवन ने कहा । घेमर ने रणछोड़ के कुछ नये शागिर्दों के नाम बताये । अक्सर ये लोग रणछोड़ के नये घर पर आते हैं और शराब पीते हैं ।"

"मैं उनकी सारी हेकड़ी भुला दूँगा । देखना तुम लोग ।" बोलने के बाद लवजी को लगा ये शब्द उसे शोभा नहीं देते । किन्तु इस बात का तात्कालिक लाभ जरूर हुआ । सुनने वालों में साहस पैदा हुआ और उन्होंने रणछोड़ की टुकड़ी के अवगुणों को गिनाना शुरू किया । यह लोग इतने सड़ गये हैं ? लवजी का क्रोध अब आश्चर्य में परिवर्तित हो गया है । और एकत्रित सभी लोगों में उन लोगों के बारे में जानकारियाँ देने में जैसे स्पर्धा लगी हो । अंततः लवजी ने बात को समेटा । वह खाना खाने गया तब माधव सिर झुकाए देवू से कुछ पूछ रहा था । लवजी को देखकर उसने हाथ उठाकर थोड़ा-सा मुस्कराने का प्रयत्न किया किन्तु वहाँ अधिक समय ठहर नहीं सका । इसका अर्थ था :

कंकू ने बात चलायी ।

भाड में जाये यदि वही सब का सब खर्च करता है तो, और अभी तो रणछोड़वा ने बड़ी रकम का ऋण ले रखा है । क्या एकसाथ सब भर देगा ! रहने दो उसे ही इस वर्ष ।

लवजी ने माँ से कुछ नहीं कहा। देवू ने भी बताया कि वे सब एक-एक करके खेत में मिल गये हैं।

"आप जनतंत्र में तो विश्वास करते हैं न ?"

"विश्वास तो सभी करते हैं।"

"तो विश्वास के अनुसार काम करने देना चाहिए। प्रजातन्त्र कानून का राज्य होता है। ऋण के नियम के अनुसार ही सामान्य सभा ने परिवर्तन किया है। अगले वर्ष उसमें तीन सदस्य नये आ सकते हैं। भुगतान कर दिया होगा तो स्वयं रणछोड़ भी आ सकता है।"

"पर इस बीच गाँव में गुटबंदी हो और झगड़ा हो तो ?"

"पिताजी ने आपसे कुछ कहा है ?"

"मेरी उनसे बात नहीं हुई। उन्हें इन सबसे कोई रुचि भी नहीं है। वे तो यादवास्थली भी होती हो तो होने देंगे। कृष्ण की तरह जानबूझकर भी।"

"तो आप कृष्ण और पिताजी से भी अधिक समझदार हैं ?"

"मुझ पर कटाक्ष करने से सहकारी मंडली का झगड़ा नहीं सुलझ जायेगा।" देवू के क्रोध में भी प्रार्थना थी।

"चलो न भैया, खाय लेव। फिर माथापच्ची करेव। अब सब फिर रहे अइ हैं।" कंकू ने खिचड़ी परस दी।

रात के नव बजे के लगभग रणछोड़ नम्रता का बाना धारण करके आ पहुँचा। उसके साथ प्रत्येक मुहल्ले के एक-एक दो दो आदमी भी थे। एक जन ने अपनी पगडी उतारी : "लवजीभाई ई बरस रणछोड़ क रहै देव। ई के इज्जत के सवाल है। तुम अस निकार देबो तो पूरे सताइस गाँव मां ऊ के फजीहत होये। सब हो ऊका दिवालिहा कहे। अगले साल ई न होय इके जवाबदारी हमार।"

और भी कई लोग पूरी समिति नये सिरे से बनाना चाहते थे।

लवजी बहुत सख्त हुआ परन्तु जीवन और भ्रमर को ढीला देखकर उसने एक राह निकाली। एक जन त्यागपत्र दे तो उसकी जगह एक वर्ष रणछोड़ ले।

ऐसा करते देर न लगी और पूरा हिसाब-किताब दुबारा हाथ में आते ही रणछोड़ पुनः लवजी की शरम रखे बिना मनमानी करने लगा।

एक दिन धमाकाका ने फूलजी के भविष्य की चिन्ता की। लवजी ने कहा : मैं उसे पागलों के अस्पताल में छोड़ आऊँगा। धमाकाका बेटे के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। उनका सत्य फूलजी था।

25

लवजी का मन कहीं नहीं लगता था। सितम्बर के अंतिम सप्ताह में ज्यों-ज्यों अहमदाबाद से समाचार आते जा रहे थे त्यों-त्यों वह अधिक से अधिकतर खिन्न

होता जा रहा था । जिस अहमदाबाद से उसका ऐसा संबंध हो वह ऐसा कर सकता है ? इसी अहमदाबाद की भूमि पर जैमिनी के साहचर्य का प्रथम अनुभव मिला था । अहमदाबाद का एक मधुर चित्र था उसके स्मरण में···और इतने में भभक-कर जल उठा साम्प्रदायिक दावानल । और मृतकों की जाति जानकर खुश होने वाले ये ग्रामीण । उस दिन वह मिल-मजदूर मुझे मिल गया । उसने मुझसे ऐसी बात की जैसे उसने हत्या का जो पराक्रम किया है उसके बदले में शाबाशी दूँगा ।

पहली अक्टूबर को खान अब्दुल गफार खान आने वाले थे । 23 वर्ष के बाद वे भारत में पाँव रखने वाले थे । गाँधीजयंती मनाई जाने वाली है न । मनाई गयी जयंती । यह सांप्रदायिक दंगे.. कलकत्ता में गाँधीजी की प्रतिमा तोड़ डाली गयी और अहमदाबाद में हिन्दू-मुस्लिम एकदूसरे की हत्या करें इन दोनों घटनाओं में कोई अधिक फर्क तो नहीं है । लोगों का कहना है कि पाकिस्तान का हाथ है इन दंगों के पीछे । हम कितने मूर्ख हैं कि इस तरह आसानी से किसी के हाथ के हथकड़े बन जाते हैं । यहाँ सारंग में क्या था भला ? एक पूरे परिवार को जला डाला गया ।

मौका था किन्तु वह बादशाहखान को सुनने नहीं गया था । देव गया था । रमणलाल ने एक संदेश भिजवाया था कि लवजी एक सम्मेलन में उपस्थित रहे । वह आजणा पाटीदार का बड़ा सम्मेलन था । पन्नालाल पटेल स्वयं आने वाले थे । ऐसे सम्मेलनों में जाने में मुझे रुचि नहीं है । आप ही जाना—लवजी ने स्पष्ट मना कर दिया था ।

देव का मानना था कि लवजी को सारंग की नौकरी रास नहीं आयी है । पहले इसका स्वभाव ऐसा न था । बात बात में खीझ उठता है । कब क्या कह देगा, कहा नहीं जा सकता । जाति-बांधवों से मिलने में क्या हर्ज है ?

वह दशहरा से अलग रहने लगा था । बर्तनों को तो देव और शांति ने ही बाँटा था । उस क्षण कंकू खेत में आ गयी थी ।

उन्होंने नरसंग से कहा कि शांति बहू ने अपने साथ चलने के लिए बात भी नहीं की । बात करती तो क्या हम चले जाते ? पर माँ-बाप को तो अपने छोटे लड़के के साथ रहना ही पसंद आये न ? देव बहू को ऐसा न लगे कि देखो बूढ़ा को साथ ले जाने के लिए उसने इज्जत भी की ? 'तुम्हें ही होगी यह मान की प्यास । हमको तो यह खेत ही अच्छा है । न इसके साथ न उसके । बस इसी खेत में ।"

कंकू थोड़ी देर के लिए मौन हो गयी थी । नरसंग ने देखा कि बुढ़िया के मन में अफसोस हो रहा है । उन्होंने लवजी से बात की । लवजी ने सीधा सीधा जवाब दिया—ऐसा झूठ-मूठ कहने का क्या अर्थ ? माँ की जब इच्छा हो मेरे साथ रहने आ जायें । पर इस समय वे नहीं आयेंगी यह मैं जानता हूँ । व्यर्थ में मान करवाने का क्या अर्थ ?

बूढ़े आदमी तो मान के भूखे होते हैं भैया । नरसंग कहना चाहते थे पर वे माला फिराने लगे ।

गाँव के चार अन्य लोगों के साथ देवू संमेलन में जा आया था। वह सम्मेलन की प्रशंसा कर रहा था।

लवजी को यह बात पसंद नहीं आयी।

'इसके पीछे जितनी सुधार की भावना होगी उससे अधिक राजनैतिक लाभों की गणना।"

"स्वागत-कर्ता प्रमुख ने कहा तो था कि जिस प्रकार चौधरी चरणसिंह ने किया वैसे ही रमणलाल भा अपनी जाति को राज्य के तख्त तक पहुँचायेंगे।"

"चरणसिंह तो जाट हैं।"

"वे भाई कुछ ऐसा मानते थे कि उत्तर प्रदेश में जिसे जाट कहा जाता है उसे ही यहाँ आंजणा। कुछ लोग पटेल लिखते हैं तो कुछ लोग देसाई और अपनी ओर चौधरी लिखने की परंपरा है।"

"जाति अपने आप में खोज का एक विषय बन सकती है फिर राजकीय स्वार्थ के लिए उसका संगठन बनाना ."

"मुझे तो इसमें कोई बुराई नहीं दिखती। कौन कह रहा था.. हाँ शायद तुम ही कि भारत में, लोकतंत्र में जातियों और छोटे-छोटे गुटों के आधार पर उम्मीदवार चुने जायें तो कोई बुराई नहीं है। इसके अनुसार तो यहाँ लोकतंत्र का विकास ही होगा।"

'वह तो सप्रमाण प्रतिनिधित्व की बात है। जबकि आपके सम्मेलन में तो पूरे राज्य में पार्टी खड़ी करके सत्ता में हिस्सेदारी करने की बल्कि अवसर मिले तो सत्ता को हथिया लेने की पैरवी की जाती है।"

'नहीं नहीं, ऐसा किसी ने गंभीरता से सोचा भी नहीं होगा। रमणलाल ने तो एक शब्द भी इस बारे में नहीं कहा था।"

"हीरूभाई भी तुम्हारी तरह ही सोचते हैं। वे तो इंतजार कर रहे हैं कि कब कांग्रेस का विभाजन हो और कब पूँजीवादी और समाजवादी एक दूसरे के सामने आ खड़े हों।"

बारह नवंबर को रेड़ियो पर समाचार सुनकर लवजी देवू के पास गया। कांग्रेस केन्द्रीय समिति के 21 में से 11 सभ्यों ने इन्दिराजी को झटका दिया था। चलो हीरूभाई को फोन करते हैं। दोनों सहकारी मंडली के कार्यालय में गये। रमणलाल स्वयं प्रजाभारती गये हुए थे।

"वर्षों पूर्व के अनुशासन-भंग के खिलाफ कदम उठाने का अब क्या अर्थ था?" हीरूभाई ने कहा।

'यह तो हारा हुआ जुआरी दो गुना खेलता है – वाली बात हुई। बुद्धि की लड़ाई में वृद्ध मारे गये।" रमणलाल ने स्पष्टता से सहा।

फोन पर क्या क्या बातें हुई – जानने के लिए सभी उत्सुक थे। इन्दिराजी को गालियाँ देने में रणछोड़ का कई लोगों ने साथ दिया। लवजी ने उन्हें समझाया। डाँटा।

"इन लोगों को तो आपने डाँटा पर ठाकोरभाई को किसी ने क्यों नहीं कहा कि आपने "ब्राह्मणी बिगड़े तो " जैसी कहावत का इस्तेमाल क्यों किया ? आपके मुँह से यह शब्द शोभा नहीं देते ?"

"तुम कांग्रेसी हो। जाओ, कहकर आ जाओ। तुम देखना कि थोड़े ही समय में अपनी राजनीति में उनका झंडा फहरायेगा।"

"गाँधीशताब्दी के वर्ष में ही कांग्रेस टूटी।"

"एक तरह यह अच्छा ही हुआ। गाँधीजी की मूल इच्छा फलीभूत हुई।"

"हालाँकि उनकी सूचना के अनुसार कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ताओं का एक जनसेवक संघ बना होता तो प्रजा की रचनात्मक शक्तियों को नांधा जा सकता।"

सुनने वालों को लवजी और देव् दोनों की बातें सच लगती थीं। किन्तु उनका लगाव इन्दिराजी के खिलाफ था। ऐसा उस दिन से हुआ था जिस दिन इन्दिराजी ने मोरारजी से वित्त-मंत्रालय ले लिया था। लवजी ने उन लोगों से कहा कि तुम लोगों को मन मुक्त रखना चाहिए। इन्दिराजी समाजवादी रुख तो स्पष्ट कर चुकी हैं। अब यदि वे उसे तुरंत अमल में ले आयें तो नीरस प्रजा में उत्साह का पुनः संचार हो।

"समाजवाद या साम्यवाद ?" रणछोड़ ने पूछा।

"साम्यवाद को आने से रोकने की शक्ति इस देश में अकेले इन्दिराजी में ही है। नेहरूजी ने जैसे समाजवादी समाज रचना का प्रस्ताव पारित करवाकर समाजवादियों को कमजोर बना दिया था उसी प्रकार इन्दिराजी ने बैंकों का राष्ट्रीय-करण करके साम्यवादियों को तोड़ दिया है। डाँगे वाली साम्यवादी पार्टी ने तो इन्दिराजी का नेतृत्व स्वीकार भी कर लिया है।"

"साम्यवादियों में भी प्रकार हैं ?" भमर ने पूछा।

लवजी ने साम्यवादियों, मार्क्सवादियों और नक्सलपंथियों के प्रकार और उनकी नीतियों के अन्तर को समझाकर कहा कि जिस देश में साम्यवादी भी दक्षिणपंथी हो सकते हों उस देश के समाजवाद से तो आप जैसों को डरना नहीं चाहिए।

"यहाँ है ही क्या जो ले जायेंगे ?" रणछोड़ उठ खड़ा हुआ।

"क्यों क्या है ?" माधव ने रणछोड़ की संपत्ति गिना दी।

"पर कर्ज कहाँ कम है ?"

"कर्ज पाटने की आपकी इच्छा है क्या ?" भमर की बात पर रणछोड़ हँस पड़ा। विसर्जन के पहले सब पुस्तकालय के पास खड़े हुए।

"लवजीभाई, एक बात मन की मन में ही रह गयी साली।" कौतूहल जगाकर रणछोड़ बोला – "आप पढ़-लिखकर इतने आगे आये। लेखक के रूप में आपको पुरस्कार भी मिला। गाँव की इज्जत बढ़ायी पर एक बार "फोरेन रिटर्न" हो आओ।"

"क्यों मेरा गाँव में रहना सहन नहीं होता ?"

रणछोड़ को तुरंत कोई जवाब नहीं सूझा। लवजी ने समझा कि मैं उसके मन की थाह पा गया हूँ। किन्तु और लोग भी यही अर्थघटन करें इसके पहले ही रणछोड़ बोल पड़ा।

"देखा देवूभाई ? हम सब लवजीभाई को सिर पर बैठाकर घुमते हैं। इनकी बात भी नहीं टालते। खुले आम हमारा अपमान करते हैं तो भी हम सह लेते हैं तब भी है हमारी कोई कद्र इनके लिए ?"

"कद्र करके ही तो इस साल तुमको प्रमुख पद पर चालू रखा है।" कहकर वह खेत की ओर चला गया।

शांति किसी के घर बैठने गयी थी। बाहर से ताला मारकर गयी थी। लवजी को आया जानकर उसने चाबी भिजवा दी।

ऐसी घटना घटती तो लवजी को बहुत खटकता। ऐसी कौन-सी बात में व्यस्त होगी कि स्वयं न आ सकी ?

अलगौझे के बाद शांति बहुत खुश थी। जैसे स्वर्ग मिल गया हो। हमारे यहाँ यह है, हमारे यहाँ वह है। जो भी आता बर्तन देखकर दंग रह जाता। रूपा वहाँ उपस्थित होती तो अपनी ओर से प्रोत्साहन देती – अभी बूढा-बुढऊ के बर्तन का बँटवारा तो हुआ ही नहीं। और दो बड़े बड़े-घड़े तो काकी के मायके में रखे हैं।

जो भी आता शांति उसे चाय पिलाये बिना न जाने देती। सब कहते हैं शांति बहू बोलने-चालने में बहुत अच्छी है। ईजू तो अपने अभिमान से ही ऊपर नहीं आती। पर यह ? इतने शिक्षित आदमी की पत्नी है, पर मजाल है कि जरा भी गरूर हो ! पानी भी आप ही भरती है। भैंस होती तो गोबर–पानी भी आप ही करती।

कंकु या ईजू की कोई बुराई करता तो शांति चुपचाप सुन लेती, समर्थन न करती। स्वयं कभी एक शब्द भी उनके विरुद्ध नहीं बोलती थी। लवजी ने तो कह ही रखा था परंतु वह स्वयं भी समझती थी – इन लोगों का क्या भरोसा ? हमने जरा सी बात की हो और ये बड़ा बवाल कर दें। न कुछ लेना न कुछ देना, जान का जंजाल। वह कुछ सुनती अपने बारे में और मन व्याकुल हो उठता, तो लवजी के सामने अपना गुबार निकाल देती। लवजी बिना किसी उत्तेजना के उसे समझाता। बड़ों के गुण बताता।

शांति कहती कि बूढ़ा यहाँ आती ही कब है ?

हमें जाना चाहिए कि उन्हें यहाँ आना चाहिए ? सच पूछो तो हमें बँटवारे की बात ही नहीं करनी चाहिए। वहाँ जगह की भी कमी न थी। पर मैंने सोचा, घर खाली पड़ा है चलो उसका इस्तेमाल करें। वहाँ पढ़ने-लिखने में मन कम लगता था। फिर यहाँ पाखाना, बाथरूम भी थे। आ गये रहने। बाकी माँ को तो बुरा लगा ही होगा। दुख के कारण ही शायद वे यहाँ आने से कतराती हों।

उन्हें यहाँ आना पसंद ही नहीं है-यह तो हो ही नहीं सकता । उनका तो पूरा जीवन यहीं बीता है । पुराना घर तो तुमने देखा ही नहीं होगा । तुमने कहा होता कि चलो हमारे साथ, तो उनका भी मन होता ।

'ईजू तो कहने भी लगी है कि बूढ़ा को भरोसा था इसलिए यहाँ रहने लगीं क्योंकि टींबा वाली के साथ गुजारा नहीं होता ।"

"लोगों की बातों में सिर नहीं खपाना चाहिए ।" शांति सिर हिला देती । लवजी थोड़ी देर बाद पूछता "सच्च बताना बूढ़ा अपने साथ रहें, यह तुम चाहती हो कि नहीं ? नहीं न ?"

शांति बात टाल जाती । लवजी समझता था कि माँ यहाँ आयेंगी तो शांति का मेरे साथ एकांत छिन जायेगा । हर समय सम्मान करते रहना पड़ेगा । और घर-गृहस्थी माँ के अनुसार चलानी पड़ेगी । वे बिना कहे तो नहीं रहेंगी – बहू, ऐसा करो । बहू वैसा करो ।

शांति स्वयं घर की व्यवस्था करना चाहती है ? ईजूभाभी को तो आदत पड़ गयी है । और अभी तो माँ मेरे साथ आने की स्थिति में भी नहीं है । ईजूभाभी की प्रसूति के लिए उन्हें वापस जाना पड़ता ।

शाति उत्साह से कहती है – वहाँ तो मैं जाती ।

तो चलो, हम दोनों चलकर कहते हैं – माँ, चलो हमारे साथ रहो । हमें तुम्हारे बिना अच्छा नहीं लगता । तुम्हें वहाँ अच्छा लगेगा । तुम्हारी तो पूरी जिन्दगी उसी भूमि पर गुजरी है । चलो ।

शांति हँस पड़ती । इतना भी नहीं समझते ? अभी नहीं आयेंगी ।

लवजी पढ़ने चला जाता । शांति रेडियो बजाती तो लवजी कहता – धीमे बजाओ ।

जब वह किसी के घर न गयी होती या कोई अपने घर न आया होता तो वह जल्दी सो जाती ।

लवजी थोड़ी देर तक शांति की निद्रा और व्याकुल करते संयम के बारे में सोचता रहता फिर पढ़ने लगता । जब नींद नहीं आती तभी कुछ लिखता । एक अदृश्य व्यक्ति को संबोधित कर लिखने की एक शैली बनती जा रही थी । वह बराबर कोशिश करता कि वह अदृश्य व्यक्ति जैमिनी न बन जाय । पर अपनी कोशिशों में वह अक्सर नाकामयाब रहता ।

जैमिनी विदेश जाने की कोशिश में है । अब वह मार्क्सवादी नहीं रही । ऐसे बहुत-से आदमियों को अमेरिका अपनी ओर खींच लेता है । शायद उसे स्कॉलरशिप भी मिल जाये । कॉलेज के पते पर उसने फार्म भेजा था । कारण लिखा था–एक के बदले दो फार्म आ गये हैं, इसीलिए भेज रही हूँ । इच्छा हो तो भर कर भेज देना । ऐसा न सोच लेना कि मैं तुझे साथ ले जाना चाहती हूँ । तू सोमपुरा में रहकर भी मुझसे दूर नहीं रह सकता – मुझे विश्वास है । मैं तो ऐसे ही जा रही हूँ । घूम आऊँ दो-चार साल । आनंद कर लूँ । शायद कोई "दूल्हा" मिल जाये ।

लवजी यह वाक्य पढ़ते ही आगबबूला हो गया। कोई दूल्हा। अचानक वह असहिष्णु हो उठा। जैमिनी, तुझमें इतनी शक्ति है कि तू किसी और से...?

कैसी विचित्रता है! विवाह की राय उसने स्वय जमिनी को दी थी। उसने तो यूँही बड़ी सहजता से लिखा है। फिर भी सहन नहीं हुआ? वह तो अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए तैयार थी। आज भी होगी।

वह स्वय भी अमरिका जाये तो जैमिनी से अलग रह सकता है? किसलिए रहे अलग? किस लिए? कब तक?

निद्राधीन शांति को स्पर्श करने से शांति की निद्रा नहीं टूटती। देह थककर निद्रा की शरण में आ जाती है। किन्तु मन को मोक्ष नहीं मिलता।

अमरिका जाने के बाद शायद जैमिनी वापस नहीं आयेगी। बहुतों के साथ ऐसा होता है। वापस आने के बारे में सोचते-सोचते वहीं के नागरिक बन जाते हैं। जैमिनी के साथ भी यही होगा। वह यहाँ किसलिए वापस आयेगी? ऐसी कौन सी चीज है जो उसे यहाँ वापस खींच लायेगी? कोई नहीं? तो फिर वह किसलिए मेरे पास फार्म भेजती है? फॉर्म भरकर भेज देने में क्या हर्ज है? जैमिनी भी सोचेगी चलो अनुकूल उत्तर आया। स्कोलरशिप मिलने के बाद भी न जाने का निर्णय लिया जा सकता है।

यह तो तय है कि सोमपुरा में अधिक नहीं रहा जा सकता। सारंग के कॉलेज में भी दरार तो पड़ ही जायेगी। सभी को चर्चा में रुचि है किन्तु अपना-अपना अभिप्राय ही उनकी अपनी दलील है। ज्ञान तो क्या, जानकारियों को विकसित करने में भी किसे रुचि है?

साम्प्रदायिक दंगे के दिनों में सारंग से पकड़े गये पंद्रह आदमी जब निर्दोष छूट गये तो कॉलेज के अध्यापक खंड में ही चाय पीते समय सब लोग आनंद मनाने लगे। लवजी ने कहा—

"जो लोग छूटकर आ गये हैं वे लोग शायद निर्दोष होंगे किन्तु हम तो गुनहगार हैं ही। हममें से किसी के पास भी अध्यापकों वाला मस्तिष्क नहीं है। हम सब साम्प्रदायिक हैं। जो लोग छूट कर आये हैं यदि वे हिन्दू न होते तो क्या हम लोगों को इतनी खुशी मिली होती?"

"आज तो सारंग के मुस्लिम भी खुश हुए होंगे।"

"आप तो चौधरी साहब इसी साल से यहाँ हैं।"

"जिसका पूरा परिवार जल गया, उसे देखा था आपने?"

"उसे अपने कर्मों का ही फल मिला है।"

लवजी सभी के मुँह से एक ही किस्म की बातें सुनकर व्याकुल हो उठा। सभी ओर से एक ही प्रकार के अभिप्राय आ रहे थे। सबके बोल चुकने के बाद उसने कहा

"वह व्यक्ति नालायक होगा, मानता हूँ। फिर भी अधिक से अधिक हम यही सोच सकते हैं कि उसे कानून सजा दे।"

"कानून तो पापियों को ही शंका का लाभ अधिक देता है।"

"फिर भी जब इस आदमी ने पाप किया था, उसी समय उत्तेजित होकर किसी ने उसकी हत्या कर दी होती, तो भी बात को समझा जा सकता था। यह तो, योजनाबद्ध, ठंडे कलेजे से "

"आप नहीं जानते, यह आदमी क्या योजना बना रहा था? अहमदाबाद से लोग डरकर भागकर आते थे तब यह अपने घर के आगे पत्थर पर बैठकर गँडासे में धार देता था। कहता था कि इस गँडासे से इतने लोगों का गला काटना है। फलाने को छूरे से मारूँगा और..."

"उसने कहा और उसकी बस्तीवालों ने सच मान लिया?"

"सच मान लेने के कारण थे।"

एक अध्यापक ने बात समेटते हुए कहा—

उसने गत वर्ष कचरा के भाई तुरिया के लड़के की पत्नी को छेड़ा था। दिन दुपहरे बवाल हुआ था और उसने तुरिया कचरिया दोनों भाइयों के परिवार वालों को घायल कर दिया था। फिर भी उसे पकड़कर पुलिसचौकी तक ले जाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई थी। वह तो होमगार्ड वाले बारोट ने उसे किसी तरह पकड़ा था।

ठीक से दवा न हो पाने की वजह से उनमें से एक का घाव पका और उसकी मृत्यु हो गयी। जब तक केस चला, वह जेल में रहा। फिर छूट गया। जिस दिन से वह छूटकर आया, मूँछ पर ताव देकर घूमता रहा। मुस्लिम बस्ती से तो वह अलग ही रहता था। आपने उसका जला हुआ घर देखा था, अभी भी वैसे खड़ा है। वहाँ वह अकेला ही रहता था। पर आस-पास में सभी को डराकर रहता था। जब से वह छूटकर आया तभी से सब चिढ़े हुए थे। मुस्ताक नाम का एक आदमी था। उसका कोई संबंधी अहमदाबाद का कुख्यात दादा है। उसीने उसे छुड़ाया था। उसीकी शक्ति पर वह उस दिन गँडासे में धार दे रहा था। फिर तो उसकी धमकी सुनने वाले संगठित हो गये और रात को चारों ओर से घेर कर उसका घर जला दिया। कहीं जिन्दा बचकर निकल न जाये इसलिए कुछ लोग बाहर से भी आये थे। वे सब उसके पुराने दुश्मन थे।

"उसे अकेले मारा होता तो भी चलो स्पष्ट माना जा सकता था यह तो···"

"गेहूँ के साथ घुन भी पीसे जाते हैं।"

"मेरी आपत्ति इसी से है कि हम इन कहावतों को ज्यों का त्यों मान लेते हैं। एक सामान्य आदमी और एक अध्यापक में इतना फर्क तो होना ही चाहिए कि वह इन कहावतों की धारा से अपने ज्ञान के आधार पर अलग कर सके स्वयं को।"

"आप यदि ऐसी परिस्थिति में फँस जायें तो आप भी इतने तटस्थ नहीं रह सकते ।"

लवजी कुछ न बोला ।

एक दूसरे अध्यापक ने कहा—

"आज जो लोग छूट गये आपको उसीसे आपत्ति है ? आप ऐसा मानते हैं कि इन्हें सजा मिलनी चाहिए ? मैं तो कहता हूँ कि वे सब निर्दोष ही थे । सभी ने कितनी-कितनी कोशिश की तब छूटे हैं ? अंततः पशाभाई को भी सख्त परिश्रम करना पड़ा ।"

"पशाभाई तो गुनहगार को भी छुड़ा सकते हैं ।"

इस अध्यापक-खंड में चिन्तन की अपेक्षा व्यक्तियों की चर्चा ही अधिक होती है । कांग्रेस-विभाजन की बात भी इसी तरह, इसी स्तर पर होती है ।

यहाँ मूल्यांकन पर नहीं, पसंद-नापसंद के आधार पर चर्चाएँ होती हैं ।

क्लास के बाद सब इधर उधर हो जाते थे । जो बैठे होते वे भी विद्याव्यासंग के लिए नहीं, बल्कि कैरम या शतरंज खेलने के लिए । यही उनका दैनिक कार्यक्रम था । लवजी पुस्तकालय में थोड़ा समय बिताता । खेल के मैदान पर गस्त लगा आता या तो मंत्री साहब ने कहलवाया हो तो मंडल के कार्यालय में जाकर बैठता ।

बातें राजनीति या साहित्य की होतीं तो भी अन्य अध्यापक और आचार्य यही मानते कि उन्हीं के बारे में बातें हो रही हैं । मंत्री के साथ लवजी के अच्छे सम्बन्ध होने के कारण उसका लोग सम्मान करते । लवजी को जब इस बात का पता चला तो उसने मंडल कार्यालय जाना बंद कर दिया ।

उसकी यह उम्मीद कि कॉलेज में विद्या का वातावरण सर्जित कर दूँगा, टूट चुकी थी ।

मंडलियों की व्यवस्था सुधारकर गाँवों में व्यवस्था और स्वच्छता का वातावरण निर्मित किया जा सकेगा यह विचार भी टूट चुका था ।

लवजी जानता था कि जब तक संचालन रणछोड़-माधव जैसे लोगों के हाथ में रहेगा, कुछ भी संभव नहीं है । शांति कहती-

"छोड़ो न सब कुछ । गाँव की चिन्ता में आपने लिखना भी बन्द कर दिया है ।"

इन दिनों वह कुछ लिख नहीं सका था । जैसे भूल ही गया हो कि वह कुछ लिख भी सकता है ।

पर लिखे भी क्या ?

ऐसे अनुभव ही कहाँ हैं कि जिन्हें लिखे बिना चलेगा ही नहीं । सुना था कि एक बार भर गर्मी में भी साबरमती में बाढ़ आयी थी । हाँ, यह सच था । उपरवास में घमासान महावट हुई थी । नदी के पट में कितनी सारी फसलें थीं ! फसलों के पास झोंपड़ियाँ और छपरे थे । ऐसा पानी आया कि भेड़-बकरियों और

आदमियों के झुंड के झुंड को बहाकर ले गया। रात्रि का विश्राम अनपेक्षित यात्रा बन गया।

इसके बारे में क्या लिखूं ? रेगिस्तानी भूमि पर विदेशी सेना की तरह आक्रमण करते पानी के बारे में लिखूं। एक परिवार की तरह क्षीण प्रवाह की गोद में बह रहे भेड़-बकरियों और मनुष्यों के बारे में लिखूं ? नींद की शांति और पानी के भय के बारे में लिखूं ? यहाँ गाँव के कुओं में पानी निरंतर नीचे उतरता जा रहा है और वहाँ निद्रा में करवट लेकर दुग्धपान कर रहे बालक की हत्या कर देने वाली माँ की तरह साबरमती व्यवहार कर रही है। यह सब सूझता तो है पर लिखूं क्या ? और लिखे बिना इन याददाश्तों से मुक्ति भी कहाँ है ?

अरे ? कोई बोला क्या ?

नहीं। मैं अकेला हूं। भले नींद न आये। अंधकार ही ठीक है। नहीं तो फिर शांति दिखाई देगी ..उसके गदराये बदन का प्यासभरा लोभ संक्रमित नहीं कर पाता और उसकी नींद खराब करनी पड़ती है। वह न तो कभी विरोध करती है... न पहल ही।

जैमिनी--

क्या उससे दूर भाग जाने के लिए ही वह अहमदाबाद छोड़कर गाँव आ गया था ? शांति ने तो एक बार हंसते हंसते कहा भी था। इतना ही नहीं, जैमिनी को लिख भी दिया - आप यहाँ आकर दस-पन्द्रह दिन रह जायें। लोग भले ही कहते रहें।

ऐसे आती होगी भला जैमिनी ! वह इतनी असामाजिक नहीं है। इसके पहले, इतने दिन तक कलकत्ता में रहकर आ गयी है इसके पीछे भी उसका अज्ञात मन सक्रिय रहा होगा। समस्याओं के समाधान के लिए पलायन···।

अब जैमिनी अमेरिका जा रही है। मैंने अहमदाबाद से यहाँ आकर जो दूरी बनाई है, वह उसे हजार गुना बढ़ा देगी। इस तरह बदला लिया जाता है ?

शांति तो गाँव में आकर पूर्णतया संतुष्ट हो गयी है।

ईजूभाभी को प्रसूति होने के कारण रूपा को उसने यहीं रख लिया है। रूपा कितना भी तूफान करे, कुछ भी तोड़फोड़ करे, वह नाराज नहीं होती, हँस पड़ती है। डांटने के बदले आश्वासन देती है। उसका यह व्यवहार समझ में नहीं आता।

"अरे शांति, जैमिनी को लिखना कि अमेरिका जाने के पहले एक बार यहाँ आ जाये।"

"मैं तो लिख-लिखकर थक गयी। आप ही वीणाबहन को फोन कर दो कि छोटी बहन को लेकर आ जायें।"

लवजी ने फोन नहीं किया।

26

शीत ऋतु में ही पुनः पानी कम पड़ने लगा। देवू ने उसी समय बोरिंग करवाने की इच्छा व्यक्त की। नरसंग ने मना किया। किन्तु देवू नहीं माना। और अंततः एक सौ बारह हाथ की गहराई के बाद पानी मिला। बहतर और बयासी हाथ की खुदाई के बाद तो गाँव में पानी निकलने के उदाहरण अन्य भी थे किन्तु यह तो एक सौ बारह की गहराई। सुनने वालों का मुँह खुला का खुला रह जाता।

चलो पानी निकला तो सही। नरसंग और बंकू के चेहरे पर अद्‌भुत प्रसन्नता थी। उनके अनुसार पानी मिल जाना ही एक बहुत बड़ी घटना थी। दोनों जन बड़ी देर रात तक कोटरी के दरवाजे के पास बैठे-बैठे बातें करते रहे।

"छप्पन के पहले छ हाथ के बाद पानी, अठारह हाथ के बाद पानी तो हम खुद खोदा रहा। ई कुआ खोदा तब बत्तीस हाथ के खुदाई पर पानी मिला रहा।"

'अब तो नल मां आवे तब समझो कि पानी है। एक सौ बारह हाथ। केहू सोचिस रहा ?"

थोड़ी देर में हाथ में पतली लकड़ी घुमाता हुआ लवजी आ पहुँचा। रूपा अपने छोटे, चार महीने के भाई राजा के साथ बैठी खेल रही थी। आदत के अनुसार उसने लवजी के हाथ से लकड़ी ले ली। लवजी खाट पर बैठ गया। नरसंग कह रहे थे राजा का आना शुभ है, पानी तो मिला।

'पिताजी, यह पानी लगातार नीचे उतरता जा रहा है, इसका क्या कारण है ?"

"बोवाई बढ़ी और बरसात कम भयी। बस।" थोड़ी देर बाद खाँसते हुए उन्होंने जोड़ा – पर पानी खत्म नहीं हो जायेगा। नीचे जायेगा पर अलोप नहीं हो जायेगा – "भला पुनाहण कि कौन गाँव है। हुआं एक कुआं है। ऊ के पाँच हाथ मां नाहीं आवत। अतना गहिर हैं, ऊपर से नीचे तक खोदाई भई है।'

इसका अर्थ यह हुआ कि इसके पहले भी पानी नीचे उतरा होगा।"

"और नाहीं का ! नाहीं तो केहू शौक की तई गहरा कुआं खोदे ?"

"पर इस नदी को क्या हुआ ? आप कहते थे कि कुछ भी हो पर साबरमती कभी नहीं सूख सकती। मैंने तो अपनी आँख से अहमदाबाद में उसकी सूखी सतह देखी है।"

"पर परजा-भारती के पास तो गर्मी मां भी बाढ़ आवा रहा।"

"बाढ़ में और दो किनारों के बीच बह रही नदी में कितना अन्तर हो सकता है ?"

नरसंग ने कहा कि गर्मी में भला नदी दो किनारों के बीच बहती होगी ? "जब हम गाड़ी लेके जात रहिन तबौ ज्यादा पानी तो नाहीं रहन रहा। ई बात जरूर रहा कि भद्रकाली के मंदिर से केलिको मिल तक सफेद चांदी के पट अस चमकत रहा और दूसरी तरफ सिर से कमर तक पानी।"

"एक लेखक हैं जयंती दलाल। उनके मुँह से मैंने साबरमती की उस उज्ज्वल

बालू का वर्णन सुना है । और उसके मैली पड़ जाने का गम भी । गम भी कैसा ! मनुष्य की मानवता खत्म हो जाने जैसी बालू की चमक उन्हें पीड़ित करती थी ।"

"अपने इन्दुलाल याज्ञिक के साथ जौन जयंती दलाल काम करत रहे वही ?" नरसंग भगत ने देवू के मुँह से महागुजरात आंदोलन के समय यह सुना था ।

"वह तो बहुत पुरानी बात हो गयी । पर आपको याद रह गयी !"

"पढ़े-लिखे लड़कन की तईं तो माँ-बाप गँवार होत हैं न ।" कंकू ने हँसते हुए कहा । पर यह लहजा लवजी को बुरा लगा । बात वहीं अटक गयी ।

लवजी को एक पल में निरंतर नीचे उतरता जा रहा पानी दिखाई दे रहा था तो दूसरे पल क्षीण होता जा रहा साबरमती का प्रवाह । क्रमशः ओझल होता जा रहा पानी .

शायद इस बारे में कुछ लिखा जा सकता है ।

हरियाली बढ़ रही है और पानी घट रहा है ।

पिताजी ने खखारा । उनका एक और दाँत आज गिर गया ।

उल्लास नहीं रहा । खेत पर तो वह रोज शाम को जाता है । परन्तु पिताजी के साथ दो-तीन वाक्यों के अतिरिक्त अधिक बातें नहीं हो पातीं । यद्यपि उनके पास बैठना अच्छा लगता है । बैचेनी तलछट में चली जाती है ।

एक दिन लवजी घर जाने लगता है तो नरसग कहते हैं-सफेद बैल की दायीं सींग कुछ नीचे झुकी हुई लगती है । है न ? देवू से उन्होंने आज सुबह ही पूछा था । देवू ने संक्षिप्त जवाब दे दिया था - पिताजी आपका मोतियाबिन्द उतरवाने के बाद आपको चश्मा लगने लगा है । फिर भी आप उसे पहनते नहीं । इसलिए आपको ऐसा लगता है । लवजी ने ऐसा कोई उतर न दिया । बल्कि भिन्न-भिन्न कोणों से दोनों सींगो को देखा । शायद बैल ही इस तरह सिर झुकाकर खड़ा रहता है कि ऐसा लगे । नरसंग को इस उत्तर से भी संतोष नहीं हुआ । लवजी एक वहम लेकर घर गया ।

घेमर के घर विवाह था । लवजी ने कहा कि मैं अबतक एक भी बाल-विवाह में नहीं गया हूँ । यह लड़के की शादी थी । हीराभाभी की उमंग की सीमा न थी । कसम खिला गयी । शांति तो बारात में जाने वाली थी ही । लवजी ने देखा कि देवूभाई, ईजूभाभी सब बड़ी सहजता से बारात में जाने के लिए तैयार हैं । इस 1970 के वर्ष में भी बाल-विवाह के स्वागत में देवूभाई किसी से पीछे नहीं हैं । बारात अगले दिन शाम को जाकर दूसरे दिन शाम को वापस आने वाली थी । दूल्हे को ट्रक में ड्राइवर के पास बैठाया गया । पहले बाराती और बच्चे बैठे । फिर पुरुष ।

घेमरभाई फिर बुलाने आये ।

"सुबह में आ जाऊँगा ।" लवजी ने गोल-गोल उत्तर दिया । घेमरभाई ने सबसे कहा था । सुबह भैंसों को दुहने के लिए ट्रेक्टर में बैठकर बारात की औरतें

आयेंगी। लवजीभाई उनके साथ ही आयेंगे। लड़के की शादी बिना शर्त के टीके से हो रही थी। पूरा मुहल्ला तो था ही, गाँव के अग्रगण्य लोग भी आमंत्रित थे।

दर्शक की हैसियत से गये लवजी को वापस आते समय मजा आया। शांति और लीली ने एक गीत गाया था-

"सायकल सीटी बजाये, मोटर सड़क-सड़क जाये।
भैया अपने इस बाजार में, क्या क्या बेचाए ?"

वापस आते समय, दूल्हेराजा के साथ जीप में बैठकर आने का संयोग हुआ। चार माइल की दूरी हुई होगी। खेमरभाई ने पचास रुपये भाड़ा दे दिया था। बारातियों को लाने-ले जाने के लिए ट्रक को एक सौ पन्द्रह अलग से।

लवजी ने सोचा - अच्छा हुआ वह बारात में आया। खेमरभाई का दिल दुखता और मेरे न आने से कोई फर्क नहीं पड़ जाता।

उस दिन हेतीबहन मातमपुर्सी में आयी थीं तो कह रहीं थीं - अब तक वालजी और विपुल के लिए अच्छे-अच्छे घराने आते थे। हीरूभाई की बातों में आकर हमने मना कर दिया। अब तो सौभाग्य से ही अच्छे घर और अच्छी लड़कियाँ मिलेंगी। विपुल शायद आगे पढ़े। वालजी ने तो मैट्रिक करके छोड़ दिया है। उसका मन खेती में लग गया है। इस वर्ष भी उसने संकर-4 बीज में अच्छी कमाई की है। वह पिता को नेता और हीरूभाई को सेवक कहता है। वैसे तो सम्मान सबका करता है। परंतु कुछ पूछना होता है तो सिर्फ हेती से ही पूछता है। दादा-दादी से उसने कह रखा है कि आपके पीछे हम खूब खर्च करेंगे। क्रियाकर्म में मैं पूरे गाँव को खिलाऊँगा। भले पिताजी इन सब का विरोध करते हों। उनसे एक पैसा नहीं लूँगा। गलबाकाका भी भले न दें। गलबा भी कहता है : उधार लेकर खर्चा करूँगा, पर भतीजे से कम नहीं दूँगा।

लवजी ने देखा कि मरने की इच्छा न होने के बावजूद वृद्ध लोग यहाँ पूछते फिरते है - हमारे बाद, हमारे लिए क्या करोगे ?

एक दिन उसके मनने उसीसे पूछा - तुम अपने मातापिता के लिए क्या करोगे ? गाँव में एक रात्रि-छात्रालय बनवाया जा सकता है। बाल-मंदिर भी तो नहीं है।

जेठाकाका आ पहुँचे। उन्होंने करसनबाबा की बात चलाई। उन्होने कह रखा है - मैं मरने लगूँ तो मेरे मुँह के पास कान लाना। मुझे थोड़ा बताकर मरना है। वह सब तुम्हें धर्म-कार्य में खर्च करना है। मेहनत की कमाई नहीं है वह। वह तो चाहे जो हो। पहले तो पता चले कि कितना है। फिर सोचेंगे कि क्या करना है ? बुढऊ अभी क्यों नहीं बताते ? जेठाकाका ने बताया रणछोड़ अपने हिस्से को माँगेगा। फालनू खर्च करेगा।

रूपा ने आकर बताया - देवू सफेद बैल को सारंग ले गया है। अब उसकी सींग स्पष्ट झुकी हुई दिखने लगी थी। डाक्टर ने बताया - सींग में केन्सर है।

ऑपरेशन के समय लवजी पहुँच गया था। बड़ा भयानक ऑपरेशन था। देवू से देखा भी न जा सका।

पट्टी बाँध दी गयी। अब बैल एक सींगवाला हो गया था। बड़ी मुश्किल से वह चल पा रहा था। खूँटे से बँधे बैल के पास नरसंग के पहुँचते ही उसने सिर नीचे झुका दिया। देवू ने कहा – सिर में दर्द हो रहा है। और जाकर सो गया। नरसंग बड़ी देर तक उसकी पीठ सहलाते रहे। अब तो भाग्य में होगा तभी यह बैल अच्छा होगा।

शाम होते–होते कंकू आ पहुँचीं। वे तो सिवान में पाँव रखते ही रोने लगीं। नरसंग ने भी आँखें पोंछीं।

नरसंग हफ्ते भर नाँद के पास सोये। कहीं बैल खरोंच कर अपने आप को घायल न कर ले। बहुत इन्जेक्शन लगवाये गये। सिकाई की गयी। इलाज में किसी किस्म की कोताही नहीं की गयी परन्तु बैल अच्छा न हुआ।

उस दिन भी भोजन कंकू ने बनाया। नरसंग के लिए भेजा भी गया था। लेकिन दोनों को विश्वास हो गया था। खाया किसी ने नहीं। बैल की मौत के दूसरे दिन भगत ने लवजी से बात की थी। तब तक उस सफेद बैल को लोग बछड़ा ही कहते थे। किस तरह उसे बेचा गया था और किस तरह वापस लाया गया, यह सब जैसे कल की घटना थी। नरसंग को याद आ रहा था।

लवजी को याद आया – वालजी के जन्म को कितने वर्ष हुए?

भगत कुछ आश्वस्त हुए। कुछ तटस्थ होकर बोले – तुम लोगों के लिए तो अब ट्रैक्टर और मोटर परन्तु हमारे लिए तो अभी गाय–बैल ही हमारी संतानें। धनतेरस के दिन हम व्यर्थ में थोड़े ही पूजा करते हैं? देवू का तो क्या? कहे तो अभी एक दूसरा बैल ले आयेगा। पर घर में पला–बढ़ा पशु तो अपने परिवार का एक सदस्य होता है। फिर तो सभी भैसों की भी बात होने लगी।

लवजी ने सोचा वह कहानी लिखेगा तो ऐसे किसी विषय पर लिखेगा। जहाँ मनुष्य और पशु सभी एक परिवार की तरह रहते हों। जहाँ एकदूसरे की संवेदनाओं को समझने में भाषा का व्यवधान न हो। मनुष्य और मनुष्य के बीच ही नहीं, प्रत्येक जीव के मध्य ऐसा व्यवहार हो जिसके लिए शब्दकोश से कोई परम्परागत संज्ञा का उपयोग न करना पड़े। वातावरण स्वयं वाचाल हो उठे ···।

बस, जब लिखूँगा तो कुछ ऐसा ही लिखूँगा। मनुष्य ने भाषा की खोज की उसके पूर्व की बात और भविष्य की भी···

इसी प्रकार एक शाम बीते हुए वर्षों की बातें सुनने के बाद लवजी विचारों में खोया था और नरसंग खाट पर पाँव रखे, तिरछे बैठे, दायें हाथ से गुदड़ी का का सहारा लिए माला फिरा रहे थे कि अचानक वे चौंक उठे।

खाट काँप उठी। हल्की सी चरमर्र हुई।

माला वाला हाथ अभी भी उठा हुआ था । उनकी आँखें अभी भी बन्द थीं ।

थोड़ी देर तक वे उसी प्रकार ध्यानमग्न खड़े रहे ।

रुकी हुई साँसों को संतुलित करके वे बैठे तब तक तो लवजी उन्हें अवाक् देखता ही रहा । कुछ पूछ ही नहीं सका ।

पास में आकर बैठते हुए उसकी साँसे रूँध गयी हो ।

"क्या हुआ पिताजी ?"

भगत के होंठ काँपे । लवजी को भगवान का नाम सुनाई दिया ।

"देवू कहाँ गवा ?"

लवजी ने हाथ के इशारे से खेत के ढलान की ओर बच्चे को गोद में लिए खड़े देवू को दिखाया ।

"उसे कहो ट्रेक्टर लेके जल्दी जाय । गोकुलिया के पूरब तरफ अहमदाबाद के लिए एक कच्चा रास्ता है । उससे पाँचेक कोस अहमदाबाद की एक ओर एक रेंड और महुवा आमने सामने हैं । उहाँ जाव के देख आवे । सारंग से केहू के जीप मिल जाय तो ऊमाँ चला जाय ।"

"सारंग से जीप तो मिल जायेगी । देवूभाई आकर ट्रेक्टर तैयार करके जायेंगे तो देर हो जायेगी । आपने जो जगह बताई, मैंने उसे देखा है । मैं दौड़ता हुआ जाता हूं । वापस न आऊं तब तक किसी से मत बताना ।" लवजी ने अंतिम वाक्य तो दौड़ते-दौड़ते ही कहा ।

आश्चर्यचकित देवू ईजू को बच्चा पकड़ाकर वहाँ आया –

भगत ने बस इतना कहा –

"लवजी क आवे देव ।"

देवू परेशान था – "पर वह दौड़ता हुआ क्यों गया है ?"

"हम भेजा है ।" इतना बोलकर वे आँखें मूँदकर माला फिराने लगे ।

रमणलाल हमेशा कार में बायीं ओर बैठते थे । एक बार एक दुर्घटना घटी थी । ज्योतिषि ने एक बड़ी दुर्घटना की आगाही की थी । तब से उन्हें बायीं ओर सुरक्षा दिखाई देती थी ।

कच्चा रास्ता पूरा होता है । नाले के पास चढ़ान आया । इतने में सामने से तीव्र गति से आ रहे ट्रक पर नजर गयी । ट्रक सड़क की दायीं ओर के बजाय बायीं ओर और बिल्कुल किनारे चल रहा था । रमणलाल ने घबराहट में ड्राइवर से कहा – "बायें" । हीरूभाई भी घबरा उठते हैं । किन्तु वे कुछ बोले इसके पहले ट्रक का ड्राइवर गति कम करने के बजाय ट्रक को उसी गति में दायीं ओर मोड़ देता है । और कार का बायां हिस्सा ट्रक के कोने से टकरा जाता है । कार उछलकर पन्द्रह फुट दूर गड्ढे में गिरती है ।

कार से बाहर आ गिरे हीरूभाई घिसटते हुए पास में आते हैं । देखते हैं । *ट्रकवाला नहीं है । ड्राइवर के पेट में स्टीयरिंग-व्हिल दबा हुआ है* । रमणलाल की

जाँघ से बहे हुए रक्त से उनके वस्त्र भीगे हुए हैं। कार की फटी हुई सीट पर से लगातार खून बह रहा है। वे बेहोश हैं। ड्राइवर सब कुछ देख तो सकता है, किन्तु अपनी जगह से हिल नहीं सकता।

उछलकर गिरी हुई कार का इन्जन कैसे बन्द हो सकता है, हीरूभाई को आश्चर्य है। आग लग गयी होती तो ?

पास के खेत से एक किसान दौड़ता हुआ आता है। उसकी मदद से पहले हीरूभाई ड्राइवर को बाहर निकालते हैं। वह बाहर आते ही लेट जाता है। उसे उल्टी होने लगती है। थोड़ी देर उठकर बैठता है।

किसान रमणलाल की कलाई पकड़कर देखता है। हीरूभाई को मालूम था साँस चल रही है। परन्तु इस प्रकार रक्त अधिक बह गया तो ? होश में लाने के लिए क्या करना चाहिए ?

ठीक अठारह मिनट में लवजी जीप लेकर वहाँ पहुँच जाता है। रमणलाल की जांघ पर बँधा हुआ साफा भी ठीक नहीं करता। हीरूभाई को सहारा देने के लिए इशारा करता है। एक घण्टा पूरा हो उसके पहले अहमदाबाद।

रमणलाल का इलाज शुरू हुआ। ऑपरेशन थियेटर में जाने के बाद खतरा नहीं है, जानकर हीरूभाई को लगा कि उनका कंधा बहुत दुख रहा है। घुटने में भी चोट लगी थी।

लवजी फोन करता है। बालूभाई और वीणाबहन दौड़कर आते हैं। रमणलाल को खून चढ़ाया जा रहा है।

घर पर समाचार कैसे पहुँचायें ?

बालूभाई होस्पिटल से ही फोन जोड़ देते हैं। लवजी हेतीबहन से बात करता है, सहजता से। एक बार तो हँस पड़ता है।

वीणाबहन को आश्चर्य होता है। जैमिनी ने एक बार कहा था—जड़ है वह तो।

आज सच लगा। अभी फोन चालू ही था। लवजी जो कहना चाह रहा था, कह नहीं पा रहा था। अंत में हार जाता है।

"तो ऐसा करो, वहाँ से सोमपुरा में मण्डली को फोन लगाओ। कोई न उठाये तो सारंग से अपना ट्रक मँगा लो। वालजी, देवूभाई और पिताजी को लेकर आ जाओ।"

फोन रखने के बाद लवजी बालूभाई और वीणाबहन से कहता है—

"हेतीबहन सच जानकर पता नहीं क्या करने लगेंगी। ऐसे अहमदाबाद आने तक तो ठीक है। परन्तु अभी कुछ जान जायें तो उन्हें आघात लगे और क्या हो......"

"हाँ देखो न, आपने इतनी सहजता से बात की फिर भी उन्होंने अभी आने की जिद की।"

"सोनीबहन का भी ऐसा ही है। हीरुभाई प्रजा-भारती में होते हैं तो आपको ऐसा लगे कि सोनीबहन उन्हें पहचानती नहीं। कभी-कभी तो कई दिनों तक दोनों में वार्तालाप ही संभव नहीं हो पाता। परन्तु जब वे बाहर से आने वाले होते हैं तो सबको खिलापिलाकर वे चौखट पर बैठी रहती हैं। एक बार मैं वहाँ था। मैंने तो ग्यारह बजे खबर खा लिया। परन्तु सोनीबहन एक बजे तक वहीं बैठी रहीं।"

"पागलपन, और क्या?" बालूभाई ने कहा। वीणाबहन ने अपना अभिप्राय नहीं दिया।

"आप शायद विश्वास नहीं करेंगे पर मैं तो कहूँगा कि हीरुभाई और रमणलाल जान लगाकर सामाजिक-राजकीय प्रवृत्तियाँ करते हैं इसके पार्श्व में सोनीबहन और हेतीबहन का सहारा ही है।"

"मतलब?"

"मानसिक बल तो है ही, आर्थिक मदद भी उतनी ही। सोनीबहन ने दो भैंसे पाल रखी हैं और ससुरजी की मृत्यु के बाद सारी खेती की देखरेख भी वे ही रखती हैं। सप्ताह में दो दिन बदरी जाती हैं।"

"पर रमण ने तो दूसरी प्रवृत्तियों में बहुत कमाया है।"

"ट्रांस्पोर्ट की आय तो कम हो गयी। फिर तो आप भी अलग हो गये। पेट्रोलपंप भी उन्होंने गत वर्ष बेच दिया। गत चुनाव में कर्ज का भुगतान कर दिया। अब तो संपत्ति के रूप में एक मात्र खेती बची है। परंतु वह तो हेतीबहन की देखरेख और वालजी की मेहनत। लोग भले रमणलाल को लखपति मानते रहें"

"मैं तो मानता ही था।"

रमणलाल की जांघ की हड्डी चकनाचूर हो गयी थी। बालूभाई के पूछने पर नर्स ने बताया – "पट्टी बाँधी जा रही है।"

"हेतीबहन के आने तक रमणलाल होश में आ जायेंगे?" लवजी ने भोलेपन से पूछा।

"बच गये" कुछ सोचते हुए से, जैसे स्वगत बोल रहे हों, हीरुभाई बड़बड़ाये। उनका हाथ पुनः कंधे पर चला गया।

"आपको कम नहीं लगा है। जाइए आराम कीजिए। नहीं तो कल खड़े भी नहीं हो पाएँगे।"

हीरुभाई के मन में एक दूसरी बात थी। हेतीबहन आयें उसके बाद ही आराम करूँगा। रमणलाल ऑपरेशन थियेटर में हों और वे आ जायें तो!

शायद सभी के मन में एक अमंगल दहशत थी। किसी भी क्षण.. कुछ भी हो सकता है।

रात के एक बजे देवू सबको लेकर आ पहुँचा। रमणलाल के पूरे दाहिने पाँव

में प्लास्टर बँधा हुआ था। हाथ की हड्डी भी चटक गयी थी। माथा छिल गया था।

पिताजी साथ में आये थे। मर्यादा और लिहाज के कारण हेती कुछ न बोल सकी थी। मात्र सिसकती रही। रमणलाल की भीगी आँखों को देखकर लवजी बोला –

'पिताजी आइए, बाहर बैठते हैं।"

भगत ने माला बनियान की जेब में रख ली।

लवजी ने पिताजी को पानी दिया तो उसने पाया कि उनका हाथ गर्म था। लवजी के मन में प्रश्न हुआ – यह बुखार उतरेगा ?

उसके मन में कोई दूसरी ही गणना चल रही थी।

परन्तु नहीं। भगत जिस तरह से बात कर रहे थे उसमें बुखार का असर नहीं था।

एक घट रही घटना को जिस तरह भगत ने देख लिया था, जिस तरह उन्होंने लवजी को भेजा था इस बारे में हीरूभाई लगातार सोच रहे थे। वे पिछले छः महीने से एम. एन. राय की पार्टी-विहीन जनतंत्र की भावना की तुलना गाँधी-विनोबा के विचारों के साथ कर रहे थे। एक ही प्रश्न का समाधान नहीं मिल रहा था – सर्वसंमति संभव है ? सभी लोग समझदारी के एक ही धरातल पर आकर निर्णय ले सकते हैं ? यदि एक आदमी दूसरे आदमी को भी न समझ पाता हो तो –

परन्तु नहीं, भगत ने जो आरपार देखा है वह तो चमत्कार नहीं है. वास्तविक घटना है। यह सब सुना होता तो भी प्रश्न किया जा सकता था। यह तो निजी अनुभव की बात है। मानवचेतना की व्यापकता में विश्वास हो गया। आत्मशक्ति के जागृत होते ही सब कुछ पारदर्शी हो जाता है।

हीरूभाई उठे तो जो सबसे पहला शब्द उनके मस्तिष्क में आया था वह था – सर्वसंमति......

पार्टी नहीं चाहिए। मनुष्य को विभाजित करने वाली समग्त बातें बंद हो जानी चाहिए।

उन्होंने लवजी से अपने विचारों की बात की। सोनीबहन उन्हें सुनती हुई बैठी रहीं और वे दोनों एम. एन. राय और "न्यू मार्क्स" की चर्चा करते रहे, दूसरे दिन तक।

डाक्टर ने रमणलाल से पाँव हिलाने-डुलाते रहने के लिए कहा था। सख्त दर्द हो रहा था।

भगत ने सोमपुरा वापस जाते समय सबसे कहा था कि जो उन्हें दूर से दिखाई देने वाली बात है, कोई किसी से बताए नहीं।

उस दिन तो पूरे इलाके में अफवाह फैल गयी – रमणलाल नहीं रहे...

हाल-चाल पूछने आये घेमरभाई ने कहा कि जिसके लिए ऐसी अफवाह उड़ती

है, उसकी उम्र लंबी होती है । हेतीबहन बिल्कुल नहीं चाहती थीं कि अफवाह की बात वहाँ हो । परन्तु उनके कुछ कहने के पूर्व ही रमणलाल बोल पड़े –

"जब से मैं होश में आया हूँ, ऐसा लगने लगा है कि मेरा पुनर्जन्म हुआ है ।"

वीणाबहन घर से खाना बना लातीं । समाचार मिलते ही जैमिनी ने अमेरिका से फोन किया था ।

रमणलाल बालूभाई के साथ कांग्रेस 'आर' में नहीं जुड़े थे किन्तु मित्रता यथा-वत् थी ।

रमणलाल अच्छे हो गये तो वीणाबहन से कहा – लवजी पीएच. डी. के लिए स्कॉलरशिप मिलने के बावजूद अमेरिका क्यों नहीं जाता ? जमिनी ने इसके लिए कितनी जहमत उठायी परन्तु यह तो यहाँ जिद्दी बना बैठा है ।"

"वह जिद्दी नहीं, विचारक है । जो योग्य समझेगा करेगा । जैमिनी ने जैसा सोचा वैसा किया, अब लवजी जो सोचेगा करेगा ।" बालूभाई ने रमणलाल को चुप देखकर कहा – "उसने एक बार कहा नहीं था ? प्रेम-विवाह व्यक्तिगत आदर्श है और विवाह प्रेम सामाजिक आदर्श ।"

"परन्तु वह तो व्यक्तिवादी है ।" वीणाबहन ने विश्वासपूर्वक कहा ।

"वह व्यक्तिवादी होता तो बिना किसी के बारे में विचार किये हुए, अपने श्वसुर के ही पैसे से अमेरिका चला गया होता और जैमिनी के साथ लहर मार रहा होता । वीणा, यदि तुम मुझे नहीं समझ सकी तो लवजी को क्या समझोगी ?" बालूभाई के साथ रमणलाल भी हँस पड़े ।

27

लवजी जैमिनी को पत्र लिख रहा था । कंकू ने बताया कि कल नरसंग का उपवास है । पत्र अधूरा छोड़कर, पिताजी को दूध देने के लिए वह खेत की ओर चल पड़ा । वापस आकर महादेव के मंदिर में हो रहे भजन में जाऊँगा । जैमिनी का पत्र रात में पूरा करूँगा । वहाँ रुकूँगा नहीं, दूध देते ही वापस लौट पड़ूँगा । सोचता हुआ लवजी चल पड़ा ।

नरसंग भगत बेचैन थे । गर्मी की उमस के तो वे अभ्यस्त थे । यह किसी दूसरे ही समाचार का संकेत था । टींबा की सीम की ओर से आ रही गिद्धों की चीख सुनकर उनकी माला रुक गयी । अंत तक भी नहीं पहुँची ।

इतने में लवजी आ पहुँचा । इसके पहले यदि ऐसा कुछ होता था तो सारी चिन्ता भगवान के हवाले करके वे वापस स्मरण में उतर जाते थे परन्तु आज वे लवजी से कहे बिना नहीं रह सके ।

"छाती मां कुछ घबराहट अस होत है ।"

लवजी का वापसी के लिए उठा हुआ पैर जैसे धरती में जड़ बनकर गड़

गया हो। वह उनके पास गया। खाट पर बैठ गया। गबराहट होती है कि दुखता है? कहीं बी. पी. या "अटेक" जैसा तो कुछ नहीं होगा? श्वास के बारे में, बायें हाथ की नस के बारे में, दर्द की जगह के बारे में सब पूछने लगा। नरसंग की समझ में नहीं आया – लवजी यह सब कुछ क्यों पूछ रहा है? परन्तु वे लवजी के सभी प्रश्नों का जवाब देते रहे। अंत में बोले – "हमारी देह क तो कुछ नाहीं भवा। यह तो..."

"कई बार उमस के दिनों में आदमी को बैठे-बैठे भी चक्कर आने लगता है।"

"काहे कै चक्कर? कहा तो कि देह दुखत होत तो पता न पड़त? ई तो मन दुखत होय अस जान."

लवजी कुछ समझ नहीं सका। उसने सोचा कि रात यहीं सो जाऊँ। देवूभाई उत्सव के बाद मंदिर से बारह बजे आयेंगे। तब घर जाऊँगा। कैसा डर?

दूध का लोटा वापस किया जा सके इसलिए नरसंग जल्दी से दूध पी गये। सब भूल गये और बोले: "तुमको धक्का खाना पड़ा। तुम्हारी माँ की यह आदत नहीं सुधरेगी।"

लवजी थोड़ी देर बैठा उनसे बात करता रहा। लवजी से बात करते समय नरसंग थोड़ी देर पहले की अपनी घबराहट भूल गये थे। बोले–"लेव उठो, तुम का देर होये।"

रात के नौ बजे थे। दशमी का चन्द्रमा, इतना थका-थका-सा लग रहा था कि जैसे किसी खिरनी के वृक्ष पर बैठकर आराम करना चाह रहा हो। लवजी की समझ में नहीं आ रहा था, चन्द्रमा आज इतना श्रीहीन क्यों है?

रात में चकरोट के रास्ते के बदले खेतों के बीच से आना-जाना अधिक हो जाता था। चकरोट में झाड़-झंखाड़ की परछाइयाँ कभी-कभी जीवंत सी लगतीं। फिर इस भगतबाड़े का चकरोट तो, गाँव के चौक की ओर क्रमशः गहरा होता जाता है। कहा जाता है कि मृत्यु के पश्चात् आदमी का जीव उस स्थान को बारह दिन तक नहीं छोड़ता। लवजी को कौतूहल होता है। परन्तु ऐसे किसी भी जीव से आज तक कभी मुलाकात नहीं हुई। फिर भी कभी-कभी हवा की एक शीतल लहर ऐसी गुजरती है कि रोमांच हो जाता है। वातावरण में जीव आ जाता है।

इस समय खेत की मेड़ों पर चलते-चलते लवजी ने सोचा कि धरती गर्म हो जाने के बाद इस समय सर्प बिच्छू अपनी-अपनी बिलों से बाहर आ गये होंगे। बाहर थोड़ी-सी ठंडक मिलते ही उन्हें भूख लगेगी और वे चारे की खोज में इधर उधर घूमेंगे।

एक प्रसंग याद आ गया – वह अहमदाबाद में अध्यापक था तब की बात है। देवूभाई ने यहाँ से तार किया था जो अहमदाबाद में तीसरे दिन मिला था। घेमरभाई को सर्प ने डँस लिया था। छोटा-सा था साँप। पूले के साथ बँध गया होगा। खेत से चारा लाना होगा। घेमरभाई ट्रेक्टर की ट्रॉली में पूले डाल रहे

थे। हीराभाभी नीचे से उन्हें पकड़ा रही थीं। झोली भरती गयी। उसकी ऊँचाई बढ़ती गयी। फिर तो हीराभाभी पूले उछाल-उछालकर देने लगीं। हीराभाभी के हाथों पूले ऐसे उछल रहे थे जैसे शहरों के स्नानागार में लोग स्प्रिंगबोर्ड से। एक पूला पकड़कर जैसे ही घेमरभाई ने उसे रखना चाहा, उन्हें लगा उँगली में जैसे सुई सी चुभ गयी है।

छोटा-सा साँप था। अरे बाप रे। इतने से के भी जहर होता है!

इसमें उसका क्या दोष? जहर तो प्रकृति की देन है। देवू के आग्रह पर घेमर को दवाखाने ले जाया गया था। वहाँ उसका इलाज हुआ।

लवजी ने यह सब सुना मात्र था। किन्तु इतने लोगों के मुँह से सुना था कि एक-एक शब्द उसे याद था। तार मिलते ही वह शांति के साथ रवाना हो गया था। दोनों मुहल्ले में पहुँचे तब घेमरभाई आँगन में खाट पर बैठे अपने बड़े लड़के को सर्प और बन्दर की एक लड़ाई का आँखों देखा हाल सुना रहे थे। बन्दर कूदकर साँप का मुँह पकड़ लेता था। फिर उसे जमीन पर घिसकर देखता। फिर घिसकर रख देता। साँप जब फिर से हिलेडुले कि फिर कूदकर आता और उसे पकड़कर घिसने लगता। बन्दर आदमी की तरह नमक नहीं खाता है इसीलिए उसे जहर नहीं चढ़ता। मोर भी साँप को मार डालता है।

"पर किसान नहीं मारता।" लवजी ने घेमरभाई के आँगन में पैर रखते हुए कहा। स्वस्थ होने के लिए अभिनन्दन किया। पर घेमरभाई को अचानक क्या हो गया?

आँसू। ऐसे मजबूत आदमी की आँख में आँसू?

शिकायत थी—"ऐन मौके पर ही नहीं आये न? कहाँ थे तीन-तीन दिन तक?"

लवजी के सिवाय किसी और ने बताया होता कि तार तीन दिन देर से मिला तो शायद घेमरभाई विश्वास न करते।

इस घटना को दो वर्ष हो गये या ढाई? परन्तु जैसे कल की बात हो। याददास्त का अंत आया इसके पूर्व लवजी महादेव मन्दिर पर पहुँच चुका था।

देवूभाई तबला बजा रहे थे। घेमरभाई तथा अन्य तीन लोगों के हाथ में मँजीरे थे। जीवन और जबरा नाच रहे थे। उत्सव बड़ी देर तक चलता रहा। अंत में प्रसाद बाँटा गया। सभी ने साखियाँ गायीं। और उत्सव पूर्ण हुआ।

बीड़ियाँ सुलगीं और जीवन ने बिरादरी की पंचायत की बात शुरू कर दी।

सत्ताइस गाँवों के इस समूह में सबसे बड़ा गाँव है – पामोल। बस्ती के साथ-साथ वहाँ अच्छे आदमियों की संख्या भी खूब है। उद्योग-धन्धे में तो आगे है ही। एक युवक ने तो अपने परिश्रम से सारे विश्व में अपना डंका बजा रखा है। परन्तु यह सत्ताइस का समूह बना तब इस सोमपुरा के मुखिया धना ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। बदरी वाले तो बाद में समूह में शामिल हुए। पहले

उन्होंने बहुत आना-कानी की। कह दिया लोगों से—"आपकी जबरदस्ती चलती हो तो जाओ हमारे वहाँ घोड़ा बँधवा देना।" धना मुखिया तो धना मुखिया। ऐसे भला हार मानते होंगे ? पहुँच गये सादरा। अंग्रेज एजेन्सी से प्रार्थना की। सारी बात सुनाकर गुजारिश की। बड़े दिल वाले अफसर ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। दो घण्टे के लिए दे दिये डेढ सौ घोड़े। बदरी के लोग सुबह जाग उठे उसके पहले तो घर-घर के सामने घोडे हिनहिना रहे थे। ठीक दरवाजों के सामने खूँटे गाड़े गये थे।

मान गये भाई, तुम सोमपुरा वालों को। बदरी वाले भी राजी हो गये बिरादरी के गोल में शामिल हो जाने के लिए।

आजकल पंचायत-कार्यों में पामोल बहुत आगे है।

हुआ ऐसा कि एक विवाहित कन्या को उसके माँ-बाप ने दूसरी जगह भेज दिया। फारिगखती करना हो तो दोनों गाँव के पाँच अग्रगण्य आदमियों की राय लेनी पड़े। परन्तु इस घटना में लोगों की तो क्या, कन्या की भी राय नहीं ली गयी थी। बात बाहर आ गयी और दो दिनों के अन्दर ही बड़ी ऊहापोह मची। ले जाने वाला शादीशुदा था। उसके लड़का न था। घर से सुखी था। दो पैसे खर्च करने पड़े तो कभी पीछेहट न करे ऐसा था। पुलिसखाते में भी अच्छी खासी पहुँच थी। खूब समझ-बूझकर खतरा मोल लिया गया। परन्तु सारी बिरादरी नाराज हो जायेगी ऐसी तो उसने कल्पना भी नहीं की थी। खबर मिलते ही घबरा गया। उस लड़की को तो उसने एक परिचित के घर भेज दिया। इसके बाद बात बिगड़ गयी। वह आदमी परनात का तो था ही परन्तु उल्टेमुल्टे कामों में भी बहुत बदनाम था। वह हमारी बिरादरी की नाक काट जाये ? पामोल ने नेतृत्व लिया। भले सिर फूटे परन्तु यह बर्दास्त नहीं किया जा सकता।

ये सारी बातें जीवन ने खुश होकर बतायीं। फिर मूल मुद्दे पर आते हुए बोला। आज पंचायत में सोमपुरा के प्रतिनिधि के रूप में रणछोड़ को सम्मान से बैठाया गया। सम्मान पाकर वह लगातार मान में रहा। एक भी अपशब्द उसकी जुबान से नहीं निकला।

"कितने पंचायती एकत्र हुए थे ?" लवजी ने पूछा।

"दो हजार। बोलने वाले, श्रोता सब मिलाकर दो हजार तो हो ही गये होंगे। भगु महेता बोल रहे थे तो किसी की हिम्मत कि चूँचाँ करे ? बिना माइक के ही जोरदार सुनाई रहा था।"

पंच ने कन्या के पिता तथा दूसरी शादी करने वाले व्यक्ति को दण्ड दिया और कन्या को उसके पहले वाले पति के घर पहुँचा देने का निर्णय लिया। जिस पर अमल करने की जिम्मेदारी सोमपुरा वालों की थी। रणछोड़ जीवन को अपने साथ इसीलिए ले गया था कि मान लो वह नालायक लड़की देने से मना करे या पीछे से हमला कर दे तो ? साथ में जीवन होगा तो बात ही अलग होगी।

'घेमरभाई, आप नहीं गये ?'' लवजी ने घेमर को बिल्कुल चुप देखकर कहा।

"हम तो देवूभाई के साथ में।"

"देवूभाई के साथ में तो कहाँ हम नहीं है ? परन्तु वह तो आकर गले पड़ गया था तो क्या मना करतें ?" जीवन ने बचाव किया। परन्तु उसकी अब तक की बातों से लवजी को पता चल गया कि पंच का फैसला अमल में लाने का काम सोमपुरा को मिला और वह भी उसके माध्यम से - इस बात का रोमांच जीवनभाई को बहुत है।

वीरा ने अचानक पूछा - "आप दोनों भाई इतने पढ़लिखकर ऐसे कामों में क्यों हिस्सा नहीं लेते ?"

"गाँव पर डाका पड़ेगा तो हम पीछे नहीं रहेंगे।" लवजी ने जो सूझा, बड़ी सहजता से कह दिया।

देवू कुछ सोच रहा था। सब उठकर मंदिर से बाहर आये तो उसने जीवन को एक ओर बुलाकर पूछा-"उस औरत को तुम लोगों ने उसके पहले पति के घर छोड़ा इससे वह खुश थी ? तुम लोगों ने उसे दुखों से मुक्त किया है या पिंजरे में बन्द किया है ?"

जीवन सूख गया। "आपकी सारी शिक्षा व्यर्थ गयी।" उसने या किसी अन्य ने उस कन्या से पूछा भी नहीं था। उस बेचारी ने तो घूँघट काढ़ रखा था। उसके चेहरे का भाव देखने की किसी ने आवश्यकता ही नहीं महसूस की थी।

एक अच्छे काम को करने का जीवन का हर्ष लुप्त हो गया। रोमांच की जगह दुःख होने लगा। उसने देवू से कहा कि मुद्दे की बात दिमाग में ही नहीं आयी। कान पकड़ता हूँ। स्वामिनारायण मंदिर का काम पूरा न हो तब तक ऐसी किसी भी पंचायत में भाग नहीं लूँगा। उसने देवू को "सुखी रहो" कहकर तथा लवजी को "गुड नाइट" कहकर घर की राह पकड़ी।

देवू खेत की ओर चल पड़ा, लवजी घर की ओर।

रात के बारह बज चुके थे फिर भी मुहल्ले की औरतें कंकू माँ के पास छीकनी सूँघने आयीं थीं। लवजी और घेमर को आया जानकर वे सब चली गयीं। कटोरे में रखे दूध को दिखाकर शांति सो गयी। उसे विश्वास था कि जैमिनी को शुरू किया पत्र पूरा किये बिना प्रोफेसर साहब आज सोने वाले नहीं हैं।

अधूरा पत्र लवजी ने हाथ में लिया। अरे! इसने क्या लिख दिया है ?

"इन्हें जरा सँभालना। आपके भरोसे इतनी दूर आने दे रही हूँ। आप हैं तो समझो कि मैं हूँ।"

शांति ने अक्षर भी ऐसे निकाले थे कि दूर से देखने वाले को पता ही न चले कि किसी दूसरे के हैं।

लवजी स्तब्ध। उठकर देखता है तो शांति खर्राटे मारकर सो रही थी।

यह स्त्री मूर्ख है या साध्वी ? मैं अमेरिका जाकर जैमिनी के साथ रहने लगूँ

और वहाँ से वापस ही न आऊँ तो ? जैसे इस संभावना की ओर इसका ध्यान ही नहीं हो ?

इसका लिखा हुआ काटा तो नहीं ही जा सकता। और अभी पूछूँ भी कैसे ? फुरसत में चर्चा भी नहीं की जा सकती। जोर-जोर से हो रही बातचीत की आवाज माँ के कानों में पड़े तो माँ सोते हुए सलाह दिये बिना नहीं रहेंगी – अरे सो जाओ बच्चों। सब सबेरे निर्णय लेना।

शांति के सोने में दीपक का उजाला बाधा नहीं बन सका था। इसकी यह नियमित श्वसनक्रिया इसके स्वास्थ्य का परिचय देती है। मृतक बालक न जन्मा होता तो आज यह कितनी खुश होती ?

पत्र में जमिनी को क्या लिखूँ ? क्या वह मुझे अमेरिका जानबूझकर बुला रही है ?

मैं जाऊंगा तो पीएच. डी. करने जाऊँगा। अधिकतर उससे दूर रहूँगा। परन्तु कहीं साथ में आनाजाना हुआ तो अंधेरे-उजाले टकरा नहीं जायेंगे इसका क्या भरोसा ?

क्या इसीलिए मैं स्कॉलरशिप पाने का प्रयत्न कर रहा हूँ ? देखो इस नरसंग भगत के लड़के की लालसा। बचपन में विवेकानन्द बनने की बात सोचता था और अब विलास की बातों में खोया रहता है। इतनी सुशील और सुन्दर पत्नी होने के बावजूद इसे मृगजल न मिलने का दुःख है। जमिनी का प्रेम तो मृगजल नहीं है किन्तु जिस चीज की लालसा जागृत होती है वह भी प्रेम तो नहीं है

एक श्रेष्ठ परम्परा मेरे हाथ से टूटेगी ? पिथु भगत की मुख्य विरासत नरसंग भगत ने अंगीकार की उसे प्रकाशित किया। दादा तो डोरा-धागा करते थे, शायद जंतर-मंतर भी जानते थे। पिताजी ने उसमें विश्वास न करके सीधी भक्ति की राह चुनी और उपासना के स्वाभाविक क्रम में आत्मज्ञान की ओर मुड़ गये। शायद उन्हें भी मालूम नहीं है कि कितनी बड़ी चीज उन्हें मिली हुई है।

और मैं ?

लवजी के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है। माया से मुक्त होने के लिए उसने अभी प्रयत्न ही नहीं किया था। इहलोक और परलोक का भेद अभी तक उसने भाषा के स्तर पर ही स्वीकार किया है। इसी जन्म में मुक्ति मिल जाये ऐसी कोई अभीप्सा ही नहीं जागृत हुई है। वह मंदिर में जाता है पर मात्र आनन्द के लिए, माया से मुक्ति की अपेक्षा के साथ नहीं ..

जैसे कोई नैसर्गिक दृश्य मन को मोह लेता है उसी प्रकार शांति की निर्मल आँखें ही मेरे आकर्षण का केन्द्र है। उसके हृदय पर कान रखने से जैसे किसी सघन कुंज में बहते झरने का कलनाद सुनाई देता है। मुझसे कम शिक्षित यह युवती इस घर की परम्परा को स्वीकृत कर चुकी है। बात चलने पर शांति कहती भी है– देखो न देवूभाई ने आपके लिए कितना त्याग किया ! वे पढ़ते तो डॉक्टर या

इंजिनीयर बने होते। वे तो मानते भी नहीं। ईजूभाभी से कहते हैं–काहे का त्याग? मैंने भला क्या छोड़ा? हमें सब कुछ मिल गया है। एक किसान को इससे अधिक क्या चाहिए? हेतीबहन से पूछ लेना कभी। रमणलाल सारी दुनिया घूमकर अब घर का आँगन पाटने बैठे हैं।

इस हिसाब से तो मुझे अमेरिका नहीं जाना चाहिए।

लवजी अपना मनोविश्लेषण करते-करते ऐसा महसूस करने लगता है कि वह अनचाहे आकर्षित होता जा रहा है। जो तंतु उसे खींच रहे हैं उनमें से कुछ तो अदृश्य हैं। जिसके बारे में तो शायद जैमिनी भी नहीं जानती।

यों तो ज्ञान-पिपासा भी है। सुविधाओं और अधिक अनुकूल परिस्थिति में कम समय में अधिक काम कैसे संभव है यह देखने का कौतूहल भी है। यंत्रविज्ञान द्वारा निर्मित दुनिया को देखने की आतुरता भी है...

तो, जैमिनी के प्रति जो भावना है उसे मापदण्ड बनाये बिना ऊष्माभरे साहचर्य का स्वरूप बनाये रखा जा सकता है। हाँ, क्यों नहीं? यदि उसके साथ विवाह का लोभ त्यागा जा सकता है तो उसके शरीर का मोह मर्यादा में नहीं रखा जा सकता? तब तो शांति भी अज्ञान थी। आज तो वह नजदीक है। शांति के मूल्य पर मैं जैमिनी के साथ रह सकता हूँ?

एक दिन शांति एक उपन्यास पढ़ रही थी। दो पात्रों के वार्तालाप में जैमिनी का नाम जोड़कर उसने पुस्तक मेरे सामने रख दी–

"मैं जानती हूँ कि आप मजाक कर रही हैं। आपको मेरे पति में हिस्सेदारी का लोभ कैसे हो सकता है? जब ये पूरे के पूरे आपके थे तभी आपने जैमिनी-बहन इन्हें मुझे दान दे दिया, तब मै आज क्यों डरूँ?"

जैमिनी जब भी उसको आलिंगन में लेती, शांति का रोम-रोम पुलकित हो उठता। जरा भी शक हो तो ऐसा हो सकता है?

लवजी की इच्छा हुई की पत्र लिखना बन्द कर दे। चिराग बुझाकर जाये और शांति को आलिंगन-बद्ध कर ले। उसकी छाती पर सिर रखकर मैं अपना अतीत भूल जाऊँ, जगत का इतिहास भूल जाऊँ। तेरे हृदय से अधिक भरोसापात्र स्थान इस संसार में अन्य कोई नहीं......

क्या शांति मात्र यहीं की उपज है या संपूर्ण धरती की मिट्टी ऐसी स्त्रियों को जन्म दे सकती है? धरती इतनी आर्द्र है? जिसके स्तन विकार जागृत करने के लिए नहीं बल्कि वात्सल्य का पान कराने के लिए विकसित हुए हैं।

लवजी शांति की खाट के पास गया। पैरों का सहारा लेकर नीचे बैठ गया। शांति के मस्तक पर, आँखों की बन्द पलकों पर होंठ रख दिये। सो रही शांति के सुशोभित लाल होठों को भिगो दिया। उसकी अस्मिता का अभिषेक किया। दीपक बुझाकर उसने खाट पर अपनी जगह ली। फिर बिना किसी आवेश के, बिल्कुल निर्मल सौहार्द से दो अस्तित्व निरन्तर निकटतर होते गये–संवाद के अपूर्व क्षण को

लाँघकर । मौन संवाद ही गहरी समझ । अधिक जाने बिना भी सच जिया जा सकता है। जो बिना माँगे ही मिल जाये उसीसे जी भर जाये। शांति की छाया में आज उसने पुनः अनुभव किया, दो कोमल स्वर के समवेत आलाप की तरह...

फिर नींद आयी और बिलकुल उड़ गयी। सुख के इस परम क्षण के बाद नींद न आयी हो ऐसा कभी नहीं हुआ था । एक घंटे का समय अनिद्रा में गुजर गया। शांति ने करवट बदलते हुए पूछा—"वह पत्र पूरा किया ?"

"तुम जाग रही हो ?"

"नहीं, अभी जागी हूँ ।"

ऐसा पहले भी हुआ है । खुद अलग सो रहा हो और अनिद्रा की वजह करवट बदल रहा हो तो शांति जाग जाती और पूछती। अब नींद नहीं आयेगी ऐसा जब विश्वास हो जाता तो लवजी लिखने-पढ़ने बैठ जाता । शांति चुपचाप उठकर चाय बनाने लगती और एकाध मिनट खड़ी रहती, लवजी के कंधे पर हाथ रखती, स्पर्श से जैसे जाने की अनुमति लेती और सोने चली जाती ।

अब अमेरिका जायेगा तब पता चलेगा कि शांति के बिना जीने का क्या अर्थ होता है ।

रात के तीन बजे थे । अंत में नींद पर क्रोधित होकर लवजी ने दीपक जलाया। बिजली नहीं होगी । सुबह आयेगी । सब विद्युत बोर्ड की बलिहारी है । खेती के लिए बिजली यदि बंद होता तो तब गाँव में भी अंधकार रहता ! पंखा घर में हो या न हो – एक ही मतलब होता है ।

आज की घबराहट असह है। कल सुबह हवा की शीत लहर ने ओढ़कर सोने के लिए मजबूर कर दिया था ।

पत्र लिखना शुरू करने के बाद समय का भान नहीं रहा । जो भी याद आया, लिखता रहा, लिखा जाता रहा ।

पूर्व में लालिमा छा चुकी थी। जागने के बाद और उठने के पूर्व थोड़ा-सा मचलते हुए शांति ने करवट बदली थी, एकाध मिनट में इस ओर करवट लेगी और उठ जायेगी । उठकर नीचे जायेगी और कामों में लग जायेगी ।

खेत में गाय-भैंस दुहने जाने का वक्त हो गया था । ईजूभाभी सिर पर डलिया लेकर आ गयी थीं । उन्होंने जीने से ही आवाज दी । शांति ने जीने से उतरते हुए ही जवाब दिया ।

इतने में एक भयंकर आवाज आयी । और फिर एक लड़की की दिल दहलाती चीख—

आवाज गाँव के बाहर, उत्तर दिशा के खेतों की ओर से आयी थी । सुनते ही गाँव की सभी स्त्रियाँ गलियों में एकत्र हो गयीं ।

जबरा की गुहार सुनाई दी—"अरे दौड़ो ।"

घेमर ने मात्र बनियान पहन रखा था—"कुछ बुरा हुआ लगता है।" कहते हुए वह भागा। कपड़ा पहनने के लिए भी नहीं रुका।

'जीवनभाई गिर पड़े।" दूर से आवाज आयी।

लवजी जल्दी से तैयार होकर आंगन में आ गया। ईजूभाभी ने घेमरभाई के जाने का दिशा की ओर संकेत किया। लवजी भी दौड़ पड़ा।

"जीवन को करंट लग गया।" पल भर में तो ये शब्द एक कान से दूसरे कान होते हुए पूरे गाँव में पहुँच गये। घर-घर में चिन्ता और दुखद हलन-चलन से बच्चे भी जाग गये। घर से आँगन में आये हुए लोग मुहल्ले या गाँव की मुख्य गलियों में एकत्र हो गये। भूकंप के बाद घबराये खड़े पशुओं के समूह की तरह लग अंदर से ोआकुलव्याकुल थे। अभी तो इतना ही पता था कि करंट लगा है। और क्या हुआ है यह किसी को नहीं मालूम।

जीवन आदत के अनुसार आज भी जल्दी उठ गया था। बरसात के दिन नजदीक आ रहे थे। इसलिए छपरे को ठीक करने के लिए वह ऊपर चढ़ा था। कुएँ में बिजली की मोटर लगवाने के बाद डीजल वाला इंजन बेच दिया था परंतु एक आधे इंच का पाइप अभी भी रखा था। बारह हाथ जितनी लंबाई दी। उसे उठाकर वह ठीक से रखने गया कि ऊपर के खुले वायर में छू गया। विद्युतबोर्ड की बड़ी लाइन वहीं से पसार होती थी। उसका प्रवाह चालू था।

कोई उम्मीद नहीं थी कि अभी लाइन चालू होगी। किसी के खेत में अभी मोटर नहीं चालू थी। नहीं तो क्या पानी की आवाज जीवन नहीं सुनता? झूले में सो रहा बालक पलकें खोले और उसके चेहरे पर लालिमा प्रकट हो आये – सीम का स्वरूप ऐसा ही था। भगतबाड़े से कभी-कभी ठंडी हवा का एक झोंका आ जाता था। यह समय जीवन की जिन्दगी में हमेशा उत्साहवर्धक रहा है। उसने पाइप जब उठाया था तो सोचा भी नहीं होगा कि पल भर में आग की लपट निकलने लगेगी।

जैसी लपट बाहर थी वैसी ही अंदर थी।

लहराते बादल की तरह सारा खेत सुलगता हुआ लग रहा था।

आँख सुलग उठी, श्वास सुलग उठी, भगवान के विश्रामस्थल सा नाभिकमल भी सुलग उठा।

जीवन धरती से ऊपर था – कोठरी के छपरे पर। यमराज विद्युतरथ पर सवार होकर नीचे आये। जीवन को उठाकर अपने रथ पर बैठा लेने के लिए उन्हें थोड़ा सा हाथ फैलाना पड़ा, बस।

उसका स्वस्थ शरीर कटे हुए नीम के वृक्ष के तने की तरह जब धरती पर गिरा तो उसमें हरे तने जितना ही वजन था।

जीवन की लड़की आवाज सुनकर दौड़ी हुई आयी और जीवन के सीने पर पटककर रोई। फिर बेहोश हो गयी।

लवजी ने देखा । जबरा और घेमर के पीछे खड़े होकर आँख को पोंछते हुए, आवाज़ पर काबू रखते हुए उसने कहा – हिंमत से काम लो । जाओ ट्रेक्टर ले आओ । सारंग दवाखाने ले जाते हैं । खड़े मत रहो । जल्दी करो ।

लवजी ने देखा – शरीर गर्म था, परंतु नाड़ी स्थिर थी । शक तो हो गया था परंतु लवजी इस समय घेमर को ही नहीं, स्वयं को प्रवंचना में रखना चाहता था । संतुलित रहने का यही एक उपाय था ।

अचेत, किन्तु गर्म देह को जीवन मानकर दोनों ने ट्रेक्टर में रखा । मुँह पर पानी के छींटे मारने से जीवन की लड़की होश में आयी । उसे घर ले जाकर सभी को शांत रखने का काम जबरा को सौंपा गया । वह भी साथ में ही आना चाहता था । परंतु लवजी का कहा टाल न सका ।

अच्छा हो जायेगा । किसी को दवाखाने जाने की जरूरत नहीं है । समझाकर जीवन के सभी घरवालों को तथा मुहल्ले वालों को जबरा समझाता रहा और मौका पाते ही खिसक गया । टेढे-मेढे रास्तों से दौड़ता हुआ वह सारंग जा पहुँचा । परंतु ऐसा करने वाला वह अकेला न था । सभी खेतों की गलियाँ सारंग की दिशा में खुल गयीं । सब नजदीक पहुँचते जा रहे थे । युवक और प्रौढ सभी सफेद धोती और कमीज में, अपने महल में वापस जा रहे यमराज को हंसों के समूह जैसे लग रहे होंगे ।

ट्रेक्टर के पहुँचने के पहले ही, खेतों के रास्तों से होते हुए पचासेक आदमी दवाखाने के दरवाजे पर पहुँच चुके थे । सबको आशा थी । सब हँसते हुए जीवन को डाँटने के लिए सोच रहे थे – भले आदमी, थोड़ा तो ख्याल करना चाहिए । वैसे तो तुम सारी दुनिया को सलाह देते फिरते हो ।

आवाज सुनकर डाक्टर अपने निवास से बाहर आ गये । जीवन का नाम सुनकर उनकी जान सूख गयी । अभी पिछले वर्ष ही उनके पूरे परिवार को होला खाने के लिए जीवन आमंत्रित कर गया था । यहाँ आ पहुँचने वालों में भी ऐसा शायद ही कोई हो जिसका कोई काम जीवन ने न किया हो ।

ट्रेक्टर से देह को अंदर लाने में स्वयं डाक्टर ने भी मदद की थी ।

लवजी ने सभी को बाहर बैठने की प्रार्थना की । डाक्टर ने जाँच शुरू की । उस चोले का पेट थोड़ी देर पहले फूला हुआ था, अब बैठ गया था ।

डाक्टर ने लवजी को शून्य निगाह से देखा ।

देवू और माधव भी जीप लेकर आ पहुँचे ।

लवजी के होंठ जैसे सी दिये हों । देवू ने अंदर आकर कहा–"जो भी खर्चा होगा, हम देंगे । जरूरत हो तो अहमदाबाद ले जायें ।"

लवजी के मौन से घेमर की छाती बैठ गयी थी । देवू के शब्द सुनकर उसमें साहस आया – "क्या साहब, बोलते क्यों नहीं ? ले जायें अहमदाबाद ?"

"क्या करोगे ले जाकर ? कुछ नहीं रहा ।" डाक्टर ने कहा ।

और घेमर दवाखाने की दीवाल से सिर टकरा-टकराकर रोने लगा ।

वीरा और माधव ने आकर घेमर को पकड़ा । जिसे किसी ने कभी रोते हुए नहीं देखा था, उस जबरा का भी हाल ऐसा ही था ।

लवजी खिड़की के बाहर, शून्य में देख रहा था ।

मृत्यु का इतना भयानक स्वरूप देवू ने पहले कभी नहीं देखा था । एक जीवित आदमी, और जो अच्छी तरह जीना चाहता था, इसका विश्वास दिलाकर आज चला गया था । जीवन बिना अब सोमपुरा की ओर कदम कैसे उठेंगे ?

डाक्टर मृत्यु का प्रमाणपत्र बना लाये । किसे दें ? घेमर का हाल तो पागलों सा हो गया था ।

लवजी ने जीवन की मृत्यु का प्रमाण-पत्र देखा तो सारा क्रोध उँगलियों के पोर पर उतर आया । उसने देवू के समक्ष रख दिया—"भाई, आप ले जायेंगे ? मुझसे अब साथ नहीं बैठा जायेगा ।" लाल-लाल आँखों से उसने पहले देवू की ओर देखा फिर आकाश की ओर ।

शव को जीप में रखा गया ।

घेमर ने जीवन बिना ट्रैक्टर चलाने से इनकार कर दिया । "क्या लेकर आया था और अब कौन से मुँह से उसके आँगन में जाऊँ ?" और फिर वहीं हृदयविदारक क्रन्दन । जीवन की शादी में गाँठ उसीने बाँधी थी—उसे अचानक याद आ गया ।

घेमर, अंततः सूजी हुई आँखों से आकर ट्रैक्टर में बैठ गया । ट्रैक्टर चलाना किसी और को नहीं आता था । लवजी उसके साथ बैठा । देवू जीप में लाश का सिर गोद में रखकर बैठ गया । आगे-आगे जीप, पीछे ट्रैक्टर । लाश से भरी जीप और अत्यंत परिश्रम के बाद जीवन द्वारा खरीदा गया ट्रैक्टर...... खाली ट्रैक्टर ।

दो वाहन चकरोट में धीरे-धीरे जा रहे थे । एक किसान गँडासे से थोर और झाड़ियों की बढ़ी हुई डालियों को काट रहा था । थोड़ी ही दूर पर बिजली के तार थे । लवजी की इच्छा हुई कि ट्रैक्टर से कूदकर वह दौड़ा हुआ जाये और उस आदमी के हाथ से गँडासा लेकर बिजली के तार को काट डाले...

दोनों वाहन गलियों से होते हुए जीवन के मुहल्ले के पास पहुँचे । जीप से जीवन की लाश उतारकर उसके घर तक ले जाने के लिए किससे कहा जाये ? सारा गाँव उमड़ पड़ा था । परन्तु सभी के पाँव धरती में जड़ ही गये थे । हाथ में लकवा मार गया था ।

कौन करे हिंमत ? कौन करे पहल ? कौन जल्लाद बनकर जीवन के मन्दिर जैसे घर को स्मशान में बदल दे ?

"लवजी..." अंततः देवू ने उसे ही बुलाया ।

लवजी ने राह बनायी । छः आदमियों को जीप के नजदीक बुलाया, "घेमर-भाई जरा संयम रखो, जीवनभाई के घरवालों का विचार करो ।"

होठ भींचकर, दाँत दबाकर घेमर जीवन के पाँवों पर हाथ रखकर उसीके सहारे ओसारे तक गया । परन्तु बैठक के पास गिर पड़ा ।

आशा की पतली डोरी के सहारे जी रहा परिवार सब कुछ समझ गया । घेमर गिरा न होता तो सच्चाई बताने में देवू को बड़ी तकलीफ होती ।

जीवन की पत्नी ने अपने मस्तक से टकराकर चूड़ियाँ फोड़ डालीं । उसे इतना अकेला नहीं होने देना था परन्तु वह अपनी सुध-बुध खो बैठी थी । कंकू माँ और हीरा उसे एक ओर लिटाकर हवा करने लगीं ।

ऐसी मृत्यु किसी ने नहीं देखी थी । सुनी भी नहीं । सब बातें कर रहे हैं । लवजी सुन रहा है । रह-रहकर उसकी छाती में कुछ उबलने लगता है । कभी भी वह रो पड़ेगा । वह जीवन के संबंधियों का दुःख कम करने के बजाय बढ़ा दे···ऐसा कैसे हो सकता है ?···नहीं, रोकर हलका नहीं होना है ।

लाश श्मशानगृह में ले जायी गयी । गाँव की गलियों-गलियों में हाहाकार मचा था और श्मशान में चिता सुलग रही थी । सुबह जो चूल्हे जले थे वहाँ राख फैल गयी । किसी ने कुछ नहीं पकाया । सभी को श्मशान-अग्नि दिखाई देती रही ।

गाय, भैंस, बैल सब भूखे-प्यासे थे । परन्तु किसी की आवाज नहीं सुनायी दी ।

कंकू ने कहा – भगवान के घर भी अन्याय होने लगा है ।

नरसंग अभी खेत में ही थे । किसी की मृत्यु के अवसर पर वे निश्चित ही आ जाते थे और भगवान का नाम लेकर सांत्वना देते थे । परन्तु आज वे अभी भी भगतबाड़े में ही थे ।

देवू ने आकर लगभग शिकायत के स्वर में कहा । वे कोई जवाब नहीं दे सके ।

दोपहर के बाद हाथ में माला लेकर, जैसे किसी लंबी बीमारी से उठे हों ऐसे, चलते हुए जीवन के घर पर आये । जीवन की पत्नी बड़ी मुश्किल से शांत हुई थी । बीच-बीच ऐसे बड़बड़ाने लगती थी जैसे जीवन से बतला रही हो । भगत को देखते ही वह जैसे पुनः होश में आ गयी हो, कुछ शिकायत करना चाह रही थी । किन्तु हृदय-विदारक रुदन ने उसके गले को रूँध दिया । थोड़ी देर पहले ही अपने घर गयी हीरा आवाज सुनकर दौड़ी हुई वापस आ गयी ।

लड़के की कसम खिला-खिलाकर मुहल्ले की स्त्रियों ने उसे शांत किया । भगत ने जेब से माला निकाली । सिसकना बंद पड़ा । कुछ शांति मिली । फिर पूछा– "ई का भवा नरसंगबाबा, ई का होय गवा ? तुहरे रहत रहत ई का होय गवा ?

भगत माला फिराते रहे । उनके होंठ फरकने लगे । वातावरण में कुछ धैर्य उत्पन्न हुआ ।

आसपास गाँव से लोगों के समूह आने लगे । मातमपुरसी के लिए घेमर भी रुका था । वह बार-बार अपनी आँखों को पोंछ रहा था । गोकुलिया से आई औरतों

में से भरसिया गाती तखत ने अपनी छाती पिट पिट कर लाल कर दी थी। जीवन की ससुराल बदरी के लोग मातमपुरसी करके जाने लगे तो घेमर जीवन की कोठरी के पास आया। उसने भगत से पूछा – "इस अन्याय का कारण? जीवन ने कभी किसी का कुछ बिगाड़ा था? कोई अधर्म किया था?" परन्तु भगत का मुँह देखकर घेमर चुप हो गया। बैठ गया। भगत ने माला फेरना पूरा करके कहा – "हम सोचा रहा कि जाय के तुम सबका दुई बात सांतना कै बोल पर···।"

उनका गला भर आया और आँखों की सतह गीली हो उठी।

जहाँ से लवजी को स्पष्टीकरण की उम्मीद थी, वहाँ से लोगों को ठीक-ठीक दिलासा भी नहीं मिला था। नरसग भगत के पास आज रामनाम के सिवा कुछ न था।

28

जीवन की क्रूर मौत का असर गाँव के मन पर अकाल के दिनों की तरह बढ़ता गया।

लवजी को वह सुबह जब भी याद आती, लगता जैसे बिजली का करंट लग गया हो।

देवू ने उससे कहा था - देख भाई, मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में, स्वर्ग और नरक के नियंता के बारे में हम लोगों ने चाहे जितना पढ़ा हो परन्तु हमें उसका अंत नहीं मिलने वाला है। गौतम बुद्ध ने भी खोज की थी फिर भी उन्होंने अंततः तो मध्यमार्गीय जीवन की ही बात की थी। उन्होंने आनंद से कहा था कि जीवन के अपने ही इतने प्रश्न हैं कि जिससे फुरसत नहीं मिलने वाली है फिर मृत्यु के बादवाले जीवन की चिंता करने का वक्त कहाँ से लाऊँ? तुम्हें याद हो तो, ट्रक के साथ टकराकर ही छनाकाका की मृत्यु हुई थी। दो दिन के बाद किसीने उन्हें याद भी किया? परन्तु जीवन की याद आते ही सब परेशान हो जाते हैं। तुझे याद हो तो उस दिन अपने घर भी चूल्हा नहीं जला था। शाम को चेहरकाकी ने घेमरभाई को घर आया देखकर तसले में खिचड़ी परोसकर दी थी। अन्न को देव मानने वाले घेमरभाई उस समय तसले को ठोकर मारकर खेत की ओर चल पड़े थे। फताकाका ने मुझसे कहा था कि घेमर आधी रात को भी जाग उठेगा तो खाट पर बैठा-बैठा छोटे बच्चों की तरह रोता रहेगा।

यह क्या है? सत्कर्मों का फल नहीं तो दूसरा क्या है? भगवान ने चाहे जैसा न्याय किया हो परन्तु इस गाँव के मनुष्य ने तो जीवन के बारे में धोखा नहीं ही खाया है।

देवू का विश्लेषण लवजी को घड़ीभर आश्वासन देता। परन्तु दूसरा प्रश्न तुरन्त आ खड़ा होता – जीवन की दो लड़कियों और छोटे लड़के का क्या होगा! वे बिन बाप के बच्चे तो लाचारी से ही जीयेंगे?

और अधूरा पड़ा हुआ मन्दिर !

देवू ने कहा था कि मन्दिर तो दो वर्ष में पूरा किया जा सकता है परन्तु मुझे कोई उत्साह नहीं है। गाँव में एक अच्छी जगह हो काफी है। मनुष्य भजन गाकर हल्का हो जाये। दो घड़ी की शांति लेता जाये। दूसरे मन्दिर की जरूरत ही क्या है ? यदि समस्त देवों को किया गया नमस्कार अंततः एक के पास ही पहुँचने वाला हो तो

घेमरभाई ने कुछ नहीं कहा किन्तु वे मन्दिर पूरा किये बिना नहीं रहेंगे।

एक शाम मगनजी आ पहुँचे, शांति के पिताजी। आसपास के गाँव वाले उन्हें ताना मारते - दामाद विदेश जा रहा है और सभा भी नहीं बुलाते ! स्वयं रणछोड़, माधव और नारण भी सभा करने के लिए बेचैन थे। वे 'जनता' के नाम शासक कांग्रेस के सदस्य बने थे, बिरादरी के महाभोज में रणछोड़ गालीगलौज कर आया था। यह बँटवारा लवजी को पसंद आया था - चुनाव में जातिवाद अब ढीला पड़ेगा। पर क्या वह उनमें सम्मानित होगा ? भगत ने कहा - लवजी से पूछो। इसका कोई ठिकाना नहीं है। तुम लोग रातदिन एक करके सब ठीक करो और वह ऐन मौके पर कहीं और जाकर बैठ जाये।

सभा ? मुझे अपनी प्रशंसा सुनने की लालच नहीं है। और जिन लोगों ने यहाँ मुझे, मेरे अच्छे काम में साथ नहीं दिया वे मेरे विदेश जाने के लिए खुशी व्यक्त करें ? नहीं। घर के आदमियों की शुभकामनाएँ काफी है। हालाँकि अभी भी मैंने कुछ निश्चित नहीं किया है। शायद न भी जाऊँ।

"यह गलत बात है। सब कहीं खबर फैल जाने के बाद आप योजना स्थगित कर दें, यह ठीक नहीं।" मगनजी के आग्रह का कारण लवजी की समझ में नहीं आया। इनकी लड़की यहाँ अकेली रहेगी इस बात की चिन्ता इन्हें नहीं है ? और फिर वहाँ जैमिनी है इसका पता तो इन्हें है ही। फिर यह आग्रह किस लिए ? शायद ससुर हैं इसलिए बड़प्पन के कारण ऐसा कहते हों ? उसके इस अनुमान का प्रमाण भी मिल गया।

'आप सभा के लिए स्वीकृति दें तो मेरी ओर से पन्द्रह हजार रुपये।"

इसके पहले भी तीन आदमी अमेरिका जाकर आये हैं -- अपनी बिरादरी से। उन्हें कुल पच्चीस-तीस हजार रुपये भेंट में मिले थे। लवजी को कम से कम पचास हजार तो मिलेंगे ही - देवू ने यों ही कहा।

"उस पचास हजार का मैं क्या करूँगा ?" लवजी का यह प्रश्न सभी के लिए अनपेक्षित था - "बिना काम के किसी का पैसा लेकर बोझ क्यों बढ़ायें ? गलत कह रहा हूँ पिताजी ?"

भगत सहमत हो गये।

मगनजी चले गये। लवजी सोच रहा था मैं अमेरिका न जाऊँ तो ? न जाने से क्या होगा ? तो फिर...जाऊँ ?

किसलिए ?"

स्कॉलरशिप मिली है इसलिए कि जैमिनी वहाँ है इसलिए !

"मैं जानती हूँ कि तू नहीं आयेगा। परन्तु मेरे कहने से तू आ जाये तो अच्छा लगेगा। संतोष होगा कि मेरी एक बात तो रख ली।" जैमिनी ने लिखा था।

जाऊँ ?

पढ़ने के लिए अमेरिका जाना पड़े ! कई लोगों के साथ वह ऐसी दलील कर चुका था। जैमिनी के जाने के पूर्व दोनों थोड़ी देर के लिए मिले थे – 'तेरा तो हाल कस्तूरीमृग जैसा है। ठीक है। दौड़ो। भटकती रहो। थक जाने के बाद ही सत्य का पता चलेगा।

"आत्मा की खोज। सच न !" जैमिनी खिलखिलाकर हँस पड़ी थी। खिंच जाने के कारण और भी आकर्षक हो गये होंठ और प्रफुल्ल चेहरे को चमकाते हुए दाँत। वह अपनी उम्र से पाँच वर्ष छोटी दिखने लगी थी। उसे खुले में उठाकर उछाला जा सकता था। वह युवती नहीं कन्या लग रही थी।

लवजी को विश्वास हो गया कि वह जो भी करेगा, जैमिनी को हास्यास्पद ही लगेगा। और आज तक वह जिसमें विश्वास करता आया है, उसमें से विश्वास उठ जायेगा।

"फिर मिलेंगे जैमिनी, शायद तुझे विदाई देने मैं नहीं आ पाऊँगा।"

"आयेगा तो मैं तुझे लिपट नहीं पड़ूँगी।" वह उसी उमंग में बोली थी।

उसे क्या मालूम कि यह सीने में जलन किसके लिए है ? उससे क्या बताऊँ ? शायद इसी प्रकार वह मुझे परेशान करती रहती है। मेरी कमजोरी जान गयी है। उसे मसल देने की मुझमें हिम्मत नहीं है। उसे मालूम है कि मैं अपने आपसे नहीं उससे डरता हूँ। आलिंगन करने का प्रयास करूँ और उसी पल वह अदृश्य हो जाये तो ?

कैसी कल्पनाएँ हैं।

कहाँ जैमिनी और कहाँ मैं ?

वह इस समय किसी के साथ बैठकर आनंद ले रही होगी। अमेरिका के ठंडे वातावरण में संगीत और नृत्य की उष्मा ले रही होगी और यहाँ मैं – किसी भी ऋतु के अनुभव बिना, बिल्कुल स्थिति-स्थापक, राजनैतिक प्रवाहों के बारे में लेख लिख रहा हूँ, अभावों के बारे में गद्यकाव्य लिख रहा हूँ। सूखे हुए तालाब के किनारे बैठी हुई पनडुब्बी।

गाँव में यह दूसरा वर्ष है। अगले वर्ष फिर से अहमदाबाद के किसी कॉलेज में लग जाना है। अथवा तो बंबई या दिल्ली। यहाँ से तो भागना ही पड़ेगा। नहीं तो सब कहीं से कटकर रह जाना पड़ेगा। कभी-कभी तो रेडियो में घूँसा मार देने की इच्छा होती है। मात्र आवाज। त्रास है। कभी-कभी तो माँ भी कह देती हैं – भैया यह हरदम रेडियो बजाते हो, सिर में दर्द नहीं होने लगता ?

शांति अब सहज हो गयी है। सास को अब माँ समझने लगी है। शांति में हुए इस परिवर्तन से लवजी उससे और भी नजदीक संबंध महसूस करने लगा है।

खेत में सब बैठे थे। कोटरी में कपास की दवाएँ रखकर देवू बाहर आया। बोला –

"नारण कह रहा था कि लवजीभाई को स्कॉलरशिप मिली है तो भेजते क्यों नहीं अमेरिका? हमने सभा की बात पूछी तो कहता है जाना ही नहीं है।"

लवजी ने हँसती हुई आँखों से नीचे देखा।

"सचमुच नहीं जाना? पल–पल में विचार बदलते रहते हो – यह कोई अच्छी बात है? तुम्हें खर्चे की चिंता नहीं है न?" पिता को सुनाते हुए लवजी से देवू ने पूछा।

"नहीं।" दो वर्ष वहाँ और रहें तो पचीस तीस हजार की बचत हो। परंतु आप ही बतायें कमाने के लिए इतनी दूर जाऊँ?" लवजी क्या कहना चाह रहा है, देवू की समझ में नहीं आया।

"आप तो उस दिन कह रहे थे कि पढ़ने के लिए भी वहाँ जाने की क्या आवश्यकता है?" थोड़ी देर के बाद लवजी ने देवू की पड़ताल शुरू कर दी।

"सच है।"

"लोग फिर किस लिए जाते हैं?"

"डिग्री लेने। कुछ लोग बड़े आदमी बनकर यहाँ वापस आते हैं। परंतु कहीं लगाने नहीं तो वापस चले जाते हैं। फोरेन रिटर्न कहलवाने का शौक करने वाले "नेटिव रिटर्न" बन जाते हैं।"

बात ठीक से समझ में नहीं आयी। नरसंग ने मनका रख दिया। माला घूमने लगी। लवजी न भी जाये तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।

"जाना हो तो चले जाओ। घूम आओ। दस हजार की मदद करूँगा।" देवू ने सबको सुनाते हुए कहा।

"पैसे की क्या बात है?"

उस दिन की रुकी बात एक दिन माँ की उपस्थिति में चल पड़ी। देवू बच्चे को लेने आया था। थोड़ी देर हो जाने पर ईजू भी आ पहुँची थी। लवजी कह रहा था –

"जाने की इच्छा तो है परन्तु जैमिनी वहाँ है, यह कई लोग जानते हैं। हमारे हितैषी तुरन्त बात उड़ा देंगे – वह तो उसीके लिए गया है।"

"जाओ। मैं अनुमति देती हूँ। जैमिनी से शादी कर लेना। फिर?" शांति रसोई में से बोली। कोई नहीं समझ सका कि उसकी आवाज में खुशी थी या मजाक। लवजी सोचने लगा। शांति जैमिनी के बारे में समभाव से बात करती है। अहमदाबाद में थे तब भी वह मेरे और जैमिनी के बारे में उदार थी। संभव है वह उस तरह मेरी कमजोरी की ओर संकेत करना चाहती हो। उसकी इस उदारता से और भी बेचैनी बढ़ जाती है।

"अपने बूढवे दुई दुई शादी नाहीं करत रहे ?" ईजू ने कहा ।

फिर तो एक सूची तैयार हो गयी । सोमपुरा में किस-किस ने दुबारा शादी की । किसकी इच्छा शादी करने की है आदि ।

देवू ने जाते समय कहा –

"जो भी हो मेरी इच्छा है कि तुम एक बार अमेरिका चले जाओ तो अच्छा।"

"मैं जाऊँगा तो आपको घूमने के लिए बुलाऊँगा ।"

"हम का गुना किहे हन लवजी भैया ?" इतना कहने के लिए ईजू आँगन में खड़ी रही ।

फिर तो गोकुलिया, टींबा, बदरी, ढेखाड़िया, प्रजाभारती आदि सब कहीं बात होने लगी कि लवजीभाई अगले महीने अमेरिका जाने वाले हैं ।

कॉलेज के प्राध्यापकों के पूर्वग्रह युक्त व्यवहार और सहकारी मण्डली में चल रहे घोटाले लवजी को गाँव से भाग जाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे । एक असफलता दूसरी असफलता की याद ताजा कर जाती थी । एक असंतोष दूसरे असंतोष के लिए दर्पण का काम करता था । उसे विश्वास हो गया था कि यहाँ स्थिर होना संभव नहीं है । स्थिर होने के लिए स्वस्थ होना बहुत जरूरी है ।

पहले जो सूक्ष्म अनुभूतियाँ शब्दों का रूप धारण कर रही थीं अब वे स्थूल हो गयी थीं --

मैंने खेतों में मन बोया
उग आया नगर······

कब सूझी थी यह पंक्ति ? जब अहमदाबाद में रहता था तब इस मनमोहक सृष्टि से तादात्म्य स्थापित कर लेने की कितनी चाहत थी ? पर यहाँ रहना प्रारम्भ करते ही मन के प्रवाह की दिशा ही बदल गयी ।

तब एक आवेश था आदिम–अरण्य सृष्टि की नाभि में लहराते सरोवर में डुबकी लगाने का । आकांक्षा थी एक अपरिचित भूमि पर पाँव धरने की । नगर की कानूनी सभ्यता के खिलाफ मन में विद्रोह प्रारम्भ हो गया था । उन्हीं दिनों कहा था –

जंगल पनप रहे हैं आदमी के मनस में
राहों की अधिकता में, बिसरे हुए थे जो !

यहाँ के नये वीराने के सम्पर्क में आते ही वन का स्वप्न बिखर गया । हरी तलैया के पास खड़े दो आमवृक्षों को देखकर मन में कुछ होने लगता था । एक दिन यों ही लिखा गया था –

दो वृक्षों को लाकर निपट नजदीक
छायाओं को हरगिज एक कर न सका मैं !

यह भाव विभिन्न रूपों में घुमड़ता रहा है । दो चक्षुओं के निश्चित अंतर का रहस्य जान लेने के लिए मैं निरन्तर तरसता रहा हूँ परन्तु अंततः देखने को मिले हैं निरन्तर अधिक से अधिकतर सूखती आ रही साबरमती के दो किनारे ।

एक मित्र कह रहे थे – आपको यह प्रतीक तो मिल गया है – सूखती नदी का प्रतीक। अभी तक आप उस प्रतीक की महत्तम क्षमता नहीं व्यक्त कर सके हैं इसीलिए बारम्बार उसका उपयोग कर रहे हैं। संभव है उनकी बात सच हो। परन्तु यहाँ सोमपुरा में रहने के बाद तो साबरमती एक बार भी शब्दों में प्रवाहित नहीं हुई है। उस दिन रमणलाल के साथ गोकुलिया से सीधे नदी पर जाने का अवसर मिला तब याद भी नहीं था कि इस नदी के साथ मेरा भिन्न ही सम्बन्ध है। रमणलाल ने कहा था – यदि मेरी दुर्घटना न हुई होती तो मुझे यह नदी ही न याद आयी होती। आज मैं बाल-भावना से यहाँ आने के लिए लालायित हुआ हूँ। यों तो अकेले ही आता। परन्तु तुम्हारी बहन, ऐसी स्थिति में खोज शुरू कर देती। शायद एक उम्र के बाद स्त्री पत्नी से माँ बन जाती है या फिर तुम्हारी बहन की यह विशेषता होगी। मैं जानता था कि नदी में अधिक पानी नहीं होगा, फिर भी उसके प्रवाह में अपनी अंजुरी भरकर पानी पीने के लिए ललचा रहा था। तुम्हे तो क्या मालूम? मैं स्वयं भूल गया था कि एक दिन मैंने इस भूमि और यहां के जीवन के बारे में लिखने के ख्वाब देखे थे। तुम्हें विचित्र लग रही हैं न मेरी बातें? मुझे भी विचित्र लगती हैं। यह दुर्घटना न घटी होती तो मेरा क्या होता? राजनीति का बख्तर पहनकर मैं एक ही दिशा में देखता रहता। पिछले दिनो एकाध बार नैराश्य की स्थिति में आत्मनिरीक्षण की ओर प्रेरित हुआ था किन्तु पुनः वही ढर्रा। अब पार्टी के प्रति वफादारी खतम हो रही है, व्यापक वफादारी जन्म ले रही है मन ही मन······

हीरूभाई ने उन्हें हमेशा के लिए राजनीति से संन्यास लेते रोककर मात्र पाँच वर्ष की छूट दी है। प्रतिज्ञाएँ वही करानी चाहिए जो निभ सकें। मेरी तो ऐसी स्थिति है ही नहीं कि मैं प्रतिज्ञा लूँ। मुक्त हूँ फिर भी यहां से पलायन नहीं कर पा रहा हूँ। मेरी व्याकुलता का कारण समझ में नहीं आ रहा है। यह सोचता हूँ तो वह सूझता है और उसे प्राप्त करने के लिए वहाँ तक पहुँचता हूँ तब लगता है कि नहीं ये सब तो आंशिक कारण हैं। मूल कारण तो जैमिनी से वियोग है। जैमिनी को वह पंक्ति बहुत अच्छी लगी थी –

जोग का प्रपात सूखता जा रहा इस नदी की तरह··· .

जबकि उसे यह पंक्ति पसन्द आनी चाहिए थी – "पहले हमने जोग के प्रपात के दो प्रतिबिंब देखे थे जिन आँखों में अब तक तैर रहे हैं .

लवजी जैमिनी को भूलकर पुनः काव्यानुभूतियों में खो गया। शब्दों से उसका संवाद पुनः प्रारम्भ हो गया – "अधखुली आँखों से हम देख रहे हैं कि साबरमती नाम की एक नदी सूखती जा रही है।"

बहुत दिनों के बाद वह कविता की डायरी लेकर बैठा। पढ़ने लगा। नदी के प्रतीक की तरह विदाई भाव भी कई बार देखने को मिले। गाँव को छोड़ते समय उसे जो अनुभूति हुई थी वह उसकी तुलना भविष्य में देश छोड़ते समय होने वाली

अनुभूतियों से करने लगा। परन्तु सफलता नहीं मिली। देश छोड़ते समय मात्र कल्पना की जा सकती है, उसकी वेदना शब्दातीत होगी। गाँव छोड़ते समय उसने जो कविता लिखी थी उसमें तो अनेकों बार वियोग–भाव उमड़कर आया था। पहले तो मेरे निकलते ही माँ की आँखों से अश्रु लुढ़क पड़ते थे। वेदना से बचने के लिए डायरी की एक कविता पढ़नी शुरू कर दी–

स्वयं को छोड़कर चला आया था मैं
तब मुझे क्यों नहीं रोका था ?
पहाड़ियों के मध्य बसा मेरा
नन्हा सा गाँव, मेरे साथ
चुप–चुप चौराहे पर आकर ठहर गया था।
शिवालय के पास आकर मेरे पाँव रुक गये थे
मैं झुका था – पल भर को यूँ लगा था
दौड़ता हुआ वापस चला जाऊँ, वापस ?
शिराओं में रक्त इतनी तेजी बहने लगा था
जैसे गलियां – गलियों में
गाँव के हृदय के समान
मेरे नन्हें घर की छत पर उतर आये
कुछ कबूतर छज्जे के नीचे बँधी हुई मटकी को
खाली देखकर, बैठ गये थे
– मुझे घर की चीख नहीं सुनाई दी थी।
जब मैं उधार की आशिष लेकर चला था
तब क्यों नहीं कोई बोला था ?
अरे ! नीम में खड़े वृक्ष की
एक डाली भी नहीं काँपी थी।
ताम्रवर्णी पल्लव की दूधिया कुँज में
सुगंध मौनव्रत रखता है, यह तो मैं जानता हूँ
फिर भी किसी कली के चेहरे से
परावर्तित होकर बाल रवि की रश्मि
मेरे मार्ग में क्यों नहीं आ खड़ी हुई ?
विस्तृत जल वाला तालाब मात्र तालाब लगा था
किनारों पर, उभरे हुए
नन्हें नन्हें पदचिह्न तमाम
क्या आषाढ़ के जल में एक साथ बह गये ?
तालाब में तैर तैर कर
गिल्ली–डंडे का खेल जो मैंने जीता था, अब याद आता है,

याद आती है प्रथम पगडंडी

अचानक लवजी ने कविता से अपनी नजरें हटा लीं। उसे इस बात का तीव्र अहसास हुआ कि वह अभी भी इसी भूमि की ममतामयी गोद में है।

लवजी जानता था कि अमेरिका से वह वापस नहीं आयेगा ऐसा रणछोड़ जैसे लोग मानते हैं। एक दिन शांति ने भी हँसते-हँसते कहा था – ऐसी बातें हो रही हैं कि आप वापस नहीं आयेंगे। "तुम्हें क्या लगता है?"

शांति लवजी के प्रश्न से ही आश्वस्त हो गयी थी। कई लोगों का मानना था कि पति परदेश जा रहा है, शांति को इस बात का अभिमान है। बात ही बात में ईजूभाभी ने भी कहा था – "लवजीभाई अमेरिका जात हैं, जब से ई बात पक्की है हमारी शांताबहन कै तो पाँव जमीन पर नाहीं पड़त। इनका ई नाहीं मालुम कि गये के बाद..."

लवजी से नजर मिलते ही ईजू चुप हो गयी थी। देवू ने कहा था–"भाई जो स्कॉलरशिप लेकर पढ़ने जा रहे हैं, उसकी शर्त ही यह है कि वापस आयेंगे।"

भाभी ही बाकी रह गयी थीं यह कहने के लिए? ज्यों-ज्यों जाने के दिन नजदीक आ रहे थे, लवजी त्यों-त्यों अधिक वेदना का अनुभव करने लगा। शांति की तड़प, माँ के आँसू, भाभी के ताने, रूपा-मनु की शरारतें, पिताजी की माला, भाई की दृढ़ता और घर से खेत की राह में बिखरी बचपन की साथी धूल – क्या मैं यहाँ से हमेशा के लिए जा रहा हूं? अभी मैं यहाँ उपस्थित हूँ? यह प्रश्न भी उसे व्याकुल कर देता था। ..लवजी खेत में पुस्तक पढ़ रहा था। हीरूभाई तेज गति से और सस्ती सपाट चप्पलों से धूल उड़ाते आ पहुँचे।

राजनीति से निश्चित समय के लिए निवृत्त रमणलाल स्वस्थ थे। हीरूभाई शासक कांग्रेस के अनुशासनभंग और "अंतरात्मा की आवाज" वाले खेल को भूल नहीं सके थे, सिंडीकेटी नेताओं की भूलों को भी। देवूभाई आज अंत तक बैठे थे और तल्लीनता से सुनते रहे थे। हीरूभाई पूछ रहे थे : 'भगत मैं किसे समर्थन दूँ?' 'अपने आप को।' - पिताजी राजनीति को धर्म में ले गए।

लवजीने कल्पना की। ऐसा ही शाम का समय होगा। पिताजी पूछ रहे होंगे– "भैया कै चिट्ठी आयी?" देवूभाई कहेंगे -"वहाँ तो पत्र लिखने का भी समय नहीं मिलता होगा।" "तो इहाँ से लिखो।" कहकर पिताजी माला फिराने लगेंगे। फिर अचानक रुककर अमेरिका के बारे में पूछताछ करना शुरू कर देंगे। देवूभाई जो भी जानते होंगे सब बतायेंगे।

पिताजी घर से "कथामृत" मँगवायेंगे। रूपा उसे पढ़ते-पढ़ते छोड़कर खेत की मेड़ों पर खेलने चली जायेगी। परन्तु शांति पशुओं को पानी पिलाकर, चारा डालकर, हाथपाँव धोकर "कथामृत" को आगे पढ़ने लगेगी–

"समझाने वाले आप कौन हैं? यह जगत जिसका है वही समझायेगा।

जिसने इस जगत का सृजन किया है, चन्द्र, सूर्य मनुष्य, जीव-जंतुओं को बनाया है, उनके खानेपीने की व्यवस्था की है. पालन-पोषण के लिए माता-पिता दिये हैं, माता-पिता के भीतर स्नेह भरा है वही समझायेगा ।"

29

लवजी के अमेरिका जाने के बाद देवू बेचैन रहने लगा। खेत पर ही दोपहर का खाना मँगाता और चुपचाप, जल्दी से खा लेता। व्यर्थ के काम में वक्त बिता देता और आवश्यक कार्यों में देर कर देता। भगत कुछ पूछते तो संक्षिप्त-सा जवाब देकर कहीं चल देता। शेठ अमीचन्द ने उसे लिवा लाने के लिए मोटर भेजी थी फिर भी वह सारंग नहीं गया। वैद की दवा पर जी रहे धमाकाका डंडे के सहारे भगतबाड़े तक आये। उनसे भी दो टूक बात – "मिलते ही मरने की बातें क्यों करने लगते हो ? मरना हो तो खुशी से मर जाओ न। फूलजी का सब ठीक हो जायेगा।"

रात को सोते समय बहुत सोचता परन्तु मन स्वस्थ न होता। न तो आगत दिन के प्रति उत्सुकता और न रात्रि में नींद। यह बेचैनी है या दुःख ? कुछ समझ में नहीं आता।

ईजू कहती है – कुछ अच्छा नहीं लगता। क्यों अच्छा नहीं लगता – देवू नहीं पूछता। कुछ दिनों पहले उसने बात ही बात में कह दिया था – तो ऐसा करो, बूढ़ा और शांति को यहाँ, अपने साथ रहने के लिए बुला लो। 'उन्हें आना हो तो आयें, मैंने कब मना किया है ?'–ईजू का यह जवाब सुनकर उसने बात खत्म कर दी थी। उसने स्वयं भी माँ से कहाँ नहीं कहा है – अब भाई नहीं हैं तो दो घर में रहने की क्या जरूरत है माँ ? कंकू को भी यह बात तो पसंद आयी थी। भैया के वापस आने पर फिर बँटवारा करना पड़े इससे तो यही अच्छा है। – ऐसा कहते समय भी उनका अर्थ तो यही था कि उन्हें साथ में रहने से कोई आपत्ति नहीं है। ईजू बुलाने आये तो आ जाऊँ। घर तो ईजू का ही है न, यहाँ रहे या वहाँ सबका मतलब एक ही है। – शांति ने भी यह कहकर जता दिया था कि साथ रहने में कोई हर्ज नहीं है।

पर दोनों घर एक साथ नहीं हो सके।

ग्रीष्म ऋतु के पूर्ण होते होते कंकू माँ वृद्ध हो चलीं, और शांति के कपड़े पुराने हो गये। भगत की माला की डोरी घिसकर टूट गयी थी। नई डोरी डालने में उन्हें देर हो गयी। छोटे भाई को खेला रही रूपा दादा की मदद के लिए आयी तो पीछे-पीछे भाई भी आ गया। उसने आते ही मनकों को मुट्ठी में भर लिया। एक मनका खो गया। कंकू, ईजू, शांता, रूपा सभी ने उस मनके की खोज की परन्तु वह नहीं मिला।

"बच्चे ने निगल लिया होगा ।" ट्रेक्टर लेने आये हुए घेमरभाई ने कहा–'मेरा लड़का मिट्टी का ढेला निगल जाता है तो क्या देवूभाई का लड़का मनका भी न निगले ? ऐसा करो नरसंग बाबा, एक सौ सात बार मनके की माला फिराने के बाद एक बार इस बच्चे को उठा लिया करो ।"

सब हँस पड़े किन्तु भगत ने गंभीरता से कहा – 'कहै वाला सही कहिस है कि बच्चा माँ भगवान होत है ।"

घेमरभाई को देखकर देवू आ पहुँचा । घेमर को ढेखाडिया से खरीदी हुई गोबर-खाद दो दिन में उठवा लेना था । उसका मानना था कि दोनों ट्रेक्टर एक साथ चलेंगे तो काम दो दिन में पूरा हो जायेगा । इसीलिए घेमरभाई ट्रेक्टर लेने आये थे ।

घेमरभाई जब ट्रेक्टर लेकर चले गये तो कंकू ने पूछा–"तो अपने खाद डाले मां काहे देर कीन जात है ?"

देवू ने कुछ जवाब देने के बदले सोचा – हाँ देर तो हो रही है । पिछले साल इन दिनों तो खाद डालकर फुरसत मिल गयी थी ।

"लवर्जीभाई गये हैं तबसे इनके मन ही नाहीं लागत ।" ईजू ने कहा और कंकू तथा शांति की आँखें गीली हो गयीं ।

देवू किसी काम के बहाने उठ खड़ा हुआ । मुन्ना उसके पीछे दौड़ा । वह किसी के भी बुलाने से नहीं रुका तो देवू उसे गोद में उठाकर अमराई की ओर ले गया ।

कोयल बोली क्या ? कोई आवाज सुनकर देवू चौंक उठा था । जैसे संपूर्ण इन्द्रियाँ बहरी हो गयी हों । पहले सोने के पूर्व अखबार पढ़े बिना चैन नहीं पड़ता था । ईजू कहती है कि अखबार पढ़ते नहीं तो सारंग से यहाँ मँगवाते क्यों हो । कभी-कभार चार-छः दिन में एक बार नजर उठाकर देख भर लेता है । रात में रेडियो पर समाचार सुन लेता है । सब ज्यों का त्यों है । पिछले दिनों सारंग में हीरूभाई से मिलने का संयोग हुआ था । उनकी बात सच निकली । बांग्लादेश को मान्यता देकर उसकी ओर से पाकिस्तान से लड़ लेना चाहिए । इधर हम देर कर रहे है और शरणागतों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है । जितनी देर होगी समस्याएँ बढ़ेंगी ही ।

देवू ने कहा था कि मुझे इन्दिराजी की बुद्धि पर विश्वास है । योग्य समय पर योग्य कदम उठायेंगी । बांग्लादेश के पक्ष में विश्व की मान्यताएँ उग्र बनने के बाद वे पाकिस्तान से टक्कर लेना उचित समझेंगी ।

4 अगस्त को संविधान में 24वीं बार सुधार किया गया । देवू को उसमें खास रुचि न थी । इस देश में सुधारों की कमी नहीं है । अमल हो भी तब न । कोई बड़ी घटना के बाद वह हीरूभाई को फोन अवश्य करता था किन्तु उस दिन नहीं किया ।

परन्तु 8 अगस्त को तो लगा कि गजब हो गया । छाता लेकर वह गाँव में

निकल पड़ा। पुस्तकालय के पास कोई न था। मंडली के पटवारी को बुलाकर सहकारी मंडली की चाबी मँगवायी और फोन लगाया। हीरूभाई बदरी गये थे। रमणलाल को फोन लगाया। "मास्टर स्ट्रोक।" रमणलाल देवू के साथ बहुत कम अंग्रेजी बोलते थे। रशिया के साथ बीसवर्षीय संधि की बाबत में उन्होंने इन्दिराजी की राजनैतिक सूझ-बूझ की प्रसंशा भी की।

"इंडिकेट में शामिल हो जाने के लिए आप मानसिक रूप से तैयार हो चुके लगते हैं।" देवू ने पुरानी आदत याद दिलाई।

"नहीं, अब राजनीति नहीं, अब तो प्रजानीति।"

उनकी बात अभी चल ही रही थी कि वालजी ने फोन ले लिया।

'क्यों मामा, हम से नाराज हो क्या? आते ही नहीं आप तो?"

"कब आ जाऊँ?"

'कल सुबह। बाद में तो मैं काम में लग जाऊँगा।"

"हाँ भाई हाँ, तू तो बहुत काम करने लगा है। कैसी चल रही है खेती?"

"खेती में तो अब क्या बताऊँ? बाजरा ठीक नहीं है। गोभी और सौफ लग गई हैं। कपास भी ठीक है। फूलने लगा है। आपके यहाँ कैसा है?"

"ठीक ही होगा। मैंने इन दिनों ठीक से देखा नहीं है।"

देवू को लगा कि वालजी रिसीवर को हथेलियों में दबाकर अन्य लोगों के साथ हँस रहा है। उसे आश्चर्य हो रहा होगा। आश्चर्यजनक बात है ही। आदमी रोज खेत में जाता हो और खेती कैसी है? प्रश्न के उत्तर में कहे कि ध्यान से देखा नहीं है तो आश्चर्य ही होगा न।

ऊपर से तुर्रा यह कि हम प्रगतिशील कृषक हैं।

हालांकि सोमपुरा में, सही मायनों में एक ही प्रगतिशील किसान है और वह है – घेमरभाई। जितनी उमंग से यह आदमी जीता है उतनी ही उमंग से खेती भी करता है। न आलस्य और न रणछोड़ जैसा हल्कापन।

रणछोड़ ने पिछले साल डेढ़ एकड़ का अनाज एकत्र करके एक एकड़ में अधिकतम उत्पादन के लिए जिले का इनाम भी जीता था। घेमर जानता था। तभी तो उसने पाँच आदमियों के बीच में ही कह दिया था—"पार्टी दे दो मुखिया, पार्टी। ऐसे इनाम जीतकर अखबार में फोटो छपवा देने से काम नहीं चलेगा।"

देवू उस पार्टी में नहीं गया था किन्तु जब उसने सुना तो हँस पड़ा था। पेंडा, चिउड़ा और चाय के बाद अभिनन्दन देते समय घेमर ने कहा था कि भाग्यशाली के भूत चाकर। रणछोड़भाई शायद ही कभी खेत पर जाते हैं तब भी इनकी खेती अच्छी चलती है। खर्च तो होता ही है, हमसे डेढ़–दो गुना खर्च करें तो भी क्या फर्क पड़ता है! पुराना कर्ज किसे चुकता करना है? और फिर फसल एक एकड़ की थी या डेढ़ एकड़ की कौन मापने गया था? कृषि विभाग के अधिकारियों को हम जैसे लोगों पर अविश्वास हो सकता है रणछोड़भाई पर

अविश्वास करने की किसकी हिम्मत ! गाँव के मुखिया, मंडली के अध्यक्ष और इंडीकेट के मशहूर कार्यकर्ता ।

रणछोड़ को बुरा न लगा । इसके विपरीत उसने कहा – सब चलता रहता है प्रेमरभाई !

सभी ने कहा – सब चलता है ।

सब चलता है – देवू ने भी अनुभव किया था । अनुभव किया था किन्तु समाधान नहीं मिला था । वह किसीके होड़ में है – ऐसा लग नहीं रहा था फिर भी लग रहा था कि जैसे सब कुछ हारता जा रहा है । उसके मन में अक्सर सवाल उठता कि हीरूभाई जैसे लोग किस बलबूते पर लोगों का काम करते रहते हैं ? उन्हें अकेले पड़ जाने की वेदना नहीं महसूस होती ?

मैट्रिक के बाद पढ़ना छोड़कर खेती में मन लगाने के बाद उसकी एक तीव्र आकांक्षा थी कि पूरा गाँव सुखी हो जाये । खाद–पानी की सुविधा हो, सब योजनाबद्ध कृषि करें और गाँव में किसीके सिर पर कर्ज न रहे । उसे उम्मीद थी कि वह ऐसा कर सकेगा । पूरा गाँव तो संगठित नहीं हो सका किन्तु कई एक परिवार आर्थिक दृष्टि से अपने स्तर से ऊपर उठे हैं । लखपति होने का स्वप्न तो पूरे सोमपुरा ने एक साथ मिलकर भी नहीं देखा था जब कि आज वे किसान भी, जिनके पास बीस बीघे से भी कम जमीन है, संकर-4 के बीज और कपास की खेती करके लखपति बन गये हैं । बाल–विवाह, खर्चीले पूर्व-श्राद्ध तथा नये–नये घरों को बनवाने के पीछे सारी आय खर्च की जा रही है । कुछ लोग तो कर्ज लेकर अतिरिक्त खर्च करते हैं । क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया है कि आज नहीं तो कल वे भी खूब कमायेंगे । खर्च पहले और आय बाद में वाला गणित यहाँ स्वाभाविक बन गया है । संभवतः इसीलिए किसी को संतोष नहीं है । सब एकदूसरे से प्रतियोगिता-भाव रखते हैं । एकदूसरे की निंदा करते हैं और स्वार्थपूर्ण अवसर पर संगठित हो जाते हैं । अनावश्यक बैंक लोन लेते हैं । इस आर्थिक बेचैनी की जड़ क्या है ? रमणलाल और हीरूभाई दोनों इस बात पर देवू स सहमत हैं कि अल्पमतों ने अपना अधिकार सहकारी मंडलियों पर, जबरदस्ती कर लिया है । सब सर्वानुमति से करा लेते हैं । सहकारी मंडलियों का उद्देश्य ग्राम–क्षेत्रों में जनतंत्र का बीजारोपण करना था । परंतु यहाँ तो उन पर भोग-विलास के पक्षधरों का वर्चस्व है ।

हीरूभाई ने रमणलाल को गोकुलिया का सरपंच बन जाने की सलाह दी है । मूलभूत जनतंत्र और पक्षहीन राजनीति के उनके विचार साकार होंगे ? यहाँ सोमपुरा में तो कुछ भी संभव नहीं है । शायद लवजी गाँवों से इतना निराश न हुआ होता तो अमेरिका जाने के लिए राजी न होता । क्या वह वापस नहीं आयेगा ? रणछोड़ के गुट ने तो प्रचार करना शुरू कर दिया है कि लवजी अमेरिका गया ही इसलिए कि वहाँ जैमिनी है । कानून का सहारा लेकर वहाँ वह जैमिनी से शादी

कर लेगा और पूरे गाँव की नाक कटवायेगा। इन लोगों की तुच्छता की कोई हद नहीं है। विदाई-समारंभ के लिए ये कितने व्याकुल थे ! लवजी की कितनी प्रशंसा करते थे !

और ऐसी कोई बात हो तो लवजी मुझसे छुपायेगा ? उसमें इतना साहस तो है ही कि प्रतिष्ठा को दाँव पर लगाकर भी सच कह दे।

उस दिन माँ चिन्तित थीं तो पिताजी ने तुरन्त कह दिया था—मुझे विश्वास है कि एक पत्र यदि लिखवाएँ तो लवजी सब कुछ छोड़कर दौड़ता हुआ आयेगा। वह पिथू भगत का वंशज है। यह क्यों भूल जाते हो कि उसका पालन-पोषण किसने किया है ?

इतना विश्वास होने के बावजूद, लवजी यदि अनपेक्षित कर बैठे तो ? पिताजी की क्या दशा होगी ? क्या माला पर से उनका विश्वास नहीं उठ जायेगा ? और माँ ? लवजी के जाने के बाद से कितनी दुर्बल हो गयी हैं ? कहीं स्वयं को बीमार न कर डालें ?

देवू को लगा कि पूरा सोमपुरा बीमार हो गया है। कुछ दिनों पूर्व के धूल-धूसरित खेत आज हरियाली में डूबे हुए हैं फिर भी, जहाँ पहले बैलगाड़ियाँ चलती थीं उन चकरोटों में ट्रैक्टरों के दौड़ने की आवाजें आ रही हैं फिर भी, चवन्नी, अठन्नी और एक रुपये की पोटली बाँधकर हर्ष में डूबे रहने वाले लोगों के सारंग के बैंकों में खाते खुल गये हैं फिर भी, गाँव और गाँव-समूह की बातें करने के लिए चौराहे या मंदिर पर मिलने वाले ग्रामीण इन्दिराजी, याहूयाखान और शेख मुजीबूर्रहमान की चर्चा करने लगे हैं फिर भी, ये लोग जड़ से खोखले हैं। गाँव के हृदय में निरन्तर प्रवाहित रक्त क्रमशः घटता जा रहा है। सब स्वस्थ दिखाई देते हैं, किन्तु बीमार हैं, यही नहीं उस बीमारी को अपने भीतर बढ़ाते जा रहे हैं। किसी से कहेंगे तो वह हँस पड़ेगा।

नहीं कहना है किसी से। नहीं करना है किसी का काम। भले ही रणछोड़ और उसके साथी बांग्लादेश के निराश्रितों के नाम पर चन्दे एकत्र करके खा जायें, भले ही वह सुधार के लिए भाषण करके गाँव में आने वाले अधिकारियों के लिए भोज-दावत देकर शासक कांग्रेस की प्रशंसा करे, भले ही वह अंधेरे-पट की सूचना देने के लिए गली-गली घूमें। लड़ाई में क्या हो रहा है, उसके पास इसकी सूचना होती है।

देवू आजकल फिर से रात्रि का समाचार सुनने लगा है। पिताजी को जब कोई बात अस्पष्ट रहती है, तब उससे पूछते हैं। देवू जवाब देकर स्वयं प्रश्न पूछता—बताओ, इतने वर्षों से माला फिराते हो तो बताओ—यह लड़ाई कब खत्म होगी ? 'कल बताऊँगा।'

दूसरे दिन उसी समय नरसंग भगत कहते हैं—आज से पाँचवे दिन।

16 दिसम्बर को जब जनरल नियाजी ने शरणागत होना स्वीकार कर लिया तो देवू

दौड़ता हुआ पिताजी के पास आया - आपकी आगाही सच निकली। पिताजी तो अपनी बात भी भूल गये थे। बोले-"हम तो तुमका जवाब दीन रहा, कौनो सच नाही बोला रहा।"

देवू ने लवजी को पत्र लिखा। पत्र में बांग्लादेश की विजय की बात सर्व प्रथम लिखी। फिर गाँव की। और अंत में घर की बात। माँ शांति को अपनी पुत्री की तरह पालती हैं। ईजू और शांति भी बड़े मेल से रहती हैं।

अंत में लिखा था - मुझे एक दिन स्वप्न में तुम दिखाई दिये थे। मैंने देखा कि तुम्हें वहाँ एक अच्छी सी नौकरी मिल गयी है और तुमने शांति को वहीं बुला लिया है। यह तो यों ही लिख रहा हूँ। पसे की जरूरत हो तो लिखना।

लवजी ने पत्र के उत्तर में अमेरिकन लोगों और अमेरिका की सरकार की नीतियों की विस्तृत चर्चा की। उसने लिखा कि मैं यहाँ एक बुरे समय में आया हूँ। स्कॉलरशिप की रकम में सारा खर्चा निकल जाता है, आवश्यकता पड़ने पर मित्र लोग फुटकर काम दिलवा देंगे।

जैमिनी एम.बी.ए. कर रही है। थोड़ा बहुत कमा भी लेती है। उसने स्कॉलरशिप ली ही नहीं थी। शायद मिली ही न हो। दूर रहती है फिर भी हफ्ते-दो हफ्ते में एकाध बार मुलाकात हो ही जाती है। बांग्लादेश की विजय पर हम मित्रों ने उत्सव मनाया था। जमिनी के एक अमेरिकन मित्र ने हिन्दी में गीत गाया था।

पीएच.डी. का काम अनुमान के पहले पूरा कर लेगा। इन दिनों यहाँ "न्यू लेफ्ट" नाम की विचारधारा अस्तित्व में आयी है। शायद आपको और हीरूभाई को अच्छी लगे। इसलिए दो पुस्तकें भेज रहा हूँ। आप दोनों में से जिसे अच्छी अंग्रेजी आती हो, वह पहले पढ़े।

देवू को पुस्तकें मिलीं तो उसे आनंद हुआ परंतु लवजी का वह वाक्य भी याद आये बिना नहीं रहा - आप दोनों में से जिसे अच्छी अंग्रेजी आती हो, वह पहले पढ़े।

स्वयं अपनी पढ़ाई छोड़कर भाई को पढ़ाया तो ऐसा मजाक करने लगा।

मजाक तो वह छोटा था तभी से कहाँ नहीं करता था। ऐसा लिख दिया तो क्या बुरा हुआ? देवू ने स्वयं को समझाना चाहा परंतु उसका मन नहीं माना। उसने वह वाक्य हीरूभाई को भी बताया। वे हँस पड़े। हमको लवजी की तरह बोलना नहीं आता तो क्या? पढ़ना तो आता ही है...

गोकुलिया में वालजी की सगाई थी। हीरूभाई और देवू "न्यू लेफ्ट" की चर्चा करें इसके पूर्व गुजरात की विधान सभा के चुनाव की घोषणा कर दी गयी। लोगों की राय थी कि संस्था कांग्रेस के टिकट से हीरूभाई सारंग की बैठक पर चुनाव लड़ें। रमणलाल का भी कहना था कि हीरूभाई चुनाव लड़ें।

शासक कांग्रेस वाले कहते कि हीरूभाई जैसे पवित्र लोकसेवक को संस्था कांग्रेस के टिकट पर चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। शासक कांग्रेस के विरोधियों का कहना था

कि चुनाव की गंदी राजनीति से हीरूभाई जैसे आदमी को दूर रहना चाहिए। बूढ़े पशाभाई स्वतंत्र पार्टी से सीधे शासक कांग्रेस में कूद गए थे।

हीरूभाई यद्यपि दो वर्ष से किसी पार्टी के सदस्य नहीं थे फिर भी उनका कहना था कि जीवन में राजनीति एक गंदी चीज है और उसका निर्माण ही गंदी बनी रहने के लिए हुआ है, यह गलत बात है। राजनीति वर्तमान जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। उससे अलग रहकर कोई पवित्र नहीं रह सकता।

कुछ लोग ऐसे भी थे जो भयभीत थे—यदि वे चुनाव में खड़े रहे तो?

देवू ने कहा था—"आप चुनाव लड़ना चाहते हों तो बुरा नहीं है।"

हीरूभाई ने स्पष्ट इन्कार करते हुए कह दिया—मुझे चुनाव नहीं लड़ना।

सोमपुरा के लोगों ने देवू पर चुनाव लड़ने के लिए दबाव डाला तो उसने पुनः हीरूभाई का ही नाम लिया। बीमार धमाकाका को छोड़ गाँव के कई लोग देवू के साथ गए। इस बार हीरूभाई इन्कार न कर सके और उन्हें निर्दलीय उम्मीदवार घोषित कर दिया गया। संस्था कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार को बैठाकर हीरूभाई को समर्थन दिया।

टींबा में आमंत्रित एक सभा में हीरूभाई ने कहा कि मुझे तो घूम-घूमकर चुनाव लड़ना है। निश्चित खर्च में ही चुनाव लड़ना है। और मेरे पास अधिक पैसे भी नहीं हैं।

इतना सुनते ही मगन अमथा खड़े हो गये और उन्होंने अपनी ओर से पंद्रह हजार का सहयोग घोषित किया। फिर क्या पूछना था? चौधरी भाइयों ने एक के बाद एक खड़े होकर सहयोग राशि गिनानी शुरू कर दी।

देवू से नहीं रहा गया। बोला—"आप लोग यह मत भूल जाइए कि हमने हीरूभाई को चुनाव में क्यों खड़ा किया है? पैसे से ही जीतना होता तो रणछोड़ को खड़ा करते, हीरूभाई को नहीं। आप लोगों को सहयोग देना हो तो प्रजाभारती को दीजिए।"

हीरूभाई ने पिछड़ी जातियों की सेवा अधिक की थी। उन पर पशाभाई एवं उनके समर्थकों की ओर से जातिवादी होने के आरोप लगाये जाते रहे।

चुनाव के पहले ही लवजी का पत्र देवू को मिल गया था। लिखा था—हीरूभाई को जिताना हो तो खर्च के बारे में नैतिक बने रहने की जरूरत नहीं है। अमेरिका में भी चुनाव तो भारतीय शैली से ही लड़ा जाता है। बस, यहाँ के भ्रष्टाचार का स्तर थोड़ा-सा उच्च है।

लवजी के एक-एक पत्र को सँभालकर रखने वाले देवू ने इस पत्र को फाड़कर फेंक दिया था। अंतिम रात्रि में पशाभाई के आदमी पूरे गाँव के गाँव को खरीदने निकल पड़े थे। देवू फिर भी अविचल रहा।

जब हीरूभाई आठ सौ वोटों से हार गये तो देवू को लवजी के पत्र की याद आयी पता नहीं क्यों लवजी पर क्रोध भी आया था। और किसी ने नहीं बल्कि लवजी ने ऐसी सलाह दी?

परिणाम–घोषणा की रात धमाकाका की मृत्यु हो गयी थी। कहीं गये हुए रणछोड़ ने आकर बताया कि हीरूभाई की पराजय का आघात धमाकाका न सह सके और उनकी मृत्यु हो गयी। रणछोड़ ने चोरीछिपे शासक कांग्रेस का प्रचार किया था। उसने धमा काका की मौत की बात मजाक में कही थी किन्तु सुनने वालों ने इसे सच मान लिया था।

दूसरे दिन धमाकाका के खेत पर जाकर नरसंग भगत फूलजी को ले आये। उसे नहलाया, खिलाया और उसके सिर पर हाथ फिराकर प्यार किया।

देवू नीम के छाये में लेटा था। इतने में अपने छोटे भाई को गोद में लेकर रूपा आ पहुँची और बोली–"पप्पा, ई कागज भैया फाड़त रहा।"

पत्र पुराना था। लवजी का तीसरा या चौथा पत्र होगा। उसमें, अंत में, उसीकी एक कविता का एक अंश था। देवू ने पढ़ा–

ये बिखरे हुए विचार
यदि रच डालें उच्छ्‌वास
तो वीराने मन में उग आयेगी घास,
बादल छा जायेंगे वतन के आसपास,
सागर को पार करते पक्षियों को लुभायेगा
सरोवर के विस्तृत जल में संचित उजास,
तब तो मैं फैलने लगूँगा अनायास,
बहूँगा जल–धाराओं में
आनंद का मिलेगा आभास,
स्वदेश की स्मृति में
खुलने लगेगी थोड़ी चिर परिचित लकीर
फिर तो मैं मिलूँगा नहीं
विलीन हो जाऊँगा।

लवजी वहाँ होकर भी यहाँ की स्थितियों में विलीन हो जाना चाहता है! आजकल वह परेशान होना चाहिए।

30

देवू ने टींबा के रबारी के पास से एक दुधारू गाय और बछड़ा खरीदा था। उन्हें पानी पिलाने ले जाते समय भगत बछड़े का पगहा पकड़ते और गाय का पगहा फूलजी को पकड़ा देते। फूलजी उनके पीछे–पीछे चल पड़ता। भगत तब बछड़े को संबोधित करके "पोह–पोह" बुलाते तो फूलजी भी ऐसी ही आवाज निकालने की कोशिश करता। यह देखकर रूपा को हँसी आ जाती और छोटा भाई तो वैसे ही हँसता रहता था।

आम के पेड़ों में अमिया लगने लगी है तभी से रूपा और मुन्ना खेत में आने लगे हैं। वे आते ही ढलाव की ओर दौड़ जाते हैं। कौन-सा आम गदराने लगा है इसका अनुमान लगाकर ही रूपा ढेला उठाकर मारती है। मुन्ना उसकी मदद करना चाहता है। उसके द्वारा फेंका हुआ ढेला किसी भी दिशा में चला जाता है और आम में लगने के बजाय रूपा को लगता है। रूपा रोती है। उसे रोता देखकर फूलजी विचित्र सी आवाज करते हुए भगत के पास जाता है। भगत कुछ समझे इसके पूर्व ही रूपा चुप हो जाती है। और भाई को गोद में उठाकर उधर आने लगती है।

गरमी अधिक पड़ने लगी है और आजकल मुन्ने को हौज में बहुत मजा आने लगा है। कल शाम को हौज के पत्थर पर खड़े होकर मुन्ना ने अपने सारे कपड़े उतार दिये थे। यह देखकर बीसवर्षीय फूलजी ने भी अपने सभी कपड़े निकाल दिये। मुन्ने को तो भगत ने नहलाकर साफ कर दिया किन्तु फूलजी तो नहाना बंद करने का नाम ही नहीं लेता था। भगत ने उसे कपड़ा दिया तो उसे भी भिगो दिया। अंत में उसका हाथ पकड़कर बाहर निकाला और उसको लुंगी पहनाई। शाम को देवू से कहा कि कल सारंग जाना तो इसके लिए एक जोड़ा कपड़ा ले आना।

देवू आज ट्रैक्टर लेकर सारंग गया है। गाँव की सहकारी मंडली पैसे के अभाव में खाद नहीं खरीद पा रही है। यूरिया, डाय एमोनियम आदि खरीदकर देवू अभी आ जायेगा और फूलजी के लिए एक जोड़ी कपड़ा लेता आयेगा। भगत इस बात से बहुत खुश हैं।

अभी मुन्ना और रूपा खेत पर नहीं आये हैं।

कोई आवाज सुनकर भगत उठ खड़े हुए। अरे! यह तो हेती और वाली बूढ़ा। उनके साथ में हैं घर के सभी लोग - कंकू, ईजू, शांति, मुन्ना और रूपा। भगत माला रखकर उठ खड़े हुए। उनसे थोड़ी दूर पर बैठा कच्चा आम खा रहा फूलजी भी उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगा जैसे उन्हें देखकर वह हँस पड़ा हो और पहले जहाँ बैठा था उससे कुछ दूरी पर जाकर बैठ गया। वहाँ एक दूसरा आम पड़ा था।

वाली बूढा से आनंद-मंगल का समाचार पूछकर भगत ने हेती की ओर देखा-

"भानजे के सगाई कर दिहो ? अच्छा किहो।"

दूर बैठे फूलजी को देखकर हेती दुखी हो गयी। रास्ते में सब एक ही बात कर रहे थे। वालजी और फूलजी दोनों बराबर हैं। एक ही सुबह दोनों का जन्म हुआ था। वालजी घर की संपूर्ण खेती की देखभाल करता है और यह फूलजी बेचारा अनाथ घूमता है... हेती को लगा जैसे अपने ही जुड़वा संतान में से एक इस तरह...

"बहुत दिन बाद.." भगत वाली बूढ़ा से कह रहे थे।

"तुहरे करसन मुखिया के परताप से। हम उनके मातम मां आइन रहा।"

कहते-कहते वे हँस पड़ीं । ईजू और शांति भी हँस पड़ीं । हेती को भी फूलजी के ऊपर से दुःख और ममता भरी नजर हटाने का अवसर मिला । उसे कुछ राहत मिली ।

"का बात करत हौ ?"

आगे की बात कंकू ने बतायी –

"ई आपन घेमर । बुढ़ाय गवा है तबौ वैसे क वैसे रहा । काल गोकुलिया गवा रहा । बिटिया से पूछिस होये – काहे आजकाल पंयर नाहीं आती ? फुरसत नाहीं मिलत । सुनतै ऊ भवानी काका बोला – काल तो औबो कि नाहीं करसनबाबा कै काम है । अतनी दूर रहत हैं बुढऊ मरे होंय, भला पता न चले ? पर बिटिया सोचिस सही बात होये । ई तो अच्छा भवा कि भैया इनका सारंग के बजार मां मिल गये और गाड़ी वापस भेज दिहिन । नाहीं तो फजीहत होत ।"

हेती और बार्ला को देवू आग्रह करके ट्रेक्टर में बैठाकर ले आया था । ट्रेक्टर घर पर खाद डालकर भाड़े पर चला जायेगा । देवू अभी वापस आ जायेगा । याद आयेगी तो करसन बुढऊ का हाल भी लेता आयेगा ।

एक महीने पहले उनका एक अंग लकवे से ढीला हो गया था । अब बड़ी मुश्किल से चलते हैं । जेठाभाई एक लड़के को हमेशा उनके पास ही रखते हैं ।

सो रहे हो या जाग रहे हो – जीभ तुतलाती है तब भी बोलते नहीं थकते ।

राजा, मंत्री और मुखिया की बातें करते हैं ।

पंचायत बुलवाकर नम्बरदारी वापस माँगते हैं ।

गाँव के कुत्तों को गालियाँ देते हैं ।

बहुओं से घूँघट काढ़ने की बात करते हैं ।

रणछोड़ को गोद में बैठने के लिए बुलाते हैं ।

हीरूभाई को पत्र लिखने के लिए कहते हैं ।

पिथु भगत को संबोधित करके ठहरने के लिए कहते हैं । फिर बड़बड़ाते हैं – बहुत अंतर बढ़ गया है, अब नहीं पहुँच सकता ।

कभी-कभी बैलों को पानी पिलाने के लिए कहकर जेठा के छोटे लड़के को डाँटते हैं । सुनने वाले हँसते हैं । कुछ लोग इसी आशा में आकर उनके पास बैठते हैं कि हँसने को मिलेगा ।

रणछोड़ ने अपना एक आदमी उनकी सेवा के लिए रख छोड़ा है । जिससे कि छुपाकर रखे धन के बारे में बुढऊ कुछ बड़बड़ायें तो जानकारी मिल जाये । और जेठाकाका के जान जाने के पहले ही सब पचाया जा सके ।

परंतु बुढऊ अभी उस धन के बारे में एक शब्द भी बोले नहीं हैं ।

देवू आज उनका हाल जानने उनके पास गया तो उन्होंने उसे पहचान लिया । वे कुछ कहना चाहते ही थे कि रुलाई आ गयी । अधिकतर वे मिलने आने वालों को पहचान नहीं पाते और पहचानते ही रो देते हैं । पहचान जगते ही उन्हें अपने

दुःख भी याद आ जाते हैं । फिर वे बोलने लगते हैं और बोलते-बोलते अपना होश खो बैठते हैं – "लाव तौ हमार माला, ऊसे भगवान का बाँध देई । हमार पियारा हाथ मां नाहीं आवत ।"

करसन बुढऊ की बात बताने के बाद देवू ने जेब से लिफाफा निकाला ।

"भैया कै चिट्ठी आय ?" हेती ने हर्ष से पूछा ।

"हाँ ।"

सुनते ही शांति का चेहरा खिल उठा ।

दो पत्र और एक लंबी कविता देखकर अब देवू की समझ में बात आयी कि पतले-से पत्र का वजन क्यों इतना अधिक लग रहा था ।

एक पत्र में लिखा था कि हीरूभाई हार गये हैं – यह लोकजागृति की भूमिका है । अतः दुखी होने की बात नहीं है । दूसरे पत्र में, जैमिनी ने एक अमेरिकन से हिन्दू विधि से कैसे विवाह किया है, इसका विस्तृत वर्णन था । उसमें हास्य के भी अंश थे अतः देवू ने सोचा कि जैमिनी ने किसी अन्य से विवाह किया इस बात का भाई को कोई दुःख नहीं हुआ है ।

दोनों पत्रों को हेती के हाथ में देकर वह कविता लेकर खलिहान की ओर चला गया । नीम के नीचे खड़ी खाट को गिराकर लेट गया । पढ़ने लगा–

स्वदेश जा रहे मित्र को एक सलाह

मैं तो कई बार प्रथम वर्षा के बाद
वतन हो आया हूँ
आप वहाँ जाएँ तो बस में खिड़की की ओर बैठना ।

शहर छोड़ने के तुरंत बाद
आकाश का खुलापन धरती पर उतर आयेगा ।
आपकी इच्छा होगी कि लंबी गहरी साँस लें ।
ऐसा करते समय मुझे
हर बार गुजरा वसंत याद आ जाता है ।
और अपने रक्त में संचित सुगंध
अभी भी शेष है कि नहीं इस बात का विश्वास कर लेता हूँ ।
आप ऐसा कुछ न करके
एक दूसरी लंबी साँस लें तो भी पर्याप्त होगा ।
मेरे वतन की दिशा आपको कृतज्ञ कर देगी, अनचाहे ही ।
प्रथम वृष्टि स्वयं एक चमत्कार है,
देखियेगा, जलाधीन ।

बस की गति बढ़ेगी और सड़क की बायीं ओर
वर्षों पूर्व खोदी गयीं चौकड़ी में धुलकर

और भी हरी हो गयी वन-वीथिका का प्रतिबिंब पड़ेगा ।
यानी की प्रतिबिंब भी धोया हुआ-सा लगेगा ।
पृथ्वी की ताजगी, पानी में देखने से अधिक मोहक लगेगी ।
हौज में स्नान के बाद हमारे देवूभाई के मुन्ने की आँखों में देखो
कि सोमपुरा की भीगी हुई सीम ।
शाम होने के पहले वहाँ पहुँच जाना ।
पिताजी इसी ओर नजर किये माला फिरा रहे होंगे ।
जैसे कि मेरी देखरेख कर रहे हों ।

सड़क के दोनों ओर कुम्हारों की भट्ठी होगी ।
कुछ तो बरसात के पहले ही खुल गयी होंगी ।
उनकी मूलतः केसरी ईंटें लाल ही नहीं गुलाबी भी दिखाई देंगी ।
तेल की टंकियाँ भी रुपहली बनी होंगी,
युक्लिप्टिस के वृक्ष भी बड़े हो गये होंगे
और आम बरगद की तरह फैल गये होंगे
तब भी किसी भट्ठी की भीगी ईंटें देखते जाना ।

पहले तो वर्षा होती और बहुत दिनों तक बोवाई होती रहती ।
आपको आज भी कोई बैलों की जोड़ी दिखाई दे सकती है ।
मेरे दादा आबाद जोड़ी रखते थे
खूँटे पर उछलता कूदता बछड़ा ऐसा कि नजर लग जाये ।
मृत्यु पूर्व उन्हें पुण्य में किसी ने दो गायें दी थीं,
अब तो लोग झटपट मर जाते हैं,
दान-धर्म घटता जा रहा है ।
देखादेखी ही से जीते जी श्राद्ध के महाभोज होते हैं···
और मुश्किल से कहीं राम कीर्तन होते हैं ।

रात में भी ट्रेक्टर चालू ।
आप देखेंगे कि ट्रेक्टर लेकर सामने से आ रहा किसान
अन्य किसी ट्रेक्टर वाले से
हाथ के संकेत से कुछ कह रहा होगा ।
वह इस क्रिया में विलंब करेगा
जिससे आपकी बस धीरे-से पसार हो जायेगी ।
वहाँ के लोगों को आप भी दिखाई देंगे ।
मेड़ पर खड़ी लड़की
नामपट पढ़े बिना ही
आपके गन्तव्य का अनुमान लगायेगी ।

उसके अनुमान में अधिक भूल नहीं होगी ।
क्योंकि प्रत्येक गाँव किसी न किसी का वतन होता है ।
मेरी पत्नी कह रही थी कि पिछले दिनों जब वह गाँव में अकेली थी
तब किसी भी वाहन को देखते ही
उसमें मैं होऊँगा, मान बैठती थी ।
विचित्र बात है न ?
बस चली जाये और राहों में उड़ती धूल रह जाये
यह देखकर हँस लिया जाय तो अच्छा । नहीं तो मुश्किल लगता है ।
हम दोनों उस उम्र में भावुक थे
आज भी उसकी बातें तो वैसी ही होंगी ।
आपको क्या बताऊँ.
वह धरती ही ऐसी है कि पशु-पक्षी सब उसे बरबस याद रखें ।
एक बार शहर में बेची हुई भैंस
वापस आकर इतनी जोर से रंभाई थी कि
वृक्षों की पत्तियाँ पक्षी बनकर उड़ने लगी थीं ।
भावनाओं का हरा चक्रवात सा आ गया था ।
आप तो जानते ही होंगे कि पक्षी घोंसला बनाने के बाद
कहीं भी जायें शाम को वापस आ ही जाते हैं ।
किसी झाड़ी की चोटी पर बैठकर
पूँछ पटपटा रही गौरैया को देखकर
यह मत सोच लेना कि यह रास्ता भूल गयी होगी ।
उसके पास अजनबी होने का भाव हो ही नहीं सकता ।
देखा, अनदेखा सब आत्मीय ।
हमारे गोकुल के गधे या मंत्री बन गये पशाभाई की मोटर,
हमारे हीरूभाई की टूटी हुई चप्पलें
या रणछोड़ की नयी-नवेली जीप
ईजूभाभी की सोने की चूड़ियाँ,
या शांति का महामूला मंगलसूत्र—
गौरैया के लिए तो सब समान है ।
हाँ, उसे एक बात का आश्चर्य हो सकता है—
कुछ दिनों पूर्व यहाँ मेड़ों पर
और वहाँ खेत की लकीरों में दिखाई पड़ रहे
मखमली इन्द्रगोप कहाँ गये होंगे ?
धरती के अंतःकरण में लुप्त हो जाने की वजह से

आपको नहीं दिखाई देंगे ।
मैंने उनके लिए केसर की बूँदों की उपमा की कल्पना की थी ।
यह तो मात्र आपकी जानकारी के लिए ।

बरसात होगी तो ?–ऐसी चिन्ता होने के बाद थोड़ी थोड़ी
बूँदाबांदी आपको अच्छी लगेगी ।
आकाश के समक्ष हथेली फैलाने के लिए आप ललचायेंगे ।
और आप क्षितिज ढूँढने की इच्छा नहीं कर सकेंगे ।
उसी वातावरण में खोये हुए आप
आगे बढ़ते जायेंगे ।
सूरज न दिखाई पड़ रहा हो तब भी
थोड़ी सी बरसात में भीगे हुए ग्रामीण
हमेशा सुन्दर लगते हैं ।
प्रत्येक की आँखों में ऐसी ताजगी होगी कि उनकी उम्र घट गयी लगेगी ।
दौड़कर सड़क के पास आ खड़े हुए
युवकों की नग्न पिंडलियों की चमक
और युवतियों की आँचल से ढका हरी-भरी छाती पर
मुक्त हास्य के बाद अशांत कंपन के साथ तो
मैं प्रथम वृष्टि के बाद के अंकुरों की ही तुलना करूँगा,
जब भी गाँव के बाहर होऊँगा तब
बहुत देर से देखने पर मेरा गाँव सोमपुरा
बढ़ते हुए शीशे की तरह दिखाई देता है ।
जिस प्रकार कबूतर इकट्ठे बैठकर मिल जाते हैं
अधिक वर्षा में गाँव के छप्पर नजदीक आ जाते हैं ।
इस अखंड दृश्य का अंग बन जाना आपको अच्छा लगेगा ?
तो जाना ।
मैं तो जरूर जाऊँगा ।
बस में खिड़की के पास बैठूँगा ।
सब कुछ देखते-देखते अंत तक जाऊँगा
और भाग्य में होगा तो भीगूँगा ।

—भाई ने क्या लिखा है ? हेतीबहन से पूछा । देवू ने पत्र पढ़कर सुना दिया तो फिर वह कैसा कागज है ? माँ ने ऐसे पूछा जैसे उसे भी सुनना चाहती हों। देवू ने बिना किसी तर्क-वितर्क के कविता पढ़ना शुरू कर दिया । सब इतनी तल्लीनता से सुन रहे थे जैसे सो रहे हों। अंतिम पंक्ति पढ़कर देवू ने बगल में देखा - पीछे फूलजी आकर उकडूं बैठ गया था । देवू ने महसूस किया कि यह सब सुनकर सबसे अधिक संतोष फूलजी को मिला है । पिताजी भी द्वितीय नंबर पर आते हैं ।

परन्तु यह क्या ! अरे ! माँ, हेती, ईजू और शांति सभी की आँखों में आँसू ?
क्या ये लोग जानते हैं कि इनकी आँखें भीगी हुई हैं ?

थोड़ी देर बाद पिताजी बोले—"कबौ-कबौ माला फिरावत के मन माँ राम-नाम के अस लग लागत है कि कुछ याद नाहीं रहत । वैसे आज भैया की कविता सुनत के भवा । वाह तेरी लीला भगवान ।"

खेत के ढलाव में खेल रहे रूपा और मुन्ना को लेने के लिए भगत उठ खड़े हुए । उनके पीछे-पीछे फूलजी भी चल पड़ा ।

देवू उन्हें देख रहा था । किन्तु उसके मन में एक दूसरा ही सवाल घुमड़ रहा था— मैं भी इन लोग के साथ एकरूप क्यों नहीं हो सकता ? क्यों नहीं हो सकता ?

31

लवजी स्वजनों के लिए फोटोग्राफ भेजता रहता था । उसने इन दिनों तीन फोटो घेमरभाई और हीराभाभी के लिए भेजे थे । प्रत्येक फोटो के पीछे लिखा था, हीराभाभी, घेमरभाई के लिए । दोनों नामों के बीच "और" अव्यय न लिखकर लवजी ने अनर्थ कर दिया था । देवू की उपस्थिति में घेमर ने कहा था—"इसमें लवजीभाई ने नया क्या लिखा है भला ?" घेमरभाई के लिए ही तो, और किसके लिए हैं हीराभाभी ?" सब खूब हँसे । देवू ने कहा—भाई ने जल्दबाजी में अंग्रेजी शब्द "फॉर" का अनुवाद कर डाला है– "के लिए" ।

अब तो घेमर भी बड़े अक्षरों वाली पुस्तकें पढ़ता है । अर्पण का वाक्य कैसा होता है, वह जानता है । "हीराभाभी और घेमरभाई को" इस तरह लिखा होता तो अर्थ का अनर्थ न हुआ होता । हीरा ने कहा कि लवजीभाई ने ऐसा लिखा होता तो आपने कुछ दूसरा गड़बड़ ढूंढ निकाला होता, परन्तु चुप तो नहीं ही रहे होते ।

तीनों में से सबसे बड़ा फोटो घेमर को अच्छा नहीं लगता था । उसमें लवजी और जैमिनी के साथ उसका पति हेनरी भी खड़ा था । इस भूरे का अकेले का फोटो होता तो मैं कबका फाड़कर फेंक चुका होता । चेहर, जतन और कंकू को 1938 का किसान सत्याग्रह याद आ जाता । कंकू को छूरा मारने वाला मकरानी भी ऐसा ही था । नरसंग हँस पड़ते ।

दो दिनों में ही घेमर के लड़के झगड़ने लगे । उन्हें मात्र फोटो देखने में ही नहीं, बाँट लेने में रुचि थी । घेमर को तुरन्त समाधान मिल गया । ट्रेक्टर लेकर सारंग जाकर ताबड़तोड़ तीनों फोटो मढ़वा लाया । "हीराभाभी, घेमरभाई के लिए" वाला वाक्य पीछे चला गया । अब कोई हर्ज नहीं । लवजीभाई कितने अच्छे लगते हैं ! कैसे अलग-अलग खड़े हैं । इस भूरे को तो लाजशरम ही नहीं है । जमु-

बहन से चिपककर खड़ा है, नालायक । हमारे लवजीभाई की प्रेमिका को उठा ले गया । घेमर ने लवजी को भर्तृहरि कहा और जैमिनी की ओर संकेत करते हुए लवजी की ओर से "भिक्षा देना मैया पिंगला ।" वाले गीत की एक कड़ी गायी । घेमर ने बताया कि अपने लवजीभाई के मन में ऐसा था कि यह जुल्फो वाली उनकी सात जन्म की प्रेमिका है परन्तु निकली साली पिंगला । इस फोटो में लवजी-भाई रानी जैमिनी के घर चाय-पानी की भिक्षा लेने गये लगते है । यह गोरा और कोई नहीं बल्कि अश्वपाल है । है न सफेद घोड़े जैसा ?

यह बात हीरा ने हँस-हँसकर शाति से बतायी । शाति ध्यान से सुनती तो रही किन्तु हँसी जरा-सी भी नहीं । बल्कि उदास हो गयी । हीराभाभी को वह अपने हृदय के भाव तो नहीं समझा सकी किन्तु इतना तो जोर देकर कहा कि जैमिनी और लवजी के बीच का सम्बन्ध किसी के तोड़ने से नही टूट सकता ।

पिछले कुछ दिनो से लवजी के पत्रो से शाति को ऐसा लगने लगा था कि उन्हे वहाँ अच्छा नही लगता । जैमिनीबहन ने जल्दबाजी मे शादी की यह उन्हे पसद नही आया लगता । यो तो जैमिनी कलकत्ता और अहमदाबाद मे थी तब भी विवाह की बात चलती रहती थी । कोई अच्छा लड़का मिलता तो लवजी स्वयं उसे जैमिनी की बात कर लेने के लिए तैयार था । शाति तो अक्सर हँसते हुए कहती – आप ही कर लो न शादी । मेरी ओर से छूट है । हम तीनो लोगो को जरूर मजा आयेगा । लवजी बात टालने के लिए एक सक्षिप्त–सा वाक्य बोल देता–"जो मन से अच्छा लगता हो, शरीर से भी अच्छा लगे, जरूरी नहीं है ।" कभी-कभी नजर उठाकर गभीरता से कहता–"जो देवता का परसाद हो उसे भूखी नजरों से नहीं देखना चाहिए ।"

शाति को पहले जो बाते नही समझ मे आती थीं, लवजी की अनुपस्थिति के कारण समझ में आने लगी हैं । ईज़, हीरा और कंकु के बीच वह अब निर्भीक होकर कह देती है – जैसे मेरे और उनके विवाह के बाद उनके और जैमिनी के सबंधो में दरार नही पड़ी वैसे ही जैमिनी और हेनरी की शादी के बाद भी उनके बीच कोई दरार नही पड़ेगी । वे लोग पहले जैसे ही हिलते-मिलते रहेगे । हम यदि सोमपुरा के रिवाजो के अनुसार पश्चिमी दुनिया को देखेंगे तो कुछ भी नही समझ सकते । और उसमें भी अमेरिका तो और भी विचित्र देश है ।

शाति जानती थी कि वहाँ विवाह पूर्व शारीरिक सबंध होना आश्चर्य की बात नहीं मानी जाती । विवाह के बाद भी पति या पत्नी दूसरो को आलिंगन करत हैं, चुम्बन लेते हैं . यह तो वहाँ का रीति-रिवाज है । जैमिनी-हेनरी की शादी भले हो गयी हो, उन दोनों का मिलना-जुलना या एकदूसरे के प्रति चिन्तित रहना खत्म नही हो जायेगा । पति को अकेलापन महसूस होगा – ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है...

फिर भी समझ में नहीं आता कि यह बेचैनी कैसी है ? जो भी हुआ है वह लवजी को अच्छा नहीं लगा, इसीलिए ?

हीराभाभी बिना किसी संकोच के उलटे-सीधे प्रश्न पूछती हैं। शांति लवजी की ही भाषा में उत्तर देती है और हीरा परेशान हो जाती है। हीरा भला और किससे फरियाद करें ? कंकू माँ कहती हैं – देखो तो यह कल की शांति, मुझे चिढ़ाती है। क्यों ? क्या मैं इतना भी नहीं समझती कि लवजीभाई किसी का नुकसान करें ऐसे नहीं हैं ? नहीं तो कोई अड़ंगा नहीं डाल देते ? फिर वह दो चुटियाँवाली शादी कर सकती थी उस घोड़े जैसे गोरे से ? पहले तो जैसे जादू चल गया हो, हमारे लवजीभाई के पीछे-पीछे भागती फिरती थी।

"चुप मारो हीरा बहू, का उल्टा-सीधा बका करत हो जौन मन मां आवत है वही ?" कहते हुए कंकू माँ उसके आगे छींकनी की डिबिया रख देतीं।

शांति थोड़ा आगे खिसककर रूपा की किताब पढ़ने लगती है। लवजी के द्वारा लिखे गये अन्य लोगों के पत्र भी अततः शांति के पास आकर ही विश्राम करते हैं। उन पत्रों को पढ़ने के बाद कभी कभी लवजी के पुराने लेखों को वह निकाल लेती है। पहले विश्वास था कि यह सब मुझे इस जन्म में समझ में नहीं आयेगा। परन्तु अब लगता है जो भी उनका है, सबकुछ मेरा है। भले समझ में नहीं आये, पढ़ूँ तो

कुछ तो जैसे मेरे लिए ही लिखा गया हो। हाँ। यह उल्लेख मेरे बारे में ही है। ऊर्मिलाबहन ने एक बार उनसे कहा था – "लवजी तूने शांति से शादी न की होती तो बहुत कुछ खो दिया होता। मैं तुझे बुद्धि से चाहती हूँ और शांति भावनाओं से। मेरे लिए तू कदर का विषय है, शांति के लिए जिन्दगी नामक दर्द की औषधि।" फिर वे कुछ गाने लगी थीं। उस दिन बहुत अच्छा नहीं गा सकी थीं।

वह रूपा को लवजी की कविताएँ गाकर सुनाती है। रूपा स्कूल से छूटकर सीधे घर आ जाती है। खा-पीकर खेलने जाती है। मनु को भी लेती जाती है।

"गिराना मत, खराब मत करना। देखना नीचे मत उतारना, मिट्टी खा जायेगा।" शांति इतनी सूचना देता है। कंकू माँ की उपस्थिति में मनु को पीठ पर बिठाकर जैसे-तैसे दौड़ने का रूपा का साहस नहीं होता था। लड़झगड़कर ले भी जाये तो देर तक बड़बड़ाती हुई, वह बाहर सीढ़ी पर बैठ रहती।

रूपा पहले आ जाती तो वह मनु को लेकर आगे-आगे चल देती उसके पीछे-पीछे शांति और फिर कंकू माँ। काम हो या न हो, जाते जरूर। जैसे छोटे बछड़ों बछियों के पीछे गायें।

कंकू माँ अक्सर भगत से कहती हैं – ईजू घर-खेत में जितना ध्यान देती है, उतना ध्यान लड़के में नहीं देती। भगत जवाब देते हैं कि वह इतनी समझदार तो है ही। शांति मनु और रूपा की ऐसे देखभाल रखती है जैसे भगवान की भक्ति करती हो। उसका समय आनन्द से बीत जाता है। देवू ने सलाह दी होगी। नहीं तो ईजू का स्वभाव तो ऐसा है कि पल भर के लिए भी बच्चों को अकेले न छोड़े।

"वाह बुढऊ तुहार समझ ।" कंकू माँ को आश्चर्य होता है । उनकी आँखें हर्ष से गीली हो जाती हैं और वे पूछती हैं – "भैया कब आवे क लिखिन है ?" लवजी को अमेरिका पहुँचे छः महीने भी नहीं हुए थे तभी से भगत यह प्रश्न सुनते आये हैं । वे जानते हैं कि चाहे जितना विश्वास दिलाया जाये मगर बूढ़ा का मन नहीं मानेगा । उससे मजबूत दिल वाली तो शांति है । छोटी बहू के प्रति भगत का पक्षपात पूरे घर में ही नहीं, पूरे मुहल्ले में मशहूर है । सास-ससुर शांति के लिए भी माता-पिता से कम नहीं ।

एक बार लवजी देवूभाई और शांति दोनो को पत्र लिखकर कह चुका है कि मैं खर्च की व्यवस्था कर सकने के योग्य हो गया हूँ. यदि शांति शेष समय के लिए अमेरिका आना चाहे तो, जैमिनी भी मदद करेगी ।

देवू ने तो कहा भी था–' ऐसा संयोग बार बार नहीं आता । चली जाना चाहिए । क्या गलत कह रहा हूँ माँ ?"

शांति ने लवजी को लिखा "मेरे साथ बड़े भाई के लड़के मनु को भी बुलायें तो आऊँ । उसके बिना मुझे वहाँ अच्छा नहीं लगेगा । और हमारे बिना माँ को भी यहाँ अच्छा नहीं लगेगा । सच है न ? हाँ, अकेले बाबा खेत में अलाव के पास बैठे बैठे माला फिराते रहेंगे और प्रत्येक मनके पर भगवान को ऊपर-नीचे करते रहेंगे ।'

लवजी ने जैमिनी और हेनरी की उपस्थिति में यह बात चलायी । जैमिनी ने शांति की प्रशंसा की थी किन्तु हेनरी को लवजी की पत्नी का मस्तिष्क "एबनॉर्मल" लगा था । सारी बात हो जाने के बाद उसे लगा था कि जैमिनी और लवजी उसे मूर्ख बना रहे हैं । शायद ये चाहते ही नहीं कि शांति आये । जैमिनी ने एक बार निद्रा में ही लवजी को सम्बोधित करके कोई कविता पढ़ना शुरू कर दिया था ।

हेनरी ने उनसे कहा कि यदि मैं गुजराती जानता होता तो रहस्य समझ सकता था । घर जाने के बाद जमिनी ने उसे उलाहना दिया तो वह उल्टे ही भभक उठा–

' लवजी को तेरे साहचर्य से संतोष है । उसे जो भी चाहिए सब तुझसे मिल जाता है इसलिए वह पत्नी को बुलाना ही नहीं चाहता, ऐसी कहानियाँ गढ़ लेता है । मैं ऐसे दंभ और धोखे को धिक्कारता हूँ ।"

"हेनरी तू लवजी में अन्य कोई भी अवगुण देख किन्तु यदि उसे तूने झूठा कहा तो मुझे दुःख होगा ।"

हेनरी आजकल लवजी से नहीं मिलता । कहीं उसकी हकीकत न खुल जाये इस बात का ध्यान भी रखता है । इसका क्या उपाय हो सकता है ? लवजी उलझन में है । उससे देवूभाई को लिखे बिना नहीं रहा जाता । किन्तु वह पत्र भी शांति तक पहुँच गया–

बड़े भैया,

नमस्ते ।

काम चल रहा है किन्तु मन अशान्त रहता है। यदि मैं स्वभाव से कुछ जिद्दी न होता तो अब तक यहाँ से भाग खड़ा हुआ होता। पीएच.डी. वहाँ आकर पूरी करता। न भी पूरी हो तो भी क्या ?

जैमिनी ने जब हेनरी से विवाह किया था तब मुझे ऐसा नहीं लगा था कि मैं उसे खो रहा हूँ। अथवा तो मुझे यों कहना चाहिए कि मैंने उसके निर्णय को प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार कर लिया था। किन्तु अब एक ऐसी परिस्थिति आ खड़ी हुई है कि मुझे भय लगने लगा है कि कहीं मैं उसकी मित्रता हमेशा के लिए खो न बैठूँ।

उसका पति हेनरी, जो कभी काफी उदार तथा व्यक्ति-स्वातंत्र्य का पक्षधर लगता था, सचमुच बड़ा कंगाल निकला। आप लोगों के स्नेह के कारण अमेरिका का सुख शांति को आकर्षित न कर सका। हेनरी ऐसा मान बैठा कि यह मेरी गढ़ी हुई बात है। उसके दूसरे संदेहों के बारे में लिखते हुए शर्म आती है..

मैंने अपने विवेक से समाधान खोज निकाला है और जैमिनी से मिलना कम कर दिया है। सोच रहा हूँ बिलकुल बंद ही कर दूँ। कितना अच्छा हो यदि मैं अमेरिका से वहाँ आने के लिए जब निकलूँ उस समय तक जैमिनी मुझे भूल चुकी हो ..। इस कल्पना को वास्तविक बना देने के लिए, अपने संबंध को कृत्रिम रूप से समेट लेने के लिए मैं प्रयत्न करूँगा। हमारे संबंधों का सही विकास यही हो सकता है। बाहर जाकर अपने आप में वापस लौट आना। पिताजी एक दिन कह रहे थे — अपनी आत्मा जहाँ लीन हो वहीं भगवान का ठांव है। वही आनंद का धाम है।...उनके शब्द तो कुछ दूसरे थे, सत्य को प्रकट कर देने की उनमें अद्भुत शक्ति थी.. बचपन में मै उनकी भाषा बराबर समझता था, आपको याद होगा, अब भूलता जा रहा हूँ।

मेरी अंग्रेजी भाषा की यहाँ प्रशंसा होती है। शायद अत्यधिक अध्ययन की वजह से शब्दकोष बृहद हो जाने के कारण। मैं जानता हूँ कि अंग्रेजी मेरा माध्यम नहीं है। काम चल जाये बस। गत सप्ताह नवजागरण के पश्चात् तीन भारतीय संतों के बारे में प्रवचन दिया था : स्वामी सहजानंद, रामकृष्ण परमहंस और रमण महर्षि के बारे में। युनिवर्सिटी ने मुझे खूब सम्मान दिया है। पिछली शताब्दी के भारतीय धर्मदर्शन के बारे में बोलने के लिए पूछा है। मैं सामाजिक और राज॰ नैतिक परिस्थितियों से धर्म को अभिन्न रखकर सोचता हूँ — शायद यहाँ के विद्वानों को यह बात अच्छी लगी है। खैर, इस आमंत्रण से मुझे हर्ष नहीं हो रहा है। वापस आ जाने की इच्छा तीव्रतर होती जा रही है।

यहाँ रुक सकूँगा तो मेरा मन इस विषय की तैयारी में लगा रहेगा। थिसिस के अंतिम दो प्रकरणों को सुधार कर टाइप करवाना है। परिणाम आने तक यहाँ रुकने की आवश्यकता नहीं है।

शायद जल्दी आ जाऊँगा। या हो सकता है अन्य किसी बाबत में मन लगा लूँ। किन्तु जैमिनी के मानसिक तनाव का क्या होगा ? एक अनजान बने रहने वाले

आदमी के सिकजे में वह हमेशा के लिए फँस गयी है । मैं उसका प्यार भूल सकता हूँ किन्तु उसके विषय में चिन्तित रहने का मेरा जो उत्तरदायित्व है उसे कैसे भूल सकता हूँ ? मैं जेमिनी के प्रयास से ही तो यहाँ आ सका हूँ और एक उच्च डिग्री प्राप्त कर सका हूँ । पर उसे क्या मिला ?

यह सच है कि उसने हेनरी को परखने में जल्दी की । किन्तु इसीलिए उसे इतनी बड़ी सजा ? भारतीय मानस को समझ सकने की योग्यता उसमें नहीं है और समझे बिना उसे स्वीकारे तो फिर बुद्धिजीवी कैसा ?

परिस्थिति कुछ सुधर सके तो ठीक है । अभी तो कुछ सुझाई नहीं दे रहा है, बेचैन हूँ । एक मित्र के साथ रूपा और मनु के लिए खिलौने भेजे हैं । मिलें तो रूपा से कहना पत्र लिखे । वह भी अपनी चाची जैसे अक्षर निकालने लगी है । मनु का एकाध फोटो तो भेज दो ।

माँ के बारे में कुछ नहीं लिख रहा हूँ । याद करो तब भी वे तो रोयेंगी ही, और याद न करो तब भी...

......लवजी

शांति को अमेरिका बुलाने वाली बात सोमपुरा में शांत हो गयी तो टींबा में उठ खड़ी हुई । घेमर नीम का तना छिलवाने टींबा गया हुआ था । मगन अमथा से मिले बिना वहाँ से वापस आ जायें यह कैसे हो सकता है ?

मगनजी घेमर के साथ ही आये थे । उन्हे और कुछ नहीं सुझाई दिया तो मौसे किराये की बात ले बैठे । कंकू माँ को उनके इस दर्प से आघात सा लगा—

"हम काहे नाहीं भेजित ? या बैठी है तुहार बिटिया । यही जाय क तयार नाही है । हमें ई बात से इन्कार नाहीं है कि तुहार माल—मिल्कत जादा है । पर का हमार देवू नाहीं कमात जौन तुमसे पैसा लेब ? सबके सामने बोल के तुम तो इज्जत खराब करबो ।"

हमेशा बड़ों के सम्मान में चुप रहने वाली शांति अचानक बाहर आकर सास के पक्ष में बोलने लगी—"सच बताऊँ पिताजी तो ईजू के इस लड़के के बिना नहीं रहा जाता । इस नन्हें से बच्चे को यही नहीं मालूम कि इसकी असली माँ कौन है ? पूछो घेमरकाका से ।"

"ई तो हम सोचा कि तुझे घूम आने क होय तो..."

"दुनिया देखे की शौक ही नहीं है । फिर का करूं ? बोलो, तुमको जाना है पिताजी ? जाव घूम आओ । अब तो भैया ने देख-भाल अपने हाथ में ले लिया है । चले जाव । लिखूँ चिट्ठी ? तुमको बुलाय लें ?"

"शाबाश । शांति अच्छा जवाब दिहिस ।"

कंकू माँ बहू की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकीं । सब हँसते-हँसते उठ खड़े हुए ।

उस शाम को फिर घेमर ने मगन अमथा को जाने नहीं दिया । जाना ही हो तो भोजन करके जाइए, नहीं तो आज की रात रुक जाइए और सहकारी मंडली की सामान्य सभा में आइए और शिक्षा की दो बात कीजिए । कोई ऐसी बात बताइए जिससे कल्याण हो ।

मगनजी मशविरा देने का लोभ नहीं त्याग सके । रात को महादेव के मंदिर में सभा आयोजित की गयी । सभी मगनजी के आने की राह ही देख रहे थे ।

रणछोड़ ने सोचा था कि उसके और घेमर के संबंध तो अच्छे हैं ही । उसने तो अनुमान भी नहीं लगाया था कि मन ही मन कुछ उमंग रचकर घेमर मगन अमथा को ढाल बनाने के लिए लाया है । घेमर ने पहले तो सब ठीक-ठीक चलने दिया । व्यवस्थापक समिति के नव नये सदस्यों के नामों की चर्चा होने दी । पुराने नामों को यथावत् रखने की दलील के समय भी वह मौन रहा । और अंत में हाथ ऊँचा करके उठा । प्रमुख की अनुमति ली और बोला–

"आप लोग जब बैठकर नियमों की ऐसी की तैसी कर रहे हैं तब मुझे भी एक नियम याद आ रहा है । पूरे देश और पूरी दुनिया में अपने गाँव के नाम का डंका बजाने वाले लवजीभाई ने हमको एक बार एक नियम समझाया था । याद है किसीको ? निश्चित अवधि में ऋण न भुगतान कर सकने वाला समिति-सदस्य नहीं बन सकता । गलत कह रहा हूँ मंत्री महोदय ?" मंत्री ने अनचाहे ही समर्थन किया तो रणछोड़ बड़बड़ाया- "देखो न ससुर, दांत दबाकर शिक्षितों की तरह बोल रहा है ।" घेमर ने आगे बात बढ़ाई– "उस दिन लवजीभाई ने बीन-बीनकर एक-एक को निकाल फेंका था । रणछोड़भाई की पूरी टुकड़ी साफ हो गयी थी । बहुत अच्छे मुहूर्त में सब हुआ था परंतु फिर बाद में कुछ लोगो को पता नहीं क्या सूझा था कि रणछोड़ की सिफारिश लेकर सब उनके पास गये थे । पगड़ी उतारकर चिरौरी की थी । एक वर्ष की मोहलत माँगी थी । एक वर्ष बीता, दूसरा भी बीत गया । गिनकर देखा कितने वर्ष बीत गये ? है किसी को अपनी बात याद ? रणछोड़भाई को तो बहुत काम होता है, वे तो भूल जायें, पर दूसरा कोई ?"

रणछोड़ आवेश में आकर खड़ा हो गया । मगन अमथा जैसे इज्जतदार आदमी के सामने अपनी गर्दन झुकने भी कैसे दी जा सकती है ? वह ऐसे फटाफट बोलने लगा जैसे सीढ़ियाँ उतर रहा हो–"अब मेरे पास समय नहीं है । मुझे नहीं रहना है तुम्हारी इस दिवालिया मंडली में, नहीं करना है मुझे संचालन । भले सब भाड़ में जाये । थूका हुआ चाटे वह दो बाप का ।"

सन्नाटा पड़ गया ।

रणछोड़ बैठ गया । राह देखने लगा कि अपना कोई शागिर्द खड़ा हो जाये और बोले– 'सबके बिना चलेगा पर रणछोड़भाई बिना नहीं चलेगा ।' पर कोई फुसफुसाया भी नहीं । काम आगे चलाना पड़ा । अचानक जैसे पूरी सभा बुद्धिमान हो गयी हो ऐसे कुछ शिक्षित और जिन्होंने अभी घोटाला करना नहीं सीखा है

ऐसे युवकों के नाम सूचित किये जाने लगे । सोचने का वक्त मिलते ही रणछोड़ ने माधव के साथ मंत्रणा कर ली और नामों को खींचातानी शुरू हो गयी । मौका मिलते ही वह खड़ा हो गया, खखारकर गला साफ किया । बोला कि "मंडली के झगड़े की चर्चा गाँव में हो यह ठीक नहीं है । भले न ऐसी सात मंडलियाँ डूब जायें परन्तु गाँव की एकता नहीं भंग होनी चाहिए । ठीक है न मगनजी ?"

मगनजी बिना कुछ बोले उसे देखते रहे । रणछोड़ आगे बोला–"अनुभवी के चार आँख ।" एक साल के लिए संचालन उन्हें सौंप देते हैं । उनकी शर्म के मारे सब ठीक हो जायेंगे ।"

रणछोड़ का प्रस्ताव ऐसा था कि मगन अमथा को भी हकारात्मक सिर हिलाना पड़े । उनके साथ ही घेमर ने भी रणछोड़ की समझदारी की प्रसंशा की और उठ कर बोला -"शाब्बाश रणछोड़ । इसका नाम है गम खाना और गाँव का भला देखना ।"

सर्वानुमति से प्रस्ताव रखा गया : मंडली की व्यवस्थापक समिति में नरमंग भगत, जेठाभाई और उनकी ही उम्र के अन्य सात आदमियों के नाम लिख लिये गये । उस समय उन नवों में से मात्र तीन ही वहाँ उपस्थित थे ।

देवू पिछले दो वर्षों से एक भी सभा में नहीं गया था । चुनाव में हीरूभाई की पराजय के बाद जनता-जनार्दन से उसकी श्रद्धा खत्म हो गयी थी । वह श्रद्धा उसमें पुनर्जीवित हो सके इसलिए वह फ़ुरसत पाते ही पढ़ने बैठ जाता । उसका नाम यदि व्यवस्थापक समिति में प्रस्तावित किया जाता तो वह मना नहीं करता । पिताजी जाकर क्या करेंगे ? उसने सोचा । भले कुछ न करें उनकी उपस्थिति में कुछ उल्टा करने की किसी में हिम्मत नहीं पड़ेगी । उसने पूछा -

'पिताजी, आप जायेंगे ?"

भगत ने पहले से ही सोच रखा था–'एक के बाद सब कुछ छोड़त जाइत है तौ का अब मंडली के कमेटी माँ मेम्मर बनब ? राम राम करो । कह दिहौ, हमार नाम निकारि देंय ।"

सभा की कार्यवाही का विवरण सुनने के बाद देवू ने घेमर से कहा था– "तुम्हारा और बीरा का मंडली में अच्छा-खासा प्रभाव देखकर ही, तुम दोनों को एकसाथ निकाल देने के लिए ही रणछोड़ ने वृद्धों को मंडली में लेकर अनुभवी के चार आँख वाली चाल चली थी ।"

"हाँ ई बात तो अब समझ मां आयी । हम तो सोचा रहा कि उनका निकाला गवा बस ठीक है । मुला धोखा खाय गये । ई तो आपके कहने से समझ मां बात आयी । तब काहे नाहीं समझा ?" घर जाकर उसने दहलीज पर पाँव रखते ही दिल का गुबार निकालना शुरू कर दिया । हीरा सावा कूट रही थी । कंधे पर से साड़ी खिसक गयी थी, कंचुकी को बाँधने के धागे के सिवाय हीरा की पीठ एकदम नग्न थी जो इस समय. आम के कटे हुए लाल गुलाबी ताजे तने की तरह चमक रही थी । सामान्य परिस्थिति में घेमर उसे देखकर खुश हो गया

होता और एकान्त पाकर छेड़छाड़ किये बिना न रहता परन्तु आज तो वह बड़बड़ाता ही रहा – वह रात्रिशाला में पढ़कर साक्षर हुआ, चकबंदी होने के बाद जमीन पाकर दो-दो हलवाहे रखकर खेत का कामकाज बढ़ाया और सुखी-सम्पन्न हो गया। तीन-तीन लड़कों का बाप बना फिर भी ऐन मौके पर मुद्दे की बात समझ में नहीं आती। धिक्कार है मुझे और मुझे लाड़ जताने वाले को ..हीरा समझ गयी थी। परन्तु अभी पति को लाड़ जताने का समय नहीं था। कूटने का काम चालू रखा और बोली – बक बक किये बिना चुपचाप खिचड़ी-दूध भकोस कर भागो खेत में, ऐसी सहकारी से किसी की जिन्दगी नहीं सुधरती। जो स्वयं मेहनत करेगा, भगवान उसीको देगा। और तो दूध का दूध में, पानी का पानी में।

घेमर कब से इंतजार कर रहा है कि रणछोड़ ने जो बुरे कामों से एकत्र किया है, किसी तरह बुरे कामों में ही चला जाये और वह बरबाद हो जाये किन्तु उसे विश्वास नहीं है कि वह दिन उसके इसी जन्म में आ जायेगा। रणछोड़ को मौका मिलेगा तो नयी व्यवस्थापक समिति को भी वह खड्डे में डाले बिना नहीं रहेगा। नरसंगबाबा निकल गये, अच्छा हुआ किन्तु कहीं जेठाकाका जोश में आकर मूंग और उरद को मिला न बैठे। उसने वीरा के कान में फूंक मारकर करसनबाबा को संदेश भी भिजवा दिया था।

रणछोड़ का जासूस रखवाला करसन बाबा को एकान्त में छोड़ता ही न था। किन्तु उन्हें वायु की पीड़ा बढ़ गयी थी इसलिए वह निश्चिंत हो गया था। बुढऊ ने इधर-उधर सावधानीपूर्वक देखते हुए, उनके कंधे में महा-नारायण तेल की मालिश कर रहे जेठा से कहा था–"देख भाई जेठा, सहकारी मंडली के मीटिंग मां जाय क होय त जायो पर कहू सही न कर दिहो। माधवा अपने रणछोड़िया के खास दोस्त है। ऊके लच्छन ठीक नाहीं लागत। मंडली उलच-उलच के आपन घर भरे लियत हैं। तू ही बता के हू के घर मंडली के तनखाह से लिंटर वाला बन सकता है?"

जेठा में इतना धैर्य न था कि इस सलाह को पचा ले। उसने पहली ही बैठक में पूछ डाला–"मंत्री के घर कै मिलकीयत कहाँ से आयी, ई बताऊ फिर सही करब।'

उस रात को रणछोड़ के साथ थोड़ी देर मसलत करने के बाद, लोगों के आक्षेपों से बचने के लिए एक मात्र उपाय समझकर माधव मंडली के बही-खातों को अपने घर ले गया। समिति के जितने सदस्यों ने सुना सभी ने कहा – बही ले गया है न? और कुछ तो नहीं ले गया? बही के ले जाने से क्या फर्क पड़ता है? बही की कीमत ही कितनी होती है? दो-तीन रुपये और क्या?

देवू के साथ ही साथ घेमर, वीरा, कांति काना और जबरा सब जानते थे बही का क्या अर्थ होता है? परन्तु उन सबको माधव ने ईर्ष्यालु और सत्तालोलुप कहते हुए गाँव में बदनाम करना शुरू कर दिया था और देवू के अतिरिक्त सभी

को संकटपूर्ण स्थिति में डाल दिया था। रणछोड़ जब नशे में होता तो सभी के मुँह में मूतने की बात करता और गलियों में अपने समर्थकों से घिरा हुआ खड़ा होता तो भाषण करते हुए कहता—"अस हर हप्ता कमेटी नाहीं बदलत। सब ही जानत है कि बुढवन के नाम काट के बिरवा और घेमरवा मंडली के धन पर हक जमाना चहत हैं। ई गाँव कौनो बमनी के खेत होय कि हाली-मवाली के हवाले कर दीन जाय ?"

कांति काना ने जिला रजिस्ट्रार को शिकायत लिख भेजी किन्तु यह बात गुप्त रखी। दूसरी ओर एक दिन घेमर सोचसमझकर रात में भगतबाड़े में गया और देवू से सारी बातें कीं। रणछोड़ की गालियाँ तक सहन करें ? वह साला हमारे मुँह में मूतने की बात करता है। मुझे छूट दो तो मैं उसके मूतने वाले अंग को ही काट डालूँ। देवू सिहरकर बैठा रहा। घेमर का क्रोध बोलकर कम होने दिया। फिर इतना ही बोला—"क्या मुझे कभी बुरा नहीं लगता होगा ? परन्तु जहाँ तक संभव हो स्वयं न लड़कर वक्त का ही इंतजार करना चाहिए। शायद रणछोड़ में परिवर्तन हो जाये।"

घेमर हँस पड़ा। रणछोड़ और परिवर्तन ! जाते समय दोनों भगत की खाट के पास खड़े हो गये। भगत ने कोई सलाह नहीं दी। इसी गाँव में पचास वर्ष पहले घटी एक घटना सुनाई। दो गुटों के बीच दुश्मनी थी। बदला लिया जाता रहा। अंत में दोनों जड़मूल से ही खत्म हो गये। जो चोट करता है वह यही समझता है कि वह स्वयं अमर है। परन्तु कबीरदास ने कहा है—दो पाटों के बीच में साबुत बचा न कोय—

घेमर निराश होने के बावजूद कुछ प्राप्त होने के संतोष के साथ गया। आज किसी को माफ कर देने का उसे आनंद भी था।

परन्तु यह आनंद अधिक समय तक न टिक सका।

जिला रजिस्ट्रार के द्वारा भेजा हुआ ऑडिटर सहकारी मंडली को जाँच कर गया था। दूसरे ही हप्ते पचीस सदस्यों के नाम से नोटिस आ गयी। नोटिस में शेष ऋण भुगतान कर देने की चेतावनी थी।

देवू ने, ऑडिटर, जिला-रजिस्ट्रार मंत्री महोदय श्री पशाभाई और हीरूभाई को एक-एक पत्र लिख दिया था।

जाँच के लिए ऑडिटर के साथ ऊपरी अधिकारी भी आये। माधव उन्हें रास्ते में ही मिलकर निपटा लेता था। मेहमान मंडली तक आकर, गंभीरतापूर्वक तौले से कुछ प्रश्न पूछकर तथा "मंत्री महत्त्वपूर्ण काम से बाहर गये हैं" लिखकर वापस चले जाते थे।

घेमर, वीरा और जबरा पशाभाई को स्वयं मिलने के लिए बेचैन थे। साथ में देवू को भी ले जाना चाहते थे। देवू ने उनसे कहा कि मैं पशाभाई का जवाब

लिखकर तुम्हें अभी लिफाफे में दे देता हूँ । उनसे मिलकर, बाहर निकलना फिर उसे पढ़ना । कुछ शब्द इधर-उधर होंगे भाव वही होंगे ।

वे लोग गये । सोमपुरा वाले हैं जानकर पशाभाई ने उन्हें बहुत देर तक बैठा रखा । फिर उन्हें अंदर बुलाने के बदले स्वयं बाहर आये । सारी बात सुनने के बाद फैसला देते से बोले–

"आप लोगों ने मुझे कहाँ वोट दिये थे ? मैं किसलिए आप लोगों के विरोधियों के लिए बुरा बनूँ ? जाइए आप लोग हीरूभाई के पास !"

"हम तुमका वोट नाहीं दीन रहा ई बात ठीक है। पर जे तुमका वोट दिहिस रहा वही गबन किहिस है । उनका बचावे क तो कुछ करबो ?" घेमर ने कहा था । कोई उत्तर न सूझने पर पशाभाई नाराज होने लगे थे ।

"एक दिन तुहरे मोटरवा कँ भूसान बोलाय देई तो..." जबरा जोर-जोर से बोले जात रहा । घेमर ने उसका मुँह दबा दिया और सुधारकर बोला 'नाहीं पशाभाई हम तोड़फोड मां विश्वास नाहीं करित । बस हवा निकारि देब बस । चल रे ।" घेमर धुन ही धुन में जूता पहनना भूल गया था । पचास कदम चलने के बाद अचानक ख्याल आया था परन्तु अब ? वापस जाना ठीक रहेगा ? वीरा ने कहा नहीं । फिर भी जबरा उठा लाया । "रहै देय क रहा न । पशाभाई बेचारे पहिनते ना ?"

देवू ने देखा कि रणछोड़-माधव ने पैसे खिलाकर खतरा टाल दिया था । उसने जिला रजिस्ट्रार को फोन किया और कहा कि आपके नामों के साथ सारा विवरण तैयार है। अगले हफ्ते तक आप अपना कर्ज नहीं निभायेंगे तो मैं अखबारों में छपवा दूँगा ।

इस धमकी का असर पड़ा । ऑडिटर ने माधव पर गबन का केस चलाया । रणछोड़ जमानत पर उसे छुड़ा लाया ।

देवू ने बात जाने दी । अब केस चलेगा । न्यायतंत्र में उसे विश्वास था ।

इस दरम्यान एक असाधारण सामान्य सभा बुलवाई गयी थी । उसकी व्यवस्थापक समिति में रणछोड़, स्वयं बाहर रहा था, घेमर-वीरा को भी बाहर रखा था और जबरा को सदस्य बनाया था ।

फिर तो समझौते की शुरुआत करने के लिए गबन के पैंसठ हजार रुपये में से माधव से पंद्रह हजार रुपये भरवा दिये थे ।

अब तो सब कुछ शांत है ।

एक दिन दोपहर में नरसंग भगत खेत से घर आ रहे थे। वे अंदर से खूब प्रसन्न हैं । देखने वाले उन्हें देखकर प्रसन्न हैं । बीच गली में डाकिया मिलता है। वह राम-राम करके एक लिफाफा देता है । फिर सही करवाता है ।

भगत ने सोचा कि लवजी ने देर-सबेर उनके नाम भी एक पत्र लिखा जरूर । वे पत्र को हाथ में लिये-लिये ही घर तक आ पहुँचे । कोई पूछेगा तो कहेंगे देखो

न भला यह मेरा ही नाम है न । अब कुछ पढ़ता नहीं हूँ, वैसे अक्षर पहचान लेता हूँ ।

कंकू चौखट पर ही बैठी थीं । भगत चबूतरे से घूमे तो उनकी फूर्ति देखते ही वे शाति से बोलीं, "शाति देख तो, बुढऊ क कौनो इनाम-उनाम मिला है का, जौन अतना जल्दी-जल्दी चलत हैं !"

लवजी की चिट्ठी बहू पढ़कर सुनाये इससे अच्छा क्या हो सकता है ? बोले – "ले बेटा । पढ़के सुनाय दे सबका । भैया रजिस्टर करिके हमरे नाम चिट्ठी भेजिन है । फोट्ट न होय । सँभाल के खोलो ।"

शांति लिफाफा खोलते ही निराश हो गयी । जिसके बारे में किसी ने कल्पना भी न की थी ऐसी बात थी । सहकारी मंडली के कोर्ट ऑव नोमिनीज के रजिस्ट्रार का पत्र था । रजिस्टर्ड डाक का अर्थ वह जानती थी । परन्तु ढ़ाई हजार रुपये का दावा ? किसी और की चिट्ठी तो नहीं है, डाकिया भगत को दे गया है ? लिफाफे को फिर से देखा ।

उसने सिर के घूँघट को ठीक करके ससुरजी को ओर देखा । वे दीवार पर टंगे हुए बालकृष्ण के चित्र को ऐसे लीन होकर देख रहे थे जैसे मन ही मन वार्तालाप कर रहे हों । अब उन्हें ऐसा दुखद समाचार दें भी कैसे ? हो सकता है उन्हें इस समाचार से अधिक दुःख न भी हो परन्तु यह उनके लड़के का पत्र नहीं है यह जानकर बालकृष्ण पर टिकी उनकी स्थिर नजर अस्थिर नहीं हो जायेगी ? और यह अशिक्षित बुढ़िया तो तभी से बैठे-बैठे उस कागज को पढ़ लेना चाह रही हैं । .

उसने पत्र को दुबारा शब्दशः देखा । साथ में जेठाकाका का नाम भी था । मतलब कि पचीसों का दावा एक पर नहीं दोनों पर मिलाकर है । पत्र सुनते ही, सच्चाई जानते ही कंकू माँ मुँह पीटने लगी । रजिस्टर्ड डाक का अर्थ जानते ही भगत को वे ताना मारने लगीं – "मुला तुम ऊ रंडी के बेटवा का सही करके दिहौ काहे ?"

शांति ने उन्हें शांत किया । पत्र को लवजी के पत्र के साथ रख दिया और ससुरजी को दावा की मुद्दत की तारीख बतायी । उनके लिए तो सभी समस्याओं का एक मात्र समाधान माला ! लेकर फिराने लगे । दो पल के लिए दुखी जरूर हो गये थे परन्तु अब स्वस्थ लग रहे थे । जैसे कि किसी अन्य की गलती पर हँस रहे हों ।

कंकू माँ शांति को भी डाँटने लगीं । वे चाहती थीं कि वह भी उनके साथ ही बुढऊ को ताने मारे । पर यह मूर्ख तो बोलती ही नहीं । इस बुढ़ापे में बुढऊ को कोर्ट में जाना पड़ेगा । कलयुग की लीला है । वे कोर्ट को जेल समझती थीं ।

भगत ने माला फिराते-फिराते ही कह दिया – "बक बक बंद करो । जेल मां ले जाये तो जेल मां जाब । भगवान से तो अलग नाहीं कर सकत केहू ?"

"पर तुमका तो कौनो चिन्ता नाहीं लागत ? केहू ढ़ाई हजार क दावा ठोंके

और आदमी के रोवाँ न फरके !'' कंकू माँ शायद और भी बोलती परन्तु भगत ने उन्हें बीच में ही रोक दिया –

"अरे अब ताना मारा करबो कि खाय क देबो ? अरे चौबीस-पचीस साल पहले सारंग के टाकुर के राज रहा तबौ अतना नाहीं डरात रहिन फिर ई तो आपन राज है ।"

"आपन राज है ? परधान तो बने हैं पशाभाई ।'' कंकू की बात पर शांति हँस पड़ी । कंकू माँ को अच्छा तो नहीं लगा परन्तु बिना गुस्सा किये ही बोली – "काहे बहू, हम गलत कहित है ? अपने हीरूभाई क हराय के पशाभाई नाहीं जीते ?"

"सही बात है, पर अंग्रेजों के जाने के बाद अपना ही राज तो है । दादा की बात सही है ।" शांति ने भगत के लिए खाना परोसते हुए कहा ।

"तो फिर अस झूठ-मूठ के दावा कौन जात है ? ई तो अंगरेज गये और रंगरेज आये वाली बात भई । बहू तू एक काम कर । आज के आज तू भैया क अमरिका चिट्ठी लिख । साफ-साफ लिख दे कि जल्दी से आय के इन सबका सीधा कर दो ।"

भगत सुन रहे थ । खाकर उठे, कुत्ते को रोटी दी और बैठ गये । फिर बोले कि लवजी की चिट्ठी में राजी-खुशी के समाचार के सिवाय और कुछ मत लिखना । कंकू की दलील में उन्होंने कहा कि "ऐसे फालतू काम मां भैया कै समय न खराब करो ? तुम तो अस हैरान हो जैसे पृथ्वी रसातल मां चली है । हमरे ऊपर दावा है । झूठ है तो चले देब केस । बहुत समय से अहमदाबाद नाहीं गईन हैं । कोरट मां जवाब देब और मंदिर मां दर्शन करब । ऊ कागज सँभाल के रख लिहेन है बेटा । मूस न खाय जाय ।"

'ई देखो इनका । अस कागज सँभाले क कहत है जैसे नवलखा हार होय ।'' कहते हुए कंकू ने बात को खतम किया । खा-पीकर, भगवान का नाम लेकर, सो गये सब । भगत खेत में गये । सिचाई का काम चल रहा था । देवू के लिए खाना ले जाना था ।

एक बात किसी की समझ में नहीं आ रही थी कि नरसंगबाबा जब कभी भी बैठेक में गये ही नहीं हैं तो उनके नाम की चिट्ठी आयी ही कैसे ?

शाम को कंकू माँ खेत पर पहुँच गयीं । पानी की बाली के साथ चलते हुए देवू के पास पहुँच गयीं । पूछा – "बप्पा कौनो बात बताइन भैया ?"

भगत ने अभी भी देवू से कुछ नहीं बताया था । शाम को ऐसे ही याद दिला देंगे । कागज पढ़ते ही देवू सब समझ जायेगा । कोर्ट में जो जवाब देना है, उन्होंने सोच रखा है ।

देवू को आश्चर्य हुआ । सरकारी नोटिस आयी और पिताजी ने बात तक नहीं बतायी । कमाल है ! उन्हें अपमान भी नहीं महसूस हुआ ? अपनी जवानी में तो किसी भी गलत बात के लिए मरने-मारने को तैयार हो जाते थे ।

देवू जब चलने लगा तो पिताजी की आवाज कानों में पड़ी थी – "केंहू से झगड़ा न करेव ।" देवू चुपचाप चला गया था ।

घर जाकर, खा-पीकर नारण के साथ वह जेठाकाका के पास गया । उन्हें भी उस नोटिस की प्रति मिली थी ।

सारी चाल समझी-बूझी लगती है । सब कुछ योजनाबद्ध । परन्तु इन निर्दोष आदमियों को फसाने के पीछे किसका दिमाग काम कर रहा होगा ? नारण को याद है कि ऑडिटर ने तो पुरानी व्यवस्थापक समिति के सदस्यों का नाम भी नहीं लिखा था ।

लोगों में काफी उत्तेजना फैल गयी थी । नयी समिति के लोग मेहसाना गये । उन्हें वकील करने के लिए कहा गया था । रणछोड़ पशाभाई से मिला था । उन्होंने वकील पर फोन करके इस केस को हाथ में ले लेने की सूचना दी होगी । जाल का पता चल गया । नहीं तो कोई और वकील नव के नवों बूढ़ों पर जूठी नोटिस नहीं भेज सकता था । रणछोड़ ने ऐसा करके माधव वाले केस को वापस लेने के लिए गाँव पर दबाव डालने की योजना बुनी थी । क्रोधित होने के बावजूद देवू रणछोड़ की बुद्धि की सराहना किये बिना नहीं रहा ।

बूढ़ों के ऊपर चलाया गया केस शायद ऐसे ही खतम हो जायेगा । परन्तु टाइप आदि करवाने में नयी समिति के सदस्यों ने साढ़े आठसौ रुपये खर्च कर दिये थे । उसका क्या होगा ? अभी वकील की फीस भी बाकी थी ।

सारा चित्र स्पष्ट हो गया था । सब चाय पीकर, नये सदस्यों के खर्च करने के साहस की प्रसंशा करते हुए अपनी-अपनी राह पर चल पड़े । देवू जब अकेले रह गया तो जाने के पहले उसने कहा – "यह तो हद हो गयी जेठाकाका, बोलो क्या करना है ?"

"तुम आपन कानून-कायदा देखो । हम तो आपन विद्या आजमाउब ।"

"पर कायदे के लिए भी जगह छोड़ोगे कि नहीं ?"

"भगत से पूछा बिना एक कदम न उठाउब । चिंता न करो ।"

देवू इस पर से, माँ के पास आया । सारी बात समझायी । बहुत समय से उसकी लोहे के छूरे वाली लाठी घेमर के घर पड़ी थी, उसे मँगवाया । खुद घेमर उसे देने आया । वह देवू के पीछे-पीछे गांव में गया था । परन्तु जुगाड न लगने से वापस आकर इलायची वाली चाय पी थी । घेमर के पीछे-पीछे हीरा हाथ में गंडासा लेकर आयी थी । उसने उसे धार रखकर चमका लिया था । बड़ों की शरम रखे बिना ही उसने घेमर के हाथ गंडासा पकड़ाकर कहा–

"तुम जाव रणछोड़िया कै टंगरी काट डारो, हम छूट देइत है । सरकार तुम क जेल मां डार देये तो हम मजूरी करके घर चलाय लेब । केहू क भूखे न मरे देब । उठो ।"

देवू ने हीराभाभी को सम्मान–दृष्टि से देखा ।

कंकू माँ ने भी "धन्य है तुझे पैदा करने वाली के ।" कहकर पहले हीरा की

प्रसंशा की फिर बात समेटते हुए बोली– 'तकरारी के मुँह काला । अस नालायक का नाहीं सतावे । ई लाठी और गंडास घर मां रखो । केहू सामने से आवे तब हाथ मां लिहो, हम मना न करब ।"

"आपको मुझ पर और घेमर भाई पर विश्वास नहीं है क्या माँ ? हम ऐसी फालतू बात में हथियार नहीं उठायेंगे । पर मैंने अनुभव से जाना है कि किसी की गाली या दया से बचने के लिए हाथ में हथियार रखना जरूरी है । यह समय भोलेपन का नहीं है ।" देवू उठ खड़ा हुआ ।

क्रोध शांत हो न जाये और शांति कहीं दूसरी सलाह न देने लग जाये इसलिए देवू जल्दी से चल पड़ा । अन्तर अधिक न बढ़ जाये इसलिए घेमर भी पीछे-पीछे चल पड़ा । देवू ने आँगन से बाहर आते ही जिस तरह से चलना शुरू किया था उससे घेमर समझ गया था कि आज देवूभाई के सिर पर काल सवार है । उन्हें अकेले छोड़ने जैसा नहीं है । खेत पर जाने के पहले वे रणछोड़ के घर की ओर घूमे तब घेमर ने उन्हें आवाज देकर रुकने के लिए कहा -

"आज मैं लड़ने नहीं जा रहा हूँ, स्पष्टीकरण माँगने जा रहा हूँ, जिससे वह निर्दोष हो तो उस पर आरोप न लगाऊँ ।"

"मुझे साथ लेते जाना ।"

"इससे अच्छा और क्या होगा ? चलो ।"

देवू की चाल में अब बेचैनी न थी ।

रणछोड़ ने पन्द्रह फुट चौड़े और सौ फुट लम्बे पक्के, लिंटरवाले चार मकान तैयार करके आगे बड़ा चौक बनवाया था । परिवार तो अभी पुराने घर पर ही था । इस विशाल भवन में वह अपने शागिर्दों के साथ आये दिन जलसा करता था, अफसरों को वहां टिकाता था और नाश्ते-पानी करवाता था । उसकी योजना थी कि अच्छे खासे वेतन पर दो-तीन युवतियों को वहाँ नौकरी पर रख ले परन्तु यह बात जेठाकाका तक पहुँच गयी थी और उन्होंने माँ-बहन की गालियाँ दी थीं । इसलिए अपनी इस योजना को स्थगित कर दिया था । यह समाचार नारण के द्वारा घेमर को और घेमर द्वारा देवू तक पहुँचा था ।

"जलसाघर में उजाला तो लगता है ।" घेमर ने धीरे से कहा–"आप देवूभाई जरा शांति से बात करना, जैसे सभाओं में बोलते हो । समझे ? यह साला रणछोड़िया जब नशे में होता है तो किसी की भी इज्जत नहीं करता ।"

सांकड़ खटखटाकर घेमर ने दरवाजा खुलवाया । वह आगे और देवू पीछे । सब तुरंत पहचान में आ गये, सबको जैसे सन्निपात हो गया हो । एक घण्टे पहले देवू के साथ जेठाकाका के घर आने वाला नारण भी यहीं ? तो क्या अभी यह जो कुछ बोल रहा था वह सभी को हँसाने के लिए ? इस समय वही सबसे अधिक भौंचक था ।

रणछोड़ नशे में होने के बावजूद उन दोनों के सम्मान में अलग खाट डालने

के लिए बोला। देवू शराब की गंध के परिधि में पैर भी नहीं रखना चाहता था। लगभग पंद्रह फुट की दूरी पर ही खड़े-खडे उसने पूछा–

"तूने झूठा केस बनाकर गाँव के बुजुर्गों का अपमान क्यों किया ?"

रणछोड़ ने बहुत ऊपर-नीचे किया किन्तु देवू के समक्ष अपना बचाव नहीं कर सका। जितना ही वह अपने पक्ष में दलील करता, उसके विरोध में ही बात जाती और वह फँसता जाता। अंत में उसने कहा कि मैं नरसंगबाबा और जेठाकाका के साथ केस की मुद्दत में जाऊँगा और सब ठीक कर दूँगा। बस ? आप लोग बैठो तो सही चाय बनवाता हूँ।

देवू और घेमर वहीं खड़े रहे। रणछोड़ कोठरी के खंमें से आगे नहीं खिसक रहा था। बैठकर शांति से बात करने के आग्रह में वह बोल बैठा–"हमका निकालकर अपढ़ों का संचालन सौंपा जाये तो और का होये ! ठीक है न ?"

रणछोड़ के हमेशा के समर्थक भी इस समय कुछ नहीं बोल सके। देवू ने बायें जूते से अपनी लाठी का कोना खटखटाते हुए कहा–

"सब लोग याद रख लो। मेरे पिताजी के ऊपर – गाँव की हमेशा भलाई देखने वाले वयोवृद्ध आदमी के ऊपर जूठा केस करके कोर्ट में ले जाने का षडयंत्र करने वालों को मैं छोडूगा नहीं, टाँगे तोड़ डालूँगा। और उस महसाना वाले वकील पर बदनीयती का केस करूँगा। और कान खोलकर सुन ले रणछोड़, तुझसे भी मंडली के साढ़े आठ हजार वसूल करूँगा।"

खतरे को अपने सिर पर मंडलाते देख रणछोड़ की विनम्रता बढ़ गयी। वह बैठकर शांति से बात करने के लिए प्रार्थना करते हुए पास में आया।

"दूर खड़ा रह, तेरे मुँह से बास आती है।"

"आप तो मेरे ही घर पर मुझे धमकी दे रहे हैं।"

"तेरा घर ! यह चार-चार घर तेरी महनत की कमाई हैं ! यह सब तो तूने पूरे गाँव को लूटकर बनवाया है। दो दिनों में साढ़े आठ हजार रुपये मंडली में जमा करवा देना। और गाँव के नव बृद्धों के ऊपर केस करने में तेरा साथ देने वालो के साथ क्षमा-पत्र लिखकर दे देना।" देवू गुस्से से बचने के लिए रणछोड़ की ओर बढ़ने के बदले बाहर की ओर चलने के लिए मुड़ा। इससे रणछोड़ की हिंमत बढ़ गयी–

'कमाल करते हो। एक तो माफी मँगवाते हो और ऊपर से साढ़े आठ हजार का दान माँगते हो !"

"दान ? तू क्या दान देगा साले चोर। तेरे शागिर्दों की हाजिरी में कहता हूँ। दो दिनों के भीतर मुझे क्षमा-पत्र और पैसे की रसीद चाहिए नहीं तो हड्डी-पसली तोड़ दूँगा।"

देवू चल पड़ा। उस की चाल में, घेमर ने देखा, सच्चाई की शक्ति थी। फिर उसने रणछोड़ की ओर देखा। तमाशा किये बिना वहाँ से चला जाये तो

घेमर कैसा ? उसने अचानक रणछोड़ के ऊपर गंडासा ताना। वह चौंक पड़ा, डर-कर पीछे गिर गया। यह देखकर अब तक गूँगों की तरह खड़े रणछोड़ के शागिर्द भी हँस पड़े। इससे प्रोत्साहन पाकर जाते-जाते मकान का दरवाजा खड़खड़ाते हुए घेमर कहता गया–"तीसरे दिन देवूभाई भूल जैहें तो चौथे दिन हम आऊब गंडासा लेके जाँच करे। देवूभाई के तोड़ी हड्डी तो फिर ठीक होय जाये पर हमारा काटा फिर न जुड़े।"

रणछोड का नशा उतर गया। सारी रात जलसा करने के लिए थी परंतु अब सुरक्षा के उपाय खोजने में गयी। अंत में कुछ नहीं सूझा तो पशाभाई की शरण में गया। उसी समय उन्होंने उसे सारंग के ही एक वकील के पास भेजा। वकील ने पुलिस संरक्षण के लिए आवेदन तैयार कर दिया। थानेदार के पास साथ में गया। थानेदार उत्साही थे। उन्होने देवू को दूसरे दिन बुलवाया।

थानेदार के पास में पान खाते हुए पान चबाते हुए रणछोड़ ने पहले घूर-कर फिर उल्टीसीधी दलील करके देवू को इतना उत्तेजित किया कि देवू पुलिसचौकी की मर्यादा भूल गया और उछलकर थानेदार के सामने ही रणछोड़ के गाल पर ऐसा जोरदार तमाचा मारा कि पान की पीक के छींटे उड़कर थानेदार के कपड़े पर पड़े और सिगरेट उछलकर रणछोड़ के आवेदन-पत्र पर गिरी। उसके गाल का रंग इतना लाल हो गया जैसे कत्था गाल फाड़कर बाहर आ गया हो। थानेदार ने रणछोड़ को इलाज करवाकर डॉक्टर का सर्टिफिकट ले आने की सलाह दी परंतु वह मारे घमंड के गया ही नहीं।

देवू को तुरंत पश्चात्ताप हुआ। यह भाव उसकी आँखों में उभर आया। पता नहीं थानेदार इस बात को समझ गया था या किसी अन्य कारण से, पास की कोठरी से दौड़ आये पुलिस वालों को उसने अन्दर भेज दिया फिर देवू की मुख-मुद्रा का ध्यान से निरीक्षण किया। फिर उसकी रपट का जवाब लिखने के लिए रणछोड़ की फरियाद में देवू का नाम पढ़ा-"देवू नरसंग चौधरी" नरसंग अर्थात् ? नरसंग भगत। ये लवजी के बड़े भाई हैं। अरे। इसी भाई के त्याग की बात करते-करते एक बार लवजी की आँखें भीग गयी थीं।

"आप ......आप......" थानेदार भावावेग के कारण स्पष्ट बोल भी नहीं पा रहे थे–"आप लवजी के बड़े भाई हैं ? ओह, आई एम सॉरी। यह नालायक आपके सामने रक्षण माँग रहा है ?"

देवू कुछ बोला नहीं, नजर नीचे किये बैठा रहा।

रणछोड़ कनपटी सहलाते हुए उठ खड़ा हुआ। जैसे समझौता कर लेना चाहता हो इस प्रकार वह बोला–'देखो साहब, मैं देवूभाई से वैमनस्य नहीं बाँधना चाहता। मात्र संरक्षण की माँग करता हूँ। मेरे गुनाह की सजा मुझे कबूल है, परंतु सजा तय कौन करेगा ? देवूभाई या कायदा ?"

उसके फरियाद–पत्र पर पड़ी सिगरेट थानेदार ने पेपरवेट से बुझा दी। देवू

को मित्र का बड़ा भाई मानकर ससम्मान मारपीट न करने की सलाह दी और रणछोड़ को गबन की सारी रकम भरपाई करने की चेतावनी दी। उसे एक हफ्ते का मौका दिया।

रणछोड़ सूजा हुआ गाल लेकर पशाभाई के पास गया। पशाभाई ने थानेदार को बुलाकर देवू पर कार्यवाही करने की सलाह दी। थानेदार ने कहा कि कार्यवाही तो उसी समय कर दी गयी थी। परंतु यदि रणछोड़ ने एक हफ्ते के भीतर गबन की रकम न जमा करवायी तो वह उसे सीधा कर देगा। पशाभाई ने थानेदार के साहस की प्रशंसा की, चाय पिलायी, उसे ससम्मान विदा किया और गिनती के दिनों में ही उसकी बदली करवा दी।

उस रात रणछोड़ के महल में एक जोरदार महफिल जमी। उसमें उसका एक बड़ा वकील भी था। दूसरे दिन से वह गाँव में सीना निकालकर घूमने लगा।

मुद्दत पर नरसंग भगत और जेठाकाका के साथ देवू भी अहमदाबाद पहुँचा।

जेठाकाका ने जवाब देने के बदले सीधा प्रश्न किया–"साहेब बताऊ हमार सही कहाँ है ? ढाई के पाँच हजार देव। बताऊ कहाँ हमार सही ?"

नरसंग भगत ने कहा: "साहेब। हम तो मंडली के सदस्य भी नाहीं न फिर कमेटी के मेम्मर कैसे बन सकित है ? ई तो ठीक है पर हम तो अपने भजन मंडली मां से भी निकल गइन है। बस अब यही एक माला के बंधन है। और भगत ने कुर्ते की जेब से माला निकालकर दिखाई। थोड़ी देर के लिए सबका ध्यान माला पर स्थिर हो गया और शांति छा गयी।

न्यायाधीश ने दोनों का केस खारिज कर दिया।

देवू को अन्य सात लोगों की भी चिन्ता थी। उनकी मुद्दत के दिन साथ में ले आना अथवा व्यवस्थापक समिति में प्रस्ताव पारित करवाकर केस वापस करवा लेना। न्यायमूर्ति ने कहा।

"यह साइत के हू ससुर मिलत कहाँ है ?' जेठा ने कहा।

"बुढऊ, कोर्ट में गाली नहीं दी जाती।"

"साहेब, गाली नाहीं दीन जात है ई बात सही है पर हम अबहीं बूढ़ नाहीं हन। हाथ मां लाठी ले लेई तो गाँव के चंडाल-चौकड़ी का मार गिराई। चलो छुट्टी देव, चलो।"

न्यायमूर्ति हँस पड़े। भगत जेठा के कंधे पर हाथ रखकर बाहर आये। सब खुश थे।

वहाँ से नरसंग भगत और जेठाकाका मंदिर की ओर चले गये और देवू बालूभाई के घर गया।

बालूभाई ऑफिस गये हुए थे। कल्पना ने फोन करके बताया। वीणाबहन कुछ बीमार थीं अतः लेटे-लेटे कुछ पढ़ रही थीं। देवू का नाम सुनते ही बाहर आ गयीं। सबका हाल-चाल पूछा।

बालूभाई आ पहुँचे । वीणाबहन पद्रह दिन से लगातार उन्हें कह रही हैं : एक बार आप अमेरिका जा आयें । आपकी कंपनी से खर्च न निकल रहा हो तो मैं टिकट का पैसा दिये देती हूँ । परंतु जैमिनी किस दशा में है देख आओ । मुझे शक है कि वे लोग पत्रों में बहुत कम लिखते हैं । देवू ने समर्थन किया । बालूभाई सहमत हो गये । आज पत्र लिखूँगा, एक हफ्ते बाद फोन पर बातचीत करूँगा और जरूरी होगा तो खर्च चाहे जितना भी हो जाऊँगा । आज बालूभाई को किफ़ायत की बात करते सुन वीणाबहन हीरूभाई पर भी चिढ़ गयीं । सनातनी कहीं के । किफ़ायत करके ही तो चुनाव में हार गये । हारकर के उन्होंने लोकशाही के समर्थकों को कितना बड़ा आघात पहुँचाया है । देवू सोच रहा था कि योग्य व्यक्ति की पराजय भी लोगों को सोचने के लिए बाध्य कर देती है ।

"परंतु जैमिनी के भविष्य का क्या होगा ?" वीणाबहन ने पुनः पूछा । देवू उस अलबम में खोया हुआ था जो वीणाबहन ने लाकर इसके पास रख दिया था । वे कह रही थीं "आप कितने निर्दयी हैं ! सगी साली की भी फिक्र नहीं है ।" बालूभाई ने अनपेक्षित उत्तर दिया "मुझे वहाँ देखकर हेनरी का शक बढ़ नहीं जायेगा ? तुम चिन्ता मत करो, वहाँ तलाक के नियम बड़े सरल हैं ।"

"एक अन्य उपाय भी है, लवजी को जल्दी बुला लें ।" देवू ने कहा ।

"फिर तो वहाँ उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं बचेगा । क्या पता था कि उसका पति इतना शक्की और परपीड़क निकलेगा ।" वीणाबहन इस समय जैमिनी की चिन्ता में ही बीमार लग रही थीं । कल्पना ने उन्हे जाकर आराम करने के लिए बाध्य किया ।

बाप-बेटे घर पहुँचे तो शांति, आज ही आया हुआ लवजी का पत्र पढ़ रही थी । मनु उसके गले में हाथ डाले, पीठ पर लटका था । उसे ऐसा उत्पात न करने के लिए ईजू बार-बार आँख दिखाती थी परंतु वह उधर देखने के बजाय हीरा-काकी की ओर हँस हँसकर देख रहा था । मनु ऐसा सोच रहा था कि बड़ी काकी उसकी शैतानी पर मोहित है जबकि हकीकत यह थी कि हीरा मोहित थी लवजी के पागलपन पर...

वीणाबहन ने शांति का एक फोटो लवजी के पास भेजा था । लवजी ने पत्र में शांति के रूप का वर्णन वही फोटो देख कर किया था । उसे, पहले के प्रेम में तपस्या का तेज भी जुड़ गया दिखाई दिया था । फिर कुछ विचार और थे – साहचर्य से प्रेम टिका रहता है और अलग होते ही कम होने लगता है ।–ऐसा मानने वालों की अपेक्षा उसका अनुभव भिन्न था । अब विश्वास हो गया है कि जैमिनी के प्रति प्रेम तो बड़ी उम्र में स्वीकृत किया हुआ एक ख्याल था । यह तो एक ऐसी बात थी कि जैसे हमने गणना सौ से प्रारंभ की हो । परंतु शांति के साथ संबंध तो एक की संख्या से शुरू हुआ था । और तबसे निरंतर बढ़ता गया है बढ़ता गया है । "जैमिनी को अब मेरे प्रति अपने प्रेम को छिपाना पड़ता है । पति के संतोष

के लिए वह कभी-कभी मेरी आलोचना करती है, मजाक करती है। मैं उसकी वेदना को समझता हूं परंतु सच्चाई के साथ की गयी छेड़छाड़ अच्छी नहीं लगती। उसके इस व्यवहार के साथ मैं तुम्हारे अंतर की सच्चाई की तुलना करना चाहता हूं। तुम मेरे घर आय, इसके पहले तुम्हें अपमान के अतिरिक्त क्या मिला था? क्षारयुक्त जमीन में बीज नहीं उगता, उसे सींचने से पानी भी क्षारयुक्त हो जाता है। परंतु तुम तो अलग ही निकली। मैने शुरू-शुरू में शायद धोखा खाया हो परंतु जिस दिन तुम्हारे गाँव आकर तुमसे मिल गया था उस दिन से..."

हीराभाभी ने शांति को चिकोटी काटी। ईजू ने उसे शिकायत के स्वर में ऐसा न करने के लिए कहा। हीराभाभी ईजू को भी चिकोटी काटकर ही जवाब देती किन्तु इतने में भगत और देवू के पैरों की आहट सुनाई दी।

माँ और रूपा खेत की रखवाली कर रही हैं और दोनों बहुएँ यहाँ गप्पेबाजी में लगी हैं – अभी देवू क्रोधित होने जा ही रहा था कि शांति के आँचल में उसने पत्र देखा। उसके चेहरे का भाव बदल गया। उसने मनु से कहा-"काकी के हाथ से कागज ले आव।"

मनु को पत्र की अपेक्षा दादा के अंगोछे के कोने में बँधे परसाद में ज्यादा रुचि थी। ईजू ने इशारे से मना कर दिया है यह बात देवू नहीं देख सका था। इसलिए उसने पत्र की सीधी माँग की। अब ईजू बोली-"शरम नाहीं आवत, दूसरे के चिट्ठी माँगत हो।"

शांति को जैसे अब सूझा हो, वह पत्र लेकर छज्जे पर भाग गयी। हीराभाभी सीधे घर जाने के बदले देवू के पास आयी। उसके कान में मुँह लगाकर स्वर में कच्चे आम का स्वाद घोलते हुए बोली-"अब रहि गह के लवजीभाई बहू के प्रेम मां पड़ हैं।"

32

शांति को संबोधित करके लिखा हुआ लवजी का वह विरल पत्र बहुत यत्नपूर्वक रखा हुआ है – शांति के शृंगार-बक्स में। लवजी जब हस्त-उद्योग का वह बक्स लाया था तब शांति को उसमें कुछ रखने जैसी चीज नहीं लगी थी। मुँह पर कभी पावडर लगाया नहीं था और न तो कभी नाखूनों में पालिश की थी। सुबह में भगवान का दीया जलाकर माथे पर एक टिकुली लगा लेती थी। सिंदुर की शीशी पूजापेटी में रखती थी और जेवर इसी शृंगार बक्स में। जो पत्र आते हैं उन्हें ठीक से तहाकर सोने की चूड़ियों के नीचे रख देती है।

सभी के नाम लिखे हुए पत्र तो शांति को मिलते ही हैं, उसे भी पंद्रह दिन में एक पत्र अलग से मिलता है। प्रथम छः महीने तक मात्र चार ही ऐसे पत्र

मिले हैं परन्तु अब ? शांति जवाब लिखती है, इसके पूर्व ही डाकिये की मीठी आवाज़ सुनाई देती है ।

अभी पिछले दिनों ही लिखा गया लवजी का एक पत्र वीणाबहन के पास आया था । देवू अहमदाबाद गया था तो वीणाबहन ने उसे वह पत्र दिया था। देवू ने उसे बड़ी दुविधा के बाद सारंग और सोमपुरा के रास्ते में टुकड़े-टुकड़े फाड़कर फेंक दिया था । लवजी ने वीणाबहन के नाम इतना लंबा पत्र लिखा ? चिंता हुई ।

मुरब्बी वीणाबहन,

प्रणाम ।

आज मुझे एक विचित्र भाव का अनुभव होने लगा है । क्या यह किसी किस्म का भय है ? हाँ । मेरा अंतःकरण रह-रहकर पुकार उठता है । जैमिनी ने शादी का निर्णय जल्दी में ले लिया था । इस बात का अहसास मुझे उसी समय हो गया था किन्तु उस समय मैंने अपने मन की बात उसे नहीं बताई थी । मै इसीलिए भी मौन था कि हो सकता है ऐसा मुझे ईर्ष्या, लोभ या किसी अन्य भाव के कारण लग रहा हो । किन्तु आज मैं इस स्थिति में हूँ कि आपको स्पष्ट रूप से लिख दूँ कि जैमिनी ने प्रतिक्रियावश ऐसा निर्णय लिया था । उसने मात्र हेनरी का शरीर देखा था ।

"सेकन्ड बेस्ट अल्टरनेटिव" कहकर । तब मुझे लगा था कि वह विनोद कर रही होगी परन्तु दुभार्ग्यवश यह सच निकला । औसत अमेरिकनों की तुलना में भी हेनरी अधिक शरीरप्रधान निकला ।

आज आपके सामने दिल को खोलकर धर देना चाहता हूँ । अपनी भूमिका के बारे में भी सोचता हूँ । शायद मैं भी अपराधी हूँ ।

मैं चाहता था जैमिनी ग्रहिणी का सुख प्राप्त कर सके । यद्यपि अमेरिका के संदर्भ में "ग्रहिणी" शब्द योग्य नहीं है । यहाँ तो गुजराती युवक भी साथी की तरह जीते हैं । पत्नी पति के समान बराबर बनकर जीती है । बल्कि कुछ अधिक ही काम करके अपने हिस्से का सुख प्राप्त करती है । मैं चाहता था कि साहित्य और कला में रुचि रखने वाला कोई भारतीय बुद्धिजीवी जैमिनी को पति के रूप में मिले और इसके जीवन में मन और शरीर किसी का भी अभाव न रह जाये ।

यहाँ आकर रीति-रिवाज के अनुसार मैं भी थोड़ा बहुत बदल गया था । हम एकदूसरे का सहारा लेकर अकेले में बैठे रहने या दस-पंद्रह दिन बाद मिलने पर अत्यंत आवेग के साथ भेंट-आलिंगन से मिलते । यहाँ बहुत से युवक-युवतियाँ बिना विवाह के मात्र बचत की गणना से एक साथ रहते हैं । ऐसी संभावनाओं से हम वाकिफ थे परन्तु इस दिशा में आगे बढ़ने के बाद वापस आना नहीं हो पाता इसलिए मैंने बल्कि हम दोनों ने शयनखंड के अंधकारपूर्ण एकान्त को संकल्पपूर्वक टाला था ।

हाँ, मुझे यह लिखते हुए अपनी मित्रता पर गर्व होता है कि जैमिनी ने कभी मुझे लोभ की नजर से नहीं देखा। इस बारे में मैं ही सदा भयभीत रहा हूँ। मैं अपनी कमजोरी के बारे में जानता था क्योंकि जैमिनी के मन में लोभ तो नहीं था परन्तु उसकी ओर से मुझे आजादी जरूर थी। उसने वर्षों पहले मुझसे कहा था–"मेरा जो भी है वह सब तेरा ही तो है लश्जी। जब भी तुझे चाहिए उसे मेरी अनुमति की राह देखे बिना ले लेना।"

सच कहता हूँ वीणाबहन, किसी अन्य स्त्री के साथ मेरा विवाह हुआ होता तो मैं कबका जैमिनी की शरण में पहुँच गया होता। इतनी असीम उसकी कृपा का अनुभव करता हूँ, परन्तु शांति विलक्षण है। उसके द्वारा मुझे जो भी मिलता रहा है, मेरी योग्यता से अधिक है। अमेरिका आने के बाद यह विश्वास अधिक दृढ़ हुआ है।

मैंने यहाँ सप्ताह के पाँच दिन स्वाध्याय में ही बिताये हैं। जैमिनी से मिले बिना यदि पंद्रह दिन बीत जाते हैं तो बेचैनी होती है। यहाँ के बहुत सारे भूगोल की शिक्षा उसने मुझे दी है। हमने कई एक छोटे मोटे प्रवास एक साथ किये हैं। और उतनी ही रुचिकर गोष्ठियाँ की हैं। फिर उमंग से अलग हो गये हैं। परन्तु न मालूम क्यों समय और संयोगों की कुदृष्टि हम पर आ पड़ी। हमारी परीक्षा की घड़ी आ पहुँसी-सी लगती रही। एक शाम को विपत्ति की सीमा आ पहुँची थी। खेत में पेड़ों की छाया में हाथ में माला लिए बैठे पिताजी, तथा रूपा को नये पाठ की शिक्षा देती शांति उसी क्षण मेरे स्मरण पर उभर आये थे और मैंने अपनी साँसों पर काबू पा लिया था। आम्र मंजरी की रसभरी शाखा के समान झुकी हुई जैमिनी की काया से मैंने नतनेत्र होकर क्षमा माँग ली थी। किसी प्रेमी से किसी का ऐसा अपमान न हो।

मुझे उस दिन रात में एकान्त असह्य लगा था। बार-बार प्रश्न उठता था– दो व्यक्तियों के प्रेम का कोई विकल्प हो सकता है? मैं अनजाने ही तुलना करता रहा – जैमिनी और मेरे प्रेम की एक भूमिका है, शांति और मेरे प्रेम की दूसरी भूमिका है। एक का संबंध वाणी और नेत्रों के साथ है, दूसरे का संबंध रक्त के साथ। हाँ, मैं शांति की बात कर रहा हूँ। मुझे लगता है जैसे हम दोनों का रक्त एक में मिलकर एक-दूसरे के हृदय में प्रवाहित हो रहा है।

फिर तो एक पल भर में बिजली-सी कौंध उठी। वह घटना साकार होकर बहुत नजदीक आ पहुँची थी। यदि हम उसके हिस्से बन गये होते तो? दो उत्तप्त कायाओं के एक ही निबिड आश्लेष में वर्षों पुराने संकल्प नामशेष हो जाते और फिर हमें असहाय बनाकर गुजरा हुआ समय हमेशा के लिए भूतकाल बनकर रह जाता। आप तो जानती हैं वीणाबहन कि मैं मौन रह सकता हूँ परन्तु स्वजनों से कुछ छिपा नहीं सकता। अपने इस स्वभाव के अनुसार मैं सारी घटनाओं को शांति

से भी बता सकता हूँ। हो सकता है वह हँसकर स्वीकार कर ले और मेरी ओर उपहास की नजर से न भी देखे। परन्तु क्या यह संभव नहीं है कि धीरे-धीरे वह मुझे मात्र हिस्सेदार समझने लग जायेगी ? आज तक कैवल्य की जो भूमिका सृजित होती रही है वह बिखर नहीं जायेगी ? शांति का असीम स्नेह मात्र वफादारी की सीमा में बँधकर नहीं रह जायेगा ? हाँ, शाश्वत तो कुछ नहीं होता। जो सातत्य है वह भी रूपांतरित होते हुए क्षणों का ही है। जैमिनी से मेरे ऐहिक संबंध प्रारंभ होते ही मेरा, शांति के साथ का अमर्यादित संबंध परिभाषाओं में तो वृहद् और उदात्त हो जायेगा परन्तु वास्तव में सुगंध चली जायेगी, रह जायेगा मात्र पुष्प-आकार। शायद मैं अपनी बात को, उसकी पूरी शक्ति के साथ अक्षरों में न उतार सकूं परन्तु जैमिनी समझ गयी थी। मुझ पर कृपा करके उसने रक्त और श्वास की गति पर नियंत्रण कर लिया था। उसकी इस धृति और स्वस्थता को देखकर मैंने उससे कहा था - मैं दूर देश में रहने का संकल्प करके स्वयं को दुःख देता हूँ और तुझे असीम वेदना पहुँचाता हूँ। पूजा के योग्य तेरी काया का मेरे ही हाथों अपमान होगा, मैंने सोचा भी नहीं था। सच कहता हूँ जैमिनी, तेरी यातना और अपमान मेरे लिए असह्य है। परन्तु यदि तेरा बस चलता हो तो कृपा करके मुझे विभाजित होने से बचा ले। मैं अपने सबंधों और ग्रंथियों को नैतिकता से अलग करके अपने व्यक्तित्व को अविभाजित नहीं रख सकूँगा। किसी भी अमेरिकन को हवाई लगने वाला मेरा यह व्यक्तित्व मात्र मेरे हाथ की बात नहीं है।

जैमिनी ने मेरी बातों पर विचार किया था। उसका स्पष्टीकरण उसकी चिर-परिचित पारदर्शिता के अनुरूप ही था। उसने कहा था-"मैंने सोचा था कि अमेरिका आने के बाद भारतीय स्थल-समय का प्रभाव तुझ पर से दूर हो चुका होगा। यहाँ के सामाजिक वर्तन का एक बार अभ्यस्त हो जाने के बाद तू अपनी सुध-बुध भूलकर मेरे लिए निरंतर तरसता रहेगा। तुझे शायद यह जानकर आश्चर्य भी होगा कि मैंने तो अपनी धुन में यहाँ तक सोच लिया था कि तू मेरी वजह से ठीक से अध्ययन भी नहीं कर पायेगा। परन्तु शाबाश दोस्त. तूने अपने सोमपुरा के घर-खेत के साथ नाभिछेद नहीं होने दिया। तू पत्नी के साथ कायाव्रत को भी प्रेम मानता हो तो मान कर जी, संयम को मूल्य मानता हो तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है। संभव है कि यह भी एक कारण हो जिससे मैं तुझे इतनी उत्कटता से चाहती हूँ। संभव है यह, अपने बीच के अनुशासन-बद्ध व्यवहार को छिन्न-भिन्न कर डालने की नकारात्मक जिद भी हो। परन्तु यह बात जाने दे। तू जानता है कि पुरुषों के साथ शरीर के लेन-देन का हिसाब मेरे लिए अज्ञात नही है। दूसरी बात यह है कि यह मेरे लिए बहुत बड़ी आवश्यकता भी नहीं है। मेरी आवश्यकता है तेरी पवित्र दोस्ती। दूसरे पुरुषों के साथ मैंने चाहे जैसा व्यवहार किया हो किन्तु तू जानता है कि तेरे साथ आज तक ईमानदार रही हूँ। इसीलिए मुझे तुझसे पूछना भी है। एक अमेरिकन मेरी ओर आकर्षित हुआ है। वह

हमारी मित्रता के बारे में जानता है । तू विवाहित है और डिग्री मिलते ही भारत वापस चला जायेगा, वह जानता है । मौका हाथ लगते ही वह मेरे साथ बात करने लगता है और यह प्रभाव डालने की कोशिश करता है कि भारत में उसे विशेष रुचि है । पहले वह एक सिंधी लड़की के साथ रहता था । उसने मुझे चेतावनी दी है कि हेनरी बहुत बुद्धिमान है परन्तु हम समझ भी नहीं सकते ऐसी वस्तुओं से उसे ईर्ष्या है । तू उसके साथ रहना शुरू करे तो ध्यान रखना । मैंने उसे कहा था कि मुझ पर पूरी तरह अपना हक जमा ले और मुझमें किसी अन्य पुरुष के प्रति आकर्षण रहने ही न दे मुझे ऐसा ही आदमी पसंद आयेगा । मैं पहले उसके साथ शादी करूँगी फिर उसके साथ रहना शुरू करूँगी । मैं क्या करूँ लवजी ? बोल । विवाह कर लूँ हेनरी से ? शरीर से वह लगभग तेरे जैसा ही है । उसके साथ मिलन के समय मैं यह मान लूँगी कि वह नहीं, तू है···इस प्रकार मैं तुझसे अपना संबंध बना रखूँगी । मिलने नहीं आऊँगी । तुझे या अपने को परेशानी में नहीं डालूँगी । पर्वत-शिखर से गहरी खंदक में गिरने का क्या अर्थ होता है यह तू न समझता हो ऐसा संभव नहीं । पुनः ऐसा न हो इसलिए मैं हेनरी से विवाह कर लूँगी । उसके साथ नहीं अच्छा लगेगा तो दूसरे के साथ । एक और बात । भारत वापस आने की मेरी कोई इच्छा नहीं है । वहाँ रहूँगी तो तुझसे मिलने की इच्छा होगी ।

मैं उससे क्या कहता ? निर्हेतुम प्रेम–भावना पर उसने चौकड़ी मार दी थी । वह आवेश में थी । इच्छा हुई कि मौन रहूँ परंतु सलाह दिये बिना नहीं रह सका– 'तू विवाह करे तो मेरी शुभकामनाएँ जैमिनी । परन्तु तू आज जल्दबाजी में है । पहले तू हेनरी को पहचान ले । मैं भी उससे मिलूँगा ।" जैमिनी व्याकुल हो उठी थी – "ओहो, तो तू अब मेरा प्रेमी नहीं, मुरब्बी बनेगा । और फिर मना कर देगा : हेनरी तेरे लिए योग्य नहीं है ।"

मुझे लगा कि आज जैमि‍नी घायल है । अगले हफ्ते चर्चा करूँगा । किन्तु उसने मेरे मौन का उल्टा अर्थ लिया और उसी रात हेनरी के पास पहुँच गयी ।

मेरी बात मेरे मन में ही रह गयी । मैं कहना चाहता था कि जैमिनी, तू जिसके साथ विवाह करे उसके व्यक्तित्व को पूरी तरह स्वीकार कर सके यह जरूरी है । किसी पुरुष को किसी अन्य के विकल्प में लेना उसके व्यक्तित्व की तफ़ीक है । तू हेनरी को जगह पर मुझे समझकर पति के प्रति सूक्ष्म हिंसा करेगी । इतना तो तुझे स्वयं को समझाना ही चाहिए । पशुओं के पास मनुष्य जैसा व्यक्तित्व नहीं होता इसलिए उनके दहिक संबंध, मानसिक ऊथल–पुथल खड़ी नहीं करते । पशुओं के लिए जातीय वृत्ति भूतकाल और भविष्य का भार बनकर लिपटी नहीं रहती । फिर भी वे कभी–कभी अपनी सीमाओं को पार करके संवेदन सत्य प्रकट कर देते हैं । मैं पशुओं के साथ रहा हूँ इसलिए जानता हूँ, मेरी कल्पना में जो लोग हैं मैं उनके साथ रहना चाहता हूँ । उनमें से एक तू थी, परंतु ..

वीणाबहन, आप बताएँ इस संवेदन-सत्य की धुरी की अवगणना करके जैमिनी जीवनसाथी पसंद करेगी तो जीवन-रथ कब तक चलेगा ?

मैं उसकी विवाह-पार्टी में नहीं गया था । किसलिए व्यर्थ की औपचारिकता में पड़ूँ ? हेनरी ने बारंबार जैमिनी से पूछा था – "तुम्हारा वह मित्र क्यों नहीं आया ? क्यों, नहीं आया ?" फिर वह कारण बताने लगा था – "हाँ, वह तुम्हें छोड़ना नहीं चाहता था ।" एक बात सच है । मेरी दृढ़ मान्यता थी, जो मैं जैमिनी से न कह सका था, कि मैं जब तक अमेरिका में रहूँ, उसे विवाह नहीं करना चाहिए था खैर......

जैमिनी बड़ी जल्दी समझ गयी कि हेनरी और उसकी भावनाएँ एक नहीं हो सकतीं । भूखा बदन भुक्खड़ की तरह भान भूलकर कुछ दिनों तक वर्तन करता रहा परन्तु फिर मन भर गया और...

मुझे इस बात का बेहद दुःख है दीदी, कि मैं स्वदेश लौटने की तैयारी कर रहा हूँ उसी समय जैमिनी का दाम्पत्य-जीवन निराधार बनकर झूल रहा है । यहाँ के समाज में तो पति के खिलाफ बलात्कार की शिकायत भी कोर्ट में की जाती है। कई उदाहरण हैं । परन्तु जैमिनी के मन से अभी भी भारतीय लज्जा-भावना खत्म नहीं हुई है । वह अपनी वेदना की बात मेरे अतिरिक्त किसी अन्य से नहीं करती । कह रही थी – इतनी घुटन में तो तमाम स्त्रियाँ जीती होंगी । क्या मैं नहीं जी सकती ?

मैं उसे आश्वासन और कभी-कभी सलाह भी देता रहता हूँ । अमेरिकन लोग अतीत पर तो सर्जरी कर लेते हैं किन्तु किसी को समानान्तर स्थिति में देखकर उसे तुरन्त प्रतियोगी मान लेते हैं और अपने हिस्से के बारे में व्यावसायिक मानसिकता से काम लेते हैं । विरोधी व्यक्ति की हानि की उन्हें फिक्र नहीं होती । मुझे अमेरिकन लोगों की अनौपचारिकता और कर्मठता पसंद है परन्तु ब्रिटिश लोगों में आज जो 'मैच्योरिटी" है, बहुत कुछ खोकर भी उनमें जो आत्म-गौरव है वह यहाँ के लोगो में नहीं है । मुझे तो यहाँ रह रहे भारतीयों में सहिष्णुता का अभाव भी खल रहा है । एक मात्र साहस की कहाँ तक कोई प्रसंशा कर सकता है । स्वर्गीय ठाकोरभाई देसाई कहा करते थे कि साहस और मूर्खता के बीच मात्र एक पतली-सी डोरी का भेद है . जाने दीजिए । मुझे अमेरिकन अध्यापकों से जो मिला है वह श्रेष्ठ है, स्वतंत्रता को मूल्य मानकर कैसे जिया जा सकता है उसीका यह एक उदाहरण है ।

मैं पुनः हेनरी की बात पर आता हूँ । अब तो वह जैमिनी को धमकी भी देने लगा है – मैं तुझे उसके साथ यदि सोता हुआ देख लूँगा तो एक ही गोली से दोनों को खत्म कर दूँगा । जैमिनी चिरौरी करते हुए उसे समझाती है – "तुमसे विवाह करने के पहले भी मेरा और लवजी का संबंध अशारीरिक ही था । और अब तो वह भावनाओं से भी तटस्थ रहने का प्रयास करता रहता है ।" यह बात सुनकर हेनरी उसे "जूठी" कहता है और सत्य बता देने के लिए सताने लगता है।

जो घटना कभी घटी ही नहीं उस घटना का वर्णन करके हेनरी की कुंठित भावनाओं को जैमिनी कैसे संतुष्ट कर सकती है ?

उनका संबंध ऐसी स्थिति में पहुंच गया है कि मुझे फिलहाल कोई समाधान सूझ नहीं रहा है। आपको कुछ सुझाई देता हो तो आप फोन पर जैमिनी से बात करें। मैं उससे प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मुझसे मिलनाजुलना बंद कर दे। एक बार मेरे विषय में वह हेनरी को निश्चिंत कर दे। एकाध माह गम खा ले। आपको कुछ लिखा है ? यदि इस लंबे पत्र में कहां मैंने अनजाने ही मर्यादा का उल्लंघन किया हो तो मुझे क्षमा कर दीजिएगा। मैंने किशोरावस्था में जैमिनी को सर्वप्रथम अपने खेतों की मेड़ों पर देखा था। दुबारा जब मैं अपनी वयःसंधि पार कर युवावस्था में कदम रख रहा था तब आपके घर देखा था। उस समय की आप साक्षी हैं। जैमिनी के साथ मेरा विवाह नहीं हुआ, मुझे इस बात का कतई अफसोस नहीं है। शांति मेरे लिए एक अनुग्रह बनकर रही। परन्तु जैमिनी का क्या हुआ ? उसे उसके प्रेम का कैसा फल मिला ? गंगा में स्नान करके निकला व्यक्ति नाबदान में गिर जाये तो जैसा दुःख होगा वैसी ही व्यथा कल मैंने जैमिनी की आँखों में देखी है। और वीणाबहन, जैमिनी से हमेशा के लिए दूर चले जाने का निर्णय लेने के बाद मैं रात भर रोता रहा...

उचित समझें तो यह पत्र बालूभाई को भी पढ़ने के लिए दीजिएगा। परन्तु कल्पना तक न पहुँचे, इसका ध्यान रखना। प्रेम की ऐसी दुर्दशा होती है यह देखने के बाद हो सकता है जीवन के प्रति उसे वितृष्णा हो जाये।

—आपका कृतज्ञ
लवजी

देवू यह पत्र पढ़ रहा था तो वीणाबहन एक बार झाँककर चली गयी थीं। देवू के चेहरे का भाव देखकर उन्होंने सोचा था – "व्यर्थ में मैंने देवू को चिंतित कर दिया।"

पढ़ने के बाद देवू पत्र को मुट्ठियों में कसे हुए बैठा था। उससे पूछे बिना ही वीणाबहन चाय–नाश्ता रख गयी थीं। उधर देखे बिना ही उसने कहा –

"आप जैमिनी को आज ही फोन करके लवजी के साथ ही यहाँ आने के लिए कह दें। उसकी पहेली वहाँ नहीं सुलझेगी। मुझे तो लवजी की भी चिंता है। लड़ते समय वह अपना होश खो बैठता है। स्वरक्षा की भावना उसमें है ही नहीं और वह हेनरी तो मुझे पागल कुत्ता लगता है, एबनार्मल। झूठ कह रहा हूँ ?"

वीणाबहन को भय था कि जिद्दी जैमिनी ऐसी परिस्थिति में यहाँ आने के लिए तैयार ही नहीं होगी। वे सोच रही थीं कि तलाक के बाद भी वह अमेरिका में ही कैसे निश्चिंत होकर रह सकती है। उन्होंने अपने दो परिचित परिवारों को पत्र लिखकर उसके निरन्तर संपर्क में रहने की प्रार्थना की है।

दोनों में बातें हो रही थीं कि बालूभाई आ पहुँचे। उन्होंने लवजी का पत्र पढ़ रखा था। जैसे अपनी ऊब और थकान कम करने के लिए बोल रहे हों, बोले–

"मैं उन दोनों को जीनियस मानता था परन्तु निकले कायर, दिवालिये। लवजी को वहाँ जाने के बाद संत बने रहने की क्या आवश्यकता थी ? तुम जोश में लिपट पड़ोगे, उत्तेजित करोगे एक दूसरे को परन्तु संतुष्ट नहीं करोगे तो और क्या होगा ? दोनों ने व्यर्थ की संवेदनशीलता में आकर अपना करीयर स्पॉइल कर डाला। जमिनी से भी मुझे शिकायत है। उसे यदि कोई साँड ही पसंद करना था तो इन्डियन पसंद किया होता। साला थोड़ी शर्म तो करता।

देवू स्तब्ध रह गया। बालूभाई ऐसा भी बोल सकते हैं ! ऐसा सुनने में भी मुझे संकोच हो रहा है।

"आपके मुँह से ऐसे शब्द शोभा नहीं देते। आज से आप लवजी और जमिनी के बारे में मेरे आगे कुछ मत बोलना। समझे ?" वीणाबहन की आँखों में रोष के आँसू थे।

"नहीं बोलूँगा। परन्तु अब कुछ करो। अब फिर कोई अमंगल होगा तो तुम्हारी जिम्मेदारी। बहन के खाते में पैसे कूद रहे थे। हुँह ! मुझे भी क्या हो गया था जो मैंने ही उन दोनों के पास-पोर्ट-वीजा आदि निकलवाने में मदद कर दी थी।"

किसी के पास कोई समाधान नहीं था। और इसीलिए लड़कर मन हल्का करने का प्रयत्न कर रहे थे।

देवू अथाह व्यथा लेकर सोमपुरा वापस आया। उस पर नजर पड़ते ही कंकू माँ ने पूछा था - "काहे भैया, काहे चुपचाप हो, सिर दुखत है का ?"

"गोभी के भाव कम आवा होये।" देवू हर बार रूपा के लिए कुछ लेता आता था। आज भूल गया था। उसे एक रुपया देकर उसे मनाना पड़ा।

हीराभाभी जब पीयर गयी थी तो हीरूभाई के पास से एक पत्र लेती आयी थी जिसे लवजी ने हीरूभाई के लिए लिखा था। पत्र में समझ में आने जैसी कोई बात न थी फिर भी हीरा ने उस पत्र को घेमर से पढ़वाकर अक्षरशः सुन लेने के बाद ही शांति को दिया था। पत्र में भौतिक समृद्धि के पीछे पागल समाज की सनक और विशेषकर गुजरातियों की मूर्खता पर लवजी का क्रोध व्यक्त हुआ था। कहीं-कहीं मजाक भी था। डॉ. गाँधी और प्रो. मेहता की प्रशंसा भी थी। फिर भी उसने अमेरिकन जीवनशैली को होटल-सभ्यता की परिभाषा दी थी। भारत के गाँवों में जो स्थान मंदिरों का है वही स्थान यहाँ होटलों का है। वहाँ जो महत्त्व देवी-देवताओं को दिया जाता है वही महत्त्व यहाँ विज्ञापनों में छपी आकृतियों को दिया जाता है। यौन-संबंधी हिंसा की बाढ़ में यहाँ की नयी पीढ़ी स्नान कर रही है। यहाँ भी कार्यक्षमता विकसित करने के लिए भ्रष्टाचार का सहारा लिया जाता है। वहाँ अस्पृश्यता है यहाँ रंगभेद है। हाँ, है ही। गाँधी और किंग के काम अधूरे हैं। मेरे गाँव के कालू बुनकर को नौकरी मिली ?

"परिवर्तित होते जाना यहाँ की मुख्य क्रिया है। प्रो. मेहता ने मुझे विस्तार

से समझाया था कि अमेरिकन समाज में पहले कलात्मक माना जाना एक गुण था परंतु वही 'वैज्ञानिक" नाम मिलते ही आकर्षक बन गया। अब "सर्जनात्मक" कहा जाये तो ही सबको पसंद आये, यह यहाँ की स्थिति है। पहले जो प्रेम-कला थी अब वैज्ञानिक प्रेम-कला बन गयी है। अभी-अभी "क्रियेटिव डायवॉर्स" नाम की एक पुस्तक बाजार में आयी है।

"यहाँ सब तीव्रता से परिवर्तित होता है। स्थिर कुछ भी नहीं है। सबकुछ "इन्सटंट" और "ट्रांजिटरी" है। आप यहाँ के सामाजिक स्तर के बारे में जानेंगे तो हँस पड़ेंगे।

"हाँ, यहाँ के लोग बहुत ही परिश्रमी हैं। पौराणिक भाषा में कहें तो इन लोगों की तपस्या राक्षसी है। यहाँ आये हुए गुजराती भी दानवमय हो गये हैं। बनाते हैं और बेचते हैं। इसके बावजूद यहाँ के स्थापित समाज की तुलना में ये लोग कनखजूरे के एक पाँव के बराबर भी नहीं हैं। युद्धसामग्री का अधिकांश अमेरिकी उत्पादन यहाँ पूंजीवादी व्यक्तियों द्वारा होने के कारण इस देश को प्रत्येक दशक में कम से कम एक युद्ध चाहिए ही। ऐसा न हो तो अमेरिका में लोकतंत्र के बदले साम्यवाद आ जाये।

"दूसरी ओर, यहाँ शक्ति की कद्र है। विद्या के प्रति आदर है। विद्वानों को यहाँ निष्क्रिय बैठना नहीं पड़ता। खोज के लिए तमाम सुविधाएँ हैं। अमेरिका ने केन्सर के खिलाफ धर्मयुद्ध छेड़ रखा है।

"उससे भी बड़ी बात यह है कि यहाँ बहुत बड़ी स्वतंत्रता है। यदि आप निःस्वार्थ भाव से सच बोलते हैं तो आपको उसकी सजा नहीं मिलेगी।

"यहाँ कुछ मित्रों को "प्रजा भारती" की प्रवृत्तियों में रुचि है। डॉ. गाँधी भारत आने पर संस्था की मुलाकात लेना चाहते हैं। मैंने पता दे दिया है। उन्हें सोमपुरा भी ले जाना। मेरी माँ ने 1938 में सारंग सत्याग्रह में भाग लिया था यह जानकर वे उनसे मिलना चाहते हैं। कुछ लिखना भी चाहते हैं। शांति ने अमेरिका आने के लिए क्यों मना कर दिया है वे यह भी समझना चाहते हैं।

"मेरा काम पूर्ण होने वाला है। कमाने के लिए यहाँ रुकने की इच्छा नहीं है। आप सब से अधिक समय तक दूर रहकर जीने की मुझमें हिम्मत नहीं है।"

इस पत्र का जो बिल्कुल न समझ में आने वाला हिस्सा था घेमर ने देवू से समझ लिया था। फिर हीरा को भी उसने अपनी भाषा में समझाया। शांति ने देखा कि चाहे सही समझा हो या गलत, हीराभाभी संतुष्ट हैं। फिर उन्होंने एक अच्छा-सा कागज मँगवाकर, हरजीवन को बुलवाकर, उसे सम्मान से चाय-पानी पिलाकर लवजी के लिए चिट्ठी लिखवायी थी। घेमर के अटक जाने पर हीराभाभी ने आगे लिखवाया था। उस समय भी घेमर ने सूचना दी थी—"अरे! ई कहत है बिल्कुल वैसे लिखयो, अपनी तरफ से सुधारेव.न।"

इस पत्र का उत्तर भी आ गया है। लवजी ने लिखा है :

'हीराभाभी और चेमरभाई, आप दोनों मेरी दृष्टि में सबसे अधिक सुखी युगल हैं। आप लोग ऐसा सोचते हैं कि यहाँ की स्त्रियों को प्रत्येक मामले में स्वतंत्रता है और उन्हें इन्द्र राजा की अप्सराओं जितना मान मिलता है। परंतु ऐसा विरल ही देखने को मिलता है। यहां सुन्दर-सुन्दर स्त्रियों की अकारण हत्याएँ होती हैं। हाँ, ऐसा करने वाले कई यौनिक और मानसिक रोगी यहां हैं। शिक्षित और सुखी सम्पन्न पुरुष भी अपनी पत्नियों पर हाथ उठाते हैं। एक गणना के अनुसार यहाँ की पचास प्रतिशत स्त्रियां अपने पतियों के हाथों मार खाती हैं। हीराभाभी, आपने लिखवाया है कि जैमिनी मुझे मिलती है कि नहीं? हाँ, मिलती है और रोती है। उसका पति उसे बहुत मारता है। एक ही उपाय है। तलाक का केस करके जैमिनी यहाँ के संरक्षणगृह में रहने चली जाये। परंतु ऐसा करने में उसे शर्म आती है। डॉ. गाँधी और प्रो. मेहता ने उसे सलाह दी है – होस्टल में भर्ती होकर आगे की शिक्षा चालू रखो और इस बहाने हेनरी के चंगुल से बच जाओ। उम्मीद है कि कोई व्यवस्था हो जायेगी।

यहाँ स्वर्ग नहीं है। वह यदि कहीं है तो आप जैसे स्वजनों के हृदय में है। एकदूसरे से प्राप्त स्नेहयुक्त अपने हृदयों में है। यह बात मेरे पिताजी व्यवस्थित समझा सकेंगे। मैं देखते ही देखते आ पहुँचूंगा।'

सब राह देख रहे थे। लवजी अपने अगले पत्र में वापस आने की तारीख लिखने वाला था। पता लगते ही सब लोग एक साथ बंबई चल पड़ेंगे।

कंकू माँ शांति से कहती हैं–"बहू तुमका तो टेलीफून करे आवत है। अपने गाँव से लेन न मिलत होय तो चलौ दूनों जनी सारंग जाई। पशाभाई मंतरी पहिचानत हैं। पहले तो वे जतनी बार मिलत रहे भैया के बड़ाई करत रहे। कहत रहे – धन्य है ईका पैदा करे वाली के दूध के। उनके घर से फट दे के लेन मिल जाये। चल।"

शांति रूपा को भेजकर देवू को बुलवाती है। देवू माँ को समझाता है– "आपको इतनी उतावली क्यों मची है? भैया पढ़ाई पूरा करके कुछ कमाने के लिए वहाँ रुकने वाले थे। कुछ भाषण-व्याख्यान का काम मिला था उन्हें। मैंने आपसे नहीं कहा था कि उन्होंने ट्रेक्टर के पैसे का भुगतान कर दिया है। एक-दो दिन में पत्र नहीं आता है तो फोन करेंगे। बस? थोड़ा धैर्य रखिये। इतनी चिन्ता करोगी तो पागल हो जाओगी। आपको तो उल्टे हमें आश्वासन देना चाहिए। इसके बजाय आप और घबरा देती हैं। शांत होकर भगवान का नाम लो। कहाँ गई आपकी माला?"

"हमार माला तो ई लइका..." कंकू मां धीरे से कहती हुई अपनी माला ढूँढने लगती हैं। रूपा रंग में भंग डालते हुए कहती है - कल माँ माला फिराते समय रामनाम बोल रही थीं। "रामजी-रामजी कहत-कहत का बोले लगीं रहा बताई? लवजी.. लवजी.. ।"

देवू हँस पड़ता है । घूँघट निकाले बैठी शांति शांत रहती है । कंकू माँ का चेहरा तो अभी स्मित-पूर्ण था । यह अचानक उनकी आँखों से अश्रु क्यों टपकने लगे ?

शांति उठकर छज्जे पर चली गयी । देवू जूता पहनने जाने लगता है कि उसे सिसकियाँ सुनाई देने लगती हैं । रूपा को चाची के पास भेजकर वह चला जाता है ।

एक, दो और फिर तीसरा दिन भी गुजर गया ।

देवू ने इस बीच दो बार प्रयत्न किया किन्तु लवजी से संपर्क न स्थापित हो सका । वीणाबहन ने संदेश भेजा है ।

लवजी का शांति को संबोधित पत्र आता है और सब हर्ष का अनुभव करते हैं । लवजी ने लिखा-

प्रिय शांति,

मैं निरन्तर चाहता हूं कि तुम सुखी रहो । तुम्हारी बेचैनी का अनुमान लगा सकता हूँ । पर अब तो आ रहा हूँ । बल्कि ऐसा समझ लो कि आ पहुँचा हूँ । भला पन्द्रह दिन बीतने में कितना समय लगता है ? तुम्हारे अधैर्य और माँ की बेचैनी का समाचार वीणाबहन से मिला । क्या मेरी दशा तुम लोगों से भिन्न है ?

आज जी चाहता है कि कुछ लिखकर राहत का अनुभव करूं ।

तुम तो जानती ही हो कि मेरे अमेरिका रवाना होते ही जैमिनी ने यहाँ मेरे लिए तमाम सुविधाएँ जुटा ली थीं और बेचैनीपूर्वक मेरा इन्तजार कर रही थी । उसकी ही वजह से मुझे भी अकेले हो जाने का भय नहीं था । किन्तु देखते ही देखते सब कुछ बदल गया । कुछ वर्ष पूर्व वहाँ अहमदाबाद में हम तीनों एकसाथ बैठकर या कभी-कभी मैं और जैमिनी एकसाथ बैठकर दो पल बात कर लेते थे तो खुशी मिलती थी । प्रेम के कारण ऐसा होता है । किन्तु आज मैं महसूस कर रहा हूँ कि जैमिनी से मुझे मोह भी था । उसके साथ बैठना मुझे बहुत ही प्रिय लगता था । तुम्हारी उपस्थिति भी अच्छी लगती थी । किन्तु आज ? तुम यहाँ नहीं हो फिर भी जैमिनी के साथ बैठकर बात करना मुझे अच्छा नहीं लगता । इसका कारण यह है कि उसे देखते ही मुझे उसकी चिन्ता सताने लगती है । मैं जानता हूँ कि अब वह जब भी आती है, मुझसे मिलने नहीं, अपने पति हेनरी की शिकायतें करने आती है ।

हमारे संबन्धों की हकीकत जैमिनी ने हेनरी से बता दी थी । पर शायद इस हकीकत को समझने की मानसिक शक्ति हेनरी में थी ही नहीं । इसमें उसका भी क्या दोष ? जहाँ विवाह के पूर्व ही शारीरिक संबन्ध स्वाभाविक क्रिया माना जाता हो वहाँ हमारे नियम-संयम की बात किसी के गले के नीचे कैसे उतर सकती है ? जैमिनी ने जब देखा कि वह इस आदमी से जो भी सच बात बताती है, वह सबका विपरीत ही अर्थ लगाता है तो फिर उसे भ्रमित करके ही क्यों न जियें ? और उसने अभिनय करना प्रारंभ कर दिया । फिर तो वह मुझे मिलने आते समय भी किसी अन्य का फोन नम्बर देकर आती ।

हेनरी जानता है कि जैमिनी के नाम बहुत बड़ी रकम जमा है। शायद इसीलिए वह जल्दी तलाक के लिए राजी नहीं होगा । मैं तो पन्द्रह दिन बाद यहाँ से चल पड़ूँगा । जैमिनी अकेली रह जायेगी । हो सकता है ऐसी स्थिति में हेनरी और भी आक्रमक हो जाये । मैं भयभीत था कि कहीं जैमिनी आत्महत्या न कर बैठे । पर उसने मुझसे वादा किया है । आत्महत्या नहीं करूँगी; तलाक के लिए मना लूँगी । एक और पराजय । मेरे लिए पराजय कहाँ नयी घटना होगी ?

मैंने कहा था कि मेरे और शांति के सम्बन्ध के सृजन में तुम्हारी जो रचनात्मक भूमिका रही है वह तुम्हारी पराजय नहीं, उपलब्धि है । देर-सबेर तुम इस सृजन का संतोष अनुभव करोगी ।

प्रत्युत्तर में जैमिनी बोली थी - यह तो शांति का अधिकार था। तुमारे विवाह के पूर्व संभवत: मैं आवेश में आ जाया करती थी । परन्तु शांति को देखने के बाद, उसे आलिंगन में लेने के बाद, उसके द्वारा बनायी रसोई का स्वाद पाने के बाद, उसका तुम्हारे प्रति और तुम्हारा उसके प्रति असाधारण भाव देखने के बाद मुझे विश्वास हो गया था कि मैं अपनी तुलना शांति से नहीं कर सकती । पहले तो गंगा अपनी पूर्णता में पवित्र और निर्मल थी । अभी भी ऋषिकेष या हरिद्वार क्षेत्र से उसका जल किसी बन्द पात्र में भर लिया जाये तो वह सड़ता नहीं । शांति की भावना सदैव निर्मल गंगाजल के समान है ।

और यहाँ अमेरिका में स्त्रियाँ अपने अधिकारों के लिए आंदोलन किया करती हैं। घर में बन्द होकर रह जाना इन्हें पसन्द नहीं है । स्वजनों के लिए किये गये त्याग की बातें इनके लिए उपहास की बातें हैं ।

उस दिन जैमिनी बात करके गयी तो फिर नहीं मिली, कई दिनों तक । उसका फोन भी नहीं आया । मुझमें अब धैर्य नहीं रह गया था ? मैंने फोन किया। न जाने कौन था उस ओर, बोला—"जाँच के लिए गयी हैं ।" और फोन रख दिया कैसी जाँच ?

उसके तीसरे दिन जैमिनी मिलने के लिए आयी। वह उदास थी ? या बीमार ? "चल मुक्त आसमान के नीचे बैठकर आज देर तक बाते करते हैं..." कहते हुए मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और बाहर निकला कि देखता हूँ स्तंभ की जगह हेनरी खड़ा है । मुझसे नजर मिलते ही कुछ शर्मिंदा पड़ता है । नजर नीची करके ऊपर देखता है । मुझे याद आ जाता है एक बार मैंने अजगर की छोटी-छोटी आँखें देखी थीं ।

"तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है । डॉक्टर ने तुम्हें आराम करने की सलाह दी है, भूल गयी ?"—हेनरी बहुत धीमे से बोलता है, स्वयं सुन सके इतने धीमे से। और मेरे हाथ से जैमिनी का हाथ छुड़ाकर उसे अपनी कार की ओर खींच ले जाता है ।

मैं वहीं खड़ा-खड़ा जड़ हो जाता हूँ । जैमिनी हाथ उठाकर अलविदा भी न

कह सकी। उसकी झुकी पलकों और बन्द होठों को पढ़ पाना मेरे लिए संभव नहीं। मैं उसकी ओर बढ़ने के लिए पैर उठाता हूँ किन्तु कार गति में आ चुकी है। हमारे बीच धूएँ का गुबार आता है।

ऐसा लग रहा है कि मुझे जेमिनी को इस गुबार से उस पार ही छोड़कर आना पड़ेगा।

शांति पढ़ते-पढ़ते रुक जाती है। अब वह लवजी की भाषा अच्छी तरह समझने लगी है। वह लवजी के योग्य नहीं है—यह भावना तो कबकी खत्म हो चुकी है और नकार-ग्रंथि तो मूल से ही नहीं है। जिसे चाहा जाता है, महिमा तो उसकी होनी चाहिए, चाहने वाला तो तुच्छ भी हो सकता है परन्तु अब तुच्छ नहीं है। लवजी ने विश्वास दिला दिया कि शांति क्या है......"आम की मंजरी और उसकी घटा की छाया—तू एक साथ दोनों है।"

और कंकू माँ! इन्हें सास कहूँ या माँ? एक रात वह जाग गयी होंगी। शीत पड़ रहो थी। शांति ने समझा कि रूपा को ओढ़ाने आ रही होंगी। पर इतनी बड़ी बहू को रजाई ओढ़ाकर, सिर सहलाते हुए गयीं...

हीराभाभी कह रही थी: "शांति लवजीभाई तूका अमरिका बलावत रहें तबौ नाहीं गइस पागल, तुहरे बदले और केहू होत तो, जिद करिके जात और एक झपट्टा मां पूरा सहर फाँद डारत।"

यहाँ क्या नहीं है जो मैं अमेरिका जाऊँ? और फिर वहाँ जाऊँगी तो वे यहाँ देर से लौटेंगे। यहाँ उनकी राह कंकू माँ, नरसंगदादा, देवूभाई, ईजूभाभी, रूपा सभी ताक रहे हैं। इस नन्हे मनु को क्या पता? पर वह भी रूपा के साथ-साथ चाचा, चाचा करता रहता है। रो रहा हो तो उसे चाचा का फोटो मिलते ही चुप हो जाता है।

और नहीं तो क्या, मेरे न जाने से तो वे जल्दी ही आयेंगे। अरे ये आ पहुँचे। अब तो दिन भी निश्चित हो गया है। पंद्रह दिन बीतने कितनी देर लगने वाली है?

33

सोमपुरा, गोकुलिया, बदरी और टींबा के सभी लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि तखत अपने लड़के को लेकर भगत के पास क्यों आयी थी? पिथू भगत की बात अलग थी। टोंना-टक्कर या बुखार होता था तो वे धागा-तावीज बाँध दिया करते थे परन्तु नरसंग भगत तो माला फिराने के अतिरिक्त कुछ करते नहीं। वे और उनके आत्माराम।

तखत का लड़का मैट्रिक की परीक्षा में पूरे सारंग केन्द्र में प्रथम श्रेणी में पास हुआ था। भगत का आशीर्वाद पाने के बाद उसने पूरे गोकुलिया में बतासे बाँटे

थे। किसी के पूछने पर उमंग से कहती थी – कितना भी खर्च क्यों न हो, लड़के को ठेठ तक पढ़ाऊँगी। भगत जैसे भगवान के आदमी की दुआ मिल गयी है फिर तो पढ़ा-लिखा फलेगा ही।

उस दिन रणछोड़ की छावनी में भी तखत चर्चा का विषय बनी रही। किसीने उसे भगतबाड़े से वापस जाते देख लिया था। उसके बायें कान की सोने की बाली पर रूपहली लट झूल रही थी। फिर भी कदम-कदम पर उसकी जवानी गुहार-सी मचा रही थी। उसके साथ की तमाम स्त्रियाँ जर्जर हो चुकी हैं, फिर इसे क्या हो गया है? यह स्वर्ग की कोई अप्सरा तो नहीं है जो अभिशप्त होकर यहाँ आ पड़ी है?

रणछोड़ ने पूछा था – इन्द्र बनने के लिए कितना तप करना पड़ेगा?

तखत के सुधर जाने का सबसे अधिक गम रणछोड़ को ही था। माधव को दुःख था कि वह सुखी हो गयी है। नारण को किसी ने बताया था कि हेतीबहन के साथ की वजह से तखत की दानत बदली है, उसकी आदत सुधरी है, उसकी इज्जत बढ़ी है। गायों और भैंसों से भी वह खूब कमाती है। गोबर का खाद डालकर उसने जमीन को खूब उपजाऊ बना लिया है। लड़के ने खेत में काम करते-करते पढ़ाई की है फिर भी पहला नंबर आया है।

यह सब तो ठीक परन्तु रणछोड़ को सबसे अधिक आश्चर्य तब हुआ जब उसने सुना कि गोकुलिया में एक अस्पताल बन रहा है और तखत ने उसमें दो हजार का चन्दा लिखवाया है।

क्या पुराना सभी हिसाब चुकते कर दिया?

"साला, अस बेगैरत इन्सानों क पछतावा होत है?" रणछोड़ ने पूछा।

"घबरा मत तू का न होये।" नारण बोला था। सब हँस पड़े थे। रणछोड़ जब जोर से हँसता है या दो कप आइसक्रीम खाता है तो उसके दाँत दुखने लगते हैं। नशे में होता है तब शिकायत करता है। माधव कहता है–"यह तो तेरे दाँत जो बच गये। नहीं तो देवू का राक्षसी पंजा लगने के बाद इस पूरे सत्ताइस के समूह में किसीके दाँत बच सकते है?" नारण सुधार करता है–"देवू के पंजे को राक्षसी कहने के बजाय रणछोड़ के दाँत को राक्षसी कहे तो कैसा रहेगा? रणछोड़ की माया किसी प्राचीन राक्षस से कम तो होती नहीं।"

नारण धीरे-धीरे रणछोड़ के गुट से निकलता जा रहा है। उसे घेमर के साथ बैठना बहुत अच्छा लगता है। घेमर को उसने बहुत पहले सचेत कर दिया है। सामने से आक्रमण करने वाले से तो देवूभाई निपट सकते हैं पर वे अकेले सो रहे हों और उन पर हमला हो जाये तो?

इससे बचने का उपाय खोजते-खोजते घेमर के मस्तिष्क ने बंदर-उछाल लगाया। उसने जान-बूझकर एक अफवाह फैला दी। जो व्यक्ति बुरी नीयत से भगतबाड़े में पाँव रखेगा, उसके पाँव वहीं जम जायेंगे। फिर उसे वातरोग हो जायेगा।

अमुक एरिये को नरसंग भगत ने साधना के बल पर ऐसा बना दिया है कि वहाँ पाँव रखने वाले को बिजली का करंट लग जाये। जबरा तो प्रमाण भी देता है। कहता है कि वह एक बार तुलसीदल लेने गया था, तो हाथ ही जमकर रह गया था। तुलसी का पौधा तो एक बीता दूर ही रह गया। बहुत कोशिश किया पर पौधा हाथ नहीं लगा तो नहीं ही लगा।

नरसंग की कीर्ति अब पिथू भगत की ऊँचाई तक आ पहुँची है। नरसंग धागा-तबीज नहीं करते, यह जानते हुए भी लोग पाँच-पाँच कोस से आ जाते। भगत दो घड़ी हँसकर आत्माराम की बात करते और वे सब प्रसन्नचित्त चले जाते।

एक अफवाह और भी फैली हुई थी। भगत ने अपने खेतों के आसपास एक लक्ष्मणरेखा खींच रखी है, इसीलिए फूलजी कहीं भागकर नहीं जा सकता। इस लक्ष्मणरेखा के पहले रणछोड़ के ट्रैक्टर से फूलजी टकराते-टकराते बचा है। ड्राइवर ने ब्रेक न मार दी होती तो ?

उस दुर्घटना के बाद फूलजी बार-बार अपना कंधा सहलाता। भगत ने कहा था भीतरी चोट लगी है। फिर भी देवू उसे अस्पताल ले जाकर जाँच करवा लाया था। देवू चमत्कार में विश्वास नहीं करता। वह जानता है कि पिताजी के पास ऐसे बहुत-से लोग आते हैं जो भीतर से टूटे हुए हैं और वे जुड़कर जाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि इलाज बाहर नहीं अंदर ही है। अंदर के बारे में पिताजी जितना जानते हैं, उतना ही बोलते हैं। हाँ, वे कुछ अधिक जरूर जानते हैं।

भगतबाड़े में फूलजी के रम जाने से देवू बहुत खुश है। वह किसी पौधे के पास खड़ा होता तो देखने वालों को यही लगता कि जैसे अभी कोई पक्षी उड़ते हुए आकर उसके ऊपर बैठ जायेगा और हवाएँ धीमे-धीमे बहने लगेंगी। फूलजी भगत के साथ बैठे-बैठे नाले में बहता हुआ पानी देख रहा होता तो मनु तुलसीदल तोड़कर उसके मुँह में रख देता। वह जब धीरे-धीरे उसे चबाता तो उसके चेहरे की चमक बढ़ जाती। पशुओं को पानी पिलाते समय फूलजी अचूक साथ में जाता। कभी पानी पिलाने की आवाज का अनुकरण करता तो कभी स्वयं चुल्लू भरकर पीने लगता। कंकू माँ को उसकी दशा पर दया आती। उनकी आँखें भर आतीं और फूलजी एक नन्हा अश्रु-कण बनकर उनकी आँखों से टपक पड़ता। प्रत्येक शनिवार तथा एकादशी के दिन वह देवू के साथ महादेव के मंदिर उत्सव में जाता और अन्य लड़कों के साथ नाचता। उसका नाचना घेमर को बहुत प्रिय है। वह कहता है—तुम लोग देखते रहो, मेरे नरसगबाबा फूलजी को गाता भी न कर दें तो कहना।

लवजी के जितने भी पत्र खेत में पढ़ गये हैं, सभी को फूलजी ने सुना है, हाथ से स्पर्श किया है, सूँघा है।

जंतुनाशक दवाओं को खेत में डालते समय देवू, फूलजी के बारे में सचेत रहता था। लवजी के इकोलोजी : जीवसृष्टि-[illegible] के बारे में लिखे गये पत्र के

पहले से ही नरसंग भगन कहते आये हैं कि जंतुनाशक दवाओं का इस्तेमाल उचित नहीं है । प्रकृति की रचना में परिवर्तन करने का फल अच्छा नहीं आता ।

.. ..

हीरूभाई और रमणलाल आज गाँव न जाकर सीधे भगतबाड़े में, एक साथ आये हैं । किसी विशिष्ट उद्देश्य से, इस इलाके के उत्थान के लिए । हीरूभाई ने प्रजाभारती का कार्यभार कार्यकर्ताओं को सौंपकर आसपास के गाँवों की प्राथमिक शालाओं में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया है । रमणलाल ने कृषि और पशुपालन के अतिरिक्त छोटे-छोटे पूरक उद्योगों का काम अपने हाथों में लिया है । वह चाहते हैं कि सोमपुरा, ढेखाड़िया और टींबा का दायित्व देवू संभाले ।

इसके अतिरिक्त वे भगत और देवू को वीणाबहन का संदेश भी देना चाहते थे । जब तक लवजी वापस नहीं आता, जैमिनी वहाँ से नहीं खिसकेगी । लवजी को कहो कि जल्दी से टिकट ले ले । वह क्यों बारंबार विचार बदलता रहता है ?

उन्होंने अभी वह बात नहीं निकाली है । सभी के आ जाने का इंतजार कर रहे हैं ।

नरसंग भगत अभी भी नयी खाद और कीटनाशक दवाओं के बारे में बता रहे हैं – एक छोटा सा जंतु भी मर जाता है तो उसका स्थान रिक्त पड़ जाता है । छोटे बड़े जीवजंतु और प्राणी तो एक दूसरे को मारते ही रहेंगे परन्तु जो स्वयं जीकर दूसरों को जिलाये उसका नाम आदमी है । दूसरों की भी जिम्मेदारी निभा सके इसीलिए प्रकृति ने मनुष्य में विशिष्ट योग्यता का सृजन किया है । मेरी बात मानो तो इन जंतुनाशक दवाओं के स्थान पर कुछ और ढूँढ लो ।

हीरूभाई और लवजी के बीच इस बाबत में पत्र-व्यवहार हुआ था । उन्होंने तुरंत भगत की बात का समर्थन किया ।

देवू चिन्तित था – बढ़ा हुआ उत्पादन घट जाये तो ? रमणलाल ने पंचायत और सहकारी मंडलियों की बात चलायी । देवू इस निर्णय पर आ पहुँचा था कि सहकार की भावना यहाँ के लोगों के रक्त में ही नहीं है । लोगों में मंडलियों के प्रति अपनत्व की भावना जागृत ही नहीं हुई है । सब यही सोचते हैं कि जितना लूट-खसोट सको वही अपना है । रणछोड़ जैसे लोग ऐसी भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

फूलजी ने अपनी विचित्र-सी आवाज में आनंद की किलकारी की । किसी की तेज चाल ने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया ।

"रिटायर तथा टायर नेताओं को नमस्कार ।" घेमर की बुलंद आवाज आयी । हालाँकि वह इन नेताओं को नमस्कार नहीं, संदेश देने आया था ।

अहमदाबाद से देवू के लिए फोन था । देवू जल्दी-जल्दी चल पड़ा । चाल तेज होकर भी संतुलित थी ।

घेमर ने एक ऐसा कार्य किया था कि हीरूभाई भी खुश होकर शाबाशी दें ।

कल से सोमपुरा के कालू बुनकर को हाईस्कूल में शिक्षक की नौकरी मिल जायेगी। आप लोगों की सिफारिशों से कुछ न हुआ। आप लोग तो उपवास के खिलाफ उपवास करने वाले। राजा इन्द्र ऋषियों की तपस्या को भंग करने के लिए तपस्या नहीं करते थे, अप्सराएँ भेजते थे। मैंने लक्ष्मीदेवी की मदद ली। पूरे सात हजार रुपये भेजे। इच्छा तो नहीं हो रही थी किन्तु क्या करूँ? अंततः सावधानी के लिए हरजीवन और नारण को कालू के साथ भेजा। आप लोगों ने कुछ कर दिखाया होता तो मुझे यह कुकर्म करने की जरूरत न थी। लवजीभाई ने ठेठ अमेरिका से मुझे यह काम सौंपा था। उन्हें मुझमें विश्वास रहा होगा तभी तो? वे लोग और होंगे जो पीछे लौटते हैं। स्कूल वाले तो साले दस हजार माँग रहे थे। पर मैंने एक वकील के मातहत बातचीत चलाई और काम सात हजार में बन गया। मार-पीटकर पैसा इकट्ठा किया। क्या करूं? कालिया बेचारा कितने वर्षों तक बेकार रहा? बी. ए. बी. एड. किया है। इतना पढ़-लिखकर भी वह मजूरी करे तो सोमपुरा की नाक कट जाये? घेमर ने यह सब खुश हो-होकर बताया। किसी को बोलने का मौका ही नहीं दिया। यहाँ तक कि नरसंगबाबा भी निरुपाय सुनते रहे।

इतने में फूलजी जीप से कूदा। धमाके की आवाज आयी। घेमर उठ खड़ा हुआ। देखा तो फूलजी चकरोट के मोड़ की ओर दौड़ा जा रहा था। "अरे! कौन है? ओ हो। करसनबाबा।"

सुनते ही नरसंग भगत उठ खड़े होते हैं। देखते हैं कि फूलजी अपंग से दीख रहे करसनबाबा को सहारा देने की कोशिश कर रहा है। इस प्रयास में, ऐसा लगता है कि वह स्वयं अपने कंधे की पीड़ा से जूझ रहा है। इतने में घेमर वहाँ पहुँच जाता है और करसनबाबा को सशरीर उठाकर, मिट्टी के बरतन की डलिया की तरह सँभालकर लाता है और खटिया पर रख देता है।

करसनबाबा सभी को ऐसे देख रहे हैं जैसे अभी-अभी वे पालकी से उतरे हों। हाथ जोड़कर सभी को जय-जय करने का प्रयत्न करते हैं। भीतर ही भीतर खूब आनंदित हैं परन्तु आनंद का उबाल कंठ तक पहुँचने में असमर्थ है। होठ नहीं खुलते। आँखें खुलती हैं और वाणी अश्रु बनकर ढलक पड़ती है।

वातावरण दुखद हो जाता है। बीच-बीच में संकर बछिया की घंटी सुनाई देती है। पानी के हौज के चौतरे पर बैठे हुए फूलजी के झबरे बालों को उड़ाती हुई हवाएँ इधर आ रही हैं।

देवू वापस आता है। सबसे पहला प्रश्न घेमर करता है। देवू बिना किसी से नजर मिलाये संक्षिप्त उत्तर देता है—"वीणाबहन का फोन था। उन्होंने लवजी से फोन पर बात की थी। उसी के समाचार थे।"

घेमर की बड़ी तीव्र इच्छा थी कि लवजी से कभी अमेरिका में फोन पर बात करे। परन्तु कैसे? उसने सोचा कि कहूँ किन्तु देवू तो खेत की ओर ऐसा चला

गया जैसे कोई बहुत आवश्यक कार्य हो। जैसे वह बचना चाह रहा हो कि कोई और कुछ न पूछे। जो समाचार उसे मिला था उसे सह पाने की क्षमता उसमें अब तक नहीं आ पायी थी।

अमेरिका से किसी स्वजन का फोन था वीणाबहन के पास। कार-दुर्घटना में जैमिनी की मृत्यु हो चुकी है। अभी शोक में डूबी थीं कि लवजी का फोन आया। जो कार दुर्घटनाग्रस्त हुई थी उसमें जैमिनी के साथ हेनरी भी था। उसने सुना था कि हेनरी को भी बहुत चोट आयी है और अस्पताल में भर्ती हुआ है। लवजी का अनुमान था कि इन दिनों मतभेद खत्म हो गये थे। इसी प्रेरणा से वह हेनरी का समाचार जानने तथा जैमिनी की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने हेनरी के पास गया। किन्तु वहाँ पहुँचते ही लवजी समझ गया कि उसे देखने के बाद ही हेनरी घायल होने का अभिनय करने लगा है। उसे कुछ शक हुआ। क्या सचमुच दुर्घटना आकस्मिक होगी या इसने सप्रयोजन करवायी होगी? उस दिन तो वह हेनरी को शुभकामनाएँ देकर, मन पर काबू करके वापस आ गया था परन्तु फिर बाद में वह दो गुजराती मित्रों से मिला है। आधार मिलते ही वह हेनरी के खिलाफ मुकदमा दायर करेगा और लड़ेगा। इसलिए वह अभी वहीं रुकेगा। टिकट कैन्सल करवा दिया है।

वीणाबहन ने देवू से बताया कि इस बाबत में पहले वे रमणलाल से बात करना चाहती थीं परन्तु वे सोमपुरा हो गये हैं यह जानकर यहाँ फोन लगाया। उन्होंने कहा कि मैंने तो लवजी से भारपूर्वक कह दिया कि तुम स्वयं को इस केस में डाले बिना भारत वापस आ जाओ। यह क्यों भूल जाते हो कि तुम वहाँ परदेशी हो। यदि तुम बीच में पड़ोगे तो वह तुम्हारे साथ भी खिलवाड़ करेगा। हेनरी को भ्रम में ही रखकर और यह मानकर कि जैमिनी की मृत्यु दुर्घटना में ही हुई है, तुम वापस आ जाओ। क्या तुम नहीं जानते कि वहाँ प्रति पल कितनी दुर्घटनाएँ होती हैं?

संक्षेप में यह सब समझाकर वीणाबहन ने देवू से साग्रह कहा है—आज रात, किसी भी तरह तुम लवजी से फोन पर बात कर लो। रमणलाल और हीरूभाई भी वहीं हैं तो उनके द्वारा भी उसे समझाओ। मैं क्या जानती थी कि जैमिनी की यह दशा होगी? लवजी ने बताया तो मालूम हुआ कि वह हेनरी के बच्चे की माँ बनने वाली थी। पर हेनरी को तो इसमें भी शक था...

देवू के लिए यह सब नया था। वहाँ के समाज में, स्त्री-पुरुषों के संबंध में एक भारतीय ग्रामीण मस्तिष्क की समझ में भी न आये इतनी उदारता थी। यह बात उसे लवजी से ही पता चली थी। तो फिर यह क्या है...?

उसका मस्तिष्क फटा जा रहा था।

इन लोगों से सच्चाई बता दूँ?

नहीं, अभी जब ये लोग जाने लगेंगे तो रमणलाल और हीरूभाई से बता दूँगा। घेमरभाई के पेट में ऐसी बातें पचती नहीं।

सबसे सरल उपाय तो उसके हाथ में ही है। लवजी से फोन पर कह दूँ—माँ को यदि जीवित देखना चाहते हो तो जल्दी चले आओ। ऐसा कहना कोई बुरी बात भी नहीं है। माँ यदि आधी बात भी जान जायेंगी तो सिर पीटने लगेंगी। लवजी उन्हें प्राण से भी अधिक प्यारा है।

–और जैमिनी तू बिना कुछ पाये ही चली गयी?

पहली बार मिली थी तब कितने आदर और संकोच से देख रही थी। नन्हें बच्चों को देखने पर लिंगभेद ध्यान में नहीं रहता। जैमिनी जब किशोरी थी, कितनी निर्दोष लगती थी। दुनियादारी उसे स्पर्श भी न कर पायी थी...

नेत्रों के कोर भीग गये...

एक बार लवजी रावजी की एक कविता पढ़ रहा था–"मेरे खेतों की मेड़ों से, उड़ गयी सारसी..." हाँ, लवजी उससे सर्वप्रथम यहीं मिला था। अनंत समय के लिए अलग हो जाने के लिए इतनी दूर जाना पड़ा। जीवन के ऐसे घटनाक्रम का क्या अर्थ होता है?

इस ओर करसनबाबा बोलने के लिए स्वयं से जूझ रहे। रणछोड़ पुनः कहता फिरता है कि मेरे दादाजी पागल हो गये हैं। वे पूरा गाँव देवू के नाम लिख देने की बात करते हैं। जैसे खुद सारंग के नम्बरदार न हो! पर उनके पास है क्या? सकोरा? दे देने दो देवू को।

वृक्षों की छाया की ओर से आ रहीं शीतल हवाओं ने करसनबाबा की बेचैनी को कुछ कम कर दिया है। उन्हें लगातार ताके जा रहे फूलजी के चेहरे पर भी जो पीड़ा उभर आयी थी, अस्त होती जा रही है।

नरसंग भगत को एक प्रसंग याद आ गया। लवजी ने उन्हें पढ़कर सुनाया था। रामकृष्ण परमहंस बैठे हुए थे। उनसे कुछ दूरी पर एक मजदूर को कोड़ों से पीटा जा रहा था। थोड़ी ही देर में वे तड़पने लगे। किसी ने देखा तो उनकी पीठ पर कोड़ों के निशान थे। इसका अर्थ यह हुआ कि दूर अज्ञात व्यक्ति की पीठ पर पड़ रहे कोड़े भी रामकृष्ण परमहंस की पीठ पर ही पड़ रहे थे।

भगत ने बताया कि यहाँ कुछ भी होता है तो फूलजी की जान साँसत में पड़ जाती है। हम उसकी चिन्ता में बोलते रहते हैं पर उसे तो बिना बोले ही, पल भर में हमारे बारे में पता चल जाता है।

सुनकर करसनबाबा के चेहरे की थकान कम हो जाती है। आँखों की चमक बढ़ती है परन्तु पुरानी थकान पीछा नहीं छोड़ती। वे अभी भी उनके बीच होने का सुख नहीं पा रहे हैं।

देवू करसनबाबा से कह रहा था कि उन्हें यहाँ आकर परेशान होने की आवश्यकता न थी। कहलाया होता तो हम सब वहाँ आ जाते।

"बिसवास नाहीं रहा कि इहाँ तक पहुँच जाब।" करसनबाबा धीरे से बोले। अभी भी उनकी आवाज घुटी हुई-सी थी।

"अस रहा तौ हम न आय जाइत!" नरसंग भगत ने और करीब सरकते हुए कहा।

"ऊ तो कौनो आवे वाली जगह है!" थोड़ी देर रुककर करसनबाबा ने तुलना की – हमारे यहाँ तो टिन की छत की छाया। शाम को भी गरमाता ही है। और यहाँ देखो। नीम, आम और रेंड। तीन-तीन वृक्षों की छायाएँ एक साथ मिलती हैं।

उनकी बातों की डोर अपने हाथों में लेते हुए घेमर आगे बोला–"इहाँ तो छाया क भी छाया मिलते है। रेंड के छाया मां आम, आम के छाये मां नीम, नीम के छाया मां भगत, और भगत के छाये मां तुम सबही। वाह भगवान तेरी लीला।" घेमर के साथ ही साथ करसनबाबा के होंठ फरक रहे थे। थोड़ी देर बाद वे फिर बड़बड़ाये–

"इहाँ तो छाया क भी छाया मिलत है।"

अचानक रमणलाल से आँख मिलते ही देवू के होठों तक जैमिनी की दुर्घटना वाली बात आ गयी। पर उसने मुट्ठियाँ भींच लीं।

अचानक घेमर बोल पड़ा–"वाह वाह पूरा घर आवत है।"

सबसे आगे-आगे ईजू चल रही थी। उसे हक था आगे-आगे चलने का। बड़े भाई आये हुए थे न! हवा की तरह बात पहुँच गयी थी। शांति के सिर पर भैंसों के लिए खरी की टोकरी थी। डेढ़-दो मन का बोझ उठाकर चलना उसके लिए आसान था। कंकू माँ के पाँव की चप्पल को कुत्ते के पिल्ले ने काट डाला था। उसे पहनकर चलने में अड़बड़ लगता था। इसलिए वे कितनी भी जल्दी चलतीं, पीछे ही रह जाती थीं। उन्हें जल्दी पहुँचने से भी अधिक चिन्ता इस बात की थी वह अक्ल बिना की रूपली पलभर मनु को कंधे पर बैठाती है तो पल भर पीठपर बैठाकर बेतहासा भागती है, कहीं गिरा न दे।

माँ को देखते ही देवू उठ खड़ा हुआ। नजर मिलते ही कंकू माँ बोल पड़ीं– "काहे भैया, राये अस लागत हौ! आँखी मां कुछ पड़ गवा है का?"

देवू ने मुँह दूसरी ओर घुमा लिया और माँ के लिए नयी चप्पल न लाकर देने के लिए पता नहीं किसे डाँटने लगा।

सब लोग आकर बैठ जाते हैं।

मनु को रोता देखकर फूलजी नाचने लगता है। जैसे शनिवार को भजनमंडली में नाचता है। घेमर की इच्छा होने लगती है कि तबला बजाये। सब उसे हमेशा कहते हैं घेमरभाई रहने दो, तुम्हारा हाथ वजनी है।

इधर फूलजी, मनु, रूपा न जाने किस ताल पर नाच रहे हैं। उन्हें देखकर

देवू को चक्रगति की याद आ जाती है। परन्तु भगत को जैसे रास की झलक दिख गयी हो। वे अपने भीतर हलचल महसूस करते हैं।

"नरसिंह मेहता दियाधारी काहे कहे जात रहे जानत हौ हीरूभाई ?"

"उनके लिए मशाल और हाथ का अन्तर नहीं रह गया था। उनका हाथ ही दीपक बन गया था।" हीरुभाई जैसे इतिहास बता रहे हों।

"हम सबही अगर अपने आपका दिया अस जलाई तो अंदर-बाहर उजेर होय।" भगत के इन शब्दों को सुनते हुए करसनबाबा फूलजी की आँखों की भावुकता देख रहे थे।

चाय बनी। घेमर ने उठकर सभी को "कडक मीठी" चाय पिलायी। हीरू-भाई ने ताजा दुहा हुआ दूध पिया।

चाय पीते समय करसनबाबा को याद आया कि इतनी दूरी तय करके वे एक विशेष बात बताने यहाँ आये थे। रणछोड़ ने झूठा मुकदमा करके भगत को अहमदा-बाद का धक्का खिलाया था। जेठा ने सारी बात बतायी थी। वे तो कबसे आने की बात सोच रहे थे। पैर ही नहीं उठते थे।

अब वे रणछोड़ के उल्टे-सीधे कामों से परेशान नहीं हो जाते। पहले वे इंतजार करते थे कि रणछोड़ को अपने कुकर्मों का फल मिले। वह कुछ मद्धिम पड़े। परंतु उन्होंने देखा कि वह तो लगातार आदर-सत्कार और पैसा-टका से सुखी होता जा रहा है। अन्जान व्यक्ति भी उससे घबराता है, व्यर्थ में उसकी प्रसंशा करता है। अभी एक ताजा घटना है। तालुका-पंचायत में एक जगह रिक्त हुई तो रणछोड़ ने उम्मीदवारी की थी। लोगों का कहना है कि पशाभाई ने अपना समर्थन घोषित किया। रणछोड़ बिजापुर जाने के पहले ही सारंग के हलवाई को फोन द्वारा पेंडे का आर्डर देता गया था। जिस दिन वह जीता करसनबाबा अपना बिस्तर छोड़कर जबरा के खेत में चले गये। उन्हें डर था कि रणछोड़ अपनी विजय का समाचार देने आयेगा।

कुछ दिनों बाद सोमपुरा की अलग पंचायत बनायी जायेगी। सरपंच के चुनाव में रणछोड़ खड़ा रहेगा। इस गांव में उसे सिर्फ देवू हरा सकता है।

हाँ, करसनबाबा भी यही बात कहने आये थे। देवू चुनाव लड़े तो अच्छा है। उनका वाक्य अभी पूरा भी नहीं हो पाया था कि कंकू बोल पड़ी थीं कि देवू को चुनाव के बखेड़े में नहीं पड़ने देगी। रमणलाल मौन रहे। हीरूभाई ने ससम्मान, सहमत होते हुए भी कंकू माँ को समझाना चाहा, किन्तु उन पर कोई असर न पड़ा।

इस बार नरसंग भगत, खखारते हुए कमर थोड़ी सीधी करते हुए बोले—"पुराने जमाने मां महतारी अपने लड़का के माँथेमां टीका लगाय के लड़ाई मां भेजत रही और ये हैं कि देवू क सरपंच के कीरत लेय क मना करत हैं।"

"तुम लेव न कीरत, के पकड़ रखे हैं ?" कंकू ने तुरंत जवाब दिया। फिर

थोड़ा रुककर, दोनों बहुओं की ओर देखते हुए बोली–"अबहीं तो अहमदाबाद के सवाद चीखे व है ।"

यह सुनते ही सब हँस पड़े । करसनबाबा भी । देवू की समझ में नहीं आया कि लोग क्यों हँस रहे हैं । उसका ध्यान अन्यत्र था । उसकी उदासी रमणलाल की नजरों से छिपी न रह सकी ।

–क्यों देवूजी, तुम बोलते ही नहीं ?

"का बोले ? ई घर माँ कंकू माँ के हुकुम के बिना तिनकौ नाहीं हीलत ।" घेमर सच कह रहा था । कंकू मां को वह खुश भी करना चाहता था । पर देवू ने कहा–

"माँ तो अभी भी मुझे मनु जैसा ही मानती हैं । वे तो मना ही करेंगी । पर पिताजी कहते हों तो..."

"हम का कही भैया ? ई खेते व मां का बोवे कहे का नाहीं यह बाबत मां हम कुछ कहित है ? और ई तो जनता–जनार्दन के काम आय । ई काम केहू के सलाह से नाहीं बल्की अपनी मंसा से करे क चही । सही बात है न मुखिया ?"

एक अरसे के बाद किसी के मुँह से, और वह भी नरसंग भगत के मुँह से करसनबाबा ने अपने लिए मुखिया शब्द सुना था । यह उनके अंतरतम को छू गया ।

करसनबाबा को वे दिन याद आ गये जब वे मुखिया थे । तमाम गाँवों के अच्छे–अच्छे पंचायती उनसे राय लेने आते थे और उनकी बात मानकर चले जाते थे । वे स्वयं यदि किसी अन्य गाँव में जाते तो उनकी ओर संकेत करके लोग कहते कि "ऊ जौन जात हैं न वही हैं सोमपुरा के करसन मुखिया ।"

करसनबाबा आज एक और बात भी करना चाहते थे – रणछोड़ को यदि छुट्टा छोड़ दिया गया तो वह किसी के भी काबू में नहीं रहेगा । गाँव को पारावार नुकसान करेगा और आखिर अपने ही पावों पर कुल्हाड़ी मारेगा । उसके लड़के भी उसीका अनुसरण करेंगे । फिर, रणछोड़ तो अब अपने घर में ही बड़प्पन करने लगा है । बाप को तो पहले से ही वह नहीं बदता था । कुछ दिनों पहले की बात है अपनी महतारी को भी आँय–बाँय बोलने लगा था । कह रहा था -"तू कैसी थी मैं जानता हूँ ।" रणछोड़ यह स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं है कि करसनबाबा ने जो संपत्ति गाढ़ रखी है उसके बारे में पधी कुछ नहीं जानती । यदि चाँदी के सिक्के भी दो हजार हाथ लग जायें तो आज उसके कितने रुपये मिल सकते हैं !

बात चलने पर जेठा बुढऊ को सलाह देता है–"जौन होय सब दान करिदेव न । छुट्टी मिले ।" करसनबाबा इसके लिए मना नहीं करते । परंतु जैसे किसी दूसरी बात की ओर संकेत कर रहे हों, बोलते हैं–"भले मानुस, अकेले धन दान करे से का मिले ? तू नरसंग के साथी होय के अतनौ नाहीं समझलेव ? जीवदान करे क पड़े, जीव ।"

उसने समझा बुढऊ अब मोह–माया त्याग देना चाहते हैं । इसीलिए डाकोरजी

से माला मँगवा की। माला फिराते-फिराते कभी-कभी वे जेठा के लड़के से कहते हैं—"अरे इस्टांप ले आव, लिख देई। जौन कुछ गाड़ा है ऊ सब के बहीखट देवू, हीरूभाई, और रमणलाल के सलाह से खर्च करेव, औ अपने रणछोड़िया से तो पूछबौ न करेव।" उनकी बात कोई नहीं सुनता। सब सोचते हैं कि बाबा को बड़बड़ाने की आदत पड़ गयी है। इसीलिए उन्होंने सब कुछ नरसंग भगत से बता दिया है। सब हराम का ही धन है। अब तो भगवान की मर्जी होगी तभी मुक्त होंगे। तब तक तो शिकंजे में बंद रहना है। करसनबाबा बड़बड़ाये—"तब तक शिकंजा मां बंद रहै कहै।" इस वाक्य का मर्म भगत ही समझ सकते थे। एक बात वे कई लोगों से कह चुके थे, आज फिर बोले—मौत माँगने से मुक्ति नहीं मिल जाया करती। जैसे एक सच्चा किसान अपनी फसल काटता है और दूसरों के खेत को बंजर मानता है उसी प्रकार हमें भी अपने आत्माराम में लीन रहना चाहिए और इधर-उधर हाथ-पाँव नहीं मारना चाहिए। "मौत कै मंसा न करौ करसनबाबा, ऊ तौ सबेरे के उजेर अस आये।"

देवू को इन शब्दों से रंचमात्र भी आश्वासन नहीं मिला। जैमिनी को जो मौत नसीब हुई है उसे तो भर दोपहर के ग्रहण का अंधकार ही कहेंगे न ?

देवू मन पर काबू न रखकर मौन रह जाता है। सामने बच्चे खेल रहे हैं। फूलजी मवेशी की तरह चार पैरों पर झूम-झूमकर चल रहा है। मनु सोचता है कि वह स्वयं उसे चला रहा है और अपने इस पराक्रम के बारे में रूपा को बताकर वाह वाही लूट रहा है।

कंकू माँ देवू के नजदीक सरक आयीं—"भैया, लवजी ने वापस आने का टिकट रिज़र्व करवाया कि नहीं ?"

"नहीं कराया होगा तो करा लेगा। हमको पता चल जायेगा वह जब निकलेगा।" माँ कुछ और पूछे इसके पहले ही देवू उठा और हीरूभाई के पास आकर खड़ा हो गया। किसी भी तरह, कहीं से शांति का एक टुकड़ा प्राप्त होता है कि अंदर का प्रवाह उसे बिखेर देता है...

"मानौ या न मानौ पर भैया क आज कौनो दुख जरूर है।" कहते हुए कंकू माँ उठ खड़ी हुईं। और बच्चों के पीछे चली गयीं।

ईजू और शांति निराई कर रही थीं। फूलजी उनके द्वारा काटी हरी-हरी घास लाकर गाय, भैंस और बैल को, अपने द्वारा तय किये क्रम के अनुसार खिला रहा था। वह इतनी स्फूर्ति से सारा काम कर रहा था, जैसे खेत में इस समय वही प्रमुख व्यक्ति हो।

मनु-रूपा आम के पास पहुँचकर ढेला फेंकने लगे थे। यह देखते ही कंकू माँ ने शांति को वहाँ दौड़ाया। ईजू देवरानी को दौड़ती हुई देखती है। हेतीबहन ने भी ईजू को विशेष सलाह दी थी। अपने बच्चों को शांति को सौंप दो। उसने

ऐसा ही किया है। परंतु जब तक रात में मनु को दूध नहीं पिला देती और रूपा के सिर पर दुलार से हाथ नहीं फिरा लेती तब तक उसे नींद नहीं आती। देवू जानता है और देखता है।

इस ओर रेंह, आम और नीम की छायाएँ रमणलाल, हीरूभाई, घेमर, करसनबाबा और पिताजी को वहीं छोड़कर गाँव की ओर बढ़ी जा रही हैं।

सभी के सिरों पर अब सुनहली धूप आ गयी है और दोनों खाटों के बीच नीम के तने की परछाई ऐसी लग रही है जैसे धरती के माथे पर तिलक...

देवू पुनः उधर देखता है। मेड पर बच्चे अभी भी खेल रहे हैं। सूरजदादा ने भी उधर ही मुँह घुमा लिया है। आराम करने चले जाने के पूर्व वे इस दृश्य को जरा ध्यान से देख लेना चाहते हैं। उनकी अमृतमय मुस्कान के स्पर्श से खेतों की संपूर्ण सतह सुनहली हो गई है।

रूपा–मनु को दादा के पास रवाना करके शांति फिर से घास काटने बैठ गयी है। निश्चित ही रूपा–मनु कुछ कहना चाहते हैं।

उन्हें आते देख करसनबाबा भी प्रसन्न हैं।

खेत के ठीक बीचोबीच खड़े देवू का ध्यान एक पक्षी की ओर जाता है। वह अपने घोंसले तक पहुँचे इसके पूर्व ही सूरजदादा तो अस्त नहीं हो जायेंगे!

× × ×

उपरवास कथात्रयी

लोकचेतना की तलाश

गुजराती में 'उपरवास' उस विस्तार को कहते हैं जहाँ बरसा पानी वहीं पहुँचता है। स्वातंत्र्योत्तर ग्रामजीवन की ऊर्जा की दशा और दिशा क्या रही? पूर्वनिर्धारित साहित्यिक मानदंडों के द्वारा नहीं, प्राप्त जीवन-संदर्भ में उस ऊर्जा को रूपायित करने का नाम है 'उपरवास कथात्रयी'।

उत्तर गुजरात के पाँचसात गाँवों का आंतर-बाह्य संघर्ष यहाँ चरित्रों के माध्यम से आलेखित हुआ है। स्वातंत्र्य-संक्रमण से लेकर आठवें दशक तक जनजीवन के रूपान्तरण की काल-योजना दस्तावेजी है। जिस चरित्र के द्वारा लेखक अपने प्रति निर्मम बना है उस लवजी को अपने गाँव की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की बड़ी बेबाक पहचान है, देश के राजनीतिक गतिरोध और ठहराव के प्रति गहरा असन्तोष है। वह देख रहा है कि अन्धे संघर्ष में स्नेह और सौहार्द विरल होते जा रहे हैं, जितना सोमपुरा के कुओं की सपाटी का सतत सूखता हुआ पानी।

दूसरी ओर लवजी के पिता नरसंग और पितामह पिथू भगत कभी न सूखनेवाली लोकसंस्कृति के वारिस हैं, जो सत्ता और संपत्ति हथियाते रहते मध्ययुगीन मानस से टकराते आये हैं और अपने भीतर झाँककर स्व-स्थ रहे हैं।

यह उपन्यास भाषा की लक्षणाशक्ति का विनियोग करता हुआ सरल, सुलझी शैली में आगे बढ़ता है। इसका यथार्थ बहुस्तरीय है, चरित्र केवल प्रातिनिधिक नहीं, संकुल भी हैं। यहाँ लोकचेतना से न जुड़ पाने का पीड़ाबोध है तो गाँव के अनेक पात्रों के जीवन-संघर्ष के माध्यम से उस चेतना के क्रियाशील स्वरूप का उद्घाटन भी है।

डॉ. रघुवीर चौधरी [जन्म सन् १९३८, बापुपुरा, जिला मेहसाना] गुजराती के स्वातंत्र्योत्तर कथासाहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं, 1962 से लेकर साहित्य की सभी विधाओं में सक्रिय हैं। सम्प्रति गुजरात विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यापन, उत्पादक श्रम तथा कृषिकार्य में रुचि।

'अमृता' आदि उपन्यास, कहानियाँ, नाटक हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में अनुदित। गुजरात का सर्वोच्च सम्मान-'रणजितराम चन्द्रक' सन् 1975 में प्राप्त, साहित्य अकादेमी दिल्ली का राष्ट्रीय पुरस्कार इसी उपन्यास के लिए सन् 1977 में प्राप्त। पत्रकारिता तथा अन्य संचार माध्यमों में भी क्रियाशील।

Uparvas Kathatrayi (Hindi) Rs. 120

ISBN 81-7201-032-X